अभिशप्त

एक रक्तिम गाथा

Shaba ❤️

अभिशप्त : एक रक्तिम गाथा

भाग 3.

लेखिका , शाबा।

�अभिशप्त : प्रस्तावना

राज - भाग -1
चित्रलेखा - भाग 2
अभिशप्त - भाग -3

�
कहते हैं कि अफसाने यूँ ही नहीं बन जाते। कोई ना कोई वजह होती है इन अफसानों के तामीर की। पर कभी -कभी समय की धूल इस क़दर इन पर चढ़ जाती है कि इनका वजूद उस धूल के गुबार में ही खो जाता है।

ऐसा ही एक गुमनाम किस्सा अचानक ही खुद पर पड़ी धूल को झाड़ता हुआ उठा खड़ा हुआ और एक के बाद एक रहस्य और रोमांच के पड़ावों को पार करता हुआ अब अपनी नई मंजिल की ओर नज़रें गड़ाए खड़ा है।

छोटे से गाँव हरिपुर से शुरू हुई ये कहानी ....

जहाँ गाँव से गायब होते लोगों की खोज में कुछ नौजवान एक डायन से भिड़ने चले जाते हैं और एक रोमांचक सफ़र के बाद जब उनका सामना अतीत के काले अध्याय से होता है, तो सभी के होश उड़ जाते हैं और जिंदगी के बदलते रंग उन सभी को अपनी गिरफ्त में ले लेते हैं।

(जिन पाठकों ने ये कहानी नहीं पढ़ी है, चाहें तो मेरी प्रोफाइल में जाकर पढ़ सकते हैं। 😇)
�

वहीं डायन के महल से मिली एक किताब आशुतोष को ले जाती है इस अफसाने के दुसरे मुकाम पर....

जहाँ रानी चित्रलेखा का रहस्यमई व्यक्तित्व सभी को उलझा कर रख देता है। किस तरह ईर्ष्या, बदला और स्वार्थ की बिसात पर खेला गया खूनी खेल प्रेम की शह पर मात खा जाता है। नफरतों की जमीन पर जन्मा प्रेम का अंकुर आने वाले भविष्य के लिए कई नसीहतें छोड़ जाता है और छोड़ जाता है कई सवाल, जो इस कहानी में उलझे लोगों को इस सफर पर आगे बढ़ने पर मजबूर कर देता है।

यकीनन जिंदगी चलते रहने का काम है और इसकी पेचीदगियों में अपने लिए नई राहें तलाशने का नाम। जो सवाल चित्रलेखा की कहानी सबके जेहन में छोड़ गई, उसकी तलाश सबके जेहनी आराम के लिए बहुत ही जरूरी हो चुकी है और एक बार फिर सभी तैयार हैं... एक और सफर के लिए।

कहते हैं कि समय से ज्यादा ताकतवर और कुछ नहीं होता। वो सबको अपने साथ बहा ले जाता है। पर क्या हो... जब समय का पहिया उल्टा घूम जाए और उसकी गिरफ्त से बाहर निकल आए एक ऐसी कहानी जो ना किसी ने सुनी और ना किसी ने कही।

पुराने किरदारों के साथ कुछ नए किरदारों की आमद, जो आपको हँसाएगी, रूलाएगी, गुदगुदाएगी और यकीनन....
डराएगी भी। तो चलते हैं कुछ और पन्ने जज़्बातों की स्याही से उकेरने के लिए।
ये सफर है प्रेम का... तड़प का.... इंतजार का और.... खून से भरे इंतकाम का। एक कहानी जिसमें है एक श्राप और है एक.....

"अभिशप्त"

�अभिशप्त : भाग 1 - समयचक्र

कुछ कहानियाँ इतनी हैरतअंगेज होती हैं... कि उन पर यकीन करना मुश्किल होता है। पर जो दिल और दिमाग को हिलाकर ना रख दे..... वो कैसा अफसाना! ऐसा ही एक अफसाना वक्त के

[illegible] [illegible] [illegible] [

धुएँ से बने हुए हाथ बाहर निकल आए और उस बला को अपनी गिरफ्त में ले लिया। उनकी जकड़ में वो बुरी तरह छटपटा रही थी, मगर उसकी सारी ताकत उन तांत्रिकों के सामने फिलहाल कमजोर पड़ चुकी थी। उन हाथों ने उसे उस काले घेरे के अंदर खींचना शुरू कर दिया। सारा वातावरण दिल दहला देने वाली चित्कार से भर उठा था। कई महीनों के कड़े अनुष्ठान का प्रतिफल सबके सामने आ चुका था। देखते ही देखते उन हाथों ने उस बला को उस काले घेरे के अंदर पूरी तरह से खींच लिया। मगर जाते-जाते भी वह अपनी भयानक आवाज में चेतावनी देते हुए गुम हो गई। उस काले घेरे के अंदर हवाओं का प्रभाव एकदम से शांत पड़ गया। उस घेरे का रंग धीरे-धीरे काले से बदलकर पहले की तरह लाल हो गया था।

सब कुछ शांत होते ही सभी तांत्रिकों ने मंत्रोच्चार रोक दिया। सबके चेहरे का तनाव मध्यम सी मुस्कुराहट में बदल गया था। आखिरकार ना जाने कितनी कोशिशों के बाद आज वो सब कामयाब हो चुके थे। मुख्य तांत्रिक धीमे कदमों से चलते हुए उस लाल घेरे तक आए, जहाँ बीचोबीच एक छोटा सा उभार बना हुआ था। उस उभार में बीचों बीच एक छोटा सा आड़ा तिरछा छेद बना हुआ था। मुख्य तांत्रिक उसके पास गए और फिर उन्होंने अपने हाथ में पकड़ा हुआ रुद्राक्ष उस छेद में डाल दिया। ऐसा लग रहा था जैसे कि वो छेद उसी के लिए बना हुआ था। उस रुद्राक्ष को उसमें डालने के बाद उसके चारों ओर की रिक्तता भरने लगी और कुछ ही देर में वह उस छेद में अच्छे तरीके से कस गया था।

"तांत्रिक श्रेष्ठ! अंततः इस पिशाचिनी का उचित प्रबंध हो ही गया।"

"हम्म! प्रतीत तो ऐसा ही हो रहा है। पर उसकी अंतिम चेतावनी को
उपेक्षित समझकर अनदेखा नहीं किया जा सकता। ये समझ लो कि समस्या पूर्ण रूप से समाप्त नहीं हुई है। हमने अपनी पूर्ण शक्ति झोंककर इसे बंदी तो बना लिया है, परंतु मानव जाति के अंदर की स्वार्थी और लोभी प्रवृत्ति सदैव इसे प्राणवायु देती रहेगी। पूर्ण सतर्कता ही अब से हमारी सबसे बड़ी कुंजी होगी, जो इस पिशाचिनी को इस नर्क के द्वार के पीछे जकड़कर रख सके।"

उसकी बात सुनकर सभी ने हुंकारी भरते हुए सहमति जताई। तांत्रिक श्रेष्ठ ने मुड़कर उस रूद्राक्ष की ओर देखा, जो फिलहाल उस द्वार को अपनी मजबूत गिरफ्त में जकड़े हुए था। धीरे-धीरे सभी उस कक्ष से बाहर निकल गए। तांत्रिक श्रेष्ठ ने उस लाल घेरे की ओर देखा और उनके कानों में उस पिशाचिनी की चेतावनी स्पष्ट रूप से एक बार फिर से गूंजने लगी।

"मैं वापस आऊँगी। जिस मानव जाति की चिंता मात्र में तुमने मुझे इस प्रकार असहाय किया है, वही मेरी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करेगी। उसके पश्चात् होगा बस प्रलय... जिसे कोई रोक नहीं सकेगा। स्मरण रहे।"

तांत्रिक श्रेष्ठ को पता था कि ये अंत नहीं प्रारंभ है, जो समय के चक्र में सभी को उलझाने वाला है।

****

200 साल पहले -

वो एक सीलन और बदबू से भरी गुफा थी, जिसके अंदर ना जाने किन-किन मखलूकों(Creature) ने अपना बसेरा बना रखा था। इन सभी के बीच वो अपनी साधना में पूरी तरह से तल्लीन था। उसके चेहरे और सिर के बेतरतीबी से बढ़े हुए बालों ने उसकी शिनाख्त(पहचान) पूरी तरह से छिपा ली थी। सामने जलती हुई प्रचंड अग्नि उसकी बंद आँखों से भी झांकती हुई ज्वाला से कमतर ही प्रतीत हो रही थी। उसके होंठ लगातार बुदबुदाने के कार्य में लगे हुए थे। शारीरिक रूप से वो एक गठीले शरीर का मालिक जान पड़ रहा था, जो कई जगहों पर अपनी चोटों के भरने की गवाही दे रहा था। उसके चेहरे की कठोरता उसकी तल्लीनता का पूरा साथ निभा रही थी। ऐसा लग रहा था कि उसने अपनी ये साधना लंबे समय से जारी रखी हुई थी।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

****

[illegible] -

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

और मुँह से निकलकर धीरे-धीरे सामने बिखरी धूल-मिट्टी को और भी बिखेरती हवा उसके जिंदा होने की गवाही दे रही थी। उसका पूरा शरीर खरोंचों से भरा हुआ था। कुछ ज़ख़्म गहरे मालूम पड़ रहे थे, जिनसे निकला खून जिस्म में सूखकर जम गया था। कपड़े भी फटे हुए और अजीब सी हालत में थे। ना जाने कितनी देर से वो वहाँ उसी तरह पड़ी हुई थी। समय गुजरने के साथ शायद बेहोशी भी अब टूटने की कगार पर आ गई थी, जब उसके सीधे हाथ की उंगलियों में हरकत हुई। एक हल्की सी कराह हवा का साथ लेकर उसके होंठों से निकली और धीरे से उसने अपनी आँखें खोली, जो खुलने से लगभग इंकार कर रही थीं। वो बुरी तरह घायल थी और थकान से चूर भी। आँखों के सामने अभी भी सब कुछ धुंधला सा था। उसने एक बार फिर से अपनी आँखें बंद कर लीं मगर ज़हन की गलियों में दर्द से भरी एक चीख ने उसकी आँखें पूरी तरह से खोल दीं।

उन बड़ी-बड़ी काली आँखों में सदमे भरी दहशत भर गई। अचानक ही उसकी साँसे भारी हो गईं और उसे बेचैनी सी होने लगी। अपनी पूरी ताकत लगाकर उसने अपने दोनों हाथों के सहारे उठने की कोशिश की, मगर पूरे शरीर में दर्द इतना ज्यादा था कि इस कोशिश ने उसके सारे वजूद को हिलाकर रख दिया। मगर अब वो फिर से किसी मुर्दे की तरह पड़ी रहना नहीं चाहती थी। अपनी बची खुची सारी ताकत के साथ आखिरकार वो उठ ही गई और घिसटकर दीवार के पास पहुँची। वहाँ पहुँचकर उसने
दीवार से अपनी पीठ लगाई और बैठकर गहरी साँसें लेते हुए चारों ओर देखने लगी। चारों ओर अंधकार अपना अधिकार क्षेत्र बढ़ा रहा था। शायद शाम से मुलाकात के बाद आज का दिन रात से मिलने के लिए बढ़ रहा था। मगर अंधकार में अभी गहरापन नहीं आया था। प्यास की शिद्दत से उसका गला सूख रहा था। मगर उसे इस बात का अहसास हो गया था कि वो आबादी से कहीं दूर इस तरह निढाल पड़ी हुई है। उसने अपनी यादों का दरवाजा खोलने की कोशिश की। यह जानने के लिए कि वो यहाँ इस हालत में कैसे पहुँची, पर वो दरवाजा बुरी तरह से बंद था। थोड़ी देर में उसने ये कोशिश भी छोड़ दी और चुपचाप बैठ गई, जिससे कि कुछ ताकत इकट्ठी कर सके, ताकि वो यहाँ से निकल सके। ना जाने कितना समय इसी में गुजर गया। उसे ऐसा लगने लगा कि अगर जल्दी ही उसे इस अकेलेपन के अहसास ने नहीं छोड़ा, तो वो और भी कमजोर होने लगेगी। उसने अपनी आँखें बंद की और कुछ देर बाद ही उसे सूखे पत्तों पर सरसराहट की आवाज सुनाई दी। उसने अपनी आँखें खोली, तो उस खंडहर के किसी हिस्से में उसे आग की रोशनी दिखाई दी। उस रोशनी से उसके अंदर का अंधेरा छँटने लगा। अब तक उसने काफी ताकत इकट्ठी कर ली थी।
वो किसी तरह खुद को संभालते हुए उठी और उस रोशनी की ओर लड़खड़ाते हुए बढ़ी।

उसके मन में ये ख्याल कहीं से भी नहीं आया कि इस समय इस उजाड़ में कौन आया होगा? उसने तो उस रोशनी में अपने अकेलेपन के अहसास को पिघलता महसूस किया और बिना सोचे समझे उस ओर बढ़ गई।

थोड़ा चलने से उसके शरीर की अकड़न खत्म हुई, तो दर्द का अहसास भी बहुत कम हो गया था और अब वो थोड़ा आराम भी महसूस कर रही थी। एक बार फिर उसके सूखे गले ने उसके कदमों को ताकत दी और वो उस आग के पास पहुँच ही गई।

उस आग के चारों तरफ तीन खतरनाक से दिखने वाले बदमाश बैठे थे
और किसी बड़े अपराध को सर-अंजाम देने के बारे में बातें कर रहे थे। उनके हाथों में पकड़ी हुई शराब की खुली बोतलों ने वहाँ के वातावरण को दुर्गंध से भर दिया था। वो जैसे ही वहाँ पहुँची, शराब का एक तेज भभका उसके नथुनों में भर गया और उसका खराब मन और भी खराब हो गया। उसके कदमों की आहट ने उन तीनों के कान खड़े कर दिए। उन्होंने झटके से उस ओर देखा जहाँ वो टूटी हुई दीवार को थामे खड़ी थी। उसे वहाँ देखकर उन तीनों के चेहरे का रंग उड़ गया। दिल अपनी चोरी पकड़े जाने की आशंका से जोर-जोर से धड़कने लगा। इस समय इस सुनसान इलाके में किसी के आ टपकने की उन्हें उम्मीद नहीं थी। दोनों ओर ही माहौल भारी सा हो गया था। वो भी समझ चुकी थी कि उसने यहाँ आकर गलती कर दी है। पर गलती तो हो ही चुकी थी। अपने गले को तर करते हुए वो पीछे की ओर खिसकने लगी।

"ए... रूक! वहीं रूक!" उनमें से एक भारी शरीर वाले आदमी ने घुड़ककर कहा। उस घुड़की को सुनकर उसकी साँस जैसे रूक सी गई।

"कौन है तू... और यहाँ क्या कर रही है?" एक बार फिर उस आदमी ने गुस्से भरी आवाज में उससे पूछा। मगर वो किसी भी सवाल का जवाब देने की हालत में नहीं थी।

"अरे बोल ना!" अब दूसरे आदमी ने भी सख़्ती दिखाते हुए तेज आवाज में कहा। मगर वो अब भी

उसी तरह बुत बनी खड़ी रही। अब तो उसके पैरों की ताकत भी एक बार फिर से खत्म हो चुकी थी। एक तो पहले ही वो अपनी शिनाख्त से बेगाना हो चुकी थी और अब मौजूदा हालात उसके हवास भी गुम करने पर आमादा थे। उसके लिए चारों ओर बस अंधेरा ही बचा हुआ था।

"कहीं पुलिस का लफड़ा-वफड़ा तो नहीं?" तीसरे आदमी ने बाकी दोनों की ओर देखकर आशंका जताई।
"अबे उसकी हालत देख और बोल! ये तो खुद भागी हुई दिख रही है।" उसकी ओर ग़ौर से देखते हुए एक आदमी बोला। उसके इतना कहते ही बाकी दोनों की नज़रें भी उस पर गड़ गईं। आशंका के बादल छँटते ही वो सामने खड़ी उस लड़की को तेज और गहरी नज़रों से देखने लगे। उसकी हालत देखकर अचानक उनके होंठों पर एक कुटिलता भरी मुस्कराहट खेलने लगी और आँखों में हैवानियत उतर आई। उनके इरादे भाँपकर उस लड़की की साँसे हलक़ में अटक कर रह गई।

"माल तो बहुत अच्छा लग रहा है। लग रहा है आज तो किस्मत खुली है।" हवस भरी जहरीली नज़रें उस पर डालते हुए एक बदमाश ने कहा। उनकी बातें सुनकर उस लड़की की जान लगभग सूख ही गई थी, मगर वो बिना लड़े हथियार नहीं डाल सकती थी। कहते हैं कि डर जब अपनी आखिरी सीमा लांघ जाए, तो फिर बस.... चला जाता है। उसने भी डर को भूलकर अपने लिए संघर्ष करने का फैसला लिया।

"आगे मत बढ़ना! वर्ना..." सारी हिम्मत बटोरकर वो तेज आवाज में अपनी तर्जनी ऊँगली उन्हें दिखाते हुए बोली।

"वर्ना क्या?" अपने गंदे दाँतों की नुमाइश करता हुआ एक बदमाश उसकी ओर बढ़ा। इससे पहले कि वो उसके करीब आ पाता, उसने उस टूटी हुई दीवार के ऊपरी हिस्से के एक ढीले पड़ चुके पत्थर, जिसके सहारे वो खड़ी हुई थी.. को खींचकर निकाला और और उस बदमाश के मुँह पर दे मारा। इस अप्रत्याशित हमले के लिए वो बिल्कुल भी तैयार नहीं थे। एक ही वार से उस बदमाश की नाक से खून का फव्वारा छूट पड़ा। एक तेज चीख के साथ वो अपनी नाक को पकड़कर नीचे बैठ गया। उसके दोनों साथी भी तेजी से उसके पास आकर उसे संभालने लगे।

"चल भाग यहाँ से!" उसके मन ने उससे कहा और वो एक ओर घूमकर
तेजी से अंधेरों में गुम हो गई।

"अरे! पकड़ो उसे!" अपनी नाक को संभाले हुए उस बदमाश ने अपने दोनों साथियों से कहा।
उसकी बात सुनकर उसके दोनों साथी तेजी से उस ओर भागे जिस तरफ लड़की भागी थी। मगर आग की रोशनी से दूर उस खंडहर के कई कोने घटाघुप अंधेरे में डूबे हुए थे, जहाँ उस लड़की का पनाह लेना उन को झुंझला रहा था।

"लग रहा है भाग गई।" अपनी कमर में हाथ रखकर हाँफते हुए एक बदमाश बोला।

"ऐसे कैसे भाग जाएगी? ढूँढना पड़ेगा उसे। समझ नहीं रहा है तू। हमें यहाँ देख लिया है उसने। अगर उसने जाकर किसी को बता दिया तो... अंदर जो लड़की बंधी पड़ी है, उसे कहीं और ले जाकर छुपाना पड़ेगा। बड़ी मुश्किल से तो ये जगह मिली है जहाँ कोई आता जाता नहीं।
पता नहीं ये कहाँ से आ टपकी?" दूसरा बदमाश चारों ओर देखते हुए तिलमिलाकर बोला।

"हाँ यार! ये भूत-प्रेत की अफवाहों के कारण इधर कोई कभी नहीं आता। मगर वो लड़की सब गुड़-गोबर करके रख देगी।" पहले बदमाश ने कहा।

"एक काम कर तू उस तरफ जा... मैं इस तरफ देखता हूँ।" दूसरा बदमाश बोला। उसकी बात सुनते ही उसका साथी तेजी से दूसरी और चला गया। उस बदमाश ने आगे जाने के लिए अपने कदम उठाए ही थे कि उसे अपने पीछे हल्की सी सरसराहट की आवाज सुनाई दी। ऐसा लगा जैसे कि कोई कोने में दुबकने की कोशिश कर रहा हो। उस आवाज को सुनकर उसके होंठों पर एक वहशियाना मुस्कुराहट आकर बैठ गई। चेहरे पर झूठी हैरानी सजाए वो तंजिया लहजे में बोलता हुआ आगे बढ़ा, "च् च् च्! तो यहाँ है तू! तुझे लगा कि हमें उल्लू बना लेगी। चल बाहर निकल! मैं उधर आया तो
तेरे को ही तकलीफ होएगी।"

मगर उस दुबकी हुई आकृति ने उसकी धमकी भरी बातों पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी और उसी तरह दुबकी रही।

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

****

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]... [illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]?

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]...." [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!"

****

[illegible]
"[illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]... [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"□□... □□....!!" □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□

"□□ □□□□□?" □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□! □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□, □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□" □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□ □□□□□! □□□□□ □□□□ □□□□□?" □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□

"□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□, □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□... □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□, □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□, □□□□□ □□□□□ □□ □□... □ □□□□□" □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□

"□□□□ □ □□□□?" □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□

"□□□□□□ □□□□ □□! □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□" □□ □□ □□□□□□-□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□

"□□□□ □□ □□□□□□?" □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □ □□ □□□□

"□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□, □□... □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□! □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□

"□□□□□□□ □□ □□□□□□!" □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□

"□□□□□! □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□.... □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□" □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□

"□□! □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□?" □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□

"□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□.... □□□□□ □□ □□□□□□□! □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□... □□ □□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□? □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□?" □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□
"□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□" □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□

□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□

"□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□" □□□□□□□□ □□□□□□□□□□

"□□□□□□!! □□□□□.. □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□" □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□

"[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"□□□□□! □□□□ □□ □□□□ □□□□" □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□

"□□□□ □□! □□□□ □□□□□ □□□□□! □□□□□□ □□□□□□" □□□□□ □□ □□□□□

□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□- □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□! □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□, □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□

"□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□?" □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□

□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□, "□□□□□! □□□□□! □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□"

□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□-□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□
□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□? □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□... □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□, □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□-□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□, □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□

"□□□□□□ □□□□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□

[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible].. [illegible].. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

****

[illegible]

"[illegible]
[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]? [illegible]! [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]? [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अनामिका रात हुई घटना की जानकारी फिलहाल किसी को नहीं देना चाहती थी। आखिर भरोसा करता कौन? परिधि ने भी तो कोशिश की। ये एक स्वाभाविक सी बात थी। कोई अपने अंदर छिपे डर को दबाने के लिए... तो कोई खुद को आधुनिक दिखाने के लिए इन सबसे किनारा करने में परहेज नहीं करता था। मगर सच तो सच ही रहता है, चाहे उसे कितने भी पर्दों में छिपा लिया जाए और एक सच ये भी है कि कुछ सच छिपे रहें तो ही सभी के लिए बेहतर होता है। अनामिका को भी फिलहाल यही करना था। उसने अपने सामने खड़े इंस्पेक्टर अंकित और वरूण की ओर देखा, जो इस केस के बारे में बातें कर रहे थे।

"तो इंस्पेक्टर अंकित! आपको क्या लगता है? परिधि को कोई वहम हुआ है।" वरूण ने परिधि पर एक नज़र डालते हुए कहा।

"पता नहीं! एक संभावना यह भी हो सकती है कि परिधि बहुत ही ज्यादा कमजोर है। शारीरिक रूप से भी... और... मानसिक रूप से भी। हो सकता है कुछ पुरानी घटनाऍ॑ उसके दिमाग में बैठी हुई हों, जो पूरी तरह से उसके दिमाग से इरेज नहीं हुई हों और नीम बेहोशी की हालत में अपने
दिमाग में चली उन्हीं घटनाओं को उसने सच मान लिया हो। ये भी हो सकता है कि कभी रास्ते में उन गुंडों के साथ परिधि का कोई बुरा अनुभव रहा हो शायद इसलिए उनके चेहरे इसे याद हों।" इंस्पेक्टर अंकित ने अपनी राय रखी।

"हम्म! हो सकता है।" वरूण ने सहमति में अपना सिर हिलाया।

"पर उस अजीब प्राणी का क्या?" परिधि ने आपत्ति उठाई। उसकी बात सुनकर वरुण ने अपनी सवालिया नजरें एक बार फिर इंस्पेक्टर अंकित के ऊपर डाली।

"उसके लिए भी एक तर्क है।" इंस्पेक्टर अंकित ने कहा।

"और वो क्या है?" अनामिका ने कहा।

"यही कि... हो सकता है उसने कोई हॉरर फेंटेसी मूवी देखी हो हाल फिलहाल में.... जिसका कोई डरावना दृश्य उसके जेहन में अभी तक ताजा हो।" इंस्पेक्टर अंकित ने अगली संभावना सबके सामने रखी। यह सुनते ही परिधि के माथे पर बल पड़ गए थे।

"क्या बकवास है ये!" अनामिका तिड़क कर बोली।

"नहीं! नहीं अनामिका! यह हो सकता है। मनुष्य का दिमाग एक पहेली की तरह होता है, जो अपने अंदर बहुत कुछ छुपा कर रखता है। कई चीजें हमें फौरन याद आ जाती हैं... कई चीजें याद करनी पड़ती हैं... और कई चीजें परिस्थितियों के आवेश में हमें याद आती हैं। जब हम खुश रहते हैं तब हमारी यादों में भी पुराने खुशियों भरे पल ही हावी रहते हैं और जब हम डरते हैं, तो हमारे मन की गहराइयों में दबे हुए ना जाने कितने डरावने पल बाहर आकर हमें और भी डराने का काम करते हैं। ये स्वाभाविक सी
बात है। यादें गुम हो जाने के कारण परिधि बुरी तरह डरी हुई है, इसलिए... उसका जेहन भी इसी तरह की बातों को उसके दिमाग में ताजा करने की कोशिश कर रहा है और शायद यादों के गुम होने की कश्मकश ने ही दो बुरी यादों को मिक्स कर दिया है। एम आई राइट इंस्पेक्टर? शायद आप यही समझाना चाह रहे हैं।" वरुण ने अनामिका को समझाते-समझाते इंस्पेक्टर अंकित की ओर देखा।

"एक्जैक्टली!" इंस्पेक्टर अंकित ने उत्साहित स्वर में कहा। वरूण ने अपने हाथों और सिर को झटका देते हुए अनामिका को देखा। अनामिका के चेहरे पर अनिच्छा के भाव थे, पर वो बात आगे नहीं बढ़ाना चाहती थी। उसने परिधि की ओर देखा, जो अपनी दयनीय दृष्टि से उसी की ओर देख रही थी। परिधि को पता था कि पिछली रात अनामिका ने भी उस चीज को देखा था। अनामिका ने अपनी ऑ॑खों से ही परिधि को सांत्वना देते हुए शांत रहने का इशारा किया। पता नहीं क्यों पर अनामिका का यह इशारा भी उसे राहत दे गया था। इस बात को यहीं विराम दे देना ही सही था, क्योंकि वैसे भी ये मामला इंसानी हदों से बाहर का था।

"अ... इंस्पेक्टर अंकित! एक बात पूछनी थी आपसे।" अनामिका ने थोड़े झिझक से कहा।

"जी कहिए!" इंस्पेक्टर अंकित ने अनामिका की ओर मुखातिब होते हुए कहा।

"[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] 15 [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]!" [illegible]

"[illegible]?"
"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"भैया! आपके पिताजी नहीं दिख रहे हैं!" परिधि ने वरूण से पूछा।

"भैया!" वरूण ने चौंककर परिधि की ओर देखा और फिर एक नज़र अनामिका की ओर उठी। अनामिका के होंठों पर एक दबी हुई सी मुस्कुराहट थी।

"अभी तो वो ग्रीन हाउस में होंगे।" वरूण ने अनामिका पर तीखी नज़र डालते हुए थोड़ी चिढ़ से कहा।

"कहाँ?" परिधि एक बार फिर चौंकी।

"अरे आओ ना! तुम्हें अंकल से मिलवाते हैं। वो भी तुमसे मिलना चाहते हैं।" अनामिका ने उत्साह से उसे एक ओर खींचते हुए कहा और घर के पिछले हिस्से की ओर जाने लगी। वरूण भी उनके साथ ही था।

वो उस इमारत के पीछे एक बड़ा और खुला हुआ सा हिस्सा था, जहाँ नाना प्रकार के पेड़-पौधे लगे हुए थे। उस इलाके में एक बड़ी-खुली जगह में काँच से बना हुआ एक घर जैसा कुछ था। परिधि ने उसे बड़े ही ग़ौर से देखा, जैसे कि एक बार फिर कोई अजूबा देख रही हो।

�

"वो क्या है?" परिधि ने उस काँच के अजूबे की ओर ऊँगली दिखाकर पूछा।

"येऽऽ! आओ तुम्हें पास से दिखाते हैं।" कहते हुए अनामिका उसका हाथ पकड़कर उसे उसके अंदर ले गई। परिधि आँखें फाड़े चारों ओर इस तरह देख रही थी, जैसे कि वो कोई बहुत ही हैरतअंगेज नमूना हो। अंदर पहुँचते ही उसकी आँखें बदस्तूर फटी की फटी ही रहीं। अंदर चारों ओर बड़ी ही तरतीब से गमलों में छोटे बड़े पौधे लगे हुए थे।

�

"तो, ये है.... हमारे अंकल का ग्रीनहाउस!" अनामिका ने अपने हाथों को फैलाकर परिधि की ओर देखते हुए कहा। दूसरी ओर परिधि उन सभी पौधों को बड़े ही ग़ौर से देखते हुए आगे बढ़ने लगी। वो उनकी पत्तियों को छू-छूकर देख रही थी। आगे बढ़ते-बढ़ते वो एक पौधे के सामने जाकर रूक गई और जैसे उसे पहचानने की कोशिश करने लगी।

"क्या हो गया? इतने ग़ौर से क्या देख रही हो?" अनामिका ने उससे पूछा।

"ये सब तो आयुर्वेदिक औषधियों के पौधे हैं। है ना! ये शतावरी है, ये अश्वगंधा, ये घृत कुमारी और ये... ये... याद नहीं आ रहा है इसका नाम। पर ये.... बहुत ही दुर्लभ है।" यह कहकर परिधि ने वरूण और अनामिका को ख़ासा हैरान किया।

"अरे वाह! तुम्हें तो इनकी अच्छी-ख़ासी जानकारी है।" उन सभी को अपने पीछे से एक भारी-भरकम सी आवाज सुनाई दी। उन तीनों ने आवाज की दिशा में देखा तो 5 फीट 10 इंच लंबा एक रौबदार शख़्सियत का मालिक उनके सामने खड़ा था। सिर के बालों में से कहीं-कहीं सफेदी के तार दिखाई दे रहे थे, जिन्हें छिपाने की कोशिश बिल्कुल भी नहीं की गई थी। तेज भरे चेहरे में रौबीली मूँछें शानदार लग रही थीं। उन्होंने हाथ में ग्लब्स पहन रखे थे। उनके एक हाथ में छोटी सी खुरपी और दूसरे हाथ में एक बाल्टी थी जिसमें खाद भरी हुई थी। परिधि ने अनुमान लगाया कि यही वरूण के पिता होंगे।

"अंकल! ये परिधि है। वही हादसे वाली। और परिधि... ये वरूण के पिताजी हैं और... मेरे अंकल!" अनामिका ने दोनों तरफ परिचय करवाते हुए कहा। परिधि ने यह सुनते ही हाथ जोड़ते हुए उन्हें मुस्कुरा कर नमस्कार किया।

"ओह! तो आखिरकार नाम याद आ ही गया।" वरूण के पिता ने मुस्कुराते हुए कहा।

"जी नहीं! ये कामचलाऊ नाम तो हमने दिया है, फिलहाल गुजारे के

[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

****

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible] " [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"□□□□□□□□!"
"□□□□!"

"□□□□ □□!"

□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□, □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□, "□□□□ □□□□□□□ □□□!"

"□□ □□ □□□ □□! □□□□□ □□!" □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□

"□□□□! □□□□□!"

"□□□.... □□□□□□□ □□□□□□!" □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□

"□□□□□! □□.... □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□!" □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□

"□□□!"

□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□, □□ □□□□□-□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ "□□□□!" □□□□□□□□ □□ □□□□□

"□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□" □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□

"□□□□□! □□□□ □□□ □□□□□!" □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□

"□□□□ □□?" □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□

"□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□

"□□□ □□□□!" □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□

"□□□□ □□□! □□□ □□!" □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□

"□□□□! □□ □□□□!" □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□

"□□□□ □□□□□?" □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□

"□□□□!" □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□

"□□□□ □□□□□□□□! □□□□□□□□ □□□ □□ □□... □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□... □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□" □□□□ □□ □□□□□

"□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]"

****

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]"

"[illegible]!"

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]"
"[illegible]..." [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible]

"[illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]!"

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]!

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]....

"[illegible]?"
"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible]..... [illegible].. [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

'[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]... [illegible]. [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

□□□□□□!"

"□□□□□!" □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□!" □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□, □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□

"□... □□□□□□□ □□□□!" □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□! □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □ □□□□!" □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□

****

□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□

"□ □□□□!"

□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□

"□□□□□□□□!"

"□□□□. □□□□□ □□□□□□!"

□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□, □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□

"□□□□□□□□□ □□□□□□□□□! □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□!" □□□□□ □□□□□□, □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□

"□□□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□

"□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□-□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□
****

□□□□ □□□□□-□□□□□ □□□□ □□-□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□, □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□, □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□-□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□-□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□

□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□-□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□... □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□-□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□

□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□, □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□

[illegible]

"[illegible]?"

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]?"

[illegible]

"[illegible]!"
"[illegible]! [illegible]!"

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]
"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]? [illegible].." [illegible]

"[illegible]! [illegible]... [illegible]"
[illegible]

"[illegible]? [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]-[illegible].... [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]? [illegible]!" [illegible]

"[illegible]"
[illegible]

"[illegible]! [illegible]... [illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]-[illegible]! [illegible], [illegible]? [illegible]... [illegible]-[illegible].... [illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]"
[illegible]
[illegible]

"[illegible]... [illegible] 20 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]..." [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]" [illegible]
[illegible]!"

[illegible]! [illegible]

[illegible]

****

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"तो फिर ये?" आशुतोष ने फोन की ओर इशारा करते हुए कहा।

"ये तो ऐसे ही एक दिन अपने और अनामिका के भविष्य के बारे में सोच रहा था। ना जाने क्या सूझा... हम दोनों की भविष्य की तस्वीरें उतारने लगा, जिसका परिणाम मुझे ये मिला।" चैतन्य ने उस फोन की ओर देखते हुए थोड़ी कड़वाहट से कहा। आशुतोष के दिल और चेहरे पर अपनी चोरी पकड़े जाने के निशान साफ-साफ दिखने लगे। उसके हाथ में फोन में उसी औरत की तस्वीर थी, जो दीवाली वाले दिन चैतन्य के घर आई थी और जाहिर सी बात थी कि कौन थी।

"चैतन्य! मैं... वो.... तुम्हें समझा.."

"रहने दीजिए! इसे समझने के लिए बाद में बातें करेंगे। अभी मुद्दा कुछ और ही है।" आशुतोष की बात को काटते हुए चैतन्य ने कहा।

"कैसा मुद्दा?" आशुतोष चौंका।

"आप लोगों ने मेरे साथ जो भी किया, उसने मेरी अवचेतन दृष्टि को जागृत कर दिया है।
मुझे विजन दिखाई देने लगे हैं।" चैतन्य ने धमाका किया।

"विजन! क्या मतलब है तुम्हारा?" आशुतोष एक बार फिर से चौंका।

"मुझे नहीं पता कि मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ, पर हुआ है और... मैं बस भविष्य ही नहीं... अतीत भी देख सकता हूॅ॑।" चैतन्य ने गंभीर आवाज और चेहरे के साथ कहा।

चैतन्य की बातें आशुतोष पर एक के बाद एक हमले कर रही थीं। उसे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या बोले। मगर बोलना तो था।
"तुम्हें कैसे पता चला कि ये विजन हैं?" आशुतोष ने संदेह से पूछा।

"शुरू में मुझे भी पता नहीं चला था। मगर धीरे-धीरे अहसास होने लगा। मैं सपनों की ताकत को कभी भी नहीं नकार सकता। पहले मैंने ध्यान नहीं दिया, पर जब इस बार भी सपनों का रंग काला होने लगा, तो मैं सावधान हो गया। पिछली बार तो आप लोगों ने किया था। इस बार भी आप ही थे, ये जानने के लिए ही मैं आपके करीब रहने लगा था, मगर कुछ ही दिनों में मुझे पता चल गया कि ये आपका काम नहीं है। फिर मैंने आपकी लाइब्रेरी की किताबें चाट डाली, तब मुझे इसके बारे में पता चला।" चैतन्य ने बहुत ही आराम से कहा।

"तुमने मुझे क्यों नहीं बताया?" आशुतोष की आवाज में शिकायत थी।

"मैं बस... पहले अनामिका से बात करना चाहता था।" चैतन्य ने अपने हाथों की उंगलियों को देखते हुए कहा।

"तुमने कहा कि सपने काले होने लगे! किस तरह काले?" आशुतोष ने कौतूहल से पूछा।

"अनामिका से पिछली मुलाकात के बाद एक बार फिर से मेरे सपने जिंदा होने लगे। फर्क बस इतना था कि इस बार कोई चित्रलेखा नहीं थी, बल्कि मैं अनामिका को देखने लगा था, जिसमें और भी कई नए और अंजाने चेहरे जुड़ गए थे। ये सपने बड़े अजीब होते हैं। मुझे डराते तो नहीं, बस परेशान करते थे और फिर.... एक दिन मैंने अनामिका को किसी पंख वाले इंसान से उलझते देखा, कुछ घड़ियाॅ॑ देखीं... कुछ सीढ़ियाॅ॑ देखी। और फिर ढेर सारी आग। इस बार मैं बुरी तरह से डर गया था। मुझे कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि हो क्या रहा है! इतना तो समझ गया कि जो कुछ भी हो रहा है उसमें आपकी और अनामिका की संलिप्तता है, पर कैसे? ये
समझ में नहीं आया। फिर जब आपने यहाॅ॑ आने की बात की तो एक बार फिर मेरे दिमाग को कुछ झटका सा लगा था, जिसे मैं समझ नहीं पाया। सच तो यही है कि कई बार मैं नहीं समझ पाता।" चैतन्य ने उलझे हुए शब्दों के साथ कहा।

आशुतोष को बहुत कुछ समझ में आकर भी समझ में नहीं आया। आखिर चैतन्य में ऐसी क्या खास बात थी कि उसे ऐसी असाधारण शक्ति मिली। अब ये उसके लिए शुभ था या अशुभ... ये तो वक्त ही जानता था। फिलहाल चैतन्य के इस खुलासे ने आशुतोष कौ आश्चर्य के समुंदर में गोते जरूर लगवा दिए थे।

****

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]!" [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

हुए थे। उसने हैरान ऑ॑खों से खाली पड़ी सुनहरी कुर्सी की ओर देखा, जो खाली पड़ी थी।

"आओ सृष्टि! क्या खबर लाई हो!" उसके पीछे की ओर से आवाज आई। वह चौंककर पीछे मुड़ी। एक 55-60 की दरमियानी उम्र का व्यक्ति कोने में बने आतिशदान के पास आराम कुर्सी पर बैठा हुआ था, जिसमें आग जल रही थी, जिससे उस कमरे में हल्की सी गर्माहट थी। बाहर हो रही बारिश से मौसम की तासीर थोड़ी ठंडी हो चुकी थी। इसलिए बाहर से आने के बाद इस कमरे में आतिशदान की गर्म सोहबत उसे रास आ रही थी।
"उन्होंने बहुत ही चालाकी से उसे अपने सुरक्षा घेरे में रखा हुआ है। याददाश्त अभी तक लौटी नहीं है उसकी। उसके कमरे में भी एक गहरी नज़र डाली मैंने। कोई ख़ास या संदिग्ध लगा नहीं है अभी तक।" सृष्टि बोली।

"और उसके बारे में कुछ?"

"दुविधा ग्रस्त तो बहुत लगी मुझे, पर वे लोग उसे सहज रखने की पूरी कोशिश कर रहे हैं।" सृष्टि ने जानकारी दी।

"तुम पर किसी को शक तो नहीं!" सामने वाले ने सवाल किया।

"अनामिका को है शायद! वो बहुत चालाक है। मगर वो शायद सही समय का इंतजार कर रही है, इसलिए शांत बैठी है।" सृष्टि ने सामने बैठे व्यक्ति को बताया।

"फिर तो उसने उन दोनों को भी बता दिया होगा।" उस व्यक्ति ने कहा।

"हो सकता है। आज अनंत कुमार वो बाॅक्स भी ले आए हैं। मैंने नज़र रखी थी, पर मुझे मिली नहीं।" सृष्टि ने कहा।

"तुम्हें क्या लगता है? उन्हें अप्रूवल मिल गया होगा!" व्यक्ति ख़ासे चिंतित स्वर में बोला।

"उनके चेहरे की हैरानी से तो बात समझ में नहीं आई।" सृष्टि उलझन भरी आवाज में बोली।

"उन्हें अप्रूवल मिलना हमारी परेशानी बढ़ा सकता है। वैसे भी अनामिका की शक्तियों को नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता है और आशुतोष को
कम आंकना भी हमारी बेवकूफी ही होगी।" वह व्यक्ति अभी भी चिंतित दिखाई दे रहा था।

"अगर उस दिन वो तीनो बदमाश उस खंडहर में नहीं आए होते, तो शायद वो लड़की हमारे पास होती। मैं सचमुच शर्मिंदा हूॅ॑।" सृष्टि ने दबी हुई आवाज में कहा।

"जो हो गया, उस पर चर्चा करके कुछ हासिल नहीं होना है, तो आगे पर ध्यान देते हैं। तुम्हारा पिछला रिकॉर्ड शानदार रहा है, इसलिए इस गलती के लिए तुम्हें माफ़ कर दिया गया है, मगर आगे अब गलती की कोई भी गुंजाइश नहीं है। उस लड़की को वहाॅ॑ से निकालना ही होगा।" वह व्यक्ति बेचैनी से बोला।

"मगर चीफ! अगर उन्हें अप्रूवल मिल गया, तो उन्हें वार करने का अधिकार मिल जाएगा।" सृष्टि ने समस्या को सामने रखा।

"मगर वो बस रक्षक बन सकते हैं। उन्हें आगे बढ़ने के लिए कुछ और भी चाहिए।" उस व्यक्ति ने जैसे सृष्टि के साथ -साथ खुद को भी तसल्ली देते हुए कहा था।

"तो क्या आचार्य निशिकांत..."

"नहीं! उनकी उम्र हो चुकी है और हैरत है कि उनका उत्तराधिकारी उन्हें मिला नहीं है अब तक।" वह व्यक्ति ख़ासी हैरानगी से बोला।

"तो क्या... ये हमारे लिए अच्छा है?" सृष्टि का असमंजस भरा सवाल आया।

"फिलहाल तो है। जिस दिन वो उन्हें मिल गया... उनकी ताकत बढ़
जाएगी और ये... हमारे समूह के लिए अच्छी बात नहीं है। आने वाले दिन आसान नहीं होने

□□□□ □□□□"

"□□!"

"□□□□ □□□□ □□□! □□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□" □□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□

"□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□! □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□!" □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□, □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□

****

□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□-□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□, □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ 11 □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□

□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□, □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□

"□□□□ □□□ □□□□? □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□

"□□□□□□ □□□□... □□□□ □□□ □□□□□" □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□

"□□ □□□□ □□?" □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□

□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□, "□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□ □□□"

"□□□□ □□ □□□?" □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□

"□□□□!" □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□, □□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□

"□□□□□□□! □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□-□□□□□ □□□□ □□□□" □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□

□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□..

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]... [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

****

[illegible] 11 [illegible] 15 [illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]"

"[illegible]..."

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]... [illegible]!" [illegible]

"[illegible]... [illegible]"

"[illegible]?"

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

****

[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"

"[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?"

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

****

[illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible], [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible]!
[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!"

[illegible]

****
[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]"

"[illegible]! [illegible]"

"[illegible]! [illegible]?"

"[illegible]"

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]!" [illegible]

[illegible].... [illegible]

[illegible]? [illegible]?" [illegible]

[illegible]! [illegible]" [illegible]

[illegible]?" [illegible]

[illegible]..."

[illegible]!"

[illegible]?" [illegible]

[illegible]" [illegible]

[illegible]!"

[illegible]?" [illegible]

[illegible]" [illegible]

[illegible]?" [illegible]

[illegible].... [illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"

"क्या?" एक साथ तीन हैरानी भरी आवाजें आई थीं।

"हाँ! आज से 150 साल पहले रानी चित्रलेखा वाली घटना ने तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र के साथ-साथ हमारी दुनिया के कई लोगों को झिंझोड़ कर रख दिया था। उस समय इसी अहेरी समूह के भ्रष्ट सदस्यों की वजह से रानी चित्रलेखा को उनका न्याय नहीं मिल सका था। चूंकि तांत्रिक श्रेष्ठ ऊँचे ओहदे पर थे इसलिए अहेरी सभा के साथ उनकी जान पहचान और निकटता भी थी।" अनंत कुमार अतीत में खोते हुए बोले।

"तो उन्होंने उसी समय कुछ क्यों नहीं किया?" अनामिका ने सवाल किया।

"क्योंकि उस समय तांत्रिक श्रेष्ठ भी इसी अहेरी समूह का हिस्सा थे, जो गलत लोगों को सजा दिया करता था। पर उस समय बहुत कुछ बदल गया। उस समय सिर्फ पूरब ही ऐसा नहीं था... जिसने सब को पथभ्रष्ट किया था। पूरब ने उनके अधिकारियों को भी अपनी तरफ मिला लिया था, जिससे उन्होंने हमेशा ही चित्रलेखा को गलत माना था। इसलिए उनकी नजर में चित्रलेखा को खत्म करना ही आखिरी उपाय था और यह काम तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र को मिला था। उस समय तक कई लोगों के ना चाहने के बाद भी अपराधियों को अपने हक में बोलने का कोई अधिकार नहीं था और ना ही कोई उनके पक्ष में खड़ा हो सकता था। चूंकि उस समय चित्रलेखा की वजह से हर्षित भी अहेरी समूह के निशाने पर आने लगा था... इसलिए तांत्रिक श्रेष्ठ को उसकी बहुत चिंता हो गई थी और इसीलिए वह हर्षित को चित्रलेखा से दूर करना चाहते थे। हर्षित को बचाने की जद्दोजहद में ही वो हमारी दुनिया के काले राज की गहराई में उतर गए। चित्रलेखा की मृत्यु आपातकालीन परिस्थितियों की वजह से जरूरी हो गई थी इसलिए तांत्रिक श्रेष्ठ उस समय कुछ ना कर सके। लेकिन चित्रलेखा की मृत्यु ने उनके दिल दिमाग पर इतना बोझ डाल दिया कि वो इन सबसे अलग हो गए। इस बीच साधारण मनुष्य की भूमिका निभाते हुए भी वह अपनी जिज्ञासु प्रवृत्ति को रोक नहीं सके और अंततः हमारी दुनिया का काला रहस्य उनके सामने खुल गया।" अनंत कुमार की आवाज भारी होने लगी थी।

"तो क्या प्रहरी समूह तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र ने बनाई थी?" अनामिका ने अपना पहलू बदलते हुए कहा।

"हाँ! तांत्रिक श्रेष्ठ चाहते थे कि ऊँचे रसूख वाले लोगों के पैरों तले कुचल जाने वाले हमारे दुनिया के लोगों को भी साथ और इंसाफ मिल सके। उन्हें अपनी बात कहने का अधिकार मिले। इन सब को लेकर उन्होंने उसी समय पूरी ताकत से अपना प्रतिरोध जाहिर किया था। हमारी दुनिया के लोग अहेरी समूह की ज्यादितियों से परेशान हो चुके थे। इसलिए जब तांत्रिक श्रेष्ठ ने प्रहरी समूह का गठन किया, भारी संख्या में लोगों ने उनका समर्थन किया था। अहेरी समूह तांत्रिक श्रेष्ठ की बढ़ती भूमिका से तिलमिला उठा था। मगर कहते हैं ना कि सच कि ताकत बहुत बड़ी होती है। लाख चाहने के बाद भी वो तांत्रिक श्रेष्ठ की आवाज को दबा नहीं पाए और इस तरह अस्तित्व में आया हमारा प्रहरी समूह, जो सही को सही कहता है और गलत को गलत मानता है।" अपनी बात समेटते हुए अनंत कुमार का चेहरा गर्व से दमकने लगा था।

�

"फिर तो अहेरी और प्रहरी समूह के बीच तनाव हमेशा बहुत ज्यादा रहता होगा।" अनामिका ने कहा।

"वो तो है।" अनंत कुमार ने फीकी मुस्कुराहट के साथ कहा।

"और तीसरा समूह! वो कौन सा है?" चैतन्य ने पूछा।

"शक्ति समूह! ये समझ लो कि वे सभी.... जो ना तो अहेरी समूह का हिस्सा है और ना ही प्रहरी समूह का हिस्सा है वह इस समूह में आते हैं और इन्हीं के सदस्यों को सजा दी जाती है या फिर न्याय दिया जाता है।" अनंत कुमार मेज में रखे पेपरवेट को घुमाते हुए बोले।

�

"और यदि अहेरी या प्रहरी समूह का कोई सदस्य गलती करे तो?" चैतन्य ने एक बार फिर

जिज्ञासा से पूछा।

"उसकी गलती पता चले... तो फिर वो समूह का सदस्य नहीं रहता। उसके
बाद उस पर उसी तरह कार्यवाही होती है, जैसी होनी चाहिए। ये अलग बात है कि अहेरी अपनी गलती नहीं मानते हैं।" अनंत कुमार ने न्याय प्रक्रिया समझाते हुए कहा।

"इस अहेरी समूह की मुख्य समस्या है क्या आखिर?" आशुतोष ने पूछा।

"समस्या यह है कि जबसे प्रहरी समूह का गठन हुआ है अहेरी समूह ने अपनी प्रतिष्ठा लगातार खोई है। वो उसी प्रतिष्ठा को वापस पाना चाहते हैं।" अनंत कुमार ने समस्या का मूल बताते हुए कहा।

"और वो कैसे?"

"मैंने पहले भी बताया ना! चित्रलेखा वाली घटना हमारी दुनिया की सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण घटनाओं में से एक थी, जिसने हमारी दुनिया में बहुत कुछ बदल कर रख दिया। तो वो अहेरी.... उस घटना को ही बदलना चाहते हैं। सोचो! अगर वह घटना ही इतिहास से मिट गई तो.... प्रहरी समूह का अस्तित्व भी मिट जाएगा।" अनंत कुमार ने समस्या की गंभीरता को समझाते हुए कहा।

"वो कैसे?"

"समयचक्र के रहस्य को सुलझाकर!" अनंत कुमार ने जवाब दिया।

"और ये समय चक्र का रहस्य है क्या?" इस बार सवाल अनामिका ने किया था।

"यही तो हमें भी सुलझाना है।" अनंत कुमार ने लाचारी से कहा।

"और इसी उलझन-सुलझन से ही दोनों समूहों की प्रतिष्ठा जुड़ी हुई है। एम
आई राइट?" अनामिका ने दिमाग पर जोर देते हुए कहा।

"सही कहा।" अनंत कुमार ने अनामिका की बात का समर्थन किया।

"पर कुछ तो ऐसा होगा, जो हमें इस समस्या को सुलझाने में मदद करे?" चैतन्य ने थोड़ा उकताकर कहा।

"उस लड़की के अलावा और कुछ भी नहीं है हमारे पास! इसलिए तो उसकी सुरक्षा इतनी अहम है।" अनंत कुमार ने एक बार फिर से लाचारी दिखाई।

"तो क्या... अहेरी समूह की नज़रें भी हैं परिधि पर?" आशुतोष ने पूछा।

"यकीनन! बस उनकी चाल क्या होगी... इसी पर नज़र रखना है हमें।" अनंत कुमार ने आशंका जताते हुए कहा।

"एक मिनट! तो क्या वो पिशाच... अहेरी समूह का है?" चैतन्य ने उस ख़ौफनाक प्राणी को याद करते हुए कहा।

"पता नहीं! वो कौन है? उसकी कहानी भी कोहरे में ही छिपी हुई है। उसके बारे में भी पता लगाना ही होगा।" अनंत कुमार के माथे पर चिंता की लकीरें उभर आई।

"पर परिधि!" अनामिका ने रात की घटना की ओर सभी का ध्यान दिलाते हुए कहा।

"उसके लिए भी कुछ सोचना पड़ेगा। मुझे ताज्जुब है कि वो पिशाच बिना इजाजत के अंदर कैसे आ गया? कोई भी पिशाच बिना इजाजत के घर के अंदर नहीं आ सकता।" अनंत कुमार के माथे पर चिंता की लकीरें उभर
आई थीं।

"पर ये पिशाच है कौन? परिधि के पीछे क्यों पड़ा है ये? पहले दिन से ही वो उसके पीछे

□□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□ □□! □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□? □□□□□□ □□ □□□□ □□? □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ " □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□□ □□ □□... □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□" □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□□□□□ □□□□□! □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□-□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□□

"□□□□□□ □□ □□□□ □□.... □□□□□□□□□ □□□□□!" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□ □□□□ □□□□□...?" □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□

"□□□□□□□! □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□, □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□, □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□... □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□... □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□-□□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□!" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□

"□□□□□□ □□□□□! □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□... □□□□ □□ □□□□□□ □□□□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□

□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□, "□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□! □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□"

"□□□□□□! □□ □□□□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□□□□□□□... □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□... □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□... □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□!" □□□□□□□□ □□ □□□□□

"□□□□ □□□□. □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□

"□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□!" □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□

"□□□□□ □□□□□□□! □□□□. □□□□□... □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□?" □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□
"□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□!" □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□□! □□□□□ □□□□□□, □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□

"□□ □□□□□□!" □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□

"□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]....." [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]?"

"[illegible]..." [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]? [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]...." [illegible]....
[illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]? [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]-
[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]?"

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]?"

[illegible]

"[illegible]..."

[illegible]

"[illegible]?"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

□□□

"□□□□ □□?"

□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□, "□□□□ □□□□□!"

□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□-□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□, □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□, □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□

"□□□□ □□□□□! □□ □□! □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□" □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□□! □□□□□ □□□□□□!" □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□

"□□□□□! □□ □□ □□□□ □□□□□□! □□ □□□□ □□ □□□□" □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ "□□ □□□□□! □□□□□□□□! □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□, □□ □□□□□□ □□ □ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□! □□□□ □□□□□ □□□□□□" □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□□!" □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□

"□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□!" □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□

"□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□?" □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□

"□□□□ □□! □□ □□□□□□□! □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□!" □□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□

"□□□□□? □□□□ □□□□□? □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□?" □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□

"□.. □... □... □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□" □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□

"□□□□□ □□□□ □□ □□! □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□" □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□-□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□" □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□

"□□□□□ □□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□□□ □□! □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □ □□□□ □□□□" □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□

"□□□□□□! □□ □□□□□ □□ □□□□□ □ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□!" □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□□□□!" □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□

"□□□□! □□□□ □□ □□□□□□! □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□-□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□, □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □ □□□□ □□□□" □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□

[illegible]

****

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]
"[illegible].... [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible]

"[illegible]? [illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

ये समय उन सभी के लिए बहुत ही उचित था। अनामिका और आशुतोष दोनों की ही नज़रें तेजी से चैतन्य की ओर घूमी। चैतन्य ने भी इस मौके का फायदा उठाना सही समझा। आशुतोष तेजी से बाहर निकला, ताकि सृष्टि का रास्ता रोक सके। इधर चैतन्य ने मुस्कुराते हुए परिधि का सीधा हाथ पकड़ कर मुस्कुरा कर कहा, "तो दिखाओ जरा! क्या लिखा है तुम्हारे हाथों में?"

"क्या सच में? मुझे लगा कि आप मजाक कर रहे हैं।" परिधि ने चिहुंक कर कहा।

"अरे यार! परिधि तो सब समझ गई।" कहते हुए चैतन्य ने बुरा सा मुॅ॑ह बनाया। उसकी बात सुनकर परिधि ने बेवकूफी से अनामिका की ओर देखा।

"अ... चलो ठीक है ना! अब परिधि ही समझदार है तो क्या करें? है ना गीता!" अनामिका ने गीता की ओर देखते हुए कहा, जो अभी भी किताबों में डूबी हुई थी।

"क्या? कुछ कहा क्या?" गीता ने चौंकते हुए अपना सिर ऊपर उठाकर चैतन्य और अनामिका से कहा। उसकी तल्लीनता ने उन दोनों को हैरान किया था। मतलब कि कोई भी इतना ज्यादा किसी काम में कैसे खो सकता है कि उसे आसपास की खबर ही ना रहे।

"कुछ नहीं! तुम पढ़ो। तुम्हारी परीक्षाऍ॑ हैं ना!" चैतन्य ने उससे भौंह चढ़ाकर कहा।

"हाॅ॑!" कहकर उसने एक बार फिर किताबों में अपनी नज़र गड़ा दी।
परिधि का ध्यान भी उसी की ओर चला गया था।

चैतन्य ने अनामिका को एक बार फिर से गीता पर नज़र रखने का इशारा करते हुए अपना सिर झटका। अनामिका गीता के पास जाकर बैठ गई और उसकी किताब में देखते हुए कुछ इस तरह बैठ गई कि चैतन्य और परिधि के कम से कम हाथ गीता को ना दिखाई दें। हालांकि उसकी अजीब सी तल्लीनता ऐसा कुछ देखने से मना ही कर रही थी। चैतन्य ने अपने होंठों पर एक खिंची हुई सी नकली मुस्कान सजाई और परिधि से बोला,

"सब व्यस्त हो गए। चलो! जब तक सब आते हैं हम भी कोशिश करते हैं हाथ पढ़ने की। कुछ-कुछ रेखाओं को तो हम भी पहचानते हैं। ये देखो! ये होती है जीवन रेखा!" कहते हुए चैतन्य ने परिधि की हथेली पर बनी हुई एक रेखा पर ऊंगली रख दी, मगर अगले ही पल वह चौंक पड़ा। उसने चोर नज़रों से अपनी हथेली पर नज़र दौड़ाई, जहाॅ॑ उसकी जीवन रेखा सीधी कलाई की ओर बढ़ी हुई थी। मगर परिधि की जीवन रेखा थोड़ा आगे जाकर गोलाई से वापस मुड़ते हुए बस हथेली में खो गई थी। उसने एक परेशान नज़र परिधि पर डाली। उसी समय परिधि ने भी उसे देखा और उसके देखते ही चैतन्य की सिमटी हुई मुस्कान फिर से चौड़ी हुई।

"तो क्या दिखा आपको?" परिधि ने अपनी थोढ़ी को अपनी दाहिनी हथेली में टिकाते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर चैतन्य ने उसे एक गहरी नज़र से देखा और फिर गर्दन तानकर बोला, "उसके लिए तो ध्यान लगाना पड़ेगा बच्चा।"

परिधि उसकी यह कलाकारी देखकर हॅ॑स पड़ी और बोली, "तो लगाइए ध्यान!"

"तो तुम भी ऑ॑खें बंद करो और बेईमानी नहीं करना। ठीक है।" चैतन्य
ने चेहरे पर गंभीरता ओढ़ते हुए कहा। परिधि हर पल उसकी हरकतों का मजा ले रही थी। उधर अनामिका भी बीच-बीच में उन दोनों पर नज़र डाल रही थी। उसकी बात सुनकर परिधि ने अपनी हॅ॑सी होंठों में भींचते हुए अपनी ऑ॑खें बंद कर लीं। चैतन्य उसकी ओर देखता रहा, जब अगले ही पल परिधि ने अपनी एक ऑ॑ख खोलकर उसे देखा। उसकी इस बेईमानी पर चैतन्य ने अपनी एक भौंह ऊपर की और फिर परिधि ने घबराकर अपनी ऑ॑खें भींच लीं। चैतन्य ने दो पल फिर इंतजार किया, मगर इस बार परिधि ने अपनी ऑ॑खें नहीं खोली। बल्कि वो बहुत ही शांत दिखाई देने लगी थी, जैसे कि सचमुच ध्यान की गहराई में चली गई हो।

"चैतन्य जल्दी! कुछ भी पकड़ो, पर जल्दी!" अनामिका ने चैतन्य की ओर झुकते हुए बहुत ही धीमी आवाज में कहा।

अनामिका की बात सुनते ही चैतन्य ने अपने बाऍ॑ हाथ के ऊपर परिधि का बायाॅ॑ हाथ रखा, फिर... उसके ऊपर अपना दाहिना हाथ रख दिया और अपनी ऑ॑खें बंद कर लीं। परिधि के हाथ को अपने हाथों के बीच रखे हुए चैतन्य को कुछ ही देर में एक हल्की सी कंपन महसूस हुई

[illegible]

"[illegible]! [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]... [illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]..." [illegible]

"[illegible]" [illegible]

****

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 200 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] 25 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

ऊपर उठने लगे थे। ऐसा लग रहा था जैसे कि उस ठंडे पानी में उबाल आ गया हो। अनामिका ने कुछ देर तो ये सब देखकर भी जब्त किया हुआ था, मगर जल्द ही उसका धैर्य जवाब दे गया और उसने घबराकर चैतन्य का हाथ पकड़ लिया। इरादा तो चैतन्य का हाथ बाहर निकालने का था, मगर उसी समय उसने चैतन्य के हाथ के पास से रंगों को बुलबुलों के साथ ऊपर आते देखा, जो धीरे-धीरे उस पानी की सतह पर फैलने लगे थे। मद्धिम रोशनी वाला वो कमरा धीरे-धीरे उस स्मृति पात्र से निकलती रोशनी से भर गयाऔर उनके सामने कुछ मिली-जुली तस्वीरें सफाई से उभर गईं।

�

अनंत कुमार ने तेजी से अपने फोन में पानी की सतह पर बनी उस तस्वीर की पिक ले ली और फिर उस सतह पर होने वाली अगली प्रतिक्रिया का इंतजार करने लगे। थोड़ी ही देर में उन तस्वीरों के रंग पानी के अंदर खिंचते चले गए और फिर पानी की सतह एक बार फिर से बेदाग नीली हो गई। उन सभी की नज़रें चैतन्य के चेहरे पर टिक गईं, जहाँ अभी भी प्रयासों का जोर दिखाई दे रहा था। बंद पलकों के नीचे उसके आँखों की पुतलियाँ तेजी से घूम रही थीं। चैतन्य के चेहरे के तनाव ने अनामिका को उसका बाजू छोड़ने से मना कर दिया था। वो कभी उसके चेहरे की तनी हुई माँसपेशियों को देखती... तो कभी उसकी नज़र नीचे ठहरे हुए पानी पर चली जाती और फिर जल्द ही एक बार फिर से चैतन्य के हाथ के पास पानी के बुलबुलों के साथ कुछ धुंधले से रंग निकले और पानी की सतह पर फैल गए। सभी ने देखा कि वो एक लड़की और एक लड़के की तस्वीर थी, जिसमें लड़के का चेहरा दिखाई नहीं दे रहा था और ना ही लड़की के नाक-नक्श स्पष्ट थे। ऐसा लग रहा था... जैसे कि वो कोहरे से बनी हो।

�

अनंत कुमार ने एक बार फिर पानी की उस धुंधली सी सतह की पिक्चर क्लिक कर लीं। अचानक चैतन्य के हाथ काँपने लगे, जिसने उसका हाथ थामे खड़ी अनामिका को डरा दिया। चैतन्य के चेहरे का तनाव बढ़ गया और उसके माथे पर पसीना चमकने लगा था। उसके होंठ काँपते हुए खुले और उन सब को सुनाई दिया,

"माया! अल्फी!"

और यह कहते ही चैतन्य ने अपनी आँखें झटके से खोल दीं। वो बुरी तरह हाँफ रहा था। उसने अपना सिर नीचे झुका लिया था। अनामिका ने तुरंत उसका हाथ बाहर निकाला और उसके चेहरे को चिंता से देखते हुए बोली, "तुम ठीक हो।"

उसकी आवाज सुनकर चैतन्य ने हाँफते हुए ही ऊपर देखा और फिर सामने अनामिका का चिंता से भरा चेहरा उसे और परेशान कर गया। उसने खुद को संभालते हुए कहा, "ठीक हूँ मैं!"

"आओ बैठो यहाँ!" कहते हुए अनामिका उसे पास ही एक कुर्सी के पास ले गई और ऐहतियात से उसे उस पर बैठा दिया। आशुतोष उसके लिए पानी ले आया। अनंत कुमार स्टडी टेबल के एक छोर पर बैठे हुए उन दोनों तस्वीरों को ध्यान से देख रहे थे। पहली तस्वीर में एक कमरे की, एक घड़ी की और तांत्रिक गतिविधि की भी एक तस्वीर थी। कुछ और भी धुंधली यादें थी, पर अनंत कुमार ने इन तीनों पर ही अपनी तवज्जो ज्यादा रखी।

पानी पीने के बाद चैतन्य कुछ बेहतर महसूस कर रहा था। उसके लिए यह अनुभव नया ही नहीं... बल्कि बहुत ज्यादा तकलीफ़देह भी था। हालत दुरूस्त होने पर अनंत कुमार ने उसकी ओर प्रशंसा भरी नज़रों से देखते हुए कहा, "मैंने कहा था ना.... तुम कर लोगे!"
"तो कुछ पता चला क्या?" चैतन्य ने कौतूहल से पूछा। मकसद अपनी कोशिश की कामयाबी के बारे में जानना था।

"बहुत कुछ तो आया है शिकंजे में, बस पहचान करना बचा है।" अनंत कुमार ने अपना फोन चैतन्य के सामने हिलाते हुए कहा।

"और कैसे होगी... ये पहचान?" अनामिका ने पूछा।

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]-[illegible]!"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] "[illegible]! [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible], "[illegible]?"

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]!

"□□□! □□ □□□□□□□.. □□□□□□□□ □□□!" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□
□□□

"□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□" □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□
□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□-□□□□□ □□□□ □□?" □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□
□□□□□ □□□□ □□□□□

□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□
□□□□,"□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□"

"□□□□□□! □□□□□ □□□□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□

"□□□□ □□□□□□ □□□□□□" □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□
□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□, □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□
□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□

"□□!"

□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□
□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□
□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□
□□ □□ □□, □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□

"□□□□□□□! □□ □□□□□ □□ □□□□ □□... □□ □□□□ □□□□□□... □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□
□□□□□□ □□ □□□□□□ □□, □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□
□□ □□□□□□□ □□□□□□?" □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□
□□□□□□□□□ □□ □□□□□

"□□□□□□ □□□□□□□!" □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□
□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□
□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□-□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□, □□□□
□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□

"□□□□□ □□... □□□□ □□ □□□□ □□□□□□" □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□

"□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□! □□□□ □□□□□□ □□□□□!" □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□
□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□
□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□
□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□, □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□
□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□
□□□□□□□ □□□□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □ □□□□ □□, □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□
□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□
□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□
□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□?

"[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"I have never met him!" Elizabeth said decidedly, before she remembered that she ought not to betray so much curiosity as to inquire who he was. Presently Miss Lucas asked him whether he did not admire the prospect. "Very much indeed, I assure you, and I must confess that I never spent a pleasanter evening than I have done here this evening; the company is so very friendly and unaffected. And then your cousin is so charming a performer! I am sure you must be very happy to have such a cousin."

Elizabeth's attention was caught by this speech, and she looked for a moment at Mr. Collins, to see how he bore it. Her cousin's complacency was quite restored, and he replied with a very self-satisfied air, "Such compliments are very gratifying to my family, I am sure, and I am happy to find that my cousin's accomplishments are so much admired. I shall certainly tell my mother all that you have said on the subject."

"Mr. Collins, I think," said Miss Lucas, "has a very pretty house at Hunsford, and his wife is very fortunate in having such a neighbour as Lady Catherine de Bourgh."

"Very true, indeed, Miss Lucas," said Mr. Collins, "and I am sure my wife is very fortunate in having such a neighbour as Lady Catherine de Bourgh. She is a most excellent woman, and I am sure she will be very happy to have you all to dine with her at Hunsford."

Elizabeth was not sorry when the evening was over, and she was glad to find that Mr. Collins did not intend to stay long after the ladies left the room. He was very anxious to get home, and he was very impatient to see his wife again. He was very fond of her, and he was very proud of her. He was very proud of his house, and he was very proud of his garden. He was very proud of his parish, and he was very proud of his patron. He was very proud of his wife's relations, and he was very proud of his own relations. He was very proud of his wife's cousin, and he was very proud of his own cousin. He was very proud of his wife's friends, and he was very proud of his own friends. He was very proud of his wife's acquaintance, and he was very proud of his own acquaintance. He was very proud of his wife's dinner, and he was very proud of his own dinner. He was very proud of his wife's tea, and he was very proud of his own tea. He was very proud of his wife's coffee, and he was very proud of his own coffee. He was very proud of his wife's wine, and he was very proud of his own wine. He was very proud of his wife's bed, and he was very proud of his own bed. He was very proud of his wife's room, and he was very proud of his own room. He was very proud of his wife's house, and he was very proud of his own house. He was very proud of his wife's garden, and he was very proud of his own garden. He was very proud of his wife's parish, and he was very proud of his own parish. He was very proud of his wife's patron, and he was very proud of his own

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]
[illegible]"

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]?"

"[illegible]"

"[illegible]!"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"

"[illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]?"

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]! [illegible]!"

"[illegible]?"

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

[illegible] -

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

दस साल पहले की घटना से भी पहले की। ऐसी ही... या मिलती-जुलती!"

अंकित ने सोचने की मुद्रा में उनकी ओर देखा और फिर सिर हिलाते हुए कहा, "पता नहीं!"

"तो पता करो! ये भी पता करो कि तुम्हारे भैया को क्या और कैसे पता चला सब? वो जब निजी तौर पर छानबीन कर रहे थे, तब कोई तो सबूत जुटाया होगा उन्होंने। कुछ भी!" अनंत कुमार अंकित पर जोर देते हुए बोले।

"हो सकता है। उनके कमरे में ढूंढना पड़ेगा।" अंकित ने सहयोग भरी आवाज में कहा।

"पर आपने तो कहा था कि सिरा उस डायनों के बसेरे से मिलेगा।" चैतन्य ने अनंत कुमार से कहा।

"ये खून से भरी कहानी तो वहीं से शुरू हुई है, जिसके छींटे आज तक हम सब पर पड़ रहे हैं। तो ठीक यही रहेगा कि इन छींटों की मदद से ही मौका-ए-वारदात की ओर बढ़ा जाए।" अनंत कुमार ने सबको समझाते हुए कहा।

"पर... यदि इस तरह की घटनाऍ॑ पहले भी हुई हैं और अभी भी हो रही हैं, तो इतनी बड़ी घटना अब तक दबी हुई क्यों है?" अनामिका ने पूछा।

"कोई तो है... जो छिपकर खेल खेल रहा है। वही बड़ी सफाई से इन सभी घटनाओं को सबकी नज़रों से छिपाकर रखे हुए है।" अनंत कुमार ने कहा।
"आपका मतलब है कि उस पिशाच का कोई साथी है!" अंकित ने उछलते हुए कहा।

"साथी है या कुछ और... कह नहीं सकते।" अनंत कुमार ने उलझा हुआ सा जवाब दिया।

"ऐसा क्यों?" अनामिका ने ऑ॑खों से भी सवाल किया।

"क्योंकि वो जो चीज है ना! जिसे हम पिशाच कह रहे हैं.... एक किवदंती है और वो सच में है... ये यकीन करना अभी भी मेरे लिए बहुत मुश्किल हो रहा है।" अनंत कुमार ने एक गहरी साॅ॑स के साथ कहा।

"किवदंती! कहीं आप वो छद्म पिशाच साधना की बात तो नहीं कर रहे हैं!" अंकित ने ऑ॑खें सिकोड़ते हुए कहा।

अंकित की बात सुनकर सभी ने चौंककर उसकी ओर देखा था। अनंत कुमार की ऑ॑खें भी उसे जाॅ॑चते हुए सिकुड़ी थीं।

"तुम कैसे जानते हो इस विषय में?" अनंत कुमार की गंभीर आवाज में सवाल आया।

"भैया के... कमरे में... कुछ कागजात मिले थे। बड़ी अजीब-अजीब बातें लिखी थीं। उसमें से पिशाच शब्द की वजह से ये याद रह गया था मुझे।" अंकित की बात ने एक बार फिर से सभी को चौंकाया था।

"कैसे कागजात?" आशुतोष ने पूछा।

"बहुत पहले भैया के कमरे की तलाशी ली थी मैंने, उस समय कागज़ों
का एक पुलिंदा मेरे हाथ लगा था। मगर उसमें जो कुछ भी लिखा था, मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया था। इसलिए उस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया मैंने।" अंकित ने सवाल का जवाब दिया।

"और क्यों ध्यान नहीं दिया?" अनंत कुमार ने हैरानी से पूछा।

"क्योंकि.... इस तरह की किताबें मेरी भाभी पढ़ती थीं।" अंकित ने सकुचाते हुए कहा।

"क्या? पर क्यों?" एक साथ कई स्वर आए।

"दरअसल.... मेरे भैया-भाभी की शादी को तीन साल हो गए थे और वो माॅ॑ नहीं बन सकी थीं।"

कहकर अंकित चुप पड़ गया।

"समझ गया! केसर अम्मा वाली परिस्थिति!" चैतन्य ने एक आह भरकर कहा।

"दु:खद है ये सब! कभी-कभी लगता है कि हमारा समाज इन निम्नतर सोचों से कभी ऊपर उठेगा या नहीं। पचास साल पहले केसर अम्मा और आज तुम्हारी भाभी... दोनों की एक जैसी स्थिति देखकर निराशा ही होती है।" आशुतोष ने कड़वाहट से कहा। उसकी बात ने सभी का मन कसैला कर दिया था।

"तो क्या? तुम्हारी भाभी के संपर्क में कोई था और इसी संपर्क की वजह से ही तुम्हारे भैया इन सबमें उलझ गए!" चैतन्य ने एक संभावना व्यक्त की।

"हो सकता है! ये दुनिया चालाक शिकारियों से भरी हुई है, जिनकी नज़रें हमेशा किसी कमजोर शिकार की तलाश में रहती हैं और शायद तुम्हारी
भाभी भी वही थी।" अनंत कुमार ने अफसोस भरे लफ़्ज़ों में कहा। उनकी बात सुनकर एक बार फिर से अंकित का चेहरा मुरझा गया।

"शिकारी!" अनामिका चिहुंक कर बोली। सभी की नज़रें उसकी तरफ उठी थीं। अनामिका अपनी बड़ी-बड़ी ऑ॑खों से उन सभी की ओर देख रही थी और सभी उसकी ओर सवालिया नज़रों से देख रहे थे।

"अरे बाबा! मेरा मतलब है कि... इन सब के पीछे किसी अहेरी का तो हाथ नहीं! आखिर वो ही तो परिधि के पीछे भी पड़े हैं। हो सकता है उनका इस पिशाच से कोई संबंध हो। कहीं वो उस पिशाच के लिए ही तो परिधि को हासिल नहीं करना चाहते।" अनामिका ने अपनी बात सबको समझाई। उसकी बात सुनकर सबकी ऑ॑खें फैली थीं।

"अब ये अहेरी क्या है?" अंकित ने मुॅ॑ह बिगाड़ कर पूछा।

"बस ये समझ लो हमारे विरोधी हैं।" अनंत कुमार ने संक्षिप्त सा उत्तर दिया। उनके जवाब से अंकित और भी उलझ गया था।

"पर वो पिशाच जब परिधि के पीछे यहाॅ॑ तक आ सकता है, तो वो किसी और की मदद क्यों लेगा?" आशुतोष ने पूछा।

"पता नहीं! शायद अब मेरी सुरक्षा में सेंधमारी करके वो सीधे ही परिधि को ले जाना चाहता हो।" अनंत कुमार ने कंधे उचकाते हुए कहा।

"ये भी हो सकता है कि उसके पास समय ना हो और इस कमी की वजह से वो बेसब्र हो रहा हो।
इसलिए उसने यहाॅ॑ आने की हिम्मत की।" चैतन्य ने कहा।

"परिधि के लिए वो हर तरह से हाथ-पैर मार रहा है। एक बार परिधि ने
सपने में भी देखा था खुद को ही.... और कोई कह रहा था कि तुमने उससे उसकी माया छीनी है। वो बदला लेगा!" अनामिका बोली।

"माया! ये नाम बहुत सुनाई दे रहा है और साथ ही अल्फी भी!" अनंत कुमार ने कहा।

"तो क्या इन दोनों नामों में ही सारी कहानी छिपी हुई है?" अंकित ने कहा।

"लग तो रहा है। लगता है जानकर या अंजाने में परिधि ने उनके साथ कुछ बुरा कर दिया और अब उसे उसका बदला चाहिए। परिधि ही इन सारे सवालों का जवाब है, पर उसकी गुम हो चुकी यादों में सारे जवाब भी खो गए हैं। हमें अगर सब कुछ हमारे हाथ में रखना है तो ये सब जल्दी करना होगा।" अनंत कुमार ने बेचैनी से कहा।

"ऐसा क्यों?" चैतन्य ने पूछा।

"क्योंकि ये पहली बार है कि वो पिशाच खुलकर सामने आ गया है। जबकि आज तक वो बस कहानियों और अफवाहों में ही छिपा हुआ था। जाहिर सी बात है कि अब उसे किसी की परवाह नहीं है। वो अब खुद को छिपाना नहीं चाहता.... वो बस परिधि चाहता है... किसी भी कीमत

[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]?"

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

□□□ □□□□

"□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□! □□-□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□!" □□□□□ □□ □□□□

"□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□!" □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□

" □□□□□!"

"□□!" □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□

"□□□□□ □□□ □□□!" □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□
"□□ □□□□!"

"□□... □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□?" □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□

"□□□ □□□□□?" □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□

"□□□! □□□. □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□! □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□!" □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□

"□□□? □□□□□! □□□ □□□ □□□□?" □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□

"□□□□! □□ □□□□□ □□□ □□... □□ □□□□□ □□□. □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□" □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□

"□□!" □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□

"□□□. □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□!" □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□

"□□! □□□ □□□□ □□□□□" □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□

"□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□, □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□" □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□ "□□□ □□ □□ □□□□!" □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□

"□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□.. □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□! □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□.... □□ □□□□ □□ □□□□□□" □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□

□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□, "□□□ □□! □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□"

□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□

"□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□!"

□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□

"[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]? [illegible]... [illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

□□ □□ □□□□□ □□□□

"□□□□ □□□□□□□! □□ □□□□ □□ □□... □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□?" □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□

"□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□?" □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□? □□□□ □□□□ □□□□ □□?" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□

"□□□□□□! □□□□□□ □□□□ □□□□!" □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□

"□□□□□□! □□□□ □□□□ □□! □□□□□ □□□□□ □□□□! □□□□ □□□□□□?" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□
□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□, □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□

"□□□□□ □□□□□! □□□□ □□□□□□? □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□? □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□?" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□ □□□□□! □□□□ □□□□□! □□□□□ □□□□□ □□! □□□□□ □□!" □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□, □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□-□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□

"□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□? □□□□ □□□□ □□□□ □□?" □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□-□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□

"□□□□□ □□□□ □□□□□! □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □
□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□

"□□□□ □□ □□□□!" □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□

□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□, "□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□, □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□?"

□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□, "□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□? □□ □□ □□□□□ □□... □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□... □□ □□□□□ □□□□! □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□.. □□... □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□... □□ □□□□□□...□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□? □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□... □□ □□□□□... □□□□□ □□□□□□□ □□□□" □□□□□□ □□□□□ □□□□-□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□-□□□□□ □□□□□ □□□□□

"□□...□□... □□□□□?" □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□

"□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□! □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□! □□□□ □□□□□□... □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ " □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□-□□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□?" □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible](Illegible) [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

□□□□

"□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□?" □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□
□□□□□ □□□□□

"□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□... □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□□□□□□□□□ □□.... □□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□"
□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□-□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□

"□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□?" □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□

"□□□ □□□□ □□□□! □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□, □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□, □□ □□ □□ □□... □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□... □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□" □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□

"□□□ □□□□ □□□?" □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□

"□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□-□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□... □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□
□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□" □□□□ □□□□□ □□ □□□□

"□□ □□ □□□□ □□?" □□□□□□ □□ □□□□□

"□□□□ □□□□□!"

"□□ □□□□ □□□□ □□?" □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□

"□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□.... □□□□□ □□ □□! □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□

"□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□" □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□

"□□ □□□□.... □□! □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□!" □□□□
□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□

"□□□ □□□ □□!" □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□

"□□□□... □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□!" □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□

"□□ □□ □□□□□ □□□!" □□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□

"□□□□ □□□□□□□! □□ □□□ □□ □□□□... □□□ □□□□□□□□ □□, □□□□□ □□ □□ 150 □□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□
□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□" □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□□
□□□□□□□□ □□□

"आपका मतलब है कि उस नर्क के द्वार के पीछे की काली शक्ति... जिसे तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र ने काबू में किया था, उसने ये साधना सिद्ध की थी! पर वो थी कौन?" आशुतोष ने अपने गुम होते हवास को ठीक करते हुए कहा।

"वो तो कोई भी नहीं जान पाया। पर जो भी थी बहुत ही शक्तिशाली थी। कहते हैं पूरे एक महीने की घोर साधना और मंत्रोच्चार के बाद उस काली शक्ति पर नियंत्रण पाया जा सका था। उसके बाद किसी के भी ऐसी किसी सिद्धि प्राप्ति की जानकारी नहीं है। इसलिए मुझे उस पिशाच के अस्तित्व पर संदेह था।" अनंत कुमार रहस्यों की परत खोलते हुए बोले।

"सबकी जानकारी के अनुसार जिसने सिद्धि प्राप्त की... वो एक औरत थी। लेकिन ये तो एक नर पिशाच है, जो अभी हमले कर रहा है। जाहिर सी बात है कि उसने उस जटिल साधना को सिद्ध किया है, तभी तो वो है। हम सबने उसे देखा है। इतनी बड़ी बात छिपी कैसे रह गई?" आशुतोष ने गणित सुलझाने की कोशिश करते हुए कहा।

"आसान सी बात है कि ये पिशाचों की साधना है, इसलिए किसी पिशाच कुल के सदस्य ने ही इसे साधा है। मगर पिशाचों ने इसे क्यों छिपा रखा है, ये समझ में नहीं आया।" अनंत कुमार ने कहा।

"शायद उन सबको किसी तरह की बदनामी का डर हो!" अनामिका अपने
कंधे उचकाते हुए बोली।

"अनामिका! छद्म पिशाच साधना एक श्राप है श्राप! जो इसे सिद्ध कर ले, उसे अभिशप्त माना जाता है और वो अभिशप्त जिस पर नज़रें टेढ़ी कर ले, वो भी अभिशप्त हो जाता है। तृषा ने बताया था कि पूरा पिशाच समूह ही अभिशप्त हो चुका है। मतलब कि वो सभी उस पिशाच रूपी श्राप से जूझ रहे हैं.... पर इतना होकर भी उसकी असलियत क्यों नहीं बताई जा रही है... ये समझ में नहीं आ रहा है।" अनंत कुमार उलझन से बोले।

"एक मिनट! मुझे कुछ कहना है!" अंकित की आवाज ने सबका ध्यान खींचा था।

"क्या?"

"आप लोगों ने ध्यान दिया कि तृषा जी ने कहा था वो लौट आया है.... इसका क्या मतलब है?" अंकित ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

"मुझे पता है। इसलिए तो हमें तुम्हारी मदद चाहिए।" अनंत कुमार ने कहा।

"कैसी मदद?" अंकित ने कहा।

"पिछली बार भी पिशाच इसी समय आया था। दोनों ही बार समय एक ही है... तो मैं ये जानना चाहता हूं कि पिछली बार से पहले भी ऐसा कुछ हुआ है क्या? बिल्कुल इसी समय में! मुझे यकीन है कि उस समय में भी ऐसी बात को दबा दिया गया होगा। मगर कहीं तो कुछ होगा। हो सकता है अंकित के भैया के पास कुछ हो। कोई भुक्तभोगी हो! तुम बस इतना ही पता करके बताओ अंकित। आखिर तुम्हारा और हमारा दर्द एक ही है।" अनंत कुमार ने अंकित से इल्तिजाई लहज़े में कहा।
"आप सब कौन हैं? क्या हैं? ये तो मुझे अभी भी समझ में नहीं आ रहा है। पर इतना जान गया हूॅ॑ कि हम एक ही दवा ढूंढ रहे हैं। मैं मदद करूंगा आप सभी की।" अंकित ने दृढ़ स्वर में कहा।

"शुक्रिया अंकित! मुझे यकीन है कि साथ रहकर तुम बहुत कुछ समझ जाओगे। अभी सब कुछ बताने का समय भी नहीं है। हमें अब अपनी एक पुख़्ता योजना बनानी होगी। अंकित मैंने तुमसे जो कहा... तुम वो करो। हम इस माया और अल्फ़ी की गुत्थी को सुलझाते हैं। जो कुछ भी है इन्हीं से जुड़ा है और परिधि इन सबमें कैसे आ गई? ये भी पता करना है। तब तक रक्षक भी अपनी शक्तियों की धार तेज कर लें। आगे लड़ाई खतरनाक होने वाली है। क्या हाथ आएगा और क्या हाथ से जाएगा.... पता नहीं। बस इतना पता है कि उस पिशाच को परिधि चाहिए, जो हम उसे कभी नहीं देंगे।" अनंत कुमार की आवाज सख़्त थी।

"एक और बात! परिधि के अंदर भी तो शक्तियाॅ॑ होंगी!" अंकित ने एक और सवाल उठाया।

"□□□□!" □□□□□□□□ □□□□□□

"□□□□! □□□□ □□ □□□?" □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□

"□□□□! □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□... □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□!" □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□

"□□□□□! □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□?" □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□

"□□□□... □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□" □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□

"□□□□! □□ □□□□ □□□ □□□ □□.... □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□!" □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□

"□□ □□□□ □□?" □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□

"□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□" □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□

"□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□?" □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□, □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□

"□□ □□□ □□□□ □□□ □□? □□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□□" □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□

"□□ □□ □□□□ □□□ □□!" □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□

"□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□" □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□

"□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□!" □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□

"□□□ □□□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□

"□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□? □□ □□□ □□□□□" □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□

"□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□?" □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□

"□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□! □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□... □□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□!" □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□

"□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□! □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□! □□□□□□□!"

[illegible]

"[illegible]?"

"[illegible]!"

"[illegible]..."

"[illegible]!"

"[illegible]?"

"[illegible]!"
"[illegible]!"

"[illegible]?"

"[illegible]!"

"[illegible]..."

[illegible]

"[illegible]...."

"[illegible]"
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!"
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible]!"

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

****

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"परेशानी! कैसी परेशानी?" आशुतोष का सवाल आगे आया।

"मैं, आप और अनामिका जो भी हो रहा है, उसके लिए पहले से ही मानसिक रूप से तैयार थे, पर चैतन्य और वरूण के साथ ऐसा नहीं है।
शक्तियाॅ॑ प्राप्त करना और उन शक्तियों को संभालना... नियंत्रित करना दो अलग बातें हैं। चैतन्य और वरूण को अपनी शक्तियों के सही प्रयोग के लिए उन पर नियंत्रण पाना होगा। इसलिए उन्हें अपनी मानसिक शक्ति को ध्यान के माध्यम से बढ़ाना होगा। " अनंत कुमार ने कहा।

"और वो दोनों अगर ऐसा नहीं कर सके तो!" आशुतोष ने एक आशंका व्यक्त की।

"तो वहीं होगा... जो हो रहा है।" अनंत कुमार ने आशुतोष को फिर से चौंकाया।

"क्या मतलब?" आशुतोष ने ऑ॑खें सिकोड़ कर पूछा।

"आशुतोष जी! आप ये अच्छी तरह से जानते हैं कि ताकत कभी भी अकेले नहीं आती और चैतन्य-वरूण को जो ताकतें मिली हैं वो तो और भी खतरनाक हैं। ये उसी का साथ देती हैं, जो इन्हें सम्मान दे सके। वरना यही ताकतें उसे धारण करने वाले को बर्बाद कर देती हैं। वरूण और चैतन्य के साथ यही हो रहा है। ये ताकतें किसी जंगली घोड़े की तरह हैं, जिसे उन दोनों को ही काबू में करना है। ये ताकतें अपनी लगाम इतनी आसानी से नहीं देती किसी को। आपको क्या लगता है कि क्या कोई और रक्षक नहीं हो सकता है? होते हैं, पर बिना ताकतों के... किसी सहायक की तरह। ये ताकतें इन दोनों को परखने के लिए लगातार उनकी मानसिक अवस्था पर चोट कर रही हैं, जिसकी वजह से इनका ध्यान भटक रहा है और ये दोनों ही उग्र हो रहे हैं। सबसे पहले तो इनके मन को शांत करना है। किसी भी तरीके से। वरना इस लड़ाई में साथ होने की बात भूल ही जाइए।" अनंत कुमार की आवाज में चेतावनी मिली थी।

"तो आप वरूण को समझाइए! दोनों में से कोई एक भी बात को समझ जाए तो समस्या सुलझ सकती है।" आशुतोष ने अनंत कुमार के पाले में
गेंद डालते हुए कहा।

"कोई फायदा नहीं है। समझाने से वो और भी उग्र होंगे। लोग जब डरते हैं, तो सावधान हो जाते हैं, पर ये दोनों डर से ही उग्र हो रहे हैं। इस तरह उग्र होंगे तो ताकत पाने से पहले खो देंगे। तो फिर हल क्या निकालें?" अनंत कुमार ने शिथिल स्वर में कहा।

"शायद अब मैं समझ रहा हूॅ॑ आपकी बात। समस्या ये है कि उन दोनों को अनामिका को खोने का डर तो है, पर शायद इस डर के ऊपर भी एक डर है!" आशुतोष ने कहा।

"और वो क्या?"

"यही कि उनकी हार सामने वाले की जीत होगी। वो अपनी हार से नहीं डर रहे हैं, बल्कि सामने वाले की जीत से डर रहे हैं और यही डर उन्हें उग्र कर रहा है।" आशुतोष ने अपनी बात समझाई।

"ये सब ठीक करना होगा क्योंकि ये हमारे लिए टीम की सबसे बड़ी कमजोरी साबित हो सकती है। पिशाच हमेशा हमारे मन से खेलते हैं और अगर वरूण और चैतन्य मानसिक रूप से आपस में मजबूती से नहीं जुड़ेंगे, तो वो पिशाच वहीं बार-बार वार करेगा। हम हर बार नया ज़ख़्म लेकर उसके भरने का इंतजार नहीं कर सकते हैं।" अनंत कुमार आवेश में बोले।

"अनामिका से बात करनी होगी।" आशुतोष ने कहा।

"और वो क्या?"

"यही कि वो किसी एक का नाम ले ले। आज नहीं तो कल उसे ये करना
ही है, तो आज ही सही। इस तरह दो की बजाय एक ही समस्या होगी हमारे पास, तब शायद हम उसे संभाल भी सकें।" आशुतोष ने एक उम्मीद के साथ कहा।

"अनामिका मान जाएगी!" अनंत कुमार ने संशय के साथ कहा।

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!"

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible].. [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]...." [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]..."

"[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible]..!" [illegible]
"[illegible]!"

"[illegible].. [illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]... " [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]..." [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

****

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

****

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] '[illegible] [illegible]' [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]?"
"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 200 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]...[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"इसकी क्या कहानी है? मतलब कि क्या हुआ था इसके साथ?" वरूण ने कहा।

"इस माया का वजूद भी 200 साल पहले ही मिला है। इस डायरी से ये पता चला है कि 200 साल पहले इस माया को काला जादू करने और पिशाच परिवारों की जासूसी करने के आरोप में जिंदा जला दिया गया था।" अनंत कुमार ने धमाका किया।

"क्या? पर वो क्यों जासूसी करेगी?" अंकित ने सवाल किया।

"वो समय बहुत ही तनाव भरा हुआ करता था। डायनों और पिशाचों के बीच कुछ भी ठीक नहीं था। अपनी ताकत बढ़ाने के लिए दूसरे को नुक़सान पहुँचाने का आरोप दोनों समूह एक-दूसरे पर लगाया करते थे। सुनने में ये आया है कि उस समय किसी डायन ने उस 1000 साल पहले वाली पिशाचिनी को आजाद करने की कोशिश की थी। सबको ये पता है कि ये कितना ख़तरनाक था। तांत्रिकों का एक सक्षम समूह हमेशा से ही इस कार्य में लगा रहता था कि वो पिशाचिनी बाहर ना निकले क्योंकि इससे पिशाचों के समूह बर्बाद हो जाते। उस तनाव के समय में ये बात जगजाहिर हुई थी कि इस षड्यंत्र के पीछे माया का हाथ था। बात साबित हुई तो बहुत बवाल हुआ था। कहा जाता है कि अहेरी समूह जिस पर पिशाच परिवारों की गहरी पैठ थी, उन्होंने डायनों के खिलाफ फैसला सुनाया और सभा के फैसले के आगे किसी की भी सुनवाई नहीं होती थी। भारी जनसमूह के बीच माया को जिंदा जला दिया गया था।

�

बहुत सी डायनें अपनी जान बचाकर वहाँ से भाग गईं और दुनिया भर में तितर-बितर हो गईं। कौन कहाँ गया किसी को पता नहीं चला। डायनों का बसेरा तबाह हो गया।" अनंत कुमार ने पूरी घटना डायरी में लिखे शब्दों की जुबानी बताई।

"आपका मतलब है कि माया को सजा मिली थी। हो सकता है कि परिधि की वजह से उसका राज खुला हो। इसलिए ये अल्फ़ी नाम का पिशाच उसे ढूंढ रहा है। अपना बदला लेने के लिए।" आशुतोष ने उस कहानी से पिशाच का संबंध जोड़ते हुए कहा।

"पर परिधि 200 सालों का फासला तय करके उस समय से इस समय में कैसे पहुँच गई?" अंकित ने अपना आश्चर्य व्यक्त किया।

"किसी ने समय द्वार बनाया था और उसी की मदद से परिधि यहाँ पहुँची है। उसे वो सारी चोटें 200 साल पहले ही लगी थीं।" अनंत ने कहा।

�

"समय द्वार! पर किसने? ये आसान जादू बिल्कुल नहीं है।" आशुतोष ने चौंकते हुए कहा।

"बहुत से राज तो अभी भी नहीं खुले हैं और खुलेंगे इसकी ज्यादा उम्मीद भी नहीं है। उस समय के सभी सबूत बहुत ही सफाई से मिटा दिए गए हैं। वाकई में उस समय क्या हुआ था आज कोई नहीं जानता सिवाय उस पिशाच और परिधि की गुम हुई यादों के।" अनंत कुमार ने कहा।

"तो मतलब कि हम बस इतना जान गए हैं कि परिधि ने माया को ग़लत काम करते पकड़ाया, जिसकी वजह से उसे जिंदा जला दिया गया और अपनी प्रेमिका की मौत का बदला लेने के लिए ही अल्फी ... परिधि का सदियों से पीछा कर रहा है और आखिरकार 200 सालों के बाद उसे ढूंढ लिया है। अब वो उसे जान से मारकर अपने मकसद में कामयाब हो सकता है और हमें यही नहीं होने देना है। एम आई राईट?" अंकित ने पूरी कहानी कुछ पंक्तियों में समेटते हुए कहा।

"बिल्कुल यही।" अनंत कुमार ने कहा।

"इसका मतलब तो ये भी है कि ... जिस अल्फ्रेड के नाम पर हॉस्पिटल है वो अल्फी नहीं है। कोई और ही है, जो उस समय ... नौजवान रहा होगा। तभी तो माया और उसके बीच प्रेम संबंध रहे होंगे।" वरूण ने कहा।

"पर अभी भी ये समझ में नहीं आ रहा है कि ऐसे जंगी माहौल में एक पिशाच और डायन के बीच

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]-[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible]

"[illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible].... [illegible] [illegible] [illegible]

"□□□□□□□!"

□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□, "□□□ □□! □□□! □□ □□...
□□□□□□□□ □□□□□! □□□ □□□! □□□ □□□ □□□□□"

□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□
□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□
□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□
□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□
□□□

□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□
□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□
□□□□□□ □□□ □□□□ □□, □□□ □□□□
□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□
□□□□ □□□ □□ □□, □□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□, □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□
□□ □□... □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□
□□□□□

"□□□□!" □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□
□□□□-□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□

"□□□□ □□□?" □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

"□... □□□ □□□□! □□□ □□ □□?" □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□

"□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□?" □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□

"□□□ □□□□ □□□!" □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□

"□□□□!" □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□, □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□-
□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□, □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□
□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□, □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□

"□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□?" □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□

"□□□ □□□□ □□ □□! □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□... □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□
□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□" □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□

"□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□
□□□□ □□□□" □□□□ □□ □□□□

"□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□
□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□" □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□

"□□□ □□□ □□□□□?" □□□□ □□□□□

"□□ □□□□ □□! □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□" □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□
□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□□

"□□□□!" □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□

"□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□!" □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□
□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□
□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□
□□□ □□□ □□□□ □ □□□ □□, □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□□ □□□ □□□□ □□

[illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]
[illegible]

[illegible]

"[illegible]; [illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]... [illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]! [illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]! [illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]! [illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [

□□ □□□□□□ □□ □□□□□□,

"□□□□□□!"

"□□□□□! □□□□□□! □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□!"

□□□□ 38

□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□... □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□? □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□, □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□

"□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□, □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□" □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□

"□□ □□□□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□... □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□
□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

"□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□?" □□□□□□□ □□ □□□□□

"□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□, □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□, □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□ □□□□□ □□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□, □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

[illegible] [illegible] 14 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"

"[illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]..."

"[illegible]

"[illegible]! [illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"□□□□!"

"□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□, □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□?" □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□

"□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□, □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□, □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□ □□□□□" □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□

"□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□!" □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□

"□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□" □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□

"□□□□□□□□□! □□□ □□□!" □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□
"□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□, □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□, □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□... □□□□ □□ □□□□ □□□" □□□□ □□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□, □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□

"□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□" □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□

"□□ MRD (Medical Records Department) □□ □□□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□, □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □ □□□ □□□" □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□

"□□! □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□" □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□

"□□□□! □□ □□□□ □□ □□□□! □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□" □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□

□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□, □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□, □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□
"□□□! □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□" □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□

"□□ □□ □□□□?" □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□

"□□□□□□□□" □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□, □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□

"□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□

□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□

"□□□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

उठा सके।" अनंत कुमार ने कहा।

"पर इस तरह से तो आप कमजोर ही रह गए!" आशुतोष ने कहा।

"इसलिए तो बाद में उन्होंने रक्षकों की भूमिका भी तय की, जिनका काम समय आने पर एकजुट होकर हर मुसीबत का सामना करना था। इसलिए तो वो रक्षक हैं। उस समय अहेरी समूह ने इसका प्रतिरोध किया क्योंकि उन्हें लगा कि इस तरह से हमारी ताकत बढ़ जाएगी। उन्होंने कहा कि यदि सभी रक्षक प्रहरी समूह से ही होंगे, तो प्रहरी समूह की ताकत बढ़ जाएगी और अहेरी समूह खत्म हो जाएगा और ऐसा होना तांत्रिक श्रेष्ठ के शक्ति संतुलन के नियमों के विरूद्ध था। मगर ऐसा नहीं था। नियति पात्र हमेशा दोनों समूहों के संतुलन को बनाकर ही रक्षकों का चयन करती है, जो सर्वश्रेष्ठ होते हैं। इस नियम के कारण ही रक्षक अहेरी और प्रहरी दोनों ही समूहों से चुने जाते हैं।" अनंत कुमार ने आशुतोष की जिज्ञासा शांत करने की कोशिश की।

"पर मुझे समझ में नहीं आ रहा है कि रक्षक और रखवाले में फर्क ही क्या है? दोनों के एक ही अर्थ हैं। तो दो अलग पद क्यों?" आशुतोष ने अगला प्रश्न दागा।

आशुतोष का प्रश्न सुनकर अनंत कुमार के होंठों पर एक मुस्कान आई। उन्होंने आशुतोष के कंधे पर अपना हाथ रखा और बोले, "इसके लिए आपको इस पूरी व्यवस्था को समझना पड़ेगा।" "तो समझाइए!" आशुतोष ने एक बार फिर से जिज्ञासा दिखाई।

"तो सबसे पहले... तांत्रिक श्रेष्ठ ने ये सब क्यों बनाया। इसलिए क्योंकि अहेरी जो खुद को शिकारी समझते हैं, वो अपनी शक्तियों का दुरूपयोग करके मासूमों को चोट पहुॅ॑चा रहे थे। अपने पद का फायदा उठा रहे थे। उनके निर्णय के सामने किसी को कुछ भी बोलने का अधिकार नहीं था और यही बात तांत्रिक श्रेष्ठ को खटक गई। यहाॅ॑ तक कि उनके गुरू आचार्य रामानुज ने भी अपनी शक्तियों का फायदा उठाकर उन्हें धोखा ही दिया।"

"ये बात तो सही है। अगर उन्होंने सब पहले ही बता दिया होता, तो शायद बहुत कुछ अलग होता।" आशुतोष ने कहा।

"नहीं आशुतोष! ये हमेशा याद रखो कि हम नियति को नहीं बदल सकते। चित्रलेखा के साथ जो हुआ, वो उसकी नियति थी और होनी ही थी, पर आचार्य रामानुज के धोखे की वजह से हर्षित की जिंदगी इस नियति में उलझ गई और तांत्रिक श्रेष्ठ को यही बात चुभ गई। अगर चित्रलेखा के बारे में पहले से ही सब पता होता, तो शायद हर्षित का भविष्य कुछ और हो सकता था, मगर उसके प्रेम का दर्द भरा परिणाम तांत्रिक श्रेष्ठ को अंदर तक हिला गया। वो हमेशा उससे मिलना चाहते थे, बस इसलिए कि उससे माफी मांग सके, पर वो उन्हें कभी नहीं मिला। आचार्य रामानुज भी अहेरी समूह के ही सदस्य थे और उस समूह ने ही उन्हें नर्क के द्वार का प्रहरी चुना था। मगर काम वो उनके इशारे पर ही किया करते थे। इन सब के कारण ही कई बार बेगुनाहों को भी सजा भुगतने के आजाब से गुजरना पड़ता था। आमतौर पर वो सारे सबूत या तथ्य मिटा दिए जाते थे, जो अहेरी समूह के ताकतवर सदस्यों के खिलाफ होते थे और यही एक बड़ा कारण है कि हमें 200 साल पुराने उस पिशाच के बारे में या फिर उस समय हुए हत्याकांड के बारे में कुछ भी पता करने में इतनी दिक्कत आ
रही है। उन्होंने सब नष्ट कर दिया है। बची-खुची कसर पिशाच वाले मामले का उनका अंदरूनी मामला होना है, जिसे वो अपनी धरोहर के रूप में आसानी से किसी से भी छिपा सकते हैं। इस तरह से परिधि आती और वो पिशाच अपनी सुविधानुसार उसका उपयोग कर लेते और किसी को कानों कान इसकी खबर नहीं होती। पर तृषा की वजह से इसका एक धागा मेरी तरफ खुल गया। मगर मैं एक रखवाला था और बिना किसी गलती के मुझ पर प्रहार नहीं किया जा सकता था और यही मजबूरी मेरी भी थी। बस इसलिए ना तो उन्होंने और ना ही मैंने किसी को कोई नुक़सान पहुॅ॑चाया। बिना सबूतों के मेरा कोई भी कदम मेरे लिए ही नुकसान देह साबित हो सकता था। बस इसलिए मैंने इतना सब्र करना बर्दाश्त कर लिया।" कहते-कहते अनंत कुमार रूके थे।

"पर प्रोफेसर साहनी! उनका क्या? आपने उनको क्यों माफ़ कर दिया।" आशुतोष ने पूछा।

"किसने कहा कि मैंने उन्हें माफ कर दिया। आज भी मेरे अंदर वो लावा धधक रहा है, जिसमें मैं उसे जला देना चाहता हूॅ॑। पर हम प्रहरी हैं। अगर अपनी शक्तियों का दुरूपयोग करके हम भी वही सब करेंगे... जो वो करते थे या करते हैं, तो उनमें और हममें क्या फर्क रह जाएगा। प्रहरियों ने हमेशा से ही इस फर्क को बनाए रखा है और अपने उतावलेपन के कारण मैं ये सब बर्बाद नहीं कर सकता था। तांत्रिक श्रेष्ठ हमेशा पूर्ण न्याय में यकीन रखते

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]... [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"इसे इस तरह क्यों लेकर आए हो?" अनंत कुमार ने पूछा।

"इसे मेरे बारे में पता चल गया था। लाया तो बेहोश करके था, पर दरवाजे के पास होश आ गया इसे।" मुकुल ने हांफते हुए कहा और एक कुर्सी में बैठ गया। दिख रहा था कि दरवाजे से इस कमरे तक सृष्टि को लाने में उसे ख़ासी मशक्कत करनी पड़ी थी।

मुकुल की बात सुनकर सभी ने एक बार फिर से फुंफकारती हुई सृष्टि की ओर देखा। रक्षकों के दल के पूर्ण होने का समय आ गया था। कैसे? ये पता नहीं!! पर अब बढ़े हुए कदमों को वापस लेने का कोई भी तुक बाकी नहीं रहा था।

सभी की नज़रें सृष्टि पर जमी हुई थी और वो इस तरह से अपने आपको असहाय पाकर और भी भड़क रही थी। झल्लाहट उसकी ऑ॑खों में साफ-साफ दिखाई दे रही थी।

"अनामिका!" अनंत कुमार ने अनामिका को आवाज लगाई, जिसे सुनकर वो तेजी से उनके पास आई। अनंत कुमार ने उसके कान में फुसफुसाकर कुछ कहा। उनकी बात सुनकर अनामिका ने सृष्टि पर एक नज़र डाली और फिर उसकी ओर बढ़ी। उसे अपने पास आता देखकर सृष्टि बुरी तरह से छटपटाने लगी। मगर अनामिका पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। वो उसके पास गई और उसके जींस और जैकेट की जेबें टटोलने लगी। आखिरकार जैकेट के अंदर वाली जेब में उसे सृष्टि का मोबाइल मिल गया। उस मोबाइल को देखकर सृष्टि की ऑ॑खों में एक हताशा उतर आई।
इसके बाद उसने छटपटाना बंद कर दिया। अनामिका ने वो मोबाइल अनंत कुमार को दे दिया।

"तुम्हारा हथियार! सही कहा ना सृष्टि!" अनंत कुमार की आवाज में हल्का सा तंज था।
सृष्टि ने कोई भी प्रतिक्रिया नहीं दी।

"हथियार मतलब?" आशुतोष ने पूछा।

"सृष्टि हम सभी पर नज़र रखने के लिए अपने इस फोन का इस्तेमाल कर रही थी। इसलिए पिछले दो दिनों से मैं भी फोन का इस्तेमाल बहुत कम ही कर रहा था और आप सभी को भी करने नहीं दे रहा था। ये देखिए हम सभी का नंबर। सभी के नाम लाल रंग में लिखे हैं।" अनंत कुमार ने सभी को लाइन से लिखे नंबर दिखाएं, जिसमें नाम एक ही लिखा था "आखेट" और सबके आगे अलग-अलग नंबर लिखे थे। जैसे कि अनंत कुमार का नं. आखेट 1 के नाम से, अनामिका का आखेट 2 और बाकियों का भी इसी तरह से सेव था।

"मतलब ये हमारे नंबर ट्रैक कर रही थी।" आशुतोष ने कहा।

"हाॅ॑ कुछ वैसा ही। मगर तरीका थोड़ा सा जादुई है।" अनंत कुमार ने कहा।

"मतलब!"

"मैं, मुकुल और मुकुल के पिता ने जब अपना मिशन शुरू किया, तब हम फ़ोन से ही एक-दूसरे से कनेक्ट थे। मगर प्रोफेसर साहनी की वजह से मुकुल के पिता को इसमें भी खतरे का अहसास हो गया था, इसलिए उन्होंने अपनी एक ख़ास तकनीक से हम तीनों के फोन को कनेक्ट कर दिया, जिससे कोई भी हमारे खास मैसेजेस ना पढ़ सके। चूंकि प्रोफेसर
साहनी को मुकुल के पिता पर संदेह था, इसलिए सारे मैसेजेस उड़ाकर हम उसके शक को और पुख़्ता नहीं करना चाहते थे। हमारे बीच के औपचारिकता में लिपटे हुए संदेश ही दूसरों को दिखाई देते थे, पर वो गुप्त मैसेजेस जो हम उस ख़ास सुविधा से भेजा करते थे, उसे हम तीनों ही पढ़ सकते थे। इसी के सहारे तो पिछले दस सालों से हम किसी को पता लगे बिना अपने मिशन में काम कर रहे थे। मगर मुकुल के पिता की मृत्यु ने इस सिस्टम को कमजोर कर दिया है। हम इसके बारे में ज्यादा नहीं जानते इसलिए कुछ कर नहीं सके।" अनंत कुमार ने बताया।

"तो सृष्टि ये सब कैसे कर रही थी?" अनामिका ने पूछा।

"क्योंकि मुकुल के पिता और सृष्टि की रूचियाॅ॑ एक जैसी हैं ना! क्यों सृष्टि.... सही कहा ना!" अनंत कुमार ने कहा। यह सुनकर सृष्टि के शरीर में हल्की सी हरकत हुई।

"[illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [

करना बंद कर दिया है।" अनंत कुमार अंदाजा लगाते हुए बोले।

"किसी ने कुछ नहीं कहा मुझसे। मैंने खुद देखा था! आज से पाॅ॑च साल पहले। आपने मेरे माता-पिता को कितनी बेरहमी से मारा था। सब देखा था मैंने और फिर कितनी चालाकी से उस इल्ज़ाम से बच भी गए। साहनी
अंकल सही कहते हैं। अहेरी समूह को मिटाने की इच्छा आपके अंदर इतनी बलवती हो चुकी है कि आपको खुद सही-गलत की पहचान नहीं रही और.... ये मुकुल जैसे रीढ़ विहीन लोग आपकी मदद कर रहे हैं। पर सच कभी नहीं हारता... ये बात याद रखिएगा।" सृष्टि अपनी पूरी ताकत से चिल्लाकर बोली।

"ओह! तो ये बात है।" अनंत कुमार बुदबुदाए। उन्होंने सृष्टि की ओर देखा, जो अपने दिल का गुबार बाहर निकालने के बाद भी गुस्से से फुंफकार रही थी।

"चैतन्य! इधर आओ!" अनंत कुमार ने सृष्टि की ओर देखते हुए चैतन्य को आवाज दी। एक बार फिर अपना नाम सुनकर चैतन्य सकपकाया था। वो उस सृष्टि से 100 कदमों की दूरी में रहना चाहता था और सभी हर तरह से उसे उसकी तरफ ढकेल रहे थे। वो अपनी जगह से उठा, मगर उसे अपने पैर एक-एक टन वजनी महसूस होने लगे, जिन्हें वो उठाकर आगे बढ़ाना भी नहीं चाहता था।

"अरे यार! जल्दी करो!" चैतन्य को एक जगह बुत की तरह खड़ा देखकर अनंत कुमार गुस्से में तिलमिलाकर बोले। और... इस बार उसके पास आगे बढ़ने के अलावा और कोई चारा नहीं था। आगे बढ़ते हुए उसे सबकी मुस्कुराती हुई शरारती नज़रों की चुभन महसूस हो रही थी।

"मुकुल इसके हाथ खोलो!" अनंत कुमार ने मुकुल से एक बार फिर से कहा।

"सच में!" मुकुल अपनी ऑ॑खें बड़ी करके बोला, जिस पर अनंत कुमार ने उसे भौंह उठाकर देखा था। उनकी ऑ॑खो के इशारे का मतलब समझकर मुकुल ने अनमने ढंग से सृष्टि के हाथ खोले और वो इस मौके का फायदा उठाने की पूरी फिराक में दिखाई दे रही थी। मुकुल ने जैसे ही उसके हाथ
खोले, उसने बिजली की फुर्ती से उस पर हमला करने के लिए हाथ उठाया, मगर किसी ने उसके उस हाथ को हवा में ही पकड़ लिया। ये अनामिका थी। सृष्टि ने उसे खा जाने वाली नज़रों से देखा। एक बार फिर सृष्टि का दिल उसके लिए जहर से भर गया।

"हमें क्या बेवकूफ समझ रखा है।" कहते हुए अनामिका ने उसका हाथ मोड़कर पीछे की ओर पकड़ लिया और उसे धकेलते हुए अनंत कुमार के पास ले गई। सृष्टि ने छूटने के लिए अपना पूरा जोर लगा दिया, पर अनामिका उससे ज्यादा ताकतवर साबित हुई।

"आउच!" वरूण के मुॅ॑ह से निकला, जिसे सुनकर एक बार फिर से सृष्टि ने उसे घूर कर देखा, जो अपनी कलाई को सहला रहा था।

सबने देखा कि अनंत कुमार ने मेज पर एक आईना रख दिया था, जिसे सभी बड़े ही कौतूहल से देख रहे थे। अनंत कुमार ने अपने सीधे हाथ की मुट्ठी को अपने माथे पर लगाया और फिर कुछ देर बाद उस मुट्ठी को आइने के बीचों बीच ले जाकर खोल दिया और अपनी हथेली आईने में टिका दी। अब उन्होंने सृष्टि को अपने हाथ के ऊपर हाथ रखने के लिए कहा, जिसका सृष्टि ने पुरजोर तरीके से विरोध किया। मगर एक बार फिर से अनामिका ने उसका हाथ मजबूती से पकड़कर अनंत कुमार के हाथ के ऊपर रख दिया। सृष्टि को आज पता चल गया था कि अनामिका शारीरिक रूप से उससे कहीं ज्यादा मजबूत थी। उसकी गिरफ्त में वो बहुत ही लाचार लग रही थी।

"चैतन्य अब अपना हाथ सृष्टि के हाथ पर रखो और फिर हमें उस दिन में ले जाओ, जब सृष्टि के माता-पिता की हत्या हुई थी।" अनंत कुमार ने कहा।

"पर मुझे तो मालूम नहीं है ये!" चैतन्य ने कहा।
"मुझे मालूम है। मैं बस सृष्टि को उस दिन का पूरा सच दिखाना चाहता हूॅ॑, जो उसकी नज़रों में कभी पूरा आया ही नहीं। तुम बस अपनी शक्तियों को आदेश दो, जो हमें वहाॅ॑ ले जाऍ॑।" अनंत कुमार ने चैतन्य को समझाते हुए कहा।

चैतन्य की समझ में बात आई तो उसने जल्दी से अपना सीधा हाथ सृष्टि के हाथ पर रख दिया

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]
[illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

देता।

चैतन्य की शर्ट को अपनी मुट्ठियों में दबोचे वो उसे अपने आंसुओं से तर कर चुकी थी और चैतन्य वो बड़ी ही अजीब सी दुविधा में फॅ॑स गया था। वो सृष्टि के साथ इस तरह नहीं बैठे रहना चाहता था और चाहकर भी उसे झटक नहीं सकता था। बत्तमीजी होती ये और बत्तमीज वो था नहीं।
इसलिए किसी तरह वो खुद को संभाले उसी तरह बैठा रहा। थोड़ी ही देर में सृष्टि थोड़ी सी सहज हुई तो वो उसे लेकर खड़ा हुआ। उसने देखा कि सृष्टि ने उसका हाथ अभी भी नहीं छोड़ा था।

"सृष्टि!" चैतन्य ने कहा।

उसकी आवाज सुनकर सृष्टि ने झटके से उसकी ओर देखा, जो अपनी ऑ॑खों से अपने हाथ की ओर इशारा कर रहा था। सृष्टि की नज़र उसके चेहरे से फिसलकर उसके हाथ की ओर गई, जिसे सृष्टि ने बड़ी ही जोर से पकड़ा हुआ था और इसकी वजह से वो चैतन्य के कुछ ज्यादा ही करीब आ गई थी। चैतन्य कुछ भी बोलने की स्थिति में नहीं था क्योंकि उसकी ऊपर की साॅ॑स ऊपर और नीचे की नीचे अटक गई थी। वो उसके बारे में क्या सोचती है, ये जानने के बाद वो उसके सामने सहज हो ही नहीं पा रहा था। सच तो यही था कि वो अनामिका की जगह किसी को देने के लिए तैयार नहीं था। कभी भी नहीं।

उसने सामने अनामिका पर नज़र डाली, जो अब सृष्टि को बहुत ही दर्द भरी नज़रों से देख रही थी। कुछ ही देर में सृष्टि की सारी बनाई हुई धारणाऍ॑ उसके उस अधूरे अतीत की तरह ध्वस्त हो चुकी थीं और अब उसके भी रणक्षेत्र में उतरने का समय आ चुका था, जो रक्षक समूह के लिए एक बड़ी खबर थी।

सृष्टि निढाल सी कुर्सी पर बैठी हुई थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वो कैसी प्रतिक्रिया दे? वो खुद को ठगा और हारा हुआ सा महसूस कर रही थी। सृष्टि और अनंत कुमार के अतीत की इस घटना को सभी ने उस आइने में देख लिया था, इसलिए सभी सृष्टि के दर्द को समझ पा रहे थे। चैतन्य दूर सिर झुकाए बैठा था। सृष्टि को थोड़ा समय लगा, पर वो कुछ-कुछ सहज होने लगी थी क्योंकि इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं था।

"तुम ठीक हो सृष्टि? अनंत कुमार ने सामान्य तरीके से कहा।

"नहीं!" सृष्टि ने कहा।

"समझ सकता हूॅ॑! जिस सच की जमीन पर तुम्हारा विश्वास टिका हुआ था, जब वही नहीं रही, तो विश्वास डगमगाएगा ही। पर तुम चाहो, तो तुम्हारे लिए सब कुछ पहले जैसा ही हो सकता है, बस कुछ चीजें बदल जाऍ॑गी।" अनंत कुमार ने नपे-तुले शब्दों में कहा।

अनंत कुमार की बात सुनकर सृष्टि ने अपनी गुलाबी ऑ॑खों के साथ उन्हें
देखा। बाकियों की नज़र भी उनकी ओर उठी थी।

"देखो सृष्टि! पाॅ॑च साल से जिस बदले की आग में तुम जल रही हो, तुम चाहो तो उसे वैसे ही जलता हुआ रख सकती हो। तुम्हारे लिए प्रोफेसर साहनी और मेरी जगह बदली है, मगर ये चीज नहीं बदली कि... तुम्हारे माता-पिता का कत्ल हुआ था। पर हाॅ॑.... हमारे साथ रहोगी तो अपने तरीके बदलने पड़ेंगे। बदले की भावना पीढ़ियों को तबाह कर देती है और ये तांत्रिक श्रेष्ठ के प्रहरियों के नियम विरुद्ध है। अब ये तुम्हारी मर्जी है कि तुम हमारे साथ रहना चाहती हो, या फिर अकेले आगे बढ़ना चाहती हो। अच्छी तरह सोच लो! हम सब तुम पर कोई दबाव नहीं डालना चाहते। तुम अच्छे से सोच लो, आगे की बात तभी करेंगे।" अनंत कुमार ने उसके सिर पर प्यार भरा हाथ फेरते हुए कहा और उस कमरे से बाहर निकल गए।

सृष्टि ने भरी हुई ऑ॑खों से बाहर जाते हुए अनंत कुमार की ओर देखा। उसने याद करने की कोशिश की कि इतने सालों में प्रोफेसर साहनी ने कभी उसके सिर में प्यार से हाथ फेरा हो। उन्होंने तो अपने स्वार्थ के लिए उसे बस पत्थर बना दिया था, पर आज उस पत्थर में दरार आई थी और कुछ शीतल धाराऍ॑ उस दरार से बह निकली थीं।

उसी समय बाहर डोरबेल बजी।

"ये इस वक्त कौन आया होगा?" वरूण ने घड़ी देखते हुए कहा।

"फूड डिलीवरी वाला होगा। मैंने रात के लिए खाना ऑर्डर किया था।" आशुतोष ने अपनी घड़ी को देखते हुए कहा।

"अरे! बाहर से खाना मंगवाने की क्या जरूरत थी? अनामिका अच्छा खाना बनाती है।" वरूण ने आश्चर्य के साथ अनामिका की तारीफ करते हुए कहा।
"अनामिका! अनामिका! अनामिका! वो क्या बावर्ची है तुम्हारी? जब देखो, उसे किचन में घुसा रखा है। वो तो परिधि और मैं मदद कर देते हैं, वरना इतने लोगों का खाना बनाना आसान है क्या? तुम्हें कभी अपने हाथ से पानी भी निकाल कर पीते हुए नहीं देखा।" आशुतोष ने वरूण को डपटते हुए कहा और बाहर निकल गया।

"अरे! मुझ पर क्यों भड़क रहे हैं। मैं तो कुछ भी खा लेता हूॅ॑, करेले के अलावा।" वरूण भी बमकता हुआ बाहर की ओर निकला। अंकित और मुकुल ने भी एक दूसरे की ओर मुस्कुराते हुए देखा और साथ में बाहर आ गए। अब उस कमरे में सृष्टि के साथ अनामिका और चैतन्य रह गए थे। चैतन्य इतनी देर से सृष्टि से दूर बैठा हुआ था, मगर अब उसे उससे सहानुभूति होने लगी थी। अपनों को खोने का दर्द जितना बड़ा होता है, उसकी गफलत में जीना तो और भी दर्दनाक होता है। अनामिका भी अब शांत दिखाई दे रही थी। उसने सृष्टि और चैतन्य की ओर एक-एक नज़र डाली। चैतन्य ने भी उसकी ओर देखा और फिर उसके पास आ गया।

"तुम चलो! हम आते हैं!" चैतन्य ने सृष्टि की ओर इशारा करते हुए कहा।

"उसका दिल मत दुखाना!" अनामिका ने सृष्टि की ओर देखते हुए भावुक होकर कहा। अनामिका की बात सुनकर चैतन्य मुस्कुराया और उसकी ओर देखकर बोला, "कभी नहीं!"

अनामिका ने बहुत दिनों के बाद चैतन्य को पहले की तरह मुस्कुराकर देखा। उस मुस्कुराहट में ना तो कोई झिझक थी और ना ही कोई तंज! चैतन्य को उसकी वो मुस्कुराहट बहुत राहत दे गई थी। अनामिका के वहाॅ॑ से जाते ही चैतन्य ने सृष्टि पर एक नज़र डाली और फिर उसके पास जाकर बैठ गया। सृष्टि ने अपनी थकी हुई ऑ॑खें उसकी ओर उठाई, पर इस बार हमेशा की तरह चैतन्य को देखकर आने वाली चमक नदारत थी।
चैतन्य को एक नज़र देखने के बाद उसने अपनी ऑ॑खें फिर से झुका लीं कि पलकों पर आत्मग्लानि की बूंदों का बोझ कुछ ज्यादा ही था।

"तुम ठीक हो!" चैतन्य ने बहुत ही नर्मी से कहा। जवाब में सृष्टि ने अपना सिर हाॅ॑ में हिलाया।

"चैतन्य! तुम भी मुझे बहुत बुरी समझते हो ना!" सृष्टि ने अपने दिल पर भारी पत्थर रख कर कहा।

"हमारे समझने से कुछ नहीं होता। जो अच्छा होता है... वो बस अच्छा होता है। बस सबके देखने का अपना-अपना नज़रिया होता है। नज़रिया बदले तो सामने वाली की अच्छाई बुराई और बुराई अच्छाई में बदल जाती है। हम सब नहीं जानते थे कि तुम अपने अंदर इतना दर्द छिपाकर जी रही हो।" चैतन्य ने सृष्टि की ओर देखते हुए संजीदगी से कहा।

"तो क्या अब मेरे लिए तरस आ गया तुम्हारे मन में?" सृष्टि ने अपनी नाक पोंछते हुए कहा।

"नहीं! मुझे नहीं लगता कि तुम तरस खाने वाली चीज हो। बस तुम्हें अपने बारे में फिर से सोचने की जरूरत है और वो भी जल्दी! किसी के पास भी खोने के लिए समय नहीं है।" चैतन्य ने उसकी बात काटते हुए कहा।

"तो तुम नाराज़ नहीं हो ना मुझसे।" सृष्टि ने बहुत ही उम्मीद से चैतन्य की ओर देखते हुए कहा।

"नहीं! बिल्कुल नहीं!" चैतन्य ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। जिस पर सृष्टि के होंठों

[illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible]!"

"[illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible]!"

"[illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?"

"[illegible]!"

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]"

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible], [illegible]...." [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]... [illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]...!" [illegible]

"[illegible]!
[illegible]?" [illegible]

[illegible], "[illegible]"

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]..." [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!"
"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]"

"[illegible]?"

"[illegible]"

[illegible]

"□... □□□□ □□□?"

"□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□... □□ □□ □□□□□□ □□□□□" □□□□□□ □□ □□□□

"□□□□□□□□... □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□" □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□

"□□ □□□□□! □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□" □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□
"□□ □□□□□□□□□ □□□?" □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□

"□□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□" □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□□

"□□ □□□! □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□" □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□

"□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□" □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□

"□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□?" □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□

"□□ □□□ □□□□□ □□!" □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□

□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□

□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□, "□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□! □□□□□ □□! □□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□"
□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□

"□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □ □□□"

□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□-□□□ □□□ □□□ □□□□ □□, □□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□ □□□□, □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□-□-□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ (□□□□□□□□) □□□ □□□□ □□□, □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□

"□□□□□□!" □□□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□

"□□ □□□□□□! □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□!" □□□□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□□
"□□□!" □□□□□□ □□ □□□□□-□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□

"[illegible]? [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]... [illegible]?" [illegible]. [illegible]

"[illegible]? [illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]. [illegible]

[illegible]

[illegible]... [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible]
"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

"□□□□□! □□□□□!" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□

"□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□, □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

"□□□□□ □□□□□□□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□, □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□"□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

"□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□! □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□!" □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□
"□□□□□ □□□□□□□□! □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□, □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

"□□ □□ □□...."

"□□□□□□ □□□□□ □□□□! □□ □□! □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□, □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□□□□! □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□, □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

"□□ □□□□□, □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

"□□□□□!"

"□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□, □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□, □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□?" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□
"□□□□ □□ □□□□! □□ □□□□□□? □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□

"□□□□□! □□□□□□ □□ □□ □□□□! □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□ □□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

"□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□?" □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□

"□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□, □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]?"

"[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]?"

"[illegible]... [illegible]!" [illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]?" [illegible]
"[illegible]...." [illegible]?"

"[illegible]. [illegible]. [illegible]!" [illegible]

"[illegible]?"

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?"

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible] [illegible] [illegible] [

****

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]!"

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]? [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"क्या मतलब?" अनामिका उसके लफ़्ज़ों को समझने की कोशिश करते हुए बोली।

"यही कि.... मैं बेवजह चैतन्य से मुकाबला करने की कोशिश कर रहा था, जबकि हम दोनों बिल्कुल अलग हैं और ये बात देर से ही सही... पर मेरी समझ में आ गई है।" वरूण ने बहुत ही गंभीर लहज़े में कहा।

"समझ आ गई! ऐसे ही अचानक!" अनामिका ने बेयकीनी से उसकी ओर देखकर कहा।

"अचानक नहीं। बात तो पहले ही समझ आ गई थी, पर दिल मानने को तैयार नहीं था। तुम्हें लेकर एक जलन... एक अनकही सी दुश्मनी पाल बैठा था मैं... चैतन्य के लिए। वो कितना परफेक्ट है ना! हर तरह से! मुझे हमेशा डर लगता था कि वो तुम्हें मुझसे दूर कर देगा और तुमसे दूर होने का यही डर इस तरह बेवकूफियों की शक्ल में सामने आया।" वरूण ने अपना अपराध स्वीकारते हुए कहा।
"तो फिर!" अनामिका बोली।

"दरअसल... पिछले दिनों से जब तुम चैतन्य से दूर और आशुतोष जी के ज्यादा करीब हुई, तब मुझे समझ में आया कि मैं बस तुम्हारी दोस्ती खोने से डरता था। मगर दूसरी ओर चैतन्य अपना प्यार तुम्हारी खुशी के लिए खुद ही छोड़ने को तैयार हो गया था। उसके चेहरे पर तुम्हें आशुतोष के साथ देखकर ऐसी कोई तकलीफ़ मैंने महसूस नहीं की, जो मैं पहले चैतन्य के लिए और अब आशुतोष जी के लिए महसूस करने लगा था, जबकि चैतन्य और आशुतोष जी दोनों से ही तुम्हारा रिश्ता अलग है।" वरूण बोलता गया।

"अलग मतलब! तुम्हें कभी नहीं लगा कि मैं और आशुतोष जी प्यार..."

"धत्! इतनी समझ है मुझे रिश्तों की।" वरूण ने अनामिका को टोकते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका के दिल से जैसे बहुत बड़ा बोझ उतर गया। उसने आगे बढ़कर अपने उस बुद्धू मगर सबसे प्यारे दोस्त के बाल बिगाड़े और उसके नीचे खिसक आए चश्मे को उसकी नाक पर दुरूस्त किया था।

"ठीक है! चलता हूॅ॑!" वरूण ने एक खुली हुई मुस्कुराहट के साथ कहा जिस पर अनामिका ने सिर हिला कर सहमति दी। अभी वो थोड़ा आगे बढ़ा ही था कि तभी रूक गया और पीछे मुड़कर अनामिका को देखने लगा।

"क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"कुछ और भी कहना है।" वरूण बोला।
"क्या?"

"मेरे कुछ कंडीशन्स हैं तुम्हारे और चैतन्य के रिश्ते को लेकर और वो तुम दोनों को मानने ही होंगे।" वरूण बहुत ही संजीदगी से बोला।

"और वो क्या हैं?" अनामिका ने कहा।

"पहली कंडीशन - गाड़ी में हमेशा तुम मेरे साथ सामने बैठोगी और वो पीछे बैठेगा।
दूसरी कंडीशन - वो मेरे और तुम्हारे बीच कभी नहीं आएगा। हमारे बीच में कभी बोलेगा भी नहीं।
तीसरी और सबसे जरूरी कंडीशन - तुम्हारे बच्चे कभी भी मुझे मामा कहकर नहीं बुलाऍ॑गे।
समझ में आया।" वरूण उसे उंगली दिखाते हुए बोला।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने बड़ी ही मुश्किल से अपनी हॅ॑सी दबाई थी, जिसे वरूण ने पकड़ लिया था।

"हॅ॑स क्या रही हो? सही तो कहा मैंने! तुम्हारा भाई नहीं... दोस्त हूॅ॑ मैं और तुम्हीं ने कहा था कि रिश्तों को उलझाओ नहीं। तो उस गधे को भी ये समझा देना कि रिश्तों को वो भी ना उलझाए। मैं तुम दोनों के बीच नहीं आऊंगा तो वो भी हम दोनों के बीच कभी ना आए। वरना फिर..!" वरूण ने प्यार से धमकाते हुए कहा।

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]"
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!!"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

□□ □□□□□□ □□□□□□

"□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□? □□□□□□ □□□□!" □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□? □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□

"□□□□□ □□! □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□? □□ □□ □□□□□! □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□! □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□" □□□□□□ □□ □□□□□

"□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□

□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□, □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□... □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□
(Second Point)
****

□□□□□□ □□□□□□-

□□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□, "□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□?"

□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□

"□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□" □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□

"□□□□ □□□□! □□ □□ □□□□□□ □□□□! □□□□□ □□□□□□! □□ □□!" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□
"□□□□□□□! □□□□ □□□□□□ □□!" □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□

"□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□" □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□

"□□.. □□ □□ □□□□□ □□ □□□□!" □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□! □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□.... □□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□! □□ □□□□□ □□□□ □□□□? □□□□□ □□□□□□ □□.. □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□

"□□□□ □□! □□□□□□! □□ □□□□!" □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible].. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible].

"[illegible]!"

"[illegible]!"

(First point)

[illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]?"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

ऐसी क्या ग़लती की है.. जिसकी वजह से उसे ये सब झेलना पड़ रहा है, तो उसकी हालत का अंदाजा लगाना मुश्किल भी है और नहीं भी।

"तो... तुम्हें जानना है कि तुमने ऐसा क्या किया है कि तुम इस तरह मुजरिम की तरह अपनी सजा का इंतजार करने पर मजबूर हो। है ना!" अल्फ़ी ने परिधि के चेहरे के सामने अपना भद्दा चेहरा लाते हुए कहा। परिधि का आंसुओं से भरा चेहरा धुंधलाने लगा था। वो कुछ भी कह पाने की हालत में ही नहीं थी। उसे ऐसा लग रहा था कि बस अब मौत कुछ ही दूर खड़ी उसी का इंतजार कर रही थी। वैसे भी अगर वो रक्तपिपासु हैवान उसे नहीं मारता तो भी उसके ख़ौफ से ही वो कुछ देर में मर ही जाती। उसके दिल की धड़कनें बुरी तरह से अव्यवस्थित हो चुकी थीं और घबराहट से उसका सारा शरीर पसीने से भीग चुका था। उसकी रोने की आवाज भी अब हिचकियों में बदल चुकी थीं, जिसकी वजह से उसका शरीर जोर-जोर झटके खा रहा था।

उसकी ऐसी हालत देखकर पहली बार डॉ अनंत के दिल में कुछ हुआ और उन्होंने परिधि की ओर अपना एक हाथ उठाना ही चाहा था कि तभी वो पिशाच एक लंबी छलांग के साथ उनके सामने खड़ा हो गया।

"तरस आ रहा है इस पर! ऐसी ग़लती मत करना! इसकी बोली सूरत में नहीं जाना। एक ये ही है, जिसने सभी की जिंदगियों को समय के जाल में उलझा दिया है। अगर आज ये जाल नहीं सुलझा, तो फिर ना जाने क्या-क्या उलझेगा? ना जाने कितनों के खून से लाल हो इसका दामन।" अल्फ़ी जहर भरी नजर परिधि पर डालते हुए डॉ अनंत से बोला और डॉ अनंत में एक बार फिर अपने हाथ पीछे कर लिए।

अल्फ़ी ने डॉ अनंत पर एक मुस्कुराती हुई नजर डाली और फिर परिधि की ओर देखते हुए कुटिलता से बोला, "तो! अपनी यादें खोज रही हो तुम! मिलेगी ना! जरूर मिलेगी! तभी तो अपने गुनाहों की अंधेरी गहराई का अंदाजा होगा तुम्हें।"

उसकी बात सुनकर सिर झुका कर सुबकती हुई परिधि ने आंसुओं से धुला अपना चेहरा ऊपर की ओर उठाया। अब ना जाने क्यों उसे उस अजीब सी चीज से डर नहीं लग रहा था, बल्कि कौतूहल की एक हल्की सी चिंगारी ऑ॑खों में लेकर वो उसे देखने लगी। वो एक वहशियाना मुस्कुराहट के साथ उसके सामने बैठ गया और उसे एकटक देखने लगा। पहली बार परिधि ने भी डर को दूर हटाकर उसकी ऑ॑खों में देखने की हिम्मत की।

"माया... माया... माया! सब तेरी ही छाया है, जिसने इस.. वक्त को भी भरमाया है।" अपनी लाल-लाल ऑ॑खों में चमक भरकर अपने नुकीले दाॅ॑त चमकाते हुए अल्फ़ी ने कहा और फिर अपना चेहरा उसकी ओर बढ़ाने लगा। वो हर पल जिसके साथ वो परिधि की ओर बढ़ रहा था... परिधि को पहाड़ की तरह भारी लग रहे थे। पर कहते हैं कि जब मौत ऑ॑खों के सामने हो, तो मौत का डर भी खत्म हो जाता है और इंसान शून्य होकर रह जाता है और बस इस समय परिधि भी उसी कैफियत की गिरफ्त में थी। वो बस उसे अपनी ओर बढ़ते हुए देखे जा रही थी।

और फिर उसने अपनी ऑ॑खों के सामने हवा में कुछ बिखरता हुआ देखा। उसने अपनी ऑ॑खें मिचमिचाई और फिर से सामने की ओर देखा। उसके सामने वो ख़ौफनाक चेहरा धूल की तरह हवा में घुल रहा था और उसके पीछे से कोई चीज बाहर आने के लिए मचल रही थी। ये सब इतना ज्यादा अजीब दिखाई दे रहा था कि परिधि को अपनी देखने की क्षमता पर शक
होने लगा।

और फिर उस गुबार से एक चेहरा बाहर आया। एक चेहरा, जो निहायत ही मासूम था। काली घनी भौंहों के नीचे उसकी ऑ॑खें जिंदगी से भरी हुई थीं और होठों की मुस्कुराहट में ढेर सारी उम्मीदों के साए थे। बिना किसी शक के ये एक बेमिसाल हुस्न था, जो उस ख़ौफ की चादर को हटाकर बाहर आया था।

परिधि ने उस चेहरे को देखा तो उसकी ऑ॑खों में पहचान की निशानियाॅ॑ दस्तक देने लगीं, पर वो अभी भी अपनी यादों के दरवाजे को खोलने में नाकाम ही थी। खोई हुई सी हालत में उसने अपना हाथ उस चेहरे की ओर बढ़ाया। वो उसे छू पाती, उससे पहले ही वो चेहरा एक बार फिर से उसी गुबार में खो गया और परिधि का चेहरा ख्यालों की गिरफ्त से एक झटके में बाहर आया।

"मुझे छूने का अधिकार बस मेरी माया को है, उसके क़ातिल को नहीं। वैसे.... कुछ याद आया या फिर हद दर्जे की गिरी हुई इंसान हो।" अल्फ़ी एक बार फिर से अपनी ख़ौफनाक शख्सियत

######

##, ##### ###### ## #### ## #### ##### ######## #### ######## ## ## ###### ## ## #####, ## #### ###### ######## #### #####-##### ######## ## #### #### ###### ######## ## ##### ##### #### ##### ## #### #### ## ##### ## #### ## ## ##### #### ##### ##### ## ##### ##, ##### ######## ## ## #### ## ##### ######### ## ######## ######## #### ## ## ## ## ##### #### #### ######-###### ## ##### #### ## #### ## ######-######## ##### ######## ## ###### ######## ##### ##### #### ###### #### ##### ####
"## ## ##!" ##### ######## ## ##### ###### ## #### ###### ## ###### #####, #### ## ######## ## ## ## ##### ##### ## #### ##### #### ##### ## ##### ## ## ## ##### ###### ##### #### ##### ##### ##### ##### #### ## #### ###### ## ######## #### ## ## ## ##### #### ######## #### #### ######## ## ##### ##### ## #### ######## #####, ## ## ## ##### ## ######## ## ###### ##### #### #### ## ##### ##### ## #### ###### #### ## ##### #### #### ## ##### ######## #### ## ##### ## ##### ## ## ## ##### ## ## ##### ##### ##### ## ###### #### ## ######## ## ##### ##### #### ##### ## ##### ## ## ## #### ##### ##### #### ######### ## #### ###### ###### ##### ##### ## ##### #### ####

"##### #### #### ##! #### #### #####! ## #####!" ##### #### ## ###### ## ######### ## ###### ## ###### ## ###### ## #### ######## #### ## ###### ##### ## ###### #### ###### ###### ## #####
######### ##### #### ## ##### ## ## #####, ######## ##### ##### ##### # #### #### ## #### ## ##
######### ## ###### ####, ## ## ## ##### ##### ## ########## ## ##### ##### #### ##### ########
####-#### ## ##### ## ###### ## ######### ## #####

"#### ##! ## ###### ## ##### ##### ## ## #### ##### ######## #### ##### ## ######, ## #### ###### ## ########## #### #### ## ## ######? ######### ## ## #### ##### ###### ###### #### ###### ## ##! ## ##### #### ###### ##### #### ######, ##### ##### ## ###### #### ###### ## ## ## ##### ###### ## #### ## ## ####, ##### ######### ##### ##### ######" ######## ##### ## ##### #### ## ## ###### ## ## ######

######
#####
##
######

"## ##### #####? ###### ##### ##### ## ## #### #### ######## ##### ############ ## ## ####"
######## ##### ###### ######## #### ######

"##########! ##### #### ########! #### ##### #### ## ########## ###### #### ## ######### ## ######
##... ## ##### ###### ## ###### ## #### ##!" ##### #### ########
####,
####

##, ## ###### ## ###### ## #### ##### #### ##### ###### ###### ## ##
#####
######

##
#####
##
####
######## ## ##### #### ## ##### ## ######## ## ##### ## ## ## ##### ##### ######### #### ####
####, ######## #### ###### ##### ##### ##### #### #### ## #### ## #### ##, ## ###### ## ######
#########
######

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]!"

[illegible]
(word credit by [illegible]. [illegible]!
"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"
[illegible] [illegible]
"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]
"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]..." [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]

[illegible]
5 [illegible]

"[illegible]! [illegible]...." [illegible]

[illegible]

[illegible]

[

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible] a [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]... [illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]? [illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]...!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

[illegible]

"[illegible]... [illegible]?" [illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]? [illegible]?" [illegible]

"[illegible]...!" [illegible]

"[illegible]? [illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]
"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]"

[illegible]! [illegible]"

[illegible]

[illegible]

[illegible]? [illegible]"

"[illegible]!"
[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]!"

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]!"
"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]
"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible].. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]!"

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

****

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[

"इमारत तो वहाँ है, तो हम कहाँ जा रहे हैं?" अनामिका ने बसेरे की ओर इशारा करते हुए कहा।

"अंदर ही जा रहे हैं, पर ये रास्ता ख़ास है। आइए!" परिधि ने मुस्कुराकर कहा और फिर अपने सिर को एक झटका देते हुए उसे अपने पीछे आने का इशारा किया। अनामिका भी चुपचाप उसके पीछे चली गई।

अनामिका ने देखा कि वहाँ एक छोटा था कार्टेज जैसा कुछ था, जिसकी हालत बहुत ही खराब थी। उसके चारों ओर जंगली बेलों और काई का साम्राज्य बसा हुआ था और वो कहीं से भी एक शानदार इमारत के अंदर जाने वाला रास्ता नहीं लग रहा था। अनामिका बहुत ही उलझन से उस जगह को देख रही थी। परिधि ने वहाँ मौजूद जर्जर से दरवाजे को खोला और उसके अंदर चली गई। अनामिका ने भी उसके पीछे ही राह पकड़ी। वो उस दरवाजे से अंदर दाखिल हो गए, जो कि झुरमुटों में लगभग दबा हुआ था।

◆

अंदर सीलन की बेहद नागवार बदबू चारों ओर फैली हुई थी। अनामिका ने तुरंत ही अपने हाथ से नाक को दबाया था। उसने बेयकीनी से परिधि की ओर देखा, जो उस कमरे की एक सीलन भरी दीवार की ओर चली गई थी। वहाँ उसने दीवार पर हाथ रखा और उसका हाथ थोड़ा अंदर की ओर घुस गया था। इसके बाद उसने उस दीवार को एक ओर हल्के हाथ से ही ढकेल दिया और वो किसी स्लाइड डोर की तरह एक ओर चला गया। सामने एक रास्ता नज़र आ रहा था। अनामिका की हैरानी हर पल बढ़ती जा रही थी। परिधि ने उसे अंदर आने का इशारा किया और वो उसके पीछे-पीछे उस दरवाजे के अंदर चली गई। अंदर एक लंबी सुरंग सी दिखाई पड़ रही थी। जैसे-जैसे वो आगे बढ़ते गए... अपने आप रोशन होने वाले मशालों की रोशनी उनकी रहनुमाई करती गई। आगे बढ़ने के साथ ही अनामिका ने पीछे उस दरवाजे को बंद होते सुना। जल्द ही वे दोनों एक और दरवाजे के सामने थे, जिसकी हालत पिछले दरवाजे से बहुत ही बेहतर थी।

◆

परिधि ने आगे बढ़कर वो दरवाजा खोला और फिर अंदर चली गई। उसके पीछे अंदर आई अनामिका ने देखा कि वो एक छोटी सी खुली जगह थी, जहाँ बहुत सारे पौधे गमलों में लगे हुए थे। अनामिका उन्हें देखते ही पहचान गई। ये वही औषधीय पौधे थे, जो डॉ. अनंत के ग्रीन हाउस में भी थे। अब अनामिका को समझ में आया कि परिधि को इन पौधों के बारे में इतनी जानकारी कैसे थी।

◆

आगे एक गलियारा जैसा था, जिसमें वे दोनों आगे बढ़ते गए और फिर उस गलियारे के आखिर में दोनों हाथों की ओर दो दरवाजे थे। परिधि ने बताया कि दाएँ हाथ का दरवाजा किचन का था और बायां दरवाजा उसके कमरे का। परिधि पहले तो किचन में गई और सारा सामान वहाँ छोड़ आई। उसके बाद वो अनामिका को अपने कमरे में ले गई और ये वही कमरा था, जिसके आईने को अनामिका और चैतन्य ने अपना छलद्वार बनाया था।

"आप यहाँ रहती हो, इस कबाड़ में?" अनामिका बेसाख़्ता बोली। मगर अगले ही पल उसने अपने लहज़े पर ध्यान दिया और थोड़ा असहज हुई थी।

"हाँ! ये भी कबाड़ और मैं भी कबाड़! दोनों एक जैसे।" परिधि ने फीकी सी मुस्कुराहट के साथ कहा और अनामिका ने उस मुस्कान में छिपे दर्द को साफ-साफ महसूस कर लिया।

"वैसे एक बात पूछूं?" अनामिका ने कहा।

"हाँ!" परिधि ने अनामिका की ओर पलटकर कहा।

"आप तो मुझे जानती ही नहीं। फिर मुझे इस छिपे हुए रास्ते के बारे में क्यों बताया? अगर मैंने इसका फायदा उठाया तो।" अनामिका ने उसे कुरेदते हुए पूछा।

"हो ही नहीं सकता। ये दरवाजा बस वही इस्तेमाल कर सकते हैं, जिन्हें इसकी अनुमति प्राप्त हो। दूसरों के लिए ये बेकार है।" परिधि ने लापरवाही से कहा।

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible]! [illegible]!"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]? [illegible]? [illegible] [illegible]? [illegible]! [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible].. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]"[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

****

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?"
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]..." [illegible]

"[illegible]! [illegible]..."[illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

****

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible]?[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible]" [illegible]

"[illegible]? [illegible]! [illegible]?" [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]..." [illegible]

"[illegible]?" [illegible]
"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!"
"[illegible]!" [illegible]

"तुम सब पिशाच कुल से हो ना!" चैतन्य ने सवाल किया।

"हाॅ॑!" अल्फ़ी ने कहा।

"तो तुम सबको धूप से कोई परेशानी नहीं होती है क्या?" चैतन्य ने कहा।

इस बार उसकी बात सुनकर अल्फ़ी रूका और पीछे मुड़कर उसकी ओर देखते हुए बोला, "क्या मतलब? मैं समझा नहीं!"

"मतलब कि मैंने सुना है कि पिशाचों को धूप से समस्या होती है। तुम सबके साथ ऐसा नहीं क्यों?" चैतन्य ने अपनी जिज्ञासा जाहिर की।

"तुम्हें किसने कहा ऐसा?" जवाब देने की बजाय अल्फ़ी ने ही सवाल किया और उसकी बात सुनकर चैतन्य की ज़बान उसके तालू से चिपककर रह गई। वो कैसे बताता कि उसने बहुत सारी वैंपायर मूवीज में ऐसा देखा है, इसलिए ये सवाल किया।

"नहीं! बस... एक... सवाल था... तो पूछ लिया!" चैतन्य ने बमुश्किल कहा।

"हद है! अब ये अफवाहें कौन फैला रहा है? ऐसे ही कम अफवाहें फैली हुई हैं क्या?" अल्फ़ी ने थोड़ी झुंझलाहट से कहा और फिर आगे की ओर बढ़ गया।

"कैसी अफवाहें?" चैतन्य ने अपने कान खड़े करते हुए कहा।
"हैं कुछ! वैसे बता दूं कि हम पिशाच कुल से हैं... पिशाच नहीं हैं।" अल्फ़ी बोला।

"तो क्या दोनों में फर्क होता है?" चैतन्य ने अगला सवाल किया।

"और नहीं तो क्या? अगर पिशाच कुल के सभी सदस्य पिशाच बन गए तो इस दुनिया का क्या होगा... समझ सकते हो? नहीं! नहीं समझ सकते।" अल्फ़ी ने अपनी ही बात का जवाब देते हुए कहा।

"तो फिर समझाओ।" चैतन्य ने कहा।

"बाद में! अभी पहले सर से मिल लो!" अल्फ़ी ने एक दरवाजे के सामने खड़े होते हुए कहा।
चैतन्य ने भी उस बलूत की लकड़ी से बने शानदार दरवाजे की ओर देखा और अल्फ़ी के थोड़ा पीछे खड़ा हो गया। अल्फ़ी ने आगे बढ़कर दरवाजे पर दस्तक की। कुछ देर बाद दरवाजा खुला और अंदर से एक अधेड़ उम्र के आदमी ने बाहर झांका।

"सर ने बुलाया है!" अल्फ़ी ने उस आदमी से कहा।

"अल्फ़ी!" उस आदमी ने शिनाख्ती लहज़े में कहा।

"यस!" अल्फ़ी बोला।

"ओह! कम! कम! चीफ इज हैविंग एन अर्जेंट मीटिंग राईट नाउ! यू गाइज़ वेट अ व्हाइल!" उस आदमी ने दरवाजा पूरा खोलकर उनके लिए रास्ता छोड़ा। अल्फ़ी ने चैतन्य की ओर मुड़कर साथ आने का इशारा किया और फिर आगे बढ़ गया। चैतन्य भी उसका अनुसरण करते हुए उसके पीछे गया था। अंदर आकर वो दोनों ही दरवाजे से थोड़ा आगे आकर रूक गए और इंतजार करने लगे क्योंकि उस कमरे का एक हिस्सा लकड़ी की
बनी आड़ के दूसरी तरफ भी था, जहाॅ॑ दो लोग बहस करते दिखाई दे रहे थे।

समय गुजारने के लिए चैतन्य ने चारों ओर नज़रें घुमानी शुरू की। वो एक छोटा सा मीटिंग रूम था, जो उस मेंशन के दूसरे हिस्सों की तरह ही अपनी वैभवगाथा खुद सुना रहा था। कमरे में रोशनी के लिए गैस के लैंप रखे हुए थे, जो यकीनन रात को जलाए जाते होंगे। तेल से जलने वाले बड़े-बड़े लाइटस्टैंड भी कमरे की शोभा बढ़ा रहे थे। दीवारों में कुछ तस्वीरें भी लगी हुई थीं। महंगे और नक्काशीदार फर्नीचर भी उस जगह की खूबसूरती को बढ़ा रहे थे। अल्फ़ी चुपचाप खड़ा हुआ था, मगर ना जाने क्यों चैतन्य को वहाॅ॑ इस तरह खड़ा होना रास नहीं आ रहा था।

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]? [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

"[illegible]? [illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]? [illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]-[illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible].. [illegible].. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]. [illegible]! [illegible]... [illegible].. [illegible] [illegible] [illegible]?"
[illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible]! [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]...! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]! [illegible]
[illegible]
[illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible] [illegible]... [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

"और वो क्या है?" अनामिका ने अपने सवाल जारी रखे।

"अरे वो एडवर्ड है ना! वो बहुत बवाल कर रहा है। वो तो यही नहीं चाहता कि सर्वशक्तिमंडल में कोई भी औरत हो। पता नहीं आज शाम की पार्टी में वो क्या करेगा? वो तो डायनों को अपने आसपास भी बर्दाश्त नहीं कर पाता।" पहली लड़की बोली।

"मुझे तो वो कभी भी पसंद नहीं आया। बत्तमीज़ कहीं का।उसका बस चले तो इस दुनिया से पिशाचों के अलावा हर किसी को मिटा दे।" दूसरी लड़की नाक चढ़ाकर नागवार लहज़े में बोली।

"पर क्या करें? एडवर्ड और माया जैसे नकचढ़ों को बर्दाश्त करना हमारी नियति है। दोनों ही अपने-अपने समुदायों के मुखिया की औलादें हैं। उनसे
कौन भिड़ सकता है?" पहली लड़की भी चढ़ी हुई नाक के साथ बोली।

उन दोनों की ही बातों में खोई हुई अनामिका के दिमाग में एक सवाल उठा और उसके होंठों से फिसला, "अच्छा! माया तो बहुत ही खूबसूरत है। तो... उसका कोई प्रेमी तो होगा ही।

अनामिका की बात सुनकर दोनों के ही पैर अचानक से रूके। उनको रूकता देखकर अनामिका भी रूक गई। उन दोनों ने पीछे मुड़कर अनामिका को ऐसे देखा, जैसे कि उसके सवाल से ज्यादा बेवकूफी वाली बात उन दोनों ने कभी नहीं सुनी।

"माया और प्रेम! उसके लिए प्रेम जिस्म की जरूरत से ज्यादा और कुछ नहीं। और ये लड़के भी सब जानते हैं उसके बारे में... फिर भी दुम हिलाते हुए उसके पीछे घुमते हैं। माया किसी को मुस्कुराकर भी देख ले ना... तो वो सबकी नज़रों में उस पूरे दिन का नायक बन जाता है। वो बस सबको छलना जानती है और सबको उसके हाथों छलने में ही मजा आता है। बेवकूफ लड़के!" पहली लड़की ने बहुत ही खिन्नता के साथ कहा।

"और अगर कोई लड़का उसके साथ रात बिता ले तो...?" अनामिका ने अल्फ़ी को अपने ख्यालों में रखकर सवाल किया।

"तो! फिर तो उसका ऊपर वाला ही मालिक है। कई बावलों को देखा है हमने। हम सबको तो उन पर तरस भी आता है। पर माया को इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। उसके लिए तो रात गई... बात गई वाली बात होती है।"दूसरी लड़की ने बहुत ही ख़ुश्क लहजे में कहा।

"तो क्या... उसकी जिंदगी में कोई भी नहीं है।" अनामिका ने पूछा।

"एक बार दिव्याक्षि ने उसे कहा था कि कोई लड़का आएगा उसकी
जिंदगी में और उसके लिए सब कुछ बदल जाएगा। तब से सबके दिलों से खेलते हुए उसी का इंतजार कर रही है।" पहली लड़की बोली।

"कौन लड़का?" अनामिका ने पूछा।

"वो तो पता नहीं, पर कल कानों में एक बात आई है कि उसे पहली बार कोई भा गया है।" दूसरी लड़की ने कहा।

"अच्छा! और वो कौन है?" अनामिका ने मुस्कुराते हुए एक बार फिर अल्फ़ी की तस्वीर ख्यालों में भरी थी।

"है कोई! कल जब वो सिद्धिकुंड में स्नान के लिए गई थी... तो कोई सजीला नौजवान उसी कुंड में आ गया था। पर वो उससे कुछ पूछती... वो वहाॅ॑ से भाग गया। पर एक बात तो माननी पड़ेगी कि बहादुर तो वो है। सीधा डायनों के सिद्धिकुंड में घुस गया।" दूसरी लड़की ने ही जवाब दिया था और उस जवाब को सुनते ही अनामिका के पैर सदमे से जमकर रह गए।

"मैं तो शर्त लगा सकती हूं कि वो लड़का खुद माया के पास आएगा। उसे नहाते हुए जो देखा है। जरूर उसके होश अभी तक ठिकाने नहीं आए होंगे... माया को निर्वस्त्र देखने के बाद।" पहली लड़की ने जोरों से ठहाका लगाते हुए कहा, जिसमें दूसरी लड़की ने भी उसका साथ दिया था।

"[illegible] [illegible] [illegible] [

अनामिका ने चुपचाप अपना सिर हिला दिया क्योंकि वो इस विषय में ज्यादा बोलकर मेंशन जाने के मौके को गॅ॑वाना नहीं चाहती थी। उसे चैतन्य से मिलना था.... और मिलना ही था।

"अच्छा! ये बताइए कि डायनों का विवाह कैसे होता है? किससे होता है?" अनामिका ने आलू काटते हुए थोड़ी दबी हुई आवाज में पूछा।

"ये कैसा सवाल है?" ऐना ने हैरानी से कहा।

"बस! दिमाग में आया तो पूछ लिया। आखिर डायन समुदाय में पुरुष तो होते नहीं हैं, तो वो विवाह किससे करती हैं?" अनामिका ने पूछा।

"कौन कहता है कि हमारे समुदाय में पुरुष नहीं होते हैं? हाॅ॑ ये बात सही है कि उनकी संख्या बहुत कम है, इसलिए डायनें दूसरे समुदायों में और कभी-कभी इंसानों से भी विवाह कर लेती हैं।" ऐना ने हांडी में में कोई
सामग्री डालते हुए कहा।

"अच्छा! फिर तो पिशाच और डायनें भी विवाह कर सकते हैं। मान लीजिए.... यदि एक पिशाच और एक डायन प्रेम में पड़कर विवाह कर लें... तो क्या होगा?" अनामिका अपने मुद्दे पर आते हुए बोली। उसका सवाल सुनकर ऐना ने खुलकर ठहाका लगाया और फिर अनामिका के सिकुड़े हुए चेहरे को देखने लगी।

"कुछ दिनों का प्रेम हो तो चलेगा... पर विवाह! ये कभी नहीं हो सकता। ना तो हमारा समुदाय ये स्वीकार करेगा और ना ही पिशाच समुदाय।" ऐना ने उसकी जिज्ञासा दूर करते हुए कहा।

"कुछ दिनों का प्रेम से आपका क्या मतलब है?" इस बार अनामिका ने थोड़ी खिन्नता से पूछा।

"अब इसका मतलब तुम खुद ही निकाल लो। पिशाच हमेशा से ही खुद को सर्वश्रेष्ठ समझते हैं। वो विवाह के लिए अपने समुदाय और उच्च कुलीन मानव कन्या को ही सही मानते हैं। इसके अलावा वो और किसी से विवाह नहीं करते। उन्हें ऐसा लगता है कि इस तरह से वो अपने खून की शुद्धता को अक्षुण्ण बनाए रखते हैं। स्त्री होने के कारण पिशाच डायनों को भी हेय दृष्टि से देखते हैं और उनका यही सर्वश्रेष्ठ होने का अहंकार... डायन समुदाय को पसंद नहीं है। इसलिए डायनें भी पिशाचों से दूर रहती हैं।" ऐना ने अनामिका को उसका जवाब देते हुए कहा।

"और अगर किसी ने ऐसा कर लिया तो...!" अनामिका ने पूछा।

उसके इस सवाल पर ऐना ने उसे बाग़ौर निगाहों से देखा और फिर ऑ॑खों में कठोरता भरकर कहा, "तो उनके लिए बस मौत है। दोनों समुदाय ही ऐसा कभी नहीं होने देंगे। वो एक-दूसरे को चोट पहुॅ॑चाने के लिए कुछ
दिन के लिए ऐसा जरूर करते हैं, पर विवाह.... ये नामुमकिन है।" ऐना ने अनामिका की बात पर ऐतराज उठाते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका की ज़बान को भी लगाम लगे थे। ऐना के बिगड़ते तेवरों ने उसे चुप रहने पर विवश कर दिया था। पर ऐना की बातों ने उसके इस यकीन को और भी पुख़्ता कर दिया था कि माया ने अल्फ़ी से छल किया था और अब उसका अगला निशाना चैतन्य था। ये ख्याल आते ही एक बार फिर से अनामिका के दिल में एक टीस सी उठी और उसका मन माया के लिए घोर नफ़रत से भर गया। किसी तरह उसने ऐना की मदद की और फिर उसके कहने पर अपने कमरे में कपड़े बदलने के लिए आ गई, जो उसे बसेरे में आने के बाद मिले थे। उसे अब बस चैतन्य और अपनी मुलाकात का इंतजार था, ताकि वो उसे माया के मंसूबों से आगाह कर सके।

****

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"

[illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

[illegible]

[illegible]

[

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

[illegible]

[

□□□□

"□□□□□□□! □□□□ □□□□!" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□
□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□
□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□
"□□□□□□□□! □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□, □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□!" □□□□□□□
□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□
□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□
□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□
□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□

"□□ □□□□□□ □□□□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□, □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□
□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□

"□□□□□□ □□□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□, □□□□ □□□□□
□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□
□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□
□□ □□□□ □□□□□ □□□□

"□□□□□!" □□ □□□□□□□□□, □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□
□□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□ □□ □□□□□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□□

"□□ □□□□□ □ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□
□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□□□□!" □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□
"□□□□! □□□□□ □□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□

□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□
□□ □□□□□-□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□
□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□, "□□□□□□!"

"□□□□□! □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□
□□□□□□ □□□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□
□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□
□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□
□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□

"□□□□!" □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□
□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□
□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□

□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□
□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□

"□□□□□!" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□□□!" □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□
□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□
□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□
□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□
□□□□□□ □□ □□-□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□
□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□

"[illegible]! [illegible]... [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible].... [illegible]! [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]... [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]? [illegible]"

"[illegible]?"

[illegible], "[illegible]!

[illegible]

"[illegible]! [illegible]?"

"[illegible]"
"[illegible]!

"[illegible]... [illegible]!

"[illegible]

"[illegible]?"

"[illegible]!"

"[illegible]... [illegible]! [illegible]?"

[illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!"
[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]
"[illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]! [illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

[illegible]

"[illegible]"

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]?"
"[illegible]"

"[illegible]!"

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]... [illegible]" [illegible]

"[illegible]... [illegible]" [illegible]

"[illegible]... [illegible]" [illegible]

"[illegible]... [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]... [illegible]"
[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]...." [illegible]

"[illegible]"

"[illegible]... [illegible]" [illegible]

"[illegible]"

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]"

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"

 [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible].. [illegible]...[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]..... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

थी। जब तैयार होने के बाद अनामिका ने खुद को आईने में देखा, तो उसे चैतन्य की शरारत से चमकती हुई ऑ॑खें याद आ गई और वो खुद में ही सिमटकर रह गई।

शाम होते ही मेहमानों का आना शुरू हो गया। सभी ने अपना-अपना काम बखूबी संभाला हुआ था। आखिरकार अनामिका की तरसती हुई ऑ॑खों को सूकून मिला, जब उसने चैतन्य को अंदर आते देखा। वो तेजी से उस तरफ गई। उसे ही खोजते हुए चैतन्य ने जब उसे देखा तो बस देखता ही रह गया। नाराज़गी कहीं दूर जाती रही। बड़ी मुश्किल से उसने अनामिका से अपनी नज़रें हटाई थीं, पर वो बार-बार उसी की ओर भटक रही थीं। फिलहाल चैतन्य वहाॅ॑ अपने काम की वजह से था, इसलिए वो लापरवाही नहीं कर सकता था। जल्द ही दोनों ही अपने-अपने काम में मशगूल हो गए। इन सबके बीच अल्फ़ी को अनामिका की नज़रों ने पूरी तरह से नज़रअंदाज़ कर दिया था। मगर वो पूरे समय उसी की नज़रों के घेरे में थी, जिसका दिल ना जाने किस अहसास से अनामिका के लिए धड़क रहा था और वो फिलहाल इससे पूरी तरह से बेखबर थी।

महफ़िल का रंग जमने लगा था और वो एक किनारे खड़ा उसे इधर से उधर आते-जाते हुए देख रहा था। कुछ सवाल थे जो उसके दिल और दिमाग को झिंझोड़ रहे थे और उनका जवाब उसके लिए अब बहुत ही जरूरी हो गया था।

"ए! हैलो! रूको!" अल्फ़ी ने अपने सामने से गुजरती हुई अनामिका को पुकारा था।

उसकी आवाज सुनकर अनामिका ने मुड़कर उसकी ओर देखा और उसे एक बार फिर से अपने सामने देखकर वो सहम सी गई। उसे देखते ही अनामिका के कानों में माया के शब्द खंज़र की तरह वार करने लगे कि अल्फ़ी शायद अब माया को भूलकर अनामिका की ओर बढ़ने लगा था और ये सोचकर ही उसे दहशत होने लगी थी। वो किसी का भी... ख़ासतौर पर अल्फ़ी का.... दिल नहीं तोड़ना चाहती थी। मगर उसे अल्फ़ी से... इस हमदर्दी के अलावा... कुछ और अहसास भी जोड़े हुए थे, जिन्हें वो चाहकर भी नहीं समझ पा रही थी। इसलिए वो बस उससे दूर... बहुत दूर रहना चाहती थी। मगर वो इस वक्त मेहमान था और अनामिका चाहकर भी उसे नज़रअंदाज़ नहीं कर सकती थी।

"जी!" अनामिका ने बड़ी ही मुश्किल से कहा।

"नाइस पार्टी!" अल्फ़ी ने अनामिका के उलझे हुए चेहरे में उलझते हुए कहा।
"जी थैंक्यू!" अनामिका ने कहा।

"क्या हम.... बात कर सकते हैं?" अल्फ़ी ने बहुत ही उम्मीद भरी आवाज में कहा, जिस पर अनामिका बुरी तरह से चौंकी थी।

"जी! साॅरी! वो... मैं... अभी बहुत बिजी हूॅ॑। फिर कभी!" अनामिका ने उसे टालने की गरज़ से कहा और तेजी से एक ओर बढ़ गई। वो अल्फ़ी से बचने के लिए अपने कमरे की ओर जा रही थी, जिसका रास्ता भीड़ से दूर और थोड़ा सुनसान सा था। अल्फ़ी भी सब भूलकर उसके पीछे भागा था और आखिरकार एक जगह वो अनामिका के सामने आकर खड़ा हो गया। अनामिका उससे बस टकराते-टकराते बची और फिर उससे बचने के लिए तेजी से पीछे हुई। वो उसे अपनी गहरी नज़रों से देख रहा था, जो अनामिका को अपने अंदर उतरती महसूस हो रही थी।

"कौन हो तुम?" अल्फ़ी ने अपनी तफ्तीशी नज़र उस पर रखे हुए पूछा।

अनामिका इस तरह एक बार फिर उसे अपने सामने पाकर सकते में आ गई थी। ना जाने क्यों... पर वो हमेशा ही खुद को उसके सामने असहाय सा पाती थी। वो लाख चाहकर भी उसके सामने खुद को मजबूत नहीं रख पाती थी। वो कुछ पल तो उसे सहमी हुई नज़रो से देखती रही और फिर दो कदम पीछे हटकर वहाॅ॑ से भागने के लिए तेजी से पलटी।

अपने सवाल को नज़रअंदाज़ होता देख अल्फ़ी अंदर से सुलग उठा था। उसने बिजली की फुर्ती से आगे बढ़कर अनामिका की कलाई पकड़ी और एक तेज झटके के साथ उसे अपने करीब किया। अल्फ़ी की इस हरकत से सदमे में आई अनामिका अपनी कलाई को छुड़ाने के लिए छटपटाने लगी। उसकी छटपटाहट देखकर अल्फ़ी ने अनामिका का हाथ पीछे की ओर मोड़ उसी की पीठ से लगाकर उसे खुद से लगभग लगा लिया था। अनामिका के चेहरे के हर रंग ख़ौफ के बादल से ढॅ॑क गए और वो अपनी
फटी हुई ऑ॑खों से उसे एकटक देख रही थी, जो ना जाने उसके चेहरे में क्या खोज रहा था।
अनामिका ने मन में बेसाख़्ता ही चैतन्य को पुकारा था।

"[illegible].... [illegible]?" [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?[illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]... [illegible]... [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]... [illegible]" [illegible] [illegible]
[illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]...! [illegible]!" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]....[illegible] [illegible]....

"[illegible]! [illegible]! [illegible]....[illegible] [illegible]....

"[illegible]? [illegible]

[illegible]-[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

****

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

से माया की पकड़ अनामिका के बालों से कम हो गई। अनामिका ने उतनी ही सख़्ती से माया की कलाई को अपने चेहरे के सामने लाकर फिर उसे पूरी बेदर्दी से एक ओर मरोड़ दिया, जिससे उसका वो हाथ कंधे के पास तक मुड़ गया। कलाई से कंधे तक हाथ के मुड़ने पर माया दर्द से बुरी तरह से बिलबिलाते हुए जमीन पर घुटने के बल गिर पड़ी। उसी हाथ को और भी मरोड़ते हुए अनामिका ने उसे माया की पीठ पर टिकाया और माया के पीछे से ही अपने दूसरे हाथ से माया के जबड़े को बेरहमी से दबोचा था।

"लड़का-लड़का क्या लगा रखा है? चैतन्य नाम है उसका और वो.... मेरा है। उस पर अपनी गंदी नज़र डालने की हिम्मत नहीं करना, वरना ये बेग़ैरती ऑ॑खें बाहर निकालकर कौओं को खिला दूंगी। समझ में आया!" माया के कान के पास साफ आवाज में गुर्राते हुए अनामिका बोली।

वास्तव में माया एक छुईमुई सी लड़की थी, जो अपनी सुंदरता के बल पर सबको दबा कर रखती थी। डाकिनी की बेटी होने के कारण भी आज तक किसी की हिम्मत नहीं हुई थी कि वो उसके सामने ऑ॑खें उठाकर भी बात करे। ऊपर से सर्वशक्तिमंडल में चयन होने के कारण उसकी बिगड़ैल तबीयत और भी बिगड़ी थी। सबसे विशेष होने के अहसास ने माया को रूतबे में जरूर ताकतवर बनाया था, मगर उसका पाला कभी भी अनामिका जैसी किसी लड़की से नहीं हुआ था, इसलिए उसे पता नहीं था कि वास्तव में ताकत होती क्या है? अनामिका के जोर के सामने वो बेबस सी ऑ॑सू बहाते हुए तड़प रही थी। उसे अपने पैरों के पास गिरकर रोता हुआ देखकर अनामिका के दिल को बहुत ही सूकून मिला था। फिर कुछ सोचकर अनामिका ने उसके हाथ को छोड़ा और फिर उसके बालों से
पकड़कर उसे खड़ा किया था। अनामिका की मुट्ठी को अपने दोनों हाथों से पकड़े वो उसे सहमी हुई नज़रों से देख रही थी।

"बस! इतनी ही ताकत है तुझमें? अभी तो और भी है।" कहते हुए अनामिका का एक झन्नाटेदार थप्पड़ माया के बाऍ॑ कान और गाल को सिहरा गया। माया को कान में सीटी की आवाज सुनाई देने लगी। वो अभी संभल ही रही थी कि तभी अनामिका का अगला थप्पड़ उसके दूसरे गाल पर पड़ा और इस बार माया के शरीर के साथ उसका दिमाग भी हिल गया। इसके बाद तो अनामिका ने उसके गालों पर चमाटों की झड़ी लगा दी। उसने माया को संभलने का कोई मौका ही नहीं दिया। वो तो आज जैसे अपना सारा गुस्सा उस पर निकाल देना चाहती थी। कुछ ही देर में माया पस्त हो गई थी। उसके नाज़ुक से गालों में खून भरी लकीरें उभर आई थीं और होंठों के एक किनारे से खून बहने लगा। अनामिका ने माया के हाथ को फिर से उसकी पीठ की ओर मोड़ा और उसके बालों को दूसरे हाथ से पकड़कर उसे चेहरे के बल दीवार से चिपका दिया। माया के होंठों से सिसकारियों के साथ ऑ॑खों से ऑ॑सू भी बिना रूके बह रहे थे।

"समझ में आया! चैतन्य से दूर रहना है तुम्हें! सौ हाथ दूर! उसकी तरफ देखने का हक़ किसी को नहीं।" अनामिका ने उसके चेहरे को दीवार में रगड़ते हुए खरखराती हुई आवाज में कहा, जिस पर माया ने तेजी से अपना सिर हिलाते हुए हामी भरी और फिर वो हिचक-हिचक कर रोने लगी। अनामिका ने उसे झटके से छोड़ा जिससे वो किसी कच्चे मकान की तरह नीचे ढह गई। उसमें अब इतनी ताकत नहीं बची थी कि वो कुछ और कर पाती। अनामिका ने उसे घूरकर देखा और फिर उसके सामने जमीन पर एक घुटना टिकाकर बैठ गई और उसे सवालिया नज़रों से देखने लगी।

"क.. क.. क्या हुआ? न.. न.. नहीं... देखूंगी उसे। सच्ची!" माया ने उसे रहम मांगती नज़रों से देखते हुए कहा। मगर अनामिका उसमें कुछ और ही देख रही थी। उसकी ऑ॑खें किसी सोच के तहत सिकुड़ी और फिर वो तेजी
से खड़ी हुई। उसने पास ही फलों की टोकरी से छुरी उठाई और उसे माया की ओर करके दरवाजे के पास खड़ी हो गई। उसने इशारे से माया को चुपचाप पड़े रहने के लिए कहा और फिर अपनी ऑ॑खें बंद कर चैतन्य को पुकारा और उसे तुरंत वहाॅ॑ बुलाया। हवा की रफ्तार से चैतन्य वहाॅ॑ पहुॅ॑चा था। अनामिका ने उसके कपड़े पकड़कर उसे कमरे के अंदर खींच लिया और दरवाजा बंद कर लिया।

"क्या कर रही हो यार?" चैतन्य उसकी इस हरकत पर तिलमिलाया था।

"काम से बुलाया।" अनामिका ने भी अपने हाथ झटकते हुए कहा। माया को सबक सिखाते समय उसे भी कुछ खरोंचें आ गई थीं।

"इतनी चोटें कैसे आ गई तुम्हें?" चैतन्य ने उसका हाथ पकड़कर फिक्रमंदी से पूछा, जिस पर अनामिका ने अपनी ऑ॑खों से एक ओर इशारा किया। चैतन्य ने उस ओर देखा तो... पहले तो

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]... [illegible].... [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"□□□□□□□!"

"□□□□!" □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□

"□□□□!" □□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□

"□□ □□□ □□?" □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□

"□□□□ □□□□ □□ □□□ □□? □□□□ □□!" □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□

"□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□?" □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ "□□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□!" □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□

"□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□" □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□

"□□ □□ □□□□! □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ " □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□

□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□," □□□□ □□□□□... □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□-□□□□□ □□□□ □□□ □□□"

"□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□! □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□, □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□... □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□, □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□... □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□" □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□, □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□

"□□□□□□□! □□□□□□□! □□□ □□□ □□□ □□!" □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□? □□□ □□ □□ □□□□□ □□□!" □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□, □□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□?" □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□

□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□, □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□, □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□, □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□

"□□□□□□! □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□? □□□ □□□□ □□ □□!" □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"इसे छोड़िए। आप बताइए कि हुआ क्या है?" अल्फ़ी ने भी चिंता जताई।

"बहुट बरी गरबर हुई है। ज़ील के पिसाचों के अंडर आनेवाले हिस्से में.... एक लड़की की बॉडी मिली है ओर वो कोई... डायन है। अबी बाट पैली नई है। पर पैली.... तो प्रॉब्लम हो जाएगी।" सर विलियम ने अपने माथे पर हाथ रखे हुए कहा।

"बॉडी मिली है से क्या मतलब? क्या वो...!" अल्फ़ी ने अपनी बात अधूरी छोड़ी।

"डोन्ट नो! वो जिंडा है... या मर गई। प्रे करो कि जिंडा हो... टो बाट... संबाली जा सकटी है। कम! चलटे हैं।" सर विलियम ने अगली समस्या बताते हुए कहा।

"जी सर! चलिए!" चैतन्य ने सर विलियम के लिए रास्ता छोड़ते हुए कहा।

"और ये?" अनामिका ने माया की ओर इशारा करते हुए कहा।

"अनामिका! तुम यहीं रहो.... इसके साथ! तुम्हारा हमारे साथ आना ठीक नहीं होगा। समझी!" चैतन्य ने उसे जवाब देते हुए कहा, जिस पर अनामिका ने तेजी से अपना सिर हिलाया था। अल्फ़ी और सर विलियम तेजी से बाहर निकले। चैतन्य ने अनामिका के माथे को चूमा और उसे सावधान रहने की ताकीद करके तेजी से उन दोनों के पीछे निकल गया। अनामिका ने कुछ गलत ना होने की प्रार्थना करते हुए एक गहरी साँस भरी।

****

जल्द ही जंगल के छोटे रास्ते का इस्तेमाल करते हुए वे तीनों उस जगह पहुँच गए। बात ज्यादा फैली नहीं थी इसलिए वहाँ कुछ सैनिक ही दिखाई दे रहे थे। वो तीनों तेजी से आगे बढ़े। ना जाने क्यों आगे बढ़ते हुए अल्फ़ी का दिल बहुत ही तेजी से धड़क रहा था। हर बढ़ते कदम के साथ उसका दिल और भी बेचैन हो रहा था। क्यों? और ये क्यों आजकल हर जगह उसे परेशान कर रहा था।आखिरकार वे तीनों वहाँ पहुँच गए, जहाँ उस लड़की का शरीर आधा पानी के बाहर और आधा पानी में था।

�

उस लड़की का चेहरा सैनिकों की पकड़ी हुई मशालों की रोशनी में दूर से भी दिखाई दे रहा था। अपने धड़कते हुए दिल के साथ अल्फ़ी ने अपनी नजरें पैनी की और उस चेहरे को बहुत ही गौर से देखा। उसके चेहरे पर पहचान भरी नज़र पड़ते ही अचानक ही उसका सारा शरीर बुरी तरह से सिहरने लगा। वो लड़खड़ाकर गिर ही पड़ता, उससे पहले ही चैतन्य ने उसे संभाल लिया।

"क्या हुआ?" चैतन्य ने उसे इस तरह देखा तो पूछा।
"ये तो माया है! मेरी माया!" आँखें फाड़े हुए अल्फ़ी ने सदमे भरी आवाज में कहा और तेजी से उस लड़की की ओर बेतहाशा भागा। उसकी बात सुनकर चैतन्य भी उतने ही सदमे में आया था और वो भी उसके पीछे भागा।

�

अल्फ़ी ने सामने जमीन में पड़ी उस बेहलचल लड़की के चेहरे को देखा और फिर वो किसी कटे हुए पेड़ की तरह लहराकर गिर गया। वो माया थी। अल्फ़ी की माया! बेजान! उसके सामने! अल्फ़ी के आंसू उसकी आँखों के दायरे में ही ठहर गए थे और वो जोर जोर से साँसे लेने लगा। उसने उसके शरीर को अपने काँपते हुए हाथों से सीधा किया और फिर उसके आंसुओं ने रूकने से इंकार कर दिया। उसने माया को उठाकर अपने सीने में भींच लिया और पूरी ताकत से चिल्लाया था।

"□□□□□□□□□!"
□

□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□, □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□! □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□

□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□ □□□□ -

"□□□□□□□!"

"□□□□!" □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□ □□□

"□□ □□□□! □□ □□ □□□□□? □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□ □, □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□?" □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□

"□□□□□□ □□□□! □□□□ □□□□□!" □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□

"□□□ □□! □□□ □□ □□□□ □□□□! □□□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□" □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□

"□□□ □□□□! □□□.... □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□? □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ " □□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□

"□□... □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□" □□□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□

"□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□?"□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□

"□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□" □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□, □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□

"□□□! □□ □□ □□□ □□□□ □□.. □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□" □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□

"□□□□□! □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□□" □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□

"□□□□! □□ □□□□ □□!" □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ "□□□ □□□!" □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□

"□□□□ □□! □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□" □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible].. [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"□□□□!"

□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□
□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□-
□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□
□□□□□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□

□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□, □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□
□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□
□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□
□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□
□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□

****
□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ 17 □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□
□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□□
□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□

□□ □□□□□ □□ □□□ □□, □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□
□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□, □□□□□
□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□
□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□
□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□
□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□, □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□
□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□-□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□... □□□□
□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□, □□□□□
□□□□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□

□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□-□-□□□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□
□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□-□□□
□□□ □□□ □□, □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□, □□ □□□□ □□ □□
□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□□□□□ □□
□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□

"□□!" □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□
"□... □□ □□□... □□ □□□ □□□□ □□□□ □□... □□□□□□ □□□.... □□□□□ □□□ □□□" □□□□□□ □□
□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□

□□ □□□ □□□□... □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□, "□□□ □□ □□□□?"

□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□
□□□□□ □□ □□-□□□ □□□□□

"□□□□□□□! □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□" □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□
□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□
□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□, □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□

"□□□□□□□! □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□? □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□

"□□... □□□□! □□... □□ □□□□... □□ □□□□... □□□□□... □□ □□ □□□" □□□□□□ □□ □□□□ □□
□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]?" [illegible]
"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]..." [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]!... [illegible]" [illegible]

****

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]?"

"[illegible]"

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]..." [illegible]

"[illegible]... [illegible]..." [illegible]

"[illegible]-[illegible]-[illegible]!" [illegible]

[illegible]...

[illegible]....

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]..!" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible].... " [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible]! [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]. [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible].. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"□□□□!"

□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□-□□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□

"□□□□ □□□□ □□□□" □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□

□□□□ □□□-□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□, □□□□ □□, □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□

"□□□□□□□! □□ □□□!" □□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□

"□□!" □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□, □□□□□ □□ □□ □□□ □□□

"□□□□□□ □□ □□□!" □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□

"□...□...□□!" □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□

"□□□□□□!" □□□ □□ □□□ □□□□□

"□□!" □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□

"□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□" □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□

"□□! □□□.. □□□□ □□□□!" □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□

"□□□ □□.... □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□" □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□

"□□... □□ □□□□ □□... □□□□..." □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□

"□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□" □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□ □□□□
"□□□□! □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□! □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□□□ □□□□□□! □□ □□□□□ □□ □□□□□□" □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□□ □□□□□

"□□□□□ □□□□□ □□□□..... □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□" □□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□

"□□□□? □□□□! □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□?" □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ □□□

"□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□" □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□

"□□□□□□□! □□□□ □□ □□□ □□□... □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□" □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□, □□□ □□ □□□□ □□□□□

"□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□, □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□" □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□

□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□, □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]?"

"[illegible]!" [illegible]?"

"[illegible] [illegible] 21 [illegible]!

"[illegible]?

"[illegible]?"

"[illegible]!

"[illegible]!"

"[illegible]... [illegible]... [illegible]!"

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

घर आया था, उस समय माया को पहली बार देखने के बाद उसकी ऑ॑खों में माया के असर को मैंने साफ-साफ देखा था। दो साल
बहुत होते हैं अपने बच्चे के दिल की बात को समझने के लिए। जबकि माया के दिल में ऐसी कोई बात थी ही नहीं, तो तुम्हें कैसे पता चलता! उसने कुछ महीने पहले ही अल्फ़ी का प्रेम प्रस्ताव स्वीकार किया है।" मीना ने उसे सारी जानकारी देते हुए कहा।

"और तुम्हें ये सब अपनी ने बताया?" लता ने आश्चर्य से पूछा।

"अरे नहीं! नहीं! वो कैसे बताएगा? वो तो मैंने उसकी ऑ॑खों की चमक, चेहरे की रौनक और होंठों की मुस्कुराहट से समझ लिया।" अल्फ़ी को याद करके मीना ने मुस्कुराते हुए कहा।

"ओह! अब मुझे भी समझ आ रहा है कि कुछ समय से माया भी कुछ खोई-खोई सी रहती है। अब ऐसा भी कोई कारण हो सकता है... मैंने नहीं सोचा था।" लता भी माया को याद करके मुस्कुराई थी।

"तब तो सचमुच तुम लापरवाह हो।" मीना ने खुलकर हंसते हुए कहा, जिस पर लता ने भी उसका साथ दिया।

"तो तुम्हारी हाॅ॑ है ना!" मीना ने पूछा।

"बिल्कुल!" लता ने हामी भरी।

"तुम्हें पता है! मुझे एक डर ये था... कि कहीं तुम अल्फ़ी के पिता की वजह से... मना ना कर दो। आखिर पारिवारिक पृष्ठभूमि भी तो मायने रखती है ना!" मीना ने बहुत ही सहजता से कहा और ये सुनकर लता के होंठों की मुस्कान सिमटी थी। उसके चेहरे के बदलते हाव-भाव मीना से छिप ना सके।

"क्या हुआ? अचानक तुम्हारे चेहरे का रंग क्यों उड़ गया?" मीना ने
फिक्रमंदी से पूछा।

"मीना! तुमने मुझसे कभी कुछ नहीं छिपाया, पर....एक बात है... जो मैं तुमसे छिपा गई। शायद इसीलिए क्योंकि मुझे कभी नहीं लगा कि तुम्हें ये बताने की नौबत आ सकती है। अब अगर तुम अल्फ़ी और माया के रिश्ते की बात कर रही हो... तो तुम्हें और अल्फ़ी को ये जानना ही चाहिए।" लता ने झुकी हुई नज़रो के साथ कहा।

"ऐसी कौन सी बात है... जिसने तुम्हें परेशान कर दिया है?" मीना ने उसे सवालिया नज़रों से देखते हुए कहा।

"माया का अतीत!" लता ने कहा।

"क्या मतलब?"

"यही कि.... माया... मेरी बेटी... नहीं है। उसे मैंने जन्म नहीं दिया है।"

"यही कि.... माया... मेरी बेटी... नहीं है। उसे मैंने जन्म नहीं दिया है।"

लता के मुॅ॑ह से निकले ये लफ्ज़ मीना को हैरान कर गए थे। इतने सालों में उसे एक बार भी ऐसा नहीं लगा कि माया, लता की बेटी नहीं थी। वो क्या... शायद उस कस्बे में कोई भी इस राज से राब्ता नहीं रखता था। मीना को याद आया कि उसकी मुलाकात जब लता से हुई थी, माया उसकी गोद में थी और वो इस कस्बे में भी उसी के साथ आई थी। उसने सबसे कहा कि वो उसकी बेटी है तो... सबने मान लिया। लेकिन अब इस खुलासे से मीना थोड़े सकते में पड़ी

□□□

"□□□□□□□□□ □□□□□ □□.... □□□□□!" □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□

"□□□□□.... □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□
□□□□□□ □□, □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□, □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□, □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□" □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□? □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□.... □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□... □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□" □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□

"□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□, □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□, □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□? □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□" □□□□ □□ □□□□□

"□□ □□□□□ □□! □□□□□ □□ □□□□□!" □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□

"□□ □□ □□□□□ □□... □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□-□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□" □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□

"□□□□□! □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□
□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□, □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□" □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□, □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□

"□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□... □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□" □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□

"□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□?" □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□.... □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□! □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□" □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□, □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□

"□□□□□ □□□□ □□□□□?" □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□

"□□ □□□□□□.... □□□□□ □□□□□ □□□?" □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□

"□□□□□□? □□□□□ □□□□?" □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□

"□□□□□ □□ □□□□!" □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□... □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ '□□□□□□' □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]?"

"[illegible]!"

"[illegible]?"

"[illegible]!"

"[illegible]
"[illegible]!"

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible]... [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible]...." [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]"
[illegible]

"[illegible]!
[illegible]:
[illegible]-[illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]?"

"[illegible]"

"[illegible]?"

"[illegible]
[illegible]
[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]..." [illegible]

"[illegible]-[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]
[illegible]

"[illegible]...." [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]...." [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]..."

"[illegible]...." [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]! [illegible]?" [illegible]

"[illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]! [illegible]

[illegible]

"[illegible]!

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]!

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]?" [illegible]

"[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

(Я [illegible]
[illegible]

Я [illegible]
[illegible]
[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]
"[illegible]!"

Я [illegible]
[illegible]

"[illegible]!"

Я [illegible]
[illegible]
"[illegible]?"

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? "
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible]! [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible]-[illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]!"

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

****

[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]

****

माया और अल्फ़ी की शादी को करीब तीन महीने गुज़र चुके थे। वो छुट्टी का एक दिन था। अल्फ़ी देर सूरज चढ़ने तक बिस्तर में घुसा हुआ था। पिछली रात मि. हेनरी के किसी जरूरी कागजात की गहन पड़ताल करते हुए वो देर रात तक जागता रहा। अगले दिन छुट्टी होने और माया के बार-बार कहने के बाद भी काम खत्म किए बिना वो सोने नहीं गया और अब सुबह उसकी ऑ॑खों ने खुलने से साफ इंकार कर दिया था।

आखिरकार हद से ज्यादा देर होने पर माया उसे उठाने आई। उसने झटके से उसका कंबल खींचा, जिससे अल्फ़ी ने बुरी तरह से कुढ़ते हुए अपनी ऑ॑खें मिचमिचाई और फिर हाथ बढ़ाकर कंबल एक बार फिर से अपने सिर तक खींच लिया। उसकी इस हरकत से माया बुरी तरह से तिलमिलाई थी।

"अल्फ़ी उठो! सूरज चढ़ आया है सिर पर।" माया उसका कंबल खींचते
हुए चिल्लाकर बोली।

"उंहूं! मेरा ऐसा कोई इरादा नहीं है।" कहते हुए खीझे हुए अल्फ़ी ने भी कंबल अपनी ओर खींची। मगर माया भी कंबल छोड़ने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थी। आखिरकार अल्फ़ी ने उकताकर कंबल छोड़ दिया, जिससे माया झटके से लड़खड़ाते हुए पीछे हुई थी। उसने बड़ी मुश्किल से खुद को गिरने से बचाया था। उसकी लड़खड़ाती हुई आवाज सुनकर अल्फ़ी एक झटके से उठकर बैठ गया। जब तक उसने माया पर फिक्र भरी नज़र डाली, वो संभल चुकी थी और उसे कहरभरी नज़रों से देख रही थी।

अल्फ़ी ने उसकी गुस्से भरी नज़रों को पढ़ते हुए जब अपने दाईं ओर देखा तो उसकी समझ में आया कि इस छीना-झपटी में पास में रखा पानी का गिलास नीचे गिर गया। माया ने गुस्से से फर्श में फैले पानी को देखा और फिर भिंचे हुए होंठों के साथ अल्फ़ी की ओर घूरकर देखा। अल्फ़ी ने फैली हुई ऑ॑खों के साथ अपने कान पकड़े। उसकी सारी नींद पल में हवा हो गई थी। वो तुरंत ही बिस्तर से नीचे उतरा।

"देखो! काम बढ़ा दिया तुमने।" माया ने बहुत ही झल्लाकर कहा और फिर कमरे से बाहर जाने लगी।

"मैं मदद कर दूॅ॑!" अल्फ़ी ने पीछे से मस्के भरी आवाज़ में कहा।

"रूको तुम वहीं! मदद क्या करोगे... बस मेरा काम बढ़ाना आता है तुम्हें। हिलना भी मत वहाॅ॑ से!" तेजी से पलटकर उसे अपनी तर्जनी अंगुली दिखाते हुए माया बिगड़कर बोली और फिर जाने के लिए मुड़ी।

"अरे! सुनो तो!" कहते हुए अल्फ़ी आगे बढ़ा ही था कि एकदम से ही मुॅ॑ह के बल जमीन पर गिर पड़ा। उसके गिरने की तेज आवाज सुनकर माया
एक बार फिर उसकी ओर पलटी और उसे जमीन पर कराहता देखकर फिक्र से उसके पास आई।

"क्या हुआ? गिर कैसे गए?" माया ने उसे संभालते हुए पूछा।

"पता नहीं! ऐसा लगा कि किसी ने पैर पकड़ लिया।" माया की मदद से बैठते हुए अल्फ़ी ने कहा और दोनों की ही नज़र उसके पैरों की ओर चली गई। उसी समय मीना भी आवाज सुनकर भागते हुए वहाॅ॑ आई। तीनों की ही नज़रें एक साथ अल्फ़ी के पैरों की ओर गई और तीनों ही जैसे सदमे से जम गए।

फर्श पर फैला पानी जंजीर की शक्ल में उसके पैरों में घुटनों के कुछ नीचे तक लिपटा हुआ था। पर... कैसे? माया और अल्फ़ी की ऑ॑खें तो बस फटकर बाहर ही निकलने को थीं क्योंकि उन दोनों के लिए ही ये नज़ारा बेहद हैरतअंगेज था। मगर इसके उलट... मीना के माथे पर सिलवटें बढ़ गई थीं, जो उनके अनुभव का सूचक थीं।

"ये क्या हुआ था अभी?" अल्फ़ी ने बहुत ही उलझे हुए लहजे में कहा, जो ये सब देखकर अपने गिरने का दर्द भूल गया था। जबकि दरवाजे के पास खड़ी मीना के अंदर कोई ख़ामोश आवाज में चीखा, जिसे बस उसी ने ही सुना।

"[illegible]! [illegible]-[illegible] ! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]""[illegible].... [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

वजह से ही उखड़ा हुआ था। चैतन्य के बिगड़ते मिजाज को वो और नहीं बिगाड़ना चाहता था। मगर अनामिका की नज़रें चैतन्य से फिसलकर एक बार फिर से माया पर पड़ी थीं। अनामिका की नज़रें उस पर और भी पैनी हुई थी। आखिर उसने किया क्या था चैतन्य के साथ? वो अक्सर तुनकमिजाज
हो जाया करता था, मगर ये सब कुछ ज्यादा हो रहा था क्योंकि अब तक वो अनामिका के लिए दूसरों से लड़ता था, मगर अभी तो वो हर तीर उसी पर छोड़ रहा था। अभी तक तो अनामिका ने उसके हर वार से खुद को बचाकर रखा था... पर उसे समझ में आ गया था कि इसे सही करना बहुत ही जरूरी था, वरना हालात उनके लिए और भी बिगड़ सकते थे।

"ठीक है! चलो!" अनामिका ने अल्फ़ी की ओर देखते हुए कहा, जिस पर अल्फ़ी ने एक नज़र चैतन्य पर डाली थी। अनामिका ने भी चैतन्य की ओर देखा, जहाॅ॑ वो दीवार से टिके हुए अपने सीने पर हाथ बांधे उसी की ओर देख रहा था। उसकी तीखी नज़र अब अनामिका को चुभने लगी थी।

"तो इस माया पर तुम नज़र रखो....?" अनामिका ने चैतन्य से पूछना चाहा।

"बिल्कुल भी नहीं! मैं भी तुम्हारे साथ जाऊॅ॑गा।" अनामिका का सवाल खत्म होने से पहले ही चैतन्य ने तपाक से कहा।

"तो फिर इस पर नज़र कौन रखेगा? इसे बसेरे में भी वापस नहीं ले जा सकते।" अनामिका ने चिंता से माया की ओर देखते हुए कहा।

"टुम सब जाओ! हम इसको वॉच करटे हैं। इट इज वेरी इंपोर्टेंट टू अस.... टू गेट आंसर्स टू ऑल द क्वेश्चन्स।" सर विलियम ने मदद का हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"पर आप अकेले!" अनामिका ने उन पर फिक्र भरी नज़र डालते हुए कहा।

"डोंट वरी! नो वन विल कम टू दिस प्लेस व्हाइल आई एम हियर।" सर विलियम ने बहुत ही आत्मविश्वास के साथ कहा।
"पर फिर भी..." कहते हुए अनामिका ने चैतन्य की ओर देखा, जिसने उसकी नज़र पड़ते ही अपनी नज़र फेरी थीं।

"आई सेड... डोंट वरी! गो! रिमेम्बर! आई एम द चीफ़ एंड....दिस प्लेस इज माई प्रॉपर्टी। नो वन कैन इंटर विदाउट माई परमिशन।" सर विलियम ने उनको यकीन दिलाते हुए कहा।

"ठीक है! जैसा आप कहें। पर... इसके पास बिल्कुल भी नहीं जाइएगा। ये सही नहीं है। इसकी भी कुंडली निकालनी पड़ेगी।" अनामिका ने चेतावनी भरी आवाज में सर विलियम से कहा, जिस पर उन्होंने हुंकारी भरते हुए हामी भरी।

और फिर वो तीनों तेजी से वहाॅ॑ से बाहर निकल गए। अभी उन्हें गए हुए थोड़ी देर ही हुई होगी कि दरवाजे पर हुई दस्तक ने सर विलियम का ध्यान उस ओर किया।

"हू इज़ देयर?" सर विलियम ने ऊॅ॑ची आवाज में पूछा।

"इट्स मी!" बाहर से आवाज आई।

"अल्फ़ी!" सर विलियम ने आवाज को पहचानते हुए तेज़ी से दरवाजा खोला और फिर सामने का नज़ारा देखकर सन्न रह गए।

"थैंक्यू जॉन!" सर विलियम के सामने खड़े उस गार्ड को हटाते हुए एडवर्ड आगे आया।

"व्हाट आर यू डूइंग हियर?" माथे पर बल डालते हुए सर विलियम ने सवाल किया।
"जो आप कर रहे हैं। अपना... काम! अंदर नहीं बुलाऍ॑गे?" एडवर्ड ने बहुत ही मक्कारी के साथ कहा।

"यू आर नॉट नीडेड इनसाइड। व्हाटेवर यू वांट टू से... से इट हियर ओन्ली।" सर विलियम ने बहुत ही खुश्की से कहा।

"□□! □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□... □□□□ □□ □□□□ □□□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□

"□□ □□□□ □□!" □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□

"□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□... □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□" □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□... □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□, □□□□□ □□□□□□ □□□□□□" □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□

"□□□□!" □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□, □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□, □□ □□□□□□ □□-□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□-□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□, □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□
□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□, □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□

"□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□.... □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□"

□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□

"□□! □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□!" □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□, □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□, □□□□□□ □□, □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □ □□□□ □□□□

"□□□□□ □□□□! □□□□□ □□ □□□□□? □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□" □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□

"□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□, □□□□□□□! □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□□!"□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□ □□□□□ □□□□! □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□... □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□" □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□

□□□□ □□ □□□□□□ □□-□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□
"□□□!"

"□□□□□ □□□□!" □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□

"□□! □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□

"□□□□□□□□!" □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □: □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□

[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]..." [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible], "[illegible] [illegible]!"

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]... [illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]? [illegible]....

****

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"-- [illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]? [illegible]

"[illegible]

"[illegible]! [illegible]

[illegible], "[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]... [illegible]?"

[illegible], "[illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!"
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]! [illegible]!"
"[illegible]! [illegible] [illegible]!" [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?"

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"

[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"नीलम! वायु तत्व का रत्न! तुम तो वायु रक्षक हो! है ना!" दिव्याक्षि बहुत ही उत्साहित होते हुए बोली।
और ये सुनते ही अनामिका और चैतन्य की ऑ॑खें हैरानी से फैल गई। उन दोनों ने एक दूसरे की ओर देखा। चैतन्य की ऑ॑खों में एक सवाल था जिसके जवाब में अनामिका ने सिर ना में हिलाते हुए अपने कंधे उचका दिए।

"तो तुम आ ही गए। तुम्हें तो आना ही था।" दिव्याक्षि मुस्कुराते हुए बोली।

और ये सुनते ही चैतन्य के होंठों से निकला, "हे भगवान! हो गया सियापा!"

"और वो किसलिए?" सवाल अनामिका ने किया था।

"माया की मदद करने के लिए। माया को तुम्हारी मदद चाहिए।" दिव्याक्षि ने कहा और ये सुनते ही चैतन्य ने गुस्से में अपनी मुट्ठियाॅ॑ भींच ली।

"माया को मदद! पर दिव्याक्षि... ये बात सच है कि.... माया अब नहीं रही।" दिव्याक्षि की बात पर अल्फ़ी ने रूंधे हुए गले से कहा और उसकी बात सुनकर पास ही बैठी ऐना की सिसकारी निकल गई।

"और तुम लोग ये क्यों नहीं समझ रहे कि तुम्हारे साथ खड़ी ये लड़की ही माया है और इसी को वायु-रक्षक की जरूरत है।" इस बार दिव्याक्षी भी भड़कते हुए बोली।

और ये सुनकर एक बार फिर चैतन्य ने अनामिका की ओर कातर नजरों से देखा और उसके कंधे पर झुकते हुए बोला, "अनु! सच बताओ! मैं पागल हो गया तो तुम मुझे छोड़ तो नहीं दोगी ना!"

"श्श्श्श्श! ये मजाक का समय नहीं है।" अनामिका ने उसे फिर से घुड़का था, जिस पर चैतन्य ने उसे बड़ी ही मासूम नज़रों से देखा था। सबका ही
दिमाग फिर गया था, सिवाय अनामिका के। उसका दिमाग अभी भी काम कर रहा था। दिव्याक्षि की सारी बातों के बीच उसने अपने मतलब की बात ढूंढ ही ली थी। वो चैतन्य का हाथ छुड़ाकर दिव्याक्षि की ओर बढ़ी और उसके सामने बैठ गई।

"सही कह रही हैं आप! मदद की जरूरत तो है मुझे। पर आप समयद्वार के नाम से चौंकी थीं। आप जानती हैं कि समय द्वार कैसे बनता है और कौन बना सकता है?" अनामिका ने आखिरकार अपने दिमाग में मचलते सवाल को बाहर निकालते हुए पूछा।

"तुम बना सकती हो समयद्वार! तुम जल-रक्षक हो ना!" दिव्याक्षि ने बिना उसकी तरफ देखे कहा।

और ये सुनते ही अनामिका की ऑ॑खों में एक चमक आ गई। उसने तेजी से पलटकर चैतन्य की ओर देखा। वो भी उतनी ही चमक भरी ऑ॑खों से उसी की ओर ही देख रहा था। शायद अब उन दोनों को वो मिलने वाला था, जिसके लिए वो इतने दिनों से इस अतीत में भटक रहे थे।

"और वो कैसे?" अनामिका ने उतावली होकर पूछा।

"इस वायु-रक्षक की मदद से।" दिव्याक्षि ने चैतन्य की ओर ऊंगली उठाकर कहा। अनामिका ने भी पलटकर चैतन्य की ओर देखा।

"मैं!" चैतन्य ने अपने दोनों हाथों की तर्जनी उंगली अपने ही सीने में रखते हुए आश्चर्य से कहा।

"हाॅ॑! समयद्वार बनाना आसान नहीं होता। इसे एक शक्तिशाली जल-रक्षक ही बना सकता है, जिसे पूरा करने में वायु शक्ति की मदद लगती है... जो कि एक वायु-रक्षक के पास होती है।" दिव्याक्षि ने अनामिका के सवाल
का जवाब देते हुए कहा।

"पर ऐसा क्यों?" अनामिका ने पूछा।

"क्योंकि जल और वायु सबसे अच्छे मित्र होते हैं।" दिव्याक्षि ने कहा और ये सुनकर

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"

"यही कि माया की मृत्यु अभी लिखी ही नहीं थी, तो वो मर कैसे सकती है? उसे एक लंबा जीवन जीना था और यदि तुमने उसका मृत शरीर देखा है, तो इसका मतलब यही है कि उसे किसी ने उसके समय से पहले मार दिया है। पर ये हुआ कैसे? ये तो जिसने किया है, वही बता सकता है।" दिव्याक्षि ने बहुत ही बुझी हुई आवाज में कहा।

"और मुझे पता है कि ये किसने किया है!" अपने अंदर के सारे गुस्से को दिल-दिमाग और ऑ॑खों में भरकर चिल्लाता हुआ अल्फ़ी, परिधि की ओर झपटा। ये इतनी जल्दी हुआ कि सबकी पलकें झपकने से पहले ही परिधि की गर्दन अल्फ़ी की गिरफ्त में थी। उसने नीचे डर से दुबकी हुई परिधि को एक ही झटके में खुद से ऊॅ॑चा उठाते हुए दीवार पर पटक दिया। पैरों के नीचे से जमीन गायब होते ही पहले से ही डरी हुई परिधि और भी सदमे में आ गई। उसने अपने दोनों हाथों की ऊंगलियाॅ॑ अपनी गर्दन पर जमी अल्फ़ी की उंगलियों में फॅ॑सा दी। अगले ही पल में अल्फ़ी की पकड़ मजबूत से और मजबूत हो गई थी। परिधि को अपनी सॉ॑से हलक के नीचे फॅ॑सती हुई महसूस हुई और उसकी ऑ॑खें फैलकर बाहर की ओर निकलने की कोशिश करने लगीं। वहीं अल्फ़ी का पूरा चेहरा गुस्से की आग में सुलगने लगा था और उसकी ऑ॑खें पूरी तरह से बदलकर लाल हो चुकी थीं। इस समय वो हर हिसाब चुकता करने पर आमादा हो चुका था।

अल्फ़ी का हमला इतना तेज था कि वहॉ॑ मौजूद दूसरे पलक झपकाने से ज्यादा और कुछ ना कर सके और जब मामला समझ आया... चैतन्य उनकी ओर भागा।

"अल्फ़ी! छोड़ो उसे!" चैतन्य ने परिधि की गर्दन पर कसी हुई अल्फ़ी की
उंगलियों को छुड़ाने की कोशिश करते हुए कहा। मगर अल्फ़ी पर तो जैसे जूनून सवार हो चुका था। वो बुरी तरह से भड़का हुआ था। उसके जूनून के सामने चैतन्य की ताकत कमतर पड़ चुकी थी। ऐना और अनामिका ऑ॑खें फाड़े उन दोनों को ही देख रही थीं। जब अनामिका को लगा कि अल्फ़ी का गुस्सा किसी के भी संभालने की हद से बाहर निकल चुका है, तो ना चाहते हुए भी वो अजीब सी कश्मकश लिए उसकी ओर बढ़ गई। वो तेजी से परिधि और अल्फ़ी के बीच रह गई संकरी सी जगह में घुस गई। उसके ऐसा करने से एक ओर जहाॅ॑ हक्के-बक्के सी हालत में चैतन्य की कोशिशें ढीली पड़ीं, वहीं अल्फ़ी ने भी अपनी जलती हुई सुर्ख़ लाल ऑ॑खें परिधि से हटाकर अनामिका पर डाली थीं। अनामिका ने कहा कुछ नहीं.. बस अपना सिर हिलाते हुए उसे ऐसा करने से मना किया और.... गुस्से में लंबी लंबी सॉ॑से भरता हुआ अल्फ़ी एकदम से शांत पड़ने लगा था। उसकी ऑ॑खों का जुनून और परिधि पर उसकी पकड़ दोनों ही ढीले पड़े थे। अनामिका के चेहरे को देखते हुए अल्फ़ी के चेहरे पर एक लाचारी सी उभर आई और फिर उसने चिंघाड़ते हुए परिधि के शिथिल पड़ते शरीर को एक ओर उछाल दिया, जो पास ही रखी किताबों की अलमारी से बुरी तरह से टकराकर जमीन पर ढेर हुई थी। वो आदमकद भारी सी अलमारी परिधि के ऊपर गिर ही जाती, उससे पहले ही चैतन्य ने द्रुतगति से वहाॅ॑ पहुॅ॑चकर उस अलमारी को उस पर गिरने से रोक दिया और फिर अपनी पूरी ताकत से उस अलमारी को सीधा करते हुए उसने नीम बेहोश हालत में पड़ी हुई परिधि को एक ओर खींचा। ऐना भी तेजी से उनकी ओर भागी और परिधि को संभालने लगी। अनामिका और अल्फ़ी भी अपनी-अपनी क़ैफियत के साथ उन दोनों को ही देख रहे थे।

अनामिका की नज़र उसी ओर ही थी कि तभी अल्फ़ी ने अपने दोनों हाथ दीवार पर पटकते हुए अनामिका को उनकी कैद में लिया था। वो अभी भी फुंफकारते हुए गहरी सॉ॑सें भर रहा था। उसने अजीब सी नजरों से अनामिका को देखा। उन नज़रों में गुस्सा था.... या फिर बेबसी... या फिर दोनों ही... अनामिका को समझ में नहीं आया। वो बस इतना समझ सकी
कि अल्फ़ी को उसका इस तरह बीच में आना बिल्कुल भी पसंद नहीं आया था। वो उसकी अंगारे उगलती लाल ऑ॑खों को अपनी फैली हुई ऑ॑खों से देख ही रही थी कि तभी चैतन्य ने पास आकर उसके हाथ को नीचे की ओर खींचा, जिससे वो थोड़ा सा नीचे हुई और इसी के साथ ही चैतन्य ने उसे अपनी ओर खींच कर अपनी बाहों में भर लिया। वो अल्फ़ी को अपने जबड़े भींचें नाराजगी से देख रहा था।

वहीं अल्फ़ी की नज़रों ने भी नाराज़गी जताने में कोई कोताही नहीं की। वो दो पल उन दोनों को घूरने के बाद पूरी ताकत से चिल्लाया और फिर अपने बालों को मुट्ठियों में भींचकर जोर-जोर से चिल्लाने लगा। पूरा कमरा उसकी हौलनाक चीखों से भर गया था। ऐसा लग रहा था जैसे कि वो बहुत ही तकलीफ़ में था।

"इसे क्या हुआ?" चैतन्य ने उसे देखते हुए माथे पर बल डालकर पूछा।

"वो बदल रहा है।" अनामिका ने अल्फ़ी को देखते हुए चिंता से कहा।

"बदल रहा है! मतलब?" चैतन्य ने अनामिका पर,नज़र डालकर पूछा।

"उसके अंदर का पिशाच बाहर आ रहा है। ये बिल्कुल भी अच्छा नहीं है। इस समय अगर उसने गलती से भी खून चख लिया, तो फिर क़यामत ही आनी है।" जवाब परिधि को संभालती हुई ऐना ने दिया। अनामिका और चैतन्य ने ऑ॑खें सिकोड़ कर ऐना की ओर देखा और फिर दोनों की ही नज़रें अल्फ़ी की ओर गई, जो बुरी तरह से तड़प रहा था। उन दोनों को ही समझ में नहीं आ रहा था कि वो क्या करें?

"उसे संभालो माया! वरना गजब हो जाएगा। उसके अंदर जो भी अच्छा है.... सब मर जाएगा।" दिव्याक्षि ने तेज आवाज में कहा।
"पर..!" अनामिका ने हिचकिचाते हुए कहा।

"अनु! जाओ! संभालो उसे!" चैतन्य ने एकटक अल्फ़ी की ओर देखते हुए कहा। वो ये कभी नहीं भूल सकता था कि अल्फ़ी एक सच्चे और साफ दिल का मालिक था, जिसने उस पर ऑ॑खें मूंदकर भरोसा किया था। इतनी तकलीफ़ और परेशानी में होते हुए भी उसका ख्याल रखा था। वो उससे कितना भी चिढ़ ले, पर उसे इस तरह तड़पते नहीं देख सकता था क्योंकि उसकी आत्मा मरी नहीं थी....अभी भी सॉ॑सें ले रही थी।

"पर!" अनामिका ने झिझक भरी नज़रों से उसे देखते हुए कहा।

"जाओ अनु! उसे इस समय तुम्हारी जरूरत है। एक तुम ही हो... जो उसे संभाल सकती हो। बातें बाद में भी हो सकती हैं।" चैतन्य ने एक आह के साथ कहा।

अनामिका ने सवालिया नजरों से चैतन्य की ओर उसकी ऑ॑खों में देखा, जहाॅ॑ उसे अल्फ़ी के लिए एक ईमानदार फिक्र दिखाई दे रही थी। वो एक हिचकिचाहट के साथ अल्फ़ी की ओर बढ़ी, जो अब चीखना बंद कर चुका था और एक कोने में दुबका हुआ बुरी तरह से कॉ॑प रहा था। उसके पास पहुॅ॑चकर अनामिका ने एक उलझी हुई नज़र चैतन्य की ओर डाली। चैतन्य ने सिर को झटकते हुए उसे आगे बढ़ने का इशारा किया और खुद सीने में हाथ बांधे उनकी ओर देखने लगा। अपनी सारी हिचकिचाहटों के साथ अनामिका ने घुटनों के बल बैठकर अल्फ़ी के कंधे पर अपना हाथ रखा।

"अल्.... अल्फ़ी!" बमुश्किल अनामिका के मुॅ॑ह से निकला।

और उसके स्पर्श के बाद उसकी आवाज सुनते ही जैसे जादू सा हुआ। अल्फ़ी का कॉ॑पता हुआ शरीर एकदम से शांत हो गया। मगर वो अभी भी अपने चेहरे को अपनी बाजुओं में छिपाए हुए था। अनामिका ने एक बार
फिर से चैतन्य की ओर देखा और उसने भी एक बार फिर से आगे बढ़ने का इशारा किया।

"तुम ठीक हो?" अनामिका ने बहुत ही नर्मी से पूछा।

अनामिका का सवाल सुनते ही अल्फ़ी ने अपनी बाजुओं से अपना भीगा हुआ चेहरा ऊपर उठाया, जिसे देखकर अनामिका सहम गई। वैसे तो वो पहले से ही गोरी रंगत का था, पर अभी तो उसका चेहरा बर्फ जैसा सफेद और ठंडा दिख रहा था। उसकी ऑ॑खें जैसे खून में डूबी हुई थीं और उन्हीं सुर्ख़ ऑ॑खों से वो उसे एकटक देख रहा था। अनामिका ने भी उसकी ऑ॑खों से अपनी ऑ॑खें नहीं हटाई। उसकी ऑखों में खुद को उतारते हुए एक बार फिर से अल्फ़ी आगे बढ़कर उससे लिपट गया। उसकी इस हरकत से अनामिका ने सहमकर चैतन्य की ओर देखा था, जो खुद भी ये देखकर विचलित हो गया था। उसने तुरंत ही अपनी नज़रें फेर लीं कि इस समय वो किसी तरह का ऐतराज नहीं जता सकता था। दूसरी ओर एक बार फिर से अल्फ़ी किसी बच्चे की तरह बिलखने लगा था। अनामिका ने बहुत ही झिझक के साथ उसकी पीठ पर अपना हाथ रखा और उसे हौले-हौले सहलाने लगी। अल्फ़ी को भी उसके इस स्पर्श से आराम महसूस हुआ और उसकी बेचैनी धीरे-धीरे खत्म होने लगी। बेचैनी खत्म होने के साथ ही उसके ऑ॑खों की लाली सिमट गई और उसके चेहरे की गुलाबी रंगत वापस लौट आई। अब वो अनामिका से लिपटे हुए बीच-बीच में हिचकियॉ॑ लेता बिल्कुल शांत था। अनामिका का एक हाथ उसके सिर पर था, जिसकी ऊंगलियॉ॑ उसके बालों में नर्मी से तफरीह कर रही थी।

"ये... ये सब... क्या था? क्या आप लोगों को कुछ भी पता है इस बारे में?" चैतन्य ने अपनी बेचैनी को काबू में करते हुए ऐना और दिव्याक्षि से पूछा।

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

देखा।

"क्या हो गया?" परिधि ने ही ख़ामोशी को तोड़ते हुए सवाल किया।

"शादी के बाद मेरे पहले जन्मदिवस पर मेरे हस्बैंड ने ये दिया था। तुम्हें पता है.... कितनी मुश्किल से उसने ये खरीदा था मेरे लिए। बस इसीलिए..... क्योंकि ये मुझे बहुत पसंद आ गया था।" कहकर मुस्कुराते हुए उसने उस नर्म कपड़े पर अपनी ऊंगलियाॅ॑ फिराईं और फिर उसमें अपना चेहरा छिपा लिया। तीन रात पहले ही वो और अल्फ़ी दोनों ही इसमें घुसकर एक-दूसरे की बाहों में खोए आसमान के चॉ॑द को निहार रहे थे। उसे अभी भी उस कपड़े से अपने अल्फ़ी की खूश्बू आ रही थी। उसे याद कर वो एक बार फिर से जज़्बाती हो उठी और सिसकने लगी।

"अरे रोओ मत! सब ठीक हो जाएगा।" परिधि ने उसके कंधे पर हाथ रखकर सांत्वना देते हुए कहा।

"इसी उम्मीद में ही तो जा रही हूॅ॑। मुझे अपने अल्फ़ी के साथ रहना है... उसी के साथ जीना है। हमेशा!" उस ऊनी स्टॉल को अपने चारों ओर लपेटते हुए हेममाया ने कहा। इस पूरे दौरान परिधि उसके चेहरे को देखती रही। अल्फ़ी का नाम लेते ही उसके बुझे हुए चेहरे पर जिंदगी की चमक लौट आती थी।

"तुम सच में सर्वशक्तिमंडल का पद छोड़ दोगी?" परिधि ने अपने दिल में रूका हुआ सवाल आखिरकार पूछ ही लिया।
"इसीलिए तो जा रही हूॅ॑ ताकि इस झंझट से आजाद हो सकूं।" हेममाया ने नर्म लहज़े में कहा।

"क्या सच में तुम्हें ये नहीं चाहिए? अजीब बात है! मतलब कि... हमारी दुनिया में लोग मरते हैं ऐसी ताकत और रूतबा पाने के लिए। तुम यूंही छोड़ दोगी ये सब?" परिधि ने बेयकीनी से पूछा। हेममाया के जवाब से परिधि की हैरानी और भी बढ़ गई थी।

"तब तो तुम्हारी और मेरी दुनिया बहुत अलग है। ये सब कुछ मुझसे मेरी जिंदगी छीन रही है और मुझे बस मेरी जिंदगी चाहिए और कुछ नहीं। कुछ लोगों के लिए ये चीज़ें बहुत मायने रखती होंगी... पर मेरे लिए.... मेरा प्यार और मेरा परिवार सबसे ज्यादा मायने रखता है।" हेममाया ने बड़ी ही साफगोई से कहा।

एक बार फिर परिधि को उनके जवाब ने लाजवाब कर दिया था। उसके लिए ये अहसास बिल्कुल ही अलग और नया था। उसने जबसे होश संभाला था.... अपने चारों और बस सत्ता और ताकत के भूखों को देखा था। धोखेबाज और मौकापरस्त लोगों के बीच पली-बढ़ी परिधि को माया और अल्फ़ी का प्यार समझ में नहीं आ रहा था। उसने हेममाया के पहने हुए मामूली से कपड़ों की ओर देखा, जिसमें भी वो बहुत ही खूबसूरत दिख रही थी। क्या सचमुच प्यार में इतना असर होता है? क्या कोई सचमुच किसी के लिए ये सब छोड़ सकता है? इसका जवाब तो उसके सामने ही मौजूद था, मगर उस जवाब पर उसे अभी भी पक्का यकीन नहीं आया था। उसे अल्फ़ी को एक नज़र ना देख पाने का भी अफसोस हुआ।

जल्द ही रात गहराने लगी और उसी के साथ चारों ओर से जंगली जानवरों की डरावनी आवाजें भी सुनाई देने लगीं। इन सब से हेममाया थोड़ा घबरा सी गई थी। मगर परिधि ने उसे बताया कि उसे सुरक्षित सही जगह ले जाने के लिए वो सब जंगली रास्ते से जा रहे थे, जो मुख्य रास्ते से छोटा था
और यहीं से वो अगले दिन ही वापस आने वाले थे। वापसी की बात पर हेममाया का हर डर उसके दिल में दुबककर कहीं छिप गया और वो एक बार फिर से सुनहरे भविष्य के बारे में सोचती हुई आसपास के माहौल से अलग होकर एक बार फिर से अपनी ऑ॑खें बंद कर अल्फ़ी के सपनों में खो गई।

रात का तीसरा पहर चल रहा था, जब उनकी घोड़ागाड़ी के घोड़े लगाम खींचे जाने पर हिनहिनाते हुए धीरे से रूके थे। गाड़ी के रूकने पर झटका लगने की वजह से हेममाया की नींद खुल गई। उसने ऑ॑खें मलते हुए आसपास देखा। पर बंद खिड़कियों से कुछ भी दिखाई देना संभव नहीं था।

"हम पहुॅ॑च गए।" परिधि ने कहा और उसे अपने साथ नीचे उतरने का इशारा किया। उसकी बात

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]! [

"[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible], "[illegible]!"

[illegible]!

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible], [illegible]" [illegible]

[illegible]. [illegible]

"[illegible]... [illegible]!"

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?"

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]....

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 15 [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]...." [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(illegible 54)

[illegible]

[illegible]

(illegible 54)

[illegible]

[illegible]

"[illegible]

(page 56)

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

####

####-#### ####### ## ####### ##### ## ####### ## ###### #### #### ##### ## ########## ## ##### ######## ##### ####### ## ## ###### ##### ##### ## ## ## #### ## ##### ####### ## ## ##### #### ## ## #### ##... ##### ## ##### ##### #### ###### ## ####### ## ######## ##### ##### ####### ## #### #### ####### ## #### ## ##### ##### ##, ## ##### ##### ## ###### ####### ## #### #### ## ## #### ## ## ######## ## ####-#### ## ##### ##### ##### ## #### ## ##### ##, ####### ####### ## ####### ## ####### ## #### ## #### ##### ## #### ## ## #### #### ## ## #### #### ## ## ####### ## #### #### ####### ## ##### #### ##### ## #### #### ## ## ##### ###### ## #### ########## ###### ## #### #### ## #### ######### ## ###### ## ## ######### ## #### ##, ###### ## #### ###### ##### ## ###### ##### ##### #### ## ## #### ## ## ## ##### #### ## #### ####### ## ######### ## ###### ######### ## ## ## #### ## ######### ##### ## #### ######## ## ####### ## #### ## ###### ###### #### ##### ## ## ## #### ## ##### ##### ## #### #### ## ########## ##### ##### #### #### ###### ###### ##### ######
########

"## ## ##### ###### ###### ## ##### ## ####### #### #### ###### #### ## #### ##### ###### ## ## ## ######### ## #### ## #### ######" ###### ####### #### ####-#### #### #### #### ####

"######### ## ## ##### ## ## ########## ###### ###### ## ###### ## #### #### #### ## ####? #### ##### ## ###### ## ###### ##### ## ##### ## #### ##### ##### ####" #######, ###### ## ####### #### ######

"## #### ########! #### ###### ## #### #### ##.. ## ######... ###### ##### ##### ## ######### ###### ##### ## ##### ## ###### #### #### ## ##... ##### ## ####### ## ##### ##### ## ######! ####### ##### ##### #### ## ## ####!" ######### ## #### ##### ####### #### ####, #### ## ####### ## ##### ####### ###### #####

"#### ##### ########## ##### ####### ###### ##### ###### #### # ####... ## ###### ## #### ## ## #### ###### #### #####.... #### ######### #### ##### ## #### ## ## ## #### ## ## #### ##### ## ###### ## ##### ##### ## ## #### #### ###### ## ## #### #### ## ## ##### ##### ###### #### ##### #### ## ####### ##### ## ## #### ########## ##### ###### ## ## ##### ## ## ##### ###### ## #### #### ##### ##### ######## ##### #########" ######### ## ######## ## #####-#-#### ######## #### #####

"######! ## ########## ###### ####? #### ##### ######### ## ##### ##### #### ####... ## ## #### ## ##### # ##### ####" ##### #### ###### ############ ## ## ##### ## #### ## ###### ## ## ##### #### ########## ##### ## ## #### ###### ## ##### ######## ## ##### #### ## ##### ## ####, ###### ##### #### ## ###### ##### ## ##### ######
"##### ##### ####!" ###### ## ###### ## #### #### ######## ##### ##### ####

"##### ##### ## ##### ##### ## ##### ## #### ## ## ##### ####" ########## ## ######

"#####! ## ###### ##### ##### ##!" ###### ## #####

"## #### ###### ##?" ########## ## ## ######

"## ########## ## #####!" ###### ## ###### #### ###### #### ##### ###### #### ###### #####

"#### ## ########?" ######## ## ######

"#### ##### ## ##### ######## ## ###### ########## ## ###### ##, ## ## #### ########## ## #####, ##### ##### ## ##### ## #### ########## #### ##### ###### ############ ## ###### ## #### ## ##### ## ###### ###### #### ##### ## ##### #### ## ##### ## ##### ##### ###### ##, #### ## ##### #####" ###### ## ##### ########

"########## ## ###### ###### #### ########! ##### ## #### #### ###### ## ##### #### ########## ##-

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

थी क्योंकि वो चैतन्य की अनामिका के साथ-साथ अल्फ़ी की माया भी थी और इस चक्रव्यूह से निकलने के लिए उसे कभी ना कभी एक फैसला लेना ही होगा। वो फैसला जो किसी एक का दिल तोड़ने वाला था।

अपनी बात खत्म कर परिधि बेदम सी दीवार पर टिक गई। ऐना और अल्फ़ी एक बार फिर से अपनी उम्मीद को टूटते देख निढाल हो गए। वहीं चैतन्य और अनामिका एक अलग ही दुविधा के शिकार हो चुके थे। चैतन्य एक बार फिर से ये ख़ारिज करने की कोशिश कर रहा था कि अनामिका की कोई और पहचान भी हो सकती है, वहीं अनामिका ये सोचकर ही परेशान थी कि उसका जीवन बचाने के लिए उसकी कथित मॉ॑ ने हेममाया की आत्मा को उसके लगभग खत्म हो चुकी आत्मा के साथ जोड़ा था। अब वो खुद को पूरी तरह से अनामिका माने या फिर हेममाया और ये सोचकर उसकी नज़रें एक बार फिर बारी-बारी से चैतन्य और अल्फ़ी की ओर उठी। उसके सवाल का फिलहाल तो उसके पास कोई जवाब नहीं था और वो ये बात भी किसी को बताना नहीं चाहती थी। शायद पहली बार वो
खुद के बारे में सोच रही थी।

"क्या.... उस जीवपात्र को.... हासिल नहीं किया जा सकता?" परिधि ने दिव्याक्षि पर एक उम्मीद भरी नजर डालते हुए पूछा।

"किया तो जा सकता है। पर उसमें समय लगेगा। कितना? पता नहीं! तब तक हेममाया के शरीर को सुरक्षित रखना भी बहुत जरूरी है।" दिव्याक्षि ने एक संभावना के साथ कहा।

"पर..... हेममाया का शरीर तो पिशाचों के पास है।" चैतन्य ने सबको जानकारी देते हुए कहा।

"पिशाचों के पास! वो उनके पास कैसे पहुॅ॑ची?" ऐना ने भरी हुई ऑ॑खों के साथ पूछा।

"वो तो ये परिधि बताएगी।" चैतन्य ने एक फुंफकार छोड़ते हुए कहा।

"मैं नहीं जानती ये कैसे हुआ? किसने किया? जिस समय तुम सबने मुझे उस खुफिया दरवाजे के बाहर पकड़ा, मैं उसके शरीर के लापता होने के सदमे में ही थी। मैं सच में नहीं जानती कि ये किसने किया?" परिधि ने सिसकते हुए कहा।

"मार्गरेट-रोमा! और कौन हो सकता है? वही दोनों थे... जो उस जगह का रहस्य जानते थे और वहाॅ॑ बेरोकटोक आ-जा सकते थे।" अनामिका ने जवाब देते हुए कहा।

"सवाल ये नहीं है कि ये किसने किया। अब सवाल ये है कि हेममाया का शरीर वापस कैसे पाया जाए?" दिव्याक्षि ने चिंता से कहा।
और इस सवाल के साथ ही अल्फ़ी झटके से उठ खड़ा हुआ था। सबकी नज़रें उसकी ओर उठी थीं। इन सभी झमेलों के बीच उसके दिमाग से ये बात निकल ही गई थी कि उसकी माया का शरीर तक उसके पास नहीं था और ये ख्याल आते ही.... वो वापस आ सकती थी या नहीं आ सकती थी... ये सारे विचार अल्फ़ी के दिमाग से कहीं दूर छिटक गए थे। वो उसकी पत्नी थी... उसका प्यार थी। डायन और पिशाचों के विवादों से अलग.... उसका हक़ था कि हेममाया का शरीर उसे सौंपा जाए और अब वो हर चीज भूलकर अपना हक लेना चाहता था। सभी उसकी मनोदशा अच्छी तरह से समझ रहे थे और ये भी जानते थे कि एक अकेला अल्फ़ी ही था, जो हेममाया का शरीर ला सकता था। पर दूसरी तरफ ये दुनिया के मुश्किलतरीन कामों में से भी एक था। एक पिशाच और एक डायन का प्रेम.... और उस पर विवाह ना जाने कौन सा और कैसा तूफान ला सकते थे। मगर इस समय अंदर एक और तूफान को समेटे हुए अल्फ़ी को रोकना भी उतना ही मुश्किल काम था। वो दहलीज से बाहर कदम रखने ही वाला था कि तभी अल्फ़ी का ज़हन एक सवाल में उलझ गया और वो रूक गया। उसने पीछे मुडकर परिधि को तेज नज़रों से देखा।

"उसे मारा क्यों?" अल्फ़ी ने सपाट चेहरे के साथ अपने अंदर अटका हुआ सवाल बाहर निकाला।

"माया को उसकी शक्तियॉ॑ चाहिए थीं।" परिधि ने भी तुरंत जवाब दिया।

"शक्तियाॅ॑? पर वो तो अग्नि है.... जल की शक्तियॉ॑ लेकर क्या करेगी?" अनामिका ने पूछा।

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]? [illegible]? [illegible]! [illegible]

[illegible]! [illegible]" [illegible]

[illegible]! [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]"

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]
[illegible]
[illegible]...
[illegible]
[illegible]...
[illegible]
[illegible]...

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]...
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?"
"[illegible]! [illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]?"[illegible]
[illegible]?"
"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible].... [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]... [illegible]... [illegible]... [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

अंदर तक उतर गया।

"ये हेममाया के पिता ने अपनी बेटी के लिए रखा था, जब भी वो अपनी शक्तियों के प्रयोग के योग्य हो जाती। हेममाया को देने का समय तो मिला नहीं, पर तुम्हें देने के लिए मैं देरी नहीं करना चाहती। ये तुम्हें हर मुश्किल से बचाएगी। एक पिता का शीतल प्रेम और आशीर्वाद की सुरक्षा है ये।
उन्हें लगा था कि हमारी संतान हमारी तरह अग्नि धारक होगी, इसलिए ये उसकी शक्तियों को नियंत्रित करने के लिए दिया था। क्या पता था कि एक दिन शक्तिनियंत्रक की जगह ये शक्ति बढ़ाने वाला बन जाएगा। इसे खुद से कभी अलग मत करना। मुझे भी तसल्ली रहेगी कि इसे इसके हकदार को सौंप दिया मैंने।" अनामिका का हाथ पकड़े हुए ऐना ने भरे हुए गले से कहा।

अनामिका ने तेजी से अपना सिर हिलाया। सरिता के बाद ऐना के स्नेह ने उसे अभिभूत कर दिया था। उसने अपने सामने खड़ी उस औरत को ग़ौर से देखा। वो उसकी तस्वीर अपनी ऑ॑खों में उतार लेना चाहती थी, जिससे आज के बाद वो कभी भी नहीं मिलने वाली थी। ऐना ने बड़ी मुश्किल से खुद को संभाला और फिर वहाॅ॑ से तेजी से चली गई। अनामिका बस उसे जाते हुए देखते रह गई।

संघर्ष विभिन्न पड़ावों से गुजरता हुआ आखिरकार अपने आखिरी पड़ाव पर आ चुका था। अनामिका समझ गई थी कि वो और चैतन्य अतीत में कुछ भी बदल नहीं सकते थे। वो दोनों तो यहाॅ॑ इसीलिए आए थे क्योंकि वो दोनों भी अतीत में हुई इस घटना का एक हिस्सा थे और शायद वो सेतु भी जो अतीत और भविष्य को जोड़ती थी और अभी धुंध से ढंकी हुई थी। अब तो उन दोनों को ही इस अनकहे इतिहास से भविष्य की समस्या का हल ढूंढना था और उस 'सेतु' का निर्माण करना था, जो उन्हें अतीत से भविष्य में ले जा सकती थी।

अल्फ़ी किसी पागल गुस्सैल सांड की तरह फॉरेस्ट केबिन की ओर बढ़ रहा था। अभी-अभी वो दिव्याक्षि के कमरे से जो भी सुनकर और समझ कर आ रहा था, उसका एक ही बार था कि माया ने अपने मतलब के लिए उसके खुशहाल परिवार को बिखेरकर रख दिया था। आज उस लड़की से उसे हर दर्द का हिसाब चाहिए था और आज वो सर विलियम की भी नहीं सुनने वाला था। उसने सोच लिया था कि अगर सर विलियम हेममाया के शरीर को वापस पाने में सहायता करेंगे तो ठीक... वरना वो खुद ही उसे हासिल कर लेगा।

कहते हैं कि क्रोध जीवन का सबसे बड़ा शत्रु होता है। ये अक्सर सभी की सोचने समझने की शक्ति को कुंद कर देता है और इससे वशीभूत होकर ऐसे निर्णय ले लिए जाते हैं, जो समस्या को और भी बढ़ा देते हैं। अल्फ़ी भी इस समय उसी विध्वंसक क्रोध की अग्नि में जल रहा था। मगर इसमें उसका भला क्या कसूर था? जिसकी ऑ॑खों के सामने उसकी कुल जमा-पूंजी नेस्त-ओ-नाबूद हो जाए... वो कहाॅ॑ तक संयम बरते? सच तो ये था कि अब वो जीवन और मृत्यु के सवाल से भी ऊपर उठ चुका था। अब उसे बस बदला चाहिए था। चाहे ये बदला किसी के खून से नहाकर प्राप्त हो।

आज की रात उस अल्फ़ी की मौत हो चुकी थी, जिसका दिल नर्म हुआ करता था। जिसके रगों के खून में प्यार और मोहब्बत की रवानगी थी। जो खुद से पहले दूसरों की खुशियों और तकलीफ़ों की परवाह किया करता था। जो पिशाच होकर भी एक इंसान का प्रतिरूप था। अब जो जिंदा
था... वो एक विशुद्ध पिशाच था। वो पिशाच... जो उसके अंदर अंगड़ाई ले चुका था और अब बाहर आने के लिए बस एक मौके की तलाश में था।

मगर इतना होकर भी वो अभी एडवर्ड और माया जैसे शातिरों की तुलना में बहुत कमजोर था। पहले भी ये बात निकली थी कि ताकतवर वो होता है... जो सही समय और सही जगह पर ताकत का इस्तेमाल करना जानता है और अल्फ़ी अभी इस कला में पारंगत नहीं था। एडवर्ड और माया की हर योजना के सफल होने का सबसे अहम पहलू उनका धैर्य था। उन्होंने कभी भी... कहीं भी कोई अधीरता दिखाने की कोशिश नहीं की। परिस्थितियॉ॑ उनके विपरीत होने के बाद भी उन्होंने कोई जल्दबाजी नहीं की। दुश्मन जब ताकतवर के साथ बुद्धि-बल और छल में माहिर हो... तो दुष्कर हो जाता है और यही कठिनाई अल्फ़ी-अनामिका-चैतन्य के सामने आने वाली

आई। थोड़ी देर पहले जिसके ख़ौफ से वो मरने से पहले ही मरने को तैयार थी... चार लोगों के बीच उस अल्फ़ी को लाचार देखकर उसके अंदर की हिम्मत जाग गई और उसने भी एक घृणा भरी नज़र अल्फ़ी पर डालकर पूरी ताकत से उसे एक लात मारी। मगर उसकी इस हरकत से एडवर्ड बौखला गया।

"बिहेव योरसेल्फ! जाओ यहॉ॑ से। अपनी ताकत वहॉ॑ दिखाओ जहॉ॑ दिखा सकती हो।" एडवर्ड अपने दॉ॑त पीसते हुए माया से बोला। उसे अल्फ़ी से घोर नफरत क्यों ना रही हो, पर एक पिशाच को किसी डायन के पैरों में वो कभी भी बर्दाश्त नहीं कर सकता था। माया ने एक जहर भरी नज़र एडवर्ड पर डाली और फिर अल्फ़ी पर थूकते हुए वो वहॉ॑ से चलती बनी।

"उठाओ इसे और क़ैद खाने में डाल दो। अब इसका फैसला अहेरी सभा ही करेगी।" एडवर्ड ने अपनी आवाज में भरपूर नफरत उड़ेलते हुए कहा और वो उससे थोड़ी दूर जाकर खड़ा हो गया।

उसका आदेश सुनते ही चार गार्ड तुरंत आगे आए और सबसे पहले उन्होंने अल्फ़ी के दोनों हाथों को पीछे की ओर बांध दिया। उसके बाद पहले की तरह ही उसे आधा उठाकर घसीटते हुए ले गए। एडवर्ड सपाट चेहरे और भावहीन ऑ॑खों के साथ सब देखता रहा।
"डैड! आपने पिशाचों के अस्तित्व पर जो गंदी मिट्टी चढ़ा दी थी, उसे झाड़ने का समय आ गया है। सबको उनकी औकात पर घसीटकर लाऊंगा मैं।" कहते हुए एडवर्ड ने मुड़कर एक सर्द निगाह उस ओर डाली, जिस ओर से माया और डाकिनी गए थे। एक कुटिल सी मुस्कान उसके होठों पर खेली और होंठों के किनारे की ओर छिपे उसके पैने दॉ॑त चमक उठे।

कुछ ही देर में वो सारा इलाका बिल्कुल शांत हो गया। मगर किसी की सॉ॑सों की आवाज और धड़कनों का शोर उस शांति को भंग करना चाह रहा था। वो चैतन्य था, जो ना तो अल्फ़ी के साथ और ना ही जल्दी से उसके पीछे आ सका। जब वो वहॉ॑ पहुॅ॑चा तो अल्फ़ी को उन सबके बीच ऐसी हालत में पाया। हमेशा की तरह गुस्से का एक सैलाब उसे बहाने को ही था कि अनामिका की बात ने उसके पैर रोक दिए।

"ख्याल रखना अपना! मुझे फिक्र लगी रहेगी!"

और ये याद आते ही वो रूक गया। ऐसी हालत में वो जोश में होश नहीं खो सकता था। उसने छिपकर एडवर्ड की सारी बातें सुनी और उसका यही मतलब निकलकर सामने आया कि सर विलियम गायब थे और इसका झूठा इल्ज़ाम अल्फ़ी के सिर पर आया था। उसने डाकिनी के सवाल पर भी ग़ौर किया..... जिसमें वो अल्फ़ी के साथियों के बारे में पूछ रही थी। इसका मतलब कि वो सब भी उनके निशाने पर थे और पहली बार चैतन्य को अपनी लेट-लतीफी का अफसोस नहीं हुआ। अल्फ़ी तकलीफ़ में था, ये जरूर परेशानी की बात थी। मगर उसके भी अल्फ़ी के साथ होने पर हो सकता था कि वो भी अल्फ़ी की तरह ही उनके चंगुल में होता। कम से कम वो आजाद था और अल्फ़ी को छुड़ाने की हरसंभव कोशिश कर
सकता था। इन सबके बीच उसे ये भी याद रखना था कि वो भी वांटेड की लिस्ट में आ चुका था। यानि कि अब उसकी भी सरगर्मी से तलाश की जाने वाली थी या फिर... हो रही होगी। उसे इस समय अनामिका से थोड़ा सा धैर्य उधार लेने की जरूरत थी। उसका ज़हन एकदम से अनामिका की ओर गया। उसने सोचा कि संपर्क करके वो उसे यहॉ॑ हुई सारी बात बता दे... मगर अगले ही पल वो रूक गया। इस समय वो एक महत्वपूर्ण कार्य के लिए गई हुई थी। ये खबर उसका ध्यान भटका सकती थी, इसलिए अनामिका को कुछ भी बताने का ख्याल उसने फिलहाल के लिए टाल दिया। पर इतना तो वो समझ गया था कि माया और एडवर्ड दोनों ही एक-दूसरे को पसंद नहीं करते थे, मगर उनको किसी मजबूरी ने जोड़ कर रखा था और वो मजबूरी क्या थी... अब ये पता करना भी जरूरी था। अब वो वापस झील की ओर जा रहा था। उसका अगला काम मेंशन की ओर जाना था, जहॉ॑ बहुत कुछ पता चल सकता था और वहाॅ॑ जाने का रास्ता झील से होकर जाता था। फिलहाल अल्फ़ी के साथ वो सब भी माया और एडवर्ड के एक और छल का शिकार बन चुके थे।

अनामिका ने परिधि को दिव्याक्षि के पास छोड़ा और खुद छलद्वार की ओर बढ़ गई। चूंकि अनामिका जानती थी कि परिधि भविष्य में जाने वाली है, इसलिए परिधि की उसे ज्यादा फिक्र नहीं थी और उसका खुद आगे जाना जरूरी था। उसने सिर झुकाकर बैठी हुई परिधि की ओर देखा।

"परिधि!" उसने आवाज लगाई।

"हॉ॑!" परिधि ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा।

"प्लीज़! फिर से धोखा मत देना। आज जो भी हालात बिगड़े हुए हैं... दूसरों की धूर्तता और लालच से ज्यादा तुम्हारी कायरता की वजह से बिगड़े हैं। आगे तुम्हारी वजह से कुछ भी और बिगड़ा.... तो तुम्हें अल्फ़ी के हाथ.... मैं खुद सौंप दूंगी। याद रखना।" अनामिका ने अपनी आवाज में चेतावनी घोलते हुए परिधि से सख़्त आवाज में कहा।
जाहिर सी बात है कि ये बात अनामिका ने परिधि को डराने के लिए ही कही थी, जिसका असर उसके चेहरे पर दिखाई दे रहा था। एक बार फिर से उसने अपना सिर झुका लिया। अनामिका ने एक नज़र दिव्याक्षि और परिधि पर डाली और फिर एक गहरी सॉ॑स लेकर छलद्वार के अंदर चली गई।

अनामिका के छलद्वार के अंदर जाते ही दिव्याक्षि ने परिधि को आवाज देकर अपने पास बुलाया। डरी-सहमी सी परिधि ने दिव्याक्षि की ओर देखा। वो अपने हाथों से टटोल-टटोलकर कुछ सामान मेज में रख रही थी। उनके दृष्टिहीन होने का ख्याल आते ही परिधि के मन में भागने का ख्याल आया। उसे माया से बहुत डर लगता था। किसी तरह उसने अपने जख्म और थकान से चूर शरीर को उठाया और फिर बिना किसी आवाज के दरवाजे की ओर बढ़ गई। अनामिका की बातें उसे जाने से रोक रही थीं... मगर माया का डर उस पर कुछ ज्यादा ही हावी था... जिसने उसे रूकने नहीं दिया। दरवाजे के पास पहुॅ॑चकर उसने दहलीज को लांघने के लिए अपना पैर उठाया ही था कि अनामिका की धमकी एक बार फिर से उसके कानों में उतर गई।

"आगे तुम्हारी वजह से कुछ भी और बिगड़ा.... तो तुम्हें अल्फ़ी के हाथ.... मैं खुद सौंप दूंगी।"

और अल्फ़ी का ख्याल आते ही वो एक बार फिर से सदमे में आ गई। थोड़ी ही देर पहले उस पर किया गया अल्फ़ी का हमला उसे सिर से पैर तक सिहरा गया। उसने तेजी से अपने उठे हुए पैर वापस खींच लिए। उसे जूनून में डूबी हुई अल्फ़ी की अंगारें उगलती हुई ऑ॑खें याद आ गईं और उसका पूरा शरीर डर से थर-थर कॉ॑पने लगा था। उसे समझ में नहीं आ
रहा था कि वो क्या करे? उसके लिए तो आगे कुॅ॑आ और पीछे खाई वाली हालत हो गई थी। हर हालत में मौत अपना मुॅ॑ह उसके लिए खोले बैठी थी। वो ये सोचकर ही कॉ॑प उठी कि अगर उस समय अनामिका बीच में नहीं आई होती.... तो शायद इस समय वो हर्गिज भी जिंदा नहीं होती और.... इसी ख्याल के साथ उसके ज़हन में एक नाम रोशन हुआ।

"अनामिका!"

आज जब सभी उसे बचाने के लिए अल्फ़ी को रोकने में पूरी तरह से नाकाम हो गए थे.... उस समय अनामिका ही एक अकेली थी जिसने उसे संभाला था। वो उसकी बात सुनता था। एक अनामिका ही थी... जो उसे अल्फ़ी और उसके गुस्से से बचा सकती थी और रही बात माया की तो.... बीती रात ही अनामिका ने उस माया की भी अच्छी खासी दुर्गति बनाई थी। शायद वो उसे माया से भी बचा सकती थी। तो क्या उसे अनामिका की बात माननी चाहिए? उसका साथ देना चाहिए? अगर वो माया के तरफ जाती है.... तो वो अल्फ़ी उसे फाड़कर रख देगा और इस बार अनामिका भी उसे नहीं बचाएगी। जबकि माया खुद उसके साथ ईमानदार है... इस बात का भी उसे यकीन नहीं था। माया अपने मतलब के लिए किसी को भी मार सकती थी, जबकि अनामिका का साथ देने पर वो उसे सबसे बचा सकती थी। सब कुछ आईने की तरह साफ था, मगर परिधि की उलझे रहने की प्रवृत्ति उस आईने पर धूल की तरह जमी थी।

"परिधि! कहॉ॑ हो? यहॉ॑ आओ!" दिव्याक्षि ने उसे आवाज लगाई।

"हॅ॑!" परिधि ने चौंककर हुंकारी भरी।

"आओ जल्दी! समय नहीं है हमारे पास।" दिव्याक्षि ने उसे घुड़का था।
उनकी घुड़की सुनकर परिधि होश में आई। एक गहरी सॉ॑स के साथ उसने उस आईने पर जमी धूल को साफ कर दिया और दिव्याक्षि की ओर बढ़ गई। उसने अनामिका को चुन लिया था।

दिव्याक्षि के पास बैठते हुए उसने सामने रखी सारी चीजों को कौतूहल से देखा।
दिव्याक्षि अभी भी ना जाने उनमें क्या ढूंढ रही थी।

"परिधि जल्दी आओ!" एक बार फिर दिव्याक्षि ने ऊंची आवाज में कहा।

"यहीं तो हूॅ॑ मैं!" परिधि ने भी झुंझलाकर कहा।

"यहीं हो!" दिव्याक्षि बुरी तरह से चौंकी।

"हॉ॑! आपने बुलाया... तभी से।" परिधि ने कहा।

"अजीब है! मैं तुम्हें महसूस क्यों नहीं कर पाती? ऐसा लगता है कि जैसे... तुम्हारे अंदर कुछ है ही नहीं। खाली हो... खोखली हो।" दिव्याक्षि ने उलझी हुई आवाज में कहा।

"मुझे क्या मालूम!" परिधि ने बुझी हुई आवाज में कहा। दिव्याक्षि की बातों से एक बार फिर उसने खुद को अपमानित महसूस किया था।

"तुम दोनों ही बहनों को.... तुम्हारी मॉ॑ ने हमेशा मुझसे दूर ही रखा। जब तुम दोनों पैदा हुई थीं... तभी कुछ क्षणों के लिए मैंने तुम्हें अपने हाथों में लिया था क्योंकि तुम लगभग मरी हुई पैदा हुई थी। बर्फ की तरह बिल्कुल ठंडी! तुम में जीवन का कोई लक्षण ही नहीं था और फिर ना जाने क्या हुआ? मुझे एक तेज झटका सा लगा और तुम मेरे हाथों से गिर पड़ी। वो तो तुम्हारी मॉ॑ ने संभाल लिया और उसके बाद आश्चर्यजनक रूप से तुम्हारी सॉ॑से लौट आई थीं। वो दिन था और आज का दिन! तुम मेरे
लिए हमेशा वैसी ही रही। तुम्हारी बहन माया को तो मैंने कभी स्पर्श भी नहीं किया। मगर उस समय भी उसके आसपास अनिष्टकारी ऊर्जा को महसूस किया था मैंने। ये बात मैंने तुम्हारी मॉ॑ को बताई तो वो मुझ पर ही भड़क गई। शायद यही वजह है कि तुम्हारी मॉ॑ ने तुम दोनों बहनों को मेरे आसपास भी फटकने नहीं दिया। बस तुम्हारी बहन के कारनामे सुनती रही और पता चलता रहा कि वो कितनी बद से बद्तर होती जा रही थी।" कुछ काले और लाल धागों को सुलझाते हुए दिव्याक्षि ने पुरानी कहानी दोहराई।

जवाब में परिधि बस चुपचाप उनकी बातें सुनती रही। वास्तव में उसके पास कुछ होता ही नहीं था कुछ कहने के लिए। ना जाने बचपन से ही उसे ये कैसी आदत लगी थी कि जो पूछा जाए... बस उसी का जवाब दो। होश संभालते ही माया ने उसे अपने सॉ॑चें में पूरी तरह से ढाल लिया था। एक तरह से ये कहा जा सकता है कि वो माया के हाथों की कठपुतली थी। बचपन से ही ना तो उसकी अपनी कोई इच्छा रही... ना कोई राय। वो वही कहती या करती, जो माया कहती थी। बचपन में तो इसे दो बहनों के बीच का प्यार समझा गया, जो बिना किसी शक देखने वाले को बहुत ही प्यारा लगता था। मगर उस समय भी तारीफें माया के ही हिस्से में आती थीं कि कैसे वो अपनी शक्तिहीन बहन का हमेशा ख्याल रखती है। पर बड़े होने के साथ ही सबको समझ में आया कि माया ने परिधि को अपनी परछाई बना रखा था, जिसका वजूद माया के बिना था ही नहीं। उसे हमेशा यही लगता था कि माया से अलग वो खत्म हो जाएगी। वो कभी भी माया से अलग एक अलग शख्सियत बन ही नहीं सकी। उसके अंतर्मन की पीड़ा कोई भी नहीं समझ सकता था.... क्योंकि वो बता ही नहीं सकती थी कि वो कैसा महसूस करती है? जीवन में शायद पहली बार हेममाया के लिए उसने कुछ अलग महसूस किया था और शायद उसी अहसास ने उसे माया से थोड़ा सा कुछ अलग बना दिया। हेममाया के साथ रहकर उसके अंदर कुछ जिंदा हुआ था और उसी क़तरा भर जिंदगी ने भीड़ में भी अनामिका को सबसे अलग महसूस कर लिया था। हेममाया से जुड़े हुए अहसास की वजह से ही वो अनामिका के पास चली गई क्योंकि आखिर अनामिका ही तो हेममाया थी और फिर माया की कठपुतली बनी वो आज इस मुकाम पर खड़ी थी, जहॉ॑ वो बिल्कुल तन्हा थी।

"वो इसके पहले पन्ने में अपना नाम लिखो।" कहते हुए दिव्याक्षि ने अनामिका की दी हुई डायरी परिधि की ओर बढ़ाई। साथ में एक पेंसिल भी थी।

परिधि ने वो पेंसिल पकड़ी और फिर उस डायरी की ओर देखकर बोली, "क्यों?"

"बस लिखो!" इस बार दिव्याक्षि ने थोड़ी बेरूखी से कहा।

और फिर उनका रूखा लहजा पहचानकर परिधि ने चुपचाप वो डायरी अपने पास सरकाई। उसे याद आया कि अनामिका ने दिव्याक्षि को इस डायरी में परिधि की यादें कैद करने के लिए कहा था।
उसने हौले से उसे खोला। सामने चमकता हुआ सफेद पन्ना था। परिधि ने उस पर अपनी उंगलियॉ॑ फिराई और फिर पेंसिल से उस पन्ने पर अपना नाम उकेर दिया।

"परिधि!"

उसने कुछ देर उस नाम को घूरा और फिर से पेंसिल उठाकर उसमें कुछ और शब्द जोड़ दिए।

"मेरे जीवन की परिधि"
वास्तव में ये शब्द द्योतक थे इस बात के कि उसके जीवन के दायरे (परिधि/ घेरे) में जो कुछ भी हुआ वो इस डायरी में है और फिर उसने वो डायरी दिव्याक्षि की ओर बढ़ा दी।

दिव्याक्षि ने उस डायरी को अपने सामने खींचा। फिर उन्होंने उस पन्ने पर एक पन्ना (रत्न), जो पृथ्वी तत्व का रत्न है... उसे रखा और फिर उसके ऊपर अपना हाथ रखकर कुछ बुदबुदाने लगी। परिधि हमेशा की तरह चुपचाप सब सुनती-देखती रही, जो उसकी आदत थी।

"अपना हाथ दो!" दिव्याक्षि ने परिधि की ओर अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा। उनकी बात सुनकर परिधि ने अपना हाथ बढ़ाकर उनके हाथ में रख दिया और... अचानक ही ये हुआ। दिव्याक्षि ने अपना हाथ तेजी से पीछे की ओर खींचा था।

"क्या हुआ?" परिधि ने पूछा।

"ये कैसे हो सकता है?" दिव्याक्षि मन ही मन बुदबुदाई। मगर फिर उन्होंने अपनी सोच को पीछे धकेलते हुए पास पड़े लाल और काले धागे उठाए और उन्हें परिधि के हाथ पर बांध दिया। उन्होंने परिधि को पन्ने के ऊपर रखे उस रत्न पर हाथ रखने और ऑ॑खें बंद करने के लिए कहा। परिधि के हाथ रखने के बाद उन्होंने पास रखा एक पात्र उठाया। उसमें मिट्टी भरी हुई थी। उन्होंने उस मिट्टी से अपनी मुट्ठी भरी और फिर उसे परिधि के हाथ के ऊपर ले गई।

"थोड़ी तकलीफ़ हो सकती है, पर हाथ हटाना नहीं। समझी।" दिव्याक्षि ने तेज लहजे में परिधि को समझाया। एक गहरी साॅ॑स लेकर परिधि ने भी हमेशा की तरह सिर हिला दिया।

इसके बाद दिव्याक्षि अपनी मुट्ठी में बंद मिट्टी को धीरे-धीरे परिधि के
उस हाथ पर गिराने लगी। हर बढ़ते समय के साथ दिव्याक्षि के माथे पर सिलवटें बढ़ती गईं। ऐसा लग रहा था जैसे कि वो किसी प्रबल मानसिक प्रक्रिया से गुजर रही थीं। दूसरी ओर परिधि के चेहरे पर भी तनाव बढ़ता जा रहा था, जिसे सहन करना शायद उसके लिए बहुत मुश्किल हो रहा था। मगर वो फिर भी डटी रही। वो एक बार फिर से सबको नाराज नहीं करना चाहती थी। दरअसल दिव्याक्षि ने एक ख़ास प्रक्रिया के द्वारा परिधि के मस्तिष्क में आई उन सभी बातों को खींचकर उस डायरी में कैद कर रही थी, जिसका जिक्र थोड़ी देर पहले ही परिधि ने सबसे किया था। परिधि पृथ्वी तत्व वाली थी, इसलिए इस प्रक्रिया में दिव्याक्षि ने मिट्टी की मदद ली। परिधि ने अपने बर्दाश्त की आखिरी हद तक सब सहा, मगर हद पार होते ही वो बिदक गई। एक तेज चीख के साथ उसने हाथ हटा लिया। प्रक्रिया के टूटते ही दिव्याक्षि ने अपनी ऑ॑खें खोली। परिधि की सॉ॑से बुरी तरह से उखड़ी हुई थीं। उसका दिल भी धौंकनी की तरह धड़क रहा था। माथे पर पसीने के साथ उसकी नाक के बाऍ॑ हिस्से से खून निकल आया था। ऑ॑खों में भी तकलीफ़ें अपनी लाल डोरियॉ॑ छोड़ गई थीं। वो बुरी तरह से हॉ॑फ रही थी।

"कोई बात नहीं! बस आखिरी कुछ यादें रह गई।" दिव्याक्षि ने कहा।

"नहीं! मैं... और.... सहन.... नहीं कर सकती।" परिधि ने बमुश्किल कहा। दिव्याक्षि को भी उस पर रहम आ गया। थोड़ी और कोशिश से तो शायद वो मर ही जाती।

"ठीक है! अब इसे बंद करना भी पड़ेगा। इस पर ताला तुम लगाओ। तुम्हारा नाम... तुम्हारी यादें हैं इसमें।" दिव्याक्षि ने कहा।

"वो कैसे?" परिधि ने सॉ॑सों को संभालते हुए पूछा।

"कुछ लिखो इसे बंद करने के लिए और क्या? कोई आदेश!" दिव्याक्षि ने
कहा।

थोड़ी उलझन के साथ परिधि ने एक बार फिर से उस डायरी को अपने पास खींचा और उसमें पड़ी मिट्टी को हाथ से हटाया। उसने धीरे से अगला पन्ना खोला और उस पर नज़र पड़ते ही वो चौंक गई। वहाॅ॑ उसकी तस्वीर थी। उसने बहुत ही ग़ौर से उस तस्वीर को देखा। वो उसी की थी, पर उसमें कुछ तो अलग सा था। क्या? और इस क्या की तलाश में उसकी ऑ॑खें उस तस्वीर की ऑ॑खों में ठहर गईं। वो ऑ॑खें उसकी ऑ॑खों की तरह सर्द और भावहीन नहीं थीं। उन ऑ॑खों में जिंदगी भरी हुई थी। एक चमक सी थी, जो उसने कभी भी अपनी ऑ॑खों में नहीं देखी। यकीनन जब चैतन्य ने वो तस्वीर उस पन्ने में उकेरी, तब उसके ज़हन में भविष्य में उनके साथ रहने वाली परिधि थी, जो उनके साथ सच में जीना सीख गई थी। जो हॅ॑सती थी... मुस्कुराती थी। मगर इस समय वो इन ऑ॑खों का रहस्य नहीं सुलझा सकती थी। वो उसकी समझ से पूरी तरह परे था। उसने एक आह के साथ उस तस्वीर को देखा और बनाने वाले की दिल ही दिल में तारीफ की। हालांकि अगला ख्याल उसे यही आया कि ये यादों को सहेजने की प्रक्रिया में अपने आप ही बन गया होगा। उसने पेंसिल उठाई और उस सफहे(पन्ने) पर रखा। कुछ सोचा और फिर लिख दिया।

"रहने दो कुछ किस्सों को सफहों के दरमियान! खुल गए जो पन्ने... तो फिर तबाही आएगी!"

इतना लिखकर उसने वो डायरी बंद कर दी। आखिरकार यादों की वो डायरी तैयार हो ही गई, जिसने भविष्य में कई दिनों तक सब को उलझा कर रखा था। आज जब अनामिका और चैतन्य अतीत के इस हिस्से को खुद जी रहे थे... तो भविष्य में बाकी सब इसी डायरी से परिधि की यादों की मदद से अतीत से रूबरू हो रहे थे।
अभी उन दोनों ने ये काम खत्म किया ही था और वो अनामिका के इंतजार में थे कि तभी बाहरी दरवाजे पर हुई आहट ने दोनों को ही चौंकाया। परिधि का चेहरा एक बार फिर से डर की आग में राख हो गया था। वहीं दिव्याक्षि के माथे पर एक बार फिर से बल पड़े थे। एक जाना- पहचाना सा सर्द अहसास उसे छूकर गया था और ये अहसास जरा सा भी अच्छा नहीं था। उनकी छठी इंद्री ने खतरे के आसपास होने का इशारा किया और कुछ ही देर में वो ख़तरा उन दोनों के सामने खड़ा था। माया जिंदगी में पहली बार दिव्याक्षि के सामने उसके कमरे में खड़ी थी और उसके इस कमरे की दहलीज लांघ कर अंदर आते ही दिव्याक्षि को सब समझ में आ गया कि उसे जो बुरे से अहसास हो रहे थे.... वो क्या थे? एक पुराना परिचय फिर से उजागर होने वाला था। एक अनचाहे परिचित से फिर मुलाकात होने वाली थी।

"कैसी हो..... आभा?" माया ने अजीब से सर्द लहज़े में दिव्याक्षि की ओर देखते हुए कहा।

"ओह! तो ये तुम हो! मुझे तो पहले ही समझ जाना चाहिए था कि इतनी नीच आत्मा दूसरी कौन हो सकती है? छाया!" दिव्याक्षि ने जहरबुझी आवाज में कहा।

"ओह! ओह! ओह! तारीफ के लिए शुक्रिया! आखिर एक बहन ही.... बहन को समझ सकती है।" माया ने अपने तंजीले तीर छोड़ते हुए कहा।

"खबरदार! मैं तुम्हारी बहन नहीं हूॅ॑।" दिव्याक्षि बहुत ही कड़वाहट के साथ चीखी।

"शांत मेरी बहन! शांत! तुम्हारी आदत गई नहीं मुझ पर चिल्लाने की और चिल्लाने से ये सच बदल नहीं जाएगा कि तुम मेरी प्यारी सी बड़ी बहन
हो।" माया ने बहुत ही आरामदायक लहज़े में कहा, जिससे दिव्याक्षि चिढ़कर रह गई।

"तुम.... तुमने डाकिनी के गर्भ पर कब्ज़ा किया था, इसलिए उस समय उनके गर्भधारण में इतनी मुश्किलें आईं थीं। तुम्हारी वजह से ही परिधि ऐसी है। तुमने उसे गर्भ में ही खोखला कर दिया। उसे गर्भ में ही अपना खिलौना बना लिया।" दिव्याक्षि ने सारे बुरे

अनुमान लगाते हुए कॉ॑पती हुई आवाज में कहा। उनकी बात सुनकर वहॉ॑ मौजूद परिधि बुरी तरह से चौंकी थी।

"यू गॉट इट माई डियर सिस्टर!" माया ने चारों ओर चहलकदमी करते हुए बहुत ही बेतकल्लुफी से कहा।

"तो क्या... डाकिनी तुम्हारे बारे में जानती है। तुम्हारी वजह से ही उसने अपनी बेटियों को मुझसे दूर रखा क्योंकि मैं तुम्हें तुरंत पहचान जाती। ये डाकिनी ने सही नहीं किया। बिल्कुल सही नहीं किया।" दिव्याक्षि बुरी तरह से बिफरते हुए बोली।

"क्यों सही नहीं किया? हॅ॑! इस दुनिया में सबको ताकत चाहिए और एक बार जिसे इसकी आदत लग जाती है ना! उससे छुड़ाए नहीं छुटती। डाकिनी को भी अपनी वो ताकत बनाए रखनी थी और ये तभी मुमकिन था, जब उसके बाद उसकी बेटी डाकिनी बनती और ये भरोसा मैंने उसे दिया था। समझ लो कि.... एक समझौता हुआ था हमारे बीच। फिर इसमें गलत कैसा?" माया ने अपने कंधे उचकाते हुए बहुत ही लापरवाही से कहा, जैसे कि ऐसा होना कोई बड़ी बात नहीं है।

"तुम्हें चाहिए क्या? क्यों वापस आई हो? दिव्याक्षि ने मुद्दे पर आते हुए सवाल किया।
"बदला! बदला चाहिए था मुझे। जो धोखा मेरे साथ हुआ था... उसका बदला चाहिए था मुझे।" माया जोर से चिल्लाते हुए बोली।

"पर तुमने अपना बदला तांत्रिक माणिक को मारकर ले लिया था। फिर कैसा बदला?" दिव्याक्षि ने पूछा।

"उसके धोखे ने मेरा पूरा जीवन और मकसद जला डाला। मैंने भी उसके वंश को जलाकर राख कर देने की कसम खाई थी। उसकी वो बेटी मेरे पहले प्रहार से बच तो गई, पर उस समय उसे मेरी छाया ने छू लिया। बेचारी के जीवन की हर खुशी पर पनौती लगा दी मैंने। उसके हाथों में खुशियॉ॑ देकर हर खुशी नोचकर वापस ले ली मैंने और जब इस खेल से मेरा जी भर गया, तो... मार दिया उसे। मेरा... बदला...पूरा!" माया ने पूरी मक्कारी के साथ अपनी एक-एक काली करतूत सुनाई और भयानक अट्टहास के साथ हॅ॑सने लगी।

इस एक खुलासे ने परिधि और दिव्याक्षि के होश उड़ा दिए थे। उनके पैरों के नीचे ना तो जमीन रही और ना ही सिर पर आसमान। वो एकटक अपने सामने खड़ी उस बला को देख रहे थे, जो अपने बदले की आग में ना जाने क्या-क्या स्वाहा कर गुजरी थी।

"तुमसे ज्यादा बेरहम मैंने कोई और नहीं देखा। तुमने नीचता की हर पराकाष्ठा पार कर दी। तुम हमेशा दूसरों के जीवन से खेलती रही... वो सब सही था और जब किसी ने वही सब तुम्हारे साथ किया तो आग लग गई तुम्हें। ऐसी आग जिसने क्या-क्या जलाया है... तुम भी नहीं जानती!" दिव्याक्षि, माया को धिक्कारते हुए बोली।

"दूसरों के साथ जो किया... वो किया। पर सच में... मुझे वो तांत्रिक अच्छा लगने लगा था। पहली बार मैंने किसी पर भरोसा किया और उसी ने भरोसा तोड़ा। इसकी कीमत तो चुकानी ही थी... सो चुकाई।" माया ने
आग उगलते हुए कहा।

"अपनी उम्र का तो ख्याल करती। तुमसे 25 साल छोटा था वो। कम उम्र दिखने से कोई कम उम्र नहीं हो जाता।" दिव्याक्षि ने लानत भरी आवाज में कहा।

"तो मैं भी उसके पास नहीं गई थी। वो आया था और फिर उसी ने धोखा किया। धोखा किया... तो भुगता। अभी तो और भी बहुत कुछ है... जो तुम सबको देखना है.... भुगतना है। मेरा मकसद... जो उस धोखे की भेंट चढ़ गया... वो अब पूरा होगा और पूरा करेगी... हेममाया! सही है ना!" माया का एक और खुलासा एक बार फिर से उनके होश उड़ा ले गया।

आखिर किस मकसद की बात कर रही थी माया और हेममाया उसकी मदद कैसे करने वाली थी? वो तो मर चुकी थी। बहरहाल अभी जो सामने आया था, वो भी कम विस्फोटक नहीं था और दिव्याक्षि ये भी जान चुकी थी कि इस विस्फोटक से उसका नुकसान होना भी तय था। ऐसा नुकसान जो माया उर्फ छाया के लिए कोई मायने नहीं रखता था।

"कैसा मकसद? किस मकसद की बात कर रही हो तुम?" दिव्याक्षि ने उतावलेपन से पूछा था।

"मैं अपने दाऍ॑ हाथ की खबर बाऍ॑ हाथ को ना दूं, फिर तुम तो...! ख़ैर! मुझे परिधि चाहिए। उसे ही लेने आई हूॅ॑। चलो परिधि!" दिव्याक्षि की बात को परे करते हुए माया ने परिधि की ओर देखते हुए कहा।

और ये सुनते ही परिधि की जैसे जान ही सूख गई। उसने थरथराती पलकों के साथ दिव्याक्षि की ओर देखा। अगले ही पल उसे याद आया कि दिव्याक्षि ना तो देख सकती हैं और ना ही उसे महसूस कर सकती है। वो एक बार फिर से लाचार महसूस करने लगी थी।

"उसकी तरफ क्या देख रही हो? सुनाई नहीं दिया तुम्हें? आओ!" माया पूरी ताकत से चिल्लाई। अपनी बात को नज़रअंदाज़ होते देख उसका पारा और भी चढ़ा था।

"माया! वो... मैं..." परिधि ने कुछ कहने की कोशिश की, पर हमेशा की तरह कह नहीं सकती।

"क्या मैं-मैं? हॅ॑! कहीं तुम...." धमकी भरी आवाज के साथ वो परिधि की ओर बढ़ी।

उसे अपनी ओर आते देखकर परिधि की ऑ॑खें सदमे से फैल गईं और गला बुरी तरह से सूखकर तकलीफ़ देने लगा, जहॉ॑ से अब कोई भी शब्द बाहर निकलने को तैयार नहीं था।
"देख रही हूॅ॑ कि.... जब से तुम पहले उस हेममाया.. और फिर उस अनामिका की संगत में आई हो... ज़बान बहकने लगी है तुम्हारी। क्या तुम..... बग़ावत करने की सोच रही हो? लगता है कि तुम्हारे अंदर से सजा का डर खत्म हो गया है।" कहते हुए माया ने परिधि की ओर अपना एक हाथ बढ़ाया, जिससे परिधि बुरी तरह से सहम गई।

"वो कहीं नहीं जाएगी।" दिव्याक्षि के तेज और तीखे स्वर ने परिधि की ओर बढ़ते माया के कदम रोक दिए। उसने अपने चेहरे को हल्का सा झटका देकर दिव्याक्षि की ओर देखा।

"और.... कौन रोकेगा मुझे? तुम! मैं वो नहीं... जिसे आसानी से धोखा दे दिया था तुमने उस तांत्रिक के साथ मिलकर। सजा तो तुम्हें भी मिलनी है। पर मैंने वो बाद के लिए छोड़ दिया था। लेकिन ऐसा लग रहा है कि तुम खुद सजा भुगतने को आतुर हो। तो ठीक है! यही सही। बहन की इतनी इच्छा तो मैं पूरी कर ही सकती हूॅ॑।" माया ने बहुत ही कठोर और सर्द लहजे में कहा।

उसकी बात सुनकर दिव्याक्षि अपनी जगह से जरा सा हिली। वो जान चुकी थी कि माया उर्फ छाया के इरादे क्या थे। दिव्याक्षि को ये भी पता था कि पिछले कुछ सालों से उनकी ताकत को कम से कमतर करने की पूरी कोशिशें की गई हैं और उन्हीं कोशिशों की वजह से वो हेममाया की सही तरह से सुरक्षा और मदद नहीं कर सकी थी। दिव्याक्षि को कभी भी ये शक नहीं हुआ कि माया के खेल में डाकिनी की भी भूमिका हो सकती थी। जब डाकिनी और छाया के बीच वो समझौता हुआ, तब दिव्याक्षि का ध्यान पूरी तरह से ऐना की ओर था, जो कुछ समय पहले ही छाया की आत्मा के प्रहार से बाल-बाल बची थी, जिसका उन दोनों ने ही फायदा उठाया। सच बात तो यही है कि छाया उर्फ माया ने हर कदम पूरी तरह से फूंक-फूंक कर रखा था। यहॉ॑ तक कि माया ने कभी भी अपनी शक्तियों
को किसी के सामने जाहिर नहीं किया। उसने हर तरह से खुद को सात तालों में बंद कर रखा था और यही आज उसकी ताकत बन गया था। किसी को भी पता नहीं था कि वो क्या कर सकती थी?

"आभा... यानि कि चमक और छाया... यानि कि अंधेरा। अब जैसा नाम रखा मॉ॑-बाप ने... तो बनना भी तो वैसा ही था। लो बन गई मैं भी..... काली शक्तियों की स्वामिनी।" कहते हुए माया ने अपने सीधे हाथ की तर्जनी उंगली दिव्याक्षि की ओर उठाई। उस ऊंगली से एक बहुत ही बारीक लाल रोशनी की किरण निकली, जो तेजी से दिव्याक्षि की ओर बढ़ी।

"संभलिए दिव्याक्षि!" परिधि चिल्लाई और इसी के साथ ही दिव्याक्षि ने अपनी जगह तेजी से बदली। माया ने एक नाराज़गी भरी नज़र परिधि पर डाली और फिर अपनी बाईं हथेली झटके से परिधि के सामने कर दी। इससे एक धुंआ का गोला तेजी से परिधि की ओर बढ़ा और फिर उसे उस धुऍ॑ ने चारों ओर से घेर लिया। वो अब माया की कैदी बन चुकी थी। मगर इतने ही समय में माया का ध्यान बॅ॑टने से दिव्याक्षि ने तेजी से खुद को आक्रमण करने के लिए तैयार कर लिया। जैसे ही माया का ध्यान दिव्याक्षि की ओर गया... दिव्याक्षि ने अपने दोनों हाथों

[illegible]

धड़कता हुआ दिल।

माया अपने हाथ में उस खंज़र को पकड़े हुए दिव्याक्षि के पूरी तरह सूख चुके शरीर के पास आई और उन्हें बनावटी अफसोस के साथ देखने लगी।

"च्च्च्च्! तुमने सोचा होगा... माया अग्नि का वार करेगी। पर नहीं! माया ने तो जल का वार कर दिया। अब भला इससे कैसे बचती तुम? तो मेरी प्यारी बहन! आखिरकार आज तुम्हें मौत मुबारक हो!" कहते हुए माया ने आगे बढ़कर दिव्याक्षि का एक पैर पकड़ा और फिर किसी सूखी लकड़ी की तरह उसे तोड़कर दिव्याक्षि के शरीर से अलग कर दिया। शरीर का पानी जरूर सूखा था, मगर धमनियों में दौड़ने वाला खून अभी भी पूरी रफ्तार से दौड़ रहा था। पैर के टूटने से खून का रेला सा वहॅ॑ बस गया और उस जगह को लाल रंग से नहला गया। दिव्याक्षि की ऑ॑खों में बेतहाशा दर्द उतर आया था, जिसे वो और किसी भी तरह से जाहिर नहीं कर सकती थी। उधर माया पर बदले का जूनून सवार हो चुका था। उसने एक-एक करके दिव्याक्षि के शरीर के सारे अंग तोड़ दिए। सारी जमीन खून से नहा चुकी थी। दिव्याक्षि के हर एक अंग को तोड़ते हुए वो भयानक अट्टहास कर रही थी। उनके हर दर्द को उनकी ऑ॑खों में देखकर उसे बहुत ही सूकून मिल रहा था। वो अपनी निर्दयता के शिखर पर खड़ी थी, जहॉ॑
रहम नाम की कोई चीज नहीं होती। आखिर में वो उनके चेहरे पर झुकी और फिर उनकी ऑ॑खों में देखते हुए एक साधारण खंजर अपने हाथ में ले लिया। उसने उस खंज़र को दिव्याक्षि के दिल के ऊपर रखा और उस जगह को उस खंज़र से खुरचने लगी। दिव्याक्षि को अब कोई दर्द महसूस होना बंद हो गया था। वो अब ऑ॑खों से भी कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रही थी। आखिरकार खुरचते हुए माया, दिव्याक्षि के दिल तक पहुॅ॑च गई। उस सूखे मिट्टी जैसे शरीर के बीजच वो धड़कता हुआ दिल बहुत ही अजीब लग रहा था। माया ने उसे बहुत ही अजीब नज़रों से देखा और फिर क्रूरता की हद से आगे बढ़कर उस दिल को अपने लंबे नाखूनों में फॅ॑साते हुए खींच कर निकाल लिया। एक बार फिर से खून की तेज धार सब कुछ भिगो गई। एक बार के लिए लगा कि दिव्याक्षि का बचा-खुचा शरीर हल्का सा कॉ॑पा हो और फिर दिव्याक्षि की ऑ॑खों की जिंदगी भी सूख गई। सब खत्म हो गया था।

दिव्याक्षि के खत्म होते ही माया ने एक भयानक अट्टहास के साथ उनके दिल को अपने सिर के ऊपर उठाया और फिर उससे गिरते खून से खुद को भिगो दिया। वो इस समय मौत और क्रूरता का दूसरा रूप लग रही थी। उसने दिव्याक्षि से भी अपना बदला ले लिया था। दिव्याक्षि खत्म हो चुकी थी।

दिमाग से इस फितूर के उतरते ही माया ने दिव्याक्षि के दिल को हवा में उछाला और फिर अपनी ऊंगली से अग्नि किरण निकालकर उसे हवा में ही एक पल में ख़ाक कर दिया। वो तेजी से उस धुऍ॑ के बादल की ओर गई, जिसमें परिधि कैद थी। उसने हाथ बढ़ाकर झटके से परिधि को बाहर निकाला और उसे कोई प्रतिक्रिया देने का मौका दिए बिना ही उसे अपने साथ घसीटते हुए बाहर निकल गई।

उसका ये वार बहुत ही तीव्र था, जो अनामिका और चैतन्य दोनों को ही हिलाकर रख देने वाला था। मगर अपनी जीत के नशे में ये बात उसके
वहमोगुमान में भी नहीं आ सकती थी कि उसके हर एक वार को सहकर... इतने भयानक तरीके से अपनी जान देकर भी दिव्याक्षि ने उस पर जो वार करने का प्रबंध कर दिया था, वो उसके हर मंसूबों को छलनी-छलनी कर सकता था... बशर्ते अनामिका उस संदेश रूपी हथियार को पहचान सके, जो दिव्याक्षि उसके लिए छोड़ गई थी।

सही और ग़लत का ये युद्ध अपनी पहली बलि ले चुका था।

छलद्वार से होते हुए अनामिका जंगल में स्थित उस संदिग्ध गुफा के अंदर निकली। उस गुफा की दीवारों से पानी रिस रहा था और वो चारों ओर काई और सीलन से अटी पड़ी थी। उसने चारों ओर देखा। गुफा के खुले द्वार से अंदर आती हवाऍ॑ सीलन भरी पथरीली दीवारों से टकराकर अजीब सी आवाजें पैदा कर रही थीं। अनामिका ने एक नजर उस गुफा के खुले द्वार की ओर डाली। बाहर जंगल का एक हिस्सा साफ-साफ दिखाई दे रहा था। अनामिका ने अपना निचला होंठ दॉ॑तों में दबाया और कुछ सोचों के साथ वो उलझन का शिकार हो गई।

"चैतन्य ने बताया था कि इसी गुफा से जाना है, पर कहॉ॑ से? समय हाथ में नहीं है और अब इस दरवाजे को खोजने में कहीं वो कीमती समय नष्ट ना हो जाए!" उसने चारों ओर देखते हुए सोचा। गुफा की दीवारों में उसे कोई भी दरवाजा कहीं नज़र नहीं आ रहा था।

"[illegible]! [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [

बनकर उड़ जाऊंगी। ये तो ज्वाला मुखी है। तो फिर कैसे?" अनामिका चारों ओर देखते हुए बोली और फिर एक विचार उसके दिमाग में आया।

"ओह! अब समझ में आया कि यहां आने का रास्ता उस रिसती हुई गुफा से क्यों है? यहॉ॑ की बेहिसाब गर्मी को छिपाने के लिए। वरना कोई भी इसे ढूंढ लेता। वो तो चैतन्य गलती से यहॉ॑ आ गया इसलिए हमें इसका पता चल गया। अगर... उस गुफा की ठंडक इस खोह की गर्मी को बाहर जाने से रोक सकती है, तो वैसी ही ठंडक इस अग्नि को भी शांत कर सकती है।"

और ये विचार आते ही अनामिका मुट्ठी बांधकर अपनी ऊंगली की अंगूठी को अपने चेहरे के पास लाई और फिर जल का आह्वान करने लगी। कुछ
देर बाद उसने आगे बढ़कर उस खोह की दीवार पर हाथ रखा। उस पर हाथ रखते ही अनामिका की अंगूठी से पानी की एक लकीर सी निकली और फिर वो उस दीवार पर उतरकर उसमें तेजी से फैलने लगी। शुरूआत में तो सब बहुत आसानी से हो रहा था, मगर दीवार पर पानी के आगे बढ़ने के साथ ही उसकी रफ़्तार धीमी होने लगी। ये देखकर अनामिका थोड़ा घबराई। रफ्तार धीमी होने का मतलब ताकत कम होना था। अग्नि पर विजय तभी पा सकती थी, जब उसकी जल शक्ति उस अग्नि शक्ति से ज्यादा प्रबल हो। मगर अनामिका हार नहीं मान सकती थी। उसने अपने अंदर की पूरी हिम्मत इकट्ठा की और फिर अंदर चली गई। वो जानती थी कि ये तकलीफ़ देह होने वाला है, पर वो पीछे नहीं हट सकती थी। वो अंदर दीवार पर अपने दोनों हाथ टेककर खड़ी हो गई और पूरी ताकत से जल का आह्वान करने लगी। जाहिर सी बात है कि अग्नि ने भी अपना प्रहार तेज किया था। अनामिका की पुकार से गुफा की दरारों में मौजूद पानी पूरी तेजी से जगह ढूंढ-ढूंढ कर बाहर निकलने लगा और दीवारों पर फैलने लगा, जिससे दीवार के वो हिस्से ठंडे होने लगे। अग्नि के प्रहार से एक बार फिर अनामिका के हाथ और पैर भाप से झुलसने लगे थे। पर वो भी पूरी जिद्दी थी। वो अपनी जगह से रत्ती भर भी नहीं हिली।

अग्नि ने उसे कम समझ लिया था, पर वो अग्नि नहीं जानती थी कि अनामिका एक अकेली नहीं थी। उसमें दो-दो जल-रक्षकों की ताकतें थी। हेममाया की आत्मा को अपने शरीर में समेटे वो चित्रलेखा की शक्तियों की भी स्वामिनी थी। जल्द ही 1:2 का ये संघर्ष अपने नतीजे की ओर बढ़ने लगा। जल्द ही उस खोह की सारी दीवारें जल शक्ति के प्रभाव से ठंडी होने लगी और उनसे पानी बहने लगा। जल और अग्नि के मेल से भाप का एक गुबार पैदा हुआ, जो तेजी से ऊपर की ओर उठा और उस खोह की छत में जाकर जमा हो गया। अनामिका अब बहुत थक गई थी। उसके हाथ और पैरों के तलवे बुरी तरह से झुलस गए थे। बर्दाश्त की आखिरी हद में उसकी ऑ॑खों से आंसू के कुछ क़तरे बीते जमीन पर गिरे और फिर उन ऑॅसुओं से भाप का एक टुकड़ा पैदा हुआ, जो तेजी से ऊपर मौजूद भाप
के बादलों में जाकर मिल गया। उस टुकड़े के दूसरे बादलों में मिलते ही वो बदल संघनित होने लगे और फिर उन बादलों से पानी की तेज बौछार नीचे जलती हुई अग्नि लपटों पर गिरी। कुछ ही पलों में उस अग्नि ने हथियार डाल दिए। आग बुझ चुकी थी।

अनामिका ने अपने झुलसे हुए हाथ उस दीवार से हटाए और अपने झुलसे हुए पैर उस खंजर की ओर मोड़े। वो सामने था। वही जिसको पाने के लिए उसने इतना संघर्ष किया। अब बस आगे बढ़कर उसे उठाना शेष था। वो एक राहत भरी आह के साथ आगे बढ़ी। उसके हाथों और पैरों में बहुत जलन हो रही थी, पर उसे आगे बढ़ना ही था और वो बड़ी। हर दर्द को भूलकर आखिरकार वो उस खंज़र के सामने खड़ी थी। उसने देखा कि उस खंज़र से खून टपककर नीचे रखे पात्र में गिर रहा था। उसने अपना सिर झटका और फिर हाथ आगे बढ़ाकर उस खंज़र की मूठ को पकड़ लिया। ऐसा लग रहा था कि जैसे किसी ने उसे हवा में चिपका दिया था। मगर अनामिका ने भी पूरी ताकत लगाकर उसे खींचा और वो जैसे उखड़कर उसके हाथ में आ गया। वो अपनी कामयाबी के ईनाम उस खंज़र को देख ही रही थी कि एक बार फिर से उसे उस खोह की गर्मी बढ़ती हुई महसूस हुई। वो समझ गई कि वहॉ॑ से भागने का समय आ गया था। उसने देखा कि खंज़र के नीचे के पात्र में रखा खून उबलने लगा था। देखते ही देखते उसने लावे की शक्ल ले ली और उफनकर बाहर की ओर आने लगा। अनामिका उस खंज़र को अपने मजबूत हाथ में सुरक्षित पकड़कर तेजी से पलटी और पैरों के ज़ख्मों को नज़रअंदाज़ करते हुए पूरी ताकत से भागी। पात्र से घिरा लावा पूरी तेजी से उस कमरे में फैलने लगा, मगर वो अनामिका के जूनून के आगे उस समय हार गया, जब अनामिका उस लावे से सुरक्षित उस खोह की दहलीज पार कर गई। जलशक्ति की जीत हुई।

सीमा रेखा पार करते ही उसने पलट कर उस खोह की ओर देखा और उसे चिढ़ाने वाले अंदाज में मुस्कुराई। अब वो तेजी से उसी दरवाजे की ओर भागी, जहॉ॑ से वो आई थी। के कहे अनुसार उसे दिव्याक्षि के पास वापस
जाना था। जब वो दरवाजे से बाहर निकली, तो उसने चारों ओर चमगादड़ों की लाशें बिखरी हुई देखी। उसका जलदैत्य अभी भी बचे-खुचे चमगादड़ों के साथ जैसे खेल रहा था। अनामिका ने एक

[illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]!"
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 110

[illegible]

****

[illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [

"सर! वो... कमांडर एडवर्ड ने अल्फ़ी सर को गिरफ्तार कर लिया है... ये कहके कि...उन्होंने ही चीफ को गायब किया है।" एक गार्ड उलझे हुए लहजे में बोला।

"क्या? अल्फ़ी ने किया! किसने कहा?" चैतन्य ने अपनी कुशल अभिनय क्षमता का परिचय देते हुए कहा।

"कमांडर ने। आगे तो वही जानेंगे कि उन्होंने ऐसा क्यों कहा। पर..." कहते हुए वो गार्ड फिर से रूक गया।

"पर क्या?" चैतन्य ने एक बार फिर से अपनी नज़रें पैनी की।

"सर! गलती माफ करें! पर हमें नहीं लगता कि अल्फ़ी सर ने ऐसा कुछ किया है। वो तो बहुत ही भले इंसान हैं। पिछले चार महीनों से वो हम सबके साथ हैं। काम में गलती के अलावा उन्होंने कभी किसी से ऊॅ॑ची आवाज में बात नहीं की। हमेशा काम में लगे रहते। पता नहीं कौन उस भले इंसान को फॅ॑साना चाहता है?" वो गार्ड बहुत ही अफसोस भरे लहजे में बोला, जबकि अल्फ़ी के पक्ष में बोलता हुआ वो गार्ड चैतन्य को बहुत ही भला लगा।

"तो तुम लोगों को लगता है कि कोई अल्फ़ी को फॅ॑सा रहा है।" चैतन्य ने उन लोगों को तौलते हुए सवाल किया।

"हॉ॑ सर! सच कहें तो हम सबको बहुत ही अफसोस हुआ। वो कमांडर एडवर्ड की नज़रें जिस पर टेढ़ी हो जाती हैं, फिर वो कुछ देखने के लिए जिंदा नहीं रहता। बेचारे! लगता है कि चीफ़ का उनके करीब होना एडवर्ड
सर को चुभ गया। च्च्च्च्! पर अब कर ही क्या सकते हैं? चीफ होते तो वो उनको रोकते... पर वो ही गायब हो गए हैं।" पहले गार्ड ने उतने ही अफसोस के साथ कहा।

"तो तुम लोगों को क्या लगता है? किसने किया होगा ये सब?" चैतन्य ने पूछा। मगर उसका सवाल सुनकर सभी गार्ड्स डर से बंगले झांकने लगे।

"अरे बोलो! बताओगे तो... अल्फ़ी की कुछ मदद की जा सके। वरना बेचारा-बेचारा कहते हुए उसकी लाश उठाना।" चैतन्य ने इस बार थोड़ा घुड़ककर कहा।

"ऐसा मत कहिए सर! उनके लिए मैं अपनी जान भी दे सकता हूॅ॑। मेरी मॉ॑ की तबीयत खराब थी और मेरे पास ईलाज के लिए पैसे नहीं थे। अल्फ़ी सर ने अपनी पूरी बचत मेरे हाथ में रख दी और मॉ॑ का ईलाज करवाने के लिए कहा। उन्होंने रकम लौटाने से भी मना कर दिया। बस इतना कहा कि मॉ॑ बहुत कीमती होती है। उनका हमेशा ख्याल रखना और अपनी मॉ॑ से कहना कि मेरे लिए दुआ करें। यही बहुत है। आप सोचिए! ऐसा भला आदमी किसी को तकलीफ़ क्यों पहुॅ॑चाएगा?" एक गार्ड ने बहुत ही भावुक होते हुए कहा।

"हॉ॑ सर! इन चार महीनों में हर किसी ने उनका भला दिल देखा है। ना जाने कितनों की खुले दिल से मदद की है उन्होंने। उन्होंने ना तो कभी किसी से द्वेष रखा और ना ही किसी से जलन किया। वो खुद में ही खुश रहते थे। इसलिए तो सभी उनके बारे में ये खबर सुनकर बहुत परेशान हैं।" पहले गार्ड ने कहा।

और पहली बार चैतन्य को महसूस हुआ कि भलाई की क्या जगह होती है। अल्फ़ी से उसकी किस्मत ने सब कुछ छीन लिया पर उसकी भलमनसाहत नहीं छीन सका और आज उसकी यही भलमनसाहत उसके
काम आ सकती थी।

"अच्छा! तो क्या उसे बचाने में तुम मेरी मदद करोगे। उसने मेरी भी बहुत मदद की थी। पर मुझे नहीं पता था कि उसकी नर्मदिली ने बहुतों को राहत पहुॅ॑चाई है। अगर तुम साथ दो तो तुम्हारे अल्फ़ी सर को बचा सकते हैं।" चैतन्य ने एक उम्मीद भरी आवाज में कहा।

"क्या सच में? अल्फ़ी सर के लिए हम कुछ भी कर सकते हैं। आप बताइए कि क्या करना है?" एक गार्ड ने उत्साहित होकर कहा। बाकी गार्ड्स ने भी उसकी हॉ॑ में हॉ॑ मिलाई।

"तो सबसे पहले हमें इस मेंशन का कोना-कोना छान मारना है। मुझे लगता है कि इस मेंशन में छिपे हुए दरवाजे हैं, जिससे कोई ग़लत काम किया जा रहा है। अल्फ़ी ने ही ये आशंका जताई थी। हो सकता है कि इसी वजह से वो फॅ॑स गया हो। वैसे वो कहॉ॑ है अभी? पता है क्या

तुम लोगों को?" चैतन्य ने उन सभी को काम देते हुए सवाल किया।

"पता चल जाएगा सर! हमारे जैसे और भी लोग हैं। हम सब पूरे मेंशन को छान मारते हैं।
कहीं कुछ पता चलेगा, तो बताते हैं।" पहला गार्ड तनकर खड़े होते हुए बोला।

"हॉ॑! जिसने ये किया है... उसका पता चल जाए तो भी काम बन सकता है।" चैतन्य ने एक और काम सुझाया।

"सर! मुझे तो एडवर्ड सर पर ही शक है। उनकी भी तो चीफ से कभी नहीं बनी। वो तो थोड़े खिसके हुए भी लगते हैं हमें। एक बार तो मैंने उनको इस कुऍ॑ के अंदर देखा था। पता नहीं क्या कर रहे थे? पर उसी दिन से उन्होंने इस कुऍ॑ की तरफ जाने से सबको मना कर दिया।" दूसरे गार्ड ने एक और खुलासा करते हुए कहा।
और ये सुनते ही चैतन्य को अनामिका का ख्याल आया। उसका ख्याल आते ही वो बुरी तरह से हड़बड़ाया था। उसने सभी को तेजी से मेंशन में फैलकर जानकारी इकट्ठा करने के लिए कहा। वो सभी गार्ड्स तुरंत ही वहॉ॑ से चलते बने। उनके वहॉ॑ से जाते ही चैतन्य तेजी हवा की तरह उस कुऍ॑ में उतरा। उसे ध्यान आया कि अनामिका ने एक बार भी उसे पुकारा नहीं था। इसलिए भी उसका ध्यान दूसरी जरूरी बातों की ओर चला गया था। मगर अब अनामिका का ख्याल आते ही वो घबरा गया। इस रास्ते के बारे में पहले से पता होने की वजह से उसे आगे जाने में कोई परेशानी नहीं हुई। जल्द ही उसने उस रास्ते में अनामिका को अपनी ओर ही आते देखा।

"अनामिका!" वो जोर से चिल्लाया।

उसकी आवाज सुनकर इधर-उधर देखती अनामिका ने झटके से उसकी ओर देखा। चैतन्य को अपने सामने देखकर उसके चेहरे पर राहत भरी खुशी फैली थी। वो तेजी से उसकी ओर भागी और उससे जाकर जोर से लिपट गई। चैतन्य ने उसे खुद में समेटा.. मगर इस समय उसे अनामिका का ऐसा करना थोड़ा सा अजीब लगा।

"अनामिका! क्या हुआ?" चैतन्य ने उसे खुद से अलग करते हुए पूछा, मगर अगले ही पल उसकी सूजी हुई ऑ॑खों को देखकर वो घबरा गया।

"अनामिका! क्या हुआ? रो क्यों रही हो?" उसका चेहरा अपनी हथेलियों में भरकर चैतन्य ने बहुत ही बेचैनी से पूछा। अनामिका ने उसकी हथेलियों को पकड़ा ही था कि दर्द से उसने अपना हाथ झटक लिया।

"क्या हुआ?" उसे इस तरह हाथ झटकते हुए देखकर चैतन्य ने उसकी कलाईयॉ॑ थामी और उसकी झुलसी हुई हथेलियों को ऑ॑खें फाड़कर देखने लगा।
"खंज़र लेते समय में हो गया।" अनामिका ने अपने हाथ छुड़ाते हुए कहा।

"पर तुम रो क्यों रही हो? इन झुलसे हुए हाथों की वजह से तो बिल्कुल नहीं। इतनी कमजोर नहीं हो तुम!" चैतन्य ने एक बार फिर से अनामिका को कंधों से पकड़कर सवाल किया।

उसका सवाल सुनते ही अनामिका फफक-फफक कर रो पड़ी। अब तो चैतन्य की बेचैनी और भी बढ़ गई थी। उसने रोती हुई अनामिका को एक बार फिर से समेटा और उससे कारण पूछा। अनामिका ने सुबकते हुए उसे दिव्याक्षि की दर्दनाक मौत और माया की चालाकियों के बारे में सब बता दिया... कि किस तरह अपनी काली करतूतों का ठीकरा उस माया ने अनामिका के सिर पर फोड़ दिया और अब सब उसकी तलाश में हैं। सब कुछ सुनकर चैतन्य का दिल बुरी तरह से बैठ गया। वो हर तरफ से बस घिरते ही जा रहे थे।

"माया ने ये ठीक नहीं किया। एक दृष्टि हीन और बुजुर्ग औरत को मारकर उसने अपनी कायरता साबित की है। उस कायर को मैं छोड़ूंगी नहीं।" अनामिका उसी तरह बिलखते हुए बोली।

"अनामिका! मेरी तरफ से भी कोई अच्छी खबर नहीं है।" चैतन्य ने बुझी हुई आवाज में कहा।

"क्या मतलब?" अनामिका ने पूछा।

जवाब में चैतन्य ने उसे सब कुछ बता दिया। उसने ये भी बताया कि कुछ गार्ड्स उनकी मदद करने के लिए तैयार हो गए हैं। उन्हें वो मेंशन की छानबीन के काम में लगा आया है,

[illegible]
"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible]

"[illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"रूको! मुझे देखने दो! कोई बाहर हुआ तो परेशानी हो सकती है। मैं कहूं... तभी बाहर आना।" चैतन्य ने अनामिका को रोकते हुए कहा और फिर खुद ही बाहर निकल गया।

बाहर तो वो निकल आया, मगर उसकी ऑ॑खों के सामने जो था, उसे देखकर उसकी ऑ॑खें फटी की फटी रह गईं। ये मेंशन तो नहीं था, कोई और बिल्कुल ही अंजानी सी जगह थी, जिसे उसने पहले कभी नहीं देखा था। वो हैरान नज़रों से चारों ओर देखता हुआ आगे बढ़ा। एक अंजान मुकाम उसकी ऑ॑खों के सामने खड़ा उसे चिढ़ा रहा था।

भाग 112

"एक्सक्यूज मी!" पीछे से किसी लड़की की आवाज आई। उसने तेजी से पीछे मुड़कर देखा।
सामने एक 17-18 साल की ब्रिटिश लड़की उसे ही जॉ॑चती हुई ऑ॑खों से देखती खड़ी थी।
चैतन्य ने अकबका कर पहले तो इधर-उधर देखा और फिर जब आसपास कोई दिखाई नहीं दिया तो उसने सवालिया नज़रें उस लड़की पर डाली।

"मैं!" चैतन्य ने खुद की तरफ ही इशारा करते हुए कहा।

"यस! यू!" उस लड़की ने मुस्कुराते हुए कहा।

उस लड़की का जवाब सुनते ही चैतन्य खुद को दुरुस्त करता हुआ उसके पास गया।

"यस! हाऊ कैन आई हेल्प यू मैम?" चैतन्य ने बड़े ही तमीज से कहा। वो फिलहाल किसी लड़की से बत्तमीजी करने की वजह से खुद को कुटवाना नहीं चाहता था, जबकि उसे पता ही नहीं था कि इस समय वो दुनिया के किस कोने में था।
"माई गॉड! यू कैन स्पीक इंग्लिश!" उस लड़की ने घोर आश्चर्य के साथ दोनों हाथ अपने गले के थोड़ा नीचे रखते हुए कहा और... चैतन्य को समझ आया कि उससे फिर से गलती हो गई है।

"अ... लिटिल! लिटिल!" अपने फैलाए रायते को समेटते हुए चैतन्य ने कहा।

"चलेगा!" कहते हुए उस लड़की ने लपककर उसकी बांह पकड़ ली और उसके ऐसा करते ही चैतन्य की सॉ॑स ऊपर की ऊपर और नीचे की नीचे रह गई। उसके चेहरे के सभी रंग उड़ने की बजाय उसके चेहरे पर ही आपस में गुत्थम-गुत्था हो गए।

"व्हॉट चलेगा? देखिए मैम! मेरी वाइफ ने देख लिया तो उसके विधवा होने के चांस पक्का 200 पर्सेंट बढ़ जाऍ॑गे। छोड़िए मुझे!" कहते हुए चैतन्य ने सिहरते हुए अपनी बांह उस लड़की के हाथ से छुड़ाई और छलद्वार की ओर एक ख़ौफ भरी नज़र डाली।

"व्हॉट! वाईफ! आर यू मैरिड?" उस लड़की ने बुझी हुई आवाज में कहा।

"यस! आई एम अ मैरिड मैन। अनफॉर्चुनेटली!" चैतन्य ने बेचारों सा चेहरा बनाते हुए कहा।

"पूअर ब्वॉए!" उस लड़की ने चैतन्य के उतरे हुए चेहरे को देखते हुए हमदर्दी से कहा।

"यस मैडम!" चैतन्य ने भी उसकी हमदर्दी समेटते हुए कहा।

"देन लीव हर!" उस लड़की ने एक बार फिर से उसके करीब आते हुए
कहा।

"आऍ॑!" चैतन्य चिंहुंका।

"छोड़ दो उसे।" उस लड़की ने अपनी बात चैतन्य को समझाई।

"अरे मैडम! उसे छोड़ा तो वो मुझे तोड़ देगी। क्यों मेरी तेरहवीं का खाना खाने की फिराक में हैं आप?" उसकी बात सुनकर चैतन्य तिलमिला कर बोला। उसे अब झुंझलाहट होने लगी थी। कहॉ॑ वो इतनी बड़ी मुसीबत में फॅ॑से हुए थे और ऐसे समय में ये लड़की उसका सिर खा रही थी।

"ऐसा मत कहो। वैसे अल्फ़ी ने कभी बताया नहीं कि तुम शादीशुदा हो।" उस लड़की ने कहा और उसके कहते ही चैतन्य की इधर-उधर घूमती निगाहें झटके से उसी लड़की की ओर घूमी।

"अल्फ़ी! आप हमें जानती हैं?" सवाल पूछते हुए चैतन्य का दिल अजीब से अंदाज में धड़का।

"हॉ॑! बहन मानते हैं मुझे वो। उन्होंने ही मेरी हिंदी सुधारी।" उस लड़की ने मुस्कुराते हुए कहा।

"ओह! इसका मतलब कि आप मुझे पहले से जानती हैं।" चैतन्य ने इस बार उस लड़की की ओर ग़ौर से देखते हुए कहा।

"हॉ॑! तीन दिन पहले वॉकर मेंशन में आपको पहली बार देखा था। पर अब क्या फायदा? आप तो शादीशुदा निकले।" उस लड़की ने एक आह भरते हुए कहा। जवाब में चैतन्य ने उसे एक झेंप भरी मुस्कराहट दी।

"आप फैसला सुनने के लिए आए हैं?" उस लड़की ने पूछा।
"फैसला! कैसा फैसला?" चैतन्य ने सवाल के साथ अपनी ऑ॑खें सिकोड़ी।

"आपको पता नहीं। अल्फ़ी को गिरफ्तार कर लिया है इन्होंने। मैं जानती हूॅ॑ कि उन पर लगे आरोप झूठे हैं। लेकिन ये लोग उनकी कोई बात नहीं सुनना चाहते। मुझे उनके लिए डर लग रहा है। हिम्मत नहीं है मेरी फिर भी उन्हें एक नजर देखने के लिए आ गई हूॅ॑। पता नहीं कैसे देखूंगी?" कहते हुए वह लड़की जोरों से सुबकने लगी। उसके चेहरे पर एक दर्द उभर आया था।

"आपका मतलब है कि ये..." कहते हुए चैतन्य ने सामने खड़ी इमारत पर नजर डाली।

"हॉ॑! कोर्ट है ये! अहेरी सभा!" उसे लड़की ने चैतन्य के अधूरे वाक्य को पूरा किया।

" हे भगवान! यहॉ॑ कैसे आ गए हम? हम तो मेंशन जा रहे थे।" बुरी तरह से हैरान परेशान चैतन्य खुद में बुदबुदाया।

"आपने कुछ कहा नहीं। वैसे अपना बैज संभालकर रखिएगा। वरना ये लोग अंदर जाने नहीं देंगे।" वो लड़की बोली।

"बैज! कैसा बैज?" चैतन्य के होठों से फिसला।

"ये!" कहते हुए उसने अपनी पोटली से एक छोटी सी डिबिया निकाल कर उसे दिखाई। चैतन्या ने आंखें फाड़कर उस डिबिया को देखा और फिर अपनी नज़रें उस लड़की की ओर उठाई।
"ये बहुत महत्वपूर्ण जगह है। यहॉ॑ सब अंदर नहीं आ सकते। वैसे है तो कम.... फिर भी उम्मीद करती हूं कि हमें अच्छी खबर सुनने को मिले।" कहकर वो लड़की वहॉ॑ से जाने लगी।

"मिस! आपका नाम?" चैतन्य ने बेसाख्ता ही पूछा।

"अमांडा जॉनसन!" उसने पलट कर जवाब दिया।

"अगर अल्फ़ी को सजा हो गई तो।" चैतन्य ने उसके दिल में झांकने की कोशिश करते हुए कहा।

"ऐसा मत कहिए! बड़ी मुश्किल से एक भाई मिला मुझे! उसे खोना नहीं चाहती। आप जानते हैं सजा हुई तो वो मौत ही लेकर आएगी।" कहते हुए एक बार फिर अमांडा की ऑ॑खें भर आई थीं।

"अच्छा! और अगर मैं ये कहूॅ॑ कि मैं उसे बचाने आया हूं तो!" चैतन्य ने अपनी बात उसके सामने रखी। अमांडा ने हैरानी से उसे ऊपर से नीचे की ओर देखा और फिर आसपास देखते हुए उसके करीब आ गई।

"तो मुझे भी मददगार समझिए।" अमांडा ने बेहद गंभीर होते हुए कहा और फिर वहॉ॑ से चली गई।

"अहेरी सभा!" चैतन्य ने सामने खड़ी इमारत को देखते हुए कहा और फिर वो छलद्वार की ओर बढ़ा। अनामिका को छल द्वार के बाहर खड़ा देखकर वो जरा सा चौंका।

"हो गई तुम्हारी गप्पबाजी!" अनामिका ने अपने हाथ सामने बांधते हुए खासे चिढ़े हुए अंदाज में कहा।
"गप्पबाजी नहीं कर रहा था। तुम्हें पता है हम लोग मेंशन नहीं..... अहेरी सभा आ गए हैं।" चैतन्य ने उसे हालातों से मिलवाते हुए कहा।

"यहॉ॑ कैसे आ गए?" चैतन्य की बात से अनामिका भी बुरी तरह चौंकी।

"इसकी वजह से।" कहकर चैतन्य ने अपनी जेब से वो डिबिया बाहर निकाली और फिर अनामिका को अमांडा की कही सारी बातें बताई।

"तुम्हें ये कहाॅ॑ से मिली?" अनामिका ने पूछा।

"सर विलियम ने एडवर्ड का पीछा करने के लिए उसकी जो चेन दी थी.... उसे जल्दबाजी में इसी डिब्बे में डाल कर दे दिया था। वापस लौटाने का मौका नहीं मिला।" चैतन्य ने जवाब दिया।

"तो अब मेंशन कैसे जाऍ॑गे? अनामिका ने पूछा।

"मेंशन नहीं! अंदर चलो पर जरा ध्यान से। लगता है कि हमारे बारे में खबर अभी फैली नहीं है। पता चले कि अंदर हो क्या रहा है?" चैतन्य ने अनामिका का हाथ पकड़ते हुए कहा। पहली बार अनामिका को अपनी भारी-भरकम ड्रेस भरी सी लगी। उसने दूसरे हाथ से अपने बाल थोड़े सॅ॑वारे, जिस पर चैतन्य ने उसे अजीब सी नज़रों से देखा।

"अंदर जाना है तो हालत तो ठीक करना ही होगा।" अनामिका ने उसकी अजीब नजरों का जवाब देते हुए कहा।

चैतन्य ने अपना सिर अफसोस से हिलाया और फिर उसे साथ लेकर आगे बढ़ गया। इमारत के मुख्य द्वार के सामने कुछ सिपाही खड़े हुए थे, जो आने वाले लोगों के बैज चेक कर रहे थे। वो उनसे कुछ बातें भी कर रहे थे।
"यहॉ॑ तो सुरक्षा चाक-चौबंद है। संभलकर!" अनामिका ने चैतन्य की बांह पर अपने हाथ कसते हुए कहा।

जल्द ही वे दोनों भी उन गार्ड्स के सामने खड़े थे। चैतन्य ने अपनी जेब से वो डिब्बा बाहर निकाल कर उनमें से एक गार्ड की ओर बढ़ाया। उन्होंने चैतन्य और अनामिका को पैनी नजरों से ऊपर से नीचे तक देखा और फिर वो डिब्बा खोला। उसमें भरी मिट्टी को देखकर उनकी ऑ॑खें सिकुड़ी।

'वो गलती से... नीचे गिर गया था।" कहते हुए चैतन्य ने वो डिबिया वापस ले ली और उस मिट्टी को अपनी हथेली में खाली कर लिया। उसके बीच एक छोटा सा बैज था, जिस पर A लिखा हुआ था। उस गार्ड ने उस बैज़ को अपने हाथ में लेकर उलट-पुलट कर देखा और फिर एक हुंकारी के साथ उसने अनामिका की ओर देखा।

"एंड यू?" गार्ड ने अनामिका से पूछा।

"शी इज विथ मी! माई वाइफ!" अनामिका का हाथ पकड़ कर उसका परिचय देते हुए चैतन्य ने उसे गार्ड से कहा।

"ओह! इफ आई एम नॉट रॉ॑ग.... यू आर फ्रॉम द वॉकर मेंशन्स सिक्योरिटी स्क्वैड।" गार्ड ने चैतन्य के कपड़े पर लगे सिक्योरिटी बैज की ओर इशारा करते हुए कहा।

"ओह यस!" चैतन्य ने भी उस बैज़ को छूते हुए कहा।

गार्ड ने मुस्कुराते हुए उन दोनों की ओर देखा और फिर उन्हें आगे जाने का इशारा किया।
जल्द ही वे दोनों अंदर की भीड़ में शामिल हो गए। चैतन्य के कपड़े पर लगे बैज ने उसे गार्ड के संदेह में आने नहीं दिया। फिर भी
दोनों पूरी तरह से सावधान थे। आसपास के माहौल का जायजा लेते हुए दोनों उस बड़े से कमरे की ओर चल दिए जहॉ॑ ज्यादातर लोगों का रूख था।

अंदर सभा खचाखच भरी हुई थी। आखिरकार वारदात भी तो इतनी ही बड़ी थी। अनामिका और चैतन्य ने चारों ओर देखा तो सामने थोड़ी ऊंचाई पर पॉ॑च बड़ी कुर्सियॉ॑ रखी हुई थीं, जो फिलहाल खाली थीं। उसके सामने क्या हो रहा था यह देखने में चैतन्य और अनामिका को परेशानी हो रही थी। चैतन्य ने इधर-उधर नजरें दौड़ाई, तो उसने अमांडा को अपने पास आते देखा। चैतन्य का ध्यान बरबस ही अनामिका की ओर गया था।

"आप मेरे साथ आऍ॑!" कहते हुए अमांडा ने चैतन्य का हाथ पकड़ा और उसे खींचते हुए अपने साथ ले जाने लगी। चैतन्य की बांहें थामे हुए अनामिका भी उनके साथ बढ़ गई।

अमांडा उन दोनों को सीढ़ियों से चढ़कर ऊपर की ओर ले गई। उन दोनों ने देखा कि वहॉ॑ से सभा साफ-साफ दिखाई दे रही थी। वहां ढेर सारी हलचलें तो थीं, मगर ना तो अल्फी दिखाई दे रहा था और ना ही जज और ना ही एडवर्ड।

"सब कहॉ॑ हैं?" चैतन्य ने अमांडा से पूछा।

"बस आने वाले हैं।" अमांडा ने नीचे नज़र रखे हुए कहा।

वो बातें कर ही रहे थे कि तभी नीचे हलचलें और भी तेज हो गईं। उन तीनों ने सभा के दरवाजे की ओर देखा। गुस्से में तमतमाता हुआ एडवर्ड सभा के अंदर आ रहा था। उसके अंदर आने पर सभी ने उसके लिए रास्ता छोड़ दिया। चैतन्य और अनामिका ने एक दूसरे की ओर देखा।
यकीनन ये गुस्सा खंजर के हाथ से निकल जाने का था, जिसे दूसरों ने कुछ और
समझा था। वो आगे जाकर एक चेयर पर बैठ गया। वो बहुत ही ज्यादा गुस्से में लग रहा था। उसने अपने एक पैर के ऊपर दूसरा पैर चढ़ाया और अपने सीधे हाथ की कोहनी उस पर टिका कर उस हाथ की मुट्ठियॉ॑ बांधकर अपने चेहरे के सामने रखकर सोचने की मुद्रा में बैठा था।
जल्द ही माहौल में फैला हुआ शोर धीमा हो गया।

"जज आ रहे हैं।" अमांडा ने उन दोनों को बताया। चैतन्य और अनामिका ने देखा कि काले और लाल लबादे ओढ़े हुए 5 उम्र दराज व्यक्ति जजों की रखी हुई कुर्सियों के पास बने दरवाजे से अंदर आए और सभी अपनी जगह पर बैठ गए।
जल्द ही सभा की कार्यवाही शुरू की गई।

मुजरिम को बुलाने का आदेश हुआ और सभी की नजरें सभा के अंदर आने वाले दरवाजे की ओर मुड़ गई। कुछ ही पलों के बाद चैतन्य और अनामिका ने उस दरवाजे से कुछ सैनिकों को अंदर आते देखा जिन्होंने अल्फ़ी को जंजीरों में बुरी तरह से जकड़ रखा था और उसे किसी जानवर की तरह खींचते हुए ला रहे थे। जब वे लोग अल्फी को लोगों के बीच से लेकर जाने लगे, तब आसपास खड़े लोगों ने अल्फ़ी को नोंचने खसोटने की कोशिश की। उसे ऐसी हालत में देखकर जहां चैतन्य परेशान हुआ था वही अनामिका बुरी तरह से दहल गई। उसने रेलिंग पर अपनी दोनों हाथों की उंगलियॉ॑ मजबूती से कस लीं और डबडबाई हुई ऑ॑खों से उसे देखने लगी। वो उसे तकलीफ़ में नहीं देख सकती थी। अचानक ही झुलसी हुई हथेलियां पर दर्द की एक लहर सी उभरी जो अनामिका के होठों से सिसकारी बनाकर निकली।

"अनामिका! संभालकर! चोट है तुम्हारे हाथ में।" उसके दिल के हाल से बेखबर चैतन्य ने

बेचैनी से उसकी ओर देखा और उसकी हथेलियां थाम ली। अनामिका ने अपना सिर हिलाया और अपनी जख्मी हथेलियां पीछे कर लीं।
थोड़ी ही देर में अल्फी को सभा के बीचो बीच घुटनों के बल बिठा कर रख दिया। एक सैनिक ने अपने भाले की नोक से उसके सिर को झुका कर रखा था। वो बहुत ही बुरी हालत में था। उसकी हालत देखकर अमांडा भी अब रोने लगी थी।

कार्यवाही के शुरू होते ही शातिर एडवर्ड ने सर विलियम के गायब होने और उनके साथ कुछ बहुत बुरा होने का अंदेशा लगाते हुए इसके लिए अल्फी को कसूरवार बताया। अपनी चाल आगे चलते हुए उसने अल्फ़ी और हेम माया के रिश्ते को सबके सामने रख दिया। ये सबके लिए बहुत ही गंभीर मामला है गया। एडवर्ड ने जजों को बताया कि पिछली रात अल्फी और उसके साथियों ने सर्वशक्तिमंडल की संभावित सदस्य माया का अपहरण कर लिया था। उसने साफ-साफ इल्जाम लगाया कि अल्फी और उसकी पत्नी हेममाया धोखे से सर्व शक्ति मंडल और वॉकर मेंशन पर कब्जा जमाने का बुरा इरादा रखते थे। इसके लिए वो किसी की जान लेने से भी पीछे नहीं हटे। उन दोनों ने सर विलियम की सुरक्षा में लगे चार सिपाहियों को भी जान से मार दिया। मगर किसी तरह एडवर्ड को इन सब के बारे में भनक लग गई। उसने किसी तरह माया को तो इनके चंगुल से छुड़ा लिया मगर अपने पिता को नहीं छुड़ा पाया। सर विलियम के कमरे में खून का फैला होना इस बात का सबूत है कि कुछ बुरा घट चुका है।

एडवर्ड के इल्जाम सुनने के बाद सभा में शोर और भी बढ़ गया। वहां मौजूद सभी लोग मृत्युदंड दिए जाने की वकालत करने लगे। जज ने किसी तरह सभी को शांत करवाया। उन पांच जजों में से एक सबसे बड़ी उम्र के जज ने अल्फी की ओर देखा।

"क्या तुम मानते हैं कि तुमने एक डायन से विवाह किया है।" उस जज ने अल्फी से सवाल किया।
अल्फ़ी ने अपना जख्मी चेहरा ऊपर की ओर उठाया और हॉ॑ में सिर हिला दिया। उसे शायद इतना मारा गया था कि वो कुछ बोलने की हालत में नहीं था।

"ये बहुत ही गंभीर गलती है। गलती नहीं.... गुनाह है। क्या तुम्हें पता था कि एक पिशाच और डायन का विवाह कभी नहीं हो सकता।" एक दूसरे जज ने सवाल किया।

इस बार भी अल्फी ने हॉ॑ में सिर हिला दिया। अल्फी की हॉ॑ सुनकर सभी जजों ने एक दूसरे की ओर देखा।

"अल्फ़ी मीना! तुम पर यह अपराध सिद्ध हो चुका है कि अपनी नीच इरादों को पूरा करने के लिए तुमने सर विलियम की जघन्य हत्या की है। इसलिए ये अहेरी सभा तुम्हें मृत्युदंड देती है।" मुख्य जज ने फैसला सुनाते हुए कहा।

जज के फैसला सुनाते ही पूरे वातावरण में एक शोर सा उठा और लोगों के बीच खुशी की लहर दौड़ पड़ी। वहॉ॑ मौजूद सभी का मानना था कि जो पिशाच अपने ही समुदाय के खिलाफ जाकर इस तरह का जघन्य अपराध करे उसे मृत्यु दंड से कम कुछ नहीं दिया जा सकता। अल्फ़ी की मौत को एक नज़ीर की तरह पेश किया जाने वाला था, ताकि कोई भी पिशाच आगे चलकर ऐसी कोई हरकत करने की ज़ुर्रत ना करे।

भाग 113

"अल्फ़ी मीना! तुम पर यह अपराध सिद्ध हो चुका है कि अपनी नीच इरादों को पूरा करने के लिए तुमने सर विलियम की जघन्य हत्या की है। इसलिए ये अहेरी सभा तुम्हें मृत्युदंड देती है।"

सजा के ऐलान के साथ ही एक ओर जहॉ॑ कमरे में हर्षोल्लास भरा शोर उठा, वहीं तीन धड़कनें बस रूकते-रूकते बचीं। अमांडा ने तो अपना मुॅ॑ह हथेलियों में भींच लिया। उसकी ऑ॑खें सदमे से फैल गईं और उन्होंने आंसुओं को बाहर निकलने की इजाजत दे दी। अनामिका भी चारों ओर मचे शोर से अलग सुन्न सी खड़ी रह गई। चैतन्य का दिमाग भी जैसे कुछ समय के लिए छुट्टी पर चला गया था। वो तीनों बस सिर नीचे झुकाकर घुटनों के बल बैठे अल्फ़ी को देखे जा रहे थे। इस सदमे से सबसे पहले अनामिका बाहर निकली। उसने अपने कॉ॑पते हुए हाथों से

चैतन्य का हाथ पकड़ा और उसकी ओर मुड़ी।

"चैतन्य! उसे.... बचाओ! प्लीज़... कुछ करो! उसे बचाओ!" अनामिका ने अपनी कॉ॑पती हुई आवाज में कहा। उसका सारा शरीर इस झंझावत से कॉ॑पने लगा था।

"अनु!" चैतन्य ने उसके कॉ॑पते हुए शरीर को थामा और उसकी ऑ॑खों में देखा। वहॉ॑ डर था।
बहुत सारा डर। इतना डर कि वो कुछ और कहने की
हालत में नहीं थी। चैतन्य ने घबराकर उसे थाम लिया।

"मिस अमांडा! ये सब क्या है? आपके यहॉ॑ इस तरह न्याय होता है। एडवर्ड ने जो कहा वो कहा... पर अल्फ़ी को कुछ कहने की इजाजत क्यों नहीं दी गई। उसे अपना पक्ष रखने का मौका क्यों नहीं दिया गया। और.... किस हत्या की सजा? एडवर्ड ने एक बार भी नहीं कहा कि सर विलियम की हत्या हो गई है। उसने बस कुछ बुरा होने की बात कही। ये सब क्या हो रहा है? आप समझाऍ॑गी!" अनामिका के कॉ॑पते हुए शरीर को संभाले.... चैतन्य ने बहुत ही तीखे लफ्जों में अमांडा से पूछा।

"मुझे... कुछ नहीं पता। ये कैसे हुआ? पर... ये ग़लत है। ये तो... एक तरफा फैसला है। मैं.... मैं पता करती हूॅ॑।" इतना कहकर अपना आंसुओं से भरा चेहरा लिए वो एक ओर भागी।

चैतन्य ने अनामिका के कॉ॑पते हुए शरीर को अभी भी थाम रखा था। उसने नीचे की ओर देखा।
उसे ये बहुत ही अजीब लगा कि वे लोग इस एक तरफा फैसले से जितना आहत हुए थे, वहीं अल्फ़ी ये सब सुनकर भी चुपचाप सिर झुकाए बैठा था। वो कुछ कह क्यों नहीं रहा था? वो इतना कमजोर तो नहीं था कि अपनी खुशियों को रौंदने वालों के सामने इस तरह घुटने टेक दे। तो हुआ क्या था कि वो सिर झुकाकर इतना बड़ा जुल्म बर्दाश्त कर रहा था।

ये सब सोचते हुए उसकी नज़र अल्फ़ी से हटकर अनामिका की तरफ गई। वो उसके सीने पर सिर टिकाए बेआवाज रो रही थी और उसकी नज़रों का मरकज़ (केन्द्र) अल्फ़ी का थका और झुका हुआ वजूद था।

"अनु!" उसने हौले से आवाज लगाई।

अनामिका ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। वो उसी तरह अल्फ़ी पर नज़र
टिकाए सुबकती रही। चैतन्य के दिमाग में एक ख्याल आया और उस ख्याल के आते ही उसका दिल जोर से धड़का।

"परेशान मत हो। सब... ठीक.... हो जाएगा.... माया!" उसने अपने अंदर की सारी हिम्मत जोड़कर ये नाम पुकारा। और उसका दिल धक्क से रह गया, जब ये नाम सुनते ही अनामिका का सुबकना एकदम से रूक गया। वो एकटक अल्फ़ी पर नज़रें टिकाए कुछ देर वैसे ही पड़ी रही और फिर कुछ पलों बाद उसने हौले से अपना सिर उठाकर चैतन्य की ओर देखा। अपनी ऑ॑खों में अजीब से जज़्बे लिए वो उसे ही देख रहा था। जो हुआ.... उसमें उलझी हुई वो चैतन्य से अलग हुई और अपनी नज़रें नीची कर ली। चैतन्य के दिल में एक हूक सी उठी, पर उसने खुद को किसी तरह से संभाला।

"हम बचा लेंगे उसे। मेरा वादा है!" चैतन्य ने अनामिका के कंधे पर हाथ रखकर भीगी हुई आवाज में कहा। अनामिका ने कुछ कहा नहीं। वो बस एकटक अल्फ़ी की ओर देख रही थी। नीचे कागजी कार्रवाई की प्रक्रिया चल रही थी। उसी समय अमांडा दौड़ती हुई आई। वो बहुत ही बदहवास सी नज़र आ रही थी।

"क्या हो गया मिस अमांडा? आप घबराई हुई सी लग रही हैं।" चैतन्य ने भी अपनी घबराहट जाहिर करते हुए कहा।

"घबराने वाली बात ही है। हम इस अदालत में अल्फ़ी के लिए कुछ नहीं कर सकते।" अमांडा ने उसी घबराहट के साथ कहा।

"ऐसा क्या हो गया है? अगर कोई आगे नहीं जाएगा, तो मैं जाऊंगा उसके लिए गवाही देने।" चैतन्य ने भड़की हुई आवाज में कहा।

"इन सबका अब कोई फायदा नहीं। मैंने पता किया। अल्फ़ी ने खुद अपना

जुर्म कबूल किया है... सुरक्षा अधिकारियों और दो जजों के सामने। उसने साफ-साफ कहा कि उसने चीफ विलियम अल्फ़्रेड वाॅकर की हत्या की है।" अमांडा ने अपने रंग उड़े चेहरे के साथ कहा।

"अल्फ़ी ने ऐसा कहा! हो ही नहीं सकता।" चैतन्य ने बेयकीनी से कहा। अल्फ़ी को जानने वाला कोई भी ये बात नहीं मान सकता था।

"मुझे लगता है कि उसे बहुत ज्यादा टॉर्चर किया गया है। शायद इसीलिए..." अमांडा ने लहुलुहान और पस्त पड़े अल्फ़ी की ओर दया भरी नज़रों से देखते हुए कहा।

"ऐसा कैसे हो सकता है? ऐसा नहीं हो सकता। हो ही नहीं सकता। वो उनके सामने हार नहीं मान सकता। वो ऐसा नहीं है।" अनामिका इंकार में तेजी से अपना सिर हिलाते हुए बोली।

"तुम्हें कैसे पता? हो सकता है कि जिसने तुम्हें ये बात बताई, उसने भी बस एक अंदाजा लगाया हो।" चैतन्य ने एक उम्मीद से कहा।

"नहीं! खबर पक्की है। मेरे डैड ने ये बात बताई है मुझे। वो एक सुरक्षा अधिकारी हैं और.... जेल और क़ैदियों की जिम्मेदारी संभालते हैं। अल्फ़ी ने जिनके सामने अपना जुर्म कबूल किया..... उनमें से एक मेरे डैड भी थे। उसने ऐसा ही कहा है। शायद उसने हाथर...." अमांडा ने अपनी बात पूरी करनी चाही मगर अनामिका ने उसे टोक दिया।

"नहीं! मैंने कहा ना ऐसा नहीं हो सकता। चैतन्य! तुम कहो ना! वो ऐसा नहीं कर सकता। अगर उसने ऐसा कहा है तो जरूर कोई और ही बात है। मौत का डर अल्फ़ी को अपने प्यार के कातिलों के सामने नहीं झुका सकता।" अनामिका बदहवास सी चैतन्य का कॉलर पकड़कर बोली। उसकी बदहवासी देखकर चैतन्य का दिल चाक हुए जा रहा था। वो बस उसकी ऑ॑खों को पढ़ने की कोशिश कर रहा था, जहॉ॑ बस दर्द ही दिखाई दे रहा था। चैतन्य ने हाथ उठाकर अपनी गिरेबान पर कसे उसके हाथों को थाम लिया।

"वादा किया है ना! उसे कुछ नहीं होने दूंगा।" चैतन्य ने भी अपने अंदर की आग को दबाकर कहा। शायद पहली बार वो अनामिका और माया के बीच झूलती उस लड़की की कश्मकश को समझ रहा था या फिर... समझने लगा था। अनामिका ने एक गहरी साॅ॑स के साथ अपना सिर उसके सीने पर टिका दिया।

"इतिहास में पहली बार ऐसा हो रहा है कि.... पिशाचों ने किसी पिशाच के खिलाफ ही कार्यवाही की हो। इनकी अदालत में कोई मुलजिम (आरोपी)नहीं होता... सब मुजरिम(अपराधी) होते हैं। अल्फ़ी के साथ ये कोई रहम नहीं करने वाले। वो इस सजा को एक सबक के रूप में सबके दिलों में बैठाना चाहते हैं।" अमांडा ने भरे हुए गले से कहा।

"पर क्या उन्हें पता नहीं है कि अल्फ़ी के पिता कौन है? अगर वो पिशाच है, तो क्यों है?" चैतन्य ने अमांडा से सवाल किया।

"अल्फ़ी ने अपने पिता का नाम नहीं बताया। उसने बस ये कहा कि वो एक पिशाच है। एक विशेष परीक्षण से ये साबित भी हो गया। उस एडवर्ड ने ये भी कहा है कि अल्फ़ी के मन में उसके पिता सर विलियम के लिए प्रतिशोध की भावना थी। वो इस इरादे से भी यहॉ॑ आया था।" अमांडा ने कहा।

और ये सुनते ही चैतन्य और अनामिका को ये समझ में आ गया कि इस बात का खुलासा कि अल्फ़ी, सर विलियम की संतान हैं... उसी के खिलाफ जा सकता है। एडवर्ड ये आसानी से साबित कर सकता था कि अपनी मॉ॑
के साथ हुए धोखे का बदला लेने के लिए अल्फ़ी ने सर विलियम की हत्या की है। चैतन्य और अनामिका को ऐसा लग रहा था कि उन दोनों का ही दम घुट जाएगा। वो सब एडवर्ड और माया के जाल में इस क़दर उलझ गए थे कि उससे निकलने के लिए जितना जोर लगाते... उतना ही फॅ॑सते जा रहे थे।

तभी नीचे से एक बार फिर से तेज शोर की आवाज आई। वो तीनों एक बार फिर से नीचे की ओर देखने लगे। शायद कागजी कार्रवाई पूरी हो चुकी थी।

"ये लोग अब क्या करेंगे अल्फ़ी के साथ?" चैतन्य ने पूछा।

"तय करेंगे कि मौत कैसे दी जाए।" अमांडा ने गहरे दु:ख के साथ कहा और ये सुनते ही अनामिका और चैतन्य की नज़रें नीचे की कार्यवाही की ओर चली गई।

"जैसा कि सिद्ध हो चुका है कि अल्फ़ी ने सर विलियम अल्फ़्रेड वाॅकर से विश्वासघात करते हुए उनकी हत्या की और अपना ये जुर्म उसने खुद कबूल किया है। इसलिए 'खून के बदले खून' की तर्ज पर मुजरिम को सर विलियम अल्फ़्रेड वाॅकर के बेटे एडवर्ड विलियम वॉकर के हवाले किया जाता है। वो ही ये तय करेंगे कि इसे किस तरह की मौत दी जाए। सजा के बाद इसका कटा हुआ सिर अहेरी भवन के सामने एक दिन के लिए लटकाया जाएगा, ताकि इसका अंजाम देखकर भविष्य में कोई भी ऐसी ज़ुर्रत करने की गलती ना करे।" अपनी बात खत्म कर मुख्य जज ने कुछ कागजों पर दस्तखत किए और फिर अपने पेन की नोक तोड़ दी। उन कागजों की एक प्रति एडवर्ड को दी गई और एक प्रति सुरक्षा अधिकारी को।

इसके बाद अदालत को अगले केस की सुनवाई के लिए आगे बढ़ाया गया।
अल्फ़ी को जकड़ी हुई बेड़ियों को पकड़े हुए चारों गार्ड्स ने एक बार फिर से उसे खींचकर खड़ा किया। उसकी तकलीफ़ को देखकर अनामिका के होंठों से एक सिसकारी सी निकल गई। एडवर्ड उन गार्ड्स के पास आया और फिर उसने उनसे कुछ कहा। उन गार्ड्स ने तनकर खड़े होते हुए उसे सैल्यूट किया और अल्फ़ी को अपने साथ जानवरों की तरह खींचकर ले गए। एक बार फिर से वो लोगों के बीच से गुजरते हुए उनकी लानतों का हकदार बना हुआ था। अनामिका ने अपना चेहरा तेरा जी से दूसरी ओर घुमाया था कि ये सब देखकर बर्दाश्त कर पाना उसके लिए संभव नहीं था। दिव्याक्षि की मौत से जो आग उसके अंदर लगी थी... अल्फ़ी की सजा ने उस पर तेल छिड़क दिया था।

"मिस अमांडा! पता करो कि अल्फ़ी को कहॉ॑ ले जा रहे हैं? हमें वहॉ॑ जाना होगा। इस एडवर्ड के इरादे सही नहीं है। उसे खुद अल्फ़ी को मारने का अधिकार मिल गया है और वो इसका फायदा कैसे उठाएगा... हमें पता है। जल्दी जाइए!" चैतन्य ने अमांडा से और जानकारी हासिल करने की गरज से कहा।

उसकी बात पर सिर हिलाती हुई अमांडा एक बार फिर से वहॉ॑ से चली गई। अनामिका थकी हुई सी शून्य में घूर रही थी। चैतन्य ने अपनी बांह उसके कंधों पर फैलाकर उसे हौसला देते हुए कहा, "सब ठीक हो जाएगा। तुम्हें पता है ना... कि उसे कुछ नहीं होगा। वो भविष्य में हमारे सामने था अनामिका!"

"पर वो ऐसा नहीं है। वो बुरा है और मैं नहीं चाहती कि वो बुरा बने। हमें उसे बुरा बनने से रोकना होगा चैतन्य।" अनामिका ने तड़पकर कहा।

"हॉ॑! हम जरूर रोकेंगे।" चैतन्य ने भी हामी भरते हुए कहा।

अभी वो दोनों बातें कर ही रहे थे कि तभी उन लोगों ने डाकिनी और माया
को कुछ अन्य डायनों के साथ सभागार के अंदर आते देखा। उन्हें देखकर एडवर्ड का मुॅ॑ह बुरी तरह से बिगड़ा था, मगर उसने तेजी से अपने चेहरे के भावों को बड़ी ही कुशलता से छिपाया और उनकी तरफ एक मुस्कुराती हुई नज़र डाली।

अब ये सब यहॉ॑ क्यों आईं हैं? फैसला तो हो गया।" अनामिका ने अपने सूजी हुई ऑ॑खों से नीचे की ओर देखते हुए कहा।

"पता नहीं! कहीं ये लोग दिव्याक्षि की मौत और माया के अपहरण का मामला रखने तो नहीं आए हैं।" चैतन्य ने एक अनुमान के साथ कहा।

"फिर तो लगता है कि हम भी मुसीबत में हैं।" अनामिका ने बेचैनी से कहा।

अभी वो दोनों इसी विषय में बातें कर ही रहे थे कि तभी अमांडा भागती हुई वहॉ॑ आई।

"क्या हुआ? कुछ पता चला।" अनामिका ने बेसब्र होकर पूछा।

"हॉ॑! उसे मेंशन के कैदखाने में लेकर जा रहे हैं। अब वहॉ॑ से बस उसकी मौत की खबर बाहर आएगी।" अमांडा ने खुद को काबू में करते हुए कहा।

"ऐसा कभी नहीं होगा।" चैतन्य ने अपनी मुट्ठियों को भींचकर कहा।

"मैं कुछ मदद कर सकती हूॅ॑।" अमांडा ने मदद का हाथ बढ़ाते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर चैतन्य ने उसे एक पैनी नज़र से देखा और फिर उससे ये पता करने के लिए कहा कि अल्फ़ी को किस जगह क़ैद में रखा जाएगा और उस कैदखाने की कोई भी चीज लाने के लिए कहा। अमांडा ने तेजी
से हॉ॑ में सिर हिलाया और वहॉ॑ से चली गई। अनामिका की समझ में भी चैतन्य की पूरी बात नहीं आई थी कि वो आखिर क्या करने वाला है? वो उसे उलझन से देख रही थी।

"ऐसे मत देखो। हम उसे क़ैद से निकालने जा रहे हैं। पहले इन डायनों की मंशा भी समझ लें, ताकि अब हम जो भी करें... पुख़्ता और मजबूत करें।" चैतन्य ने अनामिका से कहा और एक बार फिर से नीचे की ओर देखने लगा, जहॉ॑ एक और कार्यवाही शुरू हो चुकी थी। एक दिल दहलाने वाला फैसला लेने के बाद ये सभा एक और फैसले का हथौड़ा उन दोनों के दिमाग में मारने को तैयार थी।

चैतन्य पूरी गंभीरता से नीचे की ओर देख रहा था। अमांडा उन्हें ऐसी जगह ले गई थी, जहॉ॑ से वो तो नीचे की सारी कार्यवाही देख सकते थे मगर नीचे से वो किसी की नज़र में नहीं आते। डायनों के आने से माहौल में सुगबुगाहटें तेज हो गई थीं। सर विलियम की कोशिशों से पिशाचों और डायनों के बीच की दूरियॉ॑ कुछ कम जरूर हुई थी, मगर खत्म नहीं हुई थी। इसका ताजा तरीन उदाहरण अल्फ़ी और हेममाया के विवाह पर की गई टिप्पणी थी और शायद इसीलिए अल्फ़ी का फैसला पहले ही कर दिया गया था। दोनों ही एक दूसरे की मौजूदगी को अभी भी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। मगर मामला ज्यादा ही गंभीर हो चुका था और इसमें पिशाच, डायन और तांत्रिक तीनों ही समुदायों की संलिप्तता सामने आई थी... इसलिए इस समय तीनों ही समुदायों के प्रमुख का उपस्थित होना आवश्यक था।

पिशाच समुदाय के प्रमुख सर विलियम अल्फ़्रेड वाॅकर गुमशुदा थे, जिनकी हत्या की बात सामने आ चुकी थी। इसलिए इस समय सर विलियम का बेटा एडवर्ड अल्फ्रेड वाॅकर अपने समुदाय की अगुवाई कर रहा था। डाकिनी के आने के बाद डायन समुदाय भी अपना प्रतिनिधित्व ले आया था। अब बेसब्री से तांत्रिक समुदाय के प्रमुख तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ जी के आने का सबको इंतजार था।

चैतन्य के अंदर की बेचैनी हर पल के साथ बढ़ती जा रही थी। हर बीतता लम्हा उसे कुछ खोने का अहसास दिला रहा था। वो तो अल्फ़ी को बचाने के लिए तुरंत निकल जाता, मगर यहॉ॑ की कार्यवाही पर नज़र रखना भी उतना ही जरूरी था। इसी बेचैन हालत में जब उसने अपनी नज़रें अनामिका की ओर घुमाई तो उसे ऑ॑खों में शोले लिए नीचे की ओर घूरता पाया। उसकी सॉ॑से बहुत ही तेजी से चल रही थीं और उसने अपने दॉ॑तो को पूरी ताकत से भींच रखा था। चैतन्य की नज़रों ने अनामिका की नजरों
का पीछा किया तो वो नीचे बेफिक्र सी बैठी माया पर जाकर रुकी। चैतन्य अब सब कुछ समझ गया था। उसने अनामिका को अपने पास खींचा और उसके सिर पर हाथ फेरते हुए उसे शांत करने लगा। इस समय ज्यादा जज़्बाती होना उन पर भारी पड़ सकता था।

उसी समय नीचे एक बार फिर से शोर उठा। तांत्रिक श्रेष्ठ का आगमन हो चुका था। चैतन्य और अनामिका दोनों ने ही नीचे की ओर देखा। तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ अपने कुछ अनुचरों के साथ अंदर आ रहे थे। वो एक लंबे-चौड़े बलिष्ठ शरीर के स्वामी थे, जिन पर उम्र अपनी छाप छोड़ने में नाकामयाब दिखाई दे रही थी। उनकी चपलता, फुर्ती और चेहरे का तेज उन्हें सबसे अलग कर रहा था। उनके सभा में आते ही लोगों की कानाफूसियॉ॑ पर लगाम लग गया था, जिससे पता चल रहा था कि उनका रूतबा हर समुदाय में ऊॅ॑चा था।

डायन और पिशाच समुदाय के बीच चाहे जितना भी तनाव रहा है... तांत्रिक समुदाय का संबंध पिशाच और डायन दोनों ही समुदायों के साथ बहुत ही अच्छा था। तांत्रिक और डायन समुदाय के बीच विवाह संबंध भी थे, जिसका एक उदाहरण हेममाया के माता-पिता ऐना और तांत्रिक माणिक का विवाह था। वहीं पिशाचों ने खुद को इस तरह के संबंधों से अलग ही रखा था।
डायनों के साथ तो ऐसा संबंध एक अनहोनी ही थी, जिसका खामियाजा अल्फ़ी ने भुगता था।

तांत्रिक श्रेष्ठ के आने के बाद आगे की कार्यवाही शुरू की गई। एडवर्ड ने अपनी बनाई हुई कहानी सबके सामने सुनानी शुरू की... कि किस तरह अल्फ़ी और उसके साथियों ने इतना बड़ा षड्यंत्र रचा था? एडवर्ड का कहना था कि "सबसे पहले तो अल्फ़ी और हेममाया नाम की डायन ने विवाह जैसा गंभीर अपराध किया। उसके बाद जब उन्हें ना जाने कैसे... सर्वशक्तिमंडल के बारे में पता चला तो उन्होंने एक षड्यंत्र रचा। हेममाया को माया की जगह बदलने का। इस षड्यंत्र के अनुसार अल्फ़ी ने सर
विलियम को भरोसे में लेकर यहॉ॑ अपनी स्थिति मजबूत की और फिर खुद को और अपनी उस डायन पत्नी को आगे के लिए तैयार करने लगा। इसमें उनका साथ अनामिका नाम की एक डायन ने भी दिया, जो बसेरे में धोखा देकर घुस गई और वहॉ॑ की हर जानकारी इन दोनों को देने लगी। चूंकि इस बार सर्वशक्तिमंडल के चुने जाने वाले सदस्यों का नाम छिपाने के बाद भी ना जाने कैसे माया का नाम सबके सामने खुल गया, जिससे अल्फ़ी और हेममाया की योजना खटाई में पड़ती दिखाई देने लगी और इस वजह से ये लोग गलतियॉ॑ कर बैठे और हमारी पकड़ में आ गए और इसी हड़बड़ाहट में इन दोनों ने उस दूसरी डायन अनामिका के साथ मिलकर कल रात माया का अपहरण भी कर लिया। मुझे इस अल्फ़ी पर बहुत पहले से शक था, इसलिए मैंने अपने कुछ गुप्तचर उसके पीछे रखे थे। लेकिन हम नहीं जानते थे कि वो हमारे पिता को भी इस तरह से नुकसान पहुॅ॑चाएगा। हमने किसी तरह आज सुबह माया को उस अल्फ़ी के चंगुल से बचाया, जो बस उसकी हत्या ही करने वाला था। डाकिनी उस समय हमारे साथ ही थीं, जब हमने उस अल्फ़ी को गिरफ्तार किया। उस हेममाया को भी सर विलियम के स्टडी, जहॉ॑ उनका खून बिखरा हुआ मिला था... वहीं से रात ही गिरफ्तार कर लिया गया है। शायद अल्फ़ी मृत शरीर को ठिकाने लगाने गया था और ये हमारे चंगुल में फॅ॑स गई। अल्फ़ी को तो अपने गुनाहों की कड़ी सजा मिलने वाली है तो अब सभा को तय करना है कि उस हेममाया को क्या सजा दी जाए?"

अपनी लंबी-चौड़ी मनगढ़ंत कहानी सबको सुनाने के बाद एडवर्ड ने अपनी जगह पर कब्जा जमाया। जहॉ॑ एडवर्ड की कहानी सुनकर वहॉ॑ मौजूद सभी लोगों की ऑ॑खों में खून उतर आया, वहीं चैतन्य और अनामिका उसकी चालाकी पर सन्न रह गए। कितनी महारत से उसने इन सबसे अपना और माया का दामन साफ बचा लिया था।

"ये एडवर्ड, हेममाया की गिरफ्तारी की बात क्यों कह रहा है? वो तो मर चुकी है।" चैतन्य ने हैरानी के साथ कहा।
"होगा इनका कुछ मतलब और क्या?" अनामिका ने अंदाजा लगाने से इंकार करते हुए कहा।

"पर... उसने मेरा नाम भी नहीं लिया!" चैतन्य के मुॅ॑ह से हैरानी भरी आवाज निकली।

"उसने तुम्हें हमारे साथ देखा नहीं है.. शायद इसीलिए।" अनामिका ने एक संभावना जताई।

"पर माया ने तो देखा है ना! वो क्यों छिपाएगी?" चैतन्य ने अपनी उलझन बरकरार रखी।

"क्या पता?" अनामिका ने एक बार फिर से सिर हिला कर अनभिज्ञता जताई।

"इनकी खिचड़ी अभी भी पूरी पकी नहीं है। आखिर मंसूबे तो अभी भी पूरे हुए नहीं हैं ना! पर ये मेरा नाम क्यों छिपा रहे हैं? कोई कारण तो जरूर होगा।" चैतन्य ने कहा।

"पर मेरा नाम तो लिया है। मुझे बचकर रहने की जरूरत है।" अनामिका ने कहा।

"तुम्हें अब अकेले रहने की जरूरत नहीं है। तुम अब मेरे साथ ही रहोगी, जब तक हम वापस नहीं लौट जाते।" चैतन्य ने उसका हाथ कसकर पकड़ते हुए कहा।

वो अभी बातें ही कर रहे थे कि तभी नीचे से फिर से एक बार तेज आवाजें आने लगीं। डायन हेममाया को अपने अधिकार में चाहते थे, जिस प्रकार
अल्फ़ी पिशाचों के अधिकार में था। मगर एडवर्ड इसके लिए तैयार नहीं था। उसका कहना था कि वो उसके पिता की हत्या में संलिप्त हैं, इसलिए वो उसकी अपराधी है। इसलिए उसे सजा देने का हक भी बस पिशाचों को ही है।

डाकिनी ने अपना पूरा जोर लगाया कि जैसे भी परिस्थिति रही हो, डायन को सजा देने का हक उनका होना चाहिए, मगर पिशाचों के वर्चस्व के कारण उनकी ये अर्जी रद्द कर दी गई। जब उसने दिव्याक्षि की बेरहम हत्या का मामला उठाया, तो इसके लिए अनामिका को दोषी ठहराया गया और उसे डायनों को सौंपने का निर्णय किया गया। माया ने भी चालाकी से डाकिनी को इसके लिए मना लिया और उनकी तरफ से मामला साफ हो गया।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

उसने बड़े ही कोफ्त से उस संदूक की ओर देखा और फिर ना जाने उसे क्या हुआ कि वो उस संदूक पर हाथ फेरती हुई उसके सामने घुटनों के बल बैठ गई। उसने थोड़ी झिझक के साथ हाथ आगे बढ़ाया और उस संदूक को खोल दिया।

उस संदूक में अल्फ़ी के कपड़े और दूसरी जरूरी चीजें रखी हुई थीं। अनामिका ने किसी अंजाने से अहसास के साथ अल्फ़ी के उन कपड़ों पर
हाथ फिराया और फिर उसकी एक सफेद शर्ट उठाकर उसे सहलाने लगी। वो उसे अपने चेहरे के पास लेकर आई तो एक जानी-पहचानी सी खूश्बू उसके नथुनों में भर गई। ये वो महक नहीं थी, जो उसने हर बार अल्फ़ी के करीब महसूस की थी। ये कुछ अलग ही खूश्बू थी, जिसे वो पहचानती थी। मगर क्यों? इस सवाल में उलझकर उसने एक बार फिर बेचैनी से उस संदूक के अंदर देखा। उसने उसके कपड़ों को हटाया तो उसे एक छोटा सा संदूक सारे कपड़ों के नीचे दबा हुआ मिला। उसने कौतूहल से उसे बाहर निकाला और खोलकर देखा। उस संदूक में एक किताब थी। उसने उस किताब को अपने हाथों में लेकर खोला। वो विलियम शेक्सपियर का लिखा उपन्यास 'रोमियो- जूलियट' था। अनामिका ने उस किताब को उलट-पुलट कर देखा और फिर उस संदूक में नज़र डाली। एक जोड़ी पायल, हाथों से बनी एक तस्वीर और दो मुड़े हुए कागज रखे थे। पायल को एक नज़र निहार कर उसने उस तस्वीर को उठाया।

वो काले रंग से बना एक युवक-युवती का स्केच था, जो चित्रकार के द्वारा बहुत ही खूबसूरती से बनाया गया था। दोनों ही एक साथ बहुत ही खूबसूरत और साथ ही बहुत ही खुश दिखाई दे रहे थे। अनामिका युवती को तो नहीं पहचान सकी, मगर युवक को पहचानने में उसने ना कोई देरी की और ना ही गलती। वो अल्फ़ी था। शादी के जोड़े में। यकीनन साथ की वो युवती हेममाया ही थी, जो खुद दुल्हन के जोड़े में थी। अनामिका ने उस तस्वीर को नज़र भर देखा ही था कि उसके दिमाग में कुछ धमाके से हुए जिससे सहम कर अनामिका ने अपनी ऑ॑खें भींच ली। मगर उन बंद पलकों की चादर में उसके ज़हन को झिंझोड़ते हुए कुछ दृश्य एक के बाद एक आते गए। अनामिका ने उनमें अल्फ़ी और हेममाया को देखा। खुश... बहुत खुश.... और फिर दृश्य बदला और वो खुशियॉ॑ अकथनीय पीड़ा में बदल गईं, जिनका अंत उन दोनों के अलग होते दृश्य के साथ खत्म हुआ।

अनामिका ने झटके से अपनी ऑ॑खें खोली। वो गहरी-गहरी साॅ॑सें ले रही थी, जैसे कि बहुत लंबा सफर एक ही बार में तय करके आई हो। उसने
एक बार फिर से अपनी बढ़ी हुई धड़कनों को संभाला और नीचे देखा। वो तस्वीर.... और वो मुड़े हुए कागज जमीन पर पड़े थे। उसने झुककर वो तस्वीर और वो कागज उठाए। तस्वीर से नज़र हटाकर उसने एक मुड़े हुए कागज को खोला। वो एक खत था, जो अल्फ़ी ने हेममाया के लिए लिखा था। अनामिका ने उस खत को बेआवाज पढ़ना शुरू किया और जैसे-जैसे वो आगे पढ़ती गई, उसे ऐसा लगा कि वो अपनी खोई हुई जिंदगी के कुछ लम्हों को फिर से जी रही थी। अल्फ़ी ने उस खत में अपना दिल निकालकर रख दिया था। शायद ये उसने परिधि से मुलाकात के समय हेममाया को देने के लिए लिखा होगा। मगर परिधि के इंकार के बाद उसने ये ख़त उसे नहीं दिया।

जो भी हो... हेममाया ना सही... फिलहाल अनामिका उस ख़त को पढ़ रही थी। उस ख़त को पढ़ने के बाद अनामिका के लिए खुद को संभालना बहुत ही मुश्किल हो गया। ऑ॑खों का बांध तोड़कर जब आंसू उसके गालों से बहते हुए उस ख़त पर लिखी इबारत पर गिरे तब अपनी धुंधलाई हुई ऑ॑खों को पोंछने के लिए अनामिका ने अपनी एक हथेली, जिसमें उसने वो मोती पकड़ा हुआ था की मदद ली। वो अपनी हथेली के निचले भाग से आंसुओं को पोछ ही रही थी कि तभी अनामिका को अपनी उस बंद हथेली से सफेद भाप जैसा कुछ निकलता महसूस हुआ। उसने तेजी से वो मुट्ठी खोली और उस मोती को देखने लगी। वो अभी समझने की कोशिश कर ही रही थी कि तभी उसकी ऑ॑खों से आंसू के कुछ क़तरे तेजी से उस मोती के ऊपर और आसपास गिरे। उसकी हथेली में रखा वो मोती उन आंसुओं के संपर्क में आते ही कांपने लगा और कुछ देर उसी तरह कांपने के बाद वो मोती दो टुकड़ों में बॅ॑ट गया। उस मोती के बीच से एक सफेद धुऍ॑ का तीर तेजी से अनामिका के चेहरे से टकराया और फिर उसमें घुसकर खो गया।

अनामिका को ऐसा लगा कि कोई उसके अंतर्मन में सरगोशियॉ॑ कर रहा है। उसने ध्यान से सुनने की कोशिश की और फिर उसे समझ में आया कि
वो दिव्याक्षि की आवाज थी। उस आवाज को पहचानते ही उसकी ऑ॑खें हैरानी से फैल गईं।

"दिव्याक्षि! क्या ये आप हैं?" अनामिका ने सवाल किया।

उसके सवाल करते ही दिव्याक्षि की आवाज तेज और साफ हुई। उसके बाद अनामिका के अंतर्मन

[illegible]

****

[illegible] [illegible] [illegible] [

"हॉ॑! बहुत बड़ी प्रॉब्लम हो गई है।" अमांडा ने चेहरे पर परेशानी की चादर डालते हुए कहा।

"क्या हो गया?" चैतन्य ने भी फिक्रमंदी से पूछा।

"एडवर्ड आज दोपहर में अल्फ़ी को अपने साथ कहीं ले जाने वाला है। मुझे लगता है कि वो उसी समय..." कहते हुए अमांडा का गला और ऑ॑खें दोनों ही भर आए थे।

"ये कमीना तो सचमुच बहुत जल्दी में है। अभी कैदखाने के हालात कैसे हैं? मतलब कि कौन-कौन हैं वहॉ॑?" चैतन्य ने पूछा।

"अल्फ़ी को एक कोठरी में बेड़ियों से जकड़कर रखा हुआ है। एडवर्ड के सारे चमचे वहॉ॑ की हिफाजत कर रहे हैं। वहॉ॑.... एडवर्ड की मर्जी के बिना कोई परिंदा भी पर नहीं मार सकता। उसे बाहर निकालना बहुत मुश्किल है।" अमांडा ने हताशा भरे लफ्ज़ों के साथ कहा।

"मुश्किल है... नामुमकिन नहीं। कुछ भी हो जाए... मैं उसे बचाकर ही रहूंगा। अच्छा! एक बात बताइए! क्या मेरे बारे में भी किसी तरह की बातें
हो रही हैं?" चैतन्य ने अपना सवाल होंठों पर उतारते हुए कहा।

"नहीं! तुम्हारा जिक्र तो किसी ने भी नहीं किया। क्यों?" उसके सवाल पर अमांडा ने चौंकते हुए कहा।

"हम्म! ये सच में अजीब है.... और अल्फ़ी से कोई मुलाकात हुई?" चैतन्य ने अगला सवाल किया।

"नहीं! उस कोठरी में एडवर्ड के सिवा और कोई नहीं जा सकता है।" अमांडा ने अफसोस जताते हुए कहा।

"उफ्फ! अच्छा! क्या ये पता है कि रात जिस लड़की की बॉडी मिली थी... उसे कहॉ॑ रखा है?" चैतन्य ने पूछा।

"वो! वो तो मुझे नहीं पता। पता करना पड़ेगा।" अमांडा ने अनभिज्ञता जताते हुए कहा।

"तो फिर करो पता। बहुत जरूरी है ये। काश कि तांत्रिक श्रेष्ठ से मुलाकात हो पाती मेरी। वो बहुत मदद कर सकते हैं। शायद जो हो रहा है... उससे वो भी इत्तेफाक नहीं रखते।
मुझे लगता है कि वो अल्फ़ी को भी समझ सकते हैं।" चैतन्य ने थोड़ी झुंझलाहट के साथ कहा।

"तांत्रिक श्रेष्ठ! कहो तो.... मैं.... कोशिश कर सकती हूॅ॑।" अमांडा ने अप्रत्याशित मदद का हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"क्या? आप मेरी मुलाकात करवा सकती हैं उनसे! सच कह रही हैं?" चैतन्य ने थोड़ी बेयकीनी से कहा।

"हॉ॑! मैं जानती हूॅ॑ उन्हें। दरअसल... तांत्रिक श्रेष्ठ और विलियम अंकल
की सोच और समझ बहुत मिलती थी, जिस वजह से उनका साथ में उठना-बैठना बहुत था। इसलिए तांत्रिक श्रेष्ठ अल्फ़ी को भी बहुत अच्छी तरह से पहचानते हैं।" अमांडा ने एक नया रास्ता खोलते हुए कहा।

"और आप... आप कैसे जानती हैं?" चैतन्य ने तफ्तीश निगाह के साथ पूछा।

"मैं उनके पोते रामानुज को इंग्लिश पढ़ाती हूॅ॑। दरअसल उस समय हमारी सिक्योरिटी की ड्यूटी अल्फी के जिम्मे में ही थी। यही वो समय था... जब मैं अल्फ़ी के नजदीक हुई। मैं रामानुज को अंग्रेजी पढ़ाती थी और अल्फ़ी ने मेरी हिंदी सुधारी। वो सचमुच बहुत अच्छा है। पता नहीं... एडवर्ड को उससे क्या परेशानी है? क्यों वो उसे इतना परेशान कर रहा है?" अमांडा ने नाक सुड़कते हुए कहा।

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible]-[illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]-[illegible]! [illegible]-[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible]
"[illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

जज़्बातों को समेटते हुए अमांडा ने कहा।

"हम्म!" चैतन्य ने हुंकारी भरी।

"और हॉ॑! याद रखना कि उस कैदखाने में कोई भी जादुई ताकत काम नहीं करती। तुम्हें जो भी करना है अपने बल पर करना होगा और वो चाबी तुम्हारे काम आएगी। वैसे भी शक्तियों का इस्तेमाल सही समय और
सही जगह में ही करना चाहिए।" अमांडा ने उसे सबसे ज्यादा जरूरी बात बताते हुए कहा।

"हम्म! थैंक्यू!" चैतन्य ने आभार जताते हुए कहा। अमांडा ने उस पर एक नज़र डाली और फिर तेजी से बाहर की ओर चली गई। चैतन्य ने छिपकर उसे जाते हुए देखा और फिर आसपास नज़र डालते हुए सीढ़ियों से ऊपर की ओर चला गया। ऊपर आकर उसने एक गहरी साॅ॑स ली और फिर तनकर खड़ा हो गया। नीचे फॅ॑सने के चांस ज्यादा थे, पर यहॉ॑ समझदारी से सब संभाला जा सकता था। अमांडा ने कहा कि उसके बारे में अभी तक कोई भी अफवाह फैली नहीं थी... पर वो इसे हल्के में नहीं ले सकता था। खतरा सिर के ऊपर मुसीबतों से भरे गुब्बारे की तरह लटक रहा था और उसकी लापरवाही उस नुकीली पिन का काम कर सकती थी, जो उसे मुसीबतों से सराबोर कर सकती थी। चारों ओर देखते हुए वो आगे बढ़ा। रास्ते में उसे दो गार्ड्स मिले, जिन्होंने उसे वहॉ॑ कुछ अजीब सी नज़रों से देखा। वो कुछ कह पाते उससे पहले ही चैतन्य ने एडवर्ड की चेन, जो सर विलियम ने उसे दी थी... उन्हें दिखाते हुए कहा कि ये स्टडी में रखना है।

"ओह! दरअसल... कमांडर एडवर्ड ने कहा था कि यहॉ॑ उनके चुने हुए हम कुछ गार्ड्स के अलावा दूसरों को आना मना है।" उनमें से एक गार्ड ने थोड़ी हिचकिचाहट के साथ कहा।

"वो गार्ड्स के लिए होगा। मैं गार्ड नहीं!" चैतन्य ने भी पूरी रौबदार आवाज में उन्हें अपना सुनहरा सुरक्षा बैज दिखाते हुए कहा।

"नॉट इवन फॉर यू!" पीछे से किसी की आवाज आई। चैतन्य ने मुड़कर देखा। हेनरी और जेकब खड़े थे। उन दोनों को देखकर चैतन्य के माथे पर बल पड़े थे। ये दोनों ही एडवर्ड के मुॅ॑हलगे थे और वो इन दोनों को ही सुरक्षा दस्ते का प्रमुख बनाना चाहता था। मगर पहले अल्फ़ी और बाद में चैतन्य की वजह से ये संभव नहीं हो पाया... जिससे एडवर्ड का तो पता नहीं... इन दोनों का खून अल्फ़ी और चैतन्य को देख-देख कर सूख ही गया था। उन दोनों ने वहॉ॑ मौजूद दूसरे गार्ड्स को वहॉ॑ से जाने के लिए कहा।

"वेल! व्हॉट इज योर प्रॉब्लम विथ मी? आई केम हियर फॉर माई वैरी इंपोर्टेंट ड्यूटी। हट जाओ सामने से! वरना...." चैतन्य उन दोनों के सामने अपनी उंगली घुमाते हुए चेतावनी देने वाले लहजे में कहा।

"वरना... क्या?" हेनरी ने उसकी ऊंगली पकड़ते हुए कहा।

"अदरवाइज़.... ही विल गेट अस फायर्ड फ्रॉम द जॉब!" जेकब ने बनावटी डर दिखाते हुए कहा।

"ओह माई गॉड! आई एम स्केयर्ड!" हेनरी ने भी जेकब का साथ देते हुए कहा।

"यस! इट सिम्स दैट... हिज एयर विल हैव टू बी टाइटेन्ड... सो दैट ही इज अफ्रैड टू इवन टेक अ ब्रेथ इन फ्रंट ऑफ अस।(लगता है इसकी हवा ऐसी टाइट करनी पड़ेगी कि ये हमारे सामने सॉ॑स लेने से भी डरे।)

"शट अप!" चैतन्य उनके शब्दबाणों से बुरी तरह तिलमिलाया था।

"व्हाई शुड वी बी साइलेंट? वी वांट टू नो दैट.... आफ्टर आल... हाऊ डिड यू गेट सच अ हाई पोजिशन? व्हॉट्स सो स्पेशल अबाउट यू? हॅ॑! शो अस.... सम ऑफ योर्स स्पेशियलिटीज। लेट अस आल्सो नो!" चैतन्य के चारों ओर चक्कर लगाते हुए हेनरी ने उसे इधर-उधर छूते हुए कहा। जेकब ने भी पूरी तरह उसका साथ दिया।

"ओह याह! व्हाई नॉट! आई विल डेफिनेटली फुलफिल दिस विश ऑफ
योर्स!" इतना कहते ही चैतन्य ने झपट्टा मारकर हेनरी की कलाई को पकड़ा और फिर एक पल की भी देरी किए बिना उसने उसकी कलाई को पूरी बेदर्दी से कंधे से मोड़ दिया। एक तेज चीख

के साथ हेनरी अपने घुटनों पर गिर पड़ा। दर्द की शिद्दत से उसने अपने दूसरे हाथ से उस कंधे को पकड़ लिया था। चैतन्य के इस यकायक हमले के लिए वो दोनों ही तैयार नहीं थे।

चैतन्य की पकड़ इतनी मजबूत और निर्दयी थी कि हेनरी चीखने के अलावा और कुछ नहीं कर सका। मगर ये सब देखकर जेकब तुरंत हरकत में आया और उसने चैतन्य की गर्दन अपनी बांह में पीछे से फॅ॑सा ली और पूरी ताकत से उसे पीछे की ओर खींचने लगा। चैतन्य ने अपने भिंचे हुए जबड़े को और ज्यादा भींचा... और हेनरी पर अपनी मजबूत पकड़ बनाए हुए उसने अपने दूसरे हाथ की कोहनी जेकब की पसलियों में पूरी ताकत से घुसा दी। दर्द से जेकब का मुॅ॑ह और ऑ॑खें फैल गईं। उसके मुॅ॑ह से चीख निकल पाती... उससे पहले ही चैतन्य ने एक जोरदार पंच उसके चेहरे पर मारा। वो बिलबिला कर तेजी से पीछे हुआ। उसकी नाक फट गई थी। भारी दर्द से उसने अपना चेहरा अपनी हथेलियों में छुपा लिया था। उसके पीछे हटते ही चैतन्य ने फुर्ती से हेनरी की कलाई को और उमेठा... और फिर एक झटके से उसके शरीर को हवा में घुमाते हुए जमीन पर पूरी ताकत से मुॅ॑ह के बल पटक दिया। हेनरी की एक तेज खराश चीख उस गलियारे में फ़ैल गई। मगर वो चीख उस गलियारे से बाहर जाती उससे पहले ही चैतन्य ने अपनी एक ऊंगली के इशारे से हवा के रूख को बांध लिया। हेनरी की चीख की आवाज उस गलियारे की दहलीज तक आते-आते रुक गई।

खून सने चेहरे के साथ एक ओर गिरा पड़ा जेकब, चैतन्य की हरकतों को ऑ॑खें सिकोड़े समझने की कोशिश कर ही रहा था कि चैतन्य ने उसकी ओर देखा। उसने उस समय भी हेनरी की वो कलाई पकड़ी हुई थी और उसका एक पैर हेनरी की गर्दन पर था। चैतन्य के होंठ टेढ़े हुए और एक कुटिलता उसकी ऑ॑खों से उन होंठों तक मुस्कुराहट बनकर उतरी। उसने अपनी उस ऊंगली, जिससे उसने चीख की आवाज को बाहर जाने से रोका था... जोर-जोर से गोल-गोल हिलाने लगा। उन सभी को अचानक ही हवा का दबाव उस गलियारे में बढ़ता हुआ महसूस हुआ और फिर तेज हवा के चलने की तरह एक आवाज उनके कानों से टकराई। जमीन पर हाथ टेके हुए बदहवास सा जैकब अपने चारों ओर देखने लगा कि ये आवाज़ आ कहॉ॑ से रही है और कोई जवाब ना मिलने पर एक बार फिर उसने चैतन्य की और देखा। उसी समय चैतन्य ने अपनी गोल-गोल घुमाते हुई उंगली वाला हाथ तेजी से जेकब की ओर इस तरह झटका, जैसे कि उसने जेकब पर कोई चीज फेंकी हो और इससे पहले कि जेकब समझ कर खुद को संभाल पाता उससे पहले ही हवा के एक तेज बवंडर ने उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया। अगले ही पल उसका सारा शरीर उस बवंडर के अंदर हिचकोले खा रहा था। उस पर ज्यादती ये कि हेनरी की कानफाड़ू चीख भी उस बवंडर के अंदर ही हिचकोले खाती हुई जेकब के कान को फाड़ रही थी। कुछ ही देर में इस दोहरे हमले से जेकब हलकान हो गया। अगले ही पल चैतन्य के इशारे पर उस बवंडर ने जेकब को पूरी बेदर्दी से छत की ओर उछाल दिया। उसका सर पूरी ताकत से छत से टकराया और फिर वो उतनी ही तेजी से नीचे की ओर आकर किनारे रखे एक मेज से टकराते हुए जमीन पर गिर पड़ा। उसका सिर फट गया था और उसका पूरा चेहरा उसी के खून से नहा चुका था। ये भी कम था कि वो मेज... जिससे वो टकराया था, वो उसके ऊपर गिर पड़ी और उसके किनारे की नोक सीधे उसकी बाईं ऑ॑ख में घुस गई। फच्च्च्च् की आवाज के साथ खून के छींटे चारों ओर बिखर गए। कुछ देर कॉ॑पते रहने के बाद जेकब का शरीर ठंडा पड़ गया। वो मर चुका था।

वहीं दूसरी ओर चैतन्य की गिरफ्त में अभी भी फॅ॑सा हुआ हेनरी ऑ॑खें फाड़े जेकब की ऐसी दुर्गति देखता रहा। उसे यकीन नहीं आ रहा था कि एक अकेले चैतन्य ने उसे बेबस करने के बाद जेकब को इतनी बेरहमी से मौत के घाट उतार दिया था। उसका सारा शरीर डर से कॉ॑पने लगा। जिस
तरह से चैतन्य ने उसके हाथ को अभी तक बेदर्दी से मरोड़कर पकड़ा हुआ था... उसे लगा कि चैतन्य अगले ही पल उसे उखाड़ कर फेंक देगा। मगर.... आश्चर्यजनक रूप से चैतन्य ने उसका हाथ छोड़ दिया और उसकी गर्दन के पिछले हिस्से पर जमे अपने पैर को हटा लिया। उसके शिकंजे से छूटते ही हेनरी तेजी से पीछे की ओर हटा। उसका वो हाथ जिसे चैतन्य ने शुरू से अभी तक मरोड़ कर रखा था... वो सुन्न पड़ गया था। कंधे पर उठ रहे बेतहाशा दर्द के बाद आगे उसे कुछ भी महसूस नहीं हो रहा था। अपने दूसरे हाथ से उसे पकड़े हुए वह लगातार पीछे की ओर खुद को घसीट रहा था और चैतन्य अपनी ऑ॑खों में उतनी ही बेरहमी लिए कदम-कदम उस की ओर बढ़ रहा था।

"स...स... सॉरी! फॉरगिव भी प्लीज़! प्लीज़ डॉन्ट किल भी!" मौत के डर से बौखलाया हुआ हेनरी उसके सामने गिड़गिड़ाते हुए बोला।

"हॉ॑ तो... क्या कह रहा था तू? मेरी हवा टाइट करेगा! पता भी है... कि कैसा लगता है.... जब हवा टाइट होती है। बताऊं!" चैतन्य उसके सामने एक घुटना जमीन पर टिका के और दूसरे खड़े घुटने पर अपना हाथ टिकाकर उसके सामने बैठते हुए बोला।

उसने देखा कि लकड़ी के पार्टिशन के दूसरी ओर की आदमकद खिड़की के पर्दे पूरी तरह से बंद नहीं थे, जिससे छनकर रोशनी कमरे में आ रही थी, जिससे वो कमरा अंधेरे-उजाले का खेल... खेल रहा था। चैतन्य उस लकड़ी के पार्टिशन को पार करके उस खिड़की तक गया और पर्दे को एक ओर हटाकर बाहर का जायजा लिया। दूर-दूर तक कोई भी नहीं था। वैसे भी वो हिस्सा सर विलियम के बेहद निजी उपयोग के लिए था.. इसलिए इस तरफ आम आवाजाही नहीं थी। चैतन्य ने धीरे से एक ओर का पर्दा हटा दिया और कमरे में नज़र डाली। कमरा अब उसके लिए पर्याप्त रूप से रोशन था।

वो तेजी से कमरे में आया। नीचे पूरा फर्श खून से सना हुआ था, जो अब सूख चुका था। उस खून को देखकर चैतन्य का दिल दहल गया, ये सोचकर कि ये सर विलियम का खून था... वरना खून की होली तो वो अभी-अभी खेलकर आया था। एक बार फिर से सभी कोनों पर नज़र डालने के बाद उसने पूरा इत्मीनान कर लिया। अपने कमर पर हाथ रखकर वो खड़ा हो गया और अपनी ऑ॑खें बंद कर लीं। अनामिका को बुलाने का समय आ गया था। उसने उससे संपर्क किया और अपने पास आने के लिए कहा। कुछ ही देर में उस कमरे की एक दीवार पर एक दरवाजा खुला और अनामिका उस कमरे में आ गई। कमरे में आने के बाद वो भी चारों ओर बहुत ही ग़ौर से देखती हुई चैतन्य के पास आ गई।

"चैतन्य! ये तो वही कमरा है... जहॉ॑ उस रात मैंने उस किताब को देखा
था।" लकड़ी के पार्टीशन की ओर देखते हुए अनामिका ने कहा।

"अच्छा! कहॉ॑?" चैतन्य ने उसकी बात सुनने के बाद अपनी कमर से हाथ हटाते हुए अनामिका की नज़रों का पीछा करते हुए कहा।

"वो... वहॉ॑!" अनामिका ने एक ओर इशारा किया और फिर चैतन्य की ओर पहली बार ध्यान से देखा। खून के छींटों से सनी उसकी सफ़ेद शर्ट को देखकर अनामिका को दहशत हो आई। वो तेजी से उसके पास आई और....

"ये तुम्हारी शर्ट! क्या हुआ? तुम्हें चोट लगी है क्या?" उसे ऊपर से नीचे तक टटोलते हुए अनामिका ने बहुत ही घबराहट के साथ पूछा।

"नहीं!" उसके हाथों को पकड़ते हुए चैतन्य ने कहा।

"तो फिर ये खून?" अनामिका ने उसकी शर्ट की ओर इशारा करते हुए पूछा।

जवाब में चैतन्य ने उसे सब बता दिया। अनामिका एक पल के लिए सकते में आ गई। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि सचमुच चैतन्य ने ऐसा कुछ कर दिया था।

"क्या सच में? तुमने उन दोनों को मार दिया। क्यों?" अनामिका ने सहमी हुई आवाज में पूछा।

"तो क्या आरती उतारता उनकी? मैं तो पहले से ही उन दोनों से भरा पड़ा था। दो दिन पहले रसोई में काम करने वाली एक लड़की को खींच ले गए थे ये दोनों। अल्फ़ी ने ऐतराज उठाया... तो उस एडवर्ड ने उन दोनों को बचा लिया। वो लड़की भी सदमे से उनके खिलाफ कुछ नहीं बोल सकी
और वो बच गए। अल्फ़ी ने बताया था कि... एडवर्ड और उसके सभी सहयोगी बहुत ही क्रूर हैं। सर्वश्रेष्ठ होने का भ्रम और अहंकार इनके रगों के खून में साथ-साथ दौड़ता है।" चैतन्य ने बहुत ही कड़वाहट के साथ कहा।

"मगर..." अनामिका ने बोलना चाहा।

"याद रखो अनामिका... ज़ालिम की अंधी पैरवी करने वाला भी उतना ही जालिम होता है। कभी- कभी सत्य और न्याय की रक्षा के लिए संहार जरूरी हो जाता है... वरना इतिहास में ना कोई रामायण होती... और ना ही महाभारत!" चैतन्य उसके करीब आते हुए बोला। अनामिका ने उसकी ऑ॑खों में देखा और फिर अपने कदम पीछे खींच लिए।

"मगर... इससे एडवर्ड..." अनामिका ने कहना चाहा।

"भाड़ में जाए वो एडवर्ड! कायर कहीं का! हरजगह बस अपने चमचों को फैला रखा है। बिल्कुल

उस माया की तरह!" चैतन्य तिलमिला कर बोला और माया का नाम आते ही अनामिका के दिमाग में एक स्पार्क हुआ।

"चैतन्य!"

"हॉ॑!"

"वो माया!"

"क्या हुआ?"

"मुझे मोती का राज पता चल गया।" अनामिका ने बेचैनी से उसकी ओर देखते हुए कहा। "अच्छा! क्या?" चैतन्य ने भी दिलचस्पी दिखाते हुए पूछा।

और फिर... अनामिका ने उसे छाया और माया के बारे में वो सब बता दिया जो दिव्याक्षि उसके लिए संदेश में छोड़ गई थी।

"मकसद! कैसा मकसद?" चैतन्य ने दिमाग पर जोर डालते हुए कहा।

"चैतन्य! वो नर्क का द्वार खोलना चाहती है। तुम्हें याद है... छाया की कहानी सुनाते समय दिव्याक्षि ने बताया था कि उसने भी ऐसी कोशिश की थी। अब वो माया के रूप में अपना वो मकसद पूरा करना चाहती है। मुझे नहीं लगता है कि माया को सर्वशक्तिमंडल में कोई दिलचस्पी है। उसने एडवर्ड को भी इस्तेमाल ही किया है... मुझे ऐसा भी लगता है।" अनामिका ने कहा।

"और एडवर्ड उसे इस्तेमाल कर रहा है। मगर क्यों? एडवर्ड की तरफ का ये क्यों... समझ में ही नहीं आ रहा है।" चैतन्य ने उलझे हुए लहजे में कहा।

"बात बस इतनी ही नहीं है।" अनामिका ने बहुत ही संजीदगी से कहा।

"तो फिर..?" चैतन्य ने पूछा।

"माया उर्फ छाया को नर्क का द्वार खोलने के लिए पंचतत्वों की शक्तियॉ॑ चाहिए।" अनामिका ने कहा, जिस पर चैतन्य ने उसकी बात समझने की गरज से अपनी ऑ॑खें सिकोड़ कर उसे देखा।

"तो क्या..." चैतन्य ने बात अधूरी छोड़ी।
"हॉ॑! वो शक्तियॉ॑ इकट्ठी कर रही है। उसके पास अपनी अग्नि की शक्ति है। जलशक्ति उसने हेममाया से ले ली और मुझे लगता है कि उसके पास भू-शक्ति भी है।" अनामिका ने कहा।

"यानि पृथ्वी-तत्व की शक्ति! पर वो कहॉ॑ से मिली होगी?" चैतन्य चिंहुंककर बोला।

"शायद परिधि से!" अनामिका ने अपना अनुमान जताया।

"यू मीन टू से.... इसीलिए परिधि ऐसी है। उसके पास कोई शक्ति इसलिए नहीं है क्योंकि.... माया ने गर्भ में ही उसकी शक्ति पर अधिकार कर लिया था।" चैतन्य ने अनामिका के अनुमान की व्याख्या करते हुए कहा।

"सही समझ रहे हो। अग्नि, जल और भू-शक्ति के बाद बचते हैं... आकाश और वायु शक्ति।" अनामिका बोली।

"तो क्या.... वो इसीलिए मेरे पीछे पड़ी है?" चैतन्य ने अपनी ऑ॑खें फैलाकर कहा।

"शायद!"

"शायद मतलब?" चैतन्य ने पूछा।

"ओह चैतन्य! उससे बचकर रहना। उसे तुम भी चाहिए। नीयत बिगड़ी हुई है उसकी तुम पर। अगर

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

पूछा।

"नहीं चैतन्य! मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है।" अनामिका ने सिर हिलाते हुए कहा।

"अजीब है!" चैतन्य ने उस चाबी को अपनी ऑ॑खों के सामने लाकर देखते हुए कहा।

"ये तुम्हें दिखाई दे रही है? क्या ये सच में है! पर मुझे क्यों नहीं दिख रही है?"अनामिका ने उसकी उंगलियों में फॅ॑सी उस हवा से बनी चीज को देखते हुए कहा।

"पर अमांडा ने तो ये देखी थी।" चैतन्य ने उस चाबी को गौर से देखते हुए कहा और तभी उसे चाबी के एक छोर में बंधा हुआ काला धागा दिखाई दिया। उसने उस धागे को खोल दिया और फिर उस चाबी को अपनी मुट्ठी में बंद कर लिया। अगले ही पल जब उसने अपनी मुठ्ठी खोली, तो इस बार अनामिका ने भी उसकी हथेली में उस तांबे से बनी चाबी को देखा।

"ओह गॉड! लगता है कि एडवर्ड से छिपाने के लिए ये जुगत लगाई थी। पर... तुमने कैसे देख लिया?" अनामिका ने चैतन्य से पूछा। जवाब में चैतन्य ने अपने कंधे उचका दिए।

"अब!" अनामिका ने चैतन्य की ओर देखा।
"हमें फिर अलग होना पड़ेगा। ज्यादा समय नहीं है। मैं जाता हूॅ॑ अल्फ़ी के पास। तुम इस कमरे की अच्छी तरह से जॉ॑च करो। सर विलियम अगर यहॉ॑ से गायब हुए हैं तो... उनकी गुमशुदगी को लेकर कोई ना कोई सुराग जरूर मिलेगा। दरवाजा अंदर से बंद रखना और अगर कोई बाहर आए तो छलद्वार से वापस लौट जाना। मुझे खबर करना... चाहे कोई भी समय हो। हमें अल्फ़ी को सही-सलामत लेकर यहॉ॑ से निकलना है। अमांडा ने कहा है कि वो तांत्रिक श्रेष्ठ से मुलाकात करवा सकती है। वहॉ॑ से हमें मदद मिल सकती है।समझी!" चैतन्य ने उसका चेहरा अपनी हथेलियों में भरकर कहा। जवाब में अनामिका ने अपना सिर हिलाया। चैतन्य उसका हाथ पकड़कर दरवाजे तक गया। उसने धीरे से दरवाजा खोला और फिर झांककर बाहर की ओर देखा। बाहर मौत का सन्नाटा अभी तक छाया हुआ था। चैतन्य ने एक बार फिर अनामिका को सावधानी से काम करने के लिए कहा और फिर उसका माथा चूमकर तेजी से वहॉ॑ से निकल गया। अनामिका ने तुरंत ही दरवाजा अंदर से लॉक कर लिया।

अब उसकी नज़रें उस कमरे में चारों ओर घूम रही थीं। सबसे पहले वो भागकर उस तरफ गई.... जहॉ॑ उसने उस रात वो किताब देखी थी। उसने अच्छी तरह से आसपास सारी जगह छान मारी। किताब गायब थी। अपने निचले होंठ को दॉ॑तों में दबाए वो वापस कमरे की उस जगह पर आ गई जहॉ॑... ढेर सारा खून बिखरकर सूख गया था। उसने वहॉ॑ भी सब जगह देख ली। कहीं कुछ भी संदिग्ध दिखाई नहीं दिया।

"यहॉ॑ तो कुछ भी नहीं मिल रहा। इतनी देर हो गई। पता नहीं चैतन्य अभी क्या कर रहा होगा? अगर सर विलियम को इस कमरे के दरवाजे से बाहर नहीं ले जाया गया है... तो वो गायब कहॉ॑ हुए हैं? अनामिका लगता तो यही है कि यहॉ॑ भी कोई गुप्त जादुई दरवाजा है। उस रात वो एडवर्ड ही था, जिसे मैंने देखा था। हम्म! अगर कोई दरवाजा है... तो फिर उसे खोजा जाए।" कहते हुए अनामिका ने कमरे में चारों ओर नजर दौड़ाई। उसे याद
आया कि उसने उसे आदम कद खिड़की के पास पानी का एक पात्र देखा था। वो तेजी से उस ओर गई। मिट्टी की एक सुराही थी।

"भगवान! पानी हो इसमें!" कहते हुए अनामिका ने सुराही का ढक्कन हटाकर उसके अंदर झांका और फिर वो एक आह भरकर रह गई। सुराही खाली थी।

"अब!" एक बार फिर उसने पूरे कमरे में नज़र दौड़ाई। कहीं भी पानी का नामोनिशान नहीं था। हताशा से उसने अपना एक हाथ हवा में घुमाया तो वो जाकर उस सुराही को लग गया और वो नीचे गिर गई। अनामिका ने बड़ी ही चिढ़ के साथ सुराही के उन टूटे हुए टुकड़ों की ओर देखा और अगले ही पल उसकी ऑ॑खें चमक उठीं। शायद सुराही के सबसे निचले हिस्से में जरा सा पानी रहा होगा, जिसकी कुछ मात्रा अब उसे सुराही के एक टूटे हुए टुकड़े में दिखाई दे रही थी। अनामिका ने लपक कर उसे उठाया। होठों पर हल्की सी मुस्कान के साथ वो उसे लेकर तेजी से उस सूखे हुए खून की ओर बढ़ी।

वो घुटनों के बल जमीन पर बैठ गई। उसने उन पानी की बूंदों को अपनी तर्जनी उंगली में टिकाया और फिर अपनी ऑ॑खें बंद कर जल शक्ति का आह्वान करने लगी। फिर अपनी ऑ॑खें खोलकर उसने अपनी उस उंगली को नीचे सूखे हुए खून से छुआ दिया। उसकी उंगली पर टिकी पानी की

बूंदे उस सूखे हुए खून से मिलीं और फिर हमेशा की तरह जादू हुआ। पानी की वो दो-तीन बूंदे उस सूखे हुए खून में मिलते ही तेजी से फैलने लगी और देखते ही देखते वो सारा खून एक बार फिर से ताजा हो गया।

"रास्ता दिखाओ!" अनामिका ने कहा और उसके इतना कहते ही वो खून एक ओर बहने लगा। अनामिका ने उसकी हरकतों पर नज़र टिकाए रखी। आगे बढ़कर वो उसी आदमकद खिड़की के पास जाकर रूक गया। अनामिका वहॉ॑ जाकर उस खिड़की को घूर-घूर कर देखने लगी.. पर कुछ
समझ में नहीं आया।

"यहॉ॑ कहॉ॑ से? ठीक-ठीक बताओ।" अनामिका ने लगभग आदेश देते हुए कहा और उसका आदेश सुनते ही उस खून से एक तीर का निशान बन गया और वो उस खिड़की के एक ख़ास हिस्से की ओर इशारा करने लगा। अनामिका ने उस ओर देखा और फिर उस हिस्से को हाथ से टटोल-टटोलकर देखने लगी और फिर उसकी ऊंगली एक जगह जाकर रूक गई। वो एक की होल जैसी आकृति थी, मगर वहॉ॑ कोई होल नहीं था। अनामिका ने अपनी उंगलियों से उस जगह को दबा कर भी देखा, मगर कुछ नहीं हुआ।

"शायद... वो चाबी यहॉ॑ काम आए!" अनामिका की सोच आवाज बनकर होंठों से निकली।

अभी वो इतना सोच ही पाई थी कि तभी एक जोर का धमाका हुआ और उस कमरे के दरवाजे की धज्जियॉ॑ उड़ गईं। अनामिका कोई प्रतिक्रिया दे पाती उससे पहले ही दो गार्ड्स तेजी से अंदर आए। अनामिका, चैतन्य को आवाज लगा पाती उससे पहले ही कुछ आकर उसके पैरों में चुभा और फिर उसने एक तेज चीख के साथ नीचे बैठकर अपने उस पैर को पकड़ लिया।

अनामिका को ऐसा लग रहा था, जैसे कि किसी ने उसके उस पैर में आग लगा दी हो। धीरे-धीरे उसका सारा शरीर बुरी तरह से जलने लगा। वो अपने बचाव में कुछ करना चाहती थी, मगर उसका दिमाग उसका साथ ही नहीं दे रहा था। उसकी ऑ॑खें धुंधलाने लगी थी, जिसे वो बार-बार झटकते हुए साफ करने की कोशिश कर रही थी। वो खुद को संभाल पाती इससे पहले ही उन दोनों गार्ड्स ने आगे आकर उसे जकड़ लिया। वो खुद को उनके चंगुल से छुड़ाने के लिए बुरी तरह से छटपटाने लगी, मगर उसकी सारी ताकत जैसे किसी ने निचोड़ ली थी। वो बेबस हो चुकी थी। उसने अपनी धुंधलाई हुई ऑ॑खों से किसी तरह ऊपर की ओर देखा। सामने एडवर्ड अपनी दहकती ऑ॑खें लिए उसके सामने खड़ा था। उसका पूरा चेहरा गुस्से में तप रहा था। अनामिका ने अपनी ऑ॑खें फाड़कर उसे अच्छी तरह देखने की कोशिश की और उन कुछ पलों में उसने एडवर्ड के चेहरे पर एक कुटिलता उतरते देखी। वो धीमे कदमों से उसके पास आया और फिर उसे ऊपर से नीचे तक गहरी ऑ॑खों से देखा। दोनों गार्ड्स की जकड़ में वो खुद को छुड़ाने के लिए किसी जल बिन मछली की तरह तड़प रही थी। नशीली दवा के असर से उसका पूरा शरीर पसीने से भीग गया था। गोरे चेहरे पर सुर्ख़ी उतर आई थी। एडवर्ड ने आगे बढ़कर उसके भीगे चेहरे पर चिपके हुए बालों को हटाया और फिर उसे बड़ी हसरत से देखने लगा, जिससे उसकी ऑ॑खों में एक ख़ुमारी सी उतरी थी।

"तुम तो सचमुच बहुत खूबसूरत हो! चलो! आज रात का जश्न तुम्हारे साथ ही सही!"

वो थोड़ा पीछे हटा और फिर एक और गहरी नज़र उस पर डालकर उन गार्ड्स को अपने पीछे आने का इशारा किया। बाहर आने पर अपने साथियों की लाश देखकर एक बार फिर से उसके चेहरे पर सख़्ती आ गई। उसने मुड़कर झूलती हुई अनामिका की ओर देखा।

"कोशिश अच्छी थी। पर एडवर्ड का प्रहार तुम दोनों नहीं झेल पाओगे। जरा देखें तो... आखिर दो तोतों की जान एक मैना में कैसे क़ैद है!"

और फिर एडवर्ड के कहने पर वो गार्ड्स अनामिका को लेकर उसके पीछे
चल दिए। एडवर्ड का ये प्रहार यकीनन बहुत ही बड़ा था। मगर इसकी चोट किसे लगने वाली थी, ये कुछ देर में पता चलने वाला था।

हिदायतों के साथ अनामिका को स्टडी में छोड़कर चैतन्य वहॉ॑ से कैदखाने की ओर बढ़ा। रास्ते में हेनरी और जेकब की लाशों के पास उसके कदम धीमे हुए थे। उसने एक आह के साथ उन दोनों को देखा। क्या से क्या हो गई थी ज़िंदगी। पिछले साल की दीवाली तक उसकी जिंदगी कितनी सामान्य हुआ करती थी। सामान्य सी जिंदगी... सामान्य सी उसकी समस्याऍ॑.... सामान्य से दोस्त और.....। मुग्धा की याद ने एक बार फिर से दस्तक देने की कोशिश की... मगर उसने इससे पहले ही उसे झटक दिया। वो अब कहीं नहीं है और.... होगी भी नहीं। दरअसल.... वो तो कभी थी ही नहीं। उसने मुड़कर स्टडी की ओर देखा। अनामिका को महसूस कर उसके होठों पर एक मुस्कुराहट आई। फिर अनामिका के साथ उसे याद आया अल्फ़ी... और वो तेजी से वहॉ॑ से निकल गया। सीढ़ियों के पास पहुॅ॑चकर वो सावधान हुआ। ऊपर के खतरे वो निपटा चुका था, मगर नीचे खतरे अभी भी छिपे हुए थे।

वो सावधानी से एक-एक कदम बढ़ाते हुए सीढ़ियों से उतरा और फिर तेजी से दाहिनी ओर चला गया। अभी तक तो सब ठीक ही था। उस मददगार गार्ड ने अपना काम कर दिया था।

वो आगे बढ़ा तो उसे सब सही ही लगा। आगे एक गार्ड दिखा तो चैतन्य की चाल धीमी हुई, मगर वो आगे बढ़ता रहा। उसके पास पहुॅ॑चने पर उस गार्ड ने उसका अभिवादन किया और उसे एक ओर जाने का इशारा किया। चैतन्य समझ गया कि उसकी मदद हो चुकी है। वो आगे भी दूसरे गार्ड्स की मदद से आसानी से आगे बढ़ता गया। आखिरकार वो एक जगह पर आकर रूका। उसका मददगार उसके सामने था।

"आइए सर! बस कुछ आगे ही है वो जगह। मैं आपको ले चलता हूॅ॑।" उस गार्ड ने एक ओर हाथ से इशारा करते हुए चैतन्य से कहा और फिर उस ओर चल दिया।

"पर तुम लोगों ने ये सब किया कैसे?" उसके साथ चलते हुए चैतन्य ने आश्चर्य से पूछा।

"क्या सर! अल्फ़ी सर ने सच के लिए लड़ना हमें भी सिखाया है। कमजोर नहीं हैं हम। कहा था ना कि अल्फ़ी सर के लिए हम कुछ भी करेंगे... जो भी हमारे बस में हो।" उस गार्ड ने फख़्र से चैतन्य की ओर देखते हुए कहा।

"और उस एडवर्ड को कैसे समझाओगे? तुम सब परेशानी में नहीं फॅ॑स जाओगे?" चैतन्य को पहली बार उनकी चिंता हुई।

"उसकी चिंता आप ना करें सर। बस आप जल्दी से उन्हें छुड़ाकर यहॉ॑ से ले जाइए।" उस गार्ड की आवाज में याचना का पुट उभर आया था। उसकी बात सुनकर चैतन्य के चेहरे पर एक मुस्कान उभरी।

"तुम्हें देखकर अच्छाई पर मेरा यकीन और मजबूत हो गया है। तुम भी ये यकीन हमेशा मजबूत रखना।" चैतन्य ने उसके कंधे को थपथपाते हुए कहा। उस गार्ड ने बड़े ही गर्व से चैतन्य के हाथ रखे अपने उस कंधे को देखा।

"सर यही तो वो सम्मान है, जिसके काबिल बनाया है अल्फ़ी सर ने हमें। उनके साथ जब हम सब बाहर निकलते थे... तो सबकी नज़रों में जो प्रेम
और सम्मान होता था... वो अल्फ़ी सर के आने से पहले हमने कभी नहीं देखा। हम सब भी इस टुकड़ी में इसलिए शामिल हुए कि आसपास के लोगों और रिश्तेदारों में हमारे नाम की धाक रहे। लोग हमारे सामने डर से सिर झुकाऍ॑ और... लोग झुकाते भी थे सर। पर... अल्फ़ी सर ने हमें बताया कि प्रेम और सम्मान से झुके हुए सिर हमेशा मजबूत कंधों पर टिके होते हैं, जो समय आने पर हमारा मजबूत सहारा बनते हैं... वहीं डर से झुके हुए सिर खोखले शरीर और खोखली आत्मा पर बोझ होते हैं। उन्होंने हमारी जिंदगी को बोझ बनने से बचाया है। उन्हें बचाने के लिए तो हम अपनी जान भी दे सकते हैं।" उस गार्ड ने बहुत ही भावुक होते हुए कहा।

"तुम्हारा नाम क्या है?" पहली बार चैतन्य ने उसके पहचान की गहराई जाननी चाही।

"वैभव!" उसने धीमे से कहा।

"तुम मुझे हमेशा याद रहोगे वैभव। अच्छाई का साथ कभी मत छोड़ना।" चैतन्य ने कहा।

"कभी नहीं सर!" कहकर वो खड़ा हो गया। चैतन्य ने रास्ते में आगे की ओर देखा।

"आगे जाकर बाईं ओर मुड़ जाइएगा सर।" वैभव ने कहा।

"हम्म! जाओ! ख्याल रखना अपना।" चैतन्य ने उसे जाने की इजाजत देते हुए कहा।

"आप भी सर! आगे भी जरूरत पड़े... तो हम सब साथ हैं।" वैभव ने मुस्कुराकर कहा।
"फिलहाल तो यही बहुत बड़ी मदद थी। वरना इतनी आसानी से यहॉ॑ तक आना बहुत मुश्किल था।
शुक्रिया!" चैतन्य ने आभार जताते हुए कहा। वैभव ने तनकर उसे सैल्यूट किया और तेजी से वहॉ॑ से निकल गया। चैतन्य ने कुछ देर उसे जाते हुए देखा और फिर उसके बताए रास्ते पर आगे बढ़ गया।

थोड़ा आगे जाने पर वो जगह सिकुड़ने लगी। धीरे-धीरे वहॉ॑ बस एक ही आदमी के चलने लायक जगह बची थी। वो आगे-पीछे चौकन्नी निगाहें रखे आगे बढ़ता रहा। स्टडी रूम से उठाई चाबी उसने संभालकर रखी थी और फिर वो उस संकरी सी जगह से बाहर निकला। सामने दोनों ओर लाइन से छोटी-छोटी कोठरियॉ॑ बनी हुई थीं, जिनके सामने लोहे की मजबूत सलाखें लगी हुई थीं। बीच में एक गलियारा था। चैतन्य ने एक और गहरी सॉ॑स भरी और आगे बढ़ा, मगर जैसे ही वो आगे बढ़ा... उसे ऐसे लगा.. जैसे कि कुछ पीछे छूट गया। उसने पीछे मुडकर देखा और फिर उसे अपने अंदर कुछ सिकुड़ता हुआ महसूस हुआ। उसने अपना हाथ ऊपर उठाकर देखा और जो हुआ.. उसे समझने की कोशिश करने लगा।

"लग रहा है कि सच में ताकत का बल्ब फ्यूज हो गया। बेटा चैतन्य! संभलकर! अपने बच्चों को टुकड़ों में नहीं... साबुत हालत में अपनी बहदुरी के किस्से सुनाने हैं।" खुद में ही बड़बड़ाते हुए वो सावधानी से आगे बढ़ा।

वो सावधानी से दोनों ओर की हर कोठरी पर नज़र डालते हुए आगे बढ़ रहा था। चैतन्य ने ये महसूस किया कि यहॉ॑ थोड़ी उमस सी थी जिससे उसको यहॉ॑ थोड़ी बेचैनी महसूस होने लगी थी।

"कहॉ॑ हो अल्फ़ी? लग रहा है कि कुछ देर और नहीं मिले तो ये वायु ही हल्का होकर उठ जाएगा।" चैतन्य बेचैनी से खुद से ही सरगोशियॉ॑ करता आगे बढ़ा और आखिरकार उसकी तलाश सबसे आखिर की कोठरी में पूरी हुई।
वो लोहे की बेड़ियों में बुरी तरह से जकड़ा हुआ सिर झुकाए बैठा हुआ था। शरीर में कोई भी हलचल दिखाई नहीं दे रही थी। उसे ऐसी हालत में देखकर चैतन्य का दिल बैठ गया। अजीब सा रिश्ता था उन दोनों के बीच। वो उससे जितना चिढ़ता था... उसकी उतनी ही फिक्र भी करता था। चैतन्य उसकी तकलीफों और दर्द से अच्छी तरह से परिचित था और उसका हमदर्द भी बनना चाहता था। पर इसकी जो कीमत थी... वो चैतन्य हर्गिज नहीं भरना चाहता था और बस... यही... अनामिका पर आकर सब कुछ बिखर जाता था। पर सच तो ये भी था कि उसके यहॉ॑ होने की एक बड़ी वजह अनामिका भी थी। अल्फ़ी और अनामिका के बारे में सोचकर उसके दिल में हल्का सा दर्द भी हुआ, मगर.. उस दर्द को नज़रअंदाज़ करके वो उसकी ओर बढ़ गया।

चैतन्य ने उस कोठरी की सलाखों को छुआ ही था कि उसे एक तेज झटका सा लगा। उसने सिसकारी भरते हुए अपना हाथ पीछे खींचा। अपनी उंगलियों को सहलाते हुए जब उसने सिर उठाकर अल्फ़ी की ओर देखा, तो ऊपर से नीचे तक दहल गया। अल्फ़ी अपना सिर उठाकर उसे ही देख रहा था। उसका चेहरा किसी भी जज़्बात से खाली और सपाट था, मगर उसकी ऑ॑खें दर्द की शिद्दत से सुर्ख़ लाल हो चुकी थीं और वो उन खून भरी ऑ॑खों से उसे घूर रहा था। चैतन्य जो उसे इस हालत में देखकर बुरी तरह से हिल गया था, उसने अपनी हिली हुई क़ैफियत को संभाला और फिर आगे बढ़ा। इस बार उसने सलाखों को छूने से परहेज़ ही किया। अल्फ़ी उसे एकटक उसी तरह देख रहा था।

"अल्फ़ी! मैं तुम्हें लेने आया हूॅ॑। चलो उठो!" चैतन्य ने उसे आवाज लगाई।

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी के होंठ हल्के से फड़फड़ाए और फिर शांत हो गए, जैसे कि कुछ बोलते-बोलते रूक गए। वो उसी तरह बैठा हुआ चैतन्य को देखता रहा।
"ऐसे क्या देख रहे हो? समय नहीं है हमारे पास! उठो जल्दी!" चैतन्य ने झुंझला कर कहा।

मगर उसकी बात सुनकर एक बार फिर से अल्फ़ी ने अपना सिर नीचे झुका लिया.. जैसे कि उसे चैतन्य की बातों और चैतन्य के वहॉ॑ होने से कोई फर्क ही ना पड़ा हो और उतना ही उसकी चुप्पी से चैतन्य झल्लाया था।

"अल्फ़ी! सुनाई नहीं दे रहा क्या तुम्हें? मैं तुम्हें यहॉ॑ लेने आया हूॅ॑। एडवर्ड कभी भी आ जाएगा। उठो!" चैतन्य उसी झल्लाहट के साथ बोला।

"तुम जाओ चैतन्य! मेरा फैसला हो गया है। तुम खुद को बचाओ।" अल्फ़ी की अजीब सी भारी आवाज आई।

"क्या? यकीन नहीं आ रहा है कि ये तुम बोल रहे हो। अपनी उन लोगों ने तुम्हारी माया को मार दिया है। तुमसे तुम्हारा सब कुछ छीन लिया है। तुम उनके सामने झुक नहीं सकते.. हार नहीं मान सकते।" चैतन्य पूरे तैश में चिल्लाया।

"माया के लिए ही तो कर रहा हूॅ॑। उसकी जिंदगी से ज्यादा और कुछ नहीं चाहिए मुझे।" अल्फ़ी की बहुत ही कमजोर सी आवाज आई।

"क्या? माया के लिए!"

उसकी बात सुनकर चैतन्य बुरी तरह से चौंका। उसकी सोच के घोड़े एक बार फिर दौड़े तो एक जगह जाकर रूके। चैतन्य को याद आया कि सुबह अल्फ़ी, दिव्याक्षि के कमरे से हेममाया के शरीर को लेने के लिए निकला था। चैतन्य को लगा कि अल्फ़ी अभी भी इस धोखे में है कि हेममाया का
शरीर मिलने पर दिव्याक्षि उसे फिर से जीवित कर देगी। उसने बहुत ही अफसोस से अल्फ़ी की ओर देखा, जो इस समय भी अपने प्यार के लिए किसी भी हद से गुजरने को तैयार था। चैतन्य को लगा कि उसे अल्फ़ी को तुरंत ही सच बता देना चाहिए।

"अल्फ़ी! अगर तुम हेममाया को फिर से जीवित करने की ग़लतफहमी में ये सब कर रहे हो तो बता दूं... कि उन जालिमों ने दिव्याक्षि को बहुत ही बेरहमी से मार दिया है। हेममाया के वापस आने की उम्मीद... अब नहीं के बराबर है।" चैतन्य ने तड़पकर उसे हालातों से रूबरू कराते हुए कहा।

चैतन्य को लगा था कि ये सुनकर अल्फ़ी को धक्का लगेगा और वो कुछ और प्रतिक्रिया देगा। मगर चैतन्य को हैरत का तेज झटका लगा कि ये सुनकर भी अल्फ़ी अपनी जगह पर उसी तरह बैठा रहा।

"कुछ कहो अल्फ़ी! ऐसे चुप मत बैठो।" चैतन्य आगे बढ़कर उतावलेपन से बोला।

"चैतन्य! मेरा एक काम करोगे।" चैतन्य के अनुमान के विपरीत अल्फ़ी ने उसी से सवाल कर लिया।

"काम! कैसा काम?" चैतन्य ने हैरानी से उसे देखते हुए कहा।

"तुम मेरी माया के शरीर को अपने साथ ले जाना और उसका... सम्मान के साथ अंतिम संस्कार कर देना।" चैतन्य को हैरानी के समंदर में डुबोते हुए अल्फ़ी ने कहा।

"क्या? पागल हो गए हो क्या तुम? कैसी बकवास कर रहे हो?" चैतन्य भड़कते हुए बोला। "मैंने माया को हमेशा खुश रखने का वादा किया था। उसके सम्मान को बनाए रखने का वादा किया था। उसके लिए कुछ भी नहीं कर सका मैं। यदि तुमने... कभी भी... एक पल के लिए भी... मुझे अपना दोस्त माना है... तो प्लीज़! मेरा ये काम कर देना। मरते समय इतना तो सूकून रहेगा कि उसके मृत शरीर के लिए इतना कर सका। इतना तो वो हक रखती थी।" अल्फ़ी ने बहुत ही हौले-हौले अपनी बात कही। चैतन्य ने महसूस किया कि ये सब बोलते हुए अल्फ़ी को बहुत तकलीफ़ हो रही थी।

"अल्फ़ी! अल्फ़ी! अल्फ़ी! तुम पागल हो गए हो। मेरी बात सुनो। मानो मेरी बात! पहले यहॉ॑ से चलते हैं... फिर जो तुम चाहते हो... वो हम करेंगे। प्रॉमिस! इस तरह जालिमों के आगे घुटने मत टेको।" चैतन्य ने उसे मनाने की कोशिश करते हुए कहा।

"मुझे जो कहना था... मैं कह चुका। तुम जाओ।" अल्फ़ी ने सिर हिलाकर उसकी बात काटते हुए कहा।

"नहीं! बिल्कुल नहीं! मैं तुम्हें ये पागलपन नहीं करने दूंगा।" कहते हुए चैतन्य ने उन सलाखों को पकड़ा और उन्हें दाऍ॑-बाऍ॑ खिसकाने की कोशिश करने लगा। इस समय वो तेज झटकों से भी जूझ रहा था, मगर उसने अपनी कोशिशें नहीं छोड़ीं।

"चैतन्य! छोड़ दो कोशिशें। ये सलाखें एडवर्ड के अलावा और कोई नहीं खोल सकता।" अल्फ़ी ने तेज और सख़्त आवाज में कहा।

आखिरकार चैतन्य ने थककर अपनी कोशिशें बंद कर लीं। अल्फ़ी सही कह रहा था। इतनी कोशिशों के बाद भी वो दरवाजा टस से मस नहीं हुआ।

"तुम जाओ चैतन्य! अब कुछ नहीं हो सकता।" अल्फ़ी ने बहुत ही मायूसी
से कहा।

"मैं कहीं नहीं जा रहा हूॅ॑। ये चाबी लो और अपनी बेड़ियॉ॑ खोलो। इस दरवाजे को तो मैं खोलकर रहूंगा।" चैतन्य भी जिद पर उतरते हुए बोला और फिर वो चाबी अल्फ़ी के सामने फेंक दी। अल्फ़ी ने उस चाबी को हैरानी से देखा।

"ये तुम्हें कहॉ॑ मिली?" अल्फ़ी ने पूछा।

"कहीं भी मिली है। तुम अपनी बेड़ियॉ॑ खोलो। मैंने अनामिका से वादा किया है कि मैं तुम्हें जरूर बताऊंगा।" चैतन्य ने अल्फ़ी को एक बार फिर से आदेश देते हुए कहा।

और... अनामिका का नाम सुनकर अल्फ़ी के सपाट पड़े चेहरे पर एक दर्द उतर आया। वो अपनी ऑ॑खें बंद कर बोला, "उसी के लिए तो कर रहा हूॅ॑। तुम जाओ! उसे और तकलीफ़ मत दो।"

"क्या? अनामिका के लिए! मैं समझा नहीं। क्या बोल रहे हो तुम?" चैतन्य ने उलझे हुए लहजे में कहा।

मगर अल्फ़ी उसके सवालों का कोई जवाब दे पाता उससे पहले ही दरवाजे की ओर से आती आहटों ने उन दोनों को उस ओर देखने पर मजबूर कर दिया। खतरे की आशंका से चैतन्य ने खंज़र पर अपनी ऊंगलियॉ॑ कस लीं। वो हर पल सामने दरवाजे पर नज़र टिकाए खुद को तैयार कर रहा था।

और फिर अचानक ही वो हुआ, जो चैतन्य और अल्फ़ी दोनों ने ही नहीं सोचा था। कोई तेजी से लड़खड़ाते हुए अंदर आया और फिर मुॅ॑ह के बल नीचे गिर गया। उसे देख और पहचान कर चैतन्य और अल्फ़ी दोनों की ही ऑ॑खें सदमे से फ़ैल गईं और दोनों के ही मुॅ॑ह से एक साथ निकला, "अनामिका!"

स्टडी से बाहर आते ही अपने साथियों की लाशें देखकर एडवर्ड का पारा और भी गर्म हो जाता है। वो साथ खड़े गार्ड्स को बेसुध सी अनामिका को अपने पीछे लाने के लिए कहता है। उसे अच्छी तरह से पता था कि इस समय चैतन्य कहॉ॑ हो सकता था? हालांकि जो भी हो रहा था... वो उसकी योजना का हिस्सा नहीं था, पर जिस तरह हो रहा था.. कुछ फेरबदल के साथ उसकी योजना के मुताबिक ही हो रहा था और इसने उसे और भी उत्साहित कर दिया था। वो तेजी से कैदखाने की ओर बढ़ा, मगर आगे बढ़ते-बढ़ते उसके कदम धीमे होते गए। उसने आसपास गार्ड्स की ग़ैरमौजूदगी को साफ तौर पर महसूस किया था। उसके होंठों पर आई कुटिल मुस्कान उसके राहत में होने का सबूत थीं। उसने तुरंत ही अपने पीछे अनामिका को संभालकर आ रहे दोनों गार्ड्स में से एक को कुछ और गार्ड्स को तुरंत बुलाने के लिए कहा। उसके जाते ही उसने दूसरे गार्ड को पहले की तरह अपने पीछे आने का इशारा किया और खुद आगे बढ़ गया। रास्ते के संकरे होते ही एडवर्ड रूक गया। उसने पीछे मुडकर गार्ड को देखा, जिसे अनामिका को संभालने में बहुत दिक्कत आ रही थी। बेसुध होने के बाद भी वो पूरी ताकत से छटपटा रही थी।

"तुम! आगे बढ़ो!" एडवर्ड ने एक ओर होकर उस गार्ड को अनामिका के साथ आगे बढ़ने के लिए कहा, जिस पर वो गार्ड सिर हिलाते हुए आगे बढ़ गया। उस संकरे रास्ते में अनामिका को संभालना उसके लिए और भी दूभर हो गया था, मगर एडवर्ड का आदेश था, इसलिए वो किसी तरह

आगे बढ़ता गया। आगे जगह और भी कम होने पर एडवर्ड के कहने पर उस गार्ड ने अनामिका को आगे किया और उसे धकेलता हुआ आगे बढ़ने लगा। आखिरकार एक जगह पर आकर अनामिका उसकी चंगुल से छूट ही गई और फिर वो गिरते-पड़ते आगे भागी। गार्ड ने भय से एडवर्ड की ओर देखा। "कोई बात नहीं। भागेगी भी तो कहॉ॑? तुम जाओ और पकड़ो उसे। किसी और के हाथ नहीं आनी चाहिए वो। वो... मुझे चाहिए।" कहते हुए एडवर्ड के चेहरे पर एक वहशीपन उतरा था।

उसका आदेश सुनते ही गार्ड भी तेजी से अनामिका की ओर बढ़ गया। एडवर्ड ने आगे बढ़ने में कोई जल्दबाजी नहीं दिखाई।

अनामिका लड़खड़ाते हुए तेजी से आगे बढ़ी। ऐसी हालत में भी उसने अपने होशोहवास पूरी तरह नहीं खोए थे। वो किसी भी तरह उनके चंगुल से बाहर निकलने की जुगत में थी और इसी कोशिश में वो उस जगह से बाहर निकल आई। मगर बाहर आते ही वो खुद को संभाल नहीं सकी और मुॅ॑ह के बल गिर पड़ी।

"अनामिका!"

उसके कानों ने ये पुकार साफ-साफ सुनी, मगर वो खुद को उठा नहीं पा रही थी। आखिरकार उसने खुद को जमीन के उस टुकड़े के हवाले कर दिया।

सामने सदमे की हालत में खड़े चैतन्य ने उसे इस हालत में देखा, तो वो तेजी से उसकी ओर भागा, मगर थोड़ी दूर भागने के बाद ही उसे खुद को मजबूरन रोकना पड़ा। अनामिका के पीछे लगा गार्ड तेजी से उसके पास आया और फिर उसे झटके से ऊपर उठाकर उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया। अनामिका एक बार फिर से उसकी गिरफ्त में छटपटाते हुए गले से घुटी-घुटी सी आवाज़ें निकालने लगी।

कोठरी में बंद अल्फ़ी ऑ॑खें फाड़े सामने का मंजर देख रहा था। अनामिका को इस तरह देखकर वो हल्का सा कसमसाया, मगर जब चैतन्य उसकी
ओर भागा, तो उसे अपना दिल बिखरता हुआ महसूस हुआ। नहीं! अब वो कुछ भी नहीं करेगा। अब वो चैतन्य की जिम्मेदारी है, तो फिर उसे ही निभानी है। अपने हिस्से की वो पहले ही निभा चुका है। और ये सोचते ही उसने एक बार फिर से अनामिका पर एक जज़्बाती नज़र डाली। उसके दिल में एक टीस सी उठी थी, जिसे दूर करने के लिए उसने अपनी भरी हुई ऑ॑खें फेर लीं।

वहीं दूसरी ओर अनामिका को ऐसी हालत में देखकर चैतन्य का पारा एक बार फिर से चढ़ा था। वो तेजी से उस ओर बढ़ा ही था कि तभी अंदर आते हुए एडवर्ड पर उसकी नजर पड़ी और वो सकते में आ गया। एडवर्ड के यहॉ॑ होने का मतलब तो यही था कि अनामिका उसके गिरफ्त में थी और ये जानकर उसके दिमाग की नसें फड़की थीं। वहीं इन सबसे खुद को अलग-थलग करके बैठे हुए अल्फ़ी का ध्यान भी एडवर्ड की ओर गया था, जो अनामिका पर अपनी गहरी नज़रें डाले हुए था और उसकी इन नज़रों को अल्फ़ी अच्छी तरह से पहचानता था। एडवर्ड के इरादों को भॉ॑पते हुए अल्फ़ी का सारा शरीर सिहर उठा। वहीं चैतन्य अभी भी इस ख्याल से कोसों दूर था। उसे बस यही चिंता थी कि अनामिका, एडवर्ड के पास थी, जो कि नहीं होना चाहिए था।

मगर एडवर्ड के इरादे उन सभी की सोचों से कहीं ज्यादा गिरे हुए थे। उन दोनों पर एक तेज नज़र डालने के बाद वो अनामिका के पास पहुॅ॑चा और थोड़ा झुककर उसके नशे में डूबते- उतरते चेहरे को देखकर मुस्कुराया। ये देखकर तमतमाया हुआ चैतन्य आगे बढ़ा ही था कि तभी कुछ गार्ड्स तेजी से अंदर आए और उन्होंने चैतन्य को दबोच लिया। चैतन्य ने खुद को छुड़ाना चाहा पर उस पर गिरफ्त मजबूत थी। वो बस उसमें फड़फड़ाकर रह गया।

"च्च्च्च्! बेकार की मेहनत! मान लो.... कि तुम फॅ॑स चुके हो और अब मेरी क़ैद से आज़ाद होना नामुमकिन है।" ये कहकर वो फिर से अनामिका के
पास आया और इस बार पहली बार चैतन्य ने अनामिका की हालत पर ग़ौर किया। वो सही तरीके से खड़ी नहीं हो पा रही थी।

"अनामिका! क्या हुआ है तुम्हें?" चैतन्य बेचैनी से चिल्लाया।

"कुछ नहीं! बस एक दवा दी है। इतनी भागदौड़ करके बेचारी नाजुक सी लड़की थक गई थी। कैसे प्रेमी हो तुम? इस तरह अपनी प्रेमिका.... नहीं, खूबसूरत प्रेमिका को अकेले कौन छोड़ता है। चलो! तुमने नहीं तो.... मैंने ध्यान दे दिया। एक ही बात है।" एडवर्ड, चैतन्य को

उकसाते हुए बोला।

"अगर अपनी ख़ैर चाहते हो तो... छोड़ो उसे! अभ्भी!" चैतन्य एक-एक शब्द गुस्से में चबाते हुए बोला।

"कैसी बात कर रहे हो? दवा लेने के बाद आराम की भी जरूरत होती है। नई!" एडवर्ड ने अपने होंठों पर एक अर्थपूर्ण मुस्कान सजाकर कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य की ऑ॑खें सिकुड़ी थीं।

"गार्ड्स! इस नाज़ुक मेहमान को हमारे कमरे में पहुॅ॑चा दो। वो आज हमारे साथ आराम करेगी।" एडवर्ड भद्दे तरीके से मुस्कुराकर चैतन्य को देखते हुए बोला और उसकी बातों का मतलब समझकर चैतन्य बुरी तरह से फड़फड़ाया था, मगर वो अभी भी खुद को छुड़ाने में नाकाम ही था।

"अनामिका! होश में आओ!" आखिर में वो एक उम्मीद के साथ जोर से चिल्लाया। उसकी बात सुनकर अनामिका हल्के से कसमसाई। उसकी चेतना अभी भी पूरी तरह से लुप्त नहीं हुई थी, मगर उस नशीली दवा ने उसके शरीर को बुरी तरह से शिथिल कर दिया था। उसकी ऐसी लाचार हालत को देखकर चैतन्य तड़पकर रह गया।

"क्या दिया है तुमने उसे?" चैतन्य ने एक बेवकूफी भरा सवाल किया।
"मुझे नहीं पता। ये डिपार्टमेंट तो परिधि का है।" एडवर्ड ने बहुत ही लापरवाही से कहा और ये सुनते ही चैतन्य के साथ-साथ अल्फ़ी के भी कान खड़े हुए।

"परिधि!" चैतन्य ने परेशान होकर पूछा।

"हॉ॑! वही तो ये सब बनाकर हम सबको देती है। तुम्हें पता है... उसके हाथों में जादू है। उसकी दवा कभी भी बेअसर नहीं होती। तुम्हीं देख लो। अब इसे काबू में करना आसान था क्या? पर अब मेरी ऊंगलियों में नाचेगी। वैसे तुम्हारी च्वाइस की दाद देनी पड़ेगी।
खूबसूरत बहुत है लड़की। हमेशा इसे दूर से ही देखा था... आज पास से देखने का मौका मिल ही गया।" एडवर्ड ने अपनी आवाज में कमीनगी घोलते हुए कहा।

"छूना मत उसे। वरना... चीर के रख दूंगा।" चैतन्य अपनी पूरी ताकत से चिल्लाकर बोला।

"अच्छा! ये भी देख लेते हैं। गार्ड्स! लड़की को मेरे कमरे में पहुॅ॑चाओ। अभी! और इसे... इन सलाखों के पीछे।" चैतन्य पर जहर भरी नज़र डालते हुए एडवर्ड ने कहा और फिर अपने कपड़े झटककर अपना कॉलर ठीक करने के बाद वहॉ॑ से चलता बना।

एडवर्ड की बातें सुनकर चैतन्य के साथ-साथ अल्फ़ी के पैरों के नीचे से भी जमीन खिसक गई और जैसे आसमान उनपर टूट कर गिर पड़ा। चैतन्य उन गार्ड्स की पकड़ से छूटने को फड़फड़ाता रहा। वहीं अनामिका को पकड़े हुए वो दोनों गार्ड्स उसे इस तरह तड़पता हुआ देखकर राक्षसों की तरह हंसने लगे। चैतन्य ने सही कहा था। जालिम की पैरवी करने वाले भी उसी की तरह जालिम हो जाते हैं। वहीं अनामिका भी अब उनकी पकड़ से छूटने के लिए और जोर से छटपटाने लगी थी, जो उन दोनों गार्ड्स के लिए
मजाक का जरिया बन गया था।

उधर दूसरी तरफ अनामिका को उनकी गिरफ्त में छटपटाते हुए देखकर अल्फ़ी की रगों में खून उबलने लगा, जो उसकी गुस्से में दहकती ऑ॑खों में उतर आया था। वो अब तक शांत था क्योंकि वो हर सितम सहने की कुव्वत रखता था, मगर अब जो उसकी ऑ॑खों के सामने हो रहा था... वो उसकी हर बर्दाश्त से बाहर था। उसकी ऑ॑खों के सामने अनामिका को इस तरह छूने की हिम्मत करना मौत को दावत देने के समान था और ये उन दोनों गार्ड्स को जल्द ही समझ में आने वाला था।

सबकी हालत का जश्न मनाते वो दोनों गार्ड्स सकते में आ गए जब चैतन्य को मजबूती से पकड़े हुए सभी गार्ड्स ने अपनी गिरफ्त से आजाद कर दिया। उनकी इस हरकत से एडवर्ड के गार्ड्स के साथ चैतन्य भी बुरी तरह से चौंका था। उसने मुड़कर उनकी और देखा।

"हम आपके साथी हैं सर! वैभव को पता था कि आगे मुसीबत फिर से आ सकती है... इसलिए हम पहले से ही तैयार थे। अब आपको जो करना है करिए। हम कुछ भी नहीं देखेंगे।" उन गार्ड्स

में से एक गार्ड बोला और फिर वो सभी पीछे हट गए।

"ओह्हो! धोखेबाज! तुम सबको तो अभी देखते हैं।" एडवर्ड का एक गार्ड तमतमा कर बोला।

साथियों का साथ और हौसला मिलने के बाद चैतन्य ने भी उनकी ओर आग उगलती नजरों से देखा, मगर वो कुछ कर पाता, उससे पहले ही पीछे की ओर एक तेज धमाका सा हुआ। सबसे पहले तो सभी ने उस धमाके की आवाज सुनते ही खुद को अपने हाथों के सुरक्षा घेरे में लिया और फिर धीरे से मुड़कर उस आवाज की दिशा में देखा। बेड़ियों से मुक्त अल्फ़ी सलाखों को भी तोड़ कर... बाहर खड़ा हुआ... उन दोनों को खा
जाने वाली नजरों से घूर रहा था। उनमें से कोई कुछ समझ पाता उससे पहले ही बिजली की तेजी से अल्फ़ी उन दोनों गार्ड्स के पास पहुॅ॑च गया और फिर एक ही झटके में अनामिका को उनकी गिरफ्त से आजाद करवा दिया। सब इतनी तेजी से हुआ कि किसी को भी कुछ सोचने या समझने का मौका नहीं मिला। उसने झटके से चैतन्य की ओर देखा और फिर अनामिका को उसकी ओर धकेल दिया। चैतन्य ने आगे बढ़कर लहराती हुई अनामिका को अपनी बाहों में समेट लिया और फिर अल्फ़ी की ओर देखने लगा, जो इस समय साक्षात् ज्वालामुखी बना हुआ था।

एडवर्ड के उन दोनों गार्ड्स ने इस एकाएक हुई कार्यवाही पर हैरान होते हुए अल्फ़ी की ओर देखा। वहॉ॑ मौजूद किसी को भी इस बात का अनुमान नहीं था कि अगले ही पल क्या होने वाला था।

अल्फ़ी ने एक तेज दहाड़ के साथ उन दोनों गार्ड्स की गर्दनें अपनी मुट्ठियों में दबोच लीं और दोनों को ही अपने एक एक हाथ से हवा में उठा दिया। चैतन्य और दूसरे गार्ड्स अल्फ़ी का ये रूप देखकर सहम से गए। उन्होंने सोचा कि शायद अब अल्फी उन्हें जमीन में पटक कर बेदर्दी से मारने वाला था, मगर अल्फी ने जो किया वह उनके वहमोगुमान में भी कहीं नहीं था। अल्फ़ी ने उन दोनों में से एक गार्ड को जमीन पर बेदर्दी से पटका और फिर उसकी गर्दन पर अपने पैर पूरी मजबूती से टिका दिए। सभी दम साधे अल्फी की कार्यवाही को देख रहे थे।

अगले ही पल अल्फी ने अपने हाथों में पड़े हुए गार्ड को दोनों हाथों से दबोच कर अपने पास किया और फिर बड़ी ही बेदर्दी से उसने अपने दॉ॑त उसकी गर्दन में घुसा दिए। एक पेज दिल दहलाने वाली चीख वहॉ॑ की दीवारों से टकराकर गूंज उठी। अल्फ़ी ने भी अपने दॉ॑त गड़ाकर उसे छोड़ा नहीं.... बल्कि वह तो उसका रक्त पान करने लगा था। कुछ ही देर में उसे कार्ड का पूरा शरीर राख की तरह सफेद हो गया। उसकी ऑ॑खों की ज्योति बुझ चुकी थी। उसका शरीर ढीला पड़ते ही अल्फ़ी ने उसकी गर्दन को
पकड़ा और इतनी तेज ताकत लगाकर उसे मरोड़ा कि उसकी वो गर्दन धड़ से अलग हो गई। चैतन्य के साथ खड़े सभी गार्ड्स धीरे-धीरे पीछे की ओर हटने लगे थे। वहीं चैतन्य, अनामिका को संभाले अपनी आंखों के सामने वो दिल दहला देने वाला मंजर देख रहा था।

एक गार्ड को खत्म करने के बाद अल्फ़ी ने अपने पैरों के नीचे दबे हुए दूसरे गार्ड को भी बेदर्दी से पकड़ कर खड़ा किया। वो गार्ड अल्फ़ी का ये विकराल रूप देखकर थर्रा उठा था। उसकी ऑ॑खें सदमे से फैल चुकी थीं। उसके चेहरे पर निरीहता और वेदना उतर आई थी। मगर उनकी हरकतों ने अल्फी को अब किसी भी रहम भरी नजर से आजाद कर दिया था। उसने गहरी सॉ॑से लेते हुए उस गार्ड को देखा और फिर उसकी गर्दन पर भी अपनी पैने दॉ॑त गड़ा दिए। एक बार फिर वह पूरा कमरा दर्दनाक चीखों से कॉ॑प उठा। कुछ ही देर में अल्फ़ी ने उसका भी वही हाल किया जो उसने.... पहले वाले गार्ड का किया था। इस बार अल्फ़ी ने उसकी गर्दन से अपने दॉ॑तो को आजाद करते समय उसकी गर्दन का मांस भी उखाड़ लिया था। जब उस गार्ड का ठंडा पड़ चुका शरीर जमीन में गिरा, तो अल्फ़ी ने उसकी गर्दन भी उसके शरीर से उखाड़ फेंकी। दोनों ही खत्म हो चुके थे और एक पिशाच के काटने से उनके भी पिशाच के रूप में वापस आने की किवदंती का भी अंत हो चुका था.... जो ना जाने कितना सही था।

मगर एक कड़वा सच वो भी था, जो चैतन्य और दूसरे गार्ड्स के सामने खून में नहाया खड़ा था। वो अब धीरे-धीरे शांत होने लगा था और उसकी नजरें चैतन्य की बाहों में सिमटी हुई अनामिका पर थीं। एडवर्ड इस गलतफहमी में आगे बढ़ गया कि अब हर बाजी उसके हाथों में थी। मगर वो नहीं जानता था कि उसकी इन घटिया, नीच और घिरी हुई हरकतों ने एक अनहोनी को जन्म दे दिया था... जो उसका काल बनने वाला था। अनामिका की ओर उठने वाला हर हाथ अब टूट कर गिरने वाला था और उसकी ओर उठने वाली हर ऑ॑ख अंधेरों में डूबने वाली थी। पिशाच आ चुका था।
भाग 120

वो खून में नहाया हुआ उन सबके सामने खड़ा था। चैतन्य उस अनहोनी को अपने सामने देख रहा था, जो बिल्कुल भी नहीं होनी चाहिए थी। अपने सामने पड़े उन दोनों गार्ड्स के क्षत-विक्षत शवों को देखकर चैतन्य दहल सा गया था। ऐसा नहीं था कि वो ये सब देख नहीं सकता था। उसने कुछ देर पहले खुद दो पापियों को इसी तरह से नर्क का रास्ता दिखाया था। पर.... उसने उन्हें सिर्फ जान से मारा था और अल्फ़ी.... वो तो उन दोनों का पूरा खून ही पी गया था। उसे अच्छी तरह से याद था कि दिव्याक्षि ने चेतावनी देते हुए कहा था कि मौजूदा हालातों में अल्फ़ी के मुॅ॑ह खून नहीं लगना चाहिए, वरना बहुत बुरा होने की संभावना थी (भाग 101)। वो पिशाच कुल का था और कुछ बेहद दुर्लभ परिस्थितियों के कारण वो ऐसा होने के बाद धीरे-धीरे असीमित पैशाचिक शक्तियों का स्वामी बन सकता था। अल्फ़ी के धैर्य को देखकर अनामिका और चैतन्य दोनों को ही नहीं लगा था कि वो कुछ ऐसा कर जाएगा। खुद अल्फ़ी ने भी कभी ऐसा करने के बारे में नहीं सोचा रहा होगा। पर आज अनामिका की सुरक्षा के सवाल के साथ हर चीज उसके हाथों से बाहर निकल चुकी
थी। सच तो यही था कि अल्फ़ी ने अपना ये विकराल रूप इसलिए धारण किया था क्योंकि उसने अनामिका को बहुत बड़ी मुश्किल में फॅ॑सा देख लिया था। चूंकि उसे चैतन्य और उसे पकड़े गार्ड्स के बीच की कानाफूसी का पता नहीं था... इसलिए अब उसके पास अनामिका को सुरक्षित करने के लिए ऐसा करने के अलावा और कुछ बाकी नहीं रह गया था और अब समस्या को हल करने के बाद वो गहरी साॅ॑से भरता उनके सामने था। उसकी ऑ॑खों में चढ़ा गुस्सा धीरे-धीरे नीचे उतर रहा था और वो एक बार फिर से सामान्य हो रहा था।

अल्फ़ी एकटक अनामिका की ओर देख रहा था.. जैसे कि जानना चाहता हो कि वो ठीक है या नहीं। पर अनामिका तो अब चैतन्य के पास पहुॅ॑चकर पूरी तरह से बेहोश हो चुकी थी। शायद उसने ऐसी हालत में भी चैतन्य को पहचान लिया था। कोई राहत भरा जवाब नहीं मिलने पर उसने बेचैनी से चैतन्य की ओर देखा। चैतन्य ने उसकी ऑ॑खों के सवाल को पढ़कर अपने कंधे पर सिर रखी हुई अनामिका की ओर देखा... और फिर अल्फ़ी की ओर देखकर हॉ॑ में सिर हिलाया। अल्फ़ी एक गहरी साॅ॑स लेता हुआ घुटनों के बल गिर पड़ा और अपना चेहरा हथेलियों में छिपा लिया।

अल्फ़ी ने अनामिका को जरूर बचा लिया था, पर वो सब अभी भी खतरे से घिरे हुए थे। यहॉ॑ से सुरक्षित बाहर निकलना भी बहुत ही जरूरी था। चैतन्य ने अपने सहयोगी गार्ड्स में से एक को बुलाया और उससे कुछ पूछा। उसके जवाब देने पर चैतन्य ने उसके कानों के पास धीमी आवाज में कुछ कहा। वो सिर हिलाता बाकी के गार्ड्स के साथ तेजी से बाहर की ओर गया। अल्फ़ी भी अब अपने घुटनों पर दोनों हाथ टिकाए जमीन को घूरते हुए बैठा था। चैतन्य ने अनामिका को अपनी बाहों में उठाया और एक ओर ले गया। उसे एक साफ जगह पर लिटाकर वो उसे होश में लाने की कोशिश करने लगा।

"उसे सोने दो। वरना इस तरह अचानक होश में आने के बाद उसे भ्रम होने
लगेंगे। फिर वो और भी उलझने लगेगी।" अल्फ़ी ने उसी तरह जमीन को घूरते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर चैतन्य ने उसकी ओर हैरत से देखा और पूछा, "क्या मतलब?"

"ये दवा दिमाग पर असर करती है। वो सोचने-समझने की क्षमता लगभग खत्म कर देती है और ज़ुल्म ये कि जल्दी से बेहोश भी होने नहीं देती। इसका असर खत्म होने के लिए एक गहरी नींद जरूरी है। ताकि दिमाग को आराम मिल सके।" अल्फ़ी ने तफ्सील से बताया।

"और तुम्हें ये कैसे पता?" चैतन्य ने पूछा।

"क्योंकि सुबह ऐसी ही हालत थी मेरी।" अल्फ़ी ने एक आह के साथ बताया।

और चैतन्य को फॉरेस्ट केबिन से अल्फ़ी की गिरफ्तारी के बाद उसके गुनाह कबूल करने की सारी कहानी समझ आ गई। उसके पास अब तो अल्फ़ी के लिए अफसोस भी खत्म होने को थे।

"तो क्या इसीलिए तुमने इल्ज़ाम अपने सिर ले लिया। मुझे लगा कि शायद हेममाया के शरीर को पाने के लिए तुमने ये सब किया।" चैतन्य ने अनामिका के सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"नहीं! अनामिका के लिए किया।" अल्फ़ी ने बग़ैर किसी लाग-लपेट के कहा। उसके जवाब से अनामिका के बालों पर फिरती चैतन्य की ऊंगलियॉ॑ ठहर गईं, मगर उसने नज़रें उस पर से हटाई नहीं। आगे फिर किसी ने कुछ नहीं कहा। बस तीनों की सॉ॑सों की आवाज वहॉ॑ फैली ख़ामोशी में खलल डालती रही।
थोड़ी ही देर में वो गार्ड्स अपने और साथियों को लेकर आ गए। चैतन्य ने बेहोश अनामिका को बाहों में उठा लिया था।उन सभी ने चैतन्य और अल्फ़ी के चारों ओर इस तरह से घेरा बना लिया कि उनके बीच छिपे चैतन्य, अल्फ़ी और अनामिका किसी को दिखाई ना दें। अनामिका की ऐसी हालत के कारण वो अभी किसी से भी उलझने का खतरा मोल नहीं ले सकते थे। उन गार्ड्स की मदद से वो तीनों आसानी से अल्फ़ी के कमरे तक पहुॅ॑च गए। उन दोनों ने जल्दी से अपनी-अपनी शर्ट चेंज की क्योंकि दोनों की ही कमीज खून से सनकर खराब हो चुकी थी। काम हो जाने के बाद चैतन्य ने उन सभी गार्ड्स का धन्यवाद किया। उन गार्ड्स ने आगे भी पूरे सहयोग का भरोसा दिया और फिर वहॉ॑ से चले गए।

"यहॉ॑ क्यों आए हैं हम?" अल्फ़ी ने चारों ओर देखते हुए कहा।

"यहॉ॑ से बाहर निकलने के लिए!" चैतन्य ने कहा।

"यहॉ॑ से!" अल्फ़ी चौंका।

"हॉ॑! तुम पूछते थे ना कि मैं पहली बार मेंशन के अंदर कैसे आया था? आओ दिखाता हूॅ॑।" अनामिका को बाहों में उठाए हुए ही चैतन्य उस आईने की ओर बढ़ गया, जिससे वो पहली बार मेंशन के अंदर आया था। अल्फ़ी भी चुपचाप उसके पीछे चल दिया। आइने के पास पहुॅ॑चकर चैतन्य ने मुड़कर अल्फ़ी की ओर देखा। वो एक दुविधा में फॅ॑स गया था। इस रास्ते का इस्तेमाल चैतन्य और अनामिका तो आसानी से कर सकते थे, पर अल्फ़ी... वो इसे कैसे इस्तेमाल कर सकता था? और फिर उसके दिमाग में एक ख्याल आया।

"अल्फ़ी! अनामिका को संभालो जरा!" चैतन्य ने अनामिका की ओर इशारा करते हुए अल्फ़ी से कहा, जिस पर अल्फ़ी ने उसकी बात समझने
की गरज से अपने माथे पर बल डाले थे।

"अरे यार! ये रास्ता मैं और अनामिका ही इस्तेमाल कर सकते हैं क्योंकि अनामिका ने बस मुझे इजाज़त दी है। तुम्हें आगे आने के लिए अनामिका के साथ आना होगा।" उसे जवाब देते हुए चैतन्य ने कहा। उसकी बात समझकर अल्फ़ी ने झिझकते हुए अनामिका की ओर देखा और बस खड़ा रह गया।

"अल्फ़ी! जल्दी करो। यहॉ॑ सब हमारे मददगार नहीं हैं। तुम क्या चाहते हो कि हम सब एक बार फिर से उस विकट स्थिति में फॅ॑स जाऍ॑।" चैतन्य ने आसपास देखते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फी ने इनकार में सिर हिलाया और फिर आगे आकर उसने बेहोश अनामिका को अपनी बाहों में ले लिया। अनामिका का सिर अल्फ़ी के दिल वाली जगह पर टिका था। वो एक बार फिर उसके बेहद करीब थी और ये अहसास ही उसके मुर्दा होते दिल में फिर से धड़कने भर गया। वो इतनी जोर से धड़का कि अचेत अनामिका भी उसे महसूस कर हल्का सा कसमसाई थी।
अल्फ़ी ने बिना सिर हिलाए पलकें झुकाकर उस पर एक नज़र डाली। उसका दिल एक बार फिर से बगावत पर आमादा होने लगा और यहीं... उसने तुरंत अपनी निगाहें उस पर से हटा लीं।
हालांकि धड़कनें अभी भी बदस्तूर पूरी रफ्तार से दौड़ रही थीं।

"आओ!" चैतन्य ने उसकी ओर मुड़कर कहा।

"और ये!" अल्फ़ी ने अनामिका की ओर इशारा करते हुए पूछा।

"क्यों? क्या हो गया?" चैतन्य ने पलटकर सवाल किया।

"नहीं! वो... मैं..." अल्फ़ी सही लफ्ज़ ढूंढता रह गया।
"इतनी भी भारी नहीं है वो कि कुछ देर उठाकर ना रख सको।" चैतन्य ने हल्के-फुल्के अंदाज में कहा। वो अल्फ़ी की ऑ॑खों में उसकी उलझन पढ़ चुका था।

"नहीं.. ऐसी बात नहीं है।" अल्फ़ी ने हिचकिचाकर कहा।

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] a [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"क्या सच में?" अनामिका ने अल्फ़ी के चेहरे को पढ़ने की कोशिश करते हुए कहा।

"तुम ठीक हो?" चैतन्य ने तुरंत ही बातों का रूख बदला और अनामिका जैसे अपनी हालत पर लौटी। उसने एक हाथ से अपना सिर पकड़ लिया।

"पानी!" अपने होंठों पर ज़बान फेरते हुए वो बोली, तो चैतन्य इधर-उधर देखने लगा।

"मेरी थैली में है जरा सा!" अनामिका ने पेड़ पर सिर टिकाकर कहा। चैतन्य ने तेजी से उसकी थैली से एक छोटा सा धातु का बोतल जैसा पात्र निकाला। अनामिका के हुंकार भरने पर वो उसने उसकी ओर बढ़ा दी।

"अनु!"

"हॉ॑!"
"वो खंज़र... तुम्हारे पास था ना! अब इस थैली में नहीं है। कहीं उस एडवर्ड को तो नहीं मिल गया।" चैतन्य ने बेचैनी से थैली के समान को खंगालते हुए कहा।

"वो मैंने स्टडी में छिपा दिया है।" अनामिका ने कहा।

"स्टडी में! अगर उस एडवर्ड ने स्टडी में छानबीन की तो उसे मिल नहीं जाएगा!" चैतन्य ने आशंका व्यक्त करते हुए कहा।

"नहीं! उन लोगों ने जब मुझ पर हमला किया... मेरा सबसे पहला ध्यान उस खंज़र पर ही था। इसीलिए तो मैं अपने बचाव में कुछ नहीं कर सकी। तुम्हें याद है वो धागा, जो उस चाबी में बंधा हुआ था। उस धागे की वजह से ही वो चाबी मुझे दिखाई नहीं दे रही थी। वो धागा वहीं पड़ा था। जब मैं उनके हमले की वजह से दर्द से नीचे बैठी तो वो धागा मुझे दिखाई दिया। पता नहीं क्यों.... पर मैंने वो धागा फुर्ती से उस खंज़र में लपेटकर.... उस खंज़र को एक कोने की ओर धकेल दिया और आगे बढ़ते हुए मेरी ऑ॑खों के सामने ही वो खंज़र गायब हो गया।" अनामिका ने चैतन्य को राहत भरी खबर देते हुए कहा।

"मतलब कि... फिलहाल तो वो खंज़र सुरक्षित है।" चैतन्य ने कहा।

"हॉ॑!" अनामिका ने दो घूंट भरने के बाद वो पात्र वापस लौटाते हुए कहा।

"हो गया?" चैतन्य ने फ़िक्र से पूछा।

"हमें पानी की जरूरत पड़ेगी। अभी मैं खुद से पानी उत्पन्न नहीं कर सकती। अपनी शक्ति का इस्तेमाल करने के लिए मुझे कम से कम पानी
की एक बूंद चाहिए होती है। हम इसे बर्बाद नहीं कर सकते।" अनामिका ने बड़ी मुश्किल से खुद को सिद्ध करते हुए कहा।

"कोई बात नहीं! तुम ये पी लो। मैं झील से पानी ले लाऊंगा।" चैतन्य ने उसकी ओर उस पात्र को बढ़ाते हुए कहा। अनामिका ने उसकी ओर देखा और फिर पूरा पानी पी लिया। पानी पीने के बाद उसे बेहतर महसूस होने लगा।

"अल्फ़ी को क्या हुआ?" चैतन्य को पानी का पात्र वापस लौटते हुए उसने कहा।

"वही... जो नहीं होना चाहिए था।" चैतन्य ने गहरी साॅ॑स के साथ अपनी बात कही।

"मतलब!"

"उसके मुॅ॑ह खून लग गया अनु! दिव्याक्षि ने कहा था कि ऐसा नहीं होना चाहिए। पर उस समय... तुम्हें उस एडवर्ड के गंदे इरादों से बचाने के लिए अल्फ़ी को शायद यही सही लगा होगा। सब इतनी तेजी से हुआ कि हम भी कुछ ना कर सके।" चैतन्य ने बुझी हुई आवाज में कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका ने एक सवालिया नज़र अल्फ़ी की ओर डाली।

"मैं पानी लेकर आता हूॅ॑। सावधान रहना!" अनामिका के गालों पर अपनी ऊंगलियॉ॑ फेरते हुए चैतन्य ने कहा।

अनामिका ने हॉ॑ में सिर हिलाया। चैतन्य पानी का पात्र लेकर अल्फ़ी के पास गया और उससे कुछ कहा। दोनों ने ही अनामिका की ओर नजर डाली और फिर चैतन्य तेजी से झील की ओर निकल गया।
अनामिका, चैतन्य की बातों में उलझ गई थी। अल्फ़ी ने उसके लिए इतना बड़ा कदम उठा लिया था। क्यों? कहीं उसने अनामिका के हेममाया होने पर यकीन तो नहीं आ गया और ये सोचकर वो और भी बेचैन हो गई। वो दोनों उसी तरह फासले पर बैठे हुए एक-दूसरे से नज़रें चुराए बैठे रहे।

अभी चैतन्य को गए थोड़ी ही देर हुई थी कि उन दोनों ने जंगल के एक हिस्से से कुछ आवाजें पास आती सुनी। वो दोनो ही चौकन्ने हुए। अल्फ़ी तेजी से दौड़ता हुआ अनामिका के पास आया, जो आवाज की दिशा में देखते हुए खड़ी थी। उसने उसका हाथ पकड़ा और उन आवाजों के विपरीत दिशा की ओर दौड़ लगा दी। एक सुरक्षित दूरी पर आकर वो दोनों एक मोटे पेड़ के पीछे छिप गए और उस ओर देखने लगे।

कुछ ही देर में उन्होंने कुछ कबिलाई लोगों को उस तरफ ही आते देखा, जो दिखने में ही बड़े ही खतरनाक दिख रहे थे।

"ये नई आफत यहॉ॑ कैसे आ गई? ये यहॉ॑ क्या कर रहे हैं?" अल्फ़ी उनकी ओर देखकर फुसफुसाया।

"तुम जानते हो इन्हें?" अनामिका ने पूछा।

"अच्छी तरह तो नहीं... बस इतना ही कि.... ये बहुत ही ज्यादा ख़तरनाक हैं।" अल्फ़ी ने उनकी ओर नज़र रखे हुए कहा।

"पर हैं कौन ये? दिख तो बहुत गुस्से में रहे हैं।" अनामिका ने पूछा।

"ये.... सुरमी कबीले से हैं।"
(किसे-किसे सुनाई दीं..... सिसकियॉ॑?) 😁

भाग 121

"ये.... सुरमी कबीले से हैं।"

"सुरमी कबीला! अब ये क्या बला है?" अनामिका ने झुंझलाकर पूछा।

"इनके बारे में ज्यादा जानकारी किसी को भी नहीं है क्योंकि ये बाहरी दुनिया से बिल्कुल अलग-थलग जंगलों के अंदर ही रहते हैं। जंगल ही इनकी दुनिया हैं और अपनी दुनिया में किसी की दखल ये बर्दाश्त नही करते। इसलिए इनके बारे में ज्यादा कोई भी नहीं जानता है।" अल्फ़ी ने दूर मौजूद उन लोगों पर नज़र रखे हुए कहा।

"क्या ये ख़तरनाक हैं?" अनामिका ने भी उन लोगों को घूर कर देखते हुए पूछा।

"हम्म!" अल्फ़ी ने उनकी तरफ देखते हुए ही हुंकारी भरी और तभी उसे कुछ खटका सा हुआ। उसने अनामिका की ओर देखा, तो वो उन कबिलाई आगंतुकों को देखने के कौतूहल में आड़ से थोड़ा बाहर निकल गई थी। पहले तो ये देखकर अल्फ़ी की ऑ॑खें फैली और फिर अगले ही पल उसने अनामिका को अपनी ओर खींचा। वो एक ही झटके में उसके करीब हुई थी।
"तुम्हें कोई बात एक बार में समझ नहीं आती... या फिर मुसीबत सिर में ढोने का शौक है

तुम्हें! तुमने सुना नहीं मैंने क्या कहा? वो खतरनाक हैं माया!" और बहुत ही धीमे मगर सख़्त लहज़े में उसे डपटता हुआ अल्फ़ी नाम पर आकर एकदम ही चुप हो गया। अनामिका भी इस नाम पर चौंकी और फिर उससे दूर होते हुए नजरें चुरा गई। अल्फ़ी भी थोड़ा असहज हुआ और फिर उनके बीच ख़ामोशी रह गई।

जब ये ख़ामोशी अनामिका को चुभने लगी, तो उसने ही इस पर वार करते हुए कहा, "ये इन्हीं जंगलों में रहते हैं क्या?"

"नहीं! यहॉ॑ से बहुत दूर।" अपनी झिझक से बाहर आते हुए अल्फ़ी ने जवाब दिया।

" तो फिर ये यहॉ॑ क्या कर रहे हैं?" अनामिका ने अगला सवाल किया।

"मुझे क्या पता?" अल्फ़ी ने कहा।

"मुझे लगा कि शायद... सर्वशक्तिमंडल के चुनाव के लिए आए हैं।" अनामिका ने एक अनुमान लगाकर कहा।

"नहीं। मेहमानों की लिस्ट पूरे चार बार चेक की है मैंने। उसमें इनका नाम नहीं था।" अल्फ़ी ने जवाब दिया।

"तो फिर..."

"पता नहीं! ये अपनी जगह छोड़ते नहीं कभी। इसलिए अगर यहॉ॑ है तो जरूर कोई बड़ी बात ही होगी।" अल्फी ने चिंता व्यक्त करते हुए कहा।

"मतलब कि.... एक और मुसीबत!" अनामिका ने झुंझलाकर कहा।
"मुसीबत! माई गॉड! हम तो भूल ही गए।" अचानक कुछ याद आने पर अल्फ़ी चौंक कर बोला।

"क्या?"

"चैतन्य! वो झील से वापस आता ही होगा। कहीं इनसे ना टकरा जाए।" अल्फ़ी ने समस्या बताते हुए कहा।

"क्या हुआ? टकरा गया तो कुछ हो जाएगा क्या?" अनामिका ने बात समझने की गरज से पूछा।

"सब कहते हैं कि इनके पास कोई दैवीय शक्ति है, जिसकी वजह से कोई भी इन पर जीत हासिल नहीं कर सकता। कोई जादुई ताकत भी नहीं! इसलिए इनसे टकराना बेवकूफी ही होगी और कुछ नहीं। इसके आगे कोई सवाल भी अब फिजूल ही है।" अल्फ़ी ने उस पर एक नज़र डालते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका के चेहरे पर चिंता सी उभरी थी। अल्फ़ी ने एक बार फिर उस तरफ नज़र डाली जिस तरफ से चैतन्य को वहॉ॑ आना था। वो मन ही मन मना रहा था कि चैतन्य अभी ना ही आए पर... उस तक खबर पहुॅ॑चाने का कोई रास्ता भी तो नहीं दिख रहा था। अनामिका की तरफ से कोई सुगबुगाहट न पाकर अल्फ़ी ने उसकी ओर नज़र डाली तो वो... ऑ॑खें बंद कर सिर झुकाए खड़ी थी। आल्फ़ी उस पर हैरान नज़रें डाले खड़ा रह गया। कुछ देर में अनामिका ने अपनी ऑ॑खें खोली और अल्फ़ी की ओर देखा। अल्फ़ी ने अपनी ऑ॑खों से सवाल किया, जिस पर अनामिका ने अपना सिर हिला दिया।

"कुछ सोचा तुमने? चैतन्य को कैसे बताऍ॑?" अल्फ़ी ने कहा।
"बता दिया मैंने।" अनामिका ने कहा और ये सुनकर अल्फ़ी ने एक बार फिर से उसे चौंककर देखा था।

"वो... हम दोनों मेंटली कनेक्टेड हैं।" अनामिका ने उसकी ऑ॑खों के सवाल का जवाब देते हुए कहा।

"ओह! तो... उसने कुछ कहा।" ने पूछा।

"हॉ॑! हमें सावधान रहने के लिए कहा है।" अनामिका ने कहा।

"ओह!" अल्फ़ी के मुॅ॑ह से बस इतना ही निकला, मगर दिल उन दोनों की इतनी करीबी से तड़पकर रह गया था। उन दोनों ने ही एक बार फिर से चैतन्य का इंतजार करते हुए अपना ध्यान सुरमी कबीले के आगमन पर लगाया, जो कछुए की तरह आगे आ रहे थे।

अभी कुछ देर ही हुई थी कि अनामिका के मस्तिष्क में दस्तक हुई। चैतन्य था, जो घबराया हुआ था।

"क्या हुआ चैतन्य? तुम परेशान लग रहें हों।" अनामिका ने कहा।

और फिर चैतन्य ने उससे कुछ कहा, जिसे सुनकर उसके माथे पर भी शिकन बढ़ी थी।

"और तुम?" अनामिका ने बेचैनी से पूछा। चैतन्य ने कुछ कहा, जिस पर उसने तेजी से सिर हिलाया और फिर संपर्क टूट गया।

"क्या हुआ?" अल्फ़ी ने पूछा।
"तांत्रिक श्रेष्ठ से उसकी बात हो गई है। उन्होंने किसी सुरक्षित जगह में हम दोनों को छिपने के लिए कहा है आबादी से दूर। अगली खबर तक!" अनामिका ने कहा।

"और वो?" अल्फ़ी ने पूछा।

"वो बाद में संपर्क करेगा।" अनामिका ने अपनी चैतन्य के लिए अपनी फ़िक्र छिपाते हुए कहा।

"तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा है तो फिर मानना ही पड़ेगा।" अल्फ़ी ने कहा।

"पर हम इस जंगल में खो गए तो! वैसे भी ये जंगल इतना पेचीदा है।" अनामिका ने आशंका जताई।

"मुझे एक जगह पता है... जहॉ॑ कोई नहीं आएगा। चलो!" अल्फ़ी आत्मविश्वास भरी आवाज में कहा और उसका हाथ थाम लिया। चैतन्य को छोड़कर कहीं और जाने में अनामिका को झिझक हो रही थी। मगर ऐसे समय में वो चैतन्य की बात भी नहीं टाल सकती थी। इसलिए चुपचाप अल्फ़ी का हाथ थामे आगे बढ़ गई।

****

अनामिका की सुरक्षा अल्फ़ी के हाथों में देकर चैतन्य झील की ओर निकल गया। उसे लगा था कि वो यूं जाकर... यूं लौट आएगा। मगर वो नहीं जानता था कि इन दो यूं के बीच का फासला लंबा होने वाला था।

पानी वापस लेकर लौटते समय उसे अनामिका की ओर से सुरमी कबीले के आने और उसे कुछ देर इंतजार करने का संदेश मिला। चैतन्य ने भी हामी भरते हुए उन्हें सावधान रहने के लिए कहा। वो अनामिका के साथ ही संपर्क में था कि तभी उसे अपने मस्तिष्क में किसी और की भी आहट सुनाई दी। उसने अनामिका से संपर्क तोड़ा ही था कि उसका मस्तिष्क एक मजबूत संपर्क से जुड़ गया।

"कौन है?" चैतन्य ने सवाल किया।

"तुम वायु-रक्षक हो?" सामने से एक तफ्तीशी सवाल आया और उस सवाल को सुनते ही चैतन्य की ऑ॑खें आश्चर्य से फैल गईं।

"आप कौन?" जवाब देने की बजाय उसने पलट कर सवाल किया।

"मैं तांत्रिक श्रेष्ठ! सिद्धनाथ!" सामने से परिचय भरे शब्द आए।

और ये नाम सुनते ही चैतन्य के हाथ से पानी का पात्र छुटते-छुटते रह गया। तांत्रिक

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

"[illegible]! [illegible]-[illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [

"ये तो अच्छी बात है।" कहते हुए तांत्रिक श्रेष्ठ के होंठ मुस्कुराए।

"जी मैं समझा नहीं!" उन की मुस्कुराहट में उलझते हुए चैतन्य ने कहा।

"लगता है कि... एक बार फिर... उसी जाल में फॅ॑सेगी ये माया उर्फ छाया... जिसमें बरसों पहले माणिक ने उसे फॅ॑साया था।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे समझाते हुए कहा।

"क्या मतलब?" चैतन्य उनकी बातों से हड़बड़ाया।

"प्रेम जाल और क्या?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक शरारती मुस्कराहट के साथ कहा।
"म... म.. मतलब!" चैतन्य एक बार फिर से उलझा।

"मतलब ये चैतन्य... कि पिछली बार छाया की जो कमजोरी थी... वो इस बार भी है। पिछली बार ये काम माणिक ने किया था और इस बार तुम करोगे।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

और ये सुनते ही चैतन्य बुरी तरह से हड़बड़ाया था, जैसे कि उसे किसी ने गर्म तवे पर बिठा दिया हो। वो उस डायन के आसपास रहना भी गवारा नहीं करता था। फिर उससे प्रेम का नाटक कैसै करता?

"नहीं.. नहीं... मुझसे नहीं होगा। आप उसका सिर काटने को कहें तो मैं कर दूंगा, पर उसके साथ नैन-मटक्का नहीं कर सकता मैं। उससे पहले मेरी ऑ॑खें ना फूट जाऍ॑! वैसे भी... मैं पहले भी उसे कई बार झिड़क चुका हूॅ॑। अब सामने से जाकर कहूॅ॑गा... तो उसे शक नहीं हो जाएगा।" चैतन्य ने अपना पल्ला झाड़ने की कोशिश करते हुए कहा।

"तो कोई और तरीका ढूंढ़ो उसके करीब जाने का। ये याद रखना कि अगर वो सफल हो गए तो.... बहुत कुछ खत्म हो जाएगा। शायद तुम भी और तुम्हारे वापस जाने की उम्मीद भी। हमें कई बार जानबूझ कर जहर अपने गले के नीचे उतारना पड़ता है चैतन्य! समझ लो... इस बार तुम्हारी बारी है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य को बहुत ही नर्मी से समझाते हुए उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा।

चैतन्य ने बेचारगी भरी नज़र उस कंधे पर डाली। उनकी बात सुनकर चैतन्य और भी उलझने लगा। वो अच्छी तरह से जानता था कि तांत्रिक श्रेष्ठ उसे जो करने के लिए कह रहे थे... उसका मतलब जहर गले के नीचे उतारना नहीं.... बल्कि जहरीली नागिन को अपने गले में खुद ही लपेटना था। पर शायद अब उसके सामने कोई विकल्प भी नहीं था। जो समस्याऍ॑
उनके सामने आ खड़ी हुई थीं उनका शीघ्र समाधान करना भी बहुत जरूरी था। उसने लाचारी और चिढ़ से अपनी ऑ॑खें बंद की और मन ही मन बोला,

"चल बेटा चैतन्य! आखिरकार लग ही गई तेरी इज्जत दॉ॑व पर!"

चैतन्य को ऐसा लग रहा था जैसे कि पूरी दुनिया ही उसका इम्तिहान लेने पर तुली हुई हो। कुछ दिन पहले ही आशुतोष और पार्टी ने मिलकर उसे सृष्टि के पीछे ढकेल दिया था। वो तो उसने समझदारी से उस अजीब सी सिचुएशन को संभाल लिया था और उसी के बाद ही तो अनामिका ने उससे अपने दिल की बात कही थी और वो लम्हा याद आते ही चैतन्य की ऊंगलियॉ॑ उसके होंठों तक पहुॅ॑ची थी। एक दिलफरेब सी मुस्कुराहट उसके होंठों पर आकर रूकी और फिर अगले ही पल वो मनहूस माया उसके हवासों पर सवार हो गई और वो वापस हकीकत में लौटा। उसने सिर ऊपर उठाकर आसमान की ओर देखा।

"हे भगवान! क्या जरूरत थी इतनी प्यारी शकल देकर भेजने की? ऊपर से जुल्म ये कि... जिसे देखना चाहिए... वही ज़ालिम नज़र भरकर नहीं देखती... बाकी सभी देखती हैं। हाय रे मेरी किस्मत!" वो अकेला बैठा अपनी फूटी किस्मत को रो रहा था।

"क्या हुआ चैतन्य? क्या सोच रहे हो? कोई परेशानी है?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने पास आकर उसे फिक्रमंदी से देखते हुए पूछा।

"परेशानी! नहीं तो! कहॉ॑ हैं परेशानी? बिल्कुल भी नहीं। मैंने परेशान होना ना.... बचपन में ही छोड़ दिया है। ये अलग बात है कि जिंदगी फिर भी झंड हो रखी है।" अपने अंदर के उबाल को दबा कर रखते हुए चैतन्य ने आखिरी लाइन बुदबुदाकर कही।

"देखो कुछ नहीं होगा। माणिक ने भी तो किया था। बस तुम थोड़ा सा हौसला दिखाओ।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य का हौसला बढ़ाते हुए कहा।
"हौसला! आपको पता है! अब तो वो भी छुट्टी पर चला गया है। आप समझ नहीं रहे हैं... वो माया ना... छिपकली है छिपकली। जब भी सामने आती है बस चिपकने की कोशिश करती है और.... आई हेट लिजर्ड! अरे वो सॉ॑स लेना दूभर कर देती है। उसके सामने गला सूख जाता है मेरा। उससे मोहब्बत भरी बातें भला मैं कैसे करूंगा? समझिए जरा।" चैतन्य ख़ौफ भरी आवाज में बोला।

"ये कैसी बातें कर रहे हो तुम? इतनी विकट परिस्थितियों में तुम्हें अपनी ही पड़ी है।
हम चारों ओर से मुसीबत में हैं। आज की रात क़यामत की है। अगर हमने उन्हें नहीं रोका तो सब तबाह हो जाएगा।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक बार फिर से सही जगह पर चोट करते हुए कहा, जिस पर दो पलों के लिए चैतन्य के मुॅ॑ह पर ताला लगा था।

"पर वो... अनामिका.." और वो मुॅ॑ह बनाते हुए चुप कर गया।

"चैतन्य! जहॉ॑ प्रेम है... वहॉ॑ भरोसा भी है... और अगर भरोसा नहीं... तो प्रेम भी नहीं है। अब तुम्हें सोचना है कि तुम जिसे प्रेम समझते हो.... वो प्रेम ही है... या बस एक आकर्षण। माणिक और ऐना के बीच भी बहुत प्यार था... मगर ऐना कभी भी... माणिक और उसके कर्त्तव्यों के बीच नहीं आई... बल्कि उसका साथ दिया, क्योंकि वो पूरा भरोसा करती थी उस पर और माणिक ने भी उस भरोसे का हमेशा सम्मान किया।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने गंभीर लहज़े में कहा।

"ठीक है! बताइए क्या करना है?" आखिरकार चैतन्य ने भी हथियार डालते हुए कहा। चोट सही जगह पर लगी थी। वो अपने प्रेम को इतना ओछा नहीं बना सकता था कि कोई उसकी प्रतिबद्धता पर सवाल उठाए।

"मुझे लगता है कि तुम्हें उससे सहानुभूति लेने की कोशिश करनी चाहिए।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।
"सहानुभूति! कैसी सहानुभूति?" चैतन्य का दिमाग चकराया।

चैतन्य का सवाल सुनकर तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ ने उसे माया के दिमाग से खेलने के लिए कहा। अभी तक पूरे इलाके में अल्फ़ी और अनामिका के गायब होने की खबरें फैल चुकी थीं। तांत्रिक श्रेष्ठ ने इसी खबर को अपनी चाल का आधार बनाने की योजना बना ली। चैतन्य भी किसी पालतू मिट्ठू की तरह उनकी हॉ॑ में हॉ॑ मिलाता चला गया।

"वैसे... आपसे एक बात पूछूं! आप तो तांत्रिक श्रेष्ठ हैं! तो फिर ये सब आपकी नज़रों से कैसे छिप गया?" चैतन्य ने अपने अंदर की जिज्ञासा बाहर निकाली।

"क्योंकि एडवर्ड हमारे समकक्ष पैशाचिक शक्तियों का चालाकी से इस्तेमाल करना सीख चुका है। वो इतना चालाक है कि हमारी दुनिया में किसी को भी इसकी भनक तक नहीं है। और तो और उसने शुरू से ही अपने आसपास के कड़े प्रतिद्वंद्वियों के लिए दूसरों के मन में संदेह पैदा कर दिया। इतना कि लोग उसकी कहीं बातों पर पहले विश्वास करेंगे।तुमने देखा नहीं... तुम सबको उसने कैसे फॅ॑सा दिया है। अब तुम सब चीख-चीख कर भी लोगों को सच बताना चाहोगे... वो कभी भी विश्वास नहीं करेंगे।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य के सवाल का जवाब देते हुए कहा।

"पर ये तो ग़लत है ना!" चैतन्य बोला।

"चैतन्य! एक बात याद रखना कि झूठ... हमेशा खोखला होता है। मगर जब वो तेज आवाज में बजता है ना... तो फिर रूकता नहीं... बार-बार प्रतिध्वनित होता है। इतना कि लोगों को सच से ज्यादा उस झूठ की सच्चाई पर यकीन हो जाता है। और यही हो रहा है। हमेशा यही होता है। कोई भी तुम तीनों की बात नहीं मानेगा।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अफसोस भरे
शब्दों में कहा।

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"ये कहॉ॑ हैं हम?" अनामिका ने चारों ओर देखते हुए पूछा।

"ऐसी जगह... जहॉ॑ एडवर्ड नहीं आएगा और आया भी तो सबसे आखिरी में आएगा। आओ!" अल्फ़ी ने उसके हाथ पर अपनी उंगलियाॅ॑ कसते हुए कहा और फिर वो एक ओर बढ़ गया। अनामिका ने देखा कि अल्फ़ी ने एक बड़े पत्थर के आसपास की जमीन के एक हिस्से में बिखरी हुई पत्तियों को अपने हाथों से साफ किया। इसके बाद उसने आगे बढ़कर उस भारी पत्थर को खिसकाया। इस पूरी प्रक्रिया में वो पसीने से नहा गया था। उसका चेहरा लाल हो गया था और माथे पर बिखरे बाल पसीने से भीग कर चिपक गए थे। उसकी उस बिखरी-बिखरी सी हालत पर अनामिका की निगाहें टिक गई। वो इस समय हद दर्जे तक दिलकश लग रहा था, जिससे उसके अंदर की हेममाया ने अपनी ऑ॑खें मिचमिचाई थी। अपना काम खत्म कर अल्फ़ी ने उसकी ओर देखा तो खुद पर जमी उसकी गहरी निगाहें देखकर अल्फ़ी का दिल जोरों से धड़का। मगर वो हालातो से बेखबर नहीं था।

"अनामिका! अनामिका!" दूसरी बार तेज आवाज में बोलकर उसने अनामिका को झिंझोड़ा और अनामिका अपनी खोई हुई कैफियत से बाहर आई।

"क्या हुआ? ऐसे क्या देख रही हो?" अल्फ़ी ने उसकी ऑ॑खों में झांक कर देखते हुए पूछा।

"क्या? मैं! कुछ तो नहीं।" अनामिका ने उसकी गहरी ऑ॑खों से घबरा कर अपनी नजर फेरते हुए कहा।

"हम्म! आओ!" अनामिका की बात पर यकीन करते हुए अल्फ़ी ने एक बार फिर उसका हाथ पकड़ा और उसे उस बड़े पत्थर के पास ले गया। अनामिका ने देखा कि पत्थर के हटने से वहॉ॑ एक बड़ा सा गड्ढा नजर आने लगा था। अल्फ़ी ने एक नजर चारों ओर डाली और फिर तेजी से उसे गड्ढे में उतर गया। अनामिका भौंचक सी खाड़ी उसे देखते ही रह गई।

"अनामिका! आओ!" अल्फी ने उसे तेज आवाज में पुकारा।

अनामिका ने देखा वो अपने दोनों हाथ उसकी ओर बढ़ाए उसे बुला रहा था। अनामिका ने आगे बढ़कर अपना हाथ उसे दिया और फिर अल्फ़ी ने उसे भी उस गड्ढे में उतार लिया।

"ये कौन सी जगह है?" अनामिका ने चारों ओर देखते हुए पूछा।
"यहॉ॑ दो रात पहले एडवर्ड को आते देखा था, जिस रात मैं चैतन्य को मुलाकात के बाद मेंशन ले गया था। चैतन्य से मिलने की जल्दी थी इसलिए जंगल के छोटे रास्ते से आ रहा था और ये दिख गया। इसलिए तो कहा कि वो हमें ढूंढता हुआ यहॉ॑ नहीं आएगा। उसकी जगह है ये।" अल्फ़ी ने जवाब दिया।

"पर मैं यहॉ॑ कायरों की तरह छिपकर नहीं बैठ सकती। मुझे चैतन्य के पास जाना है। वो अकेला है... परेशान हो रहा होगा।" अनामिका ने बेचैन होते हुए कहा।

"वो अकेला नहीं है। तांत्रिक श्रेष्ठ साथ हैं उसके और अगर तांत्रिक श्रेष्ठ ने हमें रूकने के लिए कहा है... तो हमें उनकी बात माननी है। वैसे भी चैतन्य तुम्हारी सुरक्षा की जिम्मेदारी मुझ पर छोड़कर गया है माया!" और अल्फ़ी एकदम से चुप हुआ। सख़्त लहज़े में बोलता हुआ वो बेख्याली में उसे माया बोल गया।

"अनामिका हूॅ॑ मैं... और मुझे.... किसी की सुरक्षा की जरूरत नहीं है।" अनामिका ने एक-एक शब्द चबाते हुए कहा।

उसकी बेरूखी से आहत अल्फ़ी ने खुद को संभाला और खुद को मजबूत करते हुए तंज भरे अंदाज में कहा, "हॉ॑! वो तो कुछ समय पहले कैदखाने में देखा मैंने।"

उसका तंज समझ कर अनामिका सिटपिटा कर रह गई। उससे आगे कुछ बोलते नहीं बना।

"देखो अनामिका! कम या ज्यादा... ताकत सभी के पास होती है। पर इसका मतलब ये नहीं कि किसी को किसी की जरूरत ना पड़े। इस समय हम सभी को एक-दूसरे की जरूरत है। इसलिए शांत रहो। हम दोनों का

नाम कस्बे में अपराधी के रूप में फ़ैल गया है। कोई भी बेवकूफी करके हम चैतन्य और तांत्रिक श्रेष्ठ की मदद नहीं करेंगे... उनकी मुसीबत ही बढ़ाऍ॑गे। समझो इस बात को। और हमें हमेशा के लिए यहॉ॑ नहीं रहना है। बस चैतन्य के अगले इशारे या खबर तक... बस!" अल्फ़ी ने अपनी आवाज को नर्म करते हुए बहुत ही आराम से कहा।

"तो क्या हम हाथ में हाथ धरे बैठे रहें कि कब वो इशारा करे... तो हम कुछ करें।" अनामिका ने झुंझलाकर कहा।

"ये तुमसे किसने कहा? मैं इस जगह पर यूंही नहीं आया हूॅ॑।" अल्फ़ी ने रहस्यमई तरीके से कहा।

"तो फिर!" उसकी बात सुनकर अनामिका ने चारों ओर नज़र दौड़ते हुए कहा। वो जमीन के नीचे बनी किसी गुफा की तरह था। जहॉ॑ आगे बढ़ने के लिए कोई रास्ता दिखाई तो नहीं दे रहा था।

"उस दिन एडवर्ड इसके अंदर आया था... पर वो वापस नहीं निकला। मैंने कुछ देर इंतजार किया। पर मुझे चैतन्य से मिलना था और मुझे देर हो रही थी, तो मैं बिना कुछ सोचे-समझे इसमें उतर गया क्योंकि मुझे इस जगह के बारे में फिर सर विलियम को बताना भी था। जब मैं अंदर इस जगह पहुॅ॑चा तो मैंने इस जगह को पूरी तरह से खाली पाया। मैंने इन दीवारों को अच्छी तरह से टटोल-टटोलकर देखा.. पर कुछ नहीं मिला। अगले दिन मैंने सर विलियम को इस बारे में बताया भी था.. पर घटनाऍ॑ इतनी तेजी से बदलीं और... " कहते-कहते अल्फ़ी रूक गया।

"और.." अनामिका ने अपनी एक भौंह चढ़ाई।
"और मैं... तुम में उलझ गया।" अल्फ़ी ने बड़ी मुश्किल से अपनी बात खत्म की।

"ओह! तो फिर अब! मुझे तो अब भी यहॉ॑ कुछ दिखाई नहीं दे रहा है।" अनामिका ने तुरंत ही बात बदलते हुए कहा।

"हॉ॑ दिख तो नहीं रहा है। पर शायद अब दिखे। एडवर्ड वापस नहीं निकला और यहॉ॑ भी नहीं था... तो इसका मतलब तो यही है कि वो आगे गया। पर कहॉ॑ से? जाहिर है कि कोई छिपा हुआ रास्ता है और वो हमें खोलना है।" अल्फ़ी ने उन दीवारों को पैनी नज़रों से घूरकर देखते हुए कहा।

"और हम वो कैसे खोलेंगे?" अनामिका ने पूछा।

"इस से!" अल्फ़ी ने अपनी जेब से हाथ बाहर निकाल कर उसके सामने अपनी मुट्ठी खोली। उसकी खुली मुट्ठी पर नज़र जाते ही अनामिका की ऑ॑खें आश्चर्य से फैल गईं।

"ये तुम्हें कहॉ॑ से मिली?" उसकी हथेली से वो चाबी उठाते हुए अनामिका ने पूछा।

"चैतन्य ने दिया था, ताकि मैं खुद को आजाद कर सकूं।" अल्फ़ी ने अपना हाथ खींचते हुए कहा।

"तो फिर सोच क्या रहे हो? जल्दी करो।" अनामिका ने उत्साहित होते हुए कहा। उसका उतावलापन देखकर अल्फ़ी के होंठ मुस्कुराए। बिल्कुल किसी बच्चे की तरह उत्सुक... कि दरवाजे के पीछे आखिर है क्या?

अल्फ़ी ने वो चाबी उंगलियों में दबाई और उसे दीवार पर टिका दिया।
उसके बाद वो उसे उस दीवार पर घसीटता हुआ आगे बढ़ा। नज़रें दीवार और चाबी के संपर्कस्थल पर ही टिकी हुई थीं। अनामिका भी कौतूहल से उसे ही देख रही थी। आधे से ज्यादा सफर तय करने के बाद भी जब कुछ नहीं हुआ, तब अल्फ़ी ने एक मायूसी भरी नज़र अनामिका की ओर डाली। मगर अनामिका ने उसे अपनी ऑ॑खों से ही आगे बढ़ने के लिए कहा। उसका इशारा मिलते ही अल्फ़ी एक बार फिर से चाबी के साथ आगे बढ़ा और कुछ दूर जाते ही एक जगह वो चाबी उस दीवार में घुस गई।

अल्फ़ी और अनामिका दोनों की ही ऑ॑खें उत्साह से चमक उठीं। अल्फ़ी ने एक नजर अनामिका की ओर डाली। अनामिका ने एक बार फिर ऑ॑खों के इशारे से उसे आगे बढ़ने के लिए कहा। एक

गहरी सॉ॑स छोड़ने के बाद अल्फ़ी ने वो चाबी इस तरह घुमाई जैसे कि... किसी ताले को खोलने के लिए घुमाया जाता है और एक बार फिर जादू हो गया। उनके सामने की वो दीवार धीरे-धीरे झीनी होती हुई गायब हो गई और एक अंधकार से भरा रास्ता उन दोनों के सामने खुल गया। अल्फ़ी कुछ कदम पीछे होता हुआ अनामिका के पास पहुॅ॑चा।

"मिल गया।" अनामिका ने चिहुंक कर कहा।

"हॉ॑॑! चलें?" अल्फ़ी ने अनामिका पर एक नज़र डालकर पूछा।

"हॉ॑! देखें तो सही कि कहॉ॑ खुलता है ये रास्ता? कहॉ॑ जाता है एडवर्ड इस रास्ते से?" इतना कहकर अनामिका उस रास्ते में बढ़ गई। अंदर जाते ही उसे पता चला कि उसे अंधेरे रास्ते में चलना इतना आसान नहीं था। पता नहीं रास्ता कैसा था? कहॉ॑ क्या था? कुछ भी तो उसे अंधकार में पता नहीं चल रहा था।

"आउच!" गड्ढे पर पैर पड़ने से वो बस गिरने को ही थी कि तभी अल्फी ने आगे आकर उसे संभाल लिया।
"संभलकर! बहुत गड्ढे हैं यहॉ॑ पर!" अल्फ़ी ने उसे सहारा देकर खड़े करते हुए कहा।

"तुम्हें दिखाई दे रहा है?" अनामिका ने अनुमान से उसकी ओर देखते हुए कहा।

"हॉ॑! हाथ पकड़कर चलो!" उसने अनामिका का हाथ पकड़ते हुए कहा। उसने अनामिका के एक हाथ को पकड़ा और अपना दूसरा हाथ उसके कंधे पर रखकर उसे अपनी हिफाजत में लिया। अनामिका ने भी कोई ऐतराज नहीं जताया। इस समय वो जता भी नहीं सकती थी। हालांकि इस समय वो अल्फ़ी की बढ़ी हुई धड़कनें साफ-साफ महसूस कर पा रही थी। वो उस उबड़-खाबड़ अंधेरे रास्ते में उसे पूरी हिफ़ाजत से संभाले हुए था। इसी तरह उलझे-उलझे से वो दोनों आखिरकार वो लंबा सा रास्ता पार कर गए, जबकि अंतिम छोर से आती रोशनी साफ-साफ दिखाई देने लगी थी। ऐसा लग रहा था जैसे कि कई सदियॉ॑ गुजर गई हों। बाहर आकर दोनों ने ही राहत महसूस की थी। अल्फ़ी ने धीरे से उसे छोड़ा और फिर बिना उसकी ओर देखे आगे बढ़ गया। अनामिका भी हर झिझक को पीछे छोड़ उसके पीछे गई।

और जब वो दोनों उसके अंतिम छोर पर पहुॅ॑चे... तो उन दोनों की ही ऑ॑खें इस खोज पर हैरानी से भर गईं।

"तो... ये है वो जगह... जहॉ॑ सारी मुसीबतें पैदा होती हैं या... की जाती हैं।"चैतन्य झील के किनारे किसी निरीह जानवर की तरह बैठा हुआ था, जिसे अच्छी तरह से पता था कि उसकी बलि दी जाने वाली है। ऐसा नहीं था कि वो कमजोर नीयत का इंसान था, जिसकी वजह से वो डर रहा था। पर... ना जाने क्यों वो उस माया की मौजूदगी से ही घबराने लगता था। कुछ तो ऐसा था, जो उसे... उस माया के आसपास जाने से भी रोकता था। पर क्या? पता नहीं! और अब... इन सबसे बाहर निकलने के लिए उसे उस कमबख़्त माया से मीठी-मीठी बातें करनी पड़ेगी और ये सोचते ही उसकी ऑ॑खों के सामने एक तस्वीर लहराने लगी... जिसमें वो माया उसके गले में अपनी दोनों बाहें फॅ॑साए उससे लिपटी खड़ी हुई है। वो अगले ही पल बुरी तरह से सिर से पैर तक कॉ॑प उठा।

"नहीं! नहीं! नहीं! सोच चैतन्य! कुछ सोच! जिससे वो तेरे करीब ना आए। तुझसे दस कदम दूर से बातें करे। अबकी बार उस छिपकली ने मुझे छुआ तो मैं खुद अपनी चमड़ी उधेड़ दूंगा।" वो बड़ी ही कुढ़न से बोला।

और फ़िर उसने अपने सोचने की दिशा बदल दी। उसे अब जब हर हाल में उसका सामना करना ही था.. तो फिर आगे की राह आसान करने का उपाय ढूंढना ज्यादा जरूरी था। उसे याद आया कि तांत्रिक श्रेष्ठ ने उससे कहा था कि वो अनामिका और अल्फ़ी के गायब होने की खबर के आधार पर उसकी सहानुभूति हासिल कर सकता है और ये याद आते ही कुछ देर के मानसिक गणित के बाद आखिरकार उसके होंठ मुस्कुराए।

वो झील के किनारे जाकर बैठ गया और अपने पैर झील के पानी में डुबो दिए। अभी तांत्रिक श्रेष्ठ को गए हुए आधा घंटा ही बीता होगा कि हवाओं ने उसे किसी के आगमन का संदेश दिया। संदेश मिलते ही वो संभलकर
बैठ गया। उसने आसपास से गीली मिट्टी हाथों में लगाई और फिर उसे अपने कपड़ों और फिर उन

हाथों को अपने कपड़ों, चेहरे और बालों में रगड़ दिया और बालों को यूंही बेतरतीब छोड़ दिया। उसने अपने चेहरे पर दुनिया की सारी लाचारी उधार में खरीदकर चिपका ली। ऑ॑खों में आंसू लाने के लिए एक हाथ पूरी ताकत से पास पड़े पत्थर पर दे मारा। उसके बाद वो फिर से एक कुशल अभिनेता की खाल ओढ़कर बैठ गया और उस आफत का इंतजार करने लगा।

कुछ ही देर में चैतन्य को अपने करीब उसका अहसास हो ही गया और फिर उसने धीरे-धीरे बुदबुदाना शुरू कर दिया। ये इतना अस्पष्ट था कि यकीनन पीछे से दबे पॉ॑व आती माया को सुनाई नहीं दिया होगा। माया की चाल और धीमी हुई थी। शायद वो उसकी बुदबुदाहट समझने की कोशिश कर रही थी। चैतन्य का पूरा ध्यान उसकी हर दबी हुई आहट पर था। एक निश्चित दूरी पर उसे महसूस कर चैतन्य ने अपनी आवाज तेज और स्पष्ट कर दी।

"तुम्हें इसका जवाब देना होगा अनामिका। मैंने तुम पर भरोसा किया और तुम्हारे कहने पर उस अल्फ़ी को छुड़ाने में तुम्हारी मदद की। फिर तुमने क्या किया मेरे साथ? उस अल्फ़ी के लिए तुम मुझे छोड़कर चली गई। मैं तुम्हें कभी माफ नहीं करूंगा और उस अल्फ़ी को भी। तुम दोनों को मैं ऐसी सजा दूंगा जैसी तुमने कभी सोची भी ना होगी। मेरा दिल तोड़कर तुम कभी खुश नहीं रहोगी।" अपनी बात पूरी करते-करते वो धीरे-धीरे सुबकने लगा।

"मैंने तो पहले ही कहा था... वो तुम्हें धोखा देगी।" माया ने तेज आवाज में कहा और अपनी योजना के अनुसार चैतन्य ने बखूबी चौंकने का बेहतरीन नाटक किया। वो अपनी ऑ॑खों में डर भर कर उसकी ओर देखने लगा। फिर उसने तेजी से खड़े होकर उसके आसपास नज़र दौड़ाई। माया ने उसे ऐसे करते देखा.... तो उसने भी पलट कर अपने आसपास देखा
और फिर... उसकी घबराहट का कारण समझ में आते ही उसके चेहरे की मुस्कान चौड़ी हो गई। वो उसी मुस्कुराहट के साथ चैतन्य की ओर पलटी।

"घबराओ मत! कोई नहीं है मेरे साथ और मेरे होते हुए... कोई तुम्हें छू भी नहीं सकता।
बस तुम मेरी बात मान जाओ।" माया ने अपना पांसा फेंकते हुए कहा।

"कैसी बात?" चैतन्य ने उसके और अपने बीच की दूरी का पूरा ख्याल रखते हुए कहा।

"देखो मैं समझ सकती हूॅ॑ कि मोहब्बत के बदले बेवफाई किसी को भी हिलाकर रख सकती है... आखिर तुमने भी तो मेरे साथ वहीं किया।" माया ने अपने मन की बात बाहर निकालते हुए कहा।

"मैंने तुमसे कभी मोहब्बत ही नहीं की... तो बेवफाई करने का सवाल ही पैदा नहीं होता।" ना चाहते हुए भी चैतन्य की चिढ़ बाहर आने लगी थी।

"पर... मैंने तो कई है ना!" माया ने अपनी आवाज को नशीला बनाते हुए कहा।

"अच्छा! और मुझे ऐसा लगता है कि ऐसी मोहब्बत तुम्हें हर दूसरे-तीसरे दिन हो जाती है।
है ना!" इस बार चैतन्य ने अपनी कड़वाहट छिपाने की कोशिश नहीं की।

"कैसी बातें कर रहे हो? मैं तुमसे इतने प्यार से बातें कर रही हूॅ॑ और तुम मुझे अभी भी चोट पहुॅ॑चा रहे हो। ग़लत बात!" माया उसकी ओर आगे बढ़ते हुए बोली।

उसके अपनी ओर आगे बढ़ने से चैतन्य तुरंत सचेत हुआ और अपना
सीधा हाथ उसकी ओर उठाकर चिढ़ भरी आवाज में बोला, "रूको वहीं! आगे बढ़ना नहीं! तुम्हें क्या लगता है... जिस अनामिका से मैंने इतना प्यार किया... उससे मिले धोखे के बाद मैं ऐसे ही किसी पर यकीन कर लूंगा... ख़ासकर कि... तुमपे। कभी नहीं। कभी भी नहीं।"

"पर तुम्हारे पास मेरे अलावा और कोई रास्ता भी नहीं है।" माया ने अपने होंठों पर कुटिलता भरी मुस्कराहट चिपकाकर कहा।

"क्या मतलब?" माया की बात समझने की कोशिश में चैतन्य की ऑ॑खें सिकुड़ गई थीं।

"मतलब ये माई डियर चैतन्य.... अल्फ़ी के भागने की खबर फैल चुकी है और उसकी मददगार के रूप में अनामिका की भी। पर तुम्हारा नाम... अभी भी कहीं नहीं है। जानते हो क्यों?" माया ने उसे हालातों से रूबरू करवाते हुए कहा।

"क्यों?" एक स्वाभाविक सा सवाल चैतन्य के होठों से निकला।

"मेरी वजह से। अब प्यार है या कुछ और.... पर मेरा दिल... तुम पर आ गया है और इस दिल की वजह से ही तुम अभी तक बचे हुए हो। तो इस दिल को तकलीफ़ पहुॅ॑चाने की कोशिश मत करो।
तुम्हारे लिए ही अच्छा नहीं होगा।" इस बार माया के लहज़े में सख़्ती और चेतावनी दोनों ही मिले हुए थे।

"तुम मुझे धमकी दे रही हो। पर मैं तुम्हें बता दूं कि अब मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता।
मेरा दिल इतना चोटिल हो चुका है कि अब वो सिर्फ इसलिए धड़क रहा है क्योंकि उसे बदला चाहिए।" चैतन्य ने अपना अगला पांसा फेंकते हुए कहा।
"बदला!" माया की आवाज में हैरानी थी।

"हॉ॑ बदला! मैंने उस अल्फ़ी और अनामिका पर ऑ॑खें मूंदकर भरोसा किया और उन्होंने मेरे भरोसे का फायदा उठाया। फिर मुझे मुसीबत में फॅ॑साकर वो दोनों भाग गए। मुझे उस धोखे और बेवफाई का बदला चाहिए। चाहे इसके लिए मेरी जान ही क्यों ना चली जाए।" चैतन्य ने बहुत ही भड़की हुई आवाज में कहा।

"ओह! शांत! शांत! शांत माई डियर! तुम अभी भी मुसीबत में नहीं हो। बताया ना! अभी भी तुम्हारा नाम कहीं भी नहीं है और तुम चाहो तो कभी आएगा भी नहीं। और तो और... मैं बदला लेने में भी तुम्हारी मदद कर सकती हूॅ॑।" माया ने अपनी ऑ॑खों और आवाज में प्यार उड़ेलते हुए कहा।

"वो कैसे?" चैतन्य ने पूछा।

"मेरे लिए उन्हें पकड़ना कोई मुश्किल काम नहीं है। उन्हें पकड़वाकर ऐसी मौत दिलवाऊंगी कि मौत भी कॉ॑प उठेगी।" माया ने पूरी कड़वाहट के साथ कहा।

"खबरदार! उन्हें हाथ भी लगाया तो!" चैतन्य ने दॉ॑त पीसते हुए कहा, जिस पर माया ने उसे हैरानी से देखा।

"पर तुम तो बदला लेने की बात कर रहे थे। अब ये..." माया ने उसे तौलती नज़रों से देखते हुए कहा।

"हॉ॑! बदला चाहिए मुझे। पर ऐसे नहीं। मरने के बाद तो वे दोनों हर दर्द से आजाद हो जाऍ॑गे और मैं ऐसा नहीं चाहता।" चैतन्य ने अपनी बात संभालते हुए कहा।
"तो फिर क्या चाहते हो तुम?" माया ने पूछा।

"उस अल्फ़ी और सबको लगता है कि अनामिका उसकी मरी हुई बीवी का पुनर्जन्म है और उसने... अपनी छल भरी बातों से अनामिका को भी ये यकीन दिला दिया है। मुझे हैरत इस बात की है कि अनामिका उसकी बातों में आ भी गई। मुझे धोखा देकर अगर वो दोनों एक होने की कोशिश कर रहे हैं... तो मैं ऐसा कभी भी नहीं होने दूंगा। मैं उन दोनों को इस तरह अलग कर देना चाहता हूॅ॑ कि वो लाख चाहें... मगर कभी भी ना मिल सकें। वो उसी तरह तड़पते हुए जिंदा रहें... बिल्कुल किसी लाश की तरह... और यही मेरा बदला होगा।" चैतन्य अपनी आवाज में भरपूर ज़हर घोलकर बोला। अपनी बात कहते हुए वो गुस्से में कॉ॑पने भी लगा था... जो दरअसल उसके सामने खड़ी माया के लिए था क्योंकि उसी की वजह से ही वो अपनी अनामिका के लिए इतनी जहरीली बातें अपनी ज़बान पर ला रहा था।

"ओह गॉड! इतना गुस्सा! लगता है चोट बहुत ही गहरी है। कोई बात नहीं। तुम्हारी हर चोट का मरहम है मेरे पास। बस तुम्हारे हॉ॑ कहने की देर है।" माया ने भी उससे पूरी सहानुभूति जताते हुए कहा।

"और वो क्या है?" चैतन्य ने पूछा।

"तुम्हारी मोहब्बत.. और क्या?" माया ने एक बार फिर से जाल फेंकते हुए कहा।

"कहा ना! मोहब्बत का नाम नहीं लेना और तुम तो बिल्कुल भी नहीं। कोई समझौता हो सकता है तो बोलो। अपने मकसद को पाने के लिए मैं कोई भी समझौता करने को तैयार हूॅ॑।" चैतन्य एक बार फिर से बुरी तरह से चिढ़कर बोला।
"तुम तो सचमुच पत्थर दिल हो गए हो। कोई बात नहीं। हम इस पत्थर को भी तराशकर हीरा बना

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

कर उसने एक फैसला कर लिया।

"अगर तुम्हारी बात... मान लूॅ॑... तो अनामिका का पीछा छोड़ दोगी तुम और उसे वापस भेज दोगी।" कहते हुए चैतन्य हलक तक कड़वा हो गया था।

उसकी बात सुनकर माया ने बहकी हुई नजरों से उसे देखा और फिर उसके पास आकर उसके चेहरे पर अपनी उंगलियां फिराते हुए बोली, "जरूर! अगर तुम मुझसे मोहब्बत करने लगो... तो अनामिका की जिंदगी बक्श दूंगी मैं।"

उसके छूने से चैतन्य को ऐसा लगा जैसे कि उसके पूरे शरीर पर बरसाती कीड़े रेंग रहे हो। उसका जी मिचलाने लगा और फिर उसने बड़ी ही चिढ़ से उसके हाथ को पकड़ा और बोला, "मोहब्बत जिससे करनी थी.. मैंने कर ली। तुम तो बस समझौते की बात करो।"

"उफ्फ! इतनी मोहब्बत... कि तुम्हारी नफ़रत भी उस मोहब्बत में लिपटी हुई है। तुम तो शायद वापस भी ना जाना चाहो कि कहीं उसे तड़पता हुआ ना देख लो। है ना! ठीक है भई! चलो! हमसे मोहब्बत नहीं कर सकते... तो समझौता ही सही। आगे तो हम तुम्हें बेबस कर ही देंगे।" माया ने तंज़
कसते हुए कहा।

उसकी बातें सुनकर चैतन्य का पारा गर्म होने लगा था। बड़ी ही मुश्किल से खुद को संभालते हुए उसने कहा, "तुम बस अपने मकसद की चिंता करो। मुझे बस उन दोनों को अलग करना है और कुछ नहीं। उसके आगे अब तुम जो भी कहो। मेरे लिए भी मेरा मकसद बहुत जरूरी है।"

उसकी बात सुनकर माया ने एक गहरी साॅ॑स लेते हुए चैतन्य पर अपनी गहरी निगाहें टिकी। उसकी उन नज़रों से चैतन्य का रोम-रोम सुलग रहा था, मगर इतना आगे बढ़ने के बाद वो पीछे नहीं हट सकता था। माया का मकसद उसके लिए जितना जरूरी था.... चैतन्य के लिए भी उसका मकसद उतना ही मायने रखता था। बस इसीलिए उसने ईश्वर पर भरोसा रखकर माया के सामने हथियार डाल दिए क्योंकि वो चाहती क्या थी... ये उसके इस समझौते से और भी उलझ गया था।

"ये कौन सी जगह है?" अनामिका ने चारों ओर देखते हुए कहा।

"आओ देखते हैं। पर.... सावधान रहना!" अल्फ़ी ने चेतावनी भरे लहजे में कहा।

"हम्म!" अनामिका ने हुंकारी भरी और अल्फ़ी के साथ आगे बढ़ गई।

एक संकरे अंधकार भरे रास्ते के बाद वो एक खुली-खुली सी जगह थी, जिसके अधिकतर हिस्सों में भी अंधकार छाया हुआ था। छत की ओर कुछ सुराखें बनी हुई थीं, जिससे रोशनी की कुछ लकीरें यहॉ॑-वहॉ॑ बिखरी हुई थीं। उनकी मद्धम सी रोशनी में छत से लटकती पेड़ों की जड़ें साफ-साफ दिखाई दे रही थीं। सामने मेज की शक्ल में एक बड़ा सा आदमकद पत्थर रखा हुआ था। उसके कुछ आगे दो सीढ़ियॉ॑ दिखाई दे रही थीं, जिसके आगे का मंज़र अंधेरे में डूबा हुआ था। माहौल में एक अजीब सा सर्दपन घुला हुआ था। एक अजीब सी महक वहॉ॑ की फिज़ा में मिली हुई थी, जो बिल्कुल भी अच्छी नहीं लग रही थी। अपनी चौकस निगाहें चारों ओर रखे अल्फ़ी और अनामिका ने आगे कदम बढ़ाए। अनामिका आगे चल रही थी। चलते-चलते अचानक ही एक जगह अनामिका के कदम रखते ही वो तेज झटके से पीछे की ओर उछली थी। वो तो पीछे चल रहे अल्फ़ी ने उसे संभाल लिया, वरना इस तरह गिरने से जोरदार चोट लगना तय था।
"क्या हुआ?" अनामिका को संभाले हुए अल्फ़ी ने बहुत ही फिक्र से पूछा।

"मेरा पैर! ऐसा लगा कि पैर गर्म उबलते पानी पर पड़ गए हों।" अनामिका ने डबडबाई ऑ॑खों के साथ तकलीफ़ को छिपाने की नाकाम कोशिश करते हुए कहा।

"दिखाओ!" अल्फ़ी ने घुटनों के बल बैठकर उसके चोटिल पैर की ओर देखा, जो बुरी तरह से लाल हो गया था। अनामिका ने दर्द से अपना होंठ दॉ॑तों में दबा लिया था।

अल्फ़ी ने हाथ बढ़ाकर उसके उस पैर को छुआ तो अनामिका के मुॅ॑ह से सिसकारी सी निकल गई।
अल्फ़ी ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा। अनामिका ने अपनी ऑ॑खें भींचें चेहरा दूसरी ओर घुमा

रखा था और उसे इस तरह देखकर अल्फ़ी का दिल थाम सा गया। उसके ज़हन में माया से जुड़ी एक याद बरबस ऑ॑खों में पानी की शक्ल में उतर आई, जब उसके लिए नहाने का पानी गर्म करते समय एक जलती हुई लकड़ी माया के पैरों में गिर पड़ी थी और उसका पैर इसी तरह बुरी तरह से जल गया था। एक बार फिर से उसकी माया, अनामिका की शक्ल में उसके सामने आ गई थी। अल्फ़ी ने तुरंत ही अपना सिर झुकाया। वो जितना अपने मन को समझाने की कोशिश कर रहा था, नियति उतना ही अनामिका के जरिए उसकी यादों को ताजा कर रही थी। यादों का बोझ जब पलकों पर बढ़ा तो आंसू बगावत कर बाहर निकले और अनामिका के उस पैर पर गिर पड़े।

और फिर एक चमत्कार हुआ। वो ऑ॑सू अनामिका के उस पैर में फैलते हुए उसके ज़ख़्म को समेटने लगे और देखते ही देखते वो पैर पूरी तरह से ठीक हो गया। दर्द के उड़न-छू होते ही अनामिका ने झुककर अपने उस पैर की ओर देखा, जो अब पूरी तरह से ठीक हो चुका था। अल्फ़ी अपनी सुर्ख़ नज़रें अनामिका से छिपाते हुए खड़ा हुआ और दूसरी ओर देखने लगा।
अनामिका ने अपने पैरों में ठंडक महसूस की तो एकाएक ही अल्फ़ी की
ओर देखा और.... उसे सब समझ आ गया। वो दोनों ही बार-बार इस तरह की घटनाओं से रूबरू हो रहे थे... जो उन्हें हर बार असहज बना रही थी।

"थैंक्स!" अनामिका ने आभार जताया।

उसका धन्यवाद एक बार फिर से अल्फ़ी के दिल पर चोट की तरह लगा। उसने अपना सिर हिलाया और फिर आगे बढ़ गया। वो उस जगह को अपनी ऑ॑खें सिकोड़ कर ग़ौर से देखने लगा, जहॉ॑ पैर रखने के बाद अनामिका के पैरों का ऐसा हाल हुआ था और जो नज़र आया... उसने उसकी ऑ॑खों को हैरत से फैला दिया। अनामिका एक बार फिर से उसकी ओर आगे बढ़ी ही थी कि अल्फ़ी ने तेजी से उसकी ओर अपना हाथ उठाकर उसे आगे बढ़ने से रोका।

"क्या हुआ?" अनामिका ने भी उस जगह को घूरकर देखते हुए पूछा।

"यहॉ॑ सुरक्षा घेरा बना हुआ है।" अल्फ़ी ने कहा।

"कहॉ॑? मुझे तो नहीं दिख रहा।" अनामिका ने अपनी ऑ॑खों पर जोर डालकर उस जगह को देखते हुए कहा।

"शायद अग्नि घेरा है... इसलिए मुझे दिखाई दे गया।" अल्फ़ी ने खड़े होते हुए कहा और सामने फैले नीम अंधेरे में देखने लगा।

"तो फिर!" अनामिका ने पूछा।

"फिर क्या? तुम रूको! मैं देखता हूॅ॑!" अल्फ़ी ने जवाब दिया।

"अगर एडवर्ड यहॉ॑ पहुॅ॑च गया तो!" अनामिका ने चारों ओर देखते हुए आशंका जताई।
"फिलहाल तो नहीं! उसका ध्यान कहीं और ही होगा... अगर हमारे भागने की उसे खबर मिली होगी तो।" कहते हुए अल्फ़ी ने अनामिका पर ऊपर से नीचे तक एक गहरी नज़र डाली। उसकी बातों का मतलब समझकर अनामिका सिटपिटा कर रह गई। अल्फ़ी ने उस पर से अपनी नज़रें हटा लीं।

अल्फ़ी ने नज़रें झुकाकर उस सुरक्षा रेखा को देखा और फिर एक गहरी सॉ॑स लेकर उसने अपने पैर उसके अंदर रख दिए। उसके सुरक्षा घेरे के अंदर जाते ही माहौल में होती तब्दीली उन दोनों ने ही महसूस की।

"ये अहसास तो बिल्कुल वैसा ही है... जैसा मैंने उस पिशाच के खंजर वाले कमरे में महसूस किया था।" अनामिका ने अपने माथे पर उभरी बूंदों को छूते हुए हैरानी से कहा।

"क्या सच में? फिर तो ये वही है... जो मैंने सोचा है।" अल्फ़ी ने सामने सिमटते हुए अंधेरे को देखते हुए कहा।

कुछ देर पहले जहॉ॑... उस जगह की आबोहवा सर्द अहसास लिए हुए थी, वहीं अल्फ़ी के अंदर जाते ही माहौल में गर्माहट घुलने लगी थी और फिर धीरे-धीरे उनके चारों ओर लगी मशालों में अग्नि प्रज्वलित होने लगी। एकदम से ही वहॉ॑ का अंधकार रोशनी के हमले से दुम दबाकर भाग गया। अब वो दोनों ही वहॉ॑ की हर चीज साफ-साफ देख सकते थे। और फिर उन्होंने देखा

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

"[illegible]
"[illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

ऑ॑खें बंद की और फिर जल का आह्वान करते हुए नीचे बैठकर अपनी ऑ॑खें खोली। उसने उस नन्हें अश्रुकण को उस सुरक्षा घेरे से छुआया और अगले ही पल उस घेरे के अंदर की तपिश कम होती गई और वो कमरा दहकती रोशनी के बदले नीली रोशनी से भर गया।

अनामिका के होंठ फिर मुस्कुराए और फिर एक पल की भी देरी किए बिना वो तेजी से आगे बढ़ गई। अंदर जाकर उसने फुर्ती से चारों ओर छानबीन शुरू कर दी। उसे पता था कि ये ठंडक ज्यादा देर नहीं रहने वाली थी और उसकी किस्मत इतनी अच्छी थी कि उसे आखिरकार उस मूर्ति के सामने कुछ रखा दिखाई दिया। वो तेजी से उसके पास गई। वो एक किताब थी। वो उसे अच्छी तरह से देखती उससे पहले ही उसे पीछे से अल्फ़ी की तेज आवाज सुनाई दी।

"अनामिका! जल्दी करो। नीली रोशनी कम हो रही है।"
अनामिका ने झपटकर उस किताब को उठाया और फिर अपने कपड़ों को समेटकर पूरी ताकत से दौड़ी। उसने दौड़ते हुए पीछे देखा। नीली रोशनी को निगलते हुए एक बार फिर से आग की पीली रोशनी उसका पीछा कर रही थी। मगर वो भी अपने धुन की पक्की थी। उस पीली रोशनी से तेज दौड़ते हुए उस सुरक्षा घेरे से बाहर निकल आई।

घेरे से बाहर निकल कर वो तेजी से पीछे पलटी। सब कुछ पहले जैसा हो गया था। पर इस बार उनके हाथ कुछ लग गया था। उसने अपने सीने से हटाए उस किताब को अपने हाथों में रखा। तब तक अल्फ़ी भी उसके पास आ गया था। अनामिका के हाथों की किताब को देखते ही दोनों की ऑ॑खेन हैरानी से फैल गईं।

"ये तो सर विलियम की किताब है। उनके पास देखी थी मैंने।" अल्फ़ी ने उस किताब को छूते हुए कहा।

"और मैंने भी उस रात इसे देखा था। आज इसे उस स्टडी में बहुत ढूंढा, पर ये तो यहॉ॑ था।
खजाना हाथ लगा है हमारे।" अनामिका ने खुशगवार हैरानी के साथ कहा।

"क्या सच में?" अल्फ़ी ने कहा।

"अब चलो यहॉ॑ से। सुराग हासिल करने का समय आ गया है। यहॉ॑ रहना खतरनाक हो सकता है।" अनामिका ने कहा।

"हॉ॑! चलो!" कहते हुए अल्फ़ी वापस जाने के रास्ते की ओर मुड़ा।

"वहॉ॑ से नहीं! यहॉ॑ से!" कहते हुए अनामिका ने अपनी ऑ॑खों से कुछ मोती चुन लिए।
अल्फ़ी ने हैरानी से उनकी ओर देखा।
"खुशी के ऑ॑सू अनमोल होते हैं ना!" अनामिका ने मुस्कुराते हुए कहा। फिर एक तरफ जाकर दीवार पर उन ऑ॑सुओं को रगड़ दिया और कुछ ही देर में एक बार फिर एक छलद्वार उनके सामने था।

"आओ अल्फ़ी! चलें!" अनामिका ने अल्फ़ी की ओर अपना हाथ बढ़ाया, जिसे अल्फ़ी ने मुस्कुराते हुए थाम लिया। दोनों ही उस छलद्वार से सुरक्षित बाहर निकल गए।

जंगल के एक हिस्से में तेज रोशनी के साथ एक नीला घेरा सा बना और फिर उसमें से अनामिका और अल्फ़ी बाहर निकले। उनके बाहर निकलते ही वो घेरा सिमटने लगा और फिर गायब हो गया।
अनामिका ने अपने कपड़े झटके और अपनी हालत ठीक की। उसने मुड़कर अल्फ़ी की ओर देखा तो वो उस किताब को अपने सीने पर हाथों की कैद में रखे उसे ही एकटक देख रहा था।

"क्या हुआ? ऐसे क्या देख रहे हो?" अनामिका ने अपनी एक भौंह चढ़ाकर उसे देखते हुए पूछा।
"देख नहीं रहा हूॅ॑! सोच रहा हूॅ॑ कि तुम्हें.... ये जादुई दरवाजे बनाने कितने पसंद हैं? है ना!" अल्फ़ी ने अपनी भौंह को नचाते हुए कहा।

"नहीं! ऐसी बात नहीं है।" अनामिका ने उसकी बात काटी।

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible]

"क्या हुआ? चैतन्य है क्या?" अनामिका ने बेचैन होकर पूछा। जवाब में अल्फ़ी ने अपनी उसी हालत में सिर हिलाया।

"वो ठीक है?" अनामिका ने अल्फ़ी का हाथ पकड़ते हुए उतावलेपन से पूछा। इस बार अल्फ़ी ने पहले तो हॉ॑ में सिर हिलाया... और फिर तेजी से ना में सिर हिलाया... और फिर उसका सिर अजीब सी उलझन के साथ इधर-उधर हिलने लगा।

"ये क्या हॉ॑-नहीं.. हॉ॑-नहीं कर रहे हो। क्या है सामने, जिसे देखकर तुम्हारे चेहरे पर हवाईयॉ॑ उड़ रही हैं। हटो! मुझे देखने दो!" अनामिका ने बिगड़ते हुए अल्फ़ी को हटाने की कोशिश की।

"अनामिका! मेरी मानो तो... मत देखो तुम!" अल्फ़ी ने अफसोस और
इसरार भरी आवाज में कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने अजीब सी नज़रों से उसे देखा, जैसे कि वो ये समझना चाहती हो कि... वो कहना क्या चाहता है और जब कुछ समझ में नहीं आया, तो उसने गुस्से से उसकी कॉलर पकड़कर उसे पीछे खींचा और फुर्ती से उसकी जगह आ गई। इसके बाद उसकी गुनहगार ऑ॑खों ने जो देखा... वो उसके होश उड़ा ले गया। सामने चैतन्य और माया आमने-सामने थोड़े फासले में खड़े हुए बातें कर रहे थे। उन दोनों को वहॉ॑ देखकर अनामिका के अंदर कुछ सुलगा था।

"चैतन्य ने ये सही नहीं किया... तुमसे झूठ बोलकर। अगर उसे माया से मिलना ही था तो... तुम्हें बता देता। छिपाने की क्या जरूरत थी?" अनामिका के कंधे के ऊपर से झांकते हुए अल्फ़ी ने जाने किस नीयत से कहा, जो अनामिका के अंदर की अगन को और भड़का गया। अनामिका ने एक तेज नज़र उस पर डाली और फिर सामने की ओर देखते लगी।

"लग रहा... आज किसी की मौत आई है।" अनामिका ने लावे की तरह तपते हुए कहा। गुस्से में उसके जबड़े और मुट्ठियॉ॑ भिंच गए थे और उसने बड़ी मुश्किल से खुद को काबू में करके रखा हुआ था। उसके ऐसे तेवर देखकर अल्फ़ी बुरी तरह से सकते में आया था। वो उससे थोड़ी दूरी बनाकर खड़ा हुआ और सहमी हुई नज़रों से चैतन्य की ओर देखते हुए दुआ करने लगा कि माया जल्द से जल्द वहॉ॑ से चली जाए। मगर अगले ही पल उसे अपनी दुआऍ॑ ज़ाया होती नज़र आईं, जब उसने माया को चैतन्य के करीब जाते देखा... और तो और... चैतन्य भी उसकी नजदीकी पर कोई ऐतराज दिखाता नज़र नहीं आया। अल्फ़ी ने ख़ौफ से अनामिका की ओर देखा... जिसकी नज़रें अब और भी पैनी हो चुकी थीं। वो बस अपने बर्दाश्त की आखिरी सीमा पर ही खड़ी थी और उसके खत्म होने के इंतजार में ही थी। और अगला पल वही था... जब माया, चैतन्य के बिल्कुल करीब आकर उसके चेहरे पर अपनी उंगलियाॅ॑ फिराने लगी।
अनामिका ने बारी-बारी से अपनी दोनों कलाईयॉ॑ मसलीं और तेजी से उस ओर झपटी। मगर अल्फ़ी उससे ज्यादा तेज निकला और उसने तेजी से अनामिका को कमर से पकड़कर पीछे खींच लिया।
अनामिका उसकी पकड़ से निकलने के लिए बुरी तरह से छटपटाने लगी।

"अनामिका! होश में आओ! क्या कर रही हो?" अल्फ़ी ने उसे डपटते हुए कहा।

"छोड़ो मुझे! परेशान करके रख दिया है इस कलमुॅ॑ही ने। आज इसका पूरा इंतजाम कर ही दिया जाए। आधा मामला अभी के अभी सुलझ जाएगा।" अनामिका तैश में आते हुए बोली।

"पागल हो गई हो! तुम्हें क्या लगता है? वो ऐसे ही यहॉ॑ बिना सुरक्षा के आई होगी। बहुत चालाक है वो। हो सकता है कि वो सब चैतन्य के सहारे हम दोनों को पकड़ना चाहते हों। अगर ऐसा हो गया तो मुसीबत और बढ़ जाएगी। तुम शांत रहो। पहले चैतन्य से बात कर लें... फिर देखते हैं कि करना क्या है?" अल्फ़ी ने उसे समझाते हुए कहा।

अनामिका ने गहरी साॅ॑से लेते हुए उसकी ओर देखा और फिर खुद को किसी तरह से शांत किया। अल्फ़ी ने झील की ओर देखा तो... माया जा चुकी थी और चैतन्य किसी गहरी सोच में डूबा हुआ था।

"चैतन्य को बुलाओ।" अल्फ़ी ने कहा। उसकी बात सुनते ही अनामिका ने अपनी ऑ॑खें बंद की और एक बार फिर से वो चैतन्य के मस्तिष्क से जुड़ गई।

"चैतन्य! कहॉ॑ हो तुम?"

"मैं! यहॉ॑ झील के किनारे।" चैतन्य ने जवाब दिया।
"वहॉ॑ क्या कर रहे हो?" अनामिका ने पूछा।

"काम था एक जरूरी। तुम कहॉ॑ हो? ठीक हो ना तुम?" चैतन्य ने फ़िक्र दिखाते हुए कहा।

"तुम जंगल की ओर आओ।" अनामिका ने उसके सवाल को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा।

"क्या हो गया?" चैतन्य की फिक्र और बढ़ी।

"तुम आओ तो!" कहकर अनामिका ने संपर्क तोड़ दिया।

अनामिका के ऐसे अजीब से व्यवहार से चैतन्य घबरा गया। उसे उसकी फिक्र हो आई कि कहीं वो किसी मुसीबत में तो नहीं पड़ गई और ये सोचते ही वो तेजी से जंगल की ओर भागा। वो थोड़ा अंदर आया ही था कि किसी ने उसके हाथ को पकड़कर उसे रूकने पर मजबूर कर दिया। चैतन्य ने उस ओर देखा तो अल्फ़ी उसकी कलाई थामे खड़ा हुआ था।

"अल्फ़ी! तुम! यहॉ॑ क्या कर रहे हो?" उसे सामने पाकर चैतन्य ने हैरानी से सवाल किया।

"इसका जवाब तो तुम दो कि तुम यहॉ॑ क्या कर रहे थे... उस माया के साथ?" अल्फ़ी ने साफगोई से सवाल किया।

"माया! मतलब कि... तुमने हम दोनों को देखा?" चैतन्य ने थोड़ी घबराहट के साथ कहा।

"हॉ॑! सब देखा... और मैंने ही नहीं... हम दोनों ने ही देखा।" कहते हुए
अल्फ़ी ने अपने पीछे की ओर मुड़कर देखा। चैतन्य की नज़रों ने भी उनका पीछा किया और अगले ही पल वो सदमे में आ गया। अनामिका सामने खड़ी थी। उसकी सुर्ख़ लाल रंग ओढ़े ऑ॑खों की नमी दूर से ही दिख रही थी।

"अना... मिका! मैं... मैं समझा सकता हूॅ॑। लेट मी एक्सप्लेन!" चैतन्य ने बड़ी ही मुश्किल से कहा।

मगर वो आगे कुछ कह पाता... उससे पहले ही अनामिका उसके पास आई और फिर उसकी कलाई पकड़ उसे अपने साथ गहरे जंगल में खींचकर ले गई। एक बार फिर से अल्फ़ी तेजी से उनके पीछे गया था।

चैतन्य लगातार उससे बातें करने और समझाने की कोशिश कर रहा था, पर अनामिका ने ऑ॑खें दिखाकर उसका मुॅ॑ह बंद करवा दिया था। वो बस उसे अपने साथ खींचे लिए जा रही थी और फिर एक जगह जाकर वो रूक गई। उसने चैतन्य की कलाई छोड़ी और उसकी ओर मुड़कर उसे भरी हुई ऑ॑खों से देखने लगी। उसकी उन ऑ॑खों को देखकर चैतन्य का दिल बैठने लगा। अल्फ़ी भी कुछ दूरी पर खड़ा उन दोनों को देख रहा था।

"अनामिका! प्लीज़ मेरी बात सुनो! मैंने कुछ ग़लत नहीं...." और उसकी आगे की बातें उसके हलक में ही ठहर गई, जब अनामिका आगे बढ़कर उससे जा लगी। हमेशा की तरह एक बार फिर उसने चैतन्य को चौंका दिया था। और अल्फ़ी... जो खुद किसी हंगामे की आशंका से सहमा हुआ था... उसे भी हैरत का एक तेज झटका लगा था। चैतन्य ने हिम्मत करके अनामिका के गिर्द अपनी बांहें डाली थीं।

"अनु!"

"उसने फिर तुम्हें परेशान किया। लगता है कि पिछली बार की मार वो भूल
गई। अगर अल्फ़ी ने मुझे नहीं रोका होता... तो आज यही॑ उसे जान से मार देती मैं। उसकी हिम्मत कैसे हुई तुम्हें छूने की।" अनामिका ज़ज्बातों की शिद्दत के साथ अपने दिल की बात बोलती चली गई और उस शिद्दत को महसूस कर चैतन्य के बेचैन दिल पर राहत की फुहारें पड़ी थीं। उसके होंठ अनायास ही मुस्कुराए और अनामिका के गिर्द उसकी बाहों का घेरा थोड़ा और मजबूत हुआ था।

"तुम... तुम नाराज़ नहीं हो मुझसे?" चैतन्य ने अपने मन की आशंका को दूर करने की मंशा

से पूछा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने सिर उठाकर उसकी ओर देखा और उसकी ऑ॑खों में देखते हुए बोली, "तुमसे क्यों नाराज़ होऊंगी मैं?"

"मुझे लगा कि... माया और मुझे साथ देखकर तुम नाराज़ होगी मुझसे!" चैतन्य ने अपने मन का डर जाहिर करते हुए कहा।

"नाराज़ थी! पर तुमसे नहीं... उस माया से। तुम पर तो खुद से ज्यादा भरोसा है मुझे। पर वो माया... अब हद से आगे बढ़ने लगी है। चैतन्य! चलो यहॉ॑ से! किसी भी तरीके से... बस चलो!" अनामिका ने भावुक होकर उससे लिपटते हुए कहा।

चैतन्य ने उसके सिर पर अपना चेहरा टिकाया और उम्मीद भरी आवाज में बोला, "जल्दी ही!"

"वैसे... तुम तो तांत्रिक श्रेष्ठ से मिलने गए थे ना! फिर यहॉ॑ वापस कैसे लौट आए?" अनामिका ने उससे अलग होते हुए सवाल किया।

उसका सवाल सुनकर चैतन्य ने एक नज़र उस पर और फिर अल्फ़ी पर डाली। इसके बाद उसने तांत्रिक श्रेष्ठ से अपनी मुलाकात और फिर उन
दोनों के बीच हुई एक-एक बात अनामिका और अल्फ़ी को बता दी।

"तो इसीलिए तुम उस माया को बर्दाश्त कर रहे थे?" अल्फ़ी ने पूछा।

"और नहीं तो क्या?" चैतन्य ने कहा।

"ऐसी बात थी तो... तुम अनामिका को पहले ही सब बता देते। कम से कम मेरी हालत तो इतनी नहीं बिगड़ती।" अपनी ने शिक़ायती लहज़े में कहा। उन दोनों की नजदीकियॉ॑ हमेशा ही अल्फ़ी के दिल को चोट पहुॅ॑चा जाती थी।

"मैंने भी सोचा था बताने के लिए, पर फिर ये सोचकर नहीं बताया कि कहीं अनामिका गुस्से में बाहर ना आ जाए और फिर कुछ गड़बड़ ना हो जाए... जो बाद में हमें महंगी पड़े। वैसे अच्छा ही हुआ कि मैंने अनामिका को नहीं बताया। कम से कम आज इतना तो पता चला कि मोहब्बत में यकीन कमाया है मैंने।" अनामिका को अपने करीब कर उसे प्यार से देखते हुए चैतन्य ने कहा, जिस पर अनामिका ने भी मुस्कुराकर उसका साथ दिया। अल्फ़ी ने एक-एक नज़र उन दोनों पर डाली और फिर दर्द के एक अहसास के साथ नज़रें फेर गया।

"वैसे तुम दोनों यहॉ॑ क्या कर रहे हो? तुम्हें छिपकर रहने के लिए कहा था ना!" चैतन्य ने दोनों को नाराज़गी से देखते हुए कहा।

"क्योंकि अब छिपने का समय नहीं रह गया। हमें कुछ पता चला है और कुछ मिला भी है।" अनामिका ने जानकारी देते हुए कहा।

"और वो क्या है?" चैतन्य ने पूछा।

"ये!" कहते हुए अल्फ़ी उसके पास आया और अपने हाथ में पकड़ी हुई
किताब उसे दिखाई। इसके बाद अल्फ़ी और अनामिका ने उस किताब के मिलने की पूरी कहानी उसे बताई। चैतन्य ने उस किताब को अपने हाथों में लिया और फिर उसे ग़ौर से देखने लगा।

"क्या ये वही किताब है, जिसके बारे में तुमने बताया था?" चैतन्य ने अनामिका की ओर देखकर पूछा।

"हॉ॑!" अनामिका बोली।

"हम्म! तांत्रिक श्रेष्ठ को ये बात बतानी पड़ेगी। रूको जरा!" कहते हुए चैतन्य ने अपनी ऑ॑खें बंद की और फिर धीरे-धीरे उसके चेहरे पर तनाव उतरता गया। कुछ देर संपर्क जोड़ने की नाकाम कोशिश के बाद उसने झटके से ऑ॑खें खोल दीं।

"क्या हुआ?" अनामिका ने फिक्र से पूछा।

"पता नहीं! तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा था कि मैं कभी भी उनसे संपर्क कर सकता हूॅ॑। पर वो संपर्क जोड़ नहीं रहे हैं।" चैतन्य ने थोड़ी परेशानी से कहा।

"हो सकता है कि बिजी हों। वैसे... तुमसे मिलने के बाद वो गए कहॉ॑ थे?" अनामिका ने पूछा।

"अहेरी सभा गए थे वो। वहीं से तो उन्होंने उस माया को यहॉ॑ भेजा था। वो कह रहे थे कि डायनों की वजह से ही सुरमी कबीला यहॉ॑ गुस्से में आया हुआ है। कोई बहुत बड़ी बात हुई है। इसीलिए तो उन्होंने अनामिका को छिपकर रहने के लिए कहा था।" चैतन्य ने उन दोनों को समस्या से रूबरू करवाते हुए कहा।
"हुआ क्या है? बताया नहीं।" अल्फ़ी ने कौतूहल से पूछा।

"नहीं! उस समय उन्हें भी पता नहीं था।" चैतन्य ने अनभिज्ञता जताई।

"इस माया ने ही कुछ किया होगा। और कौन हो सकता है?" अनामिका ने चिढ़कर कहा।

अभी चैतन्य ने हुंकारी भरी ही थी कि तभी उसने तांत्रिक श्रेष्ठ के संपर्क को महसूस किया। उसने अनामिका और अल्फ़ी को शांत रहने का इशारा किया और फिर संपर्क जोड़ दिया।

"चैतन्य! अल्फ़ी और तुम्हारी दोस्त कहॉ॑ हैं?" सामने से तांत्रिक श्रेष्ठ की घबराई हुई आवाज आई।

"वो दोनों मेरे साथ ही हैं।" चैतन्य ने कहा।

"चैतन्य! बहुत बड़ी समस्या हो गई है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बहुत ही गंभीर लहज़े में कहा।

"समस्या! कैसी समस्या?" चैतन्य के कान खड़े हुए।

"देखो! ये बात अल्फ़ी को अभी बिल्कुल भी पता नहीं चलनी चाहिए। तुम मन में बातें करना।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे हैरान करते हुए कहा।

"ऐसी क्या बात हो गई?" उनकी बात मानते हुए चैतन्य ने मन में पूछा।

"आज से चार रात पहले... सुरम्या देवी.... जो कि सुरमी कबीले की आराध्या और जंगलों की देवी है... उनका मंदिर पूरी तरह से नष्ट हो गया। दो दिनों के बाद कबीले वालों को पता चला कि किसी डायन-शक्ति ने ये
ज़ुर्रत की है। वो सब बहुत गुस्से में हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"माया! और कौन कर सकता है?" चैतन्य ने गहरी साॅ॑स छोड़ते हुए कहा।

"है तो वही, पर... एडवर्ड ने सारा इल्ज़ाम हेममाया पर डाल दिया है और अब वो सुरमी कबीले को उसका शरीर सौंपने वाला है, जिसे वो सजा के तौर पर सबके सामने जलाने वाले हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य को समस्या बताते हुए कहा।

"क्या?" चैतन्य बुरी तरह चौंककर बोला।

"अल्फ़ी से कहो... तांत्रिक श्रेष्ठ से मुलाकात करनी है। वो तुम्हें मेरे पास ले आएगा। उसके सामने सामान्य रहने की कोशिश करना। पता नहीं उस बच्चे की किस्मत में कितने दर्द लिखे हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने भरे हुए गले से कहा।

चैतन्य ने संपर्क तोड़ा और अल्फ़ी की ओर बिना देखे कहा, "तांत्रिक श्रेष्ठ ने मिलने के लिए बुलाया है।"

"हम्म! चलो!" कहते हुए अल्फ़ी एक ओर बढ़ गया।

चैतन्य ने नज़र उठाकर अल्फ़ी की पीठ को देखा। उसकी तकलीफ़ों के बारे में सोचकर चैतन्य

का दिल भर आया था। आखिर कोई इतना बदनसीब कैसे हो सकता था? उसे तो पता भी नहीं था कि इल्ज़ाम तराशी का एक और खंज़र उसकी पीठ में घोंपा जा चुका था, जिसका दर्द सहन करना शायद अब उसके लिए मुमकिन नहीं था और ये दर्द आने वाली दो सदियों को खुद में समेटने वाला था।
अल्फ़ी के पीछे-पीछे चलते हुए चैतन्य और अनामिका जंगल के एक छोर पर स्थित पहाड़ी की तलहटी में पहुॅ॑च गए। पूरे रास्ते चैतन्य ने कुछ भी नहीं कहा। अनामिका ने अल्फ़ी पर टिकी उसकी परेशान नज़रों को देखा.. तो इशारे से सवाल भी किया, जिसे चैतन्य ने सिर हिलाकर टाल दिया। अनामिका ने भी ज्यादा कुरेदना सही नहीं समझा और अल्फ़ी... उसे तो इस समय बस तांत्रिक श्रेष्ठ के आदेश की सबसे पहली परवाह थी। वो भी उन दोनों के लिए रास्ता बनाता हुआ चुपचाप आगे बढ़ता गया और आखिरकार वो सभी अपने गंतव्य तक पहुॅ॑च गए।

"हम इस खुली जगह में क्यों आए हैं? तुम्हें नहीं लगता कि हम सब पकड़ में आ जाऍ॑गे।" चैतन्य में चारों ओर आशंका का भरी निगाहें घुमाते हुए कहा।

"नहीं! ये हमारे लिए सबसे सुरक्षित जगह है। किसी ने देख भी लिया हो... तब भी।" अल्फ़ी ने उसकी आशंका को दूर करते हुए कहा।

"तो हम पहले यहॉ॑ क्यों नहीं आए?" अनामिका ने पूछा।

"क्योंकि उस समय तांत्रिक श्रेष्ठ ने हमें आमंत्रित नहीं किया था। ये उनकी जगह है।
पूरी तरह से उनकी। कोई भी उनकी इजाजत के बिना अंदर नहीं जा सकता। इसीलिए तो ये सुरक्षित है।" अल्फ़ी ने जवाब देते हुए कहा और आगे बढ़ गया। चैतन्य और अनामिका भी साथ हो लिए।

तलहटी पर पड़े पत्थरों को पार करते हुए वो तीनों थोड़ी ऊॅ॑चाई पर बनी एक गुफा तक पहुॅ॑च गए। अल्फ़ी बिना रूके उस गुफा के अंदर चला
गया। अंदर वो एक सामान्य सी गुफा थी, जिसमें थोड़ा अंदर जाने पर उन तीनों ने एक पत्थर पर ध्यान लगाए हुए तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ जी को देखा। उनके चेहरे में लाचारी और पीड़ा दिखाई दे रही थी। एक-दूसरे पर एक-एक नज़र डालकर वो तीनों उनके ऑ॑खें खोलने का इंतजार करते हुए चुपचाप खड़े हो गए। कुछ ही देर में तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपनी ऑ॑खें खोली... तो उन तीनों को अपने सामने पाया। उनकी कॉ॑पती नज़रें चैतन्य के रंग उड़े चेहरे पर दो पल को रूकी और फिर खिसककर अनामिका तक पहुॅ॑ची। उन्होंने उसे परखती नज़रों से देखा और फिर जब उनकी नज़रें अल्फ़ी की ओर घूमी... तो झटके से ही उन्होंने वो नज़रें चैतन्य की ओर घुमा ली। वो अपने अंदर इतनी हिम्मत नहीं जोड़ पा रहे थे कि अल्फ़ी को वो दिल दहलाने वाली खबर दे सकें।

अल्फ़ी ने तांत्रिक श्रेष्ठ और चैतन्य पर अपनी सवालिया नज़रें डाली... मगर जवाब उससे कोसों दूर था। अनामिका भी उसी की तरह सवालों के घेरे में बेचैन खड़ी थी।

"चैतन्य! माया से बात हुई। आखिर चाहती क्या है वो?" असहजता को परे हटाते हुए तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य से पूछा।

"उसे मुझसे एक संतान चाहिए।" चैतन्य ने बहुत ही चिढ़ के साथ कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका ने भी गुस्से से अपने होंठ भींचे थे।

"संतान! अब कौन सा खेल शुरू किया है उस डायन ने? तुमने क्या कहा?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य से पूछा।

"पता नहीं! पर... मैंने सोचकर बताने की बात कही है।" चैतन्य ने कहा।

"उसे शक नहीं हुआ।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने पूछा।
"नहीं! वो मुझे हमेशा से ही इस बात के लिए उकसाया करती थी... कि अनामिका और अल्फ़ी मुझे धोखा दे रहे हैं। मैंने उसी की कही बातें उसे ही लौटा दी। मुझे पता था कि उसका प्रस्ताव तुरंत मानने से वो शक कर सकती थी... इसलिए मैंने सोचने का वक्त मांगा।" चैतन्य ने कहा।

"और फिर?" तांत्रिक श्रेष्ठ के सवाल जारी थे।

"उसकी दोस्त आ गईं। कुछ परेशान लग रही थीं वो दोनों। माया ने मुझे अपने जवाब के साथ रात के पहले पहर में वहीं... झील के किनारे मिलने के लिए कहा है।" चैतन्य ने पूरी बात बताई।

"अब ये क्या चल रहा है? हमें पता है कि वो नर्क का द्वार खोलना चाहती है। उसके बीच में ये सब क्या है? क्या-क्या सोच रखा है आखिर इन दोनों ने?" अनामिका भड़कते हुए बोली।

"पता नहीं! पर जो मेरी समझ में आ रहा है.... शायद वो पिशाचिनी की शक्तियॉ॑ हासिल करने के बाद.... बलि देने की इच्छुक हो।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपनी ऑ॑खें फैलाते हुए एक हृदयविदारक बात कही।

"आपका मतलब है कि वो अपनी ही संतान की बलि..." अल्फ़ी ने सिहरते हुए बात अधूरी छोड़ी।

"तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपना सिर हिलाते हुए उन सभी की ओर देखा और बोले, "ये पिशाच साधना इसीलिए तो इतनी कष्टकर है। कोई कितना भी बुरा हो... या फिर क्रूर ही क्यों ना हो... दो चीजों से जरूर प्यार करता है। एक खुद से और एक अपनी संतान से और पिशाच साधना पूर्ण होने के लिए इन्हीं में से एक या फिर ऐसी ही करीबी रक्तसंबंधी बलि चाहती है। माया के लिए वो खुद या फिर अपनी संतान ही हो सकती है। वो उस काली शक्ति को बाहर निकालना नहीं चाहती... वो खुद पिशाचिनी बनना चाहती
है, इसलिए उसने तुमसे ये बेतुकी मांग रखी होगी।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य पर नज़र डालते हुए कहा।

और ये सुनते ही चैतन्य का पारा गर्म होकर सातवें आसमान पर पहुॅ॑च गया। गुस्से में उसके नथुने फड़कने लगे। वो मुट्ठियॉ॑ भींचकर एक-एक शब्द को चबाते हुए बोला, " उस माया की इतनी हिम्मत! उसने मेरे बच्चे के बारे में ऐसी घिनौनी सोच अपने दिल और दिमाग में रखी। उसे क्या लगता है कि वो मेरे बच्चे के साथ ऐसा कुछ करना चाहेगी और मैं करने दूंगा... कभी नहीं! कभी भी नहीं। ऑ॑खें ना नोंच लूं मैं उसकी!"

और..... गुस्से की पूरी रवानगी में अपने होंठों से ये सारे शब्द अदा करने के तुरंत बाद ही उसे अहसास हुआ कि रौ ही रौ में वो क्या बोल बैठा था। उसने खाली हो चुकी ज़बान और खुले हुए मुॅ॑ह के साथ पहले तांत्रिक श्रेष्ठ और फिर अल्फ़ी की ओर देखा। अनामिका की ओर देखने की उसकी हिम्मत नहीं थी। वो जानता था कि वो अपने चेहरे की हर नस को तानकर उसे घूर रही होगी। अल्फ़ी ने उस पर एक अफसोस भरी नज़र डाली और फिर चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया।

"अ... मेरा मतलब... उस माया की सोच के बारे में था.... और कुछ नहीं।" चैतन्य ने बात संभालने की कोशिश करते हुए कहा और फिर अनामिका की ओर अपनी कातर नज़रें घुमाई। उसके अंदाजे के अनुसार ही वो उसे दॉ॑त पीसते हुए घूर रही थी। चैतन्य ने एक झेंपी हुई फौरी मुस्कान अनामिका की तरफ भेजी, जिसे उसने अपना सिर झटककर पूरी बेदर्दी से नामंजूर किया था। अपनी इस बेहूदा गलती पर चैतन्य ने मन ही मन खुद को लताड़ा था।

"वो छाया है छाया... ! अपना मकसद पूरा करने के लिए वो कुछ भी कर सकती है। वो जरूर आज उस काली शक्ति को आजाद करेगी। सैकड़ों साल से कैद उस शक्ति की तीव्रता का तुम अनुमान भी नहीं लगा सकते।
उसे बाहर निकालने के बाद माया को पहले उसे नियंत्रित करने की जरूरत पड़ेगी और अंत में एक बलि के साथ वो शक्ति सिद्ध हो जाएगी। उसने बहुत सोच-समझकर ये सब योजना बनाई है।" चैतन्य की हालत से बेखबर तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"तो फिर उसे आज ही रोकना होगा।" अल्फ़ी ने कहा।

"सिर्फ उसे ही नहीं... एडवर्ड को भी। उन दोनों में से कोई भी कामयाब नही होना चाहिए। पर समस्या ये है कि माया के बारे में हमें बहुत कुछ पता चल चुका है। मगर... एडवर्ड की तरफ से अभी भी हमारे हाथ खाली ही हैं। वो सिद्धि के लिए बलि किसकी देने वाला है? उसके परिवार में तो बस वो और विलियम ही थे। जिसकी बलि वो देने वाला है... अगर ये हमें पता चल जाए... तो हम एडवर्ड को रोक सकते हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक और समस्या सामने रखते हुए कहा।

"शायद... वो... अल्फ़ी है।" अनामिका ने अल्फ़ी की ओर नज़र डालते हुए कहा।

और ये सुनकर अल्फ़ी और तांत्रिक श्रेष्ठ दोनों ही चौंके थे क्योंकि ना तो तांत्रिक श्रेष्ठ को अल्फ़ी की पूरी असलियत पता थी और ना ही अल्फी के वहमोगुमान में ये था कि उसकी पहचान उसके अलावा कोई और भी जानता था।

"अल्फ़ी.... सर विलियम का बेटा है और एडवर्ड ये जानता है।" चैतन्य ने दोनों के मन में उठे सवालों का जवाब देते हुए कहा।

"क्या सच में?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अल्फ़ी की ओर देखते हुए बेयकीनी से कहा।
"जी! सर विलियम और मेरी बात हुई थी इस बारे में। शायद एडवर्ड की नज़र बहुत पहले से थी अल्फ़ी पर। अल्फ़ी और हेममाया की सारी तकलीफों की वजह एक ही है और वो है नफ़रत! जो एडवर्ड और माया इन दोनों से करते हैं... वो भी इनके पिताओं की वजह से। और इसीलिए उन दोनों ने तमाम मतभेदों के बाद भी हाथ मिला लिए हैं। ऐसा मेरा मानना है। माया कभी भी सर्वशक्तिमंडल की सदस्य नहीं चुनी गई थी। वो तो हेममाया थी। जरूर अपनी मदद के बदले में एडवर्ड ने माया को सर्वशक्तिमंडल का पद ऑफर किया होगा। एक ही रास्ते पर चलकर उन दोनों के ही मतलब पूरे हो रहे थे, चाहे वो दोनों एक-दूसरे से कितना भी क्यों ना चिढ़ें।" चैतन्य ने बात स्पष्ट करते हुए कहा।

"ओह! और क्या... तुम ये बात जानते थे अल्फ़ी कि विलियम तुम्हारे पिता हैं?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अल्फ़ी को सवालों भरी नज़र से देखते हुए पूछा।

"जी! एक साल पहले ही सब पता चला था मुझे... जब हेममाया और मेरी शादी में इस वजह से अड़चनें आ रही थीं, तब मॉ॑ ने बताया था।" अल्फ़ी ने हामी भरते हुए कहा।

"और विलियम को कब पता चला?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य और अल्फ़ी दोनों की ओर देखते हुए पूछा।

"कल सुबह! मैंने उन्हें बताया था क्योंकि मुझे एडवर्ड की नीयत पर शक हो गया था। जब उन्होंने मुझे पिशाच-साधना और पिशाच के खंजर के बारे में सब बताया। तब मुझे लगा कि अल्फ़ी की जान को ख़तरा है, इसलिए मैंने उन्हें सब बता दिया(भाग- 78)।" चैतन्य ने एक आह भरकर कहा।

"इसलिए उसने ये सब किया! आश्चर्य की बात है कि वो हम सबकी नाक के नीचे ये सब करता रहा और हमें खबर ही नहीं हुई। वो शुरू से ही
बद्दिमाग था.... उस पर उसके मामा पीटर की संगति ने उसे और बिगाड़ दिया। मुझे पूरा यकीन है कि उस पीटर ने ही उसे इस में ढकेला है। समझ नहीं आता कि कहॉ॑ से ढूंढे वो ठिकाना, जहॉ॑ एडवर्ड ये सब करता है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने थोड़ी झल्लाहट के साथ कहा।

उनकी बात सुनकर अल्फ़ी और अनामिका ने एक-दूसरे की ओर देखा और फिर अनामिका के इशारे पर अल्फ़ी उस किताब के साथ तांत्रिक श्रेष्ठ के पास बढ़ गया।

"मुझे लग रहा है कि हमारी किस्मत हमारा साथ देने लगी है।" ये कहकर अल्फ़ी ने वो किताब तांत्रिक श्रेष्ठ की ओर बढ़ाई और फिर उसके मिलने की पूरी कहानी सुना दी। तांत्रिक श्रेष्ठ ने उस किताब को हैरानी से उलट-पुलट कर देखा और फिर दिमाग पर जोर डालकर कुछ याद करने लगे। कुछ देर की कोशिश के बाद उन्हें जो भी याद आया, उसने उन्हें उस किताब को कौतूहल से देखने पर मजबूर कर दिया था।

"ये तो भविष्य कथन है। ये वहॉ॑ क्या कर रहा था? आज से करीब 15 साल पहले ये खो गया था। खोने से पहले ही इसने धीरे-धीरे बदलने वाले हालातों और फिर वायु रक्षक के आने की भविष्यवाणी की थी। आगे हम कुछ और पता कर पाते... उससे पहले ही ये खो गया और अब तुम कह रहे हो कि ये तुम्हें एडवर्ड की खुफिया जगह में मिला। इसका मतलब है कि... एडवर्ड इस किताब की मदद ले रहा था। इसलिए उसे सब पहले से पता होता था।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उस किताब को हैरानी से देखते हुए कहा।

"तो फिर अब ये गड़बड़ कैसे हो गई? मतलब कि उसे मेरे और अनामिका के बारे में पता क्यों नहीं चला? मुझे पूरा यकीन है कि वो हमारे बारे में सही तरीके से नहीं जानता था, इसलिए तो हम इतना सबकुछ जान सके... खोज सके।" चैतन्य ने आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहा।

"पर ये किताब तो मैंने चार दिन पहले सर विलियम को दी थी। ये मुझे एक गलियारे में मिली थी। उनसे पूछा तो उन्होंने इसे बिना देखे ही अपने स्टडी में रखने के लिए कहा था।" अल्फ़ी ने एक और खुलासा करते हुए कहा।

"हॉ॑! मैंने कहा था ना कि ये किताब मैंने मेंशन की पार्टी वाली रात स्टडी में देखी थी। पर आज सुबह वहॉ॑ नहीं मिली। शायद मेरे देखने के बाद ही एडवर्ड ने वहॉ॑ से उठाई होगी और शायद इसीलिए वो सुबह रिसती गुफा तक पहुॅ॑चा होगा, जब मैं वहॉ॑ खंज़र लेने गई थी। उसी समय ये किताब उस खुफिया जगह में छूट गई होगी और अब हमारे पास है।" अनामिका ने कहा।

"इसका तो ये भी मतलब हो सकता है कि उसे कई चीजें पता नहीं होंगी और हम उसका फायदा उठा सकते हैं। ये किताब हमारे बहुत काम आ सकती है। वैसे वो खंज़र अभी है कहॉ॑?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक राह खोलते हुए अनामिका से पूछा।।

"वो स्टडी में है। मैंने उस पर वो काला धागा बांध दिया है, जिसे आपने उस चाबी में बांधा था। अब वो किसी को दिखाई नहीं दे रहा है।" अनामिका ने कहा।

"ठीक है! उसे तो मैं ले आऊंगा। अच्छी बात है कि वो एडवर्ड की पहुॅ॑च से दूर है। अब बस हमें माया और एडवर्ड को मिलने या फिर किसी भी तरीके से संपर्क करने नहीं देना है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने राहत महसूस करते हुए कहा।

"फिक्र ना करें! उस माया को उलझाने के लिए चैतन्य है ना! आखिर उसे अपने बच्चों की इतनी फिक्र जो है। वो उन्हें कुछ थोड़ी ना होने देगा।" अनामिका ने तंज़ का पैना तीर चैतन्य की ओर छोड़ते हुए कहा, जो
जाकर सीधा उसके दिल में घुसा था और शर्मिंदगी के एक अहसास ने उसे अपना चेहरा हथेली में छिपाने पर मजबूर कर दिया। एक मजाकिया मुस्कान ने अल्फ़ी के चेहरे पर अपनी जगह बनाई थी।

"सच तो ये है कि एडवर्ड और माया सहयोगी होकर भी नहीं हैं। वो दोनों ही एक-दूसरे से चिढ़ते हैं और इसका फायदा हमें उठाना होगा। वो भी जल्द से जल्द! हमें टीम बनानी होगी।
ताकि दोनों तरफ से हम उन्हें रोक सकें।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बहुत ही गंभीरता से कहा।

"मैं और अल्फ़ी साथ जाऍ॑गे।" अनामिका ने तपाक से कहा। चैतन्य ने एक आह के साथ उसकी ओर देखा। यकीनन वो बहुत नाराज़ थी।

"अनु!" चैतन्य ने कहना चाहा, मगर तांत्रिक श्रेष्ठ की आवाज उसे टोक गई।

"ठीक है! तुम दोनों एडवर्ड की तरफ जाओ। मैं और चैतन्य उस माया के पीछे जाते हैं। तुम लोग जरा रूको। मैं अभी आता हूॅ॑।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अनामिका की बात पर सहमति जताते हुए कहा और अंदर की ओर जाते रास्ते में बढ़ गए।

चैतन्य ने बड़ी ही बेबसी भरी नज़रें अनामिका पर डाली थी। मगर उसने चैतन्य की ओर देखने से परहेज़ ही किया। बेज़ारी उसके चेहरे पर साफ-साफ दिख रही थी। चैतन्य ने एक उम्मीद से अल्फ़ी की ओर देखा.. तो उसने भी कंधे उचकाते हुए सिर अफसोस में हिला दिया। आखिर में बहुत हिम्मत जोड़कर वो अनामिका के पास गया।

"अनु!" चैतन्य ने उसे पुकारते हुए उसके कंधे पर हाथ रखा, जिसे अनामिका ने बेदर्दी से झटक दिया।
"क्या यार! अभी कुछ देर पहले जंगल में तुम कह रही थी कि तुम्हें मुझ पर खुद से ज्यादा भरोसा है और अब ये। अरे गुस्से में गलती से ज़बान फिसल गई। हवा करो बात को!" चैतन्य ने भी उसकी नाराज़गी पर ऐतराज उठाते हुए कहा।

चैतन्य की बात सुनकर अनामिका ने तेज धार निगाहों से उसे घूरा और फिर उसकी ओर ऊंगली उठाकर बोली, "तुम जरा वापस चलो घर... फिर मैं तुम्हें बताती हूॅ॑। कुछ ज्यादा ही फिसल रही है तुम्हारी ज़बान। मुझसे तो दूर ही रहो तुम... वरना अगली बार ज़बान फिसलने से पहले तुम इस दुनिया से फिसल जाओगे। अगर अभी हालात इतने बिगड़े नहीं होते... तो तुम्हें जरूर सुधार देती मैं। समझे! मेरे बच्चे! हुंह!"

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]...." [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अल्फ़ी हर डर को ताला लगाकर गुफा से बाहर निकला तो तलहटी पर एडवर्ड को अपने कई अंगरक्षकों के साथ मौजूद पाया। हमेशा की तरह सुरक्षा के घेरे में महफूज़। एक बार के लिए अल्फ़ी का मन उसे देखकर ठहाके लगाने का किया, जिसे उसने बड़ी मुश्किल से रोका। अल्फ़ी हमेशा से जानता था कि वो एक कायर इंसान हैं, जो अपनी चालाकियों की वजह से सबके गले पर आफत की तरह लटक गया था। उसकी ताकत थी वो कमीनापन, जिसके हथौड़े से वो हमेशा सही समय और सही जगह पर वार करता था और अभी भी वो उसी वार की नीयत से ही आया था। अल्फ़ी सावधानी से नीचे उतरकर उसके सामने तनकर खड़ा हो गया।

"उफ्फ! ये अदा! जानते हो कि.... तांत्रिक श्रेष्ठ के इलाके में हो, इसलिए इस तरह तन रहे हो। मेरी क़ैद में तो भीगी बिल्ली की तरह दुबके हुए थे।" एडवर्ड ने मजाक उड़ाते हुए अंदाज में कहा।

"वो तो तुम्हें भी पता है कि मैं वहॉ॑ खामोश क्यों बैठा था? तुम हमेशा से ही कायर रहे हो। मर्द हो तो सामने से आकर लड़ो। एक लड़की को ढाल बनाने की क्या जरूरत थी? क्यों लेकर आए अनामिका को बीच में?" अल्फ़ी ने भी उसी के अंदाज में जवाब देते हुए कहा।

"मैं नहीं... वो खुद आई बीच में। किसने कहा था उस खंज़र को छेड़ने के लिए? अब सजा तो मिलेगी ना!" एडवर्ड ने मक्कारी से दॉ॑त दिखाते हुए
कहा।

"उसकी तरफ ऑ॑ख उठाकर भी नहीं देखना।" अल्फ़ी ने एडवर्ड को धमकाने वाले अंदाज में कहा।

"अरे! तुम तो बेवजह भड़क रहे हो! मैं तो तुम्हारी हेममाया के बारे में बात करने आया था।" एडवर्ड ने बखूबी लफ़्ज़ों में चाशनी का इस्तेमाल करते हुए कहा।

"क्या चाहते हो तुम?" अल्फ़ी ने बहुत ही कड़वाहट के साथ कहा।

"बस अनामिका!" एडवर्ड ने भद्दे तरीके से मुस्कुराते हुए कहा।

"क्या मतलब?" अल्फ़ी उसकी मांग पर चौंकते हुए बोला।

"मुझे अनामिका दो और ले जाओ अपनी हेममाया का शरीर। चाहो तो कोई जुगत लड़ाकर वो जीवपात्र भी दिलवा सकता हूॅ॑, जिसमें तुम्हारी हेममाया की आत्मा कैद है। सोच लो... फिर से मिल जाएगी... तुम्हें तुम्हारी मोहब्बत और मुझे वो... जो मुझे चाहिए।
अनामिका!" एडवर्ड उलझे खड़े अल्फ़ी के चारों ओर चक्कर लगाते हुए मक्कारी भरी आवाज में बोला।

"तुमसे कहा ना! अनामिका की ओर ऑ॑ख उठाकर भी नहीं देखना।" अल्फ़ी तमतमाकर तेज आवाज में बोला।

"क्यों? उस लड़की के लिए इतना क्यों तड़क रहे हो? ऐसा भी क्या है उसमें कि तुम बेईमानी पर उतर आए? वैसे सच कहूं तो गलती तुम्हारी भी नहीं है। उसकी खूश्बू बिल्कुल हेममाया के जैसी है ना!" सवालों से शुरू हुई एडवर्ड की बातें खत्म होते-होते तंजीली फुसफुसाहट में बदल गई।
उसकी बात सुनकर अल्फ़ी के माथे पर सिलवटें पड़ीं और उसने एडवर्ड की ओर पैनी नज़रों से घूरकर देखा।

"ऐसे क्या देख रहे हो? पिशाच हो ना! खूश्बू नहीं पहचानते। ऑफकोर्स पहचानते हो... तभी तो उस अनामिका के लिए इतना तड़प रहे हो। सही कहा ना?" एडवर्ड ने वार करना जारी रखा।

"तुम्हारी बकवास खत्म हो गई हो... तो यहॉ॑ से जा सकते हो। अब मैं तुम्हारा कैदी नहीं हूॅ॑ कि कुछ भी सुनता रहूं।" अल्फ़ी ने भी उसे चिढ़ाने वाले लहजे में कहा।

उसकी बात सुनकर एडवर्ड बुरी तरह से फड़फड़ाया था। अल्फ़ी किसी भी तरह से उसके काबू में नहीं आ रहा था। आखिरकार उसने अपना आखिरी वार करने का फैसला किया। एडवर्ड जानता था कि ये वार खाली नहीं जाएगा।

"जाता हूॅ॑! वैसे एक और बात बतानी रह गई। वो क्या है ना! सुरमी कबीले में एक हादसा हो गया है। उनका कहना है कि वो सब किसी डायन ने किया है। तो एक जागरूक नागरिक होने के कारण मैंने उनके मुजरिम का नाम उन्हें बता दिया और आज रात के पहले पहर में उस डायन को जला दिया जाएगा।" अल्फ़ी ने बड़े ही अफसोस भरे शब्दों में कहा।

अल्फ़ी ने पहले तो उसकी बातों का मतलब समझने की कोशिश की और फिर इस कोशिश में वो एडवर्ड की ओर ताकता रह गया।

"हेममाया!" एडवर्ड फुसफुसाते हुए बोला।

और ये सुनते ही अल्फ़ी ने टुकुर-टुकुर उसकी ओर फटी हुई ऑ॑खों से
देखा। उसे यकीन नहीं हो रहा था कि एडवर्ड इतनी नीचता पर उतर आया था कि अब वो किसी के मुर्दा शरीर का इस्तेमाल करने से भी परहेज़ नहीं कर रहा था। उधर एडवर्ड ने अल्फ़ी के चेहरे के बदलते निशानों को बड़ी ही दिलचस्पी से देखा।

"अरे मैं तो भूल ही गया। अब तुम्हें उस शरीर से भी कोई मतलब नहीं रह गया। बेचारी हेममाया।" एडवर्ड ने आखिरी चोट के लिए हथौड़ा उठाते हुए कहा।

उसकी ये बात अल्फ़ी की ऑ॑खें छोटी कर गईं।

"क्या कहते हो तुम सब अच्छे लोग? हॉ॑! प्यार जिस्म से नहीं... आत्मा से होता है। शायद इसीलिए तुमने उस अनामिका के लिए अपनी पत्नी के शरीर को हालातों के हवाले कर दिया। पर तुम तो उसकी आत्मा से भी प्यार नहीं करते। तुम्हारी हेममाया की आत्मा है ना उस अनामिका में। कैसे प्रेमी हो तुम? सब जानते हुए भी उस अनामिका को क्या नाम है उसका... हॉ॑ चैतन्य... उसकी बाहों में डाल दिया। जब ऐसा ही है तो फिर.... मुझमें भी क्या बुराई है?" एडवर्ड ने अपनी ऑ॑खों और बातों में कमीनगी उतारते हुए कहा।

और ये सुनते ही अल्फ़ी का खून लावे की तरह उबला था। एक तेज गुर्राहट के साथ वो उसकी गर्दन दबोचने के लिए बढ़ा ही था कि पीछे से आई आवाज ने उसे रोक दिया।

"अल्फ़ी!"

अल्फ़ी ने अपने गुस्से में कॉ॑पते हुए शरीर को बहुत ही मुश्किल से रोका। उसका तो बस ये ही मन था कि वो उस नीच एडवर्ड को... यहीं खड़े-खड़े मौत के हवाले कर दे। पर वो अपने पीछे खड़े तांत्रिक श्रेष्ठ की बात नहीं
काट सकता था। अपने गुस्से को काबू में करते हुए वो उनकी ओर मुड़ा।

"अंदर जाओ अल्फ़ी! अभी!" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कठोर स्वर में उसे आदेश दिया था।

अल्फ़ी की ऑ॑खों का गुस्सा लाचारी और बेबसी के पानी में घुल गया और उसकी ऑ॑खों के कोरों में चमकने लगा।उसने अपने सूखे होंठों पर ज़बान फेरी और फिर एडवर्ड पर एक ज़हर भरी नज़र डालकर उसी समय गुफा की ओर चल दिया। एडवर्ड के चेहरे पर भी झुंझलाहट दिखाई दे गई। उसका काम बस होते-होते जो रह गया था। उसने अल्फ़ी से हटाकर अपनी कुढ़न भरी नज़र तांत्रिक श्रेष्ठ पर डाली।

"तुम यहॉ॑ क्या कर रहे हो?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने सख़्त आवाज में पूछा।

"और मेरा कैदी यहॉ॑ क्या कर रहा है?" एडवर्ड ने भी निहायती बत्तमीजी से पूछा।

"क्योंकि वो मैं उसे मुजरिम नहीं मानता और ये तुम अच्छी तरह से जानते हो।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे जवाब देते हुए कहा।

"आप नहीं जानते कि आप क्या कर रहे हैं! इससे पिशाच और तांत्रिक समुदायों के बीच दूरियॉ॑ भी बढ़ेगी और तनाव भी बढ़ेगा। आगे जो भी होगा... उसके जिम्मेदार बस आप और आप

[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"उसकी हिम्मत कैसे हुई... अनामिका के बारे में ऐसी बेहूदा बात कहने की। कोई भी अनामिका की तरफ ऑ॑ख भी उठाएगा... तो मैं उसकी ऑ॑ख नहीं निकालूंगा... उसकी... जान ले लूंगा। कोई भी!" जूनूनी हालत में चिल्लाते हुए अल्फ़ी ने एक नज़र चैतन्य पर भी डाली।

उसकी वो नज़र तांत्रिक श्रेष्ठ के साथ चैतन्य और अनामिका को भी दहला गई। उसने अजीब सी जूनूनी हालत में चैतन्य पर अपनी सुर्ख़ नज़रें डाली थी। चैतन्य ने मुड़कर अनामिका की ओर देखा, जो सदमे की हालत में अल्फ़ी को ही देख रही थी।

"अल्फ़ी! होश में आओ! लग रहा है कि फिर से अपना तीर छोड़ गया वो एडवर्ड। जानते हो वो क्यों हमसे आगे है? क्यों हमेशा हमें मात दे देता है? क्योंकि उसे पता है कि उसे क्या चाहिए और फिर चाहे कुछ भी हो जाए... वो कभी भी अपने लक्ष्य से भटकता नहीं और हम.... हमेशा उस ओर देखते रहे... जिस ओर वो दिखाना चाहता है। हमारा कोई लक्ष्य ही नहीं और जो युद्ध लक्ष्य विहीन होते हैं.... वो कभी नहीं जीते जाते।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उन सभी को हालिया परिस्थितियों से अवगत कराते हुए कहा।

"मुझे... हेममाया का शरीर चाहिए.... चाहे कुछ भी करना पड़े।" अनामिका पर नज़र रखे हुए ही अल्फ़ी ने कठोर लहज़े में कहा।

"उसे एडवर्ड ने कहॉ॑ रखा है कोई नहीं जानता।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।
"तो आप क्या चाहते हैं? मैं इसी तरह बैठा रहूं... जैसे आप सब बैठे हैं। इतनी बड़ी बात हो गई पर किसी ने मुझे बताना जरूरी नहीं समझा। तो ठीक है! मुझे जो चाहिए... वो मैं खुद जाकर लूंगा। मुझे किसी की मदद नहीं चाहिए।" अल्फ़ी तांत्रिक श्रेष्ठ पर चीखते हुए बोला।

"अल्फ़ी! क्या कर रहे हो?" चैतन्य ने उसके पीछे आकर उसके कंधे पकड़ते हुए अपनी ओर घुमाया और बस यहीं पर अल्फ़ी अपना धैर्य खो गया। उसकी ऑ॑खें पल भर में सुलगी और उसने चैतन्य की गर्दन को दबोचकर हवा में उठा दिया। तांत्रिक श्रेष्ठ और अनामिका उसका ये रूप देखकर सदमे में आए थे। अल्फ़ी ने चैतन्य के छटपटाते हुए शरीर को कुछ देर उसी तरह हवा में रखा और फिर उसे एक ओर उछाल दिया। अनामिका के पैर चैतन्य की ओर बढ़े ही थे कि उसने तुरंत ही उन्हें रोका था। अल्फ़ी ने एक गुस्से भरी तिरछी नज़र उसी पर थी।

"अल्फ़ी!" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे डपटा।

"बस! बहुत हुआ! हेममाया चली गई और आज उसका अल्फ़ी भी गया। अब जब वो वापस आएगी... तभी उसका अल्फ़ी भी वापस आएगा और जो हमारे बीच आएगा... वो भुगतेगा।" गुस्से में भरे हुए अल्फ़ी ने आखिरी लाइन अपनी अंगारा ऑ॑खें चैतन्य पर डालते हुए कही।

"ये सही नहीं है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"तो फिर क्या सही है? अब मुझे भी अपना हक चाहिए। एडवर्ड के रास्ते से मिले... तो वही सही।" अल्फ़ी अपनी मुट्ठियॉ॑ भींचते हुए बोला।

"अल्फ़ी! अल्फ़ी! अल्फ़ी! एडवर्ड के रास्ते पर चलोगे तुम? उसका रास्ता नफ़रत का रास्ता है। नफ़रत उसकी ताकत है... पर तुम्हारी नहीं। वो अपनी घोर नफरत में भी अपने होश नहीं खोता और तुम नफ़रत के बारे
में सोचकर ही आपे से बाहर हो जा रहे हो। शांत रहो! हमें उन दोनों को रोकना भी है और चैतन्य-अनामिका को वापस भी भेजना है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अल्फ़ी को समझाते हुए कहा।

मगर ये सुनते ही अल्फ़ी की ऑ॑खें हैरानी से फैल गईं। उसने चैतन्य और अनामिका की ओर देखा। अनामिका को देखकर उसके अंदर एक तूफान सा उठ रहा था।

"कहीं नहीं जाएगी अनामिका! वो यहीं रहेगी! मेरे साथ!" अल्फ़ी ने हाहाकार तरीके से जैसे ऐलान किया था।

उसकी बात सुनकर ख़ौफ से घिरी अनामिका दौड़कर चैतन्य के पास पहुॅ॑ची और उसके पीछे छिप सी गई। चैतन्य अपने जबड़े भींचें अल्फ़ी को घूर रहा था। उसे पहले से पता था कि एक न एक दिन अल्फ़ी की ज़बान पर ये बात आएगी ही।

"ये कैसी बातें कर रहे हो? अनामिका यहॉ॑ नहीं रह सकती। ये ना तो उसकी जगह है और ना ही उसका समय। उसे वापस जाना ही होगा और ये बात अच्छे से समझ लो तुम। तुम्हारी माया जा चुकी है और इसे जितना जल्दी स्वीकार कर लो... बेहतर है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने भी उसकी एक-एक बात को काटते हुए कहा।

"और मैं कह रहा हूॅ॑... कि वो कहीं नहीं जाएगी। अगर किसी ने ऐसा करने की कोशिश की तो.... वो परिणाम भुगतने को लिए तैयार भी रहे। मैंने अपनी माया से वादा किया था कि हमें कभी कोई अलग नहीं कर सकता। अगर किसी ने किया... तो मैं हर समय के पार जाकर उसे वापस ले कर आऊंगा। अनामिका मेरी माया है... तो वो मेरी है और अब ये बात... सब कान खोलकर सुन लें और अपने दिमाग में बिठा लें। बाकी जिसको जहॉ॑ जाना है... जा सकता है।" अल्फ़ी, चैतन्य को घूरकर देखते हुए बोला।
"बकवास मत करो।" चैतन्य भी तैश में आगे बढ़ते हुए बोला।

"तुम... मेरी बात सुनो! तुम्हें जहॉ॑ जाना है... शौक से जाओ। अनामिका को यहॉ॑ से वापस ले जाने का ख्याल छोड़ दो और ये ख्याल नहीं छोड़ा... तो जिंदगी छोड़ने के लिए तैयार रहो।" अल्फ़ी साफ-साफ धमकी देते हुए बोला।

चैतन्य ने कुछ बोलना चाहा तो अल्फ़ी ने अपने होंठों पर उंगली रख उसे चुप रहने का इशारा किया। उसे चुप कराने के बाद उसने अनामिका की ओर देखा... जो चैतन्य के पीछे ही थी।

"मैं जा रहा हूॅ॑... हेममाया का शरीर लेने। जब वापस लौटूं... तो तुम मुझे यहीं मिलनी चाहिए। कहीं जाने की कोशिश भी मत करना... वरना इस कबूतर की गर्दन मरोड़ने में समय नहीं लगेगा मुझे।" अल्फ़ी ने सुलगी हुई आवाज में कहा और फिर किसी के जवाब का इंतजार किए बिना ही वो तेजी से बाहर निकल गया। उसके पीछे वो तीनों ही उसका वो रूप देखकर परेशान हो गए थे।

"ओह! वाव! बस इसी की कमी रह गई थी। अब!" चैतन्य ने बहुत ही कड़वाहट से कहा।

"उसकी सहनशक्ति खत्म हो गई है और मुझे नहीं लगता कि इसके लिए हम उस पर कोई इल्ज़ाम लगा सकते हैं। उसे कहीं ना कहीं तो टूटना ही था।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बारी-बारी से चैतन्य और अनामिका की ओर देखते हुए कहा।

"तो! तो फिर क्या करें? उसकी बात मान लें? उसके साथ जो हुआ... उसमें हमारी क्या ग़लती है? और... आपको क्या लगता है... उसके इस
तरह धमकाने पर मैं अनामिका को यहॉ॑ छोड़कर चला जाऊंगा।" चैतन्य ने भी गर्म होते हुए कहा।

"चैतन्य! मेरी बात सुनो! अल्फ़ी, एडवर्ड के पास गया है... वो उसे रोक लेगा। हमें माया को रोकना है। हमें इस समय उस पर ध्यान देना होगा। एक बार तुम दोनों यहॉ॑ से चले गए तो फिर वह क्या ही कर लेगा।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बहुत ही आराम से कहा।

उनकी बात सुनकर अनामिका और चैतन्य ने एक-दूसरे की ओर देखा। वो कैसे बताते कि अल्फ़ी का ये जूनून सदियों बाद भी उनका पीछा नहीं छोड़ने वाला था।

"एक बार तुम दोनों यहॉ॑ से चले गए तो फिर वो क्या ही कर लेगा।"

तांत्रिक श्रेष्ठ की बात सुनकर अनामिका और चैतन्य ने एक-दूसरे की ओर देखा। दोनों की ऑ॑खें भविष्य की तस्वीर में जाकर अटक गईं। अल्फ़ी सिर्फ धमका कर नहीं गया था... वो ऐसा ही करने वाला भी था। दोनों ही एक ऐसे सवाल पर जाकर रूक गए, जिसके आगे सारे सवालों का रूख ही बदल जाता। तो क्या अल्फ़ी.... अनामिका के लिए 200 सालों का सफ़र तय करने वाला था? यहॉ॑ अब दोनों ही बहुत बड़ी दुविधा में फॅ॑स चुके थे, जो उनके चेहरे पर दिखाई देने लगा था।

"तुम दोनों के चेहरे पर क्यों हवाईयॉ॑ उड़ रही हैं?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उन दोनों के

चेहरों को देखते हुए पूछा।
चैतन्य और अनामिका दोनों ने ही उनकी ओर देखा, जो ऑ॑खों में सवाल लिए उन दोनों को ही देख रहे थे।

"एक सवाल का जवाब देंगे आप? क्या सभी पिशाच लंबा जीवन... मतलब कि 200 साल लंबा जीवन जी सकते हैं?" चैतन्य ने तांत्रिक श्रेष्ठ से पूछा।

"नहीं! बस पिशाच परिवार या समुदाय का होने से कोई ऐसा नहीं कर सकता। पिशाच देव का अभीष्ट आराधक ही ऐसी योग्यता प्राप्त कर सकता है और ऐसा आज तक नहीं हुआ है क्योंकि पिशाच देव की ये साधना बहुत ही कठिन है। कई लोग कोशिश तो करते हैं, पर सफल नहीं हो पाते... फिर उन्हें एक शापित जीवन जीना पड़ता है। अपने पैशाचिक अस्तित्व को बचाए रखने के लिए वो पूरी तरह से रक्तपान के अधीन हो जाते हैं... और उन्हें कई कठोर नियमों का पालन करना पड़ता हैं, जबकि इस साधना को सचमुच सिद्ध करने वाला पिशाच जरूर बनता है, पर वो अपनी हर इच्छा को काबू में कर सकता है। हॉ॑... रक्तपान उसकी भी जरूरत होती है.. पर ये वो तय कर सकता है कि उसकी भूख कितनी होनी चाहिए।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने तफ्सील से जवाब देते हुए कहा।

"और जिनकी साधना सफल ना हो... वो?" चैतन्य ने पूछा।

"कहा ना... अभिशप्त होते हैं वो... जिनकी साधना सफल ना हो या फिर खंडित हो जाए। जब तक वो अपनी साधना सही तरीके से पूरी ना कर लें... उन्हें ऐसा ही जीवन बिताना पड़ता है। उन्हें वो वजह पूरी करनी होती है, जिस वजह से उनकी साधना अधूरी रह गई हो और इसके लिए उन्हें ज्यादा समय भी नहीं मिलता। वो हमेशा एक दीर्घकालिक निद्रा में रहते हैं और एक निश्चित समय में ही जागते हैं और वो निश्चित समय पूरा होते ही फिर से निद्रावस्था में चले जाते हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बात स्पष्ट करते हुए कहा।
और ये सुनते ही अनामिका और चैतन्य को वो दस सालों का खूनी अंतराल याद आया, जो आगे वो पिशाच अपने साथ लाने वाला था।

"और.... इन्हें खत्म कैसे किया जा सकता है?" एक बहुप्रतीक्षित और महत्वपूर्ण सवाल चैतन्य के होठों से निकला।

"देखो! तुम्हें किसी ऐसे पिशाच को मारना है तो उस पर उसकी ताकत के चरम स्थिति पर प्रहार करना होगा। तभी तुम उसे पूरी तरह से नष्ट कर सकते हो। उस समय एक शक्तिचूसक उसके दिल में उतारना पड़ता है, जो उसकी सारी शक्ति को खींचकर निकाल लेता है। उसके बाद उसे उसकी विपरीत शक्तियों की मदद से खत्म किया जा सकता है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"विपरीत शक्तियों मतलब?" अनामिका ने पूछा।

"देखो अगर पिशाच अग्नि तत्व वाला है तो इस मामले में ये विपरीत शक्तियॉ॑ जल और वायु हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"इसका मतलब है कि जल और वायु वाले पिशाच की विपरीत शक्ति अग्नि है।" अनामिका ने बात को और अच्छी तरह समझने की गरज से पूछा।

"नहीं! पिशाच जल और वायु तत्व वाले कभी नहीं होते। इन राशियों में पैदा होने वाले शक्ति हीन होते हैं। इसलिए तो पिशाच संतान पैदा करने के लिए दवा का सेवन इस तरह करते हैं कि संतान कम से कम जल राशि में तो ना ही हो।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने अनामिका की दुविधा दूर करते हुए कहा।

"इसका मतलब तो यही हुआ कि हम उसे भविष्य में भी रोक सकते हैं।"
चैतन्य ने अनामिका से कहा।

"पर चैतन्य.... उसे अभी नहीं रोका तो उस भविष्य के आने तक ना जाने कितने मासूमों का खून बह जाएगा।" अनामिका ने आपत्ति जताते हुए कहा।

"तुम लोग किस बारे में बातें कर रहे हो?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने भी एक सवाल किया।

और तांत्रिक श्रेष्ठ के इस सवाल के बाद अनामिका और चैतन्य ने भविष्य में अल्फ़ी के

पैशाचिक अस्तित्व और दखल के बारे में बता दिया। सब सुनकर तांत्रिक श्रेष्ठ के माथे पर बल पड़े थे और वो बहुत ही परेशान नज़र आने लगे।

"ये तो बहुत ही ग़लत होने वाला है।" वो परेशान सी हालत में बोले।

"और वो ना जाने कितनों के खून से अपनी प्यास बुझाने वाला है। आप नहीं जानते कि भविष्य में वो इतना ख़ौफनाक और निष्ठुर हो जाएगा कि मासूम बच्चों को भी नहीं छोड़ेगा।" चैतन्य ने पूरे दिल से उसकी शिकायत करते हुए कहा।

"अल्फ़ी ऐसा कर सकता है! यकीन नहीं हो रहा है। पिछले चार महीनों में मैंने उसे एक रहमदिल शख्सियत के रूप में ही जाना है। वो तो दूसरों के दर्द से खुद ही तड़प उठता है... वो कैसे दूसरों को तकलीफ़ पहुॅ॑चा सकता है?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बेयकीनी से कहा।

"पर ऐसा ही है। और तो और हमें ये भी पता है कि पिशाचों के बीच कोई बहुत बड़ा हत्याकांड होने वाला है और डायनों के बसेरे को भी पूरी तरह से तबाह कर दिया जाएगा। आपको क्या लगता है? क्या इन सबके पीछे
अल्फ़ी हो सकता है?" अनामिका ने आने वाली विपदाओं के बारे में बताते हुए पूछा।

"पता नहीं! वो फिलहाल तो इतना शक्तिशाली तो नहीं है कि ये सब कर सके। जो भी तुम लोगों ने बताया है अगर वो सही है तो जरूर वो पिशाच साधना करने वाला है, जो शायद सफल नहीं हो पाएगा। मगर अभी वो जिन तेवरों के साथ गया है... अब मैं कुछ नहीं कह सकता।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"तो क्या ऐसा कोई तरीका नहीं है कि उसे पिशाच बनने से रोका जा सके। आप नहीं जानते कि उसका ये कदम पूरी इंसानियत पर भारी पड़ जाएगा।" अनामिका ने कलपते हुए कहा।

"अगर वो भविष्य में उस रूप में है... तो वो बनेगा ही। कैसे बनेगा ये नहीं पता। पर... अगर वो उसकी नियति है...तो नियति बदली नहीं जा सकती क्योंकि उसे बदला... तो बहुत कुछ बदल जाएगा।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने सिर हिलाते हुए कहा।

"ऐसा मत कहिए। हम चाहें तो ये बदल सकते हैं। यदि हम हेममाया का शरीर प्राप्त कर लें और उस जीवपात्र को भी... तो शायद सब कुछ सही हो जाए।" अनामिका ने एक उम्मीद के साथ कहा।

"पर ये भी याद रखो कि ये सारी नियति तुमसे भी जुड़ी हुई है। तुम इसे खुद से अलग नहीं कर सकती। उसे अपना प्यार वापस चाहिए, जो बिना किसी गलती... उससे इस तरह छीन लिया गया। उससे कम वो कुछ भी मंजूर नहीं करेगा। साफ है कि अगर तुम उसे रोकना ही चाहती हो... तो तुम्हें यहॉ॑ उसके पास रूकना होगा... उसके साथ रहना होगा क्योंकि सुरमई कबीले के पंजों से वो जीवपात्र निकालना नामुमकिन है। तुममें उसे
अपना प्यार मिल जाएगा तो वो... पिशाच ही क्यों बनेगा?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"व्हॉट रबिश! अनामिका के यहॉ॑ रूकने की बात छोड़कर कुछ भी बात कीजिए। मैं... अनामिका को.... यहॉ॑... हर्गिज नहीं छोड़ूंगा।" तांत्रिक श्रेष्ठ की बात सुनकर चैतन्य ने तमकते हुए कहा।

"चैतन्य! अपने ये तेवर अल्फ़ी को दिखाना था ना! उस समय तो अपनी गर्दन सहलाते हुए चुपचाप पड़े रहे।" अनामिका ने शिकायत करते हुए कहा।

"क्योंकि मेरा दिमाग अभी भी सही सलामत है। दिन का आखिरी पहर खत्म होने वाला है और रात का पहला पहर कुछ समय में शुरू हो जाएगा। अगर मैं उस समय अल्फ़ी से उलझता तो उसी में पूरी रात गुजर जाती और आखिर में हम दोनों एक-दूसरे की हड्डियॉ॑ तोड़े एक कोने में बैठे होते। कोई फायदा था क्या उसमें? अभी कम से कम वो एडवर्ड के पास तो गया है। वो उसे रोक लेगा मुझे पूरा यकीन है। अब हमें माया को रोकना है।" चैतन्य ने भुनभुनाते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका को अपनी गलती महसूस हुई। चैतन्य सही कह रहा था। अल्फ़ी के

मौजूदा हालत उससे उलझने के बिल्कुल भी नहीं थी। उन्हें तो किसी तरह से सब संभालकर वापस जाना है। चैतन्य के टोकने पर अचानक ही अनामिका का दिमाग तेजी से काम करने लगा और उसे कुछ याद आया।

"चैतन्य! हमें माया को जलाए जाने की बात पता चली थी ना! हमने उसकी तस्वीर भी देखी थी। मतलब कि... जो हुआ था.. उसी के साथ हुआ था। कहीं उसका राज सबके सामने तो नहीं आ गया था? अगर ऐसा ही हुआ है तो हमें ही कुछ ऐसा करना चाहिए कि किसी तरह माया का
राज सबके सामने आ जाए। सबसे अच्छा तो यही होगा कि वो खुद ही सब अपने मुॅ॑ह से बोल दे।" अनामिका ने एक नई उम्मीद जगाते हुए कहा।

"और वो भला ऐसा क्यों करेगी?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने पूछा।

"क्योंकि... चैतन्य उससे बुलवाएगा। है ना चैतन्य! वैसे भी तुम्हें उससे मिलना है। अगर किसी तरह वो अपने मुॅ॑ह से सब सच कह दे और सुरमी कबीले के लोग ये बात सुन लें, तो ऐसा हो सकता है। इससे हेममाया का शरीर भी सुरक्षित हो जाएगा।" अनामिका ने चैतन्य को मुस्कुराकर देखते हुए कहा।

"ये तो सही है। अगर वो खुद ये बोल दे तो माया के तरफ से ये समस्या सुलझ सकती है। रही सुरमी कबीले की बात... तो उसके सरदार को वहॉ॑ लाना मेरी जिम्मेदारी है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने भी उत्साहित होते हुए कहा।

एक ओर जहॉ॑ इस योजना से अनामिका और तांत्रिक श्रेष्ठ के अंदर एक नई ऊर्जा भर गई, वहीं माया के करीब जाने का सोचकर ही चैतन्य की सारी हवा फटे गुब्बारे की तरह निकल गई। मगर वो मना नहीं कर सकता था।

"मगर अल्फ़ी!" उसने कहा।

"अभी अल्फ़ी समस्या नहीं है चैतन्य। माया और एडवर्ड हैं। माया का राज खुलना बहुत जरूरी है। सुरमी कबीले वाले दूसरे पहर में हेममाया को सजा देने वाले हैं। यानि कि उसी समय माया को सजा मिल सकती है। हमारे पास समय कम है.... पर मुझे यकीन है कि तुम ये कर लोगे चैतन्य। इसके बदले में उसे एक दो पप्पी-झप्पी भी देना पड़े तो दे देना। इजाजत है मेरी ओर से।" अनामिका पूरे उत्साह में बोलती चली गई और जब उसने बात खत्म करके चैतन्य की ओर देखा, तो वो एक भौंह चढ़ाए और जबड़े भींचें
उसे ही देख रहा था।

"पप्पी-झप्पी! अब तो तुम पहुॅ॑चो घर! उसके बाद मैं बताता हूॅ॑ तुम्हें।" चैतन्य ने बहुत ही तिलमिला कर कहा, जवाब में अनामिका ने फैली हुई ऑ॑खों के साथ अपना चेहरा दूसरी तरफ फेर लिया था। उसी समय उसकी नज़र वहॉ॑ रखें भविष्य कथन पर पड़ी और वो उसके पास चली गई।

"तांत्रिक श्रेष्ठ! क्या ये भविष्य कथन हमारी मदद नहीं कर सकता? मतलब कि... अगर ये कुछ भी ऐसा हिंट दे दे, जिससे पता चल जाए कि अल्फ़ी को कैसे रोका जा सकता है?" अनामिका ने एक और उम्मीद दिखाई।

"तुम उसे रोकना क्यों चाहती हो?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने पूछा।

"बस मैं नहीं चाहती... कि इतनी तकलीफ़े उठाने के बाद... वो खुद दूसरों की तकलीफ़ों की वजह बने। वो एक अच्छा लड़का है और मैं नहीं चाहती कि वो... वो बने... जो हम उसे देखकर आए हैं।" अनामिका ने साफगोई से कहा।

"हम नियति नहीं बदल सकते अनामिका। उसे जो करना है.. वो करेगा ही! पर एक काम हो सकता है। तुम उसे पिशाच बनने से पहले ही जान से मार डालो। इसके अलावा और कोई रास्ता नहीं है क्योंकि हम उसके अंदर का दर्द कभी नहीं मिटा सकते। सुरमी कबीले वाले कभी भी किसी भी हालत में वो जीवपात्र किसी को नहीं देंगे। उनकी देवी का मंदिर ध्वस्त हो चुका है और ये कहीं से भी छोटी बात नहीं है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने असमर्थता जताते हुए कहा।

"पर अगर ऐसी बात है तो... अनामिका की मॉ॑ को वो जीवपात्र मिला कहॉ॑ से? यहॉ॑ तक कि इस जीवपात्र के बारे में डॉ. अनंत को भी पता नहीं

चला। सब तो यही सोचते थे कि... उन्होंने... अपनी आत्मा के हिस्से से... अनामिका की टूटती हुई सॉ॑सों को जोड़ा है।" चैतन्य ने सवाल उठाते हुए पूछा।

"अब ये तो वही बता सकती हैं!" तांत्रिक श्रेष्ठ ने फिर से असमर्थता जताई।

"क्या ये भविष्य कथन हमारे सभी सवालों के जवाब नहीं दे सकता?" अनामिका ने पूछा।

"कितना अच्छा होता ना... अगर ऐसा हो सकता। मगर ऐसा नहीं होता। ईश्वर ने ऐसी कोई चीज नहीं बनाई, जो ऐसा कर सके, वरना ये दुनिया ईश्वरों से भर जाऍ॑... जो अपने तरीके से सब बदल सकें। भविष्य कथन भी हमें उन्हीं आपदाओं के बारे में बताता है, जिनकी वजह से इतिहास एक मोड़ लेता है। हम इन्हें टाल नहीं सकते... पर कुछ बेहतरी के प्रयास किए जा सकते हैं। अल्फ़ी को तुम क़ैद भी कर लोगी... तो भी वो वही बनेगा... जो उसे बनना है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक आह भरते हुए कहा।

"ओह!" अनामिका और चैतन्य दोनों ने ही एक साथ आह भरी थी।

"फिर भी मुझे लगता है कि हमें भविष्य कथन पर भी एक नज़र डाल लेनी चाहिए। शायद तुम्हारे विषय में कोई मदद मिल जाए।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उन दोनों के सवालों के बीच कहा और वो किताब तीनों के बीच में रख दी। उन्होंने उस पर हाथ रखकर किसी मंत्र का उच्चारण किया, जिससे उस किताब में कॅ॑पन पैदा होने लगी। तांत्रिक श्रेष्ठ के हाथ रखने के बाद उस किताब की हलचल और भी बढ़ गई। कुछ देर ऑ॑खें बंद करने के बाद तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपनी ऑ॑खें खोली और फिर हाथ खींचने के बाद वो किताब खोल दी। एक बार फिर से वही शैतानी आकृति उनके सामने थी। उस आकृति के ऊपर झुककर वो तीनों उस आकृति के बोलने का इंतजार
करते रहे... पर वो शांत ही रहा।

"ये क्या हो रहा है? उस दिन तो लंबी चौड़ी कविता सुना दी थी इसने आज क्यों ख़ामोश है?" अनामिका ने चिढ़कर कहा।

"इसने पहले भी कुछ बताया था?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"हॉ॑! मेंशन की पार्टी वाली रात! मैं गलती से उस कमरे में पहुॅ॑च गई थी। तब!" अनामिका ने कहा।

"क्या कहा था?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने पूछा।

जवाब में चैतन्य ने वो कागज अपनी जेब से निकालकर तांत्रिक श्रेष्ठ की ओर बढ़ा दिया।
तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे खोलकर पढ़ा।

"जब प्रेम लौटकर आएगा..
और मात प्रेम से खाएगा,
जग झुलसेगा इस अग्नि में...
और दानव जाल बिछाएगा,
रक्त की बूंदों से रक्तिम...
इतिहास लिखा फिर जाएगा,
खंज़र उतरेगा सीने में...
और ये ज़ख़्म सदा भरमाएगा,
सुलझाकर उलझे धागों को...
ये समयजाल खुल पाएगा,
जो ना बूझे इस उलझन को....
फॅ॑स समयजाल में जाएगा।"
तांत्रिक श्रेष्ठ ने उस पहेली को दो बार पढ़ा और फिर उसे अपनी मुट्ठी में कैद कर लिया। अतीत और भविष्य की इस पहेली में बहुत कुछ छिपा था, जिसे समझना ही इस कालचक्र के रहस्य को सुलझा सकता था। फिलहाल उन्होंने अनामिका और चैतन्य को माया के पास जाने की सलाह दी और खुद सुरमी कबीले के सरदार के पास चले गए। अतीत का संग्राम तीन हिस्सों में बॅ॑ट गया था और सबको अपनी-अपनी भूमिका निभानी थी।

□□□□-□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□, □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ (□□□□) □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□

****

□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□
□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□, □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□... □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□... □□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□

"□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□!" □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□□!" □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□.. □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□,

"□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□?"

"□□□□□□□□□! □□ □□□□! □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□-□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□... □□□□□□... □□□□□□... □□□□ □□ □□... □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□? □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ !" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□

"□.... □□□□□□□! □□ □□ □□□□□□.... □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□!" □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□-□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□

"□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□! □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□... □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□... □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□! □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□... □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□-□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□-□□

[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]... [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

बीमारी इन पाप के पुतलों ने बहुत पहले से ही फैलाई हुई है।"

चैतन्य को सुन्न-सपाट देखकर माया ने उसे गहरी नज़रों से निहारा और बोली, "क्या हुआ? कहॉ॑ खो गए?"

और दूर निकलता हुआ चैतन्य तेजी से वापस आया। उसने माया को ग़ौर
से देखा और बात संभालते हुए बोला, "तुम्हारी ऑ॑खें खूबसूरत है।"

उसकी बात सुनकर माया के होंठों पर मुस्कराहट आई। वो उससे और भी लिपटते हुए बोली, "देखा! डूब गए ना!"

और डूबने की बात सुनते ही चैतन्य को अनामिका का ख्याल आया। वो और भी ख़ौफ में डूबा कि इस समय उन दोनों को इस तरह देखकर वो सिर से पैर तक सुलग रही होगी और उसका सोचना कुछ ग़लत भी नहीं था। उनकी नजदीकियॉ॑ बर्दाश्त से बाहर होते ही अनामिका ने खुद को दूसरी ओर मोड़ लिया और उस घड़ी को कोसने लगी कि जब उसने भी इन सबके लिए हामी भरी थी। उसका मन तो इस समय उस माया को इसी समय उस झील के पानी में डूबा देने का कर रहा था। मगर बात अब माया से ज्यादा हेममाया की हो गई थी.. इसलिए वो मन मसोसकर रह गई।

चैतन्य ने एक गहरी साॅ॑स भरी, ताकि उसका दिमाग हवा की कमी से काम करना बंद ना कर दे। उसने अपनी गर्दन माया की गिरफ्त से बाहर की और बोला, "ये सब बाद में! पहले ये बताओ कि... तुम और एडवर्ड एक-दूसरे से चिढ़ने के बाद भी एक साथ क्यों हो?"

"साथ! वो भी उस खड़ूस के साथ! तुम जानते हो... वो इस दुनिया का पहला मर्द है... जो हर तरीके से इतना परिपूर्ण है... फिर भी जिसकी ओर माया की नज़रे नहीं भटकी। ख़ैर! तुम भी मत भटको! वो क्या कर रहा है... उससे मुझे कोई मतलब नहीं। मुझे बस मुझसे मतलब है।"

"वही तो.. क्या मतलब?" चैतन्य ने उसे कुरेदा।

"वो तुम आज रात देख-समझ जाओगे। आज सबका ध्यान सर्वशक्तिमंडल की सभा में होगा। उसी का फायदा उठाना है हमें..... क्योंकि आज उस नर्क के द्वार में कोई भी बड़ी सुरक्षा नहीं होगी। जो होगी... उसमें सेंध
मारना कोई बड़ी बात नहीं और फिर मेरे पास वो होगा... जिसका सपना मैं ना जाने कब से देख रही हूॅ॑।" आखिरकार माया ने चैतन्य के शीशे में उतरते हुए कहा।

"वो जगह इतनी खास क्यों है सब के लिए? मतलब कि तुम भी तो ताकतवर हो! बहुत ताकतवर हो! फिर तुम्हें उस नर्क के द्वार को क्यों खोलना है?" चैतन्य ने मुद्दे की ओर बढ़ते हुए पूछा।

"क्योंकि मुझे लगता है कि.... वो मेरा है। उसे इस तरह बेकार पड़ा नहीं रहना चाहिए।
वैसे भी जिस पर मेरा दिल आ जाता है.... मैं उसे हासिल करके रहती हूॅ॑।" चैतन्य को अर्थ भरी नजरों से देखते हुए माया ने कहा।

"आखिर इतनी ताकत का करोगी क्या तुम?" चैतन्य का सवाल अब अपनी दिलचस्पी पर उतरा था।

"पॉवर माई डियर.... पॉवर! इससे बढ़कर कुछ भी नहीं है इस दुनिया में। तुम्हारा वो प्यार भी नहीं। एक बार तुम्हारे हाथ में पॉवर आ जाए, तो दुनिया तुम्हारी मुट्ठी में समझो।" माया ने चमक भरी ऑ॑खों के साथ अपनी मुट्ठी बांधते हुए कहा। ये कहते हुए उसका चेहरा एक अलग ही आभा से दमकने लगा था।

"पर... तुम्हें इतना यकीन क्यों है कि तुम जो करना चाहती हो... वो कर ही लोगी। मेरा मतलब है कि... मैंने सुना है... आज से 20-25 साल पहले भी किसी डायन ने ऐसा करने की कोशिश की थी... पर कामयाब नही हो पाई।" चैतन्य ने उसके सूखे हुए जख़्मों को कुरेदते हुए पूछा।

और अपने उस अतीत की याद ज़हन में उतरते ही माया की नस-नस गुस्से में फड़कने लगी। उसकी ऑ॑खें एक अजीब से उन्मांद से चमकने लगी। उसने चैतन्य के बेफिक्र से चेहरे की ओर देखा और फिर उसके
चेहरे को अपनी हथेलियों में दबोचते हुए चेतावनी भरी आवाज में बोली, "मुझे उम्मीद है

कि उसके साथ जो धोखा हुआ... वो तुम नहीं करोगे। शायद तुम्हें पता नहीं कि उस तांत्रिक की उस हिमाकत ने उसका पूरा वंश उजाड़कर रख दिया। उस डायन ने मरने के बाद भी उस तांत्रिक के पूरे परिवार को सूखे पत्तों की तरह बिखेरकर रख दिया। सबको लगा कि वो चली गई। पर वो कभी भी.. कहीं भी नहीं गई थी। वो एक श्राप की तरह उनकी जिंदगी का जहर बन गई।"

"क्या मतलब! किसकी बात कर रही हो?" चैतन्य ने अनजान बनते हुए कहा।

"छाया उर्फ माया! यानि कि.... मैं!" माया ने उसे गहरी नज़रों से देखते हुए कहा।

और फिर चैतन्य के जाल में उलझी हुई माया ने बड़ी ही आसानी से अपना पूरा काला चिट्ठा खोलते हुए अपना एक-एक गुनाह उसके सामने इस तरह परोसा जैसे कि वो उसे ये सब बताकर चेतावनी देना चाह रही हो कि... उससे उलझना किसी को भी कितना भारी पड़ सकता है। उसने अपनी गलती से उस जीवपात्र के छलद्वार/समयद्वार से दूसरी ओर जाने का भी जिक्र कर ही दिया। वो अपने तरीके से उसे अपने जाल में फॅ॑साना चाह रही थी... पर उसे नहीं मालूम था कि मासूम सी सूरत लिए उसके सामने मुस्कुराता खड़ा वो लड़का चालाकी में उसका भी गुरू था। वो वायु था। हवा का रूख पहचानता भी था और उसे अपने हिसाब से मोड़ना भी जानता था। उसकी मुस्कराहट देखकर माया को एक खटका सा लगा।

"क्या हो गया? ऐसे क्यों मुस्कुरा रहे हो?"

"पीछे देखो!" चैतन्य ने उसी मुस्कुराहट के साथ कहा।
उसकी बात सुनकर वो उतनी ही तेजी से पीछे मुड़ी और जो उसकी नज़र में आया वो उसके होश उड़ाने को काफी थी। शाम के बढ़ते धुंधलके में भी उसे साफ-साफ नज़र आए... सुरमी कबीले के वो सारे लोग... जो उसके इकबाल-ए-जुर्म के बाद उसे खौलती नज़रों से देख रहे थे। उनके अलावा डायन समूह की कुछ रसूखदार डायनें भी वहॉ॑ मौजूद थीं। माया को एक पल के लिए भी ये यकीन नहीं हुआ कि एक बार फिर से वो उसी जाल में फॅ॑स गई थी, जिसमें उसे बरसों पहले फॉ॑सा गया था। उसने खा जाने वाली नज़रों से चैतन्य को देखा, जिसके बदले में चैतन्य ने उसे अपनी सबसे दिलकश मुस्कुराहट बक्शी।

"इसीलिए कहते हैं..... दुर्घटना से देर भली! अच्छा खासा सामने वाला तुमसे सब्र करने को कह रहा था... पर नहीं! तुम्हें ही बड़ी जल्दी थी। हो गई ना दुर्घटना। अब क्या करोगी? हॅ॑!" चैतन्य उसे चिढ़ाते हुए बोला।

"तुम...!" बौखलाई हुई माया चैतन्य की ओर आगे बढ़ी, मगर चैतन्य ने अपनी ऊंगली उसकी ओर उठाकर उसे अपने पास आने से रोका।

"सबने मुझसे कहा कि मैं पहले की तरह ही चिकनी-चुपडी बातों से तुम्हें क़ब्ज़े में लूं। पर मुझे पता था.. कि काठ की हांडी बार-बार चूल्हे पर नहीं चढ़ती। इसलिए मैंने अपना दिमाग लगाया। तुम्हें पता है... जब से यहॉ॑ आकर फॅ॑सा हूॅ॑ ना, मेरे अंदर इतना गुस्सा भर चुका है कि वो मुझे ही जलाने लगा था। तो मैंने सोचा कि वही भड़ास बाहर निकाल दूं। मैंने अपनी उस सच्ची भड़ास में झूठ को लपेटकर तुम्हें ऐसे परोसा.... कि तुम तो एक ही बार में सब निगल गई। इसलिए कहते हैं... कहीं भी मुॅ॑ह नहीं मारना चाहिए और हद से ज्यादा ओवरकॉन्फिडेंट होना भी अच्छी बात नहीं है। अगले जनम में ना... ये सब ध्यान में रखकर पैदा होना। समझ में आया!" चैतन्य ने अपने अंदर की सारी कड़वाहट अपनी जबान में उतारते हुए कहा।
माया ने उसे दहकती ऑ॑खों से देखा और पूरी ताकत से चिल्लाकर बोली, "तूने ये अच्छा नहीं किया। कहा ना... जो मुझसे उलझेगा... वो कभी खुश नहीं रहेगा। अब तेरी बारी! आज नहीं तो फिर कभी... पर मैं कामयाब जरूर होऊंगी, पर तू तरसेगा... खुश रहने के लिए। बिल्कुल उस हेममाया की तरह! याद है ना.. उसका हश्र! वही तेरा होगा। याद रखना!"

उसकी बात सुनकर चैतन्य एक बार फिर से उसका दिल जलाने वाली मुस्कान के साथ दिलकशी से मुस्कुराया और फिर एक पल में ही ये हुआ। वो या कोई भी और आगे कुछ समझता... सुलगती हुई माया ने झपटकर उसके चेहरे को दबोचा और उसके होंठों को अपने होंठों के गिरफ्त में ले लिया। चैतन्य उसकी इस हरकत से सन्न रह गया। उसे कुछ जलता हुआ अपने अंदर उतरता महसूस हुआ और फिर माया ने उसे झटके से छोड़ा।

"तुझे प्यार देने का सोचा था, पर तुम सब मेरी बद्दुआ के ही काबिल हो। अब इसे सहेजकर

रख! सारी जिंदगी... तड़पने के लिए।"

माया के चैतन्य पर झपटते ही आसपास खड़े सभी फुर्ती से हरकत में आए और फिर उसे अपनी मजबूत पकड़ में ले लिया। वो बहुत दूर तक चिल्ला-चिल्लाकर उसे बुरा-भला बोलती रही। चैतन्य ने अपने होंठों पर उंगली रखी और वो वहॉ॑ मौजूद जलन से सहमकर रह गया। वो उसकी बातों में उलझा हुआ ही था कि अनामिका ने आकर उसे खुद में समेटा। वो भी उलझा हुआ सा उसकी बाहों में बिखर गया।

माया की गिरफ्तारी माहौल में गर्माहट भरी हलचलें ले आई थीं। लोगों के लिए फिलहाल सारी खबरें आम नहीं की गई थीं, मगर माया का नाम ही सनसनी फैलाने के लिए काफी था। हर कोई इस विषय में चर्चा कर रहा था... मगर इस चर्चा की जमीन अभी तक किसी को नज़र नहीं आई थी। सुरमी कबीले के लोगों ने माया को अपनी तेज निगरानी में रखा था... क्योंकि... अब सजा की हकदार वो थी। डाकिनी को जब ये खबर मिली.. तो वो बदहवास सी हो गई। उसने माया से मिलने की कई कोशिशें...कई मिन्नतें कीं.... पर सब नामंजूर कर दी गईं। माया ने खुद अपना जुर्म अपनी ज़बान से कबूल किया था और सुरमी कबीले के लिए यही काफी था। वो अपनी पहचान... अपने सम्मान और अपनी सांस्कृतिक धरोहर को लेकर बहुत ही ज्यादा संवेदनशील थे और इनको नुकसान पहुॅ॑चाने वाले पर रहम करने के लिए कतई तैयार नहीं थे।

डाकिनी ने खुद को इतना असहाय कभी भी महसूस नहीं किया था। अभी कुछ घंटों पहले वो कितनी खुश थी। उसके सामने दुनिया की सारी नेमतें बिछी हुई थीं, जिन पर चलकर वो एक बार फिर से सब पर हूकूमत करने का ख्वाब देख रही थी। मगर... एक ही झटके में सब खत्म हो गया। तांत्रिक श्रेष्ठ को चैतन्य और अनामिका के मार्फत पता चल चुका था कि डाकिनी प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से माया की मदद कर रही थी। इस बार भी
वो उसकी मदद कर सकती थी, इसलिए तांत्रिक श्रेष्ठ ने बड़ी ही चालाकी से उसे इन सबसे दूर रखा और माया की गिरफ्तारी से पहले कोई भी खबर डाकिनी के कानों तक पहुॅ॑चने नहीं दी और अब वो अपने गुनाहों का हिसाब लगाए बैठी थी।

उसके हाथों पर पड़ी शक्तिनियंत्रक बेड़ियों ने उसे पूरी तरह से लाचार कर दिया था। पिछली बार उसने खुद को गिरफ्तार नहीं होने दिया था और अपनी आगे की योजना के अनुसार आत्महत्या करके अपनी आत्मा को मुक्त कर दिया था। उसकी आत्मा किसी की पकड़ में नहीं आई थी.... इसलिए वो आज यहॉ॑ तक पहुॅ॑ची थी। मगर एक बार फिर से वो उसी जाल में फॅ॑सकर अपनी मंजिल के रास्ते से भटक चुकी थी। उसे चैतन्य पर इतना गुस्सा आ रहा था कि उसका शरीर बुरी तरह से बेचैनी और कॅ॑पकॅ॑पाहट का शिकार हो गया था। चैतन्य इतना चालाक निकलेगा... ये उसके वहमोगुमान में भी नहीं था। उसने उसे फॅ॑साने के लिए झूठी और चिकनी-चुपडी बातों का सहारा ना लेकर..... अपने अंदर भरे हुए गुस्से का सहारा लिया... जो इतना सच्चा था कि माया उस सच में लिपटी उसकी चालाकी पकड़ नहीं पाई। पर जो होना था... वो हो चुका था.. और अब वो उस तरफ देख रही थी, जिधर उसका नसीब मुड़ चुका था।

****

"जो मेरी खुशियों के बीच आता है... वो कभी खुश नहीं रहता। तुम भी कभी खुश नहीं रहोगे चैतन्य! कभी नहीं रहोगे। मेरी बद्दुआ का काला साया हमेशा तुम्हारा पीछा करता रहेगा।" अपने सिर के बालों को मुट्ठियों में भींचकर बैठे हुए चैतन्य के कानों में माया के ये सारे अल्फ़ाज शोर बनकर चुभ रहे थे। वो ना जाने क्यों इन्हें नज़रअंदाज़ कर ही नहीं पा रहा था। वो सच में परेशान था। उसकी सोचों की रवानगी पर खलल पड़ा, जब उसने किसी को अपने पास महसूस किया। उसने उस ओर देखा, अनामिका ऑ॑खों में सवाल लिए उसे ही देख रही थी, मगर उन सवालों का जवाब देने की बजाय चैतन्य एक बार फिर से सामने फैले अंधकार की ओर देखने लगा।

"क्या हुआ चैतन्य? परेशान लग रहे हो! सब तो बिल्कुल वैसे ही हुआ... जैसा हमने सोचा था। फिर तुम्हारे इस बेरंग चेहरे की वजह?" आखिरकार अनामिका के होठों पर सवाल आ ही

[illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"I'm here to just to telling about you all that Alfiii
is again spreading Massacre in mansion.. and with great difficulty I controlled him..but you all are responsible for this situation..this is all your fault which you all did earlier... it was not possible if you all are not escaped him from prison..
you guy's never think once.. that it's necessary to tell me anything..but it's okay I understand my responsibilities..Now do whatever you all are want here... and I'm going to punish the culprits there..i think everything is clarified now... (ये बताने आए हैं कि एक बार फिर से अल्फ़ी ने मेंशन में कत्लेआम मचाया है। बड़ी मुश्किल से हमने उसे काबू में किया है और इस सबके जिम्मेदार आप सब हैं, जो उसे हमारी कैद से भगाकर ले गए थे। आप लोग हमें कुछ बताना जरूरी नहीं समझते.. पर हम अपनी जिम्मेदारी समझते हैं। आपको यहॉ॑ जो करना है करें और हम वहॉ॑ अपने मुजरिम को सजा देंगे। मुझे लगता है कि अब... सब साफ़ हो गया है।)" पीटर ने बहुत ही कठोर लहज़े में कहा और उन सब पर हिकारत भरी नज़रें डालता हुआ पलटकर वापस चला गया।

ये सुनकर तांत्रिक श्रेष्ठ और चैतन्य के होश ही उड़ गए। अल्फ़ी एक बार फिर से उनकी कैद में था और वो उसे मारने वाले थे। मगर भविष्य में कहीं जाने वाली कहानी तो कुछ और ही थी।

"हे भगवान! कहीं... वहॉ॑ जो हो रहा है... उसी की वजह से तो अल्फ़ी पिशाच नहीं बन गया।
मुझे जाना होगा। कुछ करना ही होगा।" चैतन्य बुरी तरह से हड़बड़ाते हुए बड़बड़ाया।

"मुझे लगता है कि तुम सही कह रहे हो। अनामिका को साथ लेकर जाना और तुम्हारी उंगलियों में जो धागा मैंने बांधा है, उसे खुलने मत देना।"
तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य का समर्थन करते हुए कहा।

"ठीक है। जल्द ही मिलते हैं।" चैतन्य ने कहा।

"चैतन्य! एक बात और! अल्फ़ी को बता देना कि... सुरमी कबीले वाले वो जीवपात्र देने को राजी नहीं हैं और उनकी मर्जी के बिना वो जीवपात्र लेना इस दुनिया में किसी के बस का नहीं है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने बुझी हुई आवाज में कहा, जिसे सुनकर चैतन्य और भी परेशान हो गया।

"पर तांत्रिक श्रेष्ठ! इस तरह से तो वो.. अनामिका के और भी पीछे पड़ जाएगा।" चैतन्य ने अपनी चिंता जाहिर करते हुए कहा।

"उसके बारे में मत सोचो। तुम दोनों के लिए एक खबर है। आज.... समयद्वार खुलने वाला है। मगर इसी के साथ एक और समस्या है। भविष्य कथन ने कहा है कि... कोई लौटकर आने वाला है, जो भूत, वर्तमान और भविष्य को अपनी चपेट में ले लेगा। इससे पार पाने के बाद ही तुम दोनों वापस जा सकते हो। तो... वहॉ॑ की समस्या सुलझाने के बाद नर्क के द्वार के पास मिलना।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने चैतन्य को बुरी खबर में लिपटी हुई अच्छी खबर सुनाते हुए कहा।

"क्या सच में! हम आज वापस जा सकते हैं! ओह गॉड! आप नहीं जानते... मैं कितना खुश हूॅ॑ ये जानकर। अनामिका भी होगी। ठीक है तो... चलता हूॅ॑।" अपने जज़्बातों को बमुश्किल संभालते हुए चैतन्य ने कहा और फिर जाने के लिए पलटा ही था कि उसने सामने से खींचकर लाती हुई माया को देखा, जो बहुत ही बुरे तरीके से छटपटा रही थी। जल्द ही वो उसके सामने थी। उसे ऐसी हालत में देखकर चैतन्य एक बार फिर से उसे चिढ़ाने के अंदाज में मुस्कुराया।

"बहुत मजा आ रहा है ना तुझे.. मुझे इस तरह तड़पता देखकर। पर तू
नहीं जानता कि मैंने तेरी किस्मत में इससे भी ज्यादा तड़प लिख दी है। बहुत प्यार है ना तुझे उस अनामिका से। बहुत जल्द... तुझसे दूर जाने वाली है वो। इतनी दूर... कि तू चाहेगा तो भी उसे नहीं ढूंढ पाएगा। बस तड़पेगा उसे याद करके। याद रखना मेरी ये बात!" माया उस पर अपनी पूरी नफ़रत उड़ेलते हुए चिल्लाई।

उसकी ये बात सुनते ही चैतन्य आपे से बाहर हो गया और गुस्से में उसकी ओर झपटा। मगर

[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!"
[illegible]

[illegible]

[illegible]

मुझसे समस्या थी तो मेरा सामना करना था। अब तो तुम्हारे गुनाह और भी गंभीर हो गए हैं और इसके लिए तुम्हें आज की रात ही मौत की सजा दी जाएगी।"

और अतीत का जहर एक बार फिर उसे एक और मौत देने को तैयार था, मगर वो नहीं जानता था कि समय अपनी करवट बदलने वाला था।

अल्फ़ी ने खड़े होते हुए चारों ओर देखा। मासूमों की लाशों के ढेर पर शान से खड़ा वो निर्दयी पिशाच बिना किसी शक दुनिया की सबसे घिनौनी चीज लग रहा था। अल्फ़ी ने जमीन पर पड़े उन गार्ड्स की ओर देखा, जो अपने ही खून से नहाए हुए बेजान पड़े थे। अल्फ़ी की ऑ॑खों के पर्दे के सामने उन सभी के हॅ॑सते-मुस्कुराते हुए चेहरे लहरा गए और पल भर में ही उसकी ऑ॑खें नम हुई थीं।

"च्च्च्च्! कैसे पिशाच हो तुम.... जिसकी ऑ॑खें बात-बात पर भर आती हैं। इस तरह टेसुऍ॑ बहाना हम पिशाचों को सूट नहीं करता है। थोड़ी तो पिशाचों की मर्यादा का ख्याल रखो... या फिर... पिता की सारी गिरी हुई आदतें तुम्हें ही विरासत में मिल गई हैं।" एडवर्ड ने बहुत ही हिकारत भरे लहजे में कहा। पिता के अपमान भरे जिक्र ने अल्फ़ी का माथा गर्म कर दिया था। उनके साथ अल्फ़ी ने जो भी वक्त गुजारा था... उसमें वो उनके नर्म दिल और भलमनसाहत को पहचान चुका था।

"सही कहा! बरसते तो वही हैं ना... जो भरे हुए होते हैं! तुम्हारे जैसे खाली और खोखले लोग तो बस शोर करना जानते हैं। उनके अंदर कहॉ॑ ऐसा जज़्बा? छोड़ो! वैसे भी... ये बड़ों की बातें हैं। तुम जैसे छोटे लोगों की समझ में नहीं आएगी। वैसे परिवार में सबसे छोटे होने का ही असर है या फिर ऐसी ओछी और छोटी हरकतें करना शौक है तुम्हारा?" तुम्हारा और
छोटा शब्दों पर जोर डालकर अल्फ़ी ने एडवर्ड के अहंकार पर चोट करते हुए कहा, जिस पर एडवर्ड तिलमिलाया था।

"ओह! मुझे नहीं लगा था कि... अब भी ज़बान में ताकत बची होगी तुम्हारे! पर तुम तो... अभी भी बोल रहे हो.. वो भी मेरे खिलाफ! मालूम नहीं क्या तुम्हें.... कि मुझे... ख़िलाफत पसंद नहीं।" चिढ़े हुए एडवर्ड ने सामने पड़े गार्ड की लाश के चेहरे पर अपने पैर रखकर उसे रौंदते हुए बहुत ही तंजिया लहज़े में कहा।

उसकी इस हरकत से अल्फ़ी बुरी तरह से भड़क गया। वो गुस्से में अपने जबड़े भींचें उसकी ओर बढ़ने को हुआ ही था कि एडवर्ड ने अपना हाथ आगे करके उसे टोका।

"आ...! ना.. ना! ऐसी ग़लती मत करना! तुम्हें कुछ हुआ तो... किसी को कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है, मगर.... मुझे कुछ हुआ... तो चाहकर भी दूसरा जनम नहीं ले पाओगे कभी... बिल्कुल.... अपनी... हेममाया की तरह!" एडवर्ड ने अल्फ़ी की दुखती हुई रग को छेड़ते हुए कहा।

हेममाया के जिक्र से अल्फ़ी विचलित जरूर हुआ... मगर उसने एडवर्ड के सामने ये जाहिर नहीं किया। वो उसके सामने कमजोर पड़ने के लिए नहीं आया था। अल्फ़ी को अच्छी तरह से पता था कि वो कभी भी एडवर्ड की तरह चालाक नहीं हो सकता था और ना ही उसकी तरह चालें चल सकता था। वो बस उसका विरोध कर सकता था और यही उसकी ताकत बन सकती थी। विरोध... हर उस चीज का... जो उसे गलत लगे। अब तक एडवर्ड ने जो भी किया... किया। पर अब वो एडवर्ड को कुछ और गलत नहीं करने देगा।

"मुझे हेममाया का शरीर चाहिए.." अल्फ़ी ने मुद्दे पर आते हुए कहा।
"जो तुम्हें कभी नहीं मिलेगा।" एडवर्ड ने उतनी ही तेजी से उसकी बात काटते हुए कहा।

"तुम चाहते क्या हो एडवर्ड? मुझे मारना? तो लो... तुम्हारे सामने ही खड़ा हूॅ॑ मैं।
बंद करो ये चूहे-बिल्ली का खेल! जो करना चाहते हो कर लो... पर मुझे हेममाया दे दो। वो तो मर चुकी है। हर तकलीफ़ से बाहर जा चुकी है। अब तो उसे बख़्श दो।" अल्फ़ी ने भरे हुए दिल और गले से एक आखिरी बार नर्म लहजे का इस्तेमाल करते हुए कहा।

"नो! नॉट एट ऑल! मैं तुम्हें ऐसी कोई भी वजह नहीं देना चाहता.. जिससे तुम्हें सूकून मिले। तुम अपनी आखिरी सॉ॑स तक तड़पोगे... मौत की भीख मांगोगे.. गिड़गिड़ाओगे.... पर... वो भी नसीब नहीं होगी तुम्हें।" अपने भिंचे हुए जबड़ों के साथ एक-एक शब्द को चबाते हुए एडवर्ड बोला। बोलते हुए उसका सारा चेहरा गुस्से से लाल हो चुका था।

"पर तुम तो मेरी बलि देना चाहते हो ना!" अल्फ़ी ने हैरानी से पूछा।

"अच्छा! तुम्हें ऐसा लगता है! पर अफसोस! तुम ग़लत हो! अभी तो और भी कांटें हैं मेरी झोली में... तुम्हारे दिल में चुभाने के लिए। इतनी आसान मौत थोड़ी ना दूंगा मैं तुम्हें। कहा ना... तुम भीख मांगोगे तो भी मौत नहीं मिलेगी तुम्हें।" एडवर्ड ने जहरबुझी आवाज में कहा।

और ये सुनते ही अल्फ़ी का माथा घूमा था। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि एडवर्ड चाहता क्या है? लेकिन अब वो उसकी बेहूदी और फिजूल बातों से थक गया था। उसने आखिरी बार बात करके सुलह करने की कोशिश की... मगर अल्फ़ी ये बात समझ चुका था कि एडवर्ड टेढ़ी चीज था और उसके लिए टेढ़ा रास्ता अपनाने का समय भी आ चुका था। अल्फ़ी ने अपने कपड़ों में छिपाया हुआ खंज़र बाहर निकाला और एक ही छलांग में वो एडवर्ड के पीछे खड़ा था। इससे पहले कि एडवर्ड कोई
प्रतिक्रिया देता.. अल्फ़ी ने बिजली की तेजी से एडवर्ड की गर्दन को अपनी बांह में फॅ॑साया और फिर उसके घुटनों के पीछे वार करते हुए उसे घुटनों के बल जमीन पर गिरा दिया। एडवर्ड कुछ समझ पाता उससे पहले ही पलक झपकते उसने वो खंज़र एडवर्ड की गर्दन पर टिका हुआ था। उस खंज़र की तेज और ठंडी धार वो बाखूबी महसूस कर रहा था।

"अब बोलो! कहॉ॑ है हेममाया का शरीर? वरना आज तेरी बलि चढ़ाऊंगा मैं।" अल्फ़ी ने गुस्से में थरथराती हुई आवाज में कहा।

पहले तो एडवर्ड अचानक हुए इस घटनाक्रम से भौंचक्का सा हुआ... मगर अगले ही पल एक बार फिर कमीनगी उसकी ऑ॑खों में उतरी। एक वहशी मुस्कान उसके होठों पर आई और वो बोला, "तो मारो! फिर भूल ही जाना हेममाया को... एंड एम प्रॉमिस.... कि तुम्हारी हेममाया का शरीर जानवरों का निवाला बने इसका पूरा इंतजाम कर दिया है मैंने।"

उसकी ये बात सुनते ही उसकी गर्दन पर खंज़र को कसते हुए अल्फ़ी ने कुछ कहना ही चाहा था कि तभी.... दरवाजा खुला और पीटर तेजी से कमरे के अंदर आया। वो परेशान था और परेशानी उसके चेहरे से टपक रही थी। अंदर का नज़ारा देखकर उसकी ऑ॑खें हैरत से सिकुड़ी और फिर अल्फ़ी-एडवर्ड पर जाकर टिक गई। उसे देखकर अल्फ़ी ने एडवर्ड पर अपनी गिरफ्त और भी कसी थी।

"वॉट्स हैप्पिनिंग... हियर?" दोनों पर नजर डालते हुए पीटर ने बड़े ही आराम से आगे बढ़ते हुए सवाल किया।

"वहीं रूको। वरना अभी इसकी गर्दन उड़ा दूंगा।" पीटर को आगे बढ़ता हुआ देखकर अल्फ़ी पूरी ताकत से चिल्लाया। उसकी धमकी को सुनकर पीटर अपनी मुठियॉ॑ भींचकर गुर्राया।
"डोंट वरी अंकल पीटर! वी आर जस्ट टॉकिंग अबाऊट समथिंग वैरी इंपोर्टेंट।" माहौल ब गड़ता देख एडवर्ड ने बड़े ही इत्मीनान से जवाब दिया और उसकी बेफिक्री से अल्फ़ी और भी तपा था।

"लाइक दिस!" पीटर ने हैरत जताते हुए कहा।

"याह! बाई द वे.... यू हैव केप्ट दैट बॉडी इन द राइट प्लेस? अल्फ़ी केयर्स अबाउट हर अ लॉट! राइट अल्फ़ी?" पीटर के साथ ऑ॑खों ही ऑ॑खों में बात करते हुए एडवर्ड ने अल्फ़ी को चिढ़ाते हुए कहा, जिसका असर अल्फ़ी पर साफ दिखाई दिया था।

"ओह याह! एक्जैक्टली एज़ यू विश! शी हैज़ बीन सेंट टू हर राइटफुल प्लेस! बट ऐडी... हियर वी हैव एनॉदर बिग प्रॉब्लम!" पीटर ने इस बार संजीदगी से कहा और ये सुनते ही अल्फ़ी की पकड़ एडवर्ड पर कमजोर पड़ी थी और एडवर्ड ने तुरंत ही इसका फायदा उठाया। उसने अल्फ़ी के हाथों को आगे खींचकर एक तेज झटका दिया, जिससे अल्फ़ी उसके ऊपर से उछलकर उसके सामने पीठ के बल गिरा। वो संभल पाता उससे पहले ही एडवर्ड ने तेजी से उसे उठाकर.... उसकी खंज़र वाली कलाई मरोड़कर... उसी की पीठ से लगाई और फिर अपनी दूसरी

बांह अल्फ़ी की गर्दन में लपेटी। पहली बार अल्फ़ी को पता चला कि एडवर्ड कमीना होने के साथ-साथ ताकतवर भी था।

"बिग ब्रदर! सिर्फ ताकत होने से कुछ नहीं होता। हमसे जीतने के लिए हमारे जितना कमीनापन कहॉ॑ से लाओगे?" एडवर्ड ने अल्फ़ी का खंज़र उसी की गर्दन पर रखते हुए कहा।
अल्फ़ी उसकी पकड़ में छटपटाकर रह गया।

"ऐडी! लीव दिस स्टुपिड! वी लॉस्ट हर!" सामने की उठा-पटक से उकताकर पीटर ने बहुत ही उतावलेपन से कहा और ये सुनते ही एडवर्ड के
चेहरे का रंग भी भक्क से उड़ा था।

"एंड हू टोल्ड यू दिस?" एडवर्ड ने उतनी ही गंभीर आवाज में पूछा।

"दे टोल्ड! इवन... शी डिडन्ट नो अबाउट दिस! व्हेन शी केम टू नो.... आफ्टर दैट... शी आल्सो सेंट अस द न्यूज एंड नाऊ वी नीड टू चेंज अवर प्लान! देयर इज़ नो अदर वे फॉर अस।" पीटर ने अल्फ़ी की ओर इशारा करते हुए बड़ी ही चिढ़ के साथ कहा।

"मुझे पता था! मैं जानता था कि ये औरतें किसी काम की नहीं। अब मैं इनके भरोसे में नहीं रह सकता। वरना इतने सालों की मेहनत और इंतजार बर्बाद हो जाऍ॑गे। भाड़ में जाऍ॑ सब! हम अपना काम शुरू करते हैं।" एडवर्ड भी गुस्से में ज्वालामुखी बनते हुए बोला।

अल्फ़ी उन दोनों की बातों को समझने की कोशिश कर रहा था, मगर उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। कौन खो गई? किसकी बात कर रहे थे ये दोनों? कहीं परिधि की तो नहीं? अनामिका ने उसे बताया था कि वो गायब है। उसके साथ ये दोनों क्या करने वाले थे? सवालों का एक तेज बवंडर उसे अपने साथ उड़ा ले जाने को तैयार था, जिसकी मंजिल कहीं नहीं दिख रही थी। पर हॉ॑... वो इतना जरूर समझ गया था कि उन दोनों को अब उसकी जरूरत है। इसलिए उसने उनके सामने खुद को लाचार छोड़ रखने में ही बेहतरी समझी। उसे हर हाल में सजा के समय से पहले हेममाया के शरीर तक पहुॅ॑चना था और इसके लिए वो कुछ भी करने और कुछ भी झेलने को तैयार था।

"ओके! कॉल द गार्ड्स!" एडवर्ड ने पीटर से कहा और फिर पीटर तेजी से बाहर चला गया।

"लगता है कि ऊपर वाले को तुझपर रहम आ गया। तैयार हो जा मरने के
लिए। पर मरने से पहले तुझे एक बार फिर से तड़पता हुआ देखना चाहता हूॅ॑। बोल! देखेगा अपनी माया को जलते हुए। अब तो उसे हम भी सुरमी कबीले के गुस्से से नहीं बचा सकते। तुझे जानना था ना... कि तीन दिन पहले मरने के बाद भी सबको क्यों लग रहा है कि वो जिंदा है! वो क्या है ना! परिधि ने ही अपनी दवा से उसके शरीर को इस तरह जिंदा हालत में रखा है। मतलब कि.. उस दवा के कारण किसी को पता ही नहीं चलेगा कि हेममाया तीन दिन पहले ही मर चुकी है। मानता है ना परिधि को। सच तो यही है कि... कुछ नहीं करके भी वो ही हमारे सारे षड्यंत्र की कर्ता-धर्ता है। सब उसी का किया धरा है। अगर वो नहीं होती... तो हम कभी भी कामयाब नही होते। उसने भी... हमने जो कहा... बिना सवाल किए चुपचाप किया। उसे... शुक्रिया जरूर कहूंगा मैं!" एडवर्ड ने एक और खुलासा करते हुए अल्फ़ी के अंदर परिधि के नाम का जहर भरा था।

"परिधि!" अल्फ़ी मन ही मन में गुर्राया था।

उसी समय कुछ गार्ड्स वहॉ॑ पहुॅ॑चे। उन गार्ड्स ने अल्फ़ी के हाथों में शक्तिनियंत्रक बेड़ियॉ॑ पहनाई और उसे अपने क़ब्ज़े में ले लिया।

"अंकल कहॉ॑ हैं?" एडवर्ड ने पूछा।

"सर! बाहर डाकिनी आई हुई हैं। उन्हीं से बात कर रहे हैं।" एक गार्ड ने जवाब देते हुए कहा।

"वो इस समय यहॉ॑ क्या कर रही हैं?" एडवर्ड ने जानकारी लेनी चाही।

"पता नहीं सर! पर वो बहुत परेशान लग रही हैं। रो भी रही हैं।" एक दूसरे गार्ड ने कहा।

"[illegible]
[illegible]" [illegible]

"Eddy! It's gone wrong. Maya has confessed all her crimes in front of the Surmai sardar. Now they are going to punish her. They don't want Hemamaya anymore. Dakini has come here to ask for help.([illegible])" [illegible]

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"Chaitanya! He is the one who did it. I already told you not to underestimate him. You have made a big mistake by falling prey to Maya's words. It is thankful that Maya did not take our name. Otherwise everything would have been ruined today. ([illegible])" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"What are you doing, Eddy? Everything is messed up. We should focus on our purpose. Let everyone go to hell! You go there! I come there after meeting all of them. Now we don't have both.... time and opportunity.("[illegible]
[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]
[illegible]"
[illegible]

[illegible]

****

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"It's all her fault only. We can't help her in all this
mess. ([illegible])" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"Stay within your limits! You will be the 'Dakini' of your community but for us...

You are no more than dust under our feet. And... what kind of help are you talking about? It is your daughter who has spoiled everything. Her and her mischievous habits! Whenever.... wherever she saw a handsome guy...! Huhhh..! It would have been better if you had taught her to live with some manners and etiquette. Today, because of her... our years of hard work are on the verge of being ruined. If our work is not done properly... then like your daughter. You too will suffer. Remember! (अपनी औकात में रहो! होगी तुम डाकिनी अपने समुदाय की। हमारे लिए पैर की धूल से ज्यादा नहीं हो। और किस मदद की बात कर रही हो? तुम्हारी बेटी ने ही तो सब बिगाड़कर रख दिया। उसकी और उसकी मनचली आदतें! जब भी.... जहॉ॑ भी कोई खूबसूरत लड़का देखा... ! हुंह..! अच्छा होता कि उसे थोड़ी तमीज और
तहजीब से रहना सिखाया होता। आज उसकी वजह से हमारी बरसों की मेहनत बर्बाद होने की कगार पर है। अगर हमारा काम सही तरीके से नहीं हुआ... तो तुम्हारी बेटी की तरह तुम भी भुगतोगी। याद रखना!)" पीटर ने भी भड़कते हुए एक-एक शब्द चबाते हुए कहा।

"तुम ये सही नहीं कर रहे हो! चाहूं तो तुम्हारा भी बहुत कुछ बिगाड़ सकती हूॅ॑। ये मत समझना कि मुझे कुछ पता नहीं है। मेरी एक आवाज और बहुतों की शक भरी नज़रों में आ जाओगे तुम। फिर समझाते रहना सबको।" पीटर की और उंगली उठाकर डाकिनी भर्राए हुए गले से चेतावनी देते हुए बोली।

उसकी बात सुनकर पीटर की नज़रें उस पर पैनी हुई थीं। उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए वो बोला, "Are you trying to threaten? (क्या तुम धमकी देने की कोशिश कर रही हो?)"

"कोशिश नहीं... धमकी दे रही हूॅ॑! मेरी बेटी को कुछ हुआ तो तुम्हारा एडवर्ड भी नहीं बचेगा। तुम भी ये याद रखना।" डाकिनी पूरी तरह सुलगते हुए बोली।

उसकी ओर अपनी एक उंगली उठाकर गुस्से में फुंफकारते हुए पीटर आगे बढ़ा ही था कि तभी उसे उस सहन में दूसरी ओर से आती हुई कुछ आहटों ने रोक दिया। दोनों का ही ध्यान उस ओर गया। मेहमानों का एक जत्था उन दोनों की ओर ही हैरानी से देख रहा था। मेहमानों की नज़र खुद पर पाकर पीटर ने तेजी से अपनी उंगली नीचे की और फिर डाकिनी पर एक ज़हर भरी नजर डालता हुआ मेहमानों की ओर एक शानदार औपचारिक मुस्कुराहट के साथ बढ़ गया।

उनके पास जाकर उसने उन सबका अपनी परंपराओं के अनुसार गर्मजोशी से स्वागत किया। चूंकि सभा होने में देर थी... इसलिए सभी पिशाच
मेहमानों को मेंशन में ही समारोह में बुलाया गया था। तांत्रिक और डायन समुदाय भी अपने मेहमानों में व्यस्त थे। मगर हवाओं में माया के नाम के पर्चे बिखर चुके थे और अब परिस्थितियॉ॑ हर गुजरते हुए समय के साथ विकट होती जा रही थीं। तीसरे पहर में होने वाली सभा का अस्तित्व भी खतरे में ही दिखाई दे रहा था। ऐसे समय में पीटर के सामने डाकिनी की उठी हुई ऊंगली उन मेहमानों के माथे पर शिकन और मन में कई सवाल दे गई। पीटर ने उन सभी से सब ठीक होने की बात कहते हुए जिम्मेदार अधिकारियों से मेहमानों को पूरे सम्मान के साथ बॉलरूम की ओर ले जाने के लिए कहा। उनके वहॉ॑ से जाते ही वो धड़धड़ाते हुए वापस आया और डाकिनी की ओर अपनी ऊंगली उठाकर दहकती हुई ऑ॑खों के साथ भड़ककर बोला,

"Before things get even worse out of our hands… get out of here… because after that… no one will be able to save you from me. (चीजें हमारे हाथों से और भी निकले... इससे पहले जाओ यहॉ॑ से... क्योंकि फिर उसके बाद.... तुम्हें मुझसे कोई नहीं बचा सकेगा।)"

उसकी धमकी सुनते ही डाकिनी का चेहरा गुस्से की आग से लाल हो गया। उसकी ऑ॑खें अपमान की नमी को समेटने में नाकाम हो चुकी थी। वो अपने समुदाय की मुखिया थी... सर्वेसर्वा थी। सबके लिए फैसले लेती थी... सबको न्याय देती थी। पर आज जब खुद अपनी बेटी की बात आई तो वो दूसरों के सामने झुकने के लिए मजबूर थी।

सच तो यही है कि जब लोग कामयाब होने के लिए ग़लत रास्ते पर चलते हैं... ग़लत का साथ देते हैं... तब उस समय मिली कामयाबी की चमक उनकी ऑ॑खें चौंधिया देती हैं... तब उस तेज रोशनी में उन्हें नज़र नहीं आता कि आगे चढ़ने के लिए सीढ़ियॉ॑ कब का खत्म हो चुकी हैं..... और फिर जब वो वहॉ॑ से गिरते हैं... तब वापस ऊपर जाने का कोई रास्ता नहीं होता है। माया के साथ यही हुआ था और शायद... एडवर्ड के साथ भी यही होना था।

[illegible]

****

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"This is not your fault. You women have always been less intelligent! (ये तुम्हारी गलती नहीं है। तुम औरतें हमेशा से ही कमअक्ल रही हो!)" पीटर ने उसका मजाक उड़ाते हुए कहा, जिस पर डाकिनी का पारा गर्म हुआ था।

"तुम्हारी इतनी हिम्मत!" कहते हुए डाकिनी उसकी ओर झपटी, जिसे पीटर ने अपना हाथ आगे करके रोका था।
"No! No! Don't do such a stupid thing! Otherwise you will be shocked thinking about your consequences. (ना! ना! ऐसी बेवकूफी ना करना! वरना अपने अंजाम के बारे में सोचकर तुम्हारी रूह कॉ॑प जाएगी।)" पीटर ने चेतावनी भरी लहजे में उसे नजर गड़ा कर देखते हुए कहा।

"जो कहना है साफ-साफ कहो!" आखिरकार डाकिनी ने झुंझला कर कहा।

उसे कोई जवाब मिलता उससे पहले ही कोई भारी भरकम चीज उसके पैरों के पास जाकर गिरी। डाकिनी घबराकर दो कदम पीछे हुई थी। उसने अंधेरे में देखने की कोशिश की मगर कुछ भी दिखाई नहीं दिया। वो कुछ सोचती या करती... उससे पहले ही बग्घी के कोचवान की सीट के पास लगे हुए लैंप अपने आप जल उठे। डाकिनी की ऑ॑खें हैरत से फैल गईं, जब उसने अपने पैरों से कुछ दूर गिरी उस भारी भरकम चीज को देखा। वो उसका कोचवान था। वो उसके सामने बर्फ़ की तरह सफेद ऑ॑खें और चमड़ी लिए पड़ा था। उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे कि उसके शरीर में खून का एक भी क़तरा न हो। उसकी ऐसी हालत देखकर डाकिनी के हाथ पैर फूलने लगे। सदमे से ऑ॑खें फटने की हद तक बाहर आ गई थीं। तभी उसे अपने पीछे बग्घी के ऊपर किसी के कूदने की आवाज सुनाई दी। उस आवाज को सुनकर उसके कान खड़े हो गए। उसके अंदर हिम्मत नहीं थी कि वो पीछे मुड़कर देखे। पर उसकी भरी हुई ऑ॑खों ने सामने खड़े पीटर को जरूर देखा जिसकी नजर उसके पीछे खड़ी बग्घी पर टिकी हुई थी और वो बड़ी ही बेरहम मुस्कान के साथ सामने वाले को देख रहा था। डाकिनी के माथे से पसीना बहकर उसके पूरे चेहरे को तर कर गया था। वो बाहर से जितनी भीग गई थी, अंदर से उसका जिस्म उतना ही सूख चुका था। बहुत कोशिश करने के बाद भी इतना पानी इकट्ठा ना हुआ, जो उसके हलक़ को गीला कर पाता। वो अपने अंदर के डर से जूझ ही रही थी कि तभी एक सर्द चुभती हुई आवाज उसके कानों से टकराई।
"डाकिनी!"

और ये सुनते ही डाकिनी ने अपने कान जोरों से बंद कर लिए। उसे ऐसा लगा कि अगर अगली बार उसने ये आवाज़ सुनी तो उसके कानों से खून निकल जाएगा। उसी तरह खड़े हुए ही वो धीरे से पीछे मुड़ी और धीरे से अपनी सहमी हुई नज़र बग्घी की छत पर डाली। अगले ही पल अपनी फटी हुई ऑ॑खों से उसने वो नज़ारा देखा। वो साया अंधेरे की चादर में अपनी पहचान छिपाए मौत का रूप बनकर खड़ा था। चॉऺद ठीक उसके पीछे पेड़ों के बीच से झांक रहा था।

"क... क.. कौन हो तुम?" बड़ी ही मुश्किल से डाकिनी के गले से आवाज बाहर आई।

और उसका ये सवाल सुनते ही वो साया एक लंबी छलांग लगाकर ऊपर आसमान में खो गया। डाकिनी की ऑ॑खें उसकी इस हरकत पर एक सोच के साथ सिकुड़ गई। वो कोई अनुमान लगाती उससे पहले ही उसके ठीक पीछे धप्प की आवाज सुनकर उसकी सिकुड़ी हुई ऑ॑खें हैरत से फैल गईं। बग्घी के लैंप एक बार फिर से बुझ चुके थे। सूखे होंठों पर ज़बान फेरते हुए वो अपने कॉ॑पते हुए शरीर के साथ पीछे मुड़ी और एकदम से वो चेहरा उसकी ऑ॑खों के सामने आ गया। उसकी नज़र के सामने एक जोड़ी सुलगती हुई ऑ॑खें थीं, जिसे डाकिनी ने अपने अंदर उतरता महसूस किया। डर से फैली हुई ऑ॑खें धीरे-धीरे शांत होने लगी और कुछ ही देर में वो सम्मोहित नज़र आने लगी। वो साया उसके चारों ओर घूमते हुए एक बार फिर से उसके सामने आ गया।

"डाकिनी! अब तुम वही करोगी... जो मैं कहूंगा। तुम माया को बचाने नहीं
जाओगी। तुम वापस बसेरे में जाओगी और वहीं रहोगी। तुम उस बसेरे को अपने जादू से इस तरह बांध दोगी, जिससे उसके अंदर जाने वाला फिर बाहर ना निकल सके। उसके बाद मैं तुम्हें जैसा आदेश दूंगा... तुम वैसा ही करोगी। जाओ! बसेरे वापस जाओ!" इतना कहकर वो साया मुस्कुराया था, जिससे उसके किनारे के पैने दॉ॑त चॉ॑द की रोशनी में चमके थे। डाकिनी बिना कोई हरकत किए उसकी ओर देख रही थी। उसी समय उस साए ने एक और लंबी छलांग लगाई और एकदम से डाकिनी की तंद्रा टूटी। उसने हैरानी से चारों ओर देखा। घुप्प अंधकार छाया हुआ था। बिखरे हुए होश के साथ उसने जमीन पर नज़र डाली। वहॉ॑ कुछ भी नहीं था।

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]"

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]! [illegible]

"[illegible]! [illegible]!"

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"[

[illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

दिया।
"वहॉ॑ हमारा कोई जादू नहीं चलेगा। इसलिए हाथ-पैर चलाने के लिए तैयार रहो। तुम्हें क्या लगता है पिशाचों ने अपनी इतनी महत्वपूर्ण जगह को किसी भी जादू से सुरक्षित रखने का इंतजाम नहीं किया होगा! वो पिशाचों की बहुत ही गोपनीय जगह है, जहॉ॑ उनके अलावा और कोई नहीं आ सकता है।" चैतन्य ने अनामिका की बात काटते हुए कहा।

"हे भगवान! क्या फायदा... हमारी ताकतों का फिर!" अनामिका ने अपना सिर पीटते हुए कहा।

"अनु! हम इस समय एक जादुई दुनिया का हिस्सा हैं। यहॉ॑ बस हमारे पास ही जादू नहीं है। यहॉ॑ तो हर अगला मिलने वाला आदमी जादुई है। याद रखो... जब ताकतें एक सी हो.. तो जो पहला मजबूत वार करे... पलड़ा उसी का भारी होता है। तो अपनी जादुई उंगलियों के साथ-साथ अपने मस्तिष्क की ताकत को भी ज्यादा से ज्यादा सक्रिय रखो।" चैतन्य ने एक खंज़र अपने कपड़ों में छुपाकर उस बक्से को बंद करते हुए कहा।

"समझ गई!" अनामिका ने मुस्कुराकर कहा।

"उस जगह सिर्फ पैशाचिक शक्तियॉ॑ ही काम करेंगी और तो और.... शायद अपराधी होने की वजह से अल्फ़ी की ताकतें भी निष्क्रिय हो सकती हैं। तो..." कहते हुए चैतन्य ने अनामिका की ओर देखा।

"यही कि... हमारी स्थिति उनकी तुलना में कमजोर है।" अनामिका ने चिढ़ी हुई आवाज में कहा।

"हम्म!" चैतन्य ने अगला बक्सा खोलते हुए कहा और उसमें से कुछ गोले निकाल कर अनामिका की ओर बढ़ाए।
"क्या ये..." अनामिका ने ऑ॑खें फाड़कर उन गोलों को देखा।

"धुआंगोला है ये! काम आएगा!" कुछ गोले उसने अपने पास भी रखते हुए कहा और अगले बक्से की ओर बढ़ गया। उसने उसमें से चॉ॑दी के बने नुकीले का॑टे निकालकर कुछ अनामिका को दिए और कुछ अपने पास रखे।

"चलो!" कहते हुए वो मशाल पकड़कर एक ओर बढ़ गया। अनामिका सब समझती हुई उसके पीछे चल दी। आगे एक टूटा हुआ आईना रखा हुआ था।

"यही होना चाहिए!" कहते हुए चैतन्य ने उस आईने के एक हिस्से को पूरी ताकत से अपने हाथों से दबाया। थोड़ी मेहनत करने के बाद वो किसी दरवाजे की तरह बाहर की ओर खुल गया। चैतन्य ने गर्दन बाहर कर एक बार फिर हालातों का जायजा लिया। सामने घुप्प अंधकार के साथ सन्नाटा पसरा हुआ था। वो धीरे से बाहर निकला और फिर कुछ दूर आगे तक गया, जब तक कि उसे मशाल की रोशनी में सामने एक मुड़ता हुआ रास्ता दिखाई नहीं दिया। अच्छी तरह इत्मीनान कर लेने के बाद उसने पीछे मुड़कर देखा और हाथ के इशारे से अनामिका को आने के लिए कहा। अनामिका ने दरवाजा बंद किया और फिर धीमे कदमों के साथ उसके पास आ गई। उन दोनों ने ही अपने छिपे हुए खंज़रों पर पकड़ मजबूत कर ली थी। उस मोड़ पर मुड़ते ही उन्हें दूर हल्की सी रोशनी सी नजर आई। उसे देखते ही चैतन्य ने मशाल मोड़ के दूसरी ओर रख दी और सधे हुए कदमों से आगे बढ़ता गया। अनामिका भी चारों ओर नज़र रखे उसके पीछे- पीछे चल रही थी। कुछ दूर आगे जाकर उन्हें आहट सी सुनाई दी और वो दोनों ही एकदम से रूके थे।

"मैं आगे चलता हूॅ॑। तुम पीछे से मुझे कवर करो! और हॉ॑... कुछ भी हो जाए... इमोशनल फूल मत बनना क्योंकि हमारा दुश्मन बेरहम है। कुछ
भी हो सकता है। हर परिस्थिति के लिए खुद को तैयार रखना। समझी!" चैतन्य ने अनामिका को समझाते हुए कहा।

"हम्म!" अनामिका ने हुंकारी भरी और फिर आगे बढ़कर उसके गाल पर अपने होंठ रख दिए।

चैतन्य ने अपने उस गाल को सहलाया और फिर एक नाराज़गी भरी नज़र उस पर डालते हुए बोला, "चीटर!"

"चीटर नहीं! ये तो इसलिए कि.... कहीं मर-खप गए... तो कम से कम तुम्हें अफसोस तो नहीं

होगा।" अनामिका ने अपनी हॅ॑सी को दबाते हुए कहा और फिर उसे आगे बढ़ने का इशारा किया।

"अफसोस! अब तो पूरा पिशाच समुदाय भी आ जाए... मैं नहीं मरने वाला! तुम्हारी सारी चीटिंग्स का हिसाब जो लेना है मुझे।" चैतन्य ने अपनी एक भौंह चढ़ाकर कहा।

"देखते हैं!" अनामिका ने भी जैसे चुनौती देते हुए कहा।

"वेट.... एंड वॉच!" चैतन्य ने अपनी उंगलियों से इशरा करते हुए कहा और फिर आगे बढ़ गया। उसके आगे जाते ही अनामिका ने गंभीरता से उसकी ओर निगरानी रखी और अपनी बारी का इंतजार करने लगी।

चैतन्य धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया। थोड़ा आगे बढ़ते ही अचानक दो गार्ड्स उसके सामने आ गए। उन दोनों के ही हाथों में तलवारें थीं। चैतन्य उन दोनों को देखते ही सचेत हुआ और उनके आक्रमण का इंतजार किया। अगले ही पल उनमें से एक ने चैतन्य पर तलवार से हमला किया। चैतन्य ने झुककर उस हमले से खुद को बचाया और फिर हाथों को जमीन पर टिकाकर अपने एक पैर को घुमाते हुए उस गार्ड के पैरों पर प्रहार किया,
जिससे वो लहराकर मुॅ॑ह के बल गिर गया। चैतन्य ने अगले ही पल उसकी गर्दन को अपने बाईं बांह में दबोच लिया। ठीक उसी समय उसने फुर्ती से दूसरे गार्ड के प्रहार को अपने सीधे हाथ से रोका और उसकी कलाई को बेरहमी से मरोड़ दिया। वो गार्ड चीख पाता उससे पहले ही चॉ॑दी का एक नुकीला कॉ॑टा उड़ता हुआ आया और उस गार्ड की गर्दन में धॅ॑स गया। वो गार्ड कोई आवाज किए बिना नीचे गिर गया। चैतन्य ने उस तरफ देखा तो अनामिका अपनी ऊंगलियों पर फूंक मारती दिखी। चैतन्य ने अपना खंज़र निकाला और अपनी गिरफ्त में मौजूद गार्ड के मुॅ॑ह को बंद करते हुए उसके सीने में उतार दिया। उसके मृत शरीर को जमीन में फेंकते हुए वो ऊपर उठा और अनामिका की ओर अपना अंगूठा उठाते हुए फिर आगे बढ़ गया।

धीरे-धीरे आगे बढ़ते हुए वो एक जगह पर आकर रूका। उसने अनामिका को इशारे से रूकने के लिए कहा। सामने एक खिड़की थी। उसने उसमें से झांककर देखा और उसके होंठों पर मुस्कान आ गई। वो वही गोपनीय न्यायालय था, जिसके बारे में तांत्रिक श्रेष्ठ ने बताया था। उसने अनामिका को पास बुलाया। अंदर भीड़ में साभ्रांत वेशभूषा में पिशाचों की अच्छी खासी संख्या थी और सभी चेहरे से ही दुष्ट दिखाई दे रहे थे।

"ये सब मिलकर अपनी ताकत बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। फैसला तो बस एक बहाना है... अपनी काली करतूतों को सफेद अमलीजामा पहनाने (सही तरीके से कार्यान्वित करना) का। एडवर्ड इन सबकी मदद से अपनी स्थिति मजबूत करना चाहता है। या फिर शायद... उसने कर ली है।" चैतन्य ने अनामिका से फुसफुसा कर कहा।

"अल्फ़ी!" अनामिका ने बेचैनी से पूरे कमरे में नज़र दौड़ाते हुए कहा।

"अभी नहीं लाए हैं उसे।" चैतन्य ने भी चारों ओर नज़रें दौड़ाते हुए कहा।
अभी वो दोनों बातें कर ही रहे थे कि तभी एक शोर सा उठा। उन दोनों ने देखा कि तीन उम्रदराज पिशाच अंदर की ओर आ रहे थे। चैतन्य और अनामिका दोनों ने ही उन्हें पहचान लिया। ये वही जज थे.. जिन्होंने अल्फ़ी को मौत की सजा सुनाई थी। उन दोनों ने ही एक गहरी साॅ॑स ली क्योंकि अल्फ़ी को लाने का आदेश दिया गया था। अनामिका की ऊंगलियॉ॑ एक बार फिर से उस खिड़की के किनारों पर कस गईं थीं और नज़रें बिना किसी खलल के अंदर आने वाले दरवाजे पर टिकी थीं। कुछ ही पलों के इंतजार के बाद पहले की तरह ही अल्फ़ी को जानवरों की तरह जंजीरों में जकड़कर लाया गया। मगर इस बार एक अंतर दिखाई दे रहा था। बुरी तरह जकड़े होने के बाद भी अल्फ़ी के होठों पर एक चिढ़ाने वाली मुस्कुराहट थी। वो किसी भी तरह के डर से आजाद और बेफिक्र नज़र आ रहा था। उसे इस तरह देखकर अनामिका ने राहत महसूस की।

"ये एडवर्ड और पीटर कहॉ॑ रह गए?" अनामिका के जज़्बातों से बेखबर चैतन्य ने चारों ओर देखते हुए कहा।

उसने इतना बस कहा था कि तभी एडवर्ड और पीटर अंदर आते दिखाई दिए। उनके चेहरे पर भी एक अलग ही तरह की संतुष्टि भरी मुस्कराहट थी। अंदर आते हुए जब एडवर्ड, अल्फ़ी के सामने से गुजरा... तब किसकी मुस्कुराहट ज्यादा कुटिल थी... ये बता पाना मुश्किल ही था।

एडवर्ड और पीटर दोनों ही आगे जाकर बैठ गए। एक बार फिर से अल्फ़ी पर मुकद्दमा शुरू

हुआ, जो यकीनन इस बार ज्यादा ही द्वेषपूर्ण था। पिछली बार अन्य समुदायों की उपस्थिति की वजह से सबने अपने व्यवहार में नर्मी का एक खोल चढ़ा रखा था, जिसे इस बार वो सब उतारकर आए थे। एडवर्ड ने अपनी बातों से उनके जहरीले मन में अल्फ़ी के लिए और भी जहर भरते हुए उसके आज दिनभर के क्रियाकलापों और उसकी वजह से उन्हें होने वाली तकलीफों के बारे में बताया और रात मेंशन में गार्ड्स की हत्या का आरोप भी उसी पर बढ़ दिया। एडवर्ड की
बात खत्म होते ही उस कमरे में गहमागहमी बढ़ गई। एक-एक करके सभी अपने विचार सामने रखने लगे, जो यकीनन अल्फ़ी के खिलाफ थे। अल्फ़ी भी पता नहीं अपने मन में क्या छिपाए हुए शांत खड़ा हुआ था। उसकी मनोस्थिति किसी को भी समझ में नहीं आ रही थी।

"तो एडवर्ड! अब आप बताइए कि इसका क्या किया जाए? हमसे ज्यादा... अब ये आपका दोषी है।" एक जज ने एडवर्ड से मुखातिब होते हुए कहा।

"आपका शुक्रिया! मैं भी अब इसे जल्द से जल्द अपने तरीके से सजा देना चाहता हूॅ॑। इसे और इसकी उस गुनहगार पत्नी को भी। इन दोनों को तिल-तिल कर मरते देखना ही मुझे राहत दे सकता है।" एडवर्ड ने अपने दिल की बात सबके सामने रखी और ये सुनकर अल्फ़ी के होठों पर एक उदास सी मुस्कुराहट आई थी।

"सर्वशक्तिमंडल की सभा का इस तरह विखंडित होना अच्छी बात नहीं है। ये तो अशुभ की ओर इशारा कर रहा है।" एक दूसरे जज ने अपनी राय रखते हुए कहा।

"मुझे तो ये सभा का कॉन्सेप्ट ही फिजूल लगता है। पता नहीं उन डायनों और तांत्रिकों को इतनी अहमियत क्यों दी जाती है? मेरी मानिए! खत्म कीजिए इसे!" पीटर ने भी अपने तरीके से एक बात उठाई, जिसे सुनकर वहॉ॑ मौजूद सभी लोगों के बीच फुसफुसाहटें फैल गईं।

"बात तो तुम्हारी सही है, मगर हमारे पास ये करने के लिए कोई पुख़्ता जमीन भी चाहिए। हम उन्हें क्या कहकर अलग करेंगे?" एक रसूखदार ने पूछा।

"उसकी आप चिंता ना करें। डायनों ने फिलहाल अपनी इतनी फजीहत
करा ली है कि उनकी बात कोई सुनेगा भी नहीं और उनकी तरफ से कोई बोलेगा भी नहीं। रही बात तांत्रिक समुदाय की... तो उनके भी एक सदस्य ने हालिया घटी घटनाओं में डायनों की पूरी मदद की है।" एडवर्ड ने उन सबके सामने उनकी समस्या का हल रखते हुए कहा और ये सुनते ही अल्फ़ी, अनामिका और चैतन्य के कान खड़े हुए थे।

"और कौन है वो?" एक साथ कई आवाजें आई।

"वो... वहॉ॑ है!" एडवर्ड ने झटके से उसी खिड़की की ओर ऊंगली उठाकर कहा, जहॉ॑ अनामिका और चैतन्य खड़े थे। हालात को करवट बदलता देखकर अनामिका और चैतन्य ने उसी ओर भागना चाहा, जिधर से वो दोनों आए थे। मगर वो रास्ता अब खाली नहीं था।

"तांत्रिक श्रेष्ठ से मिलने के बाद जब से यहॉ॑ का रूख किया तुम दोनों ने... हमारी नज़रें तुम पर ही थी। बस यहॉ॑ पहुॅ॑चने में देर हो गई। लगा नहीं था कि तुम ये वाला रास्ता पकड़ोगे।" सामने मौजूद गार्ड्स में से एक बोला और वो दोनों समझ गए कि... वो एक बार फिर से फॅ॑स चुके थे। दोनों के अंदर एक झल्लाहट ने सिर उठाया। वो सब कितनी भी कोशिश कर लें... एडवर्ड हमेशा उनसे चार कदम आगे ही रहता था। वो कुछ सोचते उससे पहले ही पीछे से भी कुछ गार्ड्स ने आकर उन दोनों को घेर लिया।

"चलो!" उसी गार्ड ने अपनी तलवार उनकी ओर उठाकर घुड़कते हुए कहा। चैतन्य ने अनामिका की ओर देखा.. वो भी उसे ही देख रही थी। चैतन्य ने उनकी बात मानते हुए कमरे की ओर कदम बढ़ा दिए। अनामिका भी साथ ही चल रही थी। जैसे ही वो दोनों उस कमरे में पहुॅ॑चे... अनामिका को देखकर अल्फ़ी के चेहरे की मुस्कुराहट पल भर में गायब हो गई। वो उसे इन पिशाचों के बीच पाकर बुरी तरह से छटपटाया था। उसकी छटपटाहट पर नज़र पड़ते ही एडवर्ड के चेहरे की मुस्कान चौड़ी हो गई। वो हमेशा से यही तो चाहता था... अल्फ़ी को तड़पते हुए देखना।
"क्या हुआ? उसे यहॉ॑ देखकर तकलीफ़ हुई! है ना!" अल्फ़ी के सामने जाकर अल्फ़ी को और भी सुलगाते हुए कहा। अल्फ़ी उसकी बात सुनकर गुर्राते हुए उसके ऊपर झपटा, मगर उसकी जंजीरों को पकड़े हुए गार्ड्स ने खींचकर उसे एडवर्ड से दूर किया।

"च्च्च्च्! तुम लोगों को अपने ऊपर गुस्सा - तरस कुछ भी नहीं आता क्या? हमें हराना चाहते हो और बार-बार मेरे बिछाए जाल में ही फॅ॑स जाते हो।" एडवर्ड ने उन तीनों पर व्यंग्यबाण छोड़ते हुए कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य ने अपने दॉ॑त भींचते हुए चेहरा दूसरी ओर कर लिया।

"जैसा कि आप लोग देख रहे हैं कि ये तीनों ही हमारे लिए कितने बड़े खतरे हैं? इनकी वजह से हमें ना जाने क्या-क्या परेशानियां उठानी पड़ी हैं। अपने पिता तक को खो दिया हमने। पर अब बस! हम और कुछ बर्दाश्त नहीं करेंगे। अब बस सजा सुनाई जाएगी। और सबसे पहले बारी है इसकी!" कहते हुए एडवर्ड ने अपनी ऊंगली एक ओर की। सबने देखा कि उस ऊंगली का इशारा अनामिका की ओर था। उसकी बात सुनकर चैतन्य, अल्फ़ी और अनामिका तीनों ही सकते में आ गए। एडवर्ड के इशारा करने पर गार्ड्स अनामिका को ढकेलकर उस कमरे के बिल्कुल बीचों-बीच ले गए। अल्फ़ी और चैतन्य दोनों की ही नज़रें अनामिका पर थीं और वो मुसीबत में थी।

"तो फिर आज मैं एडवर्ड... आपके सामने... डायनों की समस्या को हमारे सामने से पूरी तरह खत्म कर देता हूॅ। ये डायनें... ये औरतें... हमारी जादुई दुनिया पर एक धब्बे की तरह हैं और जो हमें हमेशा परेशान करती रहती हैं। क्या कहते हैं आप सब? खत्म कर दिया जाए इन्हें?" एडवर्ड ने ऊॅ॑ची आवाज में चिल्लाकर जैसे वहॉ॑ मौजूद पिशाचों से सहमति मांगी, जिस पर सभी ने शोर मचाये हुए अपना समर्थन जाहिर किया।
"तो सबसे पहले इनका ठिकाना खत्म किया जाए! ठिकाना ही नहीं रहेगा... तो ये रहेंगी कहॉ॑ पर?" एडवर्ड ने एक बार फिर से चिल्लाकर कहा, जिस पर सभी ने हूटिंग करते हुए अपना समर्थन दिया।

"तो फिर... ये देखो!" कहते हुए एडवर्ड ने अपनी ऑ॑खें बंद की और जोर से चिल्लाया, "डाकिनी!"

उसके ऐसा बोलते ही कमरे में एकदम से सन्नाटा छा गया। सभी एकटक एडवर्ड की ओर ही देख रहे थे कि वो आखिर क्या करने वाला था। रात का तीसरा पहर लग चुका था और इसी के साथ एडवर्ड की शैतानी शक्तियॉ॑ और भी तीव्र हो गई थीं।

"डाकिनी! तुम मेरी बात सुन रही हो।" एडवर्ड ने कहा। अगले ही पल उसके होंठों पर मुस्कराहट आई, जैसे कि उसे उसका पसंदीदा जवाब मिल गया हो।

"जाओ! मैं तुम्हें आदेश देता हूॅ॑ कि... तुम अपने हाथों से... अपने बसेरे को आग लगा दो।" इतना कहकर वो जोर से जानवरों की तरह ठहाके लगाने लगा, जबकि ये सब देखकर वहॉ॑ मौजूद पिशाचों के होश भी फाख़्ता हुए थे। एडवर्ड का ये रूप देखकर सभी अपने-अपने में डर से सिमटने लगे थे। कुछ ही देर में उस कमरे में एडवर्ड की वहशी हॅ॑सी गूंजती रही और फिर उसने अपनी ऑ॑खें खोली।

"आखिरकार.... बसेरा खत्म हुआ!" और फिर वो जोर-जोर से अट्टहास करने लगा। वहॉ॑ मौजूद सभी लोगों को उसकी मानसिक हालत पर शक होने लगा था। जो हो रहा था... उसे वहॉ॑ मौजूद कोई भी समझ पाता उससे पहले ही एडवर्ड ने अनामिका को अपने पास बुलाया। उसके पीछे खड़े गार्ड्स ने उसे एडवर्ड के सामने ढकेल दिया, जिससे वो उसके सामने
जाकर गिर पड़ी। एडवर्ड ने झपट्टा मारकर उसके बाल पकड़े और बेरहमी से उन्हें खींचता हुआ अनामिका को खड़ा किया। चैतन्य और अल्फ़ी दोनों ही बुरी तरह से छटपटाने थे।

"पता है! तुझे इस तरह मारने का दिल बिल्कुल भी नहीं था, पर क्या करूं... मजबूरी है। जब सारी डायनें जल चुकी हैं... तो फिर तू क्यों बचे? है ना! वैसे भी इस अदालत ने फैसला मुझ पर छोड़ दिया है और अब... वो भी इससे नहीं मुकर सकते। तो फिर चलें! जलने का मजा लिया जाए!" कहते हुए एडवर्ड ने अपने सीधे हाथ को एक झटका सा दिया, जिससे उसके हाथ से आग का एक गोला निकलकर जमीन से टकराया और फिर वहॉ॑ से आग की लपटें उठने लगी।

ये सब देखकर चैतन्य और अल्फ़ी दोनों ही सदमे में आ गए। अब कुछ किए बिना और कोई रास्ता नहीं था। चैतन्य ने तेजी से अपने कपड़ों से खंज़र निकाला और उसे अपनी बाईं ओर के गार्ड के सीने में घुसा दिया। इस अचानक हमले से सभी भौंचक रह गए। चैतन्य ने पास खड़े दूसरे गार्ड के हमले को अपने बाऍ॑ हाथ से रोका और उसकी ओर बढ़े तीसरे गार्ड के पेट में पूरी ताकत से लात मारी, जिससे वो उछलकर की फुट पीछे हवा में उड़ गया। इसके बाद बिना देरी किए चैतन्य ने बाऍ॑ हाथ में पकड़े गार्ड के हाथ को मोड़कर एक झटका दिया और

उसकी तलवार अपने हाथ में ले ली और उसे सामने से आते गार्ड के सीने में फेंककर मारा। वो वहीं ढेर हो गया। अब चैतन्य ने अपनी गिरफ्त में फॅ॑से गार्ड को घुमाकर पीछे से पकड़ा और फिर झुककर नीचे गिरे गार्ड के सीने से अपना खंज़र निकाल कर उस गार्ड की गर्दन रेत दी। दो मिनट में ही चैतन्य ने चार गार्ड्स को सबकी ऑ॑खों के सामने ही मौत के घाट उतार दिया। अब वो खून से सना हुआ अपना खंज़र पकड़े चारों ओर गुस्से से देख रहा था। दूसरे गार्ड्स उसका ये रूप देखकर उससे पीछे हट रहे थे। चैतन्य ने खंज़र का रूख एडवर्ड की ओर किया और उसे अपनी शोलों भरी ऑ॑खों से देखते हुए एक झटके में वो खंज़र उसकी ओर फेंका। एडवर्ड ने तेजी से एक ओर होकर खुद को
बचाया। वो खंज़र पीछे जाकर एक जज को लग गया। उसे ऐसी हालत में देखकर एडवर्ड ने गुस्से से चैतन्य की ओर देखा, जिसने अब दोनों हाथों में तलवारें पकड़ ली थीं। आधा खून से नहाया हुआ वो गुस्से में बुरी तरह से हॉ॑फ रहा था।

उसकी इतनी ज़ुर्रत देखकर एडवर्ड का पारा भी गर्म हुआ था। उसने भी अनामिका की गर्दन को झटके से अपनी बांह में फॅ॑साते हुए उस पर अपना खंज़र टिकाया था। अनामिका की गर्दन में खंज़र देखकर चैतन्य गुस्से में आगे बढ़ा ही था कि तभी एडवर्ड ने उस खंज़र की नोंक अनामिका की गर्दन में थोड़ी सी घुसा दी, जिससे वहॉ॑ से खून निकल आया। चैतन्य अपनी जगह पर रूका था। और तभी... ये हुआ।

अनामिका ने अपनी ओर से लापरवाह हुए एडवर्ड के पैर में जोर से लात मारी और फिर उसके चीखने पर अपनी कोहनी उसकी पसली में घुसाई। एडवर्ड इस अचानक हमले को झेल नहीं पाया और उसकी पकड़ अनामिका पर कमजोर हो गई।उसी समय अनामिका ने इसका फायदा उठाते हुए उसकी बांह से खुद को छुड़ाया और उसी का खंज़र उसी के कंधे में घुसा दिया। एडवर्ड की तेज चीख उस कमरे में फ़ैल गई। मगर किसी ने भी कुछ नहीं किया। सभी को जैसे लकवा मार चुका था। किसी ने भी अनामिका से ये उम्मीद नहीं की होगी।अभी अनामिका आक्रमण की मुद्रा में ही थी कि अगले ही पल एडवर्ड का खंजर आकर उसकी बांह में घुस गया। अनामिका की चीख एडवर्ड के दिल को सूकून दे गई। एडवर्ड ने अपना हमला कर दिया था। अनामिका को घायल होता देखकर चैतन्य उसकी ओर दौड़ने को ही हुआ कि तभी एक ओर से किसी के जोर से चिंघाड़ने की आवाज आई। ये अल्फ़ी था, जो अब हर कैद से आजाद था और घायल अनामिका पर एक नज़र डालने के बाद सभी को कच्चा खा जाने वाली नज़रों से घूर रहा था
उस तेज चिंघाड़ को सुनकर सभी की नज़रें उस ओर उठी थीं और सामने का नज़ारा देखते ही सभी अपनी-अपनी जगह पर जम से गए थे। अल्फ़ी की बेड़ियों को पकड़कर खड़े दो गार्ड्स जमीन पर लहुलुहान पड़े थे। उनके शरीर में कोई भी हलचल नहीं हो रही थी। बाकी बचे दो गार्ड्स अल्फ़ी की गिरफ्त में छटपटा रहे थे। दोनों को गर्दन से दबोचे हुए अल्फ़ी, एडवर्ड को लाल दहकती ऑ॑खों से घूर रहा था और उसकी वो नज़र हैरान एडवर्ड के साथ-साथ पीटर के माथे पर भी शिकन बढ़ा गई थी।

अल्फ़ी ने एडवर्ड की ओर देखते हुए ही तेज दहाड़ के साथ एक गार्ड की गर्दन पर अपने दॉ॑त गड़ा दिए। उस गार्ड की दिल दहलाने वाली आवाज उस कमरे की दीवारों से टकराकर गूंज उठी और फिर अगले ही पल उसकी गर्दन का वो हिस्सा अल्फ़ी ने अपने दॉ॑तों से काटकर बाहर निकाल लिया। ये देखकर उस कमरे में मौजूद एक-एक व्यक्ति सदमे की हालत में आ गया था। उस मॉ॑स के टुकड़े को मुॅ॑ह में रखे हुए ही वो अभी भी एडवर्ड को घूरे जा रहा था। उस गार्ड का शरीर ढीला होते ही उसने उसे जमीन में फेंक दिया और फिर दूसरे गार्ड की गर्दन को अपने हाथों में फॅ॑साकर तेज
झटके से एक ओर मोड़ दिया। गर्दन की हड्डी चटकने की आवाज सबको सुनाई दी और उस गार्ड का शरीर भी अल्फ़ी के हाथ में झूलने लगा। अल्फ़ी की तीखी नज़रें अभी भी एडवर्ड पर से हटी नहीं थीं। वहीं एडवर्ड भी अपने सख़्त चेहरे के साथ उसे ही देख रहा था। अल्फ़ी ने मरे हुए गार्ड को झटके से छोड़ा और फिर एडवर्ड को देखते हुए अपने दॉ॑तों में पकड़े हुए मॉ॑स के टुकड़े को घृणा से थूक दिया। उसका आधा चेहरा खून से सना हुआ था और वो गहरी- गहरी साॅ॑सें ले रहा था। उसने अपने हाथों... जो पहले ही बेड़ियों से आजाद हो चुके थे, से अपने गले में पड़ी बेड़ियों को एक झटके से तोड़ा और फिर अपने पूरे शरीर को उन बेड़ियों से आजाद करते हुए एडवर्ड की ओर बढ़ गया।

उसके उस विकराल रूप को देखकर सभी उससे दूर हटने लगे थे। कुछ लोगों ने बाहर भागने की कोशिश की तो अल्फ़ी ने उस ओर अपना एक हाथ उठाकर दरवाजे को बंद कर दिया। अब सब अल्फ़ी की क़ैद में थे। वो सब जो... कुछ देर पहले उन तीनों की बर्बाद हालात का मजा ले रहे थे... अब खुद सहमे हुए से खड़े थे। यकीनन ये एक जादुई दुनिया थी और सभी कुछ ना कुछ ताकतें रखते थे, पर शक्तिनियंत्रक बेड़ियों से खुद को इतनी आसानी से आजाद कर लेने की ताकत के बारे में ना किसी ने सुना और ना कभी देखा। ऊपर से अल्फ़ी का लंबा-भरा-पूरा

शरीर, चौड़े कंधे, उभरी हुई मांसपेशियों के साथ फूली हुई बाहें और कसी हुई मजबूत मुट्ठियॉ॑ अपने सामने किसी को भी दहलाने के लिए काफी थीं। लोग तेजी से उसके और एडवर्ड के बीच से हट रहे थे।

अल्फ़ी चलता हुआ अनामिका के पास पहुॅ॑चा। उसने अनामिका की ओर देखा, जिसके चेहरे में दर्द का हल्का सा पीला रंग बिखरा हुआ था और उसने अपनी घायल बांह को दूसरे हाथ से पकड़ रखा था। अल्फ़ी ने हाथ बढ़ाकर उसके ज़ख़्म को छुआ और फिर उसके खून से रंगी अपनी ऊंगलियों को अपनी ऑ॑खों के सामने लाकर देखा। उसकी ऑ॑खों के सामने हेममाया का दर्द से भरा चेहरा आ गया और फिर उसके अंदर जो
भी टूटा, उसकी किरचियॉ॑ साथ लिए वो एक लंबी छलांग के साथ एडवर्ड के सामने खड़ा था।

अपने दॉ॑त भींचे अल्फ़ी, एडवर्ड पर झपटा। एडवर्ड ने भी फुर्ती से उसके प्रहार को रोका और अगले ही पल वो दोनों ही एक-दूसरे से बुरी तरह से उलझे हुए थे। उन दोनों की ही शक्तियॉ॑ अन्य पिशाचों की समझ और कल्पना से परे थी। वो सभी अपनी ऑ॑खें फाड़े मौत को मौत से ही लड़ते देख रहे थे। कभी अल्फ़ी... तो कभी एडवर्ड दूसरे पर हावी नज़र आ रहे थे। वो दोनों लड़ते हुए कभी दीवारों पर चलने लगते... तो कभी छत से लटके दिखाई देते। अनामिका और चैतन्य भी सब कुछ भूलकर हकदक सी हालत में उन दोनों को ही देख रहे थे।

"ये क्या हो रहा है पीटर? इन दोनों के पास ऐसी शक्तियॉ॑ कहॉ॑ से आई? ऐसी शक्ति तो पिशाचदेव की लंबी साधना से ही बड़ी मुश्किल से मिलती हैं। तो क्या ये अफवाह सही है कि एडवर्ड छुप-छुपकर छद्म पिशाच साधना कर रहा है?" बचे हुए दो जजों में से एक ने पीटर से सख़्त लहज़े में पूछा।

छत पर चल रही अल्फ़ी और एडवर्ड की लड़ाई को देखकर बुरी तरह से झल्लाए हुए पीटर ने गुस्से से अपने दॉ॑त भींचे और फिर वो अपना खंज़र निकाल कर तेजी से घूमा और एक ही झटके में उस जज़ की गर्दन को रेंत दिया। गले से गर्मा-गर्म खून भलभलाकर निकला और वो जज़ वहीं ढेर हो गया। पीटर ने उस जज़ के मृत शरीर पर चिढ़ी हुई सी नज़र डाली और फिर झटके से दूसरे की ओर देखा। वो जज़ सहमकर पीछे हुआ। उसे पता चल चुका था कि पीटर का खंज़र एक ख़ास दवा के घोल में डूबाकर अभिमंत्रित किया हुआ था और उसके वार के बाद कोई भी पिशाच पुनर्जीवित नहीं हो सकता था... चाहे वो कितना भी शक्तिशाली क्यों ना रहा हो! उन दोनों ने हर तरह से हर चीज को अपने पक्ष में कर लिया था।
उसी समय एडवर्ड उनके सामने आकर गिरा। उसका चेहरा अल्फ़ी के नाखूनों से बुरी तरह से नोंच लिया गया था और उसमें से खून बह रहा था। एडवर्ड उठकर खड़ा हुआ और फिर अल्फ़ी को घूर कर देखा, जो अब उसके सामने ही खड़ा गुर्रा रहा था। एडवर्ड के होंठों पर मुस्कान आई और फिर अगले पलों में ही उसका बहता हुआ खून जख़्मों में वापस लौटा और सारे ज़ख़्म सिमटते हुए गायब हो गए। उसने अपने खंज़र को मजबूती से पकड़ा और अल्फ़ी पर छलांग लगा दी। अल्फ़ी पहले से ही तैयार था। उसने एडवर्ड को हवा में ही पकड़ लिया और फिर उसके शरीर को घुमाकर सामने की दीवार पर दे मारा। मगर इन सबमें अल्फ़ी की बांह में एडवर्ड के खंज़र से बहुत ही गहरा कट लग गया। अल्फ़ी ने उस जख़्म को देखा और फिर अपनी उस बांह को तेजी से झटका दिया। वो एडवर्ड की ओर आगे बढ़ा और इसी के साथ उसकी बांह का गहरा कट भी तेजी से भरकर गायब हो गया। उसने आगे बढ़कर गिरे हुए एडवर्ड को उठाना चाहा, उसी समय एडवर्ड ने अपना खंज़र अल्फ़ी के पेट में घुसा कर घुमा दिया। अल्फ़ी उस खंज़र को पकड़े हुए लड़खड़ाकर पीछे हुआ। ये देखते ही पीटर के होंठों पर मुस्कान खिली। वहीं अल्फ़ी को ऐसी हालत में देखकर अनामिका ने एक तेज चीख के साथ अपना चेहरा हथेलियों में छिपा लिया। उसकी चीख सुनकर अल्फ़ी ने उसकी ओर देखा।

"उन्हूं!" चिढ़ते हुए अल्फ़ी ने वो खंज़र खींचकर बाहर निकाला और एक ओर उछाल दिया। उसका वो ज़ख़्म भी उसके वहॉ॑ हाथ फिराते ही गायब हो गया। उसे सही-सलामत पाकर अनामिका ने राहत की साॅ॑स ली। उसे सही पाकर अल्फ़ी एक बार फिर से एडवर्ड की ओर बढ़ गया, जो अपने इतने बड़े वार को खाली जाता देखकर बुरी तरह से तिलमिला उठा था। अगले ही पल वो दोनों ही एक बार फिर से गुत्थम-गुत्था हो चुके थे।

जहॉ॑ सभी दम साधे उन दोनों की भिडंत को देख रहे थे, वहीं पीटर का दिमाग कहीं और ही उलझा हुआ था। वो बस अल्फ़ी को ही देखे जा रहा था। उसके भरते हुए जख़्म पीटर को ज़ख़्मी कर रहे थे। उसे अपना
मकसद अपनी ऑ॑खों के सामने धूमिल होता नज़र आने लगा। उसके अंदर गुस्से का एक रेला उमड़ा और उसने पलटकर दूसरे जज़ के सीने में भी अपना खंज़र उतार दिया। मेहमान उसकी इस हरकत से बुरी तरह से बिदके थे। पीटर ने बचे हुए गार्ड्स को चिल्लाकर वहॉ॑ मौजूद सभी

लोगों को ख़ास खंज़रों से मौत के घाट उतारने का आदेश दिया। वो नहीं चाहता था कि एडवर्ड का सच साधना पूरी होने से पहले लोगों के सामने आए।

"एडवर्ड चलो!" पीटर ने ऊॅ॑ची आवाज में चिल्लाकर कहा और तेजी से एक ओर बढ़ गया।

मेहमान कुछ समझ पाते उससे पहले ही गार्ड्स उन पर टूट पड़े। देखते ही देखते वहॉ॑ अफ़रा-तफ़री मच गई। मेहमान जादुई रूप से ताकतवर तो थे... पर आरामतलबी ने उनकी शारीरिक ताकत और फुर्ती पर जंग लगा दिया था और इस दुनिया में फुर्ती से वार करने वाला ही ज्यादा ताकतवर होता था। वो सब तो हमेशा उन्हीं गार्ड्स की तलवारों के साए में महफूज रहते थे। ऊपर से गार्ड्स के हाथों में अभिमंत्रित खंज़रों ने उनकी रही-सही हिम्मत भी तोड़ दी। वो सब भीड़ की तरह दूसरे की मजबूरी पर चीख-चीख कर अपना रौब तो दिखा सकते थे.. पर अकेले वो कुछ भी नहीं थे। सब ऐसा ही तो करते हैं। पर बात अब खुद अपनी जिंदगी बचाने की थी और उसे बचाने के लिए सभी इधर-उधर भागने लगे। मगर वो सब गार्ड्स अपने काम में अच्छी तरह प्रशिक्षित थे।

चैतन्य ने घायल अनामिका की ओर तेजी से बढ़े गार्ड के वार को अपने हाथ में पकड़ी एक तलवार से रोका और फिर दूसरे हाथ की तलवार को उसके दिल में उतार दिया। वो वहीं गिर कर ढेर हो गया।

"इन्हें मारना है तो इनके दिल पर वार करो या फिर सिर काटकर अलग कर दो।" चैतन्य ने अनामिका को समझाकर उसकी ओर एक तलवार बढ़ाते हुए कहा।
"समझ गई!" अनामिका ने भी अपने दर्द को पीछे ढकेलकर तलवार पकड़ते हुए कहा।

सामने से आए दो गार्ड्स के वारों को रोकने के लिए उन दोनों ने ही अपनी-अपनी तलवार अड़ाई थी। चैतन्य ने तो गार्ड को आसानी से ठिकाने लगा दिया.. मगर अनामिका घायल होने की वजह से कमजोर पड़ रही थी। वो उस गार्ड की ताकत को संभाल नहीं पाने के कारण जमीन में गिर गई और उसकी तलवार भी छूट गई। उस गार्ड ने अनामिका पर वार करने के लिए तलवार दोनों हाथों से पकड़कर सिर के ऊपर तक उठाई। वो इसके आगे कुछ कर पाता... चैतन्य की तलवार ने एक सीध में उसकी उठी हुई दोनों बांहें भी गर्दन के साथ काटकर अलग कर दीं।
खून की एक बौछार अनामिका को भिगा गई।

"तुम ठीक हो?" चैतन्य ने फ़िक्र से उसे देखते हुए पूछा और अपना हाथ बढ़ाया।

"हॉ॑! ठीक हूॅ॑ मैं!" कहते हुए अनामिका ने उसके बढ़े हुए हाथ को थामा और खड़ी हो गई।
उसी समय अनामिका की ऑ॑खें कुछ देखकर फैलीं और उसने तेजी से चैतन्य को एक ओर ढकेला।
उनके हटते ही पीछे से वार कर रहा गार्ड वार खाली जाने पर लड़खड़ा गया। वो जैसे ही सीधा हुआ अनामिका ने अपना खंज़र पूरी ताकत से फेंककर उसके दिल में उतार दिया। वो वहीं गिर गया।

"निशाना तो परफेक्ट है तुम्हारा!" चैतन्य ने तारीफ करते हुए कहा।

"हॉ॑! फ्रस्ट्रेशन भरे दिनों में तनाव दूर करने के लिए यही काम किया करती थी। आज काम आ रहा है।" अनामिका ने अपना खंज़र बाहर निकालते हुए कहा।
"अच्छा जरिया खोजा टाइमपास के लिए!" चैतन्य ने मुस्कुराकर कहा।

"इट्स ज़रिया.... नॉट जरिया वरूण!" और अनामिका एकदम से चुप पड़ी थी।

"याद आ गई!" चारों ओर चौकन्नी निगाहें रखे हुए चैतन्य ने कहा।

"मुझे घर जाना है!" अनामिका की आवाज भर्रा गई थी।

"बस... कुछ घंटे और...! वापस ले जाऊंगा तुम्हारे वरूण के पास! ठीक है! चिंता मत करो।" चैतन्य ने उसे हौसला देते हुए कहा, जिस पर अनामिका ने भी सिर हिलाकर धीरे से हुंकारी भरी।

"ये अल्फ़ी और एडवर्ड कहॉ॑ चले गए?" एक आड़ में अनामिका को छिपाकर खुद बाहर झांकते हुए चैतन्य ने चारों ओर देखते हुए कहा। अनामिका ने भी अपनी निगाहें जरा सी बाहर निकाली थीं।

उन्होने ऑ॑खें घुमाकर सावधानी से पूरे कमरे में देखा। वो दोनों ही वहॉ॑ नहीं थे। चारों ओर लाशें ही लाशें बिछी हुई थीं। पूरा कमरा खून से होली खेला हुआ प्रतीत हो रहा था। पूरे कमरे में कटी-फटी लाशें पड़ी हुई थीं। कहीं किसी का कटा हुआ पैर था... तो कहीं किसी की कटी हुई खोपड़ी खून उगल रही थी। कहीं किसी का चेहरा तलवार से दो टुकड़ों में कटा हुआ अलग-अलग जगहों में पड़ा था... तो कहीं किसी का सीना लुगदी बना हुआ था। कुल मिलाकर एडवर्ड और पीटर के गार्ड्स ने भी उनकी बेरहम छत्रछाया का परिचय पूरी ईमानदारी से दिया था। सबको मौत के घाट उतारने के बाद वो सारे गार्ड्स सबकी ओर ध्यान से देख रहे थे।

"वो नहीं है यहॉ॑!" सभी लाशों का मुआयना करते हुए एक गार्ड
चिल्लाया।

"यहीं कहीं होगा! ढूंढो उसे! वो बचना नहीं चाहिए!" दूसरा गार्ड भी ऊंची आवाज में चिल्लाकर बोला। चैतन्य और अनामिका समझ गए कि वो चैतन्य को ही ढूंढ रहे थे।

"तुम रूको यहीं! मैं देखता हूॅ॑ इन्हें!" चैतन्य अपनी आस्तीनें चढ़ाते हुए बोला।

"पागल हो गए हो! दस गार्ड्स गिने मैंने। अकेले कैसे उनसे पार पाओगे?" अनामिका उसकी बांह पकड़कर बेचैनी से बोली।

"तुम्हें क्या लग रहा है? महल के किसी कोने में छिपे हैं हम! पॉ॑च मिनट भी नहीं लगेंगे उन्हें हमें ढूंढने में! इससे अच्छा है कि अभी ही सामने चला जाए... जब बाद में जाना ही है। कम से कम तुम तो छिपकर रह सकती हो।" चैतन्य ने बहुत ही धीमी आवाज में कहा।

"और छिपकर क्या करूंगी मैं?" अनामिका ने बहुत ही चिढ़ से कहा। उसे इस तरह छिपकर बैठना बहुत ही तकलीफदेह लग रहा था।

उसका लहज़ा समझकर चैतन्य ने उसकी ओर देखा और फिर अपने कपड़ों से चॉ॑दी के कॉ॑टे निकालकर उसकी ओर बढ़ाते हुए कहा, "निशाने लगाओ! जिसमें तुम माहिर हो। और क्या?"

अनामिका ने उन कॉ॑टों की ओर देखा और फिर चैतन्य पर मुस्कुराती हुई नज़र डालते हुए वो ले लिए। चैतन्य ने पास पड़ी तलवार उठाई और दूसरे हाथ में खंज़र संभालता हुआ बाहर की ओर निकल गया।

"वो रहा!" एक गार्ड उसकी ओर इशारा करते हुए चिल्लाया। एक साथ
सभी उसी की ओर दौड़े। चैतन्य ने तलवार की मूॅ॑ठ पर पकड़ मजबूत की और सबसे पहले आने वाले गार्ड का इंतजार किया। उसने जैसे ही हमला किया.. चैतन्य ने अपने खंज़र वाले हाथ को उसकी कलाई के पास टिकाते हुए उस के वार को रोका और फिर अगले ही पल तलवार से उसकी गर्दन उड़ा दी। उसकी गर्दन उड़ाते ही वो तेजी से गोल घूमा और फिर सामने आए गार्ड के दिल के ऊपर सीने में खंज़र उतार दिया। उसने खंज़र को थोड़ा उमेठा और फिर उस गार्ड को लात मारकर अपना खंज़र एक ही झटके से बाहर निकाल लिया। एक पल की देरी किए बिना उसका हाथ घूमा और पास आए गार्ड की खोपड़ी हवा की सैर पर निकल गई। चैतन्य अगला वार करता उससे पहले ही दो गार्ड्स एक साथ उसकी ओर बढ़े। वो उसपर हमला करते उससे पहले ही हवा में पीछे की ओर उछल गए। उनके सीने में धंसे कॉ॑टें को देखकर चैतन्य मुस्कुराया। पॉ॑च खत्म हो चुके थे। सामने देखा... चार और थे, जो गुस्से से उसे ही देख रहे थे।

चैतन्य ने एक सीटी बजाई और भौंह नचाकर उन्हें चिढ़ाते हुए बोला, "इधर! बूढ़ी-पिलपिली हड्डियॉ॑ काटकर खुद को तलवार बाज समझ रहे हो। जरा... हमारी तलवार से इश्क लड़ाओ... तो जाने!"

चैतन्य के उकसाने से भड़ककर वो चारों लाशों के समुंदर को पार करते हुए उसके पास पहुॅ॑चे और उसे चारों ओर से घेर लिया। चैतन्य ने चारों ओर नज़र दौड़ाई। तलवार पर ऊंगलियॉ॑ कसे हुए वो उन चारों की आहटों पर कान धरे हुए था। वो अपने आप को तैयार कर ही चुका था और उन चारों ने ही एक साथ ही उसके ऊपर हमला किया। चैतन्य ने अपने सिर पर तलवार रखकर उन चारों के हमले को रोका था। वो पूरी ताकत से उन्हें रोकने की कोशिश कर रहा था, पर इस बार पलड़ा उन चारों का भारी था। वो लगातार उस पर दबाव बढ़ा ही रहे थे

कि तभी उनमें से एक एक हल्की सी आह के साथ बिल्कुल खड़ा रह गया। सबका ध्यान उसकी ओर गया, तो वो मुॅ॑ह से खून उगलता नीचे गिर गया। चॉ॑दी का कॉ॑टा पूरा का पूरा उसके सीने में घुस गया था।
अभी वो कुछ समझ पाते कि कोई चीज तेजी से उनकी ओर आई और दो गार्ड्स को अपने साथ दूर ले गई। वो एडवर्ड था... जिसकी हालत बहुत ही बुरी दिखाई पड़ रही थी। वो जिस गार्ड के ऊपर गिरा, उसकी तलवार एडवर्ड के आर-पार निकल गई थी। एडवर्ड ने दूसरे गार्ड की मदद से खुद को आगे खींचकर उस तलवार से आजाद किया और फिर तेजी से पलटकर उस गार्ड की गर्दन अपने दोनों हाथों से पकड़कर उखाड़ दी। उसके बाद उसने दूसरे गार्ड की गर्दन पर उसी की तलवार छीनकर चला दी। उसकी गर्दन एक ओर लुढ़क गई। हालांकि इतनी देर में उसके सारे ज़ख़्म अपने आप भर गए थे, मगर वो बहुत ही गुस्से में दिखाई दे रहा था।

चैतन्य और बाकी बचे एक गार्ड ने भी उस ओर देखा जिस तरफ से उड़ता हुआ एडवर्ड आया था। वहॉ॑ अल्फ़ी पूरे रौब से खड़ा था। सबसे पहले उसने अपना सिर गोल-गोल घुमाया और फिर गर्दन को दोनों तरफ हल्के से झटके देकर वो आगे बढ़ा। खुद को उसके सामने कमतर पाकर एडवर्ड का रोम-रोम सुलग रहा था। चैतन्य समझ गया था कि अब पीछे हटने का समय है और वो पीछे हट गया। अल्फ़ी दहाड़ लगाता एडवर्ड की ओर दौड़ा ही था कि तभी एक कोने से आवाज आई। उन सभी ने उस ओर देखा तो अनामिका को एक गार्ड ने अपने कब्जे में किया हुआ था।

चैतन्य ने हैरानी से अपने पास देखा तो वो गार्ड अभी भी वहीं था। उसने हिसाब लगाया। बाहर आते ही उसने तीन को काटा और अनामिका ने दो को उड़ाया। पॉ॑च हुए। उसके बाद वो चार गार्ड्स से उलझा था। तीन, दो और चार... मिलाकर हुए नौ! अनामिका ने बताया था कि कुल दस गार्ड्स थे। और फिर अपने ग़लत हिसाब पर उसने अपना माथा पीटा।

"सच कहती थी मॉ॑... कि सही से हिसाब लगाना सीख ले... वरना पछतायेगा! हो गया सियापा!" खुद को लताड़ते हुए वो मन में ही बुदबुदाया।
उस गार्ड ने अनामिका के हाथ पीछे से पकड़कर उसकी गर्दन पर तलवार टिका रखी थी। उसकी मजबूत पकड़ में अनामिका के ज़ख़्म से एक बार फिर से खून रिसने लगा था। चैतन्य ने उसकी ओर कदम बढ़ाया तो उसके पास खड़े गार्ड ने उसके हाथ में हमला कर उसकी तलवार गिराई और उसे अपनी तलवार की नोंक में ले लिया। बाजी एकदम से ही पलटी हुई लग रही थी। मगर दुश्मनों के चेहरे पर मुस्कान आती.. उससे पहले ही अल्फ़ी हवा की तरह अनामिका को कब्जे में किए हुए गार्ड के पीछे खड़ा था। वो गार्ड संभल पाता उससे पहले ही उसके हाथ अल्फ़ी की गिरफ्त में थे। उसके चंगुल से छूटते ही अनामिका एक ओर होकर खड़ी हो गई। दूसरी तरफ इन सबसे चैतन्य के पास खड़े गार्ड का ध्यान भी बॅ॑ट गया, जो उसकी जान पर भारी पड़ गया, जब चैतन्य ने अपना खंज़र सीधे उसके सीने में उतार दिया।

उधर अनामिका को चोट पहुॅ॑चाने की ज़ुर्रत करने की वजह से गुस्से में ज्वालामुखी हुए अल्फ़ी ने उस गार्ड को जमीन में पटका। अल्फ़ी ने उसके एक पैर पर अपना एक पैर जमाकर उसके दूसरे पैर को पकड़ा और फिर एक कानफाड़ू चीख के साथ उस गार्ड के शरीर के दो टुकड़े कर दिए। दो टुकड़ों में बॅ॑टते समय उस गार्ड की दिल दहलाने वाली चीख सुनने की हिम्मत ना तो अनामिका में थी और ना ही चैतन्य ने। उस वीभत्स दृश्य को देखकर अनामिका ने अपने कान बंद कर अपना चेहरा नीचे झुका लिया था। वहीं चैतन्य ने भी अपनी नज़रें दूसरी ओर फेर रखी थीं और बस... यहीं एक चूक फिर से हो गई। उस गार्ड के शरीर के टुकड़ों को अलग-अलग दिशा में फेंकने के बाद जब अल्फ़ी ने अनामिका की ओर देखा तो वो सदमे में आ गया। एडवर्ड इस छोटे से मौके का फायदा उठाने से बिल्कुल नहीं चूका और अनामिका को अपने कब्जे में करके अल्फ़ी और चैतन्य दोनों को देखकर कमीनगी से मुस्कुराया।
"गुड बाय कहो अनामिका! अब इनसे कभी नहीं मिलोगी तुम!"

ये कहते ही उसने एक बार फिर से दिल को नोंचने वाली मुस्कुराहट के साथ उन दोनों को देखा और अगले ही पल एक बहुत ही लंबी छलांग लगाकर रोशनदान का शीशा तोड़ते हुए वो अनामिका के साथ वहॉ॑ से निकल गया। चैतन्य और अल्फ़ी इतने बड़े नुकसान के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थे। लेकिन वो इस समय लाशों के ढेर पर खून से नहाए खड़े सिर उठाकर ऊपर की ओर देख रहे थे। मेंशन के बहुचर्चित हत्याकांड के बाद अगला पड़ाव कौन सा था.... उन्हें नहीं पता था। मगर चैतन्य के कानों में माया की बद्दुआ बार-बार गूंजकर उसका दिल दहलाने लगी थी और ये ख्याल ही उन दोनों के लिए इस हत्याकांड से कहीं ज्यादा ख़ौफनाक था।

अल्फ़ी और चैतन्य दोनों ही ऑ॑खें और मुॅ॑ह फाड़े उस टूटे हुए रोशनदान को देख रहे थे। ख़ौफ और हैरानी उन दोनों की ही ऑ॑खों में हाथ मिलाकर नाच रहे थे। सब कुछ तो उनके हाथों में आता दिख रहा था... और अब ये क्या हो गया? एक गहरी आह चैतन्य के मुॅ॑ह से निकली और अपने चेहरे को हथेलियों में छिपाकर वो घुटनों पर बैठ गया। कमर पर हाथ रखकर परेशान खड़े अल्फ़ी ने उसकी ओर एक नज़र देखा और फिर नज़र फेर लिया। उसी समय कुछ आवाजें उसके कान तक पहुॅ॑ची। एक बार फिर उसने चैतन्य की ओर देखा, जो खुद ही खुद में बड़बड़ा रहा था।

"नहीं! नहीं चैतन्य! रोना नहीं है! गुस्सा भी नहीं करना है! तो क्या करना है? दिमाग लगाना है! कहॉ॑ ले जा सकता है वो सफ़ेद चमगादड़ अनु को? सोच! अच्छे से सोच! वरना सब तेरी आत्मा को तेरे शरीर से निचोड़कर निकाल देंगे। अनु को कुछ हुआ तो सबको क्या जवाब देगा? अरे खुद को क्या जवाब देगा? वो वरूण तुझे कच्चा नहीं खाएगा... सीधा निगल जाएगा और डकार मारने के बाद उसे पानी भी आशुतोष जी ही देंगे।"

"क्या बड़बड़ा रहे हो?" अल्फ़ी ने जबड़े कसते हुए उसे डपटा।

"तुम तो चुप ही करो!" चैतन्य तमतमाकर उठा और अल्फ़ी के सामने उसकी ऑ॑खों में ऑ॑ख डालकर खड़ा हो गया। अल्फ़ी भी उसकी हिली हुई हालत को ग़ौर से देख रहा था।
"तुम... तुम्हारा परिवार... तुम्हारा ख़ानदान... सब किया धरा तुम सबका और पेनल्टी भरें हम! इ नाही चलेगा! सीधे-सीधे बोल... कहॉ॑ गया है वो जूनियर बैटमैन? वरना....!" चैतन्य ने भुनभुनाते हुए अल्फ़ी का गिरेबान दबोचा था, जिसे अल्फ़ी ने बहुत ही चिढ़ से अपनी चढ़ी हुई भौंह के साथ देखा था।

"होश में रहोगे तो मिल भी जाएगी... वरना इस हालत में तो फिर सारी जिंदगी ढूंढते ही रहना।" अल्फ़ी ने भी उसका हाथ झटककर अपना गिरेबान छुड़ाते हुए कहा।

अपने खाली हाथों की ओर देखकर चैतन्य की ऑ॑खें बरबस ही भर आईं। उसने अपना लहज़ा नरम करते हुए अल्फ़ी से कहा, "अल्फ़ी! प्लीज़! अगर तुम्हें पता है तो बता दो। समय नहीं है हमारे पास!"

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी ने उसकी ओर देखा और फिर नज़र घुमाकर लाचारी से कहा, "तुम्हें क्या लगता है? मुझे पता होता तो मैं इस समय तुम्हारे सामने खड़ा होता।"

"तो फिर किसे पता होगा?" चैतन्य एक बार फिर से बुरी तरह से उखड़ा था।

"अरे यार! चुप रहोगे तुम! तुम चुप करो तो सोचूं मैं थोड़ा... कि कहॉ॑ ले जा सकता है वो अनामिका को।" अल्फ़ी ने झुंझलाकर अपने दोनों हाथ झटकते हुए कहा।

"उस कमीने को भी अभी हाइड एंड सीक खेलना था। अभी इतने बड़े कस्बे में कहॉ॑ ढूंढे उसे? करता ना जाकर अपनी वो.... क्या कहते हैं... हॉ॑... छद्म पिशाच साधना! वैसे भी तीसरा पहर लग चुका है।" चैतन्य ने हर शब्द में अपनी झल्लाहट उतारते हुए कहा।
और ये सुनते ही अल्फ़ी ने झटके से चैतन्य की ओर देखा। उसकी नज़रों को खुद पर देखकर चैतन्य थोड़ा असहज हुआ था। मगर अल्फ़ी ने अपनी वो नज़रें उस पर से नहीं हटाई, बल्कि वो बहुत ही खुश तबीयत के साथ उसके पास आया और उसे जोर से गले से लगा लिया। उसकी ऐसी से चैतन्य के होश ही गुम हो गए। उसने झटके से अपने आप को उससे अलग किया।

"क्या कर रहे हो? दूर हटो! हे भगवान! कैसी जगह आ गया मैं? जिसे देखो चिपक रहा है।" एक बार फिर से चैतन्य ने अपने दिमाग का खालीपन दिखाते हुए तिलमिला कर कहा।

"शटअप! अब चलना है तो चलो! शायद मैं समझ गया हूॅ॑ कि वो कहॉ॑ गया होगा? थैंक्स टू यू!" और वो तेजी से दरवाजे की ओर बढ़ गया। चैतन्य ने एक नज़र उस पर डाली और फिर सिर उठाकर उस टूटे रोशनदान को देखने लगा।

"अब वहॉ॑ से वापस नहीं आएगी वो! चलो!" अल्फ़ी ने एक बार फिर से उसे घुड़का।

"अ... हॉ॑! हॉ॑! आया!" उसकी घुड़की सुनकर चैतन्य तेजी से लाशों के ऊपर से छलांग लगता

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

अंधेरे की वजह से उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि वो किस जगह में थी। इसलिए वो अपने आसपास की कोई जानकारी नहीं दे सकती। ये सुनते ही अल्फ़ी और चैतन्य दोनों ही झल्ला उठे थे। एक तो समय कम था और इस एडवर्ड ने उन सबको छुपमछुपाई में उलझा दिया था। इससे तो उसका काम आसान हो रहा था।

"बहुत चालाक है ये कमीना! इसने सारे पैंतरे घोंटकर पी लिए हैं। वो कामयाब होने के लिए कुछ भी कर सकता है।" चैतन्य ने उखड़ते हुए कहा।

"एक मिनट! अनामिका से पूछो... कुछ तो पता होगा उसे कि कहॉ॑ हो
सकती है वो? वो इतनी बेवकूफ नहीं है! पूछो!" अल्फ़ी ने चैतन्य पर दबाव डालते हुए कहा।

"अनु! कुछ अंदाजा है क्या तुम्हें... कि अंदर आने के बाद किस तरफ ले गया था वो तुम्हें? याद करो अनु! ये बहुत जरूरी है.. वरना हम हमेशा के लिए फॅ॑स जाऍ॑गे।" चैतन्य ने उतावला होते हुए पूछा।

"हॉ॑! हम अंदर आए तो यहॉ॑ बहुत अंधेरा था। पीटर यहॉ॑ पहले से ही था। शायद वो दरवाजा खोल नहीं सकता था। एडवर्ड ने उससे कहा कि अल्फ़ी जल्द ही यहॉ॑ आ जाएगा.. तब तक उन्हें मुझे कहीं और छिपाकर रखना पड़ेगा। इसके बाद जब उन्होंने दरवाजा खोला तो आगे बढ़ते समय मैंने अपने कदम गिने थे। दरवाजे से 14 कदम आगे बाऍ॑ हाथ की दीवार में कोई दरवाजा है, जिसके अंदर वो मुझे लेकर आए थे।" अनामिका ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी देते हुए कहा।

और ये सुनते ही दोनों की बांछें खिली थीं। चैतन्य को वहीं रूकने का बोलकर अल्फ़ी तेजी से दरवाजे के पास पहुॅ॑चा और फिर अनामिका के कदमों का अनुमान लगाते हुए 14 कदम आगे आया। उसने बाईं ओर की दीवार को टटोलकर चेक किया और आखिरकार उसे वो जगह मिल ही गई, जिसकी उसे तलाश थी। वो तेजी से चैतन्य के पास गया, जो दिशाभ्रम की वजह से अंधेरे में एक जगह पर ही खड़ा हुआ था। अल्फ़ी चैतन्य को अपने साथ उस दरवाजे के पास लेकर आया।

"पर इसे खोलोगे कैसे?" चैतन्य ने पूछा।

"जैसे अभी तक सारे ताले खोले हैं। तुम्हें क्या लगता है? शक्तिनियंत्रक बेड़ियों को खोलना इतना आसान है क्या?" अल्फ़ी ने अंधेरे में भी मुस्कुराते हुए कहा।
"क्या मतलब?" चैतन्य ने नासमझी से पूछा।

"वो चाबी याद है... जो सुबह तुमने मुझे क़ैदखाने में दी थी.. जब तुम मुझे जुड़वाने आए थे।" अल्फ़ी ने चैतन्य से सवाल किया।

"हॉ॑!" चैतन्य ने कहा और एक ही पल में उसे सब समझ में आ गया कि अल्फ़ी ने कुछ देर पहले मेंशन में खुद को आजाद कैसे किया था? क्योंकि उसके पास वो चाबी थी। सारी बात समझाने के बाद अल्फ़ी ने वो दरवाजा खोला। अंदर वैसा ही घना अंधेरा था, इसलिए कुछ हल्की सी आवाजों के अलावा चैतन्य के लिए कुछ भी अलग या नया नहीं था। वो अल्फ़ी का हाथ थामे आगे बढ़ता गया और फिर एक जगह अपने सामने रूक गए अल्फ़ी से टकरा गया। वो कुछ कहता उससे पहले ही उसे उसकी आवाज सुनाई दी।

"अनामिका!"

"अल्फ़ी! ये तुम हो?" अनामिका की तस्दीक करती हुई आवाज आई।

"हॉ॑!"

"च... चैतन्य कहॉ॑ हैं?" अनामिका ने बेचैनी से पूछा।

अल्फ़ी कुछ कहता... उससे पहले ही चैतन्य ने उसे आवाज दी और अनामिका की आवाज की दिशा में आगे बढ़ गया। अल्फ़ी एक-दूसरे के लिए उनकी बेचैनी देखकर गुंग होकर रह गया। उसके लिए बार-बार प्यार में दिल का टूटना अब असहनीय हो गया था। उस पर ज़ुल्म ये कि वो तो अपनी ऑ॑खों के सामने सब देख भी सकता था। उसमें चैतन्य की बांहों में सिमटी अनामिका को देखने की जरा भी हिम्मत नहीं थी... इसलिए उसने

अपना मुॅ॑ह फेर लिया और उसे कुछ दिखाई दिया। उस चीज को पहचानने की गरज़ में उसकी ऑ॑खें सिकुड़ कर छोटी हो गईं और दिल ना जाने क्यों अजीब से अहसास से भर गया। अगले ही पल वो तेजी से आगे बढ़ा और उसके पास पहुॅ॑चा। वो हेममाया का मृत शरीर था। उसे देखकर अल्फ़ी किसी कटे पेड़ की तरह ढह गया और उससे लिपटकर ज़ार-ज़ार रोने लगा। अनामिका और चैतन्य ने जब उसके रोने की आवाज सुनी तो वो दोनों ही सकते में आ गए। अंधेरे की वजह से उन्हें कुछ भी नहीं दिख रहा था, इसलिए उनकी समझ में कुछ भी नहीं आया।

"अल्फ़ी! क्या हुआ? रो क्यों रहे हो?" चैतन्य ने उससे पूछा।

"मे... मेरी.... माया!" अल्फ़ी के गले से शब्द बमुश्किल निकले।

"वो यहीं है?" चैतन्य ने हैरानी से पूछा।

"हॉ॑! मेरे सामने!" अल्फ़ी ने इस बार संभली हुई आवाज में कहा और फिर से सुबकने लगा।
उसकी आवाज की दिशा में बढ़ते हुए चैतन्य और अनामिका उसके पास पहुॅ॑चे। चैतन्य ने अंधेरे में टटोलते हुए अल्फ़ी के कंधे पर हाथ रखा। उसका स्पर्श महसूस कर अल्फ़ी ने अपना कॉ॑पता हुआ हाथ उसके हाथ पर रखा और फूट-फूटकर रोने लगा।

"क्यों? क्यों किया.... उन सबने हमारे साथ ऐसा? क्या... नफ़रत की धार... इतनी पैनी होती है कि... प्यार उसे छूकर इस तरह बिखर जाता है? क्यों लोग... उन्हें छोड़ नहीं देते... जो उनसे कुछ चाहते ही नहीं? क्यों लोग इतने निर्दयी हो जाते हैं... कि दर्द का कोई अहसास उनके अंदर बाकी नहीं रहता। नफ़रत इतनी तो मजबूत नहीं हो सकती ना!" अल्फ़ी अपने अंदर के दर्द को बाहर निकालते हुए बोला।

"तुम्हारे इन सवालों का जवाब किसी के पास नहीं है अल्फ़ी। उनके पास
भी नहीं... जो नफ़रत की आग में खुद भी सारी उम्र जलते हैं और हर उस चीज को भी जला देते हैं... जो उन्हें छूकर भी निकल जाती है। ऐसे लोग कभी नहीं समझते कि नफ़रत किसी भी रूप में अच्छी नहीं होती। ना किसी के लिए... ना उसके अपनों के लिए... ना समाज-देश या दुनिया के लिए। ये हमेशा सब तबाह कर देती है।" चैतन्य भी कहते-कहते भावुक हो गया था।

चैतन्य ने अपनी तरफ से कह तो दिया, पर इससे अल्फ़ी के ऑ॑सुओं की रवानगी में कोई फर्क होता महसूस नहीं किया। चैतन्य की समझ में नहीं आ रहा था कि उसे कैसे शांत कराए? वो अभी इसी उधेड़बुन में था कि तभी उसने अनामिका को अपनी पनाह में सिमटने की कोशिश करते महसूस किया। वो समझ गया कि उसके अंदर की हेममाया एक बार फिर सेअल्फ़ी का दर्द बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी। स्थिति और खराब होती उससे पहले ही चैतन्य ने ही सब संभालने का फैसला किया।

"अल्फ़ी! चलो! हमें अनामिका और हेममाया दोनों ही मिल गए हैं। अच्छी बात है कि हमें उस एडवर्ड से उलझने की जरूरत नहीं पड़ी। उसे पता चले... उससे पहले ही हम यहॉ॑ से निकल जाते हैं। कहीं ऐसा ना हो कि जो आसानी से हाथ आ गया है... वो हाथ से निकल जाए। चलो यहॉ॑ से!" चैतन्य ने कहा।

और उसकी इस बात को सुनकर अल्फ़ी के रोने में कमी आ गई। वो उसकी बात पर हुंकारी भरते हुए उठा और उसने हेममाया के शरीर को अपनी बांहों में उठाकर खुद से लगा लिया।

"मुझे पकड़कर चलो। हमें तुरंत बाहर निकलना है।" अल्फ़ी ने कॉ॑पती मगर मजबूत आवाज में कहा और बाहर का रूख किया। चैतन्य ने उसके कंधे पर एक हाथ रखा और दूसरी बांह से अनामिका को समेट कर अल्फ़ी के साथ चलने लगा। जल्द ही वो सभी बाहर आ गए। अनामिका और चैतन्य के मानसिक जुड़ाव की जानकारी ना होने के कारण एडवर्ड को भनक भी नहीं लगी कि उसकी नाक के नीचे ये सब हो चुका था। सब कुछ सही हो रहा था। समय द्वार खुलने वाला था और अल्फ़ी को भी अपनी हेममाया मिल चुकी थी। पर नियति अपना अगला दॉ॑व खेलने को तैयार बैठी थी, जो अपने वाले भविष्य की तस्वीर तय करने वाली थी।

उस गड्ढे से बाहर आते ही चैतन्य और अनामिका की जान में जान आई। वो खुश थे कि अब कुछ नहीं बिगड़ेगा, मगर अल्फ़ी के दिमाग में कुछ और ही चल रहा था। उसने आगे बढ़ते चैतन्य का हाथ पकड़ लिया।

"[illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"माया वापस आ गई है।" चैतन्य ने बुरी खबर सुनाई।

"क्या? पर कैसे?" अनामिका चिहुंकी।

"पता नहीं। पर हमें जल्द ही समय द्वार तक पहुॅ॑चना होगा।

और वो दोनों ही तेजी से बसेरे की ओर बढ़ गए। पर वहॉ॑ पहुॅ॑चते ही जलकर राख हो चुके बसेरे को देखकर दोनों का दिल धक्क करके रह गया। उन्हें याद आया कि उनके सामने ही एडवर्ड ने डाकिनी को आदेश देकर बसेरे में आग लगाई थी। उस समय उन्होंने सोचा नहीं था कि वो ये तबाही अपनी ऑ॑खों से देखेंगे। वो दोनों भरी हुई ऑ॑खों से बर्बाद हो चुके बसेरे को देख ही रहे थे कि तभी उन्हें पीछे से किसी के भागकर पास आने की आवाज सुनी। वो दोनों तेजी से पास की झाड़ियों में छिप गए। जल्द ही कोई तेजी से वहॉ॑ से गुजरा और बसेरे की ओर चला गया। उन दोनों ने उस ओर देखा और फिर थोड़ा इंतजार करने के बाद वो भी बसेरे की ओर चल दिए क्योंकि उनकी मंजिल वहीं थी।

कुछ देर बाद ही वो उसी खुफिया दरवाजे के सामने खड़े थे, जिसके पीछे हेममाया का बनाया हुआ समयद्वार था। उनके वापस जाने का रास्ता। अब उन्हें बस अल्फ़ी का ही इंतजार करना था... जो जल्द ही उन्हें आता दिखाई दिया। सब सही लग रहा था... पर नियति करवट बदलने की तैयारी करने लगी।

रात के दूसरे पहर में माया की आत्मा को जीवपात्र में क़ैद करने के बाद तांत्रिक श्रेष्ठ वापस अपने निवास में लौट गए। माया की गिरफ्तारी के साथ ही आज रात होने वाली सर्वशक्तिमंडल की सभा स्थगित कर दी गई थी और अब तो आगे के लिए भी इसका भविष्य धूमिल ही दिख रहा था। पिशाच समुदाय पहले ही इसके विरूद्ध था, मगर वो चाहकर भी कुछ नहीं कर सके। आज उनके हाथ दूर की कौड़ी लग गई थी। माया और हेममाया के बाद अनामिका का भी नाम आने पर पिशाचों की खिलाफत और भी मजबूत हो गई थी... उस पर सुरमी कबीले ने भी पिशाचों का समर्थन करते हुए ऐसे महत्वपूर्ण पदों में औरतों की नियुक्ति को अनुचित ठहराया। डायन समुदाय का मुॅ॑ह तो पहले ही बंद हो चुका था और तांत्रिक समुदाय का जोर भी कमजोर ही लग रहा था। एडवर्ड और पीटर की मनोकामना डगमगाकर ही सही... पूरी हो गई थी। डायनों के हाथ से शक्ति का केंद्र फिसल चुका था, जो आने वाले समय में और भी कई नई महत्वाकांक्षाओं से भरी कहानियों को जन्म देने वाला था।

रात का तीसरा पहर शुरू हो चुका था। तांत्रिक श्रेष्ठ अपने निवास स्थल में भविष्य कथन को खोले ना जाने कबसे बैठे थे और उसकी कही बातों पर गहराई से सोच-विचार कर रहे थे। समयद्वार खुलने की बात तो उनकी समझ में आ गई थी। वो समय द्वार तभी सक्रिय हो सकता था, जब वायु और जल की शक्ति एक साथ हो और चैतन्य-अनामिका का साथ वो संयोग बना रहा था। मगर भविष्य कथन ने किसी के लौटने की भी
बात की थी और वो कौन हो सकता है? क्योंकि चैतन्य-अनामिका के तो वापसी का समय आ गया था और उनके वापस लौटने की कोई गुंजाइश भी नहीं थी... तो फिर कौन लौटने वाला था? सवालों में उलझे हुए ही उन्हें याद आया कि चैतन्य ने शाम के समय गुफा में उन्हें एक कागज दिया था, जिसमें वो लिखा था, जो अनामिका ने भविष्य कथन से सुना था। उन्होंने फुर्ती से वो कागज अपनी जेब से निकाला और खोलकर अपनी ऑ॑खों के सामने फैला लिया।

जब प्रेम लौटकर आएगा..
और मात प्रेम से खाएगा,
जग झुलसेगा इस अग्नि में...
और दानव जाल बिछाएगा,
रक्त की बूंदों से रक्तिम...
इतिहास लिखा फिर जाएगा,
खंज़र उतरेगा सीने में...
और ये ज़ख़्म सदा भरमाएगा,
सुलझाकर उलझे धागों को...

ये समयजाल खुल पाएगा,
जो ना बूझे इस उलझन को....
फॅ॑स समयजाल में जाएगा।"

"अगर पहली दो पंक्तियों पर ग़ौर करें तो शायद ये अल्फ़ी-अनामिका-चैतन्य के बारे में है। पर दूसरी दो पंक्तियों का क्या मतलब होगा? कहीं कोई और इनकी स्थिति का फायदा तो नहीं उठाने वाला? पर कैसे?" ये विचार आते ही उन्होंने अगली पंक्तियों पर नज़र डाली... मगर उनकी समझ में ज्यादा कुछ भी नहीं आया। बस इतना ही
कि समय किसी रक्तपात की ओर इशारा कर रहा था। कैसा रक्तपात? जब तांत्रिक श्रेष्ठ को तत्काल कुछ भी पल्ले नहीं पड़ा तो उन्होंने एक बार फिर से भविष्य कथन की ओर नज़रें उठाई।

वो उस कागज को लेकर उसके पास गए और उस कागज को उस भविष्य कथन पर रख दिया। कागज के रखते ही भविष्य कथन जोर से कॉ॑पा और फिर उसमें से लाल धुऑ॑ निकलने लगा। उसकी गतिविधियॉ॑ देखकर तांत्रिक श्रेष्ठ थोड़ा पीछे हुए और उस लाल धुऍ॑ को ग़ौर से देखने लगे। धीरे-धीरे उस धुऍ॑ में कुछ तस्वीरें बनने लगीं। सबसे पहली तस्वीर किसी जलती हुए इमारत की थी। वो उसे बहुत ही ग़ौर से पहचानने की कोशिश कर रहे थे क्योंकि आग की लपटों के बीच उसकी शिनाख्त छिप सी गई थी। और फिर... उन्हें दिखाई दिया उस इमारत का मुख्य दरवाजा!

"बसेरा!" उनकी भय से फैली ऑ॑खों ने जवाब दिया।

"तांत्रिक श्रेष्ठ!" एक अनुचर तेज आवाज में उन्हें पुकारता हुआ अंदर आया। वो बहुत ही बुरी तरह से हॉ॑फ रहा था और उसके चेहरे पर हवाईयॉ॑ उड़ रही थीं।

"क्या हुआ गौरव? इतने घबराए हुए से क्यों हो?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने माथे पर बल डालकर पूछा।

"तांत्रिक श्रेष्ठ! बसेरे में आग लग गई। सब खत्म हो गया है।" उस अनुचर गौरव ने फूली हुई सॉ॑सों के साथ कहा।

ये सुनते ही तांत्रिक श्रेष्ठ ने एक बार फिर से भविष्य कथन की ओर देखा, जो अभी भी लाल धुऑ॑ उगल रहा था मगर.. उसमें दिखाई देने वाला
जलता हुआ बसेरा इस खबर के साथ ही धुऑ॑ हो चुका था। उस लाल पर्दे में एक बार फिर से हलचल होने लगी थी और फिर धीरे-धीरे एक और तस्वीर साफ हुई। तांत्रिक श्रेष्ठ ने देखा... उस तस्वीर में चारों ओर बस लाशें बिछी हुई थीं। बहुत ही ख़ौफनाक नज़ारा था। थोड़ी कोशिश करने पर कुछ चेहरे तांत्रिक श्रेष्ठ की पहचान में आ गए। वो पिशाचों की लाशें थीं। उन सबको देखकर तांत्रिक श्रेष्ठ के शरीर का सारा खून जैसे सूख गया। चैतन्य-अनामिका और अल्फ़ी वहीं थे। उन्होंने चैतन्य से संपर्क करने की कोशिश की, पर कामयाब नही हुए। अब उन्हें उन सबकी चिंता होने लगी थी। उन्हें खुद पर गुस्सा भी आ रहा था कि ये बातें हाथ से बाहर निकल जाने के बाद उन्हें पता चली। अभी वो इस बात का अफसोस मना ही रहे थे कि तभी भविष्य कथन से उठने वाला धुऑ॑ शोले उगलने लगा। तांत्रिक श्रेष्ठ की नज़रों में कौतूहल का समावेश हुआ और वो उसके और भी नज़दीक गए। उठने वाले शोले कुछ अलग होने की ओर इशारा कर रहे थे।

तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपना हाथ आगे बढ़ाया और उन लपटों को छुआ। वहॉ॑ कोई भी तपिश नहीं थी। उन्होंने ऑ॑खें बंद कर हवाओं को पुकारा और फिर एक सरगोशी उनके कानों से टकराई। उन्होंने अपनी ऑ॑खें झटके से खोल दीं। उनके माथे की शिकनों में और भी इजाफा हुआ था। परेशानी चेहरे से पसीने की शक्ल में टपकने लगी। उन्होंने एक गहरी सॉ॑स लेकर उन उठते शोलों की ओर देखा, जो धीरे-धीरे अपना सिर नीचे झुका रही थी और उस झुकी लपटों के अंदर उठते धुऍ॑ में फिर से एक तस्वीर दिखाई दी। वो नर्क का द्वार था। तांत्रिक श्रेष्ठ ने अपलक नज़रों से उसे देखा और उनके मुॅ॑ह से निकला,

"माया! तो तुम लौट आई हो! तुमसे फिर से मिलने को बेकरार हूॅ॑। तुम इस बार भी कामयाब

नही होगी।"
और फिर वो तेजी से उठे। उन्होंने अपने कमरे से कुछ सामग्रियॉ॑ उठाई और फिर उसे एक थैले में डालकर उतनी ही तेजी से बाहर निकल गए। उनका रूख नर्क के द्वार की ओर था। सब अपने हिस्से की लड़ाई लड़ रहे थे और अब उन्हें अपने हिस्से की लड़नी थी।

****

वो एक घुप्प अंधेरा कमरा था, जहॉ॑ हवा भी जैसे नापतौल कर अंदर आ रही थी। पूरे कमरे में अजीब सी घुटन भरी हुई थी। वो ना जाने कितने घंटों से इस क़ैद में थी। अब तो चीख-चीख कर उसका गला भी बुरी तरह से छिल चुका था। पर पता नहीं वो कौन सी जगह थी... जहॉ॑ उसके अलावा किसी और जिंदगी का नामोनिशान नहीं था।

उसकी आंसू भरी हुई ऑ॑खों में सुबह का वो बेरहम कत्ल अभी भी ख़ौफ बनकर बैठा हुआ था। उसके सामने ही तो माया ने दिव्याक्षि को इतनी बेदर्दी से मारा था कि अब वो कुछ भी सोचने-समझने की ताकत लगभग खो ही चुकी थी। दिव्याक्षि को मारने के बाद माया ने उसे एडवर्ड के हवाले कर दिया क्योंकि अब माया को उसकी कोई जरूरत नहीं रह गई थी और वो अच्छी तरह से जानती थी कि एडवर्ड उसका इस्तेमाल कैसे करने वाला था। उसे लग रहा था कि अब उसका अंत आ ही गया। उसने मरने से पहले अपने सारे गुजरे जीवन पर एक नज़र डाली कि कहीं तो वो इस बात का अहसास कर सके कि शायद कभी तो उसका भी एक आजाद वजूद रहा हो, जिस पर नाज़ करते हुए वो अपनी ऑ॑खें हमेशा के लिए बंद कर सके। पर उसकी किस्मत इतनी अच्छी नहीं थी कि उसे
मौत भी सूकून से मिल जाती। उसका पूरा जीवन ही उपेक्षित... तिरस्कृत रहा। या फिर... बना दिया गया। वो इतनी ग़ैर-जरूरी तो कभी भी नहीं थी। फिर भी सबने हमेशा उसे अपने जूतों की नोंक के नीचे रखा। किसी ने भी उसे प्यार नहीं किया और प्यार का ख्याल आते ही उसे हेममाया और अनामिका के साथ बिताए अपने पल याद आ गए। वो उनके प्यार की गर्मी महसूस कर एक बार फिर से जैसे जिंदा हो उठी। उसे अनामिका की कही बातें याद आने लगीं... जब उसने उसे डर से खुद को आजाद करने का मशविरा दिया था। हॉ॑! उसी के कहने पर तो उसने वो किया था। वो जीवन पूरी तरह व्यर्थ नहीं था। एक ही सही... अपने विवेक से उसने एक अच्छा काम किया था। मगर एक बार फिर इस क़ैद में आकर उस काम की अहमियत मिटने वाली थी। वो एडवर्ड वो डायरी भी ले गया, जिसमें दिव्याक्षि ने उसकी स्मृति कैद की थी और अब वो उससे जिसकी ख्वाहिश रखता था... वो उसे हर्गिज नहीं दे सकती थी और ये ख्याल आते ही वो उठकर एक बार फिर से जोर-जोर से चिल्लाने लगी। गले से उठने वाला दर्द भी उसे चुप नहीं कर पाया। लेकिन वो उस जगह जैसे अकेली ही थी, जिसकी आवाज दीवारों से टकराकर उसी के पास लौट आई थी। कुछ ही देर में वो एक बार फिर से बेदम हो गई। अपने गुनाहों की माफी मॉ॑गते हुए उसके होंठ बस एक मौका मांग रहे थे.. कि वो अपना प्रायश्चित कर सके।

कहते हैं कि तुम गुनाहों के दलदल में कितना भी धॅ॑से हुए हो... मगर तुम्हारे द्वारा साफ और पाक दिल से किया कोई भी एक नेक काम उम्मीद का ज़रिया बन जाता है। उसने भी ऐसा एक काम किया था जिसके ऐवज़ में ऊपर वाला उस पर एक रहम भरी नज़र डालने को राजी हो गया था। अंधेरे में डूबती उसकी ऑ॑खें झटके से खुलीं... जब उसके कानों में एक आवाज आई।

"परिधि!"
वो तेजी से उठी और उन सलाखों के पास आ गई, जिसके दूसरी ओर एक लड़की खड़ी उसे ही पुकार रही थी।

"तुम परिधि हो?" उसने पूछा।

"हॉ॑! प्लीज़ मुझे यहॉ॑ से बाहर निकालो। ये लोग मुझे मार डालेंगे।" वो बदहवास सी बोली।

"श्श्श्श! चुप! आवाज मत करो! मैं तुम्हारे लिए ही यहॉ॑ आई हूॅ॑। चैतन्य ने तांत्रिक श्रेष्ठ को तुम्हारे गायब होने के बारे में बताया था। उसके बाद उन्होंने मुझसे

तुम्हारे बारे में पता करने के लिए कहा था। उन्हें शक था कि तुम एडवर्ड की कैद में ही हो सकती हो। आज का पूरा दिन गुजर गया तुम्हारी खोज में... और अब जाकर मिली हो तुम।
जल्दी चलो! वो एडवर्ड कभी भी आ सकता है। अभी वो मेंशन में है। उसके आने से पहले ही हमें यहॉ॑ से दूर जाना होगा।" उस लड़की ने ताला खोलने के बाद उन सलाखों को खोलते हुए कहा।

"पर तुम हो कौन?" अपनी फटी हुई आवाज में परिधि ने पूछा।

"अमांडा! मेरा नाम अमांडा है।" उसने अपना परिचय दिया।

और फिर अमांडा उसे ऐहतियात से वहॉ॑ से बाहर की ओर ले जाने लगी। परिधि की हालत बिल्कुल भी सही नहीं थी, पर खुद को जीवित रखने की जुगत में वो भाग रही थी। उसे बस अनामिका से मिलना था। उससे बहुत जरूरी बात करनी थी। चाहे उसके बाद वो मर ही क्यों ना जाती। पर तब तक उसे खुद को जिंदा रखना ही रखना था। वो दोनों उस कैदखाने की सारी रूकावटें पार करते हुए बाहरी हिस्से में आ गए। बाहर आने के बाद उन्होंने एक दूसरे की ओर मुस्कुराकर देखा। सब कितना आसान था। अभी
वो दोनों इसी खुशफहमी में ही थे कि तभी पीछे से आई एक तेज मर्दाना आवाज से उन दोनों के ही पैर ठिठक गए। परिधि तो उसी तरह खड़ी रही, पर अमांडा ने पीछे मुड़कर देखा और जो देखा, तो समझ में आया कि जिंदगी के लिए संघर्ष अभी भी बचा हुआ था।

"लड़ना आता है।" अपना खंज़र बाहर निकालते हुए अमांडा ने परिधि से पूछा। जवाब में परिधि ने तेजी से नहीं में सिर हिलाया।

"ठीक है! बस इनकी पकड़ में मत आना और जैसे ही मौका मिले सीधा बसेरे की ओर भागना।
चैतन्य और अनामिका आज वापस लौटने वाले हैं। अगर उनसे मिलना है तो उससे पहले ही मिल सकती हो। समझ आया!" अमांडा ने आगे कहते हुए कहा, जिस पर इस बार डरी-सहमी परिधि ने हॉ॑ में सिर हिलाया।

"गुड!" चारों ओर से आते गार्ड्स पर नज़र रखे हुए अमांडा ने उसे शाबाशी दी।

"हम्म!" परिधि ने रूंधे हुए गले से हुंकारी भरी। आज एक बार फिर से उसे अपनी लाचारी पर शर्म आई। अगर उसे लड़ना आता तो वो भी अमांडा का साथ दे सकती थी, पर सबके लिए बस एक बोझ ही थी, जिसे ना जाने क्यों सब भले लोग खुशी-खुशी उठा रहे थे।

"परिधि! मेरा एक काम कर दोगी!" अमांडा ने याचना भरे स्वर में कहा, जिस पर परिधि ने उसे चौंककर देखा। अमांडा ने अपनी ऊंगली से एक अंगूठी निकालकर उसकी ओर बढ़ाई, जिसे परिधि ने ले लिया और उसे देखने लगी।

"बहुत इच्छा थी जाने से पहले एक बार उन्हें दिल भरकर देखने की। पर शायद मेरी किस्मत में ये सुख नहीं। मेरी ये अंगूठी उन्हें दे देना। शायद
इस बहाने दिल ना सही... उनकी यादों में तो रह सकूं। जीवन में पहली बार किसी से प्रेम किया और अब... ये जीवन बस उन्हीं के नाम रहेगा।" कहते-कहते अमांडा का गला भर आया था।

"चैतन्य!" परिधि ने अनुमान लगाया।

अमांडा ने बिना उसकी ओर देखे अपना सिर हॉ॑ में हिलाया और परिधि को महसूस हुआ कि वो अकेली नहीं हैं। इस दुनिया में सभी को अपने हिस्से का दर्द मिला हुआ है। किसी को कम तो किसी को ज्यादा। उसके चेहरे को पढ़ने के बाद परिधि ने उस अंगूठी को अपनी एक अंगुली में डाला और बोली, "आई प्रॉमिस! ये अंगूठी उन तक जरूर पहुॅ॑चेगी। चाहे कुछ भी हो जाए।"

और ये सुनकर अमांडा के चेहरे पर एक दर्द भरी मुस्कान आई। वो दर्द जो एक तरफा होकर भी एक संपूर्ण प्रेम का था, जिसमें कुछ भी पाने की इच्छा नहीं थी... सिवाय प्रियतम के चरणों के। राधा बनने की चाहत तो हर कोई रखती है... पर मीरा की तरह प्रेम करना सबके लिए आसान नहीं होता।

और फिर अगले क्षण ही वो सामने की गार्ड्स से अकेले भिड़ी हुई थी। परिधि ने अपनी ऑ॑खें फाड़कर देखा। वो भी उसी की हमउम्र लड़की थी। पर कितना फर्क था दोनों में। उसे इस तरह

बहादुरी से जूझते हुए देखकर परिधि के अंदर भी कुछ जागा था। उसकी वो हिम्मत... जिसके चेहरे पर पड़ी चादर माया ने कभी भी हटने नहीं दी... आज अमांडा को देखकर करवट ले रही थी।

"परिधि भागों!" उसे बुत की तरह खड़ा देखकर अमांडा चिल्लाई और परिधि होश में आई। उसने गार्ड्स से उलझी हुई अमांडा पर एक नज़र डाली और फिर उससे किए वादे को याद कर एक ओर दौड़ लगा दी।
कुछ दूर आगे जाने पर उसने एक बार मुड़कर पीछे देखा। दो गार्ड्स उसके पीछे आ रहे थे और परिधि ने सोच लिया था कि वो.. कुछ भी करेगी.. पर चैतन्य तक जरूर पहुॅ॑चेगी।

आगे जाकर एक जगह पर आखिरकार उन गार्ड्स ने उसे घेर ही लिया। परिधि ने चारों ओर देखा। तब तक एक गार्ड ने उसकी ओर अपनी तलवार चलाई। परिधि तेजी से एक ओर हटी। मगर वो तलवार उसके हाथ को छूते हुए निकल गई। परिधि ने अपना वो हाथ दूसरे हाथ से पकड़ लिया। वो उससे बचने का सोच ही रही थी कि तभी दूसरे गार्ड ने उसे पीछे से आकर पकड़ लिया, जिसके बारे में वो भूल गई थी। वो उसकी गिरफ्त में लगातार छटपटाने लगी। तभी उसने सामने से पहले वाले गार्ड को आते देखा। परिधि ने सोचा कि अभी नहीं तो कभी नहीं। और ऐसा सोचते ही उसने अपनी जिंदगी भर की ताकत इकट्ठी की और फिर अपने पैर ऊपर उठाकर उसे पकड़े हुए गार्ड के पैरों में मारा। किस्मत से उसका प्रहार उस गार्ड के घुटनों में हुआ, जिससे वो दर्द से बिलबिला उठा और परिधि पर उसकी पकड़ कमजोर हो गई। पकड़ कमजोर होते ही परिधि ने खुद को छुड़ाया और फिर पास पड़ा मोटा डंडा उठाकर उसके तलवार पकड़े हाथ पर मारा, जिससे तलवार उस गार्ड के हाथ से छूट गई। परिधि ने वो तलवार उठाई और दूर उछाल दी, जो अंधेरे में पता नहीं कहॉ॑ जाकर गिरी। उसकी इस हिमाकत से दोनों गार्ड्स बुरी तरह से भड़क गए और उसे पकड़ने को आगे बढ़े। परिधि ने भागने की कोशिश की तो उन्होंने उसके पैरों पर प्रहार कर उसे नीचे गिरा दिया। उसके बाद उसके प्रहार से तिलमिलाए गार्ड ने उसे पैरों से पकड़कर उसे खुरदरी और पथरीली जमीन में घसीट दिया। दोनों ही गार्ड्स उसकी हालत पर जोर-जोर से हॅ॑स रहे थे। कुछ दूर घसीटने के बाद ही परिधि का पूरा शरीर छिलकर लहुलुहान हो गया और उसके कपड़े भी कई जगह से फट गए। एक बार फिर से परिधि अपनी हिम्मत खोने लगी थी। तभी उसकी नज़र अपनी ऊंगली में पहनी अमांडा की अंगूठी पर पड़ी और उसे देखते ही उसे अपना वादा याद आया। वो वादा याद आते ही उसके अंदर एक बार फिर से एक चिंगारी
सी उठी। उसने अपने एक हाथ में बड़ा सा पत्थर और दूसरे हाथ में ढेर सारी मिट्टी भर ली। जब घसीटकर बेहाल करने के बाद उस गार्ड ने उसे उठाने के लिए सीधा किया और उसके ऊपर झुका, उसी समय परिधि ने अपने हाथ में पकड़ा पत्थर उसके चेहरे पर दे मारा। इस अचानक हुए हमले से वो एक बार फिर से बिलबिला उठा और अपना चेहरा हथेलियों में छिपा लिया। दूसरा गार्ड.. जो परिधि की हालत देखकर लापरवाह हो गया था और तेज कदमों से आगे बढ़ गया था, उस गार्ड की आवाज सुनकर तलवार उठाए वहॉ॑ दौड़ते हुए आया। परिधि ने इंतजार किया और मौका देखते ही अंधेरे में पूरी तरह से खुली हुई उसकी ऑ॑खों में अपनी मुट्ठी में भरी मिट्टी फेंक मारी। इस अचानक हमले से वो भी हड़बड़ा गया और तलवार उसके हाथ से छूट गई। परिधि ने दौड़कर वो तलवार उठाई और ऑ॑खें बंद करके पहले एक गार्ड और फिर दूसरे गार्ड पर चला दी। उन दोनों को परिधि से इस तरह के हमले कई कोई आशंका नहीं थी, जिससे वो सावधान नहीं हो पाए और अगले ही पल दोनों की लाश जमीन पर पड़ी थी। कुछ पल तो परिधि ने खुद ही ये यकीन करने में लगा दिए कि उसने इतना बहादुरी का काम कर दिया था और फिर जब यकीन हुआ तो वो तेजी से पलटकर एक ओर भागी और बस भागती चली गई। जीवन में पहली बार इतनी घायल होने के बाद भी वो खुद को कमजोर नहीं, बल्कि ताकतवर महसूस कर रही थी।

उसी तरह बदहवास दौड़ते हुए वो किसी तरह बसेरे के पास पहुॅ॑ची और वहॉ॑ का मंज़र देखकर उसका दिल धक्क करके रह गया। उसकी ऑ॑खों के सामने उसका घर... उसका बसेरा जलकर बर्बाद हो चुका था। उसके दिल में पहले तो सबका ख्याल आया और फिर ना जाने क्या सोचकर उसने बसेरे की ओर दौड़ लगा दी। उसे समय रहते समय द्वार तक पहुॅ॑चना था। उसे हर हाल में अपना वादा निभाना था। वो उस जले हुए बसेरे के पिछले दरवाजे से अंदर की ओर गई। बसेरे का ये हिस्सा मुख्य इमारत से अलग होने की वजह से आग से अनछुआ रह गया था। जल्द ही वो उस खुफिया दरवाजे के सामने थी, जिसके पीछे वो समय द्वार था। वो वहीं
खड़ी थी कि तभी उसे कुछ आहटें सुनाई दीं। पहले तो वो चुपचाप वहीं खड़ी रही, मगर फिर किसी खतरे के बारे में सोचकर झुरमुटों के अंदर चली गई। अंदर जाते ही वो दर्द से बेहाल होकर नीचे गिर पड़ी। पहली बार इतना शारीरिक ताकत लगाने के बाद वो थककर चूर हो चुकी थी और आधी बेहोशी की हालत में वो ये नहीं देख पाई कि जिनकी आहट सुनकर वो जा छिपी थी... वो चैतन्य और अनामिका ही थे, जिनका वो इंतजार कर रही थी और उसकी ये चूक उसकी रिहाई को और भी लंबी कैद में बदलकर उसे अधूरा बनाने वाली थी।

माया के वापस लौट आने की खबर तांत्रिक श्रेष्ठ के होश उड़ा ले गई थी। आखिर ये कैसे हो सकता था? उन्होंने खुद उसकी आत्मा को शरीर छोड़ने से पहले ही जीवपात्र में क़ैद किया था। फिर ये अनहोनी कैसे हो गई? अब इसका पता तो नर्क का द्वार के पास जाकर ही लगना था। तांत्रिक श्रेष्ठ को आश्चर्य हो रहा था कि छाया उर्फ माया उस काली शक्ति को प्राप्त करने के लिए कितनी लालायित थी, कि उसने मौत को हराने का भी सारा इंतजाम पहले से करके रखा था। वो अपनी महत्त्वाकांक्षा में इस हद तक पहुॅ॑च चुकी थी कि अब वो एक नासूर बन चुकी थी और उसे रोकना अब बहुत ही जरूरी हो गया था।
तांत्रिक श्रेष्ठ जब उस नर्क के द्वार के पास पहुॅ॑चे, वहॉ॑ मरघट जैसा सन्नाटा छाया हुआ था। उन्हें आश्चर्य हुआ कि इस समय यहॉ॑ कोई भी पहरेदार मौजूद नहीं था, जबकि ये एक बहुत ही संवेदनशील जगह थी, जिसकी सुरक्षा में कभी भी कोई लापरवाही नहीं बरती गई थी। दिन के चारों पहर में ये जगह सुनसान ही रहती थी, क्योंकि उस समय काली शक्तियों का प्रभाव यहॉ॑ नहीं होता था। मगर रात के चारों पहर उस जगह पर पर्याप्त सुरक्षा रहती थी। ये कहानी आम थी कि 800 साल पहले उस पिशाचिनी को रात के तीसरे पहर में ही इस द्वार के पीछे क़ैद किया गया था। इसलिए उसी समय उसकी शक्तियॉ॑ सबसे ज्यादा सक्रिय भी होती थीं। ऐसे समय में बाहर से भी कोई शक्तिशाली मदद उसे उस दरवाजे से बाहर निकाल सकती थी। ना जाने कितनों ने ये कोशिशें की, जिसमें से आखिरी कोशिश छाया की थी, जिसे तांत्रिक माणिक ने नाकाम कर दिया था। उस समय छाया को आत्महत्या कर अपनी आत्मा को मुक्त करना पड़ा, ताकि वो किसी और की पकड़ या क़ैद में ना आ सके और फिर उसकी आत्मा ने डाकिनी के गर्भ से माया के रूप में जन्म लिया और अब वो एक बार फिर से उसकी महत्वाकांक्षा ने अपना सिर उठाया था।

फिलहाल तो यहॉ॑ कोई भी सुरक्षा दिखाई नहीं दे रही थी। तांत्रिक श्रेष्ठ ने अनुमान लगाया कि शायद ये भी एडवर्ड और माया की ही चाल रही हो। और क्या ही हो सकता था और अब उनकी बारी थी। वो तो अनामिका और अल्फ़ी वो भविष्य कथन उनके पास ले आए थे, इसलिए उन्हें कम से कम ये एक बात पहले ही पता चल गई।

तांत्रिक श्रेष्ठ ने चारों ओर देखा और फिर तेजी से उस घेरे से पार हो गए, जो उस द्वार की सुरक्षा के लिए बना हुआ था। जैसे ही वो उस लकीर से पार हुए... उनके चारों ओर एक सफेद धुऑ॑ सा बिखर गया। मगर वो किसी भी चीज से बेअसर तेजी से उस जगह के बीचों बीच गए और अपने थैले से लाल धागे का एक छोटा सा गोला निकाल कर वहॉ॑ रख दिया। फिर उन्होंने अपनी थैली से चार छोटी शीशीयॉ॑ निकाली और एक-एक
करके उस धागे के गोले के ऊपर उन शीशियों से लाल तरल पदार्थ डाल दिया। इसके बाद उन्होंने अपने दाऍ॑ हाथ की तर्जनी उंगली पर पहले एक द्रव्य डाला और फिर खंज़र निकाल कर उस ऊंगली के अग्र भाग में एक चीरा लगा दिया। खून की धार तेजी से वहॉ॑ से निकली, जिसे तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसी धागे के गोले के ऊपर गिरा दिया। उनका खून उस गोले पर गिरते ही वो गोला तेज रोशनी से जगमगा उठा और फिर धीरे-धीरे शांत हो गया। तांत्रिक श्रेष्ठ के होंठों पर एक राहत भर मुस्कान आई। उन्होंने उठकर चारों ओर देखा। अभी भी सब कुछ शांत था। उन्होंने अपना काम कर लिया था। अब सामने वाले की कार्यवाही का ही इंतजार था। उन्होंने आसमान की ओर देखकर कुछ अनुमान लगाया और फिर वो उठकर तेजी से एक ओर चले गए और छिपकर इंतजार करने लगे। उनकी गणना के अनुसार वो कभी भी आ सकती थी और सचमुच एक ओर से हवा कुछ हलचलों की आवाजें उन तक ले आईं।

तांत्रिक श्रेष्ठ ने देखा। वो रोमा और मार्गरेट थीं... जो दो बड़ी-बड़ी थैलियॉ॑ उठाकर तेजी से उसी तरफ आ रही थीं। तांत्रिक श्रेष्ठ के लिए अच्छी बात थी कि वो जहॉ॑ छिपे हुए थे वहॉ॑ से सब साफ़ दिखाई और सुनाई दे रहा था। उस सुरक्षा दायरे के बाहर आते ही वो दोनों रूक गईं और फिर उन थैलों को नीचे रख दिया। उनकी हॉ॑फती हुई हालत से पता चल रहा था कि वो दोनों नाज़ुक लड़कियॉ॑ इतनी मेहनत के बाद बुरी तरह से थक गई थीं। तांत्रिक श्रेष्ठ ने आसपास अपनी हैरान सी नज़रें दौड़ाई। आखिर ये दोनों यहॉ॑ क्या कर रही थीं। सबसे बड़ा सवाल ये था कि ये दोनों बच कैसे गईं थीं? बसेरे में आग लगने और सब तबाह होने की खबर जंगल की आग की तरह फ़ैल चुकी थी। सबको पता चल चुका था कि सारी डायनें उस आग में जलकर मर गई थीं... तो ये दोनों सही-सलामत यहॉ॑ क्या कर रही थीं? और अगले ही पल उनके दिमाग में घंटी बजती। कहीं माया के कहने पर इन दोनों ने तो कुछ ऐसा नहीं किया, जिससे वो एक बार फिर से वापस आ गई थी। माया के पीछे रोमा और मार्गरेट के दुम हिलाते हुए घूमने के किस्से पूरे इलाके में आम थे। ये दोनों उस माया से इतना ज्यादा प्रभावित

"वो... क्या... माया?" बमुश्किल रोमा ने पूछा।

"तुम्हें हेममाया के शरीर को झील के पास नहीं डालना था। उसी के बाद तो सारी मुश्किलें शुरू हुई। डेढ़ साल से बनाई हमारी सारी योजना तुम दोनों की उस गलती की वजह से बर्बाद ही हो गई। हेममाया की मौत की खबर बाहर नहीं आती तो फिर कुछ होता ही नहीं। वो बेवकूफ अल्फ़ी उसके इंतजार में बैठा रहता।" माया ने बहुत ही आराम से कहा।

"हम... उस अनामिका से डर गए थे। वो.. तुम्हें.. तुम्हारे कमरे से.. उठाकर ले गई थी। उसके कहने पर ही परिधि ने भी धोखा किया। हमें लगा... कि हम फॅ॑स जाऍ॑गे।" अपनी पूरी हिम्मत जुटाकर किसी तरह मार्गरेट ने उनकी बात रखी।

"अनामिका! सारी मुसीबत की जड़ वही लड़की है। एक बार मैं शक्तियॉ॑ हासिल कर लूॅ॑... फिर वो चैतन्य और वो अनामिका... दोनों की गर्दन मेरे हाथ में होगी। उन दोनों ने ही तो सब खराब किया। अगर वो यहॉ॑ नहीं आते तो मेरी और एडवर्ड की योजना आसानी से कामयाब हो जाती। उस अनामिका की वजह से परिधि ने धोखा किया और एडवर्ड की योजना
मिट्टी में मिल गई। खैर वो जाए भाड़ में। पर उस चैतन्य की वजह से मेरा जो ये हाल हुआ, वो मैं माफ नहीं करूंगी। वो सब बिगाड़ने के लिए ही यहॉ॑ आए हैं। अब मैं उनका जो बिगाड़ूंगी... उनकी आत्मा भी देखकर सिहर जाएगी। वो कभी भी यहॉ॑ से नहीं जा सकेंगे। यहीं मेरी क़ैद में रहेंगे।" माया ऊॅ॑ची आवाज में बोलते हुए भयानक अट्टहास करने लगी। ये सुनते ही तांत्रिक श्रेष्ठ को आने वाले खतरे का अहसास हो गया और उन्होंने चैतन्य से मानसिक संपर्क कर माया के लौटने की खबर देकर उन दोनों को जल्दी से जल्दी समयद्वार से वापस लौट जाने के लिए कहा।

"माया! क्या... हम दोनों... जा सकते हैं?" रोमा ने कॉ॑पती हुई आवाज में कहा।

"हॉ॑! क्यों नहीं! तुम्हें तो जाना ही है। बस एक मदद और! आज तक हर जगह... हर समय तुम दोनों ने मेरी मदद की है। आज आखिरी मदद और कर दो। फिर तो जाना ही है तुम्हें।" माया ने इस बार चाशनी गिरती हुई आवाज के साथ कहा।

"बोलो माया!" जिंदगी की उम्मीद के साथ मार्गरेट और रोमा ने एक साथ कहा। उनकी बात सुनकर माया अपने विकृत चेहरे के साथ मुस्कुराई, जो दिखी तो नहीं, पर बाकियों ने महसूस जरूर किया।

"इस नर्क के दरवाजे को खोलने के लिए मुझे पंचतत्वों की शक्तियॉ॑ चाहिए। मेरे पास परिधि की भू-शक्ति, हेममाया की जल-शक्ति और चैतन्य की वायु-शक्ति तो है... वही जो मैंने गिरफ्तार होने से पहले उसके मुॅ॑ह से खींची थी। अब बस मुझे नभ-शक्ति और अग्नि- शक्ति के लिए दो लोग चाहिए। ला दो मुझे और मुक्त हो जाओ।" माया ने जमीन पर रखे थैले को टटोलते हुए कहा।

"अभी कहॉ॑ मिलेंगे वो? कोई और रास्ता भी होगा माया। ऐसे दो लोगों को
ढूंढने का समय ही कहॉ॑ हैं? तीसरा पहर खत्म होने में बस एक घंटा ही रह गया है!" माया का इत्मीनान देखकर रोमा ने इस बार आराम से कहा।

"अरे! अरे! ढूंढना नहीं है। मुझे पता है।" अपने हाथों में कुछ पकड़कर खड़े होते हुए माया बोली।

"अच्छा! ये तो अच्छी बात है। बताओ... कौन है वो?" मार्गरेट ने खिली हुई आवाज में कहा।

"हैं दो लोग! बचपन से ही हमेशा उन दोनों को बहला-फुसलाकर अपने आसपास रखा। बेचारे समझते रहे कि मैं उनकी हितैषी हूॅ॑, पर वो तो हमेशा से ही मेरे शिकार थे और दोनों बेचारों को ये कभी भी पता ही नहीं चला।" माया ने बहुत ही अफसोस भरी आवाज में कहा और उसकी बात सुनकर मार्गरेट और रोमा दोनों की आत्मा भी सिहर उठी थी।

"तुम.. तुम... किनकी बात कर रही हो?" एक बार फिर से रोमा की आवाज कॉ॑पी थी।

और फिर ये अचानक ही हुआ। किसी को भी रिएक्ट करने का मौका ही नहीं मिला। यहॉ॑ तक कि तांत्रिक श्रेष्ठ भी बस देखते ही रह गए क्योंकि जो हुआ... उसकी आशंका किसी को भी नहीं थी। माया एक झटके से मुड़ी और फिर उसके दोनों हाथों से एक-एक खंज़र छूटकर रोमा और

[illegible] [illegible] [illegible] [

सिमटती गई, जब उसने ऐसा कुछ भी होता नहीं देखा। और फिर उसके देखते ही देखते एक रंगीन रोशनी बीचों-बीच तेजी से उठी और फिर उस सफेद रोशनी में घुल गई। अब रोशनी के बहाव की दिशा बदल गई और माया के सारे किए-धरे पर पानी फिरता नज़र आया।

"नहीं! नहीं! नहीं! ऐसा नहीं हो सकता! ऐसा कैसे हो सकता है? किसने किया ये? किसकी ज़ुर्रत हो गई?" वो आसमान तक पहुॅ॑च सकने वाली आवाज में चिल्लाई।

"मेरी ज़ुर्रत है!" एक आवाज उसके कानों से टकराई और उसने तेजी से उस ओर मुड़कर देखा।
सामने तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ खड़े थे। उन्हें सामने देखकर वो किसी परकटे परिंदे की तरह फड़फड़ा उठी।

"तू! तू यहॉ॑ कैसे आया? अपनी आत्मा को कैद करवाकर तुझे तो मैंने धोखा दे दिया था! मेरा धोखा इतना कमजोर नहीं हो सकता है।" वो पूरी ताकत से चिल्लाकर बोली।

"चिल्लाती रह! पर सच यही है कि एक बार फिर से तू नाकाम हो चुकी है। देख मैंने ही तुझे दो बार हराया। मान जा कि ये तेरे बस का नहीं। बुराई कभी भी अच्छाई से नहीं जीत सकती।
हार मान ले और बुराई का रास्ता छोड़ दे। अभी भी वक्त है।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसे समझाते हुए कहा।

मगर अपनी नाकामी से बौखलाई हुई माया अभी भी अपनी हार मानने को तैयार नहीं थी। वो बदहवास सी बड़बड़ाए जा रही थी।

"नहीं! ऐसा नहीं हो सकता! माया नहीं हार सकती! कभी भी नहीं!"

"माया! ये जिद छोड़ दो! अपनी इस जिद के लिए तुमने मासूम अल्फ़ी और हेममाया की जिंदगी बर्बाद कर दी। हेममाया का पद छीनने के लिए
तुमने उससे उसकी जिंदगी छीन ली। वो जल-रक्षक थी! बुराई से इस दुनिया की रक्षा करना उसका कर्तव्य था। तुमने उसे मार दिया... फिर भी वो वापस लौटी। उसने कहा था ना कि वो तुम्हें रोकने के लिए वापस आएगी और वो वापस आई। अनामिका बनकर! वो अनामिका ही थी.. जिसने अल्फ़ी को संभाला। वो अनामिका ही थी... जिसने पिशाच का खंज़र एडवर्ड से छीना। वो अनामिका ही थी, जिसने उस भविष्य कथन को हासिल किया और उसकी पहली भविष्यवाणी सुनी। उसी की वजह से ही मुझे तुम्हारे इरादे पता चले और मैं तुम्हें रोक सका। अगर अनामिका और चैतन्य यहॉ॑ नहीं आते.. तो तुम और एडवर्ड कितनी आसानी से अपना मकसद पा लेते। पर आज तुम दोनों ही नाकाम हो। हेममाया ने अपना वादा निभाया। तुमने उसकी शक्तियॉ॑ छीन लीं... तो वो भविष्य से शक्तियॉ॑ लेकर तुम्हें रोकने आई और आज उसने तुम्हें रोक भी लिया। एक बात हमेशा याद रखना कि बुराई कभी भी अच्छाई से नहीं जीत सकती। कभी भी नहीं। तुम हेममाया से हार चुकी हो। स्वीकार कर लो अपनी हार!" तांत्रिक श्रेष्ठ लगातार उसे समझाते हुए बोले।

माया के चेहरे पर बेज़ारी ने कब्जा जमाया और वो बहुत ही थकी हुई नज़र आने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे कि उसने सचमुच हार स्वीकार कर ली थी। वो एक ठंडी आह के साथ घुटनों में गिरी और फिर अपना चेहरा हथेलियों में छिपाकर सुबकने लगी। तांत्रिक श्रेष्ठ ने भी उसे नहीं रोका। वो चाहते थे कि माया अपने अंदर का सारा गुबार बाहर निकाल दे। कुछ देर रोकर खुद को हल्का करने के बाद उसने अपनी सूजी हुई ऑ॑खों से तांत्रिक श्रेष्ठ की ओर देखा।

"अनामिका अभी कहॉ॑ हैं?" माया ने थके हुए लहजे में पूछा।

"उनका काम खत्म हुआ। अब वो जा रहे हैं।" तांत्रिक श्रेष्ठ ने कहा।

"मुझे उससे एक बार मिलना था। माफी मांगनी थी। पर वो चले गए तो ये
फॉ॑स दिल में ही रह जाएगी और सारी उम्र चुभेगी। काश.. मैं उनसे मिल पाती!" माया ने खड़े होते हुए बुझी हुई आवाज में कहा।

"क्या सच में?" तांत्रिक श्रेष्ठ ने खुशगवार हैरानी के साथ पूछा।

"हॉ॑! आप सही कह रहे हैं। मैं भी अब तक गई हूॅ॑। अब मैं भी आराम चाहती हूॅ॑!" माया ने अपने लफ़्ज़ों पर वजन डालते हुए कहा।

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]
[illegible]
[illegible]
[

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible]!"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

"माया.. अनामिका के साथ! नहीं! ऐसा नहीं होना था।"

मगर ऐसा हो चुका था। चैतन्य और अनामिका की अतीत से विदाई हो चुकी थी, मगर ये विदाई अल्फ़ी को फिर से बेचैनियॉ॑ दे गई थीं। लड़ाई अब भी खत्म नहीं हुई थी। बस उसने अतीत से भविष्य का रूख कर लिया था और अल्फ़ी को ये नहीं पता था कि वो सब समय धारा में बहकर किस समय में गए थे? और अब तांत्रिक श्रेष्ठ के बाद उसके इस सवाल का जवाब किसी के पास नहीं था।

कमरे के दरवाजे पर सन्न खड़ा हुआ अल्फ़ी उस दीवार को टकटकी लगाए हुए देख रहा था, जहॉ॑ मौजूद समयद्वार बंद हो चुका था। कुछ देर में जब उसका सकता टूटा तो उसने लुटी-पिटी दयनीय हालत में अपने आगे पीछे और चारों ओर देखा। शायद वो यकीन करना चाह रहा था कि जो उसकी ऑ॑खों ने देखा, वो सच था और ये यकीन आते ही उसकी ऑ॑खें एकदम से भीग गईं। वो धीरे-धीरे चलता हुआ उस दीवार के सामने गया और उसे एकटक घूरता रहा। कुछ देर उसे घूरने के बाद उसने उस दीवार की ओर अपना हाथ बढ़ाया, मगर वो उसे छूता... उससे पहले ही उसने अपने आप को रोक लिया।
"नहीं! उसने सही कहा! हमारी दुनिया अलग है। उसका जाना ही ठीक है।"

और अपने दिल पर पत्थर रखता वो तेजी से पलटकर कुछ कदम आगे बढ़ा ही था कि माया का ख्याल आते ही वो एक बार फिर से रूक गया। उसके दिमाग के तार जोर से बजे थे। एक बात.. जो वो अनामिका के ग़म में भूल ही गया था।

"माया! माया जिंदा है! पर कैसे? वो तो मर चुकी थी! सबने तो यही कहा था! मगर वो तो जिंदा है और... उन दोनों के पीछे गई है। माई गॉड! अनामिका!"

इस ख्याल के आते ही वो एक बार फिर से तेज़ी से दीवार के उस हिस्से की ओर गया और थोड़ी घबराहट के साथ अपना हाथ आगे बढ़ाया। वो उसे छूने से बस कुछ इंचेस ही दूर था कि अचानक... एक बार फिर उसने अपना हाथ पीछे खींच लिया।

"नहीं! मुझे चिंता करने की जरूरत नहीं है। वो बहुत बहादुर है। मुझे यकीन है कि वो अपना ख्याल रख सकती है। और फिर... चैतन्य भी तो साथ है उसके। वो उसके साथ कुछ ग़लत होने नहीं देगा। हमारी कहानी बस यहीं तक थी। अब हमें अपने-अपने रास्ते जाना होगा। वो रास्ते... जो कहीं नहीं टकराते। हमेशा खुश रहना! अल्फ़ी अपना वादा हमेशा निभाएगा। वो कभी कुछ ग़लत नहीं करेगा। पक्का प्रॉमिस!"

और फिर अपने ऑ॑खों की नमी को ऊंगलियों से रगड़ता हुआ वो तेजी से बाहर निकल गया। शायद उसने हाथ आगे बढ़ाया होता तो... कहानी का रूख कुछ और हो सकता था। मगर अब वो अपने खींचे हुए कदम फिर से आगे नहीं बढ़ाने वाला था। वो दर्द की इंतेहा से थक चुका था। अब उसे
बस आराम चाहिए था, चाहे जैसे भी मिले।

तीसरा पहर खत्म हो चुका था। रात अभी भी उतनी ही गहरी थी। शायद हर रात से ज्यादा ही गहरी। पूरे इलाके में ख़ौफ ने अपने पैर पसार लिए थे। ना जाने कितने सवाल लोगों के दिल और दिमाग में गहरे पैठ गए थे कि ऐसे समय में जबकि इस इलाके में बड़े-बड़े धुरंधर मौजूद थे, तब उनकी मौजूदगी में इस तरह की भयानक घटनाऍ॑ हो जाना सबकी सोच और समझ से परे था। जो भी था, मगर ये रात इतिहास का वो काला अध्याय था, जिसे अतीत की किताब से मिटा दिया जाने वाला था। बस जानकारी के लिए दो पंक्तियॉ॑ ही भविष्य को दी जाने वाली थीं कि मेंशन में एक हत्याकांड हुआ और बसेरे में आग लग गई। इसके अलावा सब भुला दिया जाने वाला था, जिसे हर्गिज भी नहीं भुलाया जाना था क्योंकि इस समय बसेरे में लगी आग की तपिश पचास साल बाद एक और आग लगाने वाली थी, जो कईयों की जिंदगी बदलने वाली थी।

उसी रात के अंधेरे में अल्फ़ी अपनी हेममाया के साथ घोड़े पर बैठा कल्परूप से बाहर जा रहा था। आज से चार महीने पहले वो इसीलिए तो यहॉ॑ आया था और आज वो वापस जा भी रहा था। पर इस तरह वापस जाएगा, उसने कभी ग़लती से भी अपने ख्याल में ना लाया था। कस्बे की

आखिरी सीमा से बाहर निकलकर उसने एक बार मुड़कर उस रास्ते को देखा। एक बड़े से बोर्ड में कल्परूप लिखा हुआ था। चार महीने पहले इस नाम को पढ़कर जब वो अंदर गया था, तो ढेर सारी उम्मीदों के साथ गया था और आज जब वापस जा रहा है... तो हेममाया के रूप में उन सभी उम्मीदों की लाश लेकर लौट रहा था। उसे नहीं पता था कि वो आगे क्या करेगा? कैसे करेगा? पर जीना तो था! दूसरों की नफ़रत और लालच की लड़ाई में उसके दोनों हाथ खाली रह गए थे। उसने एक आह भरी और फिर अपने रास्ते में आगे बढ़ गया। पीछे छूटता अंधेरा बस जाहिरी तौर पर जा रहा था। सामने तो पूरी जिंदगी ही अब अंधेरे से भरी थी।
रात का चौथा पहर खत्म हो गया और दिन का पहला पहर खत्म होने से पहले वो अपने घर के दरवाजे पर था। लता जब घोड़े की हिनहिनाहट सुनकर बाहर आई, तो उन दोनों की ही हालत देखकर सदमे में आ गई। खून से सने कपड़ों में अल्फ़ी को देखकर वो सहमी और हेममाया का मृत शरीर देखकर गश खाकर गिर पड़ी। अल्फ़ी के लिए कुछ भी आसान नहीं था। वो खुद बुरी तरह से टूट चुका था, मगर अब उसे लता के लिए जीना ही था। उसके लिए हर जहर को पीना था। उसके लिए उसकी माया की आखिरी धरोहर थी लता। उसकी मॉ॑! और वो जीने वाला भी था, बशर्ते फिर कोई उसकी शांत पड़ चुकी जिंदगी के पानी में कंकर ना मारता।

****

चैतन्य और अनामिका जब समयद्वार के अंदर गए, तब माया ने अनामिका की ड्रेस का छोर पकड़ लिया और फिर उसके हाथ से वो छोर छुड़ाने के चक्कर में माया और माया से लिपटी हुई परिधि भी उस समयद्वार के अंदर गिर पड़ीं। उनके अंदर गिरते ही वो समयद्वार भी बंद हो गया। उन दोनों को समयद्वार के अंदर देखकर चैतन्य और अनामिका की ऑ॑खें फटी की फटी रह गईं।

"हे भगवान! ये आफत यहॉ॑ भी आ गई।" चैतन्य ने माया को देखकर तुनकते हुए कहा।
"अब क्या करें?" अनामिका ने कहा।

"भागो!" अनामिका का हाथ पकड़कर चैतन्य जोर से चिल्लाया और फिर दोनों ने ही एक ओर दौड़ लगा दी।

उन्हें भागता देखकर माया भी तेजी से उठी और उनके पीछे भागी ही थी कि तभी एक बार फिर से परिधि ने पीछे से आकर उसे पकड़ लिया और फिर जोर से चिल्लाकर बोली, "अनामिका दीदी! आगे जाईए! सीढ़ियॉ॑ हैं वहॉ॑! उसी से ऊपर जाना है। पिछली बार मैं गई थी। और हॉ॑... सीढ़ियॉ॑ बिना रूके चढ़नी हैं।"

भागते हुए चैतन्य और अनामिका ने मुड़कर पीछे की ओर देखा और फिर मन ही मन में परिधि को धन्यवाद देते हुए आगे बढ़ गए। पीछे माया, परिधि से अभी भी उलझी हुई थी। उसने अपनी जादुई ताकत का इस्तेमाल करना चाहा, तो हैरान रह गई। समयद्वार के अंदर उसकी ताकतें बेअसर थीं।

"तो! अब हम दोनों ही बराबर हैं। है ना!" परिधि ने मुस्कुराते हुए कहा। माया ने एक चिढ़ भरी नज़र उस पर डाली और फिर उसे चकमा देते हुए चैतन्य-अनामिका के पीछे भागी। मगर इस बार परिधि होशियार थी। उसने लपककर माया का पैर पकड़ लिया और फिर वो दोनों ही गुत्थम गुत्था हो चुके थे।

दूसरी ओर चैतन्य और अनामिका दौड़ते-भागते एक जगह पहुॅ॑चे, जो उन्हें जानी पहचानी सी लगी।

"अनु! हम इस जगह पहले भी आए हैं क्या?" चैतन्य ने पूछा।

उसका सवाल सुनकर अनामिका ने ग़ौर से चारों ओर देखा और फिर कुछ
याद आते ही बोल पड़ी, "चैतन्य! ये वही जगह है, जहॉ॑ हम समयद्वार से गिरे थे।"

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

'[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible].. [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible](-2)

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 200 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

हुए कहा, "चुप हो जाओ अनु! वापस आ गए हैं हम! सब ठीक हो गया है।"

"उसकी बात सुनकर अनामिका ने अपना सिर उठाकर भरी हुई ऑ॑खों से उसकी ओर देखा और बोली, "क्या सच में?"

जवाब में चैतन्य ने तेजी से अपना सिर हॉ॑ में हिलाया और फिर से उसे अपनी बांहों में समेटकर उसे दिलासा देने लगा। उन दोनों के लिए ही ये एक ऐसा अनुभव था, जिसे वो ना तो याद रखना चाहते थे और ना ही चाहकर भी वो भूल सकते थे। दोनों की ही ऑ॑खों में आंसू भरे हुए थे... मगर इनके कौन से क़तरे खुशी के थे और कौन से ग़म के... वो दोनों भी नहीं पहचान सकते थे।

वो दोनों राहत की साॅ॑स लेते खड़े ही थे कि उस आईने से आती नीली लहरों ने उन दोनों को ही चौंकाया। आईने के अंदर समय की वो लहरें अभी भी हिलोरें मार रही थीं। इसका मतलब तो यही था कि... समयद्वार अभी भी खुला हुआ था। मगर क्यों?

"चैतन्य! ये द्वार बंद क्यों नहीं हुआ है?" अनामिका ने उस आईने को घूरकर देखते हुए कहा।

"पता नहीं!" अनामिका को खुद से अलग कर चैतन्य ने उस आईने की ओर बढ़ते हुए कहा। अनामिका ने आगे बढ़कर उसकी बांह पकड़ ली थी।
उस आईने के पास पहुॅ॑चकर चैतन्य उसे ऊपर से नीचे तक घूरकर देखा रहा था। जब कुछ भी समझ में नहीं आया, तो अनामिका पर एक नज़र डालने के बाद उसने एक बार फिर से अपना हाथ उस आईने की ओर बढ़ाया।

"चैतन्य! ध्यान से!" अनामिका ने लगभग उसे टोका था।

"देखने दो अनामिका! इसे हम इस तरह खुला नहीं छोड़ सकते।" चैतन्य ने उसे समझाते हुए कहा।

"हॉ॑! ठीक है! पर थोड़ा ध्यान से!" अनामिका ने उस आईने पर चिंता भरी नज़र डालते हुए कहा।

"हम्म!" चैतन्य ने एक हुंकारी भरी और फिर उस आईने को अपनी उंगलियों से छुआ। उसकी ऊंगलियॉ॑ इस तरह अंदर चली गईं, जैसे कि उसने पानी में हाथ डाला हो। कलाई तक हाथ अंदर डालने के बाद वो रूक गया।

"क्या हुआ?" अनामिका ने पूछा।

"पता नहीं! कुछ समझ में नहीं आ रहा है।" चैतन्य ने अपने माथे पर बल डालते हुए कहा।

अभी वो दोनों ही इसे समझ पाते कि तभी चैतन्य को एक झटका सा लगा और वो अंदर की तरफ खिंचने लगा। ये देखते ही अनामिका और चैतन्य दोनों ही बुरी तरह से हड़बड़ाए थे।

"चैतन्य! हाथ बाहर निकालो!" अनामिका ने चैतन्य के हाथ को पकड़कर पूरी ताकत से बाहर खींचते हुए कहा।
"अनामिका! किसी ने हाथ पकड़ लिया है मेरा!" चैतन्य भी पूरी ताकत लगाते हुए बोला।

ये सुनते ही अनामिका के चेहरे पर हवाईयॉ॑ उड़ने लगीं और अगला ख्याल उन दोनों को ही माया का आया था। ये वही हो सकती थी। वो उनके पीछे ही थी। उन्हें लगा था कि उन दोनों के बाहर आते ही द्वार बंद हो जाएगा, मगर आंशिक रूप से वो अभी भी खुला हुआ था। माया खुद से तो बाहर नहीं आ सकती थी, इसलिए उसने चैतन्य का सहारा लिया था। उसने चैतन्य का हाथ इतनी मजबूती से पकड़ा था कि चैतन्य के लिए भी उसे छुड़ाना मुश्किल हो गया था। ऊपर से डर ये कि कहीं वो वापस उस समयद्वार में ना गिर जाए क्योंकि माया बाहर नहीं आना चाहती थी, बल्कि वो चैतन्य को अंदर की ओर खींच रही थी।

"चैतन्य!" अनामिका ने कहा।

"क्या?" छुड़ाने के लिए जोर लगाते हुए चैतन्य ने कहा।

"उसे बाहर खींचों!" अनामिका ने अजीब सी बात कही।

"क्या? पागल हो गई हो क्या? जीना दूभर कर देगी वो... अगर बाहर निकल आई तो!" चैतन्य ने चिहुंक कर कहा।

"अरे खींचों तो! बस इतनी ही ताकत है क्या तुममें?" अनामिका ने जैसे उसे ललकारा था।

उसकी बात सुनकर चैतन्य को भी तैश आ गया और फिर उसने पूरी ताकत से माया को अपनी ओर खींचा। आखिरकार चैतन्य का जोर माया पर भारी पड़ा और माया का आधा शरीर एक झटके से आईने से बाहर
निकल आया। चैतन्य और माया दोनों ही इस स्थिति में उलझे हुए ही थे कि तभी अनामिका ने पास रखा आदमकद लैंपशेड उठाया और पूरी ताकत से माया के चेहरे पर मार दिया। इस अचानक हुए हमले से माया तिलमिला गई और हड़बड़ाहट में उसके हाथ से चैतन्य की कलाई छूट गई। अनामिका ने बिना देर किए दूसरा वार किया और फिर माया उस समयद्वार के अंदर गिर गई।

"अब क्या?" चैतन्य ने अपनी कलाई मसलते हुए कहा।

"अब ये!" कहते हुए अनामिका ने लैंपशेड से अगला वार उस आईने में किया। आईना एक तेज आवाज के साथ दरका था। बिना देर किए अनामिका ने अगला वार किया और फिर वो आईना टुकड़ों- टुकड़ों में बिखरकर जमीन में फ़ैल गया। अनामिका ने उस आईने के फ्रेम में कॉ॑च का एक भी टुकड़ा नहीं रहने दिया। चैतन्य खड़ा-खड़ा बस उसे देखता रह गया।

"अगर वो बंद नहीं हो रहा है, तो फिर दरवाजे का नामोनिशान ही मिटा दो। ना रहेगा दरवाजा और ना ही कोई आएगा-जाएगा।" अनामिका ने लैंपशेड एक ओर फेंककर अपने हाथ झाड़ते हुए कहा।

चैतन्य उसकी बात पर कोई प्रतिक्रिया व्यक्त करता, उससे पहले ही दरवाजे पर हुई तेज दस्तकों ने उन दोनों का ध्यान उस तरफ किया।

"अनामिका!"

दरवाजे के बाहर से वरूण की घबराई हुई सी आवाज़ आई और उस आवाज को सुनकर अनामिका के साथ-साथ चैतन्य का चेहरा भी खिल
उठा। आखिरकार अल्फ़ी की तरह वो दोनों भी अपने ठिकाने लौट आए थे।

आशुतोष, वरूण, अंकित, मुकुल और सृष्टि उस डायरी के पन्नों में छिपी कहानी जानने के बाद बहुत ही उलझन में पड़ चुके थे। उस डायरी से उन्हें अल्फ़ी और हेममाया के रिश्ते के बारे में पता चल चुका था। साथ ही माया और एडवर्ड की साजिशों का भी और इन सबमें परिधि की सक्रिय भूमिका भी। अब उन्हें ये पता चल चुका था कि आखिर अल्फ़ी क्यों परिधि के पीछे पड़ा हुआ था। उन सभी को लग रहा था कि वो सभी अतीत की उस कड़ी को ढूंढ लिए थे, जो आज की सारी परेशानियों और मुसीबतों की जड़ थी। मगर उन्हें ये नहीं पता था कि अतीत इससे भी ज्यादा कुछ और ही था।

परिधि की उन यादों में माया और एडवर्ड की साजिशों की शुरुआत से लेकर हेममाया की मौत तक की ही कहानी थी, जिसे अनामिका और चैतन्य के कहने पर ही दिव्याक्षि ने उस डायरी में सहेजा था। इसलिए सबको मिली जानकारी अभी भी अधूरी ही थी। वो अभी भी इस सच्चाई से कोसों दूर थे कि अनामिका और चैतन्य भी उस कहानी का एक बहुत ही जरूरी हिस्सा थे।

"तो ये है कहानी अल्फ़ी और परिधि की!" अंकित ने कहा।

"सचमुच ये बहुत ही दुखद है। अब हम तो अल्फ़ी को भी दोष नहीं दे सकते हैं। बहुत बुरा हुआ उसके साथ।" मुकुल ने कहा।

"हॉ॑.. ठीक है! मानते हैं कि उसके साथ बुरा हुआ! मगर इसका मतलब ये
तो नहीं कि वो दूसरे मासूमों की जान से खेलता रहे। ये तो सरासर ग़लत बात है।" मुकुल ने ऐतराज उठाते हुए कहा।

"ये भी सही वात है मगर... मैं कुछ और भी सोच रहा हूॅ॑।" आशुतोष ने बहुत ही गंभीर लहज़े में कहा।

"वो क्या?" सृष्टि ने पूछा।

"जैसा कि इस डायरी में जिक्र है कि... हेममाया ने ही उस समय... समयद्वार बनाया था और शायद उसी की मदद से परिधि यहॉ॑ तक आ पहुॅ॑ची। मगर सवाल यही है कि जिस समयद्वार को हेममाया खुद ही इस्तेमाल नहीं कर सकी, उसे परिधि ने कैसे इस्तेमाल किया होगा? उसे तो कोई जादू नहीं आता। फिर कैसे?" आशुतोष ने सवाल उठाते हुए कहा।

"शायद हेममाया ने ही इजाजत दी हो। हमें पता है कि डायनें अपने बनाए हुए ऐसे द्वारों को इस्तेमाल करने की इजाज़त दे सकती हैं।" मुकुल ने कहा।

"हॉ॑... दे सकती हैं.. पर अपने बहुत ही ज्यादा करीबी को। जब हेममाया को पता था कि उसे धोखा देने वालों में परिधि भी थी.. और उस पर भरोसा करके ही वो उस जानलेवा मुसीबत में फॅ॑स गई थी... तो भला वो उसे क्यों इजाजत देगी?" आशुतोष ने अपनी बात समझाते हुए कहा।

आशुतोष की बात सुनकर सभी चुप पड़ी गए। बात तो सही थी कि हेममाया ऐसा करेगी क्यों?

"तुम सबको एक और बात खटक नहीं रही है?" आशुतोष ने अगला सवाल किया।
"क्या?" सभी की एकसार आवाज आई।

"उन लोगों ने हेममाया को सात महीनों तक क़ैद करके क्यों रखा? उसे मारा भी तो उस सभा के आयोजन के करीब। ये उन सबके लिए फॅ॑सने वाली बात भी हो सकती थी। फिर क्यों? वो उसे उसी समय मार सकते थे, जब उसे कैद किया। अल्फ़ी को क्या ही पता चलता कि वो जिंदा है या मर गई।" आशुतोष ने अपना सवाल पूरा किया।

"अब ये तो पता नहीं। वही इसका जवाब दे सकते हैं।" वरुण ने एक गहरी साॅ॑स छोड़ते हुए अपना पल्ला झाड़ा।

"हॉ॑! होगा उनका कुछ। पर हमें ये तो पता चल गया ना कि वो खूंखार हत्यारा अल्फ़ी... परिधि की जान के पीछे क्यों पड़ा है? आपका क्या सोचना है इस बारे में?" अंकित ने कहा।

"देखो! सच कहूं तो इन सबमें परिधि की भूमिका अभी भी सही तरीके से तय नहीं की जा सकती... कि वो कितनी बड़ी गुनहगार है? इसलिए कुछ कह नहीं सकते।" आशुतोष ने कहा।

"पर एक बात ये समझ में नहीं आ रही है कि अल्फ़ी मासूमों की जान क्यों ले रहा है? उसने मेरे भैया और उनके परिवार के साथ ऐसा क्यों किया?" अंकित ने तड़पकर कहा। वो कहीं से भी अल्फ़ी की हैवानियत को क्लीन चिट देने के पक्ष में नहीं था।

"अंकित सही कह रहा है। माना कि उस अल्फ़ी के साथ ग़लत हुआ... तो उसे उसका बदला उन लोगों से लेना चाहिए था, जो उसकी हेममाया की मौत के जिम्मेदार थे। मगर वो तो पता नहीं कौन से चक्करों में अभी तक लगा हुआ है।" सृष्टि ने अंकित का समर्थन करते हुए कहा। "क्या मतलब? कैसा चक्कर?" आशुतोष ने पूछा।

"मैंने उस पिशाच को आज अंकल के साथ देखा और यही खबर मैं आप सबको बताना चाहती थी।" सृष्टि ने कहा। (भाग - 47)

"क्या? अंकल उस पिशाच को जानते हैं?" मुकुल ने बुरी तरह से चौंकते हुए कहा।

"यही बात तो मुझे भी परेशान कर रही है। मेरे या फिर मि. विक्टर के सामने उन्होंने कभी भी ये जाहिर नहीं किया कि वो उस पिशाच को जानते हैं। यहॉ॑ तक कि उन्होंने तो अल्फ़ी नाम से भी किनारा करने की कोशिश की। उनकी बातों से तो यही लगा था कि वो किसी अल्फ़ी

को नहीं जानते और अब ये.." सृष्टि ने अपनी बात खत्म की।

"कुछ तो बहुत ही ग़लत चल रहा है और वो समझ में ही नहीं आ रहा है। एक कमजोर सी लड़की को मारने के लिए इतनी गोपनीयता समझ से परे है।" आशुतोष ने कहा।

"वही तो! अल्फ़ी और परिधि का तनाव समझ में आता है। मगर इस तनाव की वजह से पूरे पिशाच समुदाय के श्रापित होने की बात समझ में नहीं आ रही है। आखिर पिशाच समुदाय ने ऐसा क्या कर दिया?" मुकुल ने बहुत ही बेचैनी से कहा।

"क्या पता? इसका जवाब तो अब वो पिशाच ही दे सकता है। देखते हैं कि सतवऋक्ष कौन सी जानकारी देता है? उम्मीद है कि हमारे काम की जानकारी मिले।" आशुतोष ने अपने हाथ खड़े करते हुए कहा।

"अब तो बस यही उम्मीद है।" वरूण ने कहा।
वो सब अपने विचार-विमर्श में लगे हुए ही थे कि तभी ऊपर से आई कुछ तेज आवाजों से उनका ध्यान उस ओर गया।

"ये कैसी आवाजें हैं? कौन है ऊपर?" आशुतोष ने कहा।

"ऊपर तो चैतन्य और अनामिका हैं।" वरूण ने चश्मे के पीछे अपनी ऑ॑खें फैलाते हुए कहा।

"हे भगवान! हमें तो ख्याल ही नहीं रहा कि वो दोनों यहॉ॑ नहीं हैं।" आशुतोष ने उनकी गैरमौजूदगी को जानने के बाद कहा।

"आपने ही मुझे रोका... ये कहकर कि वो दोनों समझदार हैं.. कुछ देर में आ जाऍ॑गे और देखिए... आपके समझदार... वो दोनों चार घंटों से अनामिका के कमरे में हैं।" बात खत्म करते-करते वरूण का लहज़ा बहुत ही कड़वा हो गया था।

"ये तो सचमुच ग़लत बात है। चैतन्य से बात करता हूॅ॑ मैं।" आशुतोष ने अपनी गलती स्वीकार करते हुए कहा।

अभी वो ये बातें कर ही रहे थे कि तभी उन सभी ने ऊपर से कुछ और जबर्दस्त आवाज सुनी। वो आवाज सुनकर सभी घबराकर खड़े हो गए। अभी वो समझने की कोशिश कर ही रहे थे कि तभी एक और तेज आवाज आई। इसके बाद तो सभी बेलगाम दौड़ते हुए ऊपर की ओर भागे.. सिवाय आशुतोष के। वो अनामिका और चैतन्य के बारे में सोचकर उलझ गया था। उसे सचमुच उन दोनों ख़ासतौर पर अनामिका से ऐसी लापरवाही की उम्मीद नहीं थी।
****

वो सभी दौड़ते हुए अनामिका के कमरे के सामने पहुॅ॑चे। दरवाजा बंद था और अंदर से छीना- छपटी की अस्पष्ट आवाजें आ रही थीं और फिर किसी लड़की की तेज चीख सुनाई दी। किसी ग़लत की आशंका से वरूण का दिल दहलकर रह गया। वो आगे बढ़ा और फिर दरवाजे से कान लगाया। पहले आईने के चटकने और फिर उसके टूटकर बिखरने की आवाज आई। अब तो वरूण बहुत ही डर गया और अनामिका का नाम लेकर दरवाजा पीटने लगा।

"अनामिका! दरवाजा खोलो!"

बाहर दरवाजे पर उसकी दस्तकों की संख्या बढ़ती जा रही थी और घबराहट भी। फिर तेजी से किसी के आकर दरवाजा खोलने की आवाज आई और फिर सामने बदहवास सी अनामिका खड़ी थी। सृष्टि, मुकुल और अंकित भी वरूण के साथ ही थे। वरूण ने अनामिका को देखा तो तेजी से आगे बढ़कर उसे कंधों से पकड़ा। वो उसकी बिखरी-बिखरी सी हालत को देखकर और भी घबराया था।

"अनामिका! तुम्हारे कमरे से कैसी आवाजें आ रही थीं.. जैसे कोई छीना-झपटी कर रहा हो।

तुम ठीक हो?" वरुण ने बहुत ही घबराई हुई आवाज में उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए पूछा।

अनामिका ने खाली-खाली ऑ॑खों से उसे देखा और फिर अपनी ऑ॑खों को
नम करती हुई उससे लिपट गई और रोने लगी। उसे इस तरह रोता देखकर सभी सकते में आ गए।
उसकी हालत भी सही नहीं लग रही थी। सबकी नज़रें एक साथ चैतन्य की ओर सवालों के साथ उठी, जो खुद भी फटेहाल हालत में सामने खड़ा अनामिका को ही देख रहा था। सबको अपनी ओर इस तरह ताकते देखकर चैतन्य की ऑ॑खें सिकुड़ी थीं।

"क्या? सब मुझे ऐसे क्यों देख रहे हो?" चैतन्य ने उलझी हुई आवाज में कहा।

"अनामिका! इसने कुछ गलत किया तुम्हारे साथ?" वरुण ने रोती हुई अनामिका के सिर पर हाथ फेरते हुए बहुत ही रूखे अंदाज में कहा। उसकी बात सुनकर अनामिका का सुबकना एकदम से रूका था। उसने सिर उठाकर वरूण के चेहरे की ओर देखा, जहॉ॑ वो बेहद सख़्त नज़रों के साथ चैतन्य को घूर रहा था। उसकी बात का मतलब समझते ही अनामिका बुरी तरह से हड़बड़ाई। जाहिर सी बात थी कि उजड़ी हुई हालत में उसका रोना वरूण को कुछ और ही समझा गया था। वो कुछ बोलती उससे पहले ही चैतन्य की बौखलाई हुई सी आवाज़ आई।

"ग़लत! व्हॉट डू यू मीन बाई ग़लत?"

"ग़लत मतलब ग़लत! वही ग़लत.... जो अनामिका की हालत देखकर समझ आ रहा है।" अनामिका को एक ओर हटाकर आगे बढ़ते हुए वरूण ने तपती हुई आवाज में कहा।

वरूण गर्म तेवरों के साथ चैतन्य की ओर बढ़ा ही था कि अनामिका ने लपककर उसका हाथ पकड़ा और उसे रोकने की कोशिश करते हुए बोली, "वरूण! पागल हो गए हो क्या? बात सुनो मेरी!"

"तुम रूको जरा! पहले इससे निपट लूं। मैं पहले से ही जानता था कि...
अच्छा लड़का नहीं है ये।" वरूण ने खुद को छुड़ाते हुए कहा।

"ओए दिमाग के गरीब! ऑ॑खों के साथ अपनी समझ को भी चश्मा लगा। उसकी बिगड़ी हालत दिख रही है। मेरी लुटी-पिटी हालत नहीं दिख रही तुझे!" चैतन्य ने भी तैश में आते हुए कहा। अपने किरदार पर ऐसे इल्ज़ाम बर्दाश्त करने का उसका कोई इरादा नहीं था... वो भी अनामिका को लेकर।

दोनों के बीच की खींचतान और लंबी होती, उसी समय पीछे से आशुतोष की आवाज आई, "क्या हो रहा है यहॉ॑ॽ"

उन सबने पलटकर पीछे देखा तो आशुतोष सबके बीच से निकलते हुए आगे आए और फिर अनामिका की ओर हैरानी से देखते हुए उसके पास आए।

"आशुतोष जी! देखिए! क्या किया इस चैतन्य ने अनामिका के साथ?" वरूण ने भड़की हुई आवाज में कहा। उसकी बात सुनकर आशुतोष ने ऑ॑खें फैलाकर चैतन्य की ओर देखा और उसे देखते ही उनकी ऑ॑खें सवालों के साथ सिकुड़ गईं। उन्होंने एक और सवालिया नज़र अनामिका पर डाली।

"आशुतोष जी..!" चैतन्य ने कहना चाहा.. मगर आशुतोष ने उसकी ओर एक हाथ उठाकर उसे टोक दिया।

"तुम दोनों इतनी देर से कहॉ॑ थे... और... ये आईना किसने तोड़ा?" आशुतोष की ऑ॑खों और आवाज में चिंता उतर आई थी।

"हे भगवान! शुक्र है! आशुतोष जी... आप आ गए।" चैतन्य शुक्र मनाता हुआ आशुतोष की ओर बढ़ा और उनके पास पहुॅ॑चकर उनसे लिपट गया।
शायद उनके अपनेपन को महसूस कर वो अपनी सलामती का यकीन करना चाहता था। अनामिका ने भी एक राहत भरी सॉ॑स ली।

"तुम दोनों की ही हालत सही नहीं लग रही है। क्या हुआ तुम दोनों को? और... तुम दोनों ने ये किस तरह के कपड़े पहने हुए हैं?" आशुतोष ने चैतन्य को खुद से अलग करके उन दोनों को ही ग़ौर से देखते हुए सवालों की लाइन लगाते हुए कहा।

आशुतोष के सवालों का जवाब देने के लिए अनामिका ने अपना मुॅ॑ह खोला ही था कि चैतन्य ने उसे टोकते हुए कहा, "बताऍ॑गे आशुतोष जी! सब बताऍ॑गे। पर ऐसे नहीं! लंबी कहानी है। पर क्या... कुछ खाने-पीने के लिए मिलेगा? बहुत भूख लग रही है। कल रात की पार्टी (अतीत में बसेरे की पार्टी) के बाद कुछ भी नहीं खाया है।"

"कल रात के बाद कुछ नहीं खाया! और आज रात जो पनीर पसंदा और चिली गार्लिक मशरूम, बटर नान के साथ अपने पेट में ठूंसे थे... उसका क्या?" इस बार अंकित ने हैरानी से उसे देखते हुए पूछा।

"वो तो तुम सबके साथ आज रात खाया था। उन सबके साथ तो कल रात ही खाना नसीब हुआ... उसके बाद से नहीं। प्लीज़! कुछ भी चलेगा!" चैतन्य ने भूख से कुलबुलाते हुए कहा।

"पर..." सृष्टि ने कहना चाहा।

"हॉ॑! मुझे भी बहुत भूख लग रही है। मैंने भी कल रात बहुत ही थोड़ा-सा खाया था। मुझे भी कुछ चाहिए खाने के लिए।" चैतन्य के याद दिलाने पर अनामिका को भी जैसे उसकी भूख याद आ गई।

"सच में!" वरूण ने अनामिका को घूरकर देखते हुए कहा।
"अरे हटो तुम! चलो चैतन्य! किचन में मैंने रात का बचा हुआ खाना रखा है।" अनामिका ने वरूण को एक ओर धकेलते हुए कहा और फिर चैतन्य का हाथ पकड़कर उसे खींचते हुए अपने साथ ले गई। वहॉ॑ मौजूद सभी लोग उन दोनों को अपनी हैरान ऑ॑खों से देखते रह गए।

"ये अनामिका को क्या हुआ? उस चैतन्य की बहकी हुई बातों में खुद भी बहे जा रही है।" वरूण ने एकटक सामने की ओर देखते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर सभी ने अभिज्ञता के साथ अपने-अपने कंधे उचका दिए। वो सब तेजी से किचन की ओर गए तो देखा कि अनामिका फ्रिज से खाना बाहर निकाल रही थी जिसे भूख से कुलबुलाते हुए चैतन्य ने बिना गर्म किए ही खाना शुरू कर दिया था। जिस पर अनामिका ने उसे डपटा और पहले हाथ धोने के लिए कहा।

"शुक्र है अनामिका ये तमीज तो अभी तक नहीं भूली है कि खाना खाने से पहले हाथ धोए जाते हैं।" वरूण ने एक गहरी साॅ॑स छोड़ते हुए कहा।

उन सभी ने एक हुंकारी भरी। अनामिका ने खाना माइक्रोवेव में गर्म किया और फिर दोनों ही खाने पर टूट पड़े। दरवाजे के पीछे से झांकते हुए सभी की ऑ॑खें अब सच में हैरानी से फटने की हद में थी।

"ये दोनों तो सच में ऐसे खा रहे हैं.. जैसे दो दिनों के भूखे हैं।" अंकित ने पलकों को लगातार झपकाते हुए कहा।

"ये कुछ अजीब सा बिहेव नहीं कर रहे हैं क्या?" सृष्टि ने सवाल किया।

"हम्म!" एक बार फिर से सभी ने हुंकारी भरी और इस बार ये आवाज़ खाना खाते हुए चैतन्य और अनामिका ने भी सुन ली, जिससे उनका ध्यान
उन सबकी ओर चला गया। उन दोनों ने ही अपने भरे हुए मुॅ॑ह के साथ उन सभी की ओर देखा, जिससे वो सभी झेंपी हुई सूरतों के साथ उन दोनों के पास आ गए।

"आप लोगों को भी खाना है?" अपना निवाला निगलकर चैतन्य ने उन सभी की ओर देखते हुए पूछा।

"नहीं! नहीं! तुम लोग खाओ। रात को खाने के बाद हमें सुबह ही भूख लगती है।" मुकुल ने हाथ सामने कर इंकार करते हुए कहा। उसका जवाब सुनकर चैतन्य ने अपने हाथ की प्लेट के साथ अपना चेहरा दूसरी ओर कर लिया। जहॉ॑ सभी उन दोनों की इस उटपटांग हरकत से अकबक रह गए थे... वहीं आशुतोष के चेहरे के भाव गंभीरता लिए हुए थे। वो तो बस उन दोनों के खाने से उठने का इंतजार कर रहे थे। दस मिनट में दोनों ने ही प्लेट से अपने हाथ खींचे। अनामिका ने प्लेट हटाए और फिर सबकी ओर देखा। वो सभी उन दोनों के बोलने के इंतजार में ही खडे हुए थे।

"हो गया हो तो.... बाहर चलें!" आशुतोष ने कहा।

"जी!" चैतन्य ने मुॅ॑ह पर हाथ रखते हुए कहा और फिर सभी एक-एक करके किचन से बाहर निकल गए।

सबसे पीछे रह गए वरूण ने बहुत ही चिढ़ भरी नज़रों के साथ चैतन्य और अनामिका को जाते देखा और फिर खुद से बोला, "एक ही शाम में लड़की को बरबाद कर दिया। मि. चैतन्य! तुम्हें तो अनामिका से दूर करके रहूंगा मैं! वो तुमसे कहीं बेहतर डिजर्व करती है और वो मैं दुनिया के किसी भी कोने से उसके लिए ढूंढकर लाऊंगा।"

"वरूण!" अंकित ने उसे आवाज दी।
"आया!" ख्यालों से वापस आकर वरूण बाहर की ओर भागा।

****

सभी हॉल में बैठे हुए थे... तभी घड़ी ने सुबह के चार बजाए। चैतन्य और अनामिका दोनों का ही ध्यान उस ओर गया। खाना खाने के बाद वो दोनों ही और भी ज्यादा थकान महसूस करने लगे थे। पिछले करीब तीस घंटों में उनकी जिंदगी उथल-पुथल होकर रह गई थी। वो दोनों ही इस समय कुछ नहीं करना चाहते थेबस सोना चाहते थे... पर सामने सवालों का पुलिंदा लेकर बैठे हुए सभी लोग उन्हें ही एकटक देख रहे थे।

"जी कहिए!" चैतन्य ने शुरूआत की।

"तुम दोनों को याद है.. कि हम सब कितनी बड़ी समस्या में फॅ॑से हुए हैं! या फिर... भूल गए हो।" आशुतोष ने थोड़े सख़्त लहज़े में कहा।

"जी!" चैतन्य ने सिर झुकाए हुए कहा।

"क्या जी? सबसे पहले तो तुम दोनों ये बताओ कि सृष्टि ने तुम्हें भी मैसेज किया था ना! इतनी गंभीर समस्या से भरे हालातों में तुम दोनों रात भर क्यों गायब थे? मुझे तुम दोनों से इस तरह की लापरवाही की उम्मीद बिल्कुल भी नहीं थी। वरूण ने ऐतराज जताया था, पर उस समय भी मैंने तुम दोनों पर भरोसा किया था कि आपसी बातचीत के बाद तुम दोनों आ जाओगे। पर दिख रहा है कि अपनी प्रेम कहानी से ज्यादा जरूरी तुम्हारे लिए कुछ और नहीं है।" आशुतोष ने बहुत ही बिगड़े हुए लहजे में कहा।
"ऐसी बात नहीं है आशुतोष जी!" अनामिका ने ऐतराज जताया।

"तो फिर कैसी बात है? हम इस समस्या से कैसे बाहर निकलें.. इस जवाब को पाने के लिए परेशान हैं और साथ मिलकर इसे ढूंढने की कोशिश कर रहे हैं और तुम दोनों...! तुम्हें पता है... तुम दोनों की ग़ैरमौजूदगी में हमें क्या पता चला?" आशुतोष ने एक बार फिर से उन दोनों को धिक्कारने वाले लहजे में कहा।

"क्या?" चैतन्य ने सिकुड़ी हुई ऑ॑खों के साथ कौतूहल जताया।

"यही कि वो अल्फ़ी.. परिधि के पीछे क्यों पड़ा हुआ है?" वरूण ने जानकारी आगे बढ़ाते हुए कहा।

"अच्छा! कैसे?" अनामिका ने भी आश्चर्य जताते हुए कहा।

"परिधि की डायरी से। वही डायरी... जिसे हम काफी समय से समझने की कोशिश कर रहे थे। आज अचानक ही कई सारे जवाबों के साथ खुल गई।" कहते हुए आशुतोष ने कम से कम शब्दों में उन्हें वो सारी जानकारी दे दी, जो उन्हें उस डायरी से मिली थी।

"बस इतना ही!" हेममाया की मौत तक की ही जानकारी मिलने पर अनामिका ने कहा।

"क्या मतलब कि.. इतना ही! आखिर अल्फ़ी और परिधि के तनाव के बारे में हमें पता चला ना.. कि वो क्यों उसे मारना चाहता है?" अनामिका की हल्की प्रतिक्रिया से वरूण उखड़ा था।

उनकी बातें सुनकर अनामिका और चैतन्य ने एक-दूसरे की ओर देखा।
उन्हें समझ आ गया कि डायरी में पूरी कहानी नहीं, बल्कि उतनी ही कहानी क़ैद थी, जो परिधि ने उन दोनों को अतीत में सुनाई थी और अनामिका के कहने पर ही दिव्याक्षि ने उसे इस डायरी में कैद किया था।

"फिर तो आप लोगों को हम पर बिल्कुल भी गुस्सा नहीं करना चाहिए। अच्छा हुआ कि हम दोनों आप लोगों के साथ नहीं थे, वरना हम भी इस अधूरी कहानी में उलझ जाते।" अनामिका ने उन सभी की ओर देखते हुए कहा।

"अधूरी कहानी! क्या मतलब?" सभी की ऑ॑खें इस सवाल के साथ सिकुड़ी थीं।

"यही कि... इस कहानी का एक और हिस्सा है, जिसके बिना ये कहानी अधूरी है और उस कहानी के किरदारों का नाम है... चैतन्य और अनामिका!" चैतन्य ने उन सब पर बम जैसा रहस्योद्घाटन करते हुए कहा।

"क्या?"

"हॉ॑ आशुतोष जी! इतनी देर से मैं और चैतन्य मेरे कमरे में नहीं थे। हमें नहीं पता कि ये कैसे हुआ? पर करीब साढ़े चार घंटे पहले मेरे कमरे के आईने में एक समयद्वार खुला था, जिससे होकर मैं और चैतन्य उस 200 साल पुराने अतीत में पहुॅ॑च गए थे और अब हम जानते हैं कि वहॉ॑ क्या हुआ था?" अनामिका ने कॉ॑पती हुईं आवाज में कहा।

"ये क्या कह रही हो?" वरूण ने बेयकीनी से कहा।

"सच कह रही है। हमने ये जो कपड़े पहने हैं ना.. वहीं के हैं। आप लोगों को लग रहा है कि हम चार घंटे से गायब थे... पर हम चार घंटे नहीं....
पूरे चार दिन उस अतीत में बिताकर आए हैं। ये जो हमारी बिखरी हुई सी जख्मी हालत दिखाई दे रही है... वहीं हुई है।" चैतन्य ने उन सभी को और भी हैरान करते हुए कहा।

"हे भगवान! ये कैसे हो सकता है?" अंकित ने उलझी हुई आवाज में कहा।

"पर ऐसा ही हुआ है। आशुतोष जी! आप हमेशा कहते थे ना... कि वायु-रक्षक के रूप में चैतन्य का चुनाव आपकी समझ में नहीं आता। वो इसलिए अभी वायु-रक्षक है क्योंकि वो हमेशा से ही यही था।" अनामिका ने कहा।

अनामिका और चैतन्य की बात सुनकर सभी के दिमाग सुन्न होने लगे थे। उन्हें अभी भी कुछ समझ में नहीं आ रहा था।

"ठीक है! समझ गए कि चैतन्य हमेशा से ही वायु-रक्षक था, पर ये समझ में नहीं आया कि तुम्हारे कमरे में वो समयद्वार क्यों खुला?" मुकुल ने पूछा।

"क्योंकि हेममाया ऐसा चाहती थी।" चैतन्य ने जवाब दिया।

"कौन हेममाया? अल्फ़ी की पत्नी! जिसने वो समयद्वार बनाया था। पर वो क्यों और कैसे चाह सकती थी ऐसा?" अगला सवाल सृष्टि के होंठों से निकला।

"क्योंकि.... मैं ही हेममाया हूॅ॑!" अनामिका ने धमाका करते हुए कहा, जिसे सुनकर वहॉ॑ मौजूद सभी किसी बुत की तरह जम कर रह गए। उन सभी के दिलो-दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था।
"हेममाया ने अपने हत्यारों से मरने से पहले कहा था कि उनके नापाक मंसूबों को नाकाम करने के लिए वो वापस आएगी और इसीलिए वो समयद्वार समय आने पर मुझे यानि कि... हेममाया को वापस उसी समय में ले गया। जब तक हम वहॉ॑ थे... हमें समझ में नहीं आया कि हम वहॉ॑

क्यों थे। पर वापस लौटते-लौटते समझ आ गया कि हम वहॉ॑ एडवर्ड और माया को रोकने गए थे और वो करके भी आए। अफसोस बस इतना है कि हम अल्फ़ी के लिए कुछ नहीं कर सके।" अल्फ़ी का जिक्र आते-आते अनामिका भावुक हो गईं।

"तुम्हारा मतलब है कि भूत और वर्तमान तुम्हारी वजह से ही जुड़े हुए हैं।" आशुतोष ने बातों को समझते हुए कहा।

"हॉ॑!" अनामिका ने कहा।

"और कुछ!" आशुतोष ने अनामिका के जवाब को और भी कुरेदा।

"यही कि.... अल्फ़ी... अनामिका से प्यार करता है।" चैतन्य ने बड़ी ही मुश्किल से कहा।

"हे भगवान!" वरूण अपना सिर पकड़कर सोफे पर गिरा था।

"प्यार करता है से क्या मतलब? फिर उसने उस रात अनामिका पर हमला क्यों किया था?" अंकित ने चिढ़ी हुई आवाज में कहा।

"वो हमें नहीं पता। पर उसने अनामिका से वादा किया था कि वो कभी कोई ग़लत काम नहीं करेगा।" चैतन्य ने कहा।

"पर वो तो कर रहा है? खुलेआम कर रहा है।" अंकित अपनी तकलीफ़ याद करता हुआ बोला।
"इसका जवाब तो वही दे सकता है। पर मुझे अभी भी यकीन है कि वो अपना वादा नहीं तोड़ सकता।" अनामिका ने जज़्बाती होते हुए कहा।

"एक पिशाच के वादे पर इतना भरोसा!" वरुण ने तुनककर कहा। अल्फ़ी के लिए अनामिका का जज़्बाती होना उसे रास नहीं आया था।

"तुम ऐसा इसलिए कह रहे हो क्योंकि तुमने वो नहीं देखा... जो हमने देखा है। उसने अनामिका के लिए जो भी किया है... वो तुम और मैं करने का सोच भी नहीं सकते। सच तो यही है कि उसी की वजह से हम दोनों अभी आप लोगों के सामने खड़े हैं। वो कभी भी ग़लत नहीं था। उसे हमेशा ही ग़लत समझा गया और मुझे यकीन है कि अभी भी उसके साथ कुछ ग़लत ही हो रहा है। हमें उससे बात करने की जरूरत है।" चैतन्य ने अल्फ़ी का पक्ष मजबूती से रखते हुए कहा।

"अच्छा! तो कौन करेगा उस खूनी दरिंदे से बात!" अंकित गुस्से में थरथराते हुए बोला। अल्फ़ी के हक़ में कहीं गई हर एक बात उसे और भी झुलसा रही थी। जिसकी वजह से उसका परिवार तितर-बितर हो गया... वो उसे हर्गिज माफ नहीं कर सकता था।

"अनामिका! अनामिका बात करेगी। वो अपने कमजोर से कमजोर पलों में भी उसे पहचानता है... उसे सुनता है... समझता है।" चैतन्य ने जवाब दिया।

"और अगर अनामिका को कोई खतरा हुआ तो!" वरुण ने ऐतराज़ लहजे के साथ कहा।

"तो फिर हम सब हैं ना!" चैतन्य ने भी मजबूत लहजे में कहा।
चैतन्य की बात का कोई जवाब देता उससे पहले ही एक सर्द सी आवाज़ उन सभी के कानों से टकराई,

"क्या बात है?"

और ये सुनते ही सभी के कान खड़े हुए थे। आवाज के स्रोत की तलाश में वो चारों ओर देखने लगे। उसी समय कोई बड़ी सी चीज उनके ऊपर से उड़ती हुई गुजरी और फिर उन सभी ने देखा। वो भद्दा सा पिशाच छत पर बड़े आराम से लटका हुआ उन्हीं को देख रहा था।

"अल्फ़ी!" अनामिका के होंठ फड़फड़ाए।

"अनामिका! उससे बात करो!" चैतन्य ने अनामिका को आगे बढ़ने का इशारा करते हुए कहा।

[illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]..."

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]!"

"[illegible]..."

"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible].... [illegible]" [illegible]

"[illegible] [illegible]"

"[illegible]... [illegible]" [illegible]

"[illegible]-[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]! [illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[illegible]"

"[

सबके सवालों को भांपते हुए जवाब दिया। उनके जवाब से संतुष्ट होकर सभी एक-एक जगह तलाश कर बैठ गए।

"वैसे परिधि की ऐसी हालत कैसे हो गई? अनामिका ने बताया था कि आप परिधि को कहीं लेकर गए थे।" चैतन्य ने खुद को आराम देने की कोशिश करते हुए डॉ. अनंत से पूछा।

"मैं उसे अल्फ़ी के पास ले गया था।" डॉ. अनंत ने खुलासा करते हुए कहा। उनके इस खुलासे से सभी बुरी तरह से चौंके थे।

"आप उस अल्फ़ी को कैसे जानते हैं? आपने पहले तो कभी इस तरह से उसका जिक्र नहीं किया, जब हम उसके बारे में जानने की कोशिशें कर रहे
थे।" आशुतोष ने सिकुड़ी हुई हैरान ऑ॑खों के साथ कहा।

"क्योंकि मुझे खुद आज रात ही पता चला। सतवृक्ष रोपण के बाद आप सभी के जाने के बाद जब मैं यहॉ॑ गीता के पास आया, तो उस दूसरे पिशाच ने गीता पर हमला किया था(भाग - 45)। मुझे तो एकबारगी लगा कि मैंने अपनी बेटी को खो ही दिया, पर उसी समय अल्फ़ी वहॉ॑ आ गया। उसने ही उस समय उस पिशाच के चंगुल से गीता को आजाद कराया।

कुछ घंटे पहले -

गुस्से से भरे डॉ. अनंत ने अपनी सारी ताकत इकट्ठी कर उस पिशाच पर हमला कर दिया, जिससे वो पीछे उछलकर आइने से टकराया, जिससे वो आईना चकनाचूर हो गया। उसे डॉ. अनंत से इसकी उम्मीद नहीं थी। अपने ऊपर हुए हमले से तिलमिलाया हुआ वो पिशाच डॉ. अनंत पर झपटा ही था कि उसी समय डॉ. अनंत के सामने कोई उनकी ढाल बनकर खड़ा हो गया। डॉ. अनंत ने देखा कि ये भी एक पिशाच ही था। ये देखकर तो डॉ. अनंत के पैरों के नीचे से जैसे जमीन ही खिसक गई। एक पिशाच तो उन सबसे संभल नहीं रहा था, फिर ये दूसरा पिशाच कहॉ॑ से आ गया?

"मेरे रास्ते में आना कब छोड़ोगे तुम?" पहले वाले पिशाच ने गुर्राते हुए कहा।

"जब तक तुम मेरे नाम को ओढ़कर ग़लत काम करना बंद नहीं कर देते... एडवर्ड!" दूसरे पिशाच ने भी उतनी ही तैश भरी आवाज में कहा।
और ये सुनते ही डॉ. अनंत को एक और झटका लगा। उस पहले वाले पिशाच ने तो अपना नाम उन्हें अल्फ़ी बताया था, तो ये दूसरा पिशाच उसे एडवर्ड क्यों कह रहा है? और अगर वो एडवर्ड है तो अल्फ़ी कौन है?

"हम्म! वो तो कभी नहीं होगा... मेरे नॉट सो प्यारे भाई अल्फ़ी!" एडवर्ड नाम के उस पिशाच के मुॅ॑ह से आखिरकार दूसरे की पहचान निकल ही गई।

"गीता को क्यों परेशान कर रहे हो?" अल्फ़ी ने कसे हुए जबड़ों के साथ कहा।

"क्योंकि मुझे ऐसा करने में मजा आता है... और कुछ!" एडवर्ड ने बेशर्मी से कहा।

"तुम डॉ. अनंत को ब्लैकमेल करना चाहते हो... ताकि तुम्हें परिधि मिल जाए। है ना! आखिर क्यों चाहिए तुम्हें वो?" अल्फ़ी ने ख़ासी चिढ़ से कहा।

"ताकि वो तुम्हारे हाथ ना लगे!" एडवर्ड एक बार फिर से दॉ॑त चमकाते हुए मुस्कुराया।

"तुम उसे मुझसे नहीं बचा सकते। उसने जो किया... वो मैं कभी माफ नहीं करूंगा।" अल्फ़ी गुस्से में लाल होते हुए बोला।

"देखा डॉ.! इसे तुम्हारी परिधि से समस्या है। मुझे नहीं! मैं तो बस उसे इस अल्फ़ी से बचाना चाहता हूॅ॑। अब तुम ही फैसला करो कि कौन सही है?" एडवर्ड ने बहुत ही मीठी आवाज में कहा।

जहॉ॑ अल्फ़ी उसकी बात सुनकर गुस्से में फुंफकारने लगा था.. वहीं डॉ.
अनंत और भी उलझ गए थे। एडवर्ड, परिधि को अल्फ़ी से बचा रहा था, जबकि अल्फ़ी ने खुद ही परिधि को मारने की बात उनके सामने कहीं, मगर... दूसरी ओर एडवर्ड, गीता के लिए खतरा था और अल्फ़ी उसे बचा रहा था। उनके लिए तो आगे कुऑं और पीछे खाई वाली बात हो गई थी।

"पर उस बच्ची ने आखिर किया क्या है?" उलझे हुए से डॉ. अनंत ने चिल्लाते हुए सवाल किया।

"मेरी माया को मुझसे अलग किया उसने। उसकी वजह से मेरी माया को तिल-तिल कर मरना पड़ा। मैं अपनी माया के क़ातिल को कभी भी माफ नहीं करूंगा।" कहते हुए अल्फ़ी, एडवर्ड पर टूट पड़ा। दोनों ही एक दूसरे पर बारी-बारी से हावी नज़र आ रहे थे, मगर अचानक ही अल्फ़ी ने एडवर्ड के माथे पर हाथ रखा। फिर जब उसने अपने हाथ को बाहर की ओर खींचा तो अपने साथ उस शरीर से आग को खींचकर बाहर ले आया और अपनी मुट्ठी में क़ैद कर लिया। एडवर्ड का शरीर तेज दर्द के साथ अकड़ने लगा और वो तेजी से बदलने लगा। डॉ. अनंत ऑ॑खें फाड़े सब देख रहे थे और फिर देखते ही देखते एक बार फिर से उनके सामने गीता खड़ी थी। अपने रूप में वापस आते ही वो ढह गई। अपनी बेटी को सामने सही-सलामत पाकर डॉ. अनंत तेजी से उसकी ओर भागे और उसे संभाला। वो उसे अपनी बाहों में भरकर रोने लगे।

"वो ठीक है।" कहते हुए अल्फ़ी ने अपने हाथ में क़ैद आग को खिड़की से बाहर उछाल दिया।

"इस कमरे से बाहर रहो।" और ये कहते हुए खिड़की बंद कर दी।

"तुम कौन हो?" डॉ. अनंत ने पूछा।

"अल्फ़ी!" उसने जवाब दिया।
"चाहते क्या हो?" डॉ. अनंत ने अगला सवाल किया।

"परिधि!" अल्फ़ी बोला।

"क्या उसकी जान लिए बिना तुम्हारा काम नहीं होगा?" डॉ. अनंत की आवाज में याचना थी।

"अगर वो मेरी बेचैनी दूर कर दे... तो शायद हॉ॑!" अफ़ीम ने कहा।

"और वो कैसे?" डॉ. अनंत ने पूछा।

"उसकी गुम हुई यादों में मेरी कोई कीमती चीज क़ैद है! क्या? मुझे भी नहीं पता! बस वो मुझे ये बता दे। फिर मैं तय करूंगा कि वो सजा की हकदार है या नहीं।" अल्फ़ी ने कॉ॑पती हुई आवाज में कहा।

"इसका तुम्हें कैसे पता चला?" डॉ. अनंत ने पूछा।

"इसी एडवर्ड ने बताया था। उसने मुझसे कहा था कि उस कीमती चीज के हवाले से परिधि ने ही मेरी हेममाया को अपनी आत्मा उस माया को देने पर मजबूर किया था। मेरी हेममाया तो वापस नहीं आ सकती, पर मुझे वो चाहिए। अगर मेरी हेममाया ने उसके लिए अपनी जान देने से भी परहेज़ नहीं किया तो जरूर वो बहुत कीमती होगा।" अल्फ़ी ने खुद को मजबूत बनाते हुए कहा।

"और मैं तुम्हारी मदद क्यों करू" डॉ. अनंत ने सबसे जरूरी सवाल पूछा।

"क्योंकि कुछ देर पहले तुम्हारी बेटी की जान बचाई थी मैंने। अहसान है मेरा!" अल्फ़ी ने थोड़ी खुश्की से कहा।
"अहसान उतारने के लिए उस बच्ची की जान से कोई सौदा नहीं करूंगा मैं।" डॉ. अनंत ने मजबूत लहजे में कहा।

"तो ठीक है। मैं वादा करता हूॅ॑ कि कम से कम इस समय तुम्हारी उस लाडली की जान को कोई नुक़सान नहीं पहुॅ॑चाऊंगा।" अल्फ़ी ने समझौते का हाथ बढ़ाते हुए कहा।

"और तुम्हारे वादे पर क्यों यकीन करूं मैं?" डॉ.अनंत ने कहा।

"[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [

powers you've acquired after so many years of rigorous practice. ..They are naturally within him. If he realizes it, do you understand what will happen? After so much practice, you can just become a pseudo-vampire... but only one sacrifice and he himself can become a vampire" (□□□□□! □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□! □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□.. □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□? □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□... □□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□), □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□? □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□, □□... □□ □□□□□□□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□" □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□

"And you think he will silently bow his head in front of you to sacrifice himself."(□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□), □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□

"□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□.. □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□" □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□

"And if he gets them both… then!”(□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□... □□!), □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□

"□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□? □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□! □□ □□□□ □□ □ □□□□□ □□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□

"And why do you think that...he will come here only?"(□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□... □□ □□□□□ □□ □□□□□!), □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□

"□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□" □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

"He came in here and took the Bhavishyakathan! Such a big thing has happened and you have no problem at all. That much self-confidence is no good, Edward!"(□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□! □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□!), □□□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□

"□□□□□ □□□□□! □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□... □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□" □□□□□ □□ □□□□-□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□

"But Edward...that Alfie..." □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□? □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□, □□ □□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□-□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□

अब भी उठाऍ॑गे।" एडवर्ड ने बहुत ही गंभीर लहज़े में कहते हुए अपनी बात खत्म की और एक बार फिर ऑ॑खें बंद करके बैठ गया। पीटर भी अपने अंदर ढेर सारी कश्मकश भरे चुपचाप एक और बैठ गया।

इधर उन दोनों की बातें सुनने के बाद अल्फ़ी को मेंशन में अपना हर कारनामा याद आता गया। किस तरह उसने अपने हाथ के इशारे से दरवाजे को बंद कर दिया था और किस तरह उसने एडवर्ड के साथ हाथापाई की थी। उसे अपना दीवारों और छत पर आराम से चलना और दौड़ना याद आ गया। अपने जख्म का भरना याद आ गया। उसका हाथ अपने आप ही पेट के उसे हिस्से पर चला गया जहॉ॑ पर खंजर आ घुसा था। अचानक ही उसके होठों पर एक मुस्कान आ गई। अब उसे पता था कि उसे क्या करना था? कैसे करना था? वो बहुत ही दबे पॉ॑व थोड़ा सा
पीछे गया और फिर उसने एक पत्थर उठाकर पीछे की ओर दीवार पर दे मारा, जिससे एक आवाज उस संकरे से रास्ते में गूंज उठी। अल्फ़ी को पता था कि एडवर्ड और पीटर दोनों का ध्यान अब इस रास्ते पर ही होगा। वो दो पलों के लिए रुका और फिर उसने तेजी से उसे कमरे की ओर दौड़ लगा दी। उस कमरे में थोड़ा अंदर की ओर जाकर उसने लड़खड़ाते हुए खुद को रोका। उसने ऐसा दिखाने की कोशिश की.. कि वो तुरंत ही बिना रुके बहुत दूर से दौड़ता हुआ वहॉ॑ पहुॅ॑चा था.. ताकि सामने मौजूद उन दोनों के मन में उसकी मौजूदगी को लेकर कोई शंका न रहे।

"एडवर्ड! कहॉ॑ हैं हेममाया और अनामिका?" अल्फ़ी चीखते हुए बोला।

"कहा था ना!" एडवर्ड ने अल्फी की बात को नजर अंदाज कर पीटर की ओर टेढ़ी मुस्कान के साथ देखते हुए कहा। मगर पीटर अभी भी अल्फ़ी को संदेह से देख रहा था।

"मैंने कुछ पूछा!" अल्फ़ी एक बार फिर चिल्लाया।

"श्श्श्श्श! चिल्लाओ मत! फिलहाल तो ठीक हैं और अगर तुम चाहोगे तो ठीक ही रहेंगे।" एडवर्ड ने अपना जाल फेंकते हुए कहा।

"क्या चाहते हो तुम?" अल्फी ने मुद्दे पर आते हुए पूछा।

"वही.... जो पहले भी चाहता था। तुम्हारी मौत! इससे कम में कोई बात नहीं होने वाली है।" एडवर्ड ने भी साफ-साफ अपनी बात कह दी। उसने पीटर की ओर इशारा किया, तो पीटर तुरंत ही अल्फ़ी की तलाशी लेने लगा। हालांकि अल्फ़ी की वजह से उसके अंदर बैठ गए डर ने उस पर से अपनी नज़रें नहीं हटाने नहीं दीं। अल्फ़ी ने भी चुपचाप अपने दोनों हाथ ऊपर कर दिए।
"पर मैं.... तुम्हारी बातों पर यकीन क्यों और कैसे करूं... कि.. मेरे मरने के बाद तुम उन दोनों को आजाद कर दोगे।" दोनों हाथ ऊपर उठाए अल्फ़ी ने भी अपनी चाल चलते हुए कहा।

"अब... तुम्हारी इस समस्या का समाधान मेरे पास नहीं है।" एडवर्ड ने अपने कंधे उचका कर लापरवाही से कहा और पीटर की ओर देखा, जो तलाशी का अपना काम खत्म कर चुका था। उसने अपना अंगूठा उठाकर सब सही होने का इशारा किया।

"पर मेरे पास कोई गारंटी तो होनी चाहिए ना... कि मेरी मौत उनकी जिंदगी का सबब बनेगी।" हाथ नीचे कर अल्फ़ी ने भी अड़ते हुए कहा।

"मेरे ख्याल से.... उनकी हालत देख लो तो.... तुम्हें फैसला करने में ज्यादा आसानी होगी। इससे ज्यादा मैं और कुछ नहीं कर सकता।" एडवर्ड ने उसे सुझाव देते हुए कहा।

और उसका सुझाव सुनते ही अल्फ़ी के कान खड़े हुए थे। अगर एडवर्ड ऐसा कुछ करता तो उसे पता चल जाता कि अनामिका और हेममाया दोनों ही उसके चंगुल से छूट चुके थे। मगर वो हड़बड़ाता तो.. सामने वाले को शक हो सकता था। वैसे भी पीटर की नजरें अल्फी को कुछ ज्यादा सही नहीं लग रही थीं और ना ही अपने हक़ में।

"नहीं! मैं उनको... किसी भी तरह की बुरी हालत में नहीं देखना चाहता।" अल्फ़ी ने भरे हुए गले से कहा।

"तो फिर!" एडवर्ड ने पूछा।

"अभी इस समय मेरे पास तुम पर यकीन करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। मैंने तो पहले भी यकीन किया था, पर वो चैतन्य उसी
ने सब बिगाड़ा। वही मुझे उस कैद से छुड़ा कर ले गया था।" अल्फ़ी ने अपना पक्ष रखते हुए कहा।

"Oh yes! Where is that stupid one? Looks like he doesn't care about his girlfriend at all."(अरे हॉ॑! कहॉ॑ हैं वो नमूना? लगता है उसे अपनी प्रेमिका की बिल्कुल भी चिंता नहीं है।), पीटर ने अल्फी पर गहरी निगाह डालकर तंज करते हुए पूछा। चैतन्य का जिक्र आते ही पीटर सचेत हुआ था।

"मुझे नहीं पता! मैं और अनामिका दोपहर में इस जगह आए थे। इसलिए मैंने अंदाजा लगाया कि आप लोग यहॉ॑ हो सकते हैं। मैं अनामिका को लेकर इतना घबरा गया था कि... उसकी ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया और भागकर यहॉ॑ चला आया।" अल्फ़ी ने जवाब देते हुए कहा।

"अब आ ही गए हो तो प्रेमी का फर्ज भी पूरा करो। अंकल! आप सब तरफ चौकन्नी नज़र जमाए रखें। कोई भी गड़बड़ नज़र आए... सोचने या रहम करने की कोई जरूरत ही नहीं है और जब हमारा काम सही तरीके से हो जाए तो उस अनामिका को हेममाया के शरीर के साथ आजाद कर दें।" एडवर्ड आदेश देता हुआ बोला और एक बार फिर से अपनी जगह पर बैठ गया। उसने एक बार फिर से अपनी ऑ॑खें बंद कर लीं और गहरे ध्यान में चला गया।

उस जगह को उसने दोपहर में भी देखा था। सामने एक विशाल मूर्ति थी, जो यकीनन पिशाच देव की थी। नीचे एक छोटा सा हवन कुण्ड जैसा बना हुआ था... जो फिलहाल शांत था। उसके सामने एडवर्ड ध्यान में बैठा हुआ था। एडवर्ड के सामने एक खंज़र रखा हुआ था। पास ही पत्थर की लंबी
सी एक मेज थी। पीटर दरवाजे और अल्फ़ी पर अपनी तेज नज़र पूरी सावधानी से रखे हुए था।

एडवर्ड के ध्यान में जाने के थोड़ी देर बाद उस पूरे कमरे का तापमान धीरे-धीरे गिरने लगा। मशालों की रोशनी भी धीमी होती गईं। एक समय ऐसा आया जब हवाऍ॑ शूल की तरह जिस्म में चुभने लगी थीं। मगर इससे उन तीनों की ही स्थिति में कोई फर्क नहीं आया, जैसे कि वे तीनों ही सभी अहसासों के दायरे को तोड़ चुके हों।

और फिर एक भक्क की आवाज के साथ सूना पड़ा हवनकुंड अग्नि से आबाद हो गया। अल्फ़ी बहुत ही ध्यान से उसकी हर एक कार्यवाही को देख रहा था... समझ रहा था क्योंकि अभी वार करने का सही समय नहीं आया था।

कुंड से उठती आग की लपटों की रोशनी में सब कुछ सुनहरा-सुनहरा सा लग रहा था और तभी... अल्फ़ी को याद आई... हेममाया से अपनी पहली मुलाकात। कुछ इसी तरह आग की रोशनी में दमकते हुए उसके चेहरे को अपने दिल में उतारा था उसने... और वो आज भी वहीं थी। एक पल के लिए अल्फ़ी को लगा कि उन आग की लपटों के पीछे हेममाया का खूबसूरत चेहरा उसे देखकर मुस्कुरा रहा हो। बेखुदी में अल्फ़ी के हाथ उस ओर उठे और अगले ही पर आंसुओं की चादर में हेममाया का चेहरा झिलमिलाने लगा। अल्फ़ी ने हड़बड़ाकर अपनी दोनों ऑ॑खों को अपनी हथेलियों से रगड़ा और फिर सामने देखा। उसके मन की राहत जा चुकी थी। वो एक बार फिर से तड़प उठा था और उसका चेहरा एक बार फिर से हेममाया की तकलीफों के बारे में सोचकर तपने लगा था। उस पर उसकी ऑ॑खों के अंदर की आग के ऊपर चढ़ा दर्द का पानी और भी हैरतअंगेज मंज़र पैदा कर रहा था। मगर आज इस समय वो अपने होश खोने नहीं आया था। इसलिए खुद पर नियंत्रण करके वो उसी तरह खड़ा रहा। पर चेहरे के दर्द को छुपाने की कोई भी कोशिश उसने नहीं की।
कुछ ही देर में कुंड से उठती आग ने वातावरण की सारी ठंडक निगल ली और अब सबको अपना जिस्म गर्मी में झुलसता हुआ महसूस होने लगा। बढ़ती हुई बेचैनी के बीच माथे पर उभरी बूंदें जब बहकर गालों पर बहने लगीं और शरीर के कपड़े जिस्म में चिपककर एकसार होने लगे, तब एडवर्ड ने अपनी ऑ॑खें खोली। उसकी वो ऑ॑खें सुर्ख़ लाल शोलों सी दहक रही थीं और उसका चेहरा कठोर होकर पत्थर को भी मात देने में तुला था। वो अपनी जगह पर खड़ा हुआ और मूर्ति की ओर अपने दोनों हाथ ऊपर उठा कर जोर-जोर से पिशाचदेव का आह्वान करने लगा। हर बढ़ते पल के साथ उसके होंठों पर कुटिल मुस्कान बढ़ती जा रही थी।

"[illegible]! [illegible].... [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

अल्फ़ी ने एक ही झटके से अपनी कलाईयॉ॑ रस्सियों की क़ैद से आज़ाद कराईं। उन कलाईयों को मसलते हुए वो उठा और फिर एडवर्ड के सामने
बैठ गया।

"क्या कहते हो एडवर्ड... बलि तुम्हारी चढ़ा दी जाए।" अल्फ़ी ने बहुत ही कड़वाहट के साथ उससे कहा।

उसकी बात सुनकर एडवर्ड बुरी तरह से छटपटाया था। उसने खुद को छुड़ाने की बहुत कोशिश की मगर नहीं कर सका। अल्फ़ी ने पीटर की ओर नज़र उठाकर देखा और चिढ़ाने वाली आवाज में बोला, "कहिए मामा जी! दे दें एडवर्ड की बलि... उसी के हाथों!"

"इससे तेरा कोई फायदा नहीं होने वाला। बल्कि आत्मबलि एडवर्ड की साधना को पूर्ण कर ही देगी। तू चाहे भी तो ऐसा नहीं कर सकता।" पीटर जोर से चिल्लाकर बोला और अगले ही पल उसे अहसास हुआ कि उसके मुॅ॑ह से क्या निकल गया है। एडवर्ड ने दुख और गूस्सए से अपनी ऑ॑खें बंद कर लीं।

"ओह! थैंक्यू मामाजी! अच्छा हुआ आपने बता दिया। अब तो ये शुभ काम मैं ही करूंगा।" कहते हुए अल्फ़ी ने एडवर्ड के हाथों से वो खंज़र छीन लिया।

एक ही पल में बाजी पूरी तरह से पलट चुकी थी। एडवर्ड बुरी तरह से अल्फ़ी के जाल में फॅ॑स चुका था और उससे बाहर निकलने के लिए लगातार छटपटा रहा था। उसे इस तरह से तड़पता हुआ देखकर अल्फ़ी की ऑ॑खों में एक दर्द उतर आया। गुस्से में उसके नथुने फड़कने लगे और सॉ॑से भारी हो गईं।

"मेरी माया भी ऐसे ही तड़पी होगी ना! हो सकता है कि गिड़गिड़ाई भी हो। पर तुम नफ़रत और लालच में अंधे हो चुके लोगों को उसका दर्द महसूस ही नहीं हुआ। मार डाला उसे। पर देखो... उसकी आह तुम्हें खा
गई। इसे कहते हैं सौ सुनार की और एक लोहार की। जब तुम्हारा दिल किसी के दर्द को महसूस ही नहीं कर सकता तो इसकी किसी को जरूरत भी नहीं।" अपने अंदर की सारी कड़वाहट बाहर निकालते हुए अल्फ़ी ने वो खंज़र एडवर्ड के दिल के ऊपर रख दिया। एडवर्ड की छटपटाहट और भी बढ़ गई थी और चेहरे पर एक ख़ौफ उतर आया था। अल्फ़ी की ऑ॑खों में भी एक तड़प उतरी और उसने वो खंज़र पूरी ताकत से एडवर्ड के सीने में उतार दिया। एडवर्ड की दिल दहलाने वाली चीखें दीवारों से टकरा- टकराकर दम तोड़ गईं। कुछ ही देर में वो फर्श पर पड़ा झटके खा रहा था। अल्फ़ी ने एक हिकारत भरी नज़र उस पर डाली।

"तुम जैसों का ऐसा ही अंजाम होना चाहिए। तू मेरी बलि चढ़ाना चाहता था। देख! मैंने ही तेरा खून पिशाचदेव को अर्पित कर दिया। तेरी आखिरी सॉ॑स का भी गवाह बनना चाहता था, पर समय नहीं है मेरे पास। अनामिका जा रही है। उसे विदा करना है मुझे। तू अपना अंजाम खुद भुगतने के लिए आजाद हैं।" कहते हुए अल्फ़ी उठा और फिर हाथ उठाकर उसने एक झटका दिया, जिससे पीटर लहराता हुआ नीचे फर्श पर आ गिरा।

"बक्श दिया तुझे। तुम सबकी तरह बेगैरत नहीं हूॅ॑। अपने पापों की इस गठरी को जमीन के किसी हिस्से में दबाने का मौका देता हूॅ॑।" कहते हुए अल्फ़ी तेजी से दरवाजे की ओर भागा कि समय तेजी से भाग रहा था। बाहर निकलने से पहले उसने मुड़कर देखा। पीटर बदहवास सी हालत में एडवर्ड पर झुका हुआ उसे झिंझोड़ रहा था। उन दोनों को एक नज़र देखकर अल्फ़ी तेजी से बाहर निकल गया। अब वो बसेरे की ओर जा रहा था।

वर्तमान में -
"अगर सच में तुमने एडवर्ड को मार दिया था... तो वो वापस कैसे आया और तुम पिशाच कैसे बन गए? तुमने अनामिका से वादा किया था कि तुम कोई ग़लत काम नहीं करोगे। फिर ये सब!" चैतन्य ने अपने नाराज़ लहजे में बेयकीनी मिलाते हुए कहा।

"मैंने कोई वादा नहीं तोड़ा। ये मेरी मजबूरी थी। अनामिका की जान बचाने और परिधि को सजा देने के लिए पिशाच बना मैं!" अल्फ़ी जूनूनी हालत में चिल्लाकर बोला।

"पर परिधि को सजा क्यों?" आशुतोष ने पूछा।

"क्योंकि उसने मेरी माया को अमानत चुराई है।"

और ये सुनते ही सभी आवाक् होकर रह गए।

"और ये तुम्हें कैसे पता चला?" अंकित ने पूछा।

"मैं एक बार फिर से कल्परूप गया था। वहॉ॑ पता चला।" अल्फ़ी ने सामने बैठी अनामिका के चेहरे पर नज़र रखे हुए कहा, जो उसे ही देख रही थी। पास ही परिधि भी अचेत लेटी हुई थी।

"तुम वहॉ॑ फिर से क्यों गए थे?" चैतन्य ने सवाल किया।
"लता मॉ॑ चाहती थीं।" अफ़ीम ने जवाब दिया।

"और वो क्यों? चैतन्य ने पूछा।

"तुम सबके जाने के बाद मैं हेममाया के शरीर को लेकर वापस अपने कस्बे आ गया। हेममाया का अंतिम संस्कार करने के बाद मेरी तन्हा पड़ी जिंदगी में बस लता मॉ॑ के कदमों की आहट ही शेष बची थी। एक ही दर्द से गुजरते हम दोनों ही बस एक-दूसरे का चेहरा देखकर जी रहे थे। जीने की चाहत तो दोनों में ही नहीं बची थी, पर हम जानते थे कि गलत कदम उठाना हेममाया की आत्मा को दुखी करता। लता मॉ॑ के लिए मैंने खुद को किसी तरह संभाला, पर लता मॉ॑ नहीं संभाल पाई। वो एक बार बीमार पड़ी तो फिर कभी ठीक नहीं हुई। उन्हें देखकर मुझे हमेशा लगता था कि वो मुझसे कुछ कहना चाहती है... पर मेरे पूछने पर हमेशा टाल जातीं। लेकिन एक दिन आखिरकार उन्होंने मुझसे अपने दिल की बात कह ही दी।"

200 साल पहले -

अल्फ़ी को अपने कस्बे वापस लौटे दो महीने हो गए थे। हेममाया के ग़म में डूबी लता की हालत दिन पर दिन बिगड़ती हुई आखिरकार अपने आखिरी पड़ाव पर आ चुकी थी।

वो एक बहुत ही बोझिल दिन था, जब अल्फ़ी आखिरी सॉ॑से लेती लता
के पास सिर झुकाए बैठा था। उसके सिर और चेहरे के बाल देखभाल के अभाव में बेतरतीब से बढ़ गए थे। गोरा.. रोशन चेहरा मुरझाए हुए पत्ते की तरह पीला पड़ चुका था और जिंदगी होने के निशान भी उस पर सही तरीके से दिखाई नहीं देते थे। लता उसकी ऐसी हालत देखकर और भी तड़पकर रह जाती।

"अल्फ़ी!" अपनी कॉ॑पती हुई आवाज में उन्होंने उसे पुकारा।

"मुझे माफ़ कर दो मॉ॑। जिंदगी भर सुरक्षा और खुशियों के वादे के साथ आपकी बेटी का हाथ थामा था। पर कुछ नहीं कर सका मैं। आप सभी का गुनहगार हूॅ॑ मैं। मुझे माफ़ कर दीजियेगा।" कहते हुए वो फफक-फफक कर रो पड़ा!

"अल्फ़ी! एक बात कहनी थी तुमसे।" मृत्युशैया पर लेटी लता ने हॉ॑फते हुए कहा।

"कहिए ना मॉ॑!" भावुक हो आगे बढ़कर उनका हाथ थामते हुए अल्फ़ी ने कहा।

"एक बार... और... कल्परूप जाओगे तुम!" लता ने बमुश्किल कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी बुरी तरह से चौंका। वो उस जगह फिर नहीं जाना चाहता था, जिसका नाम उसकी जिंदगी में सिर्फ और सिर्फ दर्द था। मगर वो लता की बात को भी नज़रअंदाज़ नहीं कर सकता था।

"उस जगह! क्यों?" भावनाओं के भॅ॑वर में डूबता-उतरता अल्फ़ी बस इतना ही पूछ पाया।
"मुझे... लगता है कि... तुम... कुछ बहुत जरूरी... वहॉ॑ छोड़.. आए हो।" लता टूटती हुई सॉ॑सों के बीच बोली।

"कुछ! नहीं मॉ॑.... मैं अपना सब कुछ वहीं छोड़ आया हूॅ॑!" अल्फ़ी का गला ना चाहते हुए भी रूंध गया था।

"नहीं अल्फ़ी! तुम... नहीं जानते। तुम्हारे.... जीने की वजह... होगी वहॉ॑। जाकर... उसे ढूंढो!" लता ने बहुत ही मुश्किल से कहा। उसकी सॉ॑से उखड़ने लगी और उन्होंने अल्फ़ी की ऊंगलियों पर अपनी उंगलियाॅ॑ कस दी थीं।

"मॉ॑ आप शांत रहिये! आपकी तबीयत ठीक नहीं है।" अल्फ़ी ने उसकी उधड़ती सॉ॑सों से घबराकर कहा।

"नहीं! तुम्हें... तकलीफ़.. ना हो... इसलिए... पहले नहीं कहा। पर... तुम... जाओ! माया... तुम...." और अपनी अंतिम बात खत्म किए बिना ही वो शांत हो गईं। हमेशा के लिए! अल्फ़ी अपनी ऊंगलियों पर उनकी ढीली पड़ी पकड़ से घबरा उठा।

"मॉ॑!" उसने कॉ॑पती हुई आवाज में उन्हें पुकारता। मगर वो पुकार के सब दरवाजे बंद कर चुकी थीं। आज अपना परिवार पूरी तरह से खो दिया उसने। उसने उनके हाथ को बहुत ही आराम से बिस्तर पर रख दिया। बस... एक ही साल में उसकी हॅ॑सती-खिलखिलाती हुई दुनिया छिन्न-भिन्न हो गई थी और अब कुछ भी समेटने के लिए बाकी नहीं रह गया था। इस बार तो उसकी ऑ॑खें भी नहीं भीगीं। उसने बहुत कोशिश भी की... पर कुछ नहीं हुआ।

लता के अंतिम संस्कार के बाद वो अपने घर में ही क़ैद होकर रह गया। उसके पास जीने के लिए कोई बहाना भी तो नहीं बचा। बेमकसद सी
जिंदगी एक बोझ बनकर रह गई थी.. जिस में रह-रहकर आने वाली माया की यादें और भी इज़ाफा करती थीं।

"नहीं अल्फ़ी! तुम बुरे नहीं हो। तुम बहुत अच्छे हो और ऊपर वाला अच्छे लोगों के लिए कुछ ना कुछ अच्छा सोचकर रखता है। देखना.. वो तुम्हें भी जीने का कोई मकसद जरूर देगा। बस.. मुझसे एक वादा करो कि कभी कोई ग़लत रास्ता नहीं अपनाओगे तुम! अपने अंदर की अच्छाई को कभी भी मरने नहीं दोगे। बस... यही एक वादा! अपने साथ तुम्हारी यही अच्छाई लेकर जाना चाहती हूॅ॑ मैं। दोगे ना!"

अक्सर अनामिका की कही हुई ये बातें उसका दिल कचोचती रहती थीं। अपनी बेमकसद सी जिंदगी में ये बस उसे अपने ऊपर किसी ताने की तरह महसूस होती थीं। लता की आखिरी इच्छा थी कि वो एक बार फिर से कल्परूप जाए। कुछ खोजने! पर क्या? उसकी समझ में ये कभी भी नहीं आया और जब उसकी ये उलझन उसे हद से ज्यादा परेशान करने लगीं.. तो मन मारकर वो कल्परूप की ओर बेचैनियों से राहत की तलाश में निकल ही गया।

आज पूरे तीन महीनों के बाद वो एक बार फिर से उस जगह पर खड़ा था, जहॉ॑ उसने हेममाया और अनामिका दोनों को ही खो दिया था। वही रात का समय और वही उसकी तन्हा जिंदगी जैसा मनहूस सन्नाटा! वो बस खड़ा हुआ उस दरवाजे को टुकुर-टुकुर देख रहा था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर उसे ढूंढना क्या है? और इसी सवाल के साथ वो ना जाने कब तक उसी तरह खड़ा रहा। उसे होश आया एक आहट से। किसी को अपने पास महसूस कर वो तेजी से पीछे पलटा और सामने जो दिखा... उसने उसके होश उड़ा दिए। सामने एडवर्ड खड़ा था।
"तुम! तुम जिंदा हो!" उसके होंठों से सवाल फिसला।

"तो तुमने क्या सोचा? एडवर्ड ऐसे ही हार मान जाएगा।" एडवर्ड ने बहुत ही सर्द आवाज में जवाब दिया।

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"तो तुम्हारा कहना है कि उस एडवर्ड ने अपने ही मामा को खा लिया, ताकि जिंदा रह सके।" मुकुल ने सदमे भरी आवाज में कहा।

"हॉ॑! पर उस समय उसकी साधना खंडित होने की वजह से वो शापित हो चुका है। उसे लंबा जीवन तो मिला है... पर किस्तों में। वो दस सालों तक सोता है और फिर दस दिनों के लिए अपनी साधना की पूर्ति के लिए जागता है। जब तक उसकी साधना पूरी नहीं होती वो ऐसे ही शापित रहेगा।" अल्फ़ी ने एक आह भरते हुए बताया।

"तो क्या वो पिछले 200 सालों में भी सफल नहीं हो सका है? ऐसी
कौन सी वजह हो सकती है कि वो अपनी साधना पूरी नहीं कर सका?" आशुतोष ने सवाल किया।

"उसे अपनी साधना पूरी करने के लिए अपना ही वंश.. अपना ही खून चाहिए। वो मेरे साथ ऐसा कुछ करता... उससे पहले ही वो अपनी गहरी नींद में चला गया और जब तक वो वापस लौटा... मैं अपनी साधना पूरी कर पूर्ण पिशाच बन चुका था। वो उसी बलि की तलाश में अब तक भटक रहा है।" अल्फ़ी ने कहा।

"पर वो परिधि और अनामिका के पीछे क्यों पड़ा है? और... उसे ये कैसे पता चला कि अनामिका और परिधि उसे कब मिलेंगी? कहॉ॑ मिलेंगी?" चैतन्य ने एक के बाद एक सवाल दागते हुए कहा।

"हम दोनों का ही अनुमान था कि तुम दोनों चाहे समयद्वार से किसी भी समय से आए हो, कल्प रूप के आसपास ही रहे होंगे। इसलिए हम दोनों ने ही हमेशा अपनी नज़रें इस पूरे इलाके में जमाए रखीं।" अल्फ़ी बोला।

"और तुम्हें ऐसा क्यों लगा?" चैतन्य ने पूछा।

"क्योंकि तुम दोनों समय यात्रा के समय इसी जगह रहो, इसका इंतजाम मैंने ही किया था।" अल्फ़ी ने रहस्य खोलते हुए कहा।

"क्या? पर कैसे?" एक साथ कई आवाजें आई।

"ये मैं नहीं बता सकता।" अल्फ़ी ने साफ इंकार करते हुए कहा, जिससे चैतन्य कुढ़कर रह गया।

"पर उसे परिधि क्यों चाहिए? वो परिधि की बलि तो दे नहीं सकता। तो फिर...?" अंकित ने सवाल किया।
" वो परिधि को मुझसे दूर रखना चाहता है। दरअसल परिधि ही वो रहस्य जानती है जिसने समय के जाल में हम सबको उलझा रखा है और आज ये जवाब मुझे चाहिए। उसने मेरी माया की कौन सी कीमती चीज चुराई? मुझे वो चाहिए। मैं तो कुछ दिन पहले भी इस सवाल का जवाब लेने परिधि के कमरे में गया था, पर चैतन्य के आ जाने से मुझे वहॉ॑ से निकलना पड़ा और मेरा ये सवाल... सवाल ही रह गया।" (भाग- 14)", अल्फ़ी ने तड़पकर कहा।

और ये सुनते ही सभी की नज़रें बिस्तर पर अचेत लेटी परिधि की ओरगई।

"पर इसे तो होश ही नहीं आ रहा है और आया भी तो... ये तो सब कुछ भूल चुकी है। ये तुम्हें क्या बताएगी?" वरुण ने परिधि की ओर देखकर कहा।

"बताएगी! अब ये सबकुछ बताएगी।" अल्फ़ी ने पूरे विश्वास के साथ कहा और फिर अपना एक हाथ बढ़कर उसे एक झटका दिया और बेसुध पड़ी परिधि एक गहरी साॅ॑स लेते हुए उठ बैठी। वो इतनी जोर से सॅ॑से ले रही थी, जैसे की मीलों दूर भागकर आई हो। होश में आते ही जब सामने उसकी नज़र गई, तो अल्फ़ी का चेहरा ठीक अपनी ऑ॑खों के सामने पाया। उसकी ऑ॑खों में बेहिसाब, गुस्सा, दर्द और लाचारी भरी हुई थी।

"अल्फ़ी!" परिधि ने वापस आई यादों के साथ कहा।

"मेरी माया की अमानत!" अल्फ़ी ने जैसे तकादा किया था।

"मेरे पास नहीं है।" परिधि ने बेबसी से कहा।

"झूठ!" अल्फ़ी ने दॉ॑त पीसते हुए कहा।
"सच! मुझसे.... खो गई... वो!" परिधि ने कॉ॑पती हुई आवाज में कहा।

"खो गई! क्या खो गई?" अल्फ़ी ने सवाल के साथ अपनी ऑ॑खें सिकोड़ी।

और ये सुनते ही परिधि के चेहरे का सारा रंग उड़ गया और डर का काला रंग उसके चेहरे को स्याह करने लगा। पसीना उसके माथे पर झिलमिलाने लगा और उसने अपने सूखते गले को बड़ी मुश्किल से तर किया। उसके लफ्ज़ हलक़ में कहीं अटक से गए। फिर भी उसने बहुत हिम्मत करके कहा,

"तुम्हारी..... बेटी!"

कमरे में मौत सा सन्नाटा फैल गया।

कमरे में फैला सन्नाटा सभी को चुभ रहा था, मगर कोई भी इस सन्नाटे को तोड़ना नहीं चाहता था। सभी की नज़रें अल्फ़ी पर ही थीं, जिस पर अभी-अभी एक और बम फूटा था। परिधि अपनी सूखते होंठों पर बार-बार ज़बान फेरते हुए सामने बैठे हुए अल्फ़ी को देख रही थी, जो इतनी बड़ी बात सुनने के बाद भी चुपचाप बैठा उसे अपनी नजरों से जॉ॑च रहा था। इतना बड़ा खुलासा होने के बाद सभी को अल्फ़ी से इस तरह की प्रतिक्रिया की तो हर्गिज उम्मीद नहीं थी। उन्हें लगा था कि अल्फ़ी इस खबर को सुनने के बाद या तो बहुत खुश होगा.. या फिर... बहुत नाराज़। पर वो तो दोनों ही नहीं था। वो बस परिधि को एकटक घूरे जा रहा था।

"अ.. अल्फ़ी!" परिधि ने ही इस मौन को तोड़ने की पहल की।

"तुम्हें तो सचमुच आराम की जरूरत है। लग रहा है... दिमाग हिल गया है तुम्हारा।" अल्फ़ी ने परिधि को देखते हुए अफसोस से कहा और उसके सामने से हट गया। उसकी बात सुनकर सभी को हैरत का तेज झटका लगा था।

"अल्फ़ी! लग रहा है कि तुमने सुना नहीं... कि परिधि ने क्या कहा!" अपनी ऑ॑खों में हैरानी भरे भाव लिए अनामिका ने अल्फ़ी को जोर देकर कहा।
"सुना मैंने! अच्छी तरह से सुना! इसीलिए कह रहा हूॅ॑ कि इसका दिमाग हिल गया है... क्योंकि ऐसा हो ही नहीं सकता।" अल्फ़ी ने तुरंत ही अनामिका की बात काटी।

अब तो उस कमरे में मौजूद सभी लोगों की हैरानी और भी बढ़ गई। खुशियों के लिए तरसते उस शख्स को इस खबर से ना तो खुशी हुई और ना ही हैरानी। बल्कि वो तो इस खबर को ही नकार रहा था।

"और क्यों नहीं हो सकता भला?" वरूण ने अपना चश्मा नाक पर ठीक करते हुए पूछा।

"तुम और माया पति-पत्नी थे। साथ में खुश थे। तो फिर क्यों नहीं हो सकता ये?" अंकित ने पूछा।

"क्योंकि मैं एक पिशाच हूॅ॑ और पिशाच तुम सबकी तरह सामान्य रूप से संतान पैदा नहीं कर सकते।" अल्फ़ी ने वरूण के सवाल का जवाब देते हुए कहा।

"संतान पैदा नहीं कर सकते... तो तुम और एडवर्ड कैसे पैदा हुए?" इस बार सवाल आशुतोष ने किया।

"[illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] 200 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

'क्योंकि समय द्वार को खोलने के लिए जल-रक्षक के साथ वायु-रक्षक की भी जरूरत होती है और तुम सब जानते हो कि चैतन्य को अभी-अभी ही नियतिपात्र ने वायु-रक्षक चुना है। उससे पहले कोई वायु-रक्षक नहीं था। उस समय हम साथ थे.. और ऐसी परिस्थितियॉ॑ बन गईं कि वो समय द्वार खुल गया।" अनामिका ने सबके मन में उठे इस सवाल का जवाब देते हुए कहा।

"मुझे एक बात समझ में आ गई कि... एक जल-रक्षक जब अकेले द्वार बनाती है, तो वो छलद्वार होता है, जबकि जल-रक्षक और वायु-रक्षक मिलकर उसी छलद्वार को समयद्वार में बदल सकते हैं। एम आई राइट?" अंकित ने सारे विवरणों को समेटते हुए कहा।

"मुझे भी यही लग रहा है।" अनामिका ने कहा।
"अगर ऐसी बात है तो अतीत में हम दोनों ने ही कई बार छलद्वार का प्रयोग एक साथ किया था। उस समय उसने समय द्वार की तरह ही बर्ताव क्यों नहीं किया?" चैतन्य ने इस थ्योरी पर आपत्ति उठाई।

"हो सकता है कि जल रक्षक और वायु रक्षक ये डिसाइड कर सकते हैं कि वो छलद्वार की तरह काम करे या फिर समय द्वार की तरह। मतलब कि वो दोनों उस द्वार को जैसा आदेश देंगे वो वैसा ही व्यवहार करेगा।" आशुतोष ने अपना दिमाग लगाते हुए कहा।

"हम्म! शायद आप सही कह रहे हैं। अतीत में जब हमने उन द्वारों का इस्तेमाल किया तब हमें छलद्वारों की ही जरूरत थी जबकि वापस आने के लिए हमें समयद्वार की जरूरत थी। हमें वो सारे द्वार जिस रूप में इस्तेमाल करने थे वो उन्हीं रूपों में हमारे सामने आए।" चैतन्य ने आशुतोष की थ्योरी पर हामी भरते हुए कहा। बाकी सब ने भी इस पर अपनी हामी की मुहर लगाई।

"पर एक सवाल तो अभी भी कायम है। परिधि ने कहा कि तुम दोनों के सक्रिय करने से पहले ही समय द्वार खुल चुका था। हेममाया जल रक्षक थी। वो अकेले छल द्वार तो बना सकती थी, पर वायु-रक्षक के बिना वो समय द्वार नहीं बना सकती थी। तो फिर तुम्हारे पहुॅ॑चने से पहले वो समय द्वार सक्रिय कैसे हुआ?" अल्फ़ी ने चिर परिचित सवाल एक बार फिर से उठाया।

"सबसे पहले तो परिधि तुम ये बताओ कि तुम्हें कैसे पता चला कि वो समय द्वार था। वह छलद्वार भी तो हो सकता है ना!" वरुण ने एक और सवाल उठाया।

"क्योंकि वो द्वार एक बार नहीं दो बार खुला था। पहली बार तब... जब
रोमा और मार्गरेट की गलती की वजह से हेममाया की आत्मा वाला जीवपात्र उसके अंदर चला गया था। मैं उसे पकड़ने के लिए उस द्वार के अंदर भी गई थी। लेकिन जब मैंने वहॉ॑ कुछ बहुत ही खतरनाक कबीले वालों को देखा, तो मैं उनके डर से वापस आ गई थी। दूसरी बार वो दरवाजा तब खुला था, जब मैं हेममाया की बेटी को बचाने की तरकीब सोचते हुए अनजाने में उस द्वार से टकरा गई और ना जाने कैसे वो द्वार खुल गया। उस समय मुझे उस बच्ची को बचाने का और कोई तरीका समझ नहीं आया, इसलिए मैं उस द्वार के अंदर चली गई। मगर इस बार उस द्वार के अंदर जाने पर मुझे ऊपर की ओर जाती हुई सीढ़ियॉ॑ दिखाई दीं, जो कि पिछली बार नहीं थीं। मैं बिना कुछ सोचे समझे उन सीढ़ियों में चढ़ गई और फिर थक कर जब रुकी तो सामने एक दरवाजा खुला। उस दरवाजे को खोलकर जब मैं आगे बढ़ी तो मैंने अपने आपको ठीक उसी जगह पाया जहॉ॑ मैं पिछली बार गई थी। मगर इस बार वह जगह कुछ अलग सी लग रही थी। वहॉ॑ की हवा... वहॉ॑ का माहौल... हर चीज अलग सी थी। पहले तो उस अंतर को मैं समझ नहीं पाई, मगर बाद में मुझे समझ आया कि वो जगह थी तो वही, पर मेरे समय से आगे की क्योंकि पिछली बार मैंने जंगल को जितना घना पाया था वो जंगल अब उतना घना दिखाई नहीं दे रहा था। और मैं समझ गई कि मैं समय की सीढ़ियां चढ़कर आगे के समय में आ चुकी हूॅ॑। मेरे लिए वापस जाना जरूरी था। इसलिए उसे बच्ची को वहीं छोड़कर मैं दरवाजे से वापस आ गई। मुझे लगा था कि कुछ समय के लिए वह बच्ची वहॉ॑ सुरक्षित रहेगी। अल्फी से मिलते ही मैं उसे उस बच्ची के बारे में बता दूंगी और फिर उसके साथ उसी जगह पर जाकर उसे वापस ले आऊंगी। पर मैंने जो सोचा था वैसा कुछ भी नहीं हुआ। ऊपर से मैं ये भी भूल गई कि मैं कितनी सीढ़ियॉ॑ ऊपर चढ़कर गई थी। इसलिए मैं कह रही हूॅ॑ कि मुझे याद नहीं कि वो बच्ची कहॉ॑ है? मैंने उसे खो दिया।" अपनी बात खत्म कर परिधि हथेलियों से अपना चेहरा छुपा फफक-फफक कर रोने लगी।

"तुम समयद्वार का इस्तेमाल कैसे कर रही थी?" अनामिका ने सवाल
किया।

"हेममाया ने अपनी अंगूठी दी थी मुझे इस सहमति के साथ कि जब तक वो अंगूठी मेरे पास रहेगी, मैं उस द्वार का प्रयोग उसी की तरह कर सकती हूॅ॑।" परिधि ने अपने सीधे हाथ में पड़ी अंगूठी दिखाते हुए कहा, जिसे अल्फ़ी ने नम ऑ॑खों से पहचान लिया था।

"एक मिनट परिधि! तुमने ये भी कहा कि उस द्वार ने पहले छलद्वार की तरह व्यवहार किया था और बाद में समयद्वार की तरह।" अनामिका ने कहा।

"हॉ॑!" सुबकती हुई परिधि ने कहा।

"और क्या... दूसरी बार तुम्हारे हाथ में हेममाया की बेटी थी?" अनामिका ने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए सवाल किया।

"हॉ॑!" परिधि ने अपनी नाक सुड़कते हुए कहा।

"हेममाया की बेटी का जन्म किस तारीख को हुआ था?" अनामिका का सवाल बहुत ही संजीदगी लिए हुए था।

"उसकी मौत से कुछ दिन पहले ही। 16 जून हॉ॑... 16 जून!" परिधि ने अच्छी तरह याद कर अपना चेहरा हथेलियों से रगड़ते हुए कहा।

और ये सुनकर अनामिका, आशुतोष की ओर पलटी।

"आशुतोष जी!"

"16 जून यानि कि... मिथुन राशि। वायु-तत्व!" आशुतोष ने हिसाब
लगाते हुए कहा।

और इसी के साथ वो रहस्य भी खुल गया जो इतने दिनों से सभी को परेशान कर रहा था।
हेममाया के बनाए द्वार को जिस वायु-शक्ति ने सक्रिय किया था... वो कोई और नहीं अल्फी और हेममाया की बेटी थी, जो अब समय की धारा में खो चुकी थी।

अल्फ़ी के पैर अब इतना कॉ॑पने लगे थे कि उसके लिए खड़ा रहना मुश्किल हो गया था।
चैतन्य ने उसकी हालत देखकर उसे कुर्सी पर बैठाया। एक बार फिर से कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया था। अल्फ़ी ने सिर झुकाकर अपने बाल मुट्ठियों में भींच लिए। वो अतीत के पन्नों में वो पन्ना ढूंढने लगा, जहॉ॑ ऐसी किसी गुंजाइश का जिक्र रहा हो और एक पन्ने पर जाकर उसकी याद ठहर गई।

200 साल पहले -
हेममाया के कल्परूप जाने से दो महीने पहले-

"अल्फ़ी!" जरूरी कागज़ों पर झुके हुए अल्फ़ी को हेममाया ने पुकारा था।

"हॉ॑! क्या हुआ?" अल्फ़ी ने उन कागजों पर झुके हुए ही कहा।

"ओह्हो अल्फ़ी! कल छुट्टी है। कल ये काम कर लेना! पहले मेरी बात सुनो।" हेममाया ने नाराज होते हुए उसके सामने रखे हुए कागजों को एक
ओर हटा दिया।

"अरे! क्या कर रही हो? जरूरी कागज हैं ये!" अल्फ़ी ने उन कागजों को सही करते हुए झुंझलाकर कहा।

"मेरी बात भी जरूरी है।" हेममाया ने नाक चढ़ाकर कहा।

"हॉ॑ तो कहो ना! सुन रहा हूॅ॑ मैं!" अल्फ़ी ने एक नज़र उस पर डालते हुए कहा।

"वो दरअसल... एक बात थी मेरे दिल में! बोलो तो कहूं!" हेममाया बोली।

अल्फ़ी ने एक तिरछी नज़र उस पर डाली और बोला, "वो तो मैं मना करूंगा, तब भी तुम बोलोगी ही ना!"

उसकी बात सुनकर हेममाया ने मुॅ॑ह बनाया और फिर बोलने लगी, "दरअसल कुछ दिन पहले.. मैं और मॉ॑ बाजार गए थे। वहॉ॑ परचून की दुकान पर कुसुम की मॉ॑ मिली थी।"

"कौन कुसुम?" अल्फ़ी ने अपने बिखरे कागजों में ही उलझे हुए कहा।

"हरि काका की बेटी! जिसकी पिछले महीने शादी हुई थी।" हेममाया ने उसे याद दिलाते हुए कहा।

"अच्छा वो! तो क्या हुआ?" अल्फ़ी ने बहुत ही उकताई हुई आवाज में कहा। वो अपना जरूरी काम छोड़कर औरतों से जुड़ी बातें सुनने के मूड में बिल्कुल भी नहीं था।

"वो.. दरअसल... कुसुम ना.. वो ना.... मॉ॑ बनने वाली है।" हेममाया ने
बहुत ही मुश्किल से कहा, जिस पर अल्फ़ी की ऑ॑खें उसकी ओर उठी।

"हॉ॑ तो!" अल्फ़ी ने सपाट लहजे में पूछा।

और उसकी बात सुनकर हेममाया बुरी तरह से चिढ़ी थी।

"क्या मतलब... हॉ॑ तो!" उसी चिढ़े हुए अंदाज में हेममाया ने कहा।

"अरे बाबा! वो प्रेग्नेंट है.. तो मैं क्या करूं? जो करेगा उसका पति करेगा और अब... तुम अपने पति को उसका काम करने दो।" अल्फ़ी ने थोड़ा झल्लाते हुए कहा।

"वही तो प्रॉब्लम है। उसे जो करना चाहिए... वो करता ही नहीं।" हेममाया ने भी झुंझलाते हुए कहा।

उसकी बातें सुनकर अब तो अल्फ़ी को काम कर पाना मुश्किल ही लगने लगा। उसने अपने काम को एक ओर करके हेममाया को अपने सामने बैठाया और उसके दोनों हाथ पकड़कर बोला, "क्या हुआ? क्या प्रॉब्लम है? साफ-साफ बोलो!"

"प्रॉब्लम ये है कि वो खबर सुनने के बाद तुमने मॉ॑ का बुझा हुआ चेहरा नहीं देखा... पर मैंने देखा था। अल्फ़ी! हमारी शादी को तीन महीने हो गए हैं।" हेममाया ने बुझी हुई सी आवाज़ में कहा।

"ओह! तो ये बात है। माई गॉड माया! प्लीज़! दूसरों के लिए अपनी जरूरतें और खुशियॉ॑ तय मत किया करो। वो जब हमारे नसीब में होंगी.. हमें मिल जाऍ॑गी। फिलहाल... अभी जो मिला है... उसी में खुश रहो। ठीक है!" अल्फ़ी ने एक बार फिर माया को समझाया।
"तो क्या तुम ऐसा नहीं चाहते?" हेममाया ने उसकी ऑ॑खों में झांकते हुए पूछा।

"चाहता हूॅ॑! क्यों नहीं चाहूंगा?" अल्फ़ी ने भी उसकी चाहत पर मुहर लगाते हुए कहा।

"सच!" हेममाया खुशी से उछली।

"मुच!" अल्फ़ी ने भी अपना प्यार जताया।

"मैं अभी आई।" कहते हुए वो कमरे से भागी।

"पगली! लग रहा है मॉ॑ की बातें भूल गई।" अल्फ़ी ने सिर हिलाते हुए मुस्कुरा कर कहा।
वो एक बार फिर अपने काम की ओर मुड़ने ही लगा था कि तभी... ऑ॑खों के सामने दूध का

गिलास पाकर उसने अपना सिर उठाकर मुस्कुराती हुई हेममाया को देखा।

"पियो इसे!" हेममाया ने कहा, जिसपर अल्फ़ी ने ऑ॑खों से सवाल किया। हेममाया ने भी अपनी ऑ॑खों के इशारे से उसे फिर से दूध पीने के लिए कहा। अल्फ़ी को दूध बिल्कुल पसंद नहीं था, पर हेममाया से बहस से बचने के लिए उसने चुपचाप मन मारकर वो पी लिया। उससे गिलास लेकर एक तरफ रखने के बाद वो उसकी गोद में जाकर बैठ गई।

"अरे! अब ये क्या है?" अल्फ़ी ने चौंककर कहा।

"तुम्हें समझा रही हूॅ॑ कि कुछ पाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है।" हेममाया ने उसे बहकी निगाहों से देखते हुए कहा।

"ओह! लगता है कि आज मेरा काम करना मुश्किल ही है।" अल्फ़ी ने
अपना सिर हिलाते हुए शरारत से कहा।

"मुश्किल क्यों है? बस काम समय और जगह देखकर करना चाहिए।" हेममाया ने भी उसके गले में अपनी बांहें डालते हुए कहा।

"सॉरी मि. हेनरी! आपको वेट करना पड़ेगा। घर में तो... घर के बॉस की चलेगी। और आप... बताइए जरा कैसी सेवा करें हम आपकी?" अल्फ़ी ने हेममाया को अपनी बाहों में उठाया और बेड की तरफ बढ़ते हुए बोला। उसकी बात सुनकर हेममाया खुलकर खिलखिलाई थी।

अल्फ़ी ने हेममाया का दिल रख लिया, लेकिन उसके सोने के बाद वो फिर उठा और अपने अधूरे काम को पूरा करने के बाद ही वो सोने के लिए गया। अगले दिन उसके उठने में देर होने पर माया उसे उठाने गई। फिर दोनों की छीना-झपटी में पानी का गिलास गिर गया और फिर उसके बाद वो रहस्य खुला जिसने मीना का चैन और सुकून खत्म कर दिया था(भाग - 91)। उन सब की जिंदगी का यही आखिरी सुकून भरा दिन था। उसके बाद उन तीनों ने कभी भी अपने जीवन में चैन की सॉ॑स नहीं ली। करीब डेढ़ महीने के बाद अपने अंदर के डर से लड़ते हुए मीना ने दम तोड़ दिया और उसके 15 दिनों बाद सुकून की तलाश में हेममाया कल्परूप की ओर चल दी थी। इसके बाद वो फिर कभी वापस नहीं लौटी।अल्फ़ी उस दिन से वापस वर्तमान में लौटा तो... उसे ये एहसास हुआ कि उसने क्या खो दिया था।

वर्तमान में
"हॉ॑! वो दूध! माया ने मुझे पीने के लिए दूध का गिलास दिया था। इसका मतलब कि उसने दूध में वो दवा मिलाई थी। पर ये हुआ कैसे?" अल्फी खुद में बडबडाते हुए बोला।

"क्या कैसे हुआ?" अनामिका ने सवाल किया।

"वो दवा कोई आम दवा नहीं है जो कहीं भी... किसी भी.. वैद्य के यहॉ॑ मिल जाए। वो बहुत ही खास दवा है और सवाल ये उठता है कि माया को वो दवा कहॉ से मिली? किसने दी?" अल्फ़ी ने सवाल उठाया।

अब ये एक नया सवाल उन सबके सामने मुॅ॑ह बाये खड़ा हो गया था, जिसका जवाब भी एक तूफान ही लाने वाला था। अल्फ़ी तो पहले हेममाया... और बाद में अकेले ही... अपनी जिंदगी में खुशियों की तलाश में निकला था मगर उसकी सारी खुशियॉ॑ बुरी नजरों के साए में आकर अधूरी ही रह गई थीं।

"वो दवा कोई आम दवा नहीं है जो कहीं भी... किसी भी.. वैद्य के यहॉ॑ मिल जाए। वो बहुत ही खास दवा है और सवाल ये उठता है कि माया को वो दवा कहॉ से मिली? किसने दी?"

अपने ही सवालों में उलझा हुआ अल्फ़ी बहुत ही थका हुआ दिखाई दे रहा था। उसकी किस्मत उसके साथ जितना क्रूर खेल पिछले 200 सालों से खेल रही थी, अब वो उससे थक चुका था।

इसलिए इतनी बड़ी बात सुनकर भी वो बस एक आह भरकर ही रह गया।

"हो सकता है कि... तुम्हारी मॉ॑ ने ही दिया हो।" वरूण ने सबसे करीबी जवाब देते हुए कहा।

"नहीं! अगर उन्होंने दिया होता, तो मुझे ज़रूर बताती।" अल्फ़ी ने तुरंत ही उसकी बात काटी।

"तो फिर तुम्हारी लता मॉ॑ ने दिया होगा। शायद उन्हें पहले से पता होगा हेममाया की प्रेगनेंसी के बारे में। आखिर उन्होंने ही तुम्हें कल्परूप वापस भेजा था। उनकी बातों से तो यही लगा।" अंकित ने आगे बढ़कर कहा।
"नहीं! पहली बात ये कि... उनके पास भला वो दवा कहॉ॑ से आएगी? और दूसरी बात ये... अगर उन्हें माया के गर्भवती होने का पता होता... तो क्या वो उसे अकेले कल्परूप जाने देती? वहॉ॑ उसे तीन महीने की फॅ॑से रहने देती? वो पहले ही दिन मुझे ना बताती! नहीं! मुझे पूरा यकीन है कि... उन्हें भी इसकी खबर नहीं थी।" अल्फ़ी ने लता का पक्ष रखते हुए कहा।

"तो फिर कौन हो सकता है? कहीं किसी ने... हेममाया को तो नहीं दी थी?" चैतन्य ने एक और अनुमान लगाया।

और ये सुनते ही सभी की ऑ॑खों में एक कौतूहल सा नज़र आने लगा। उन सभी ने अल्फ़ी की ओर देखा, जो खुद भी किसी सोच में गुम दिखाई दे रहा था। शायद वो एक बार फिर से अतीत की गहराइयों में कुछ खोजने उतरा था और सोच से सिकुड़ी हुई उसकी ऑ॑खें कुछ याद आते ही फैलकर गोल हो गईं। उसने परिधि पर एक नज़र डाली और फिर बिजली की तेजी से उसकी ओर लपका था। कोई कुछ समझ पाता... उससे पहले ही उसने परिधि के नाज़ुक से शरीर को अपने मजबूत हाथों से उठाया और उसके चेहरे को अपने चेहरे के सामने लाकर गुस्से से देखने लगा। उसका सुलगता चेहरा देखकर परिधि की सॉ॑से धुआं होने लगीं।

"माया ने मेरी मॉ॑ तक अपने काले जादू से भरा कोई काला धागा पहुॅ॑चाया था, जिसकी वजह से वो इतना डरकर रहने लगी थीं कि उनकी जान तक चली गई और ये उसी समय की बात है। तुम्हीं ने ये बात बताई थी ना हम सबको.... दिव्याक्षि के कमरे में!" अल्फ़ी ने खुद को काबू में करते हुए परिधि से कहा।

"अ... ह... हॉ॑! हॉ॑!" परिधि सहमकर बोली।

"कहीं ऐसा तो नहीं कि वो दवा भी उसी समय पहुॅ॑चाई गई हो? वो दवा
तुमने ही बनाई थी ना!" अल्फ़ी ने एक-एक शब्द को चबाते हुए कहा।

और ये सुनते ही परिधि के डरे हुए चेहरे से और भी हवाईयॉ॑ उड़ने लगीं उसने अपनी डरी हुई ऑ॑खें और भी फैलाई और तेजी से सिर हिलाकर अपनी सफाई देते हुए बोली, "नहीं! नहीं! नहीं! मैं इसके बारे में कुछ भी नहीं जानती। हम सबको तो हेममाया के कल्परूप आने के बाद ही उसके गर्भवती होने का पता चला था। माया तो ये सुनकर घबराई भी थी। इसलिए वो हेममाया को उसी समय मार देना चाहती थी। मैंने माया को इसके लिए मना भी किया था, पर वो अपनी जिद पर अड़ी हुई थी। पर बाद में उसने ऐसा करने का इरादा छोड़ दिया। बाद में मुझे पता चला कि... उसने एडवर्ड के कहने पर ऐसा किया था। उसे हेममाया का बच्चा चाहिए था।"

परिधि का जवाब सुनने के बाद अल्फ़ी की ऑ॑खें एकदम से सुलगी थीं। उन ऑ॑खों में जैसे गर्म लावा उबल रहा था और उसकी तपिश परिधि खुद पर महसूस कर भी रही थी।

"अपने भोलेपन की आड़ में तुमने बहुत कुछ बर्बाद कर दिया है परिधि। कोई इतना मजबूर... लाचार कैसे हो सकता है? तुम्हारी आत्मा तुम्हें धिक्कारती नहीं है। सब करने के बाद अपना मासूम सा चेहरा सबके सामने रख देती हो। सच तो यही है कि अगर तुम मदद नहीं करती तो वो कुछ नहीं कर सकते थे... कम से कम इतना बुरा तो नहीं। और इतना ग़लत करने के बाद तुम अब मुझसे ये कह रही हो कि तुमने मेरी बेटी खो दी। मेरी माया ने उसकी हिफाजत के लिए अपनी जान दे दी और तुमने उसे खो दिया। ऐसा कैसे कर सकती हो तुम?" अल्फ़ी उसे बुरी तरह से झिंझोड़ते हुए बोला, जो गुस्से की शिद्दत से खुद ही कॉ॑पने लगा था।

अल्फ़ी की ऐसी हालत देखकर सभी उसकी ओर दौड़े मगर किसी की कोशिश से कोई हल नहीं निकला।

"अनामिका!" चैतन्य ने उसे पुकारा।

चैतन्य की आवाज सुनकर अनामिका की समझ जैसे वापस लौटी। वो तेजी से दौड़कर अल्फ़ी के पास आई। उसके पास आते ही सभी ने अल्फ़ी को छोड़ दिया। अनामिका ने आगे बढ़कर परिधि की बांह में कसे अल्फ़ी के हाथ पर अपना हाथ रखा और अल्फ़ी ने एकदम से ही उसके हाथ की ओर देखा। फिर उसकी नज़रें मुड़ी और अनामिका की याचना भरी ऑ॑खें उसके सामने थीं। अनामिका ने इंकार में अपना सिर हिलाया, जिससे अल्फ़ी की पकड़ परिधि पर से कमजोर हुई और अगले ही पल उसने उसे छोड़ दिया, जिससे परिधि वापस बिस्तर पर गिर पड़ी। अल्फ़ी अपने कठोर चेहरे पर भी उभरते हुए दर्द को छिपाते हुए कमरे से बाहर की ओर भागा। अनामिका भी सब पर एक-एक नज़र डालकर उसके पीछे लपकी थी। अनामिका को उसके पीछे जाते देखकर वरूण भी उनके पीछे भागने को हुआ, जिस पर चैतन्य ने फुर्ती से उसकी कलाई पकड़कर उसे रोका।

"नहीं! अभी नहीं!" चैतन्य ने कहा।

"पागल हो गए हो! उसने अनामिका के साथ कुछ बुरा किया तो.. !" वरूण तमककर बोला।

"अनामिका को नुक़सान पहुॅ॑चाने से पहले वो खुद को नुक़सान पहुॅ॑चा लेगा। उन्हें जाने दो! उसे बस अनामिका ही संभाल सकती है।" चैतन्य ने अपनी यकीन भरी आवाज में कहा। वहॉ॑ मौजूद सभी ने आश्चर्य से चैतन्य की ओर देखा, जिसके चेहरे पर एक अनचाहा दर्द उभर आया था। आशुतोष जो बहुत कुछ समझ चुका था, उसने आगे बढ़कर चैतन्य के कंधे पर हौसला भरा हाथ रखा। चैतन्य ने उनकी ओर देखा और उनके हाथ पर अपना हाथ रख दिया।
उधर परिधि... बिस्तर पर औंधी पड़ी जोर-जोर से सुबक रही थी। सभी उलझे हुए हालातों में एक-दूसरे की ओर देख रहे थे। सवाल अभी भी कई थे और उनके जवाब दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहे थे। चैतन्य आराम से चलता हुआ परिधि के पास पहुॅ॑चा और फिर उसके पास बैठ उसके सिर पर हाथ फेरने लगा। परिधि ने अपना सिर उठाकर उसकी ओर देखा और वहॉ॑ अपने लिए थोड़ी हमदर्दी पाकर वो और भी फफक-फफक कर रो पड़ी।

"तुम्हारे रोने से कुछ भी सही नहीं हो जाएगा परिधि। अल्फ़ी के दर्द का तुम अंदाजा भी लगा सकती हो क्या? माया और एडवर्ड के फितूर और तुम्हारी बुजदिली ने उसे किस कदर बिखेरकर रख दिया है... हम सब से छिपा हुआ नहीं है ये। सच बोलूं तो वो तुम्हारी जान भी ले ले.. तो भी हम में से कोई भी उसे दोष नहीं देगा।" चैतन्य ने लरजती हुई आवाज में कहा।

"मुझे पता है और अगर वो मुझे मार भी दे... तो भी मेरे गुनाह कम नहीं होंगे। पर सच मानो! हालांकि मुझे देर हो गई... पर मैं पहले वाली परिधि नहीं हूॅ॑। अगर होती तो.. अल्फ़ी को उसकी बेटी के बारे में बिल्कुल भी नहीं बताती। मैं बताती नहीं तो... आप सबको पता कैसे चलता? पर मैं अपने सारे गुनाह कबूल कर लेना चाहती हूॅ॑। चाहे उसकी सजा कितनी भी ख़ौफनाक क्यों ना हो? अगर उस दिन उस माया को रोकने के लिए मैं आप सबके पीछे नहीं आती... तो सच मानिए... ये राज अल्फ़ी पर 200 साल पहले ही खुल गया होता। पर इस समयद्वार ने ही सब गड़बड़ कर दी।" परिधि ने अपने गुनाहों पर पछताते हुए कहा।

"हॉ॑! याद आया! तुम भी हमारे साथ समय द्वार के अंदर आई थी। मेरे ध्यान से ही उतर गई ये बात। हमने तो वो द्वार तोड़ दिया था... जिससे माया बाहर नहीं निकल पाई। तो तुम कैसे बाहर आई? क्या तुम वापस लौट गई थी और किसी और समयद्वार से बाहर आई?" चैतन्य ने सवालों की झड़ी लगाते हुए कहा।
"नहीं! मैं वापस नहीं लौटी थी। मैं माया को रोकना चाहती थी और आप दोनों से भी कुछ जरूरी बात करनी थी। इसलिए मैं पीछे ही आई थी। सीढ़ियॉ॑ चढ़ने के बाद जब मैं आखिरी सीढ़ी की ओर बढ़ ही रही थी, तब मैंने दूर माया को एक नीली रोशनी के सामने खींचतान करते देखा और फिर वो तेजी से उस रोशनी के अंदर खिंच गई।" परिधि ने याद करते हुए कहा।

चैतन्य को याद आया कि किस तरह माया ने समयद्वार से उसे अंदर खींचने की कोशिश की थी और फिर अनामिका ने चालाकी से उससे पीछा छुड़ाते हुए वो दरवाजा ही तोड़ दिया था।

"इसका मतलब कि तूम हमारे पीछे ही थी। पर तुम फिर बाहर कैसे आई? वो भी आठ दिन पहले!" चैतन्य ने परिधि के वर्तमान में आने वाले दिन का अनुमान लगाते हुए कहा।

"मुझे नहीं पता। जब मैंने माया को उस नीली रोशनी में अंदर खिंचते हुए देखा तो मैं झटके से सबसे ऊपरी सीढ़ी पर रूक गई और मेरे रूकते ही मेरे सामने भी उसी तरह की नीली

रोशनी फैल गई। मैंने हैरानी से उस नीली रोशनी को छुआ तो मेरा हाथ उसके अंदर चला गया। मुझे समझ आ गया कि ये दरवाजा था। मैंने उस रोशनी के अंदर अपना चेहरा घुसाया तो मैंने दूसरी ओर घोर अंधकार के बीच एक खंडहर देखा। मैं तुरंत ही उससे बाहर निकली। अभी मैं इस बारे में सोच ही रही थी कि तभी मैंने सामने उस रोशनी को बिखरते देखा। मैं कुछ समझ पाती इससे पहले ही वो किसी कॉ॑च की तरह दरकने लगा। मुझे उस समय बस यही समझ आया कि शायद वो दरवाजा टूटकर खत्म हो रहा है, इसलिए मैं उन टूटे हुए कॉ॑च के बीच से किसी तरह जगह बनाती हुई दूसरी ओर निकल आई। सामने दिखाई दे रहे खंडहर की ओर मैं बढ़ी ही थी कि तभी मेरे पीछे जोर से धमाका हुआ और मैं हवा में जोर से उछली। बस उसके बाद मुझे कुछ याद नहीं रहा। अभी थोड़ी देर पहले डॉ॑ अनंत जब मुझे अल्फ़ी के पास ले गए, तब ही मुझे पुरानी सारी बातें याद आईं।" परिधि ने अपने भविष्य में आने की सारी कहानी बताते हुए कहा।

"कुछ समझ में नहीं आया!" अंकित ने उलझी हुई आवाज में कहा।

"क्या?" वरुण ने पूछा।

"यही कि परिधि आठ दिन पहले कैसे आई?" अंकित ने अपना सवाल स्पष्ट करते हुए कहा।

"पर मुझे समझ में आ गया।" चैतन्य ने कहा, जिससे सभी की नज़रें उसकी ओर मुड़ी थीं।

"अनामिका ने 20 सीढ़ियॉ॑ बनाई थीं। हर दस साल के लिए एक सीढ़ी और 20 वीं सीढ़ी ठीक 200 साल बाद खत्म हो रही थीं। ये वही दिन था, जिस दिन अनामिका और वरूण को परिधि मिली थी।
उन सीढ़ियों के बाद 200 साल से आठ दिन आगे आने के लिए आठ कदम के बाद एक दरवाजा बना था और उस दरवाजे से ही हम दोनों आज के दिन में वापस आए। क्योंकि माया हमारे पीछे लगी थी, इसलिए उसे बाहर आने से रोकने के लिए अनामिका ने बाहर निकलने का वो दरवाजा तोड़ दिया। यहॉ॑ तक बात समझ में आई।" चैतन्य ने सबकी ओर देखते हुए कहा, जिस पर सभी ने अपना सिर हॉ॑ में हिलाया।

"इस समय द्वार की यही खासियत है कि लगातार चढ़ते हुए जहॉ॑ आप रूके... आपके सामने आगे जाने का रास्ता बंद हो जाएगा और बाहर निकलने के लिए दरवाजा सामने आ जाएगा। अब परिधि की बात करें तो उसने बताया कि वो आखिरी सीढ़ी पर आकर रूक गई यानि कि ठीक 200 साल और फिर उसके सामने वो दरवाजा आ गया। अब अनामिका
ने बाहर निकलने का रास्ता जब तोड़ा, तब शायद वो बाहरी दरवाजा भी टूट गया होगा, जिसके सामने परिधि खड़ी थी। चूंकि परिधि को इस ओर आना था, तो वो उस टूटते हुए दरवाजे से इस तरफ आई और फिर पूरी तरह नष्ट होने से पहले उस दरवाजे में धमाका हुआ होगा, जिससे परिधि की याददाश्त पर असर हुआ होगा। उसके बाद की कहानी सबको पता है।" चैतन्य ने सबको समयद्वार की अवधारणा स्पष्ट करते हुए कहा और उस कमरे में मौजूद सभी लोगों को परिधि के आठ दिन पहले पहुॅ॑चने की कहानी समझ में आ गई।

"पर एक सवाल और है।" मुकुल ने कहा।

"अब क्या है?" चैतन्य ने पूछा।

"यही कि तुम दोनों यहॉ॑ बाहर निकले और.... परिधि उस खंडहर में। ऐसा क्यों? मतलब कि परिधि आठ दिन पहले इसी कमरे से बाहर क्यों नहीं निकली?" मुकुल ने अपने सवाल को स्पष्ट करते हुए कहा।

उसका सवाल सुनकर एकबारगी चैतन्य भी सोच में डूब गया। सबकी नज़रें जवाब की तलाश में उसकी ओर उठी हुई थीं। कुछ देर के गहरे विचार के बाद चैतन्य ने कहा, "शायद इसलिए... क्योंकि अनामिका ने समयद्वार से बाहर निकलते समय 'घर' कहा था, जो हमारे लिए यहॉ॑ था और परिधि के लिए वो खंडहर।"

और इस बार उन सभी को काफी कुछ समझ में आ गया था।

"बाप रे! ये समयद्वार है कि भूल-भुलैया! समझ से परे!" अंकित ने हैरानी जताते हुए कहा।

"इसलिए तो कहा जाता है कि समय से नहीं खेलना चाहिए!" आशुतोष ने
अंकित की बात का समर्थन करते हुए कहा।

"और मुझसे यहीं पर ही तो.... सारी गड़बड़ हुई। अनामिका दी ने जब मेरे जमीर को लताड़ा... तब मैंने उनसे कहा था कि मैं अब कुछ और गलत नहीं होने दूंगी(भाग - 82)। इसलिए हेममाया के शरीर और उस बच्ची को बचाने के लिए मैं तुरंत गई थी। उस बच्ची को पकड़े हुए मैं आगे के बारे में सोच ही रही थी कि तभी दरवाजे के पास किसी की आहट सुनकर मैं घबरा गई और दीवार से टिक गई और उसी समय वो समयद्वार खुला था, जब वो बच्ची मेरे हाथ में थी। मुझे कुछ और समझ में नहीं आया तो उस बच्ची को लेकर में समयद्वार में घुस गई। उसके बाद बच्ची को उस जंगल में रखने के बाद जब मैंने हड़बड़ी में कुछ सीढियॉ॑ नीचे उतरने के बाद ऊपर देखा तो वो दरवाजा गायब हो गया था और उस समय मुझे याद आया कि मैं सीढ़ियों की गिनती भूल गई थी। ऊपर जाने के बाद भी मुझे वो दरवाजा फिर नहीं दिखा। इतनी बड़ी ग़लती होने के बाद जब मैं वापस लौटी तो हेममाया का शरीर भी गायब था। मैंने सब तरफ देखा, वो वहॉ॑ कहीं नहीं था। मैं उसी बदहवासी की हालत में बाहर निकली तो अल्फ़ी ने मुझे पकड़ लिया(भाग -98)। उसके बाद तो मुझे और कुछ बताने का मौका ही नहीं मिला और वो माया मुझे वहॉ॑ से उठाकर एडवर्ड के पास ले गई, जहॉ॑ से अमांडा ने मुझे बाहर निकाला था। उसके बाद मैं किसी तरह समयद्वार तक पहुॅ॑ची और फिर आप दोनों को बचाने के चक्कर में माया के साथ समयद्वार में गिर गई। मुझे सच में याद नहीं है कि मैंने उस बच्ची को किस सीढ़ी पर छोड़ा था।" परिधि ने पूरी कहानी बताते हुए कहा और फिर दुख और पाश्चातय से सिर झुकाकर रोने लगी।

उसकी बात सुनकर सभी को एक बार फिर से उसके लिए अफसोस हो ने लगा। वास्तव में किसी को भी समझ में नहीं आ रहा था कि उसके लिए अपने दिल में कौन सी भावना रखें। जब अतीत की काली कहानी पर नज़र डालते, तो परिधि के गुनाह भी उतने ही काले दिखाई देते... और जब वो मुॅ॑ह खोलती तब... ऑ॑सुओं की धार सब कालिख धोकर ले जाती।
"आप सब एक और बात पर ध्यान नहीं दे रहे हैं।" सभी को भावनाओं के समुंदर से बाहर निकालते हुए सृष्टि ने कहा।

"और वो क्या?" वरूण ने पूछा।

"परिधि उस बच्ची को जहॉ॑ भी छोड़कर आई थी, वहॉ॑ उस पर कोई खतरा तो नहीं आ गया होगा।
मतलब कि वो जंगल था। उसके रोने की आवाज सुनकर कोई जंगली जानवर..." आगे की बात सृष्टि ने एक भययुक्त सवाल के साथ अधूरी छोड़ दी थी।

"हे भगवान! कहीं ऐसा तो नहीं कि वो अब हो ही ना!" मुकुल ने सृष्टि की बात आगे बढ़ाई।

"नहीं! नहीं! ऐसा मत कहो! मैंने उसके गले में उसकी मॉ॑ की सुरक्षा डाली थी। उसकी मॉ॑ का पेंडेंट, जिससे वो दोनों ही जुड़ी हुई थीं।" परिधि ने हड़बड़ाकर कहा।

"कैसा पेंडेंट?" वरूण का सवाल आया।

"उस पेंडेंट में नीले रंग का एक नग जड़ा हुआ था, जो कभी-कभी अंधकार में बहुत ही तीव्रता से चमकता था। वास्तव में वो पहली चीज थी, जो हेममाया ने अपने जादुई ताकत से बनाई थी। उसका रंग पहले सफेद था, जो हेममाया की शक्तियों के समावेश के साथ ही नीले रंग में बदल गया था। जब बच्ची को मैंने छोड़ा, तो वो पेंडेंट उसके गले में डाल दिया था।" परिधि ने जैसे खुद को आश्वस्त करते हुए कहा।

"पर अगर ऐसा नहीं हुआ हो और रोने की वजह से किसी जंगली जानवर ने उसे नुकसान पहुॅ॑चा दिया हो तो!" वरूण ने अगली समस्या सामने
रखी।

"ऐसा नहीं हो सकता... क्योंकि कोई भी उसे रोते हुए नहीं सुन सकता था।" परिधि ने बताते हुए कहा।

"और वो क्यों?" चैतन्य ने पूछा।

"क्योंकि... वो बेआवाज थी।"

"बेआवाज थी! क्या मतलब कि... बेआवाज थी!" आशुतोष ने चौंककर पूछा।

"शायद उसका मतलब है कि... बच्ची बोल नहीं सकती थी।" वरूण ने बात साफ करते हुए कहा।

"ओए अकल के क़ातिल! ये कैसे पता चल सकता है कि चार दिन की बच्ची बोल सकती है या नहीं? इतने छोटे बच्चे तो बस रो सकते हैं।" आशुतोष ने वरूण को लताड़ते हुए कहा।

"और उसके... रोने से ही तो माया को परेशानी थी।" परिधि ने धीमी आवाज में कहा।

"परेशानी थी! क्या मतलब कि परेशानी थी?" सृष्टि ने अपने माथे पर बल डालते हुए पूछा।

"बच्ची थी... तो रोएगी ही। पर माया को उसका रोना बहुत खलता था। इसलिए..." कहते हुए परिधि चुप पड़ गई।

उसके हवाइयॉ॑ उड़ते चेहरे को देखकर सभी की त्यौरियॉ॑ चढ़ी थीं। परिधि की अधूरी बात ने उन सबको अंदर से कहीं परेशान किया था और ना
चाहते हुए भी दिमाग में एक बार फिर कुछ गलत होने का ख्याल आ गया था।

"प्लीज़ परिधि! ये मत कहना कि... तुम सबने उस मासूम बच्ची के साथ कुछ ग़लत किया था।" मुकुल ने उसकी ओर देखकर तड़पती हुई आवाज में कहा।

"मैंने... मैंने कुछ नहीं किया। इस बार सच में मैंने कुछ नहीं किया था।" परिधि ने घबराते हुए अपनी सफाई दी।

"इस बार तुमने कुछ नहीं किया... मतलब कि माया ने कुछ किया। क्या किया? क्यों किया?" अंकित ने अपनी ऑ॑खों में ख़ौफ भरकर पूछा।

परिधि ने उन सबकी ओर देखा, जो अपनी ऑ॑खों में अफसोस की चादर लपेटे हुए गुस्से को भरकर उसी की तरफ देख रहे थे। उन सबकी नज़रों की चुभन परिधि खुद पर महसूस कर रही थी। आत्मग्लानि की आग वैसे भी उसे अंदर से हर पल जला रही थी और अब बाहरी हमलों ने उसे पस्त कर दिया। उसकी नम ऑ॑खें भागते-भागते अतीत के एक दरवाजे के पीछे चली गईं।

200 साल पहले -

उस मौत जैसे मनहूस कैदखाने में जैसे जिंदगी एक बार फिर से लौटकर आ गई थी। उसे इस दुनिया में आए अभी एक दिन भी नहीं गुजरा था।
उसका गोरा रंग उसकी मॉ॑ की तरह गुलाबी रंगत लिए हुए था। काली ज़हीन ऑ॑खें अभी से ही बड़ी-बड़ी दिखाई दे रही थीं। गुलाबी होंठ भी कुछ कहने को आतुर दिखाई दे रहे थे। वो अपनी मॉ॑ की गोद में लेटी हुई उसे एकटक देख रही थी, जैसे उसे पहचानने की कोशिश कर रही हो। उसे खुद को ताकते हुए देखकर हेममाया के थके हुए होंठों पर भी एक मुस्कान आई और उसने उसका माथा चूम लिया। सात महीने इस घुटनभरी क़ैद में गुजारने के बाद उसे लगने लगा था कि वो अपनी संतान को देखने के लिए भी जिंदा नहीं बचेगी, पर किसी चमत्कार की तरह वो जीवित थी। मगर इतने कमजोर शरीर में प्रसूति के बाद लगातार होने वाले रक्तस्राव ने उसे और भी कमजोर कर दिया था। वो इतनी कमजोर हो चुकी थी कि अब सॉ॑से लेना भी उसे तकलीफ़देह लगने लगा था। ऊपर से तकलीफ़ ये कि... उसकी नवजात बच्ची के लिए पर्याप्त दूध भी नहीं हो रहा था, जिससे वो भूख की वजह से रह-रहकर रो रही थी। हेममाया उसे चुप कराने की हर

[illegible]

"[illegible]! [illegible]? [illegible]! [illegible]? [illegible]! [illegible]! [illegible]! [illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible].." [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

इत्मीनान से बाहर जाने लगी कि तभी हेममाया की आवाज ने उसके पैर रोक दिए।
"बहुत इतरा रही हो ना! हमारी बेबसी पर! लेकिन याद रखना! मासूमों की आहें कभी बेकार नहीं जाती। मेरी बद्दुआ है तुझे! जिस ताकत को पाने के लिए तुम दोनों ने हमारा हॅ॑सता- खेलता परिवार बर्बाद कर दिया... वो तुम दोनों को कभी हासिल नहीं होंगी। मैं भले मर ही क्यों ना जाऊं... पर मेरी आहें किसी को खींचकर जरूर लाऍ॑गी, जो तुम दोनों के हर मंसूबे को मिट्टी में मिलाकर रख देगा। इंतजार करना। तुम्हारा हश्र दुनिया याद रखेगी। तुझे ना मौत आएगी और ना तू कभी जी पाएगी। तेरी आत्मा को भी कभी शांति नहीं मिलेगी। एक मॉ॑ का श्राप है ये!"

माया ने मुड़कर उसकी ओर देखा और फिर एक मक्कारी भरी मुस्कान के साथ वो बाहर निकल गई। रोमा और मार्गरेट भी परिधि को खींचते हुए बाहर ले गए।

वर्तमान में -

जोर-जोर से हिचकियॉ॑लेती हुई परिधि अपनी बात खत्म करते-करते बेहाल हो चुकी थी। कमरे में फिर से सन्नाटा पसरा चुका था। सभी ने इस बात के लिए ऊपर वाले का शुक्र अदा किया कि ये सब सुनने के लिए अल्फ़ी यहॉ॑ नहीं था।

चैतन्य ने अपनी ऑ॑खें पोंछी और बोला, "बहुत देर हो गई। मैं देखता हूॅ॑ कि ये दोनों कहॉ॑ हैं?
और फिर वो तेजी से बाहर की ओर निकल गया।

****

गुस्से में उबलता हुआ अल्फ़ी ना जाने घर के किस कोने में जाकर छिप गया था। अनामिका ने घर का कोना-कोना छान मारा। उसे ढूंढने में बहुत देर हो गई थी, मगर वो नहीं मिला।

"कहॉ॑ चला गया होगा ये?" अनामिका ने जैसे खुद से ही सवाल किया और फिर कुछ सोच कर बालकनी की ओर चली गई। वही एक जगह थी, जहॉ॑ वो नहीं गई थी और वो वहीं था। सामने रात का अंधेरा सुबह की लालिमा के साथ घुलने लगा था। वो रेलिंग पर अपने दोनों हाथ टिकाए एकटक रात और सुबह के इस मिलन को देख रहा था। अनामिका धीमे कदमों से चलती हुई उसके पास गई और वो भी उसके पास रेलिंग को पकड़ कर सामने की ओर देखते हुए खड़ी हो गई।

"क्या देख रहे हो?" अनामिका ने पूछा।

"हेममाया को बहुत पसंद था ये नजारा! इसे देखने के लिए वो मुॅ॑ह अंधेरे उठ जाया करती थी। मुझे कभी समझ में नहीं आया कि उसे इसमें क्या अच्छा लगता था?" अल्फ़ी ने सामने धुंधलाते हुए अंधकार की ओर देखते हुए कहा।

"उम्मीद! सामने एक उम्मीद नजर आ रही है। ये उम्मीद कि... रात कितनी
भी गहरी और काली हो... सुबह रोशनी लेकर जरूर आती है।" अनामिका ने सामने फैले दृश्य के मायने अल्फ़ी को समझाते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी एक फीकी और बुझी सी हॅ॑सी हॅ॑सा और फिर दर्द को अपने चेहरे पर रख कर बोला, "पर मेरे जैसे लोगों की किस्मत में सुबह की उम्मीद नहीं होती। क्योंकि... हमारे हिस्से की हर सुबह खो जाती है और रह जाता है खुशियों तक की आत्मा को चूस लेने वाला अंधेरा। मैं जानता हूॅ॑.... मेरे हिस्से की सुबह कभी नहीं आएगी।"

"इतनी नाउम्मीदी वाली बातें मत करो अल्फ़ी! सबके हिस्से में एक सुबह होती है। तुम्हारे हिस्से में भी होगी।" अनामिका ने उसे हौसला देते हुए कहा।

"पहले मुझे भी यही लगता था। पर कुछ देर पहले जो अंदर सुनकर आया.... उसके बाद ये झूठी उम्मीद छोड़ दी मैंने।" अल्फ़ी ने अपने हथियार डालते हुए कहा।

"हम उसे ढूंढ लेंगे अल्फ़ी!" अनामिका ने अल्फ़ी के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

"पर अब मैं ऐसा नहीं चाहता।" अल्फ़ी ने रूंधे हुए गले से कहा।

"ऐसा क्यों बोल रहे हो?" अनामिका ने हैरत भरी आवाज में कहा।

"मैं नहीं चाहता कि मेरी मनहूस जिंदगी का साया भी उस पर पड़े। वैसे भी जो मुझे छोड़कर चला गया... वो फिर कभी वापस नहीं लौटा।" अल्फ़ी ने अपने दर्द को ज़बान देते हुए कहा।

"प्लीज़! ऐसा मत कहो!" अनामिका ने भी उसके दर्द का अहसास करते
हुए भरी हुई आवाज में कहा।

"क्यों? क्या तुम वापस लौटोगी मेरे पास? बोलो?" अल्फ़ी ने अनामिका की ओर पलटते हुए जज़्बाती लहजे में कहा। उसकी ऑ॑खों में मौजूद सवाल अनामिका का दिल भेद रहे थे और वो उसकी तकलीफ़ से खुद को बचाने की नाकाम कोशिश में लगी थी। अल्फी के इसी सवाल का तो जवाब नहीं था उसके पास। उसे खामोश देखकर अल्फी के होठों पर एक तंज भरी मुस्कराहट आई और एक बार फिर... वो उसी तरह सामने की ओर देखने लगा।

उन दोनों को ढूंढते वहॉ॑ पहुॅ॑चा हुआ चैतन्य उन दोनों की बातें सुनकर ठिठक गया था और फिर अल्फ़ी के सवाल और अनामिका की ख़ामोशी उससे कई बातें कह गई। उसने भी सामने की ओर देखा। सूरज निकल रहा था। सुबह हो रही थी।

(कोई रोएगा नहीं! सुबह होने वाली है।)

अनामिका, अल्फ़ी को उसी बालकनी में छोड़कर चैतन्य के साथ वापस आ गई। अनामिका को जब बच्ची के ऊपर हुई ज्यादती के बारे में पता चला, तो वो अल्फ़ी के दर्द को और भी महसूस करने लगी। पिछली रात सभी के लिए क़यामत की तरह गुजरी थी, जहॉ॑ सबके अपने-अपने दर्द थे और इन सबके बीच अल्फ़ी के दर्द का अंदाजा लगाना किसी के लिए भी नामुमकिन था।

सृष्टि और मुकुल दोनों ही अलग-अलग अपने घर की ओर निकल गए। अंकित भी दोपहर में आने की बात करके घर की ओर निकल गया। बहुत कुछ था जो आज रात तक पाना बहुत जरूरी था। सभी कड़ियॉ॑ बिखरी
हुई थीं, जिन्हें जोड़ने से ही कई जवाब मिलने थे।

फिलहाल चैतन्य और अनामिका की हालत ज्यादा सही नहीं लग रही थी और परिधि भी मानसिक और शारीरिक दोनों रूप से थक चुकी थी। डॉ. अनंत और वरूण ने चैतन्य और अनामिका दोनों का अच्छी तरह से परीक्षण किया, ताकि उन्हें आराम करने से पहले सही दवा दी जा सके।

"आऊ!" अनामिका जोर से चीखी, जब वरूण ने परीक्षण करते समय उसकी एक बांह को पकड़ा।

"क्या हुआ?" वरूण घबराकर अनामिका के चेहरे की ओर देखते हुए बोला, जहॉ॑ दर्द माथे की शिकन के साथ मौजूद था। वरूण के साथ-साथ बाकी सब भी उसकी चीख से घबराए थे।

"उसकी बांह में चोट लगी है। खंज़र लग गया था।" जवाब चैतन्य ने दिया जो डॉक्टर आनंद से अपने हाथों के चोटों की ड्रेसिंग करवा रहा था।

"क्या? खंज़र!" वरुण ने ऑ॑खें फैला कर कहा और फिर तेजी से अनामिका की उस बांह की आस्तीन ऊपर चढ़ानी चाही।

"वरूण! ध्यान से!" अनामिका दर्द से तिलमिलाई।

"तुम भी ना! ये तो खून के साथ सूखकर चिपक गया है।" वरूण ने जख्म की ओर ध्यान से देखते हुए कहा।

"उस कमबख़्त एडवर्ड ने किया ये!" अनामिका ने पुरानी बात याद करते हुए कहा। एडवर्ड का नाम लेते हुए जैसे उसका मुॅ॑ह कसैला हो गया था।

"तुमने भी तो उसके सीने में खंज़र उतार दिया था। कमीना! फिर भी...
मरा नहीं। जाने कैसे मरेगा?" चैतन्य ने भी कई पुरानी यादों के साथ कड़वाहट से कहा।

"तो तुम दोनों बचे कैसे?" इस बार उत्सुकता भरा सवाल आशुतोष ने किया था, जो गर्म पानी का प्याला लेकर आए थे। आशुतोष का सवाल सुनकर अनामिका और चैतन्य दोनों की ही नज़रें एक दूसरे की ओर उठी थीं।

"क्या हो गया?" दोनों को इस तरह एक दूसरे को ताकते देखकर वरूण ने पूछा।

"अल्फ़ी ने जान बचाई थी।" अनामिका ने कहा और फिर अपने ज़ख़्म को छूकर देखने लगी। वो अभी इस विषय में और कुछ नहीं कहना चाहती थी, मगर ना चाहते हुए भी ध्यान उसकी ओर चला ही गया था और इसी धुन में वो अपनी चोट के साथ लापरवाह हो गई।

"आह!" एक बार फिर से वो सिसकी।

"अनामिका! अपना हाथ हटाओ। मुझे करने दो। पहले ही बता देना था इसके बारे में। बेवकूफ लड़की! ना जाने ध्यान कहॉ॑ रहता है तुम्हारा?" चोट को गर्म पानी से धोने के बाद स्प्रिट से साफ करते हुए वरूण ने उसे डपटकर कहा।

"हॉ॑ भई! वो तो घर आने की खुशी में फुगड़ी खेल रही थी। इसलिए भूल गई तुम्हें बताना! बात करते हो!" चैतन्य ने कुढ़े हुए अंदाज में कहा।

वरुण ने भी उतनी ही कुढ़न के साथ उसकी ओर देखा और फिर अनामिका की ओर मुड़कर दॉ॑त पीसते हुए बोला, "अनु! सच कह रहा हूॅ॑.... मुझे ये लड़का बिल्कुल नहीं पसंद। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा है।
इससे दूर ही रहो तुम!"

"अ... ब... ह... हम्म!" अनामिका की ज़बान लड़खड़ाई थी।

वरूण ने उसका उलझा हुए लहजा सुनकर उसकी ओर देखा, जो अपने निचले होंठ को दॉ॑तों में दबाए हुए अपनी चोट की ओर देख रही थी, जिस पर वरूण अब बैंडेज लपेट रहा था।

"क्या हुआ?" वरूण ने पूछा, जिस पर अनामिका ने तेजी से इंकार में सिर हिलाया। उसकी अजीब हरकतें देखकर वरूण ने उस पर एक टेढ़ी नज़र डाली और फिर ऑ॑खों की पुतलियों को घुमाकर चैतन्य की ओर देखा, जिसे डॉ. अनंत इंजेक्शन लगा रहे थे। उसने अपने चश्मे के पीछे से सब कुछ जॉ॑चा-परखा और फिर उसने भी अनामिका को टिटनेस का एक इंजेक्शन लगा दिया। अनामिका, गीता के कमरे में ही परिधि और उसके साथ आराम करने के लिए चली गई। सुबह जब गीता की नींद खुली, तो उसे बहुत ही ज्यादा कमजोरी महसूस हो रही थी। इसलिए डॉ. अनंत ने उसे भी पूरी तरह से बेड-रेस्ट पर भेज दिया।

दो रातों और एक पूरे दिन की उठा-पटक के बाद थकी-हारी अनामिका कुछ देर सोने के लिए लेटी तो नींद उसकी ऑ॑खों से रूठी हुई थी। रह-रहकर अल्फ़ी उसके दिमाग में कौंध रहा था। उसकी वो बुझी हुई ऑ॑खें वो भुला नहीं पा रही थी, जो किसी भी तरह की उम्मीद से खाली हो चुकी थीं। वो भुला नहीं पा रही थी उन ऑ॑खों को भी.. जिन्हें अपने बेहद करीब उसने चमकते हुए देखा था। उसकी मुस्कराहट... उसका फिक्र करना... उसका गुस्सा... उसकी दीवानगी... उसका जूनून... सब उसके ख्याल में एक-एक करके आने लगे और फिर उसका चैन से सोना मुहाल हो गया। जब घुटन हद से ज्यादा बढ़ गई, तो वो कमरे से बाहर निकल आई और खुली हवा के लिए बालकनी की ओर बढ़ गई।
बालकनी के पास पहुॅ॑चते ही वो ठिठक कर रूकी क्योंकि... वहॉ॑ कोई पहले से ही मौजूद था।
उसने एक गहरी सॉ॑स ली और उसकी ओर बढ़ गई।

"तुम्हें भी नींद नहीं आ रही है?" अनामिका सवाल करते हुए उसके पास आकर खड़ी हो गई।

"हम्म! अब तो जब तक... सब ठीक नहीं हो जाता... नींद आने से रही। घर लौट आए... यही

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"मैं भूल गया था कि मेरे फूल सूख रहे हैं। अच्छा हुआ कि... तुमने याद दिला दिया।" चैतन्य ने बिना पलटे आगे बढ़ते हुए कहा।

"हुंह! देखा तुमने!" वरूण तिलमिलाया।

"वरूण!" अनामिका ने उसे टोका।

"हे अनामिका! एक बात याद रखना! दूसरों को खुश करने के लिए कभी अपने दिल से झूठ मत बोलना!" जाते हुए चैतन्य ने अचानक ही पलटकर कहा।

अनामिका ने एक पल उसकी बात पर ग़ौर करते हुए उसकी ओर देखा और फिर सहमति में अपना सिर हिला दिया। चैतन्य ने एक मुस्कुराहट के
साथ उसे देखा और फिर वहॉ॑ से चला गया। वरूण भौंचक सा खड़ा उन दोनों को बारी-बारी से देखता रहा।

"ये... अभी क्या कह कर गया?" वरूण ने चैतन्य के जाने वाली दिशा में ऊंगली दिखाते हुए कहा।

"वरूण! मैंने उसे हॉ॑ कह दिया है।" अनामिका ने बिना कोई समय गवाऍ॑ कहा।

"हॉ॑! किस बात के लिए हॉ॑!" वरूण ने ज़बान के साथ अपनी ऑ॑खों से भी सवाल किया।

"नहीं! दरअसल... मैंने हॉ॑ नहीं कहा। मैंने कल रात खुद चैतन्य से अपने दिल की बात कह दी और अब तुम भी इस चिकचिक को खत्म कर दो।" अनामिका ने उसकी ओर देखकर कहा और वो भी नीचे की ओर चली गई। वरूण उसकी बातों को सोचता खड़ा रह गया।

"हे भगवान! ये लड़का तो सच में ऑ॑खों से काजल चुराने में माहिर हैं। और देखो तो जरा... प्रपोजल एक्सेप्ट होते ही डेट पे भी कहॉ॑ ले कर गया? 200 साल पीछे अतीत में! वाह! क्या ही रोमांचक प्रेम कहानी है।" वरूण खुद का खुद में बड़बड़ाकर बोला और फिर वो भी नीचे की ओर चला गया।

****

अनामिका जब अल्फ़ी को छोड़कर वापस गई, तो उगते हुए सूरज को एक नज़र देखकर अल्फ़ी भी वहॉ॑ से निकल गया। जल्द ही वो फिर से अपने उसी अस्त-व्यस्त कमरे में था, जहॉ॑ वो हेममाया की यादों के साथ अपना समय बिताया करता था। पूरा कमरा जैसे सदियों से किसी की मेहरबानी की आस में था... बस एक कोने को छोड़कर, जहॉ॑ एक आराम कुर्सी रखी हुई थी। अल्फ़ी ने उसे बड़ी ही हसरत और प्यार से देखा और वो उसके पास गया और उस कुर्सी की पुश्त पर हाथ फिराने लगा। फिर उसने उस कुर्सी को आगे-पीछे करना शुरु किया... जैसे कि कोई उस पर बैठा हो।

"माया!" उसने पुकारा और फिर कुछ पलों की ख़ामोशी छाई रही।

"नाराज़ हो!" अल्फ़ी ने ही ख़ामोशी तोड़ी और फिर कुर्सी की पुश्त पर इस तरह से झुक गया, जैसे कि उस कुर्सी पर कोई बैठा हो और वो उसकी बात सुनने की कोशिश में झुका हो।

"अच्छा!" कहते हुए वो खड़ा हुआ और चारों ओर देखने लगा।

"बात तो सही है। पर तुम्हीं ने तो मुझे बिगाड़ा है। कोई काम नहीं करने दिया मुझे। अब तुम नहीं कर रही... तो देखो हमारे कमरे की हालत।" अल्फ़ी ने अपनी कमर पर हाथ रखकर चारों ओर फैले कबाड़, हर ओर जमी धूल की मोटी परत और जहॉ॑-तहॉ॑ लगे मकड़ी के जालों को देखते हुए कहा।

और फिर उसने पलटकर कुर्सी की ओर देखा, जैसे कि कुछ सुनकर चौंका हो और फिर बोला, "क्या सच में? तुम वापस आओगी मेरे पास! तुम बिल्कुल भी चिंता मत करो। मैं हमारे इस कमरे को बिल्कुल वैसा ही बना दूंगा, जैसे तुम रखा करती थी। तुम्हें कोई शिकायत नहीं होगी। मैं एक बार फिर से सब पहले जैसा चाहता हूॅ॑ माया। तुम्हारा इंतज़ार करते-करते मैं

[illegible] [illegible] [illegible] [

तभी दरवाजे पर हुई दस्तक से दोनों का ध्यान उनकी ओर चला गया। डॉ. अनंत की अनुमति से दरवाजा खुला और चैतन्य अंदर आया।
"चैतन्य! आओ! अच्छा हुआ कि तुम आ गए। बाकी सब कहॉ॑ हैं?" डॉ. अनंत ने चैतन्य को उत्साहित आवाज में कहा।

"अ.... परिधि और गीता तो आपकी निगरानी में हैं और अनामिका और वरूण फिलहाल तो ऊपर ही हैं।" चैतन्य ने नपे-तुले शब्दों में कहा।

"उन्हें बुलाओ। एक जरूरी चर्चा करनी है।" डॉ. अनंत ने कहा।

"जी!" कहते हुए चैतन्य ने अपना फोन निकाला और अनामिका को कॉल लगाते हुए वो पलटा ही था कि पीछे से आती हुई अनामिका उससे आ टकराई। दोनों ने ही खुद को संभाला ही था कि अनामिका के पीछे से नाराज़गी भरी आवाज आई।

"थोड़ा देखभाल कर काम किया करो।" अनामिका के पीछे खड़ा वरूण उसे नाक चढ़ाकर देख रहा था।

"सॉरी!" चैतन्य ने भी मखमल में लिपटे पत्थर की तरह उसकी ओर शब्द उछाला।

"ओह गॉड! नॉट अगेन!" अनामिका हल्की झल्लाहट के साथ उनके बीच से हटकर आशुतोष और डॉ. अनंत के पास चली गई। वरूण भी अपनी नाक पर चश्मा ठीक करते हुए चैतन्य की बगल से गुजर गया। चैतन्य ने मुॅ॑ह बिगाड़ते हुए दरवाजा बंद किया।

"आप कुछ कह रहे थे।" अनामिका ने कहा।

"हॉ॑! तुम सब जानते हो कि आज रात सतवृक्ष हमारे की सवालों के जवाब हमें देने वाला है। हालांकि अल्फ़ी से जुड़े सवाल अब सुलझ चुके हैं, पर
उस एडवर्ड के बारे में हमें अभी भी ज्यादा जानकारी नहीं है। मुझे उम्मीद है कि हमारी सहायता करने लायक जवाब हमें मिल जाऍ॑। मगर इससे पहले... यदि तुम सबके मन में कोई सवाल है तो तुम उसे पूछ सकते हो और अपनी राय सबसे साझा कर सकते हो। इस मिशन पर आगे बढ़ने के लिए सभी का एकराय होना बहुत जरूरी है। आशुतोष जी और मैं यही बातें कर रहे थे।" डॉ. अनंत ने सबकी ओर देखते हुए कहा।

उनकी बात सुनकर सभी ने एक-दूसरे की ओर देखा और फिर डॉ. अनंत की ओर देखने लगे। सवाल तो कई मन में कुलबुला रहे थे और उनका जवाब भी उनके लिए जरूरी था।

"इतनी सारी किताबें!" सबसे पहले अनामिका ने ही कहा।

"हॉ॑! आशुतोष जी के मन में भी कई सवाल थे.. तो हम उनके जवाब ढूंढ रहे थे।" डॉ. अनंत ने उन किताबों की ओर देखते हुए कहा।

"मैं एक सवाल पूछूं!" वरूण ने अपना हाथ उठाकर कहा, जिससे सभी का ध्यान उसकी ओर गया।

"पूछो!" डॉ. अनंत ने कहा।

"ये समयद्वार मेरी समझ में आया नहीं। मतलब कि हेममाया ने तो छलद्वार बनाया था ना! फिर... उसकी बेटी के छूने भर से वो समयद्वार में बदल गया... और आप सबको ये नहीं लगता कि... उस समयद्वार ने भी बहुत अजीब तरीके से काम किया था।" वरूण ने अपना सवाल सामने रखा।

"क्योंकि वो समयद्वार किसी योजना के अनुसार नहीं बनाया गया था। हेममाया ने तो उस कैद से बाहर निकलने के लिए छलद्वार बनाया था। उसका इरादा समयद्वार बनाने का नहीं था। वो तो बस... बन गया। शायद
नियति ने ही भविष्य और अतीत के बीच एक पुल बना दिया था। और शायद इसलिए... उसने इस तरह अजीब सा व्यवहार किया होगा।" डॉ. अनंत ने एक अनुमान के साथ कहा।

"इसका मतलब तो यही है कि अल्फ़ी और हेममाया की बेटी भी उतनी ही ताकतवर रही होगी। तभी तो उसके छूने भर से ही छलद्वार समयद्वार में बदल गया।" आशुतोष ने पूछा।

"नहीं! ऐसा जरूरी नहीं है। छलद्वार को समयद्वार में बदलने के लिए वायु-रक्षक की नहीं.... बस वायु-तत्व की जरूरत होती है। अगर वो तत्व किसी वायु-रक्षक का हो, तो समयद्वार और भी मजबूत होता है। पर इसके लिए छलद्वार बनाने वाले जल-रक्षक का उस वायु तत्व या रक्षक से बहुत ही गहरा भावनात्मक संबंध होना चाहिए। जैसे कि वो दो अलग शक्तियॉ॑ ना होकर एक ही हों।" डॉ. अनंत ने समझाते हुए कहा।

ये सुनते ही चैतन्य के होंठों पर एक कुटिल मुस्कान आई और उसने एक चिढ़ाने वाली नज़र वरूण पर डाली, जहॉ॑ वो उतनी ही चिढ़ के साथ चैतन्य को ही देख रहा था। वरूण से नज़र टकराते ही चैतन्य ने शरारत से अपनी भौंहें नचाई, जिससे वो और भी कुढ़कर रह गया। अनुभवी आशुतोष की नज़र भी एक-एक करके दोनों की ओर गई और फिर अपने माथे को मसलते हुए उनके अंदर से एक ही आवाज आई, "इनका ये कोल्ड वॉर! जाने कब खत्म होगा?"

"तो क्या ये जरूरी नहीं है कि वो भी ताकतवर हो। पर अल्फ़ी और हेममाया दोनों ही ताकतवर थे... फिर तो उनकी संतान को भी ताकतवर होना चाहिए था।" चैतन्य ने हैरानी जताते हुए कहा।

"क्यों? ऐसा होना जरूरी क्यों है? हो सकता है कि वो ताकतवर हो... या फिर उतनी ताकतवर ना हो। मुझे समझ में ये नहीं आता कि आखिरकार
बच्चों की योग्यता को माता-पिता की योग्यताओं से क्यों तौला जाता है? आप सबको ऐसा नहीं लगता कि इस तरह से हम सब बच्चों की वास्तविक योग्यता पर अतिरिक्त दबाव डालते हैं और फिर बच्चे कमतरी के अहसास से डिप्रेस्ड होने लगते हैं। परिधि के साथ भी तो यही हुआ था। ठीक है कि उसकी शक्तियॉ॑ छीन ली गई थीं, पर उसे वो भी तो नहीं रहने दिया गया.. जो वो थी। तुम सबने देखा है कि उसका आयुष ज्ञान कितना समृद्ध है। मगर किसी ने उसकी इस प्रतिभा के साथ कभी भी न्याय नहीं किया... क्योंकि उसकी दुनिया में जादुई ताकत ही मायने रखती थीं। उसे खुद भी ये अहसास नहीं है कि जादू तो उसके हाथों में है। और ये सब उसकी नहीं... उसके चारों ओर फैले हुए संकुचित विचारों की गलती थी।" डॉ. अनंत ने तैश में आते हुए कहा, जिसे सुनकर सभी सकपका गए थे।

"आप सही कह रहे हैं। पर लोग इतनी सी बात नहीं समझते और ये दुनिया भी समझने नहीं देती है।" आशुतोष ने बहुत ही संभली हुई आवाज में कहा।

"यानि... आपका कहना ये है कि बिना किसी प्लानिंग के बने होने के कारण ही वो छलद्वार या फिर समयद्वार... जो भी था... ऐसा अजीब सा था... कि कहीं भी खुल रहा था।" अनामिका ने समझदारी दिखाते हुए बातों का रूख पलटते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर डॉ. अनंत ने उसकी ओर देखा और फिर हॉ॑ में सिर हिलाया और एक किताब उन सबकी ओर बढ़ा दी। सबने उस किताब के कवर पेज पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखे शब्दों को पढ़ा।

"जादुई द्वार और उनके रहस्य!"
"तो फिर... एक और सवाल का जवाब दीजिए कि ये तो समझ आ गया कि परिधि आज से आठ दिन पहले उस खंडहर में क्यों मिली? पर ये समझ में नहीं आया कि अनामिका ने तो आठ दिनों के बाद उस समयद्वार के दरवाजे को तोड़ा... तो फिर परिधि के लिए बना दरवाजा क्यों टूटा?" चैतन्य ने अपने दिमाग को मथते हुए सवाल को बाहर निकाला।

"क्योंकि किसी भी समयद्वार का एक ही प्रवेश द्वार और एक ही निकास द्वार होता है... बहुत सारे नहीं। वो समयद्वार... समय यात्रा करने वाले यात्री को उसके मनवांछित जगह पर छोड़ता है... उसी एक निकासी द्वार से।" डॉ. अनंत ने कहा।

"आपका मतलब है कि अनामिका और मैं जिस निकास द्वार से निकले... वही परिधि के लिए भी खुला था... मगर उसके लिए आठ दिन पहले और जब अनामिका ने उस इकलौते निकास द्वार को तोड़ा... तो परिधि के सामने बना दरवाजा भी टूट गया।" चैतन्य ने डॉ. अनंत की बात को समझते हुए कहा।

"सही समझे! चूंकि तुम दोनों ने उस समयद्वार से सबसे लंबी यात्रा की थी.. इसलिए अनामिका के द्वारा तोड़ा गया द्वार सबसे आखिरी था, जिससे बाकी पुराने सारे निकास

द्वार जुड़े हुए थे। अनामिका के तोड़ते ही वो निकास द्वार टूट गया और उसी के साथ पुराने सारे निकास द्वार भी।" डॉ. अनंत ने अपनी तर्जनी उंगली को झटका देते हुए कहा।

"इसका मतलब है कि अब उस समयद्वार में प्रवेश तो किया जा सकता है, पर बाहर नहीं निकला जा सकता। एम आई राइट?" अनामिका ने कहा।

"सही कहा! पर तुम चाहो तो उस टूटे हुए दरवाजे को फिर से बना सकती हो।" डॉ. अनंत ने अनामिका से कहा।
"वो कैसे?" अनामिका ने हैरत से पूछा।

"क्योंकि चाहे किसी भी तरीके से... पर उस समय द्वार को हेममाया ने ही बनाया था और यदि तुम्हारे अंदर उसकी आत्मा है... तो तुम उसे फिर से बना सकती हो। तुम्हें ये अधिकार प्राप्त है। पर हॉ॑... इसके लिए भी तुम्हें चैतन्य की मदद की जरूरत पड़ेगी। इतना समझ लो कि तुम दोनों की शक्तियॉ॑ अब एक-दूसरे से जुड़ चुकी हैं।" डॉ. अनंत ने अनामिका और चैतन्य दोनों की ओर इशारा करते हुए कहा, जिस पर एक बार फिर से चैतन्य ने बड़े ही गुरूर से वरूण की ओर देखा और वरूण अपने दॉ॑त पीसता रह गया। इस बार अनामिका की तरह आशुतोष ने भी उन दोनों की प्रतिक्रियाओं को नज़रअंदाज़ किया।

"पर आप तो हमेशा कहते थे कि आपको चैतन्य का वायु-रक्षक के रूप में चयन कभी भी समझ में नहीं आया।" वरूण ने चैतन्य की खुशियों पर पानी फेरने की कोशिश करते हुए कहा।

"हॉ॑ कहा था। पर मुझे इसका कारण अब समझ में आया... क्योंकि वायु-रक्षक के रूप में चैतन्य की शक्तियॉ॑ अतीत से ही जागृत थीं और वो वायु-रक्षक के रूप में अतीत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। इसलिए उसे वायु-रक्षक बनना ही था।" डॉ. अनंत ने कहा।

"आपका कहना ये है कि... इस चैतन्य ने भविष्य में दही खरीदकर अतीत में रायता फैलाया... बस इसीलिए इसे मीठी लस्सी... मेरा मतलब है कि इतनी बड़ी जिम्मेदारी मिल गई। गजब!" चैतन्य की ओर ऊंगली दिखाते हुए वरूण ने चिढ़ भरी आवाज में कहा।

"जैसा तुम समझो! अब जो हूॅ॑... वो हूॅ॑।" चैतन्य ने भी तपाक से जवाब दिया। एक बार फिर से वरूण चिढ़कर रह गया। वहीं आशुतोष की नज़र अनामिका के फीके पड़े चेहरे पर पड़ी। "क्या हुआ अनामिका? कोई परेशानी?" आशुतोष ने चिंता से पूछा।

"जी हॉ॑ आशुतोष जी! अगर वो दरवाजा टूट गया है... तो फिर हम अल्फ़ी की बेटी को कभी भी नहीं ढूंढ पाऍ॑गे।" अनामिका ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए कहा।

"वो परेशानी अलग है अनामिका! फिलहाल हमारे सामने जो समस्या मौजूद हैं... हमें उस पर ध्यान देने की जरूरत है। आज सतवृक्ष हमारे सामने कुछ नए राज़ खोल सकता है। आशा करो कि वो सब जानकारियॉ॑ हमारे काम की हों।" डॉ. अनंत ने अनामिका की चिंता को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा।

"जी!" मन मसोसकर अनामिका ने सहमति जताई।

"और ये सतवृक्ष आखिर है क्या? इसके बारे में भी कुछ बताइए।" आशुतोष ने अपना अगला सवाल सामने रखा।

"सतवृक्ष हमारी दुनिया की एक किंवदंती है। एक अलौकिक शक्ति। सत्य की शक्ति! पूरी दुनिया में वो बस एक ही पेड़ है। कहा जाता है कि उस वृक्ष के नीचे खड़ा शख़्स कभी झूठ नहीं बोल सकता है। बहुत समय पहले न्याय करने के लिए उसी वृक्ष का सहारा लिया जाता था। मगर धीरे-धीरे उसका प्रयोग इतना बढ़ गया कि सतवृक्ष ने साफतौर पर अपनी नाराज़गी दिखानी शुरू कर दी। फिर भी हमारी दुनिया वालों ने उसका बेवजह इस्तेमाल करना जारी रखा। इसलिए एक बहुत ही बड़े तांत्रिक ने अपनी शक्तियों के प्रयोग से उस वृक्ष को संचयनिधि घाटी की किसी कंदरा में भेज दिया और उसके बाद किसी ने भी उसे नहीं देखा।" डॉ. अनंत ने सतवृक्ष की जानकारी देते हुए कहा।
"तो आपका मतलब है कि कल रात हमने जिस सतवृक्ष का रोपण किया था... वो सच में नहीं है।" अनामिका ने संदेह के साथ पूछा।

"सही समझा! वो उस वृक्ष के रस सतांश से बना एक छद्म वृक्ष है.... बिल्कुल छद्म पिशाच

की तरह। दोनों ही भ्रम की एक स्थिति हैं। इसलिए तो उससे जवाब मिलने को लेकर मैं पूरी तरह से आश्वस्त नहीं हूॅ॑। बस उम्मीद रखता हूॅ॑... जो बेशक नाउम्मीदी से कहीं ज्यादा है।" डॉ. अनंत ने आशावादी दृष्टिकोण के साथ कहा।

"ओह! और ये संचयनिधि घाटी क्या है?" चैतन्य ने कौतूहल के साथ पूछा।

"संचयनिधि घाटी! संचय का क्या मतलब होता है? समेटना! और निधि मतलब? खजाना! तो संचय निधि मतलब खजाने को समेटने वाली घाटी। कहते हैं कि हमारी दुनिया में जो भी शक्ति या फिर कोई बहुत ही महत्वपूर्ण चीज खो जाती है... वो खोने के बाद संचयनिधि में चली जाती है या फिर संग्रहित हो जाती है।" डॉ. अनंत ने जवाब देते हुए कहा।

"तो फिर वो खोई कैसे? सबको तो पता है कि जो भी खोया है... वहॉ॑ मिल सकता है।" वरूण ने नासमझी से पूछा।

"क्योंकि संचयनिधि घाटी में गई किसी भी चीज को वापस लाना नामुमकिन की तरह मुश्किल है।
आज तक कोई भी उस घाटी से वापस नहीं लौटा। वो घाटी इतने जादुई रहस्यों से भरी है... कि उन रहस्यों को सुलझा पाना बिल्कुल भी आसान नहीं है। इसीलिए तो सतवृक्ष भी हमेशा के लिए हम सबसे दूर चला गया।" डॉ. अनंत ने मायूसी भरी आवाज में कहा।

"पर ऐसी व्यवस्था का क्या मतलब?" वरूण ने पूछा।
"तो तुम्हें क्या लगता है? ऐसी लावारिस शक्तियों या चीजों का सामान्य लोगों के बीच रहना सामान्य बात होती। जिस तांत्रिक ने सतवृक्ष को संचयनिधि घाटी भेजा था.. उन्होंने ही ऐसी व्यवस्था की थी कि... ऐसी शक्तियॉ॑... जो आगे जाकर खतरा बन जाए... वो किसी को मिलने से पहले ही संचयनिधि घाटी में चली जाऍ॑।" डॉ. अनंत ने बताया।

"तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र!" आशुतोष ने एक आह के साथ कहा।

"सही समझा!" डॉ. अनंत ने सहमति के साथ कहा।

"इसका मतलब है कि... हमें भी बस उम्मीद में ही रहना चाहिए कि छद्म सतवृक्ष से हमें कोई महत्वपूर्ण जानकारी मिल जाए।" अनामिका ने कहा।

"हॉ॑ और इस छद्म सतवृक्ष से सही जानकारी निकालने का यही सबसे ज्यादा सही तरीका है।
हमारी उम्मीद की रोशनी जितनी ज्यादा रोशन होगी उस रोशनी में सतवृक्ष की प्रतिक्रिया और उससे मिले जवाब भी उतने ही ज्यादा साफ होंगे। इसलिए अपनी उम्मीद को कहीं से भी कमजोर होने मत देना।" डॉ. अनंत ने सबके अंदर जोश भरते हुए कहा कहा, जिस पर सभी ने उतने ही जोश से हॉ॑ में सिर हिलाया।

"सवाल और भी उठ सकते हैं जिनका जवाब देने का मैं हर संभव प्रयास करूंगा। बस तुम सबये जान लो कि तुम्हारी हिम्मत और हौसला ही तुम्हारे आगे की राह को रोशन करेंगे।" डॉ अनंत ने अपना हाथ आगे बढ़ाते हुए कहा। सभी ने उस बढ़े हुए हाथ को देखा और फिर मुस्कुराते हुए एक-एक कर सभी ने उनके हाथ के ऊपर अपने हाथ रख दिए। हर दुविधा के दूर होने के साथ ही उनका संगठन और भी मजबूत हो रहा था। डॉ. अनंत ने पास ही उस जगह पर देखा, जहॉ॑ उन्होंने पिछली रात छद्म सतवृक्ष का रोपण किया था। उनके उम्मीदों से भरे चेहरों की रोशनी उस
प्रस्फुटित होते वृक्ष को भी आलोकित कर रही थी। आज की रात कई नए रहस्यों के खुलने की रात थी, जिसकी रोशनी उन सभी को उनकी मंजिल की ओर ले जाने वाली थी।

(पता है कि पार्ट छोटा है। आज के लिए एडजस्ट कर लें। अगला भाग कल आएगा।)

शाम होने लगी थी और घर के अंदर सरगर्मियॉ॑ बढ़ गई थीं । आज नौंवी रात थी और वो अपने साथ बहुत से खुलासे लेकर आने वाली थी। सबसे पहले मुकुल वहॉ॑ आया। उसके आने के कुछ देर बाद अंकित भी अपनी उपस्थिति दर्ज करवा चुका था। बस सृष्टि ही थी... जिसका कोई पता

नहीं था। मुकुल से पूछने पर उसने अनभिज्ञता जताई।

"कहीं साहनी को शक तो नहीं हो गया।" डॉ. अनंत ने चिंता जताते हुए कहा।

"पता नहीं! पर वो आज थोड़े उखड़े हुए से लग रहे थे।" मुकुल ने कहा।

"कल रात उस पिशाच ने जरूर तुम दोनों को देखा होगा। हमें इसका ख्याल रखना चाहिए था कि साहनी उस एडवर्ड का मददगार है। अब मुझे सृष्टि के लिए सच में चिंता हो रही है।" डॉ. अनंत ने और भी घबराते हुए कहा।
"नहीं! उस पिशाच ने हम दोनों को नहीं देखा था। उसके वहॉ॑ आते ही सृष्टि ने हम दोनों को छिपा लिया था।" मुकुल ने डॉ. अनंत को शांत करते हुए कहा।

"पर कल रात वो कुछ बताने के लिए आई थी। उसी ने तो मैसेज करके हम सबको स्टडी में बुलाया था (भाग - 48) उसके बाद... उस डायरी में रोशनी होने के कारण हम सभी का ध्यान उस मैसेज से हट गया और फिर उसके बाद जो कुछ भी हुआ... उसकी वजह से वो बात अनसुनी ही रह गई।" वरूण ने रात आए सृष्टि को मैसेज को याद करते हुए कहा।

"उसने तुमसे कुछ नहीं कहा।" डॉ. अनंत ने मुकुल से पूछा।

"नहीं! रात इतना सब कुछ हो गया कि दिमाग में कुछ और आया ही नहीं।" अपनी ऑ॑खों के पर्दे पर सहमी और सुबकती हुई परिधि की तस्वीर उतारते हुए मुकुल ने धीमी आवाज में कहा।

"अब पता कैसे चलेगा? कहीं वो सच में मुसीबत में फॅ॑स गई तो....! वो अकेली है। अकेली क्या ही कर पाएगी?" आशुतोष ने भी अपनी चिंता जताई।

"फिर हम क्या करें? हमारा यहॉ॑ का काम भी तो बहुत ही जरूरी है।" अंकित ने समस्या बढ़ते देखकर कहा।

"मैं कुछ कहूं!" चैतन्य ने अपना हाथ उठाकर कहा, जिससे सभी का ध्यान उसकी ओर गया।

"कहो!" डॉ. अनंत ने इजाजत देते हुए कहा।
"मुझे लगता है कि वो हमें उलझाना चाहते हैं... ताकि हम कामयाब ना हो सकें। इसलिए हमें उस पर ध्यान देना चाहिए... जो हमारे सामने है, ना कि उस पर... जिसके बारे में हम निश्चित ही नहीं हैं। मुझे लगता है कि हमें अपना काम जारी रखते हुए सृष्टि का इंतजार करना चाहिए। ताकि हम सही निर्णय पर पहुॅ॑च सकें।" चैतन्य ने अपनी राय रखते हुए कहा।

"और तुम्हारी बात मानने से सृष्टि पर मुसीबत बढ़ गई तो... फिर क्या होगा?" चैतन्य की बात काटते हुए वरूण ने बहुत ही गुस्से में कहा।

"और जाकर क्या करोगे? तुम्हें पता भी है कि उस पिशाच की शक्तियॉ॑ क्या है? वो खुद को कामयाब करने के लिए किस हद तक जा सकता है? पिछली बार जब हम उससे भिड़े थे.. तब हमेशा ही उसके पास प्लान 'बी' यहॉ॑ तक कि प्लान 'सी' भी तैयार रहता था। तुम्हें क्या लगता है... कि इस बार ऐसा नहीं होगा! वो पिछले 200 सालों से भटक रहा है। ना जाने और क्या- क्या जोड़ लिया होगा उसने अपने फितूर भरे दिमाग में? समस्या को सुलझाना हो तो उसकी जड़ पर वार करो और इसके लिए जड़ की गहराई का भी पता होना चाहिए। बस डालियों को काटने से कुछ नहीं होने वाला है।" चैतन्य बिगड़ते हुए बोला।

"कहना क्या चाहते हो? साफ-साफ कहो!" वरूण भी तइड़कतए हुए बोला।

"वरूण! चैतन्य सही कह रहा है। तुम सब नहीं... पर हम दोनों अतीत से बहुत कुछ सीखकर आए हैं। तुम लोग जितना समझ रहे हो... ये एडवर्ड उससे कहीं ज्यादा कमीना और चालाक है। हम अतीत में इतने समय तक उससे उलझे रहे... पर वो हमेशा ही हमसे एक-दो कदम आगे ही रहता था। मैंने, चैतन्य ने और अल्फ़ी ने भी... ना जाने क्या-क्या नहीं किया। यहॉ॑ तक कि अल्फ़ी ने तो उसे जान से भी मार ही डाला था... पर वो आज भी हमारे सामने तनकर खड़ा हुआ है। क्यों? क्योंकि हम भी उसकी जड़ों
पर वार करने की बजाय उसकी डालियॉ॑ छांटते रहे। हमें इस बार वो गलती नहीं करनी है। हमें उस एडवर्ड की जड़ों की गहराई जाननी ही होगी... ताकि उसे पूरी तरह से उखाड़ फेंकें। वरना हम बस हवा में हाथ चलाते ही रह जाऍ॑गे।" अनामिका ने चैतन्य का समर्थन

करते हुए कहा।

"पर.." वरूण ने कहना चाहा।

"चैतन्य और अनामिका सही कह रहे हैं। वो बहुत चालाक है। उसने हमारे हर संभव वार का तोड़ पहले से ही सोच रखा होगा। जहॉ॑ तक सृष्टि की बात है... अगर वो इतनी मुसीबत में हुई कि उसे मदद की जरूरत पड़े... तो तुम सबकी अंगूठियॉ॑ इशारा कर देंगी। इसलिए उस इशारे के आने तक शांत रहो। वैसे भी जब इस जंग में कूदे हैं... तो चोट तो लगेगी ही... और खुद को हर तरह की चोट के लिए तैयार रखो।" डॉ. अनंत ने भी चैतन्य और अनामिका का समर्थन करते हुए कहा, जिसे सुनकर वरूण का मुॅ॑ह छोटा सा हो गया था।

"तो क्या हम अपना काम शुरू करें।" आशुतोष ने आगे बढ़कर कहा।

"किसी भी तरह की देर होने से पहले।" कहते हुए डॉ. अनंत तेजी से स्टडी की ओर बढ़ गए। बाकी सब भी उनके पीछे चल दिए।

आज स्टडी की सारी लाइट्स बंद थीं, मगर फिर भी कमरा एक अलौकिक रोशनी से भरा हुआ था, जो उस सतवृक्ष के पौधे से प्रस्फुटित हो रही थी, जिसका उन्होंने 24 घंटे पहले रोपण किया था। इन चौबीस घंटों में वो पौधा उन सबके चेहरों तक बढ़ गया था। उस पर कहीं-कहीं पर मदार की तरह सुनहरे फूल लगे हुए थे और ये रोशनी उन्हीं फूलों से आ रही थी। कमरे में एक ओर एक गोल घेरा बना हुआ था, जिसके अंदर परिधि और गीता दुबके बैठे थे। जाहिर सी बात थी कि डॉ. अनंत ने उन दोनों की सुरक्षा पहले ही सुनिश्चित कर ली थी। अब वो दोनों ही सुरक्षित थीं और
अपनी डबडबाई हुई ऑ॑खों से उन सबको देख रही थीं।

"ये सुरक्षित तो रहेंगी ना!" वरूण ने गीता की ओर देखते हुए कहा। अपनी बहन को इस तरह देखकर उसके माथे के शिकन बढ़ गए थे। वहीं मुकुल की ख़ामोश निगाहें शांत बैठी हुई परिधि पर ठहर गई थीं। उसकी उन निगाहों में एक चोर बैठा हुआ था, जिसकी वजह से उसने तेजी से अपनी वो निगाहें फेर लीं। मगर उसके निगाहें फेरने से पहले ही परिधि ने उसकी निगाहों को खुद पर महसूस कर लिया था और उसने जैसे ही मुकुल की ओर देखा.. वो उससे मुॅ॑ह फेरे खड़ा था। एक चुभन सी उसके दिल में उठी थी। उन दोनों के बीच कुछ नहीं होकर भी बहुत कुछ था, जिसे ना तो वो दोनों स्वीकार सकते थे और ना ही नकार सकते थे। कुछ अनकहा सा उनके बीच रह गया था... जो शायद अब अनकहा ही रहने वाला था क्योंकि अपनी सच्चाई से रूबरू होते ही परिधि में उसकी ऑ॑खों में देखने की हिम्मत नहीं थी। उधर मुकुल भी अपने अंदर करवटें लेते हुए अहसासों को थपकियॉ॑ देने लगा था.. कि जिन अहसासों को वो बहुत पहले ही अपने दिल की जमीन पर दफ्न कर चुका था.. वहॉ॑ से निकलती कोंपलें उसे ही चिढ़ा रही थीं। उसने अपनी पलकों को तेजी से झपकाते हुए खुद को इस गिरफ्त से आजाद करने की कोशिश की। दूसरी ओर उन दोनों की ही हालत से बेखबर सभी अपने-अपने कामों में लगे हुए थे।

"तो सबसे पहले क्या करना है?" आशुतोष ने पूछा।

"24 घंटे पहले हम सवालों के बोझ से दबे हुए थे। पर अब हम सब अल्फ़ी की कहानी जानते हैं और उस कहानी के साथ ही हमारे बहुत से जवाब हमें मिल चुके हैं। अब आगे की लड़ाई के लिए हमें ये जानना जरूरी है कि... आखिर उस एडवर्ड ने अंकित के भाई के परिवार के साथ ऐसा क्यों किया था? और दूसरा सवाल कि... मुकुल के पिता मरने से पहले मुझे क्या बताना चाहते थे? इन दोनों सवालों के जवाब मिलने बहुत ही जरूरी हैं।" डॉ. अनंत ने उन सबसे कहा।
"और जवाब पाने के लिए क्या करना होगा।?" अंकित ने बेचैनी से पूछा।

"एक मिनट!" कहते हुए डॉ. अनंत अपनी मेज के पास गए और वहॉ॑ पड़ा नोटपैड और एक पेन उठाकर ले आए। उन्होंने वो दोनों अंकित की ओर बढ़ाया।

"इसमें अपने सवाल लिखो और उस कागज को पकड़ो।" उन्होंने कहा।

अंकित ने देरी किए बिना वो नोटपैड लिया और अपना सवाल लिखने लगा। सवाल लिखते ही उसने कागज फाड़कर अपने पास रखा और वो नोटपैड डॉ. अनंत की ओर बढ़ा दिया। डॉ. अनंत ने भी कुछ लिखा और फिर नोटपैड से वो कागज फाड़कर अपने पास रख लिया।

"अंकित! अपने भाई की कोई चीज लाए हो... जैसा मैंने कहा था।" डॉ. अनंता ने पूछा। जवाब में अंकित ने जेब से अपने भाई की एक अंगूठी निकाली। डॉ. अनंत के इशारा करने पर मुकुल ने भी अपनी जेब से एक पेन निकाला और उनकी ओर बढ़ा दिया। डॉ. अनंत ने उस पेन को उस कागज पर रखा और फिर पेन के चारों ओर वो कागज लपेट लिया। अंकित ने भी बिल्कुल ऐसा ही किया और फिर उनकी ओर देखने लगा।

"अंकित! अब इस कागज को किसी एक फूल के बीच रख दो और तुरंत पीछे हट जाना।" डॉ. अनंत ने हिदायत देते हुए कहा।

उनकी बात सुनकर अंकित उस छद्म सतवृक्ष के पास गया। उसके पास जाकर वो उससे निकलने वाली रोशनी की तपिश साफ-साफ महसूस कर रहा था। उसने सबसे नजदीक के फूल पर निगाह डाली और फिर अपने हाथ में पकड़े हुए कागज को उस फूल के ऊपर रख दिया। उस कागज को फूल पर रखते ही सिर्फ उसी फूल में जोरों से कंपन होने लगी और फिर
वो फूल तेजी से झटके खाने लगा। अंकित तेजी से कुछ कदम पीछे हुआ। फिर देखते ही देखते वो खिला हुआ फूल सिकुड़ कर बंद होने लगा। दो पल बाद ही वो फूल फिर से कली बन चुका था, जिसके अंदर अंकित के भाई की अंगूठी अंकित के सवाल के साथ बंद हो चुकी थी। कुछ देर सब कुछ बिल्कुल ही शांत रहा। इस ख़ामोशी के बीच सभी ने एक-दूसरे की ओर देखा, जहॉ॑ एक बेचैनी सभी के चेहरे पर नुमाया हो रही थी।

करीब एक मिनट की बेचैनी के बाद एक बार फिर से उस कली में कंपन होने लगी और फिर वो कली एक बार फिर से फूल बनकर खिल गई। सबने देखा कि अंकित का रखा हुआ मुड़ा-तुड़ा कागज वहॉ॑ दिखाई दे रहा था।

"अंकित! उस कागज को लेकर आओ!" डॉ. अनंत ने अंकित से कहा।

उनका आदेश मिलते ही अंकित उस फूल के पास गया और उस मुड़े-तुड़े कागज को काॅ॑पती हुई ऊंगलियों की मदद से उठा लिया। उसने अपने हाथ पर रखे उस कागज को कुछ देर घूरकर देखा और फिर वापस लौटकर उन सभी के पास आ गया।

"इसे खोलो!" डॉ॑. अनंत ने अगला आदेश दिया।

उनकी आवाज सुनकर अंकित ने कागज पर से नज़र उठाकर उनकी ओर सवालिया नज़रों से देखा।
उसके साथ-साथ सभी की नजरें डॉ. अनंत की ओर उठी थीं।

"ऐसे क्या देख रहे हो? इसे खोलो! इसके अंदर तुम्हारे सवाल का जवाब है.... जिसका इंतजार हम सब भी कर रहे हैं।" सभी को अपनी ओर ताकते हुए देखकर डॉक्टर अनंत ने अंकित से कहा।
और ये सुनते ही अंकित ने कॉ॑पते हुए हाथों से उस कागज को खोलना शुरू किया। उसे पूरी तरह खोलने से पहले अंकित ने अपने भाई की अंगूठी को उसके अंदर तलाशा... जो कि वहॉ॑ दिखाई नहीं दे रही थी। अंगूठी को खोने के एहसास से वो एक बार फिर से बेचैन दिखाई देने लगा।

"हर जवाब की एक कीमत होती है अंकित। तुम कागज खोलो। मेरे ख्याल से अंगूठी से ज्यादा वो जवाब तुम्हारे लिए कीमती होगा।" डॉ. अनंत ने अंकित की बेचैनी को पढ़ते हुए कहा।

उनकी बात सुनकर अंकित ने एक गहरी सॉ॑स ली। शायद वो अंगूठी उसने बड़ी ही जतन और प्यार से अपने भाई की याद के रूप में संभाल कर रखी थी। एक अफसोस... गुस्से का रूप लेकर उसके चेहरे पर उतर आया था। लंबी-लंबी सॉ॑से भरते हुए उसने उस कागज को खोला और फिर उसने उस कागज में जो देखा... उससे उसकी बेचैन ऑ॑खें हैरानी की आखिरी हद तक फैलकर फट ही गई थीं। उसके होंठ कुछ कहने के लिए हिले पर... अल्फ़ाजों की दगाबाजी उन्हें जुंबिशें के अलावा और कुछ नहीं दे सकी। वो उस कागज पर नज़र डालें गुंग सा खड़ा रह गया। उसकी ऐसी हालत देखकर चैतन्य तेजी से आगे बढ़ा और उसके कंधे को झिंझोड़ा। अंकित ने किसी भी प्रकार की प्रतिक्रिया नहीं दी। बल्कि उसके हाथ और भी जोर से कॉ॑पने लगे। चैतन्य ने उसके कॉ॑पते हुए हाथों को देखा और उस कागज को अंकित के हाथ से छूटकर गिरने से पहले ही पकड़ लिया। हर किसी को हैरानी हो रही थी कि आखिर उस कागज में लिखा क्या था? चैतन्य ने एक सरसरी निगाह उस कागज पर डाली और अगले ही पल उसके जबड़े गुस्से की शिद्दत दिखाते हुए बुरी तरह से कस गए।

"क्या हुआ चैतन्य? क्या लिखा है उसमें?" डॉ. अनंत ने उतावलेपन से पूछा। बाकी सभी की नज़रें भी चैतन्य के पकड़े हुए कागज पर गड़ गई थीं... गोया उसने कागज नहीं कोई जिंदा बम पकड़ रखा हो।
"कुछ लिखा नहीं है। एक तस्वीर बनी है।" चैतन्य ने एक नज़र फिर उस कागज पर डालते हुए कहा।

"किसकी तस्वीर है?" अनामिका ने आगे बढ़कर पूछा।

"और किसकी? एक ही तो गुनहगार है। हम सभी का!" कहते हुए चैतन्य का रोम रोम सुलग रहा था।

"एडवर्ड!" डॉ. अनंत अनुमान लगाया, जिस पर चैतन्य ने सहमति में अपना सिर हिलाया और फिर उस कागज को उन सबके सामने खोल दिया। सभी अपनी ऑ॑खें सिकोड़ कर कागज पर बने उस खूबसूरत नौजवान की तस्वीर को देख रहे थे। उन सभी ने एडवर्ड को हमेशा पिशाच के रूप में ही देखा था, इसलिए वो इस रूप में उसे पहचान नहीं सकते थे। ये एडवर्ड की ही तस्वीर थी और इसकी पहचान अनामिका और चैतन्य ही कर सकते थे.... क्योंकि एक वही दोनों ही थे जिन्होंने अतीत में एडवर्ड को आमने-सामने से देखा था।

"ये एडवर्ड है। बंदा तो बड़ा खूबसूरत है। कोई सोच सकता है क्या... कि इतनी खूबसूरती के नीचे इतनी बदसूरत्ती छिपी हुई हो सकती है।" वरुण ने बहुत ही कड़वे लहजे में उसकी तारीफ की थी।

"शुक्र मनाओ कि... अनामिका और चैतन्य अतीत में उसे देखकर आए हैं। वरना ये तस्वीर भी हमारे लिए फिर से एक पहेली ही बन जाती कि ये आखिर है कौन?" आशुतोष ने अपना सिर हिलाते हुए कहा।

"एक बात तो समझ में आई कि अंकित के भाई ने इसकी पूरी कुंडली निकालने की कोशिश की होगी। इसलिए इस एडवर्ड ने उनको जान से मारा। पर एक बात समझ में नहीं आ रही है कि इसने अंकित की भाभी
और भतीजी को क्यों गायब किया?" मुकुल ने उस तस्वीर को अपने हाथों में लेते हुए कहा।

"इस सवाल का जवाब मेरे पास है।" अंकित की ओर से आई इस आवाज से सभी ने उसकी ओर देखा।
वो अपनी ऑ॑खों में नमी के समंदर को समेटने की कोशिश करता हुआ खड़ा था।

"कैसा जवाब?" डॉ. अनंत ने पूछा।

"यही कि... यदि यही एडवर्ड है तो.... मैं इसकी एक और पहचान जानता हूॅ॑। एक और पहचान.... जो हमारे सारे सवालों का जवाब है।" अंकित ने कॉ॑पती हुई आवाज में कहा।

"एक और पहचान! इसका क्या मतलब है?" आशुतोष ने हैरानी जताते हुए पूछा।

"आप सबको शायद याद होगा कि जब मैंने अपनी कहानी आप सबको सुनाई थी तब उसमें एक और नाम का जिक्र आया था। ये वही हैं।" गहरी गहरी सॉ॑से लेता हुआ अंकित अब खुद भी थरथराने लगा था।

"कौन सा नाम?" याद करने की नाकाम कोशिश करते हुए चैतन्य ने पूछा। दूसरों के चेहरे में भी यही नाकामी दिखाई दे रही थी।

"वही जिसके भरोसे में मैं अपने भाई को खुद मौत के हाथों में सौंप आया था। आदित्य भैया!" चौंकाने वाले खुलासे के साथ अंकित अपना भीगा हुआ चेहरा हथेलियों में छुपा कर घुटनों के बल गिर गया और बुरी तरह सिसकने लगा। चैतन्य और वरुण तेजी से उसके पास गए और उसे कंधे से पकड़ कर संभालने लगे।
"आदित्य भैया! मतलब कि तुम्हारे पड़ोसी! जो तुम्हारे घर जाने के बाद तुम्हारे भैया के साथ अस्पताल में थे और अगले दिन अस्पताल की खिड़की के बाहर घायल अवस्था में मिले थे। वही आदित्य!" अनामिका ने अंकित कि उस खून भरी कहानी के उस हिस्से को पकड़ते हुए कहा।

हथेलियों में अपना चेहरा छिपाए हुए ही अंकित ने हॉ॑ में अपना सिर हिलाया। अंकित की

स्वीकारोक्ति के बाद सभी मुॅ॑ह फाड़े एक दूसरे का चेहरा देखने लगे।

"मैंने पहले ही कहा था वह कमीना बहुत चालाक है। वो इतनी चालाकी से अपना हर खेल खेलता है कि कोई उसे पकड़ ही नहीं पाता। हमें अगर उससे अपनी लड़ाई लड़नी है और जीतनी है, तो हमें हर कदम पर सावधान रहने की जरूरत है।" चैतन्य ने गुस्से में दॉ॑त पीसते हुए कहा।

अंकित और फिर उसके बाद चैतन्य की बात सुनकर सबके चेहरे की गंभीरता और भी बढ़ गई थी। चैतन्य और अनामिका को इस बात का एहसास बहुत पहले ही हो चुका था और अब बाकियों को भी इस बात पर यकीन आ गया कि उनका दुश्मन बहुत ही चालाक था और हद दर्जे तक गिरा हुआ भी। पिछले 10 साल से अंकित अपने अंदर घुमड़ते इस सवाल का जवाब ढूंढ रहा था कि उसके भाई-भाभी की मौत क्यों और कैसे हुई और जो जवाब आज उन सभी के सामने आया.... उसने उन सभी के होश उड़ाकर रख दिए। आखिरकार आज अंकित और उसके परिवार के इन सबमे शामिल होने की वजह भी सामने आ गई। आज एक बार फिर से अंकित उसी दर्द से गुजरा था, जिसके जख़्मों को उसने कभी सूखने नहीं दिया था। पर इस बार दर्द पिछले बार के दर्द से भी ज्यादा गहरा था। क्योंकि इस बार उसके उन खुले जख्मों पर विश्वासघात का खंजर गहरे तक जाकर घुस गया था और विश्वासघात का ये गहरा जख़्म उसे सारी जिंदगी टीसने वाला था।
चैतन्य और वरूण ने बिलखते हुए अंकित को किसी तरह संभाला। आशुतोष ने पानी का गिलास लाकर उसे दिया, जिससे सबके कहने पर बड़ी ही मुश्किल से उसने अपने हलक़ से नीचे उतारा। अभी दिल और दिमाग को दुरुस्त रखना बहुत जरूरी था और इस बात का अहसास अंकित को अच्छी तरह से था... इसलिए अपने इस दर्द से उबरने में उसने ज्यादा वक्त नहीं लगाया। सभी अंकित की हालत से परेशान और दु:खी हो गए थे। मगर कोई ऐसा भी था जिसका दिमाग ये सब सुनने के बाद किसी और ही दिशा में चला गया था। करीब 15 मिनट बाद अंकित काफी हद तक खुद को संभाल चुका था।

"तुम ठीक हो?" आशुतोष ने उसकी हालत को जॉ॑चते हुए पूछा। जवाब में अंकित ने नाक सुड़कते हुए हॉ॑ में अपना सिर हिलाया।

"इस एडवर्ड ने तो सच में हर हद पार कर दी। इतनी हैवानियत आखिर कहॉ॑ से लेकर आया वो?" चैतन्य ने अंकित के कंधे पर हाथ रखे हुए बहुत ही खिन्नता से कहा।

"नफ़रत है ही ऐसी चीज! किसी से कुछ भी करवा सकती है।" एक सर्द आवाज उन सभी के कानों से टकराई। सभी ने चौंककर चारों ओर देखा... मगर कोई भी नज़र नहीं आया।
"ये तो अल्फ़ी की आवाज थी। पर आई कहॉ॑ से?" अनामिका ने घूमकर चारों ओर देखते हुए कहा।

"मुझे ढूंढ रही हो!" अल्फ़ी की नर्म सी आवाज़ आई और इस बार सभी ने सिर उठाकर ऊॅ॑चाई पर बने बड़े से गोलाकार रोशनदान की ओर देखा। वो वहॉ॑ एक पैर नीचे की ओर लटकाए बैठा हुआ था। बातें करते हुए भी उसकी नज़र अपने हाथों की ओर थी, जिससे उसने किसी चमकीली सी चीज को पकड़ रखा था और वो उसे बहुत ही ध्यान से देख रहा था।

"तुम यहॉ॑ कैसे आए?" डॉ. अनंत ने उसे इस तरह बैठा देखकर पूछा।

"मुझे कौन रोक सकता है भला?" इस बार अल्फ़ी ने डॉ. अनंत की ओर देखते हुए कहा।

डॉ. अनंत कुछ बोलने को ही थे कि अनामिका ने आगे बढ़कर उन्हें रोक दिया। डॉ. अनंत के उसकी ओर देखने पर उसने धीरे से नहीं का इशारा किया। अनामिका की इस हरकत पर अल्फ़ी की नज़र भी ठहरी थी। वो उसे ही देख रहा था, जब अनामिका ने एक चोर निगाह उस पर डाली और फिर तुरंत ही हटा भी ली। अल्फ़ी के होंठों के किनारे एक हल्की सी मुस्कुराहट के साथ फड़के कि वो उसकी परवाह करती है। अनामिका के हटते ही उसने भी अपना ध्यान फिर से अपने हाथों में पकड़ी हुई चीज पर लगाया... मगर कान उन सभी की ओर खुले रखे।

"क्या इसके सामने बात करना सही होगा?" आशुतोष ने संशयपूर्वक कहा।

"हॉ॑! हम कर सकते हैं। हमारा और उसका दुश्मन एक ही है। शायद वो मदद ही करे हमारी।" अनामिका ने भरोसे भरी आवाज के साथ कहा।
"तुम्हें उस पर बहुत भरोसा है।" आशुतोष ने जैसे अनामिका के दिल को नापने की कोशिश में कहा। जवाब में अनामिका ने एक नज़र उन पर डालकर हटा ली। आशुतोष की नज़र हटकर चैतन्य की ओर गई, जो अनामिका को ही देख रहा था। आशुतोष की नज़रें खुद पर महसूस कर चैतन्य ने उनकी ओर देखा और फिर एकदम से ही अपनी नज़रें घुमा लीं। नज़रों की ये भागदौड़ आशुतोष

को और भी उलझा गई थी। एक गहरी साॅ॑स के साथ उन्होंने एक बार फिर से अंकित की ओर देखा, जो अब सामान्य नज़र आ रहा था।

"ये आदित्य था कौन?" आशुतोष ने एकाएक ही सवाल किया।

"हमारे पड़ोस में पेईंग गेस्ट रहता था। मेडिकल का स्टूडेंट था।"अंकित ने अचानक पूछे गए सवाल पर संभलकर जवाब दिया।

"और... कबसे जानते थे उसे?" आशुतोष ने अगला सवाल किया।

"इस सवाल का मतलब?" वरूण ने ऑ॑खों में सवाल भरकर पूछा।

"मतलब ये कि... घायल भाई या बेटे के पास किसी को अकेला छोड़ना... इतना भरोसा करना हफ्ते-दस दिन में तो संभव नहीं है। इतना भरोसा कमाने में बहुत समय लगता है।" आशुतोष ने कहा।

"जी हॉ॑! हम उसे... करीब 15-16 महीनों से जानते थे। मैंने ही उसे सबसे पहले उसके सामान के साथ देखा था... जब वो वहॉ॑ रहने आया था। वो अकेला रहता था और वो सबसे बहुत ही सभ्य तरीके से पेश आता था। फिर धीरे-धीरे उसका हमारे घर आना-जाना शुरू हो गया और उसने सबके दिलों में घर कर लिया था। फिर..." इसके बाद अंकित ने बात अधूरी छोड़ दी। "तो फिर वो एडवर्ड कैसे हो सकता है?" आशुतोष ने अंकित की सबसे पहली बात काटते हुए कहा।

"क्यों नहीं हो सकता?" मुकुल ने पूछा।

"शायद तुम लोग भूल गए हो कि छद्म पिशाच साधना खंडित होने की वजह से एडवर्ड शापित हो गया था। वो दस सालों तक सोता था और फिर बस दस दिनों के लिए जागता। तो फिर अंकित और उसकी फैमिली के साथ 15-16 महीने गुज़ारने वाली बात का कोई औचित्य ही नहीं है।" आशुतोष ने जैसे उन सभी को याद दिलाते हुए कहा और जिसे सुनकर सभी का दिमाग घूम गया। इतनी बड़ी बात तो... वो सभी भूल गए थे।

"पर मैं सच कह रहा हूॅ॑। ये बिल्कुल वही है, जो हमारे साथ रहा करता था।" अंकित ने भी अपनी बात पर अड़ते हुए कहा।

"पर ये कैसे हो सकता है? इट्स नॉट पॉसिबल!" आशुतोष ने भी जोर डालते हुए कहा।

"क्यों नहीं हो सकता? बल्कि ऐसा ही हुआ है।" एक बार फिर से अल्फ़ी ने उन सब को टोकते हुए कहा।

"और वो भला कैसे?" चैतन्य ने पूछा।

चैतन्य का सवाल सुनकर अल्फ़ी एक बार खुलकर हॅ॑सा और फिर उसी रोशनदान पर अपने दोनों पैर लटका कर बैठ गया। अपने दोनों हाथों को टिकाकर वह नीचे सबके चेहरों को एक-एक करके देखने लगा, जो जवाब की आस में उसकी और कौतूहल से देख रहे थे। अल्फ़ी ने एक गहरी सॉ॑स भरी और फिर बोलना शुरू किया।
"तुम सबको लगता क्या है कि.... शापित होना आखिर है क्या? एक ऐसी जिंदगी जिसमें ना कोई खुशी होती है ना कोई उम्मीद होती है फिर भी आपको वो जीनी पड़ती है। एडवर्ड भी कुछ इसी तरह शापित है। तुम सब जानना चाहते हो कि उसके सोने और जागने का रहस्य क्या है? आखिर क्यों वो इस तरह होकर भी इतने समय तक अंकित और उसके परिवार के साथ रह सका। क्योंकि वो 10 साल उसका शरीर नहीं सोता था... उसकी शक्तियॉ॑ सोती थीं। उसे कितनी नफरत थी ना.... आम इंसानों से... अपने से नीचे दर्जे के जादुई लोगों से। और इस श्राप ने क्या किया! उसे भी आम बना दिया। वो 10 साल जब उसकी पैशाचिक शक्तियॉ॑ गहरी नींद सो जाती थीं... वो बिल्कुल आम सा इंसान बन जाता था और इससे बड़ा श्राप उसके लिए और क्या ही हो सकता था! हर 10 साल के बाद उसे 10 दिन का समय मिलता था ताकि वो अपनी गलती सुधार सके और पिछले 200 सालों से उसने यही किया।" अल्फ़ी ने एडवर्ड का रहस्य खोलते हुए कहा।

"तुम्हारा मतलब है कि पिछले 200 सालों से वो आम इंसानों की तरह जी रहा है और इसीलिए वो अंकित और उसके परिवार के साथ इतना समय बिता पाया।" आशुतोष ने हैरानी से फटी अपनी

ऑ॑खों के साथ कहा।

"याह! यू गॉट द पॉइंट! बल्कि उसने तो अपना एक अलग ही समूह बना रखा है, जो उसकी शक्तियों की गैर मौजूदगी में उसका हर कार्य करते थे... करते हैं। बुराई की भी एक गजब बात होती है कि.... उसे साथी बड़े ईमानदार मिलते हैं। शायद हर 10 साल बाद उसकी पैशाचिक शक्तियों के जागने के डर से। जो भी हो। एडवर्ड तो एडवर्ड है। अपनी इस कमजोरी को भी अपनी ताकत बना लिया उसने। सदियों से वो इंसानों के बीच रहता है... उन्हें देखता है.... परखता है और फिर 10 सालों के बाद उन्हीं का शिकार करता है।" अल्फ़ी ने आगे की बात बताई।
"इसका मतलब गायब हुए मासूम बच्चों के पीछे तुम्हारा हाथ नहीं है।" अनामिका ने अपनी आंखों में चमक भरकर उसे देखते हुए कहा।

अनामिका की बात सुनकर अल्फ़ी ने उसकी ओर देखा और वो एक बार फिर जोर से ठहाका लगाकर हॅ॑सा। उसकी हॅ॑सी इतनी ठंडी थी कि... वहॉ॑ मौजूद सभी लोगों को सिहरन महसूस होने लगी। खुलकर हॅ॑सने के बाद अल्फ़ी एकदम से चुप हुआ और अनामिका की ऑ॑खों में झांककर बोला, "नहीं! कभी भी नहीं! तुमसे वादा किया था ना... कि कभी कुछ ग़लत नहीं करूंगा और अल्फ़ी अपने वादे नहीं तोड़ता।"

अल्फ़ी की बात सुनकर कुछ पलों की गहरी खामोशी उस कमरे में छा गई। सभी की नज़रें उन दोनों पर ही टिकी हुई थीं, जो एकटक एक-दूसरे की ओर देख रहे थे। आशुतोष के गला खंखारने की आवाज ने अनामिका का ध्यान तोड़ा और अल्फ़ी ने भी अपनी जज़्बातों से भरती हुई ऑ॑खें घुमा लीं। उलझे हुए आशुतोष ने चैतन्य की तरफ देखा.. जो सिर झुकाए दीवार से टिककर खड़ा था। उन तीनों के बीच क्या चल रहा था... ये आशुतोष की समझ से बाहर था।

"तो उसने ये सब किया क्यों? अंकित की भाभी और उनकी बच्ची को क्यों गायब किया? मतलब कि उन्हें मारना ही था... तो अंकित के भाई के साथ ही मार देता।" इस बार बहुत देर से खामोश बैठे डॉ. अनंत ने ख़ामोशी को तोड़ा। जवाब में अल्फ़ी ने अपने कंधे उचका दिए।

"मुझे पता नहीं। पिछले 25 सालों से मैंने उस पर नज़र नहीं रखी। इसलिए इस बीच उसने क्या किया... मुझे नहीं पता।" अल्फ़ी ने हाथ झाड़ते हुए कहा।

"क्यों? क्यों नहीं रखी?" अनामिका ने पूछा।
"क्योंकि तुम आने वाली थी और मेरे लिए ये ज्यादा मायने रखता था।" एक बार फिर से अल्फ़ी ने अनामिका के सामने अपना दिल खोलकर कहा और अनामिका उतनी ही बुरी तरह से झेंपी थी।

"सच कहूॅ॑ तो आज से पचास साल पहले कुछ ऐसा हुआ कि मेरा सारा ध्यान एडवर्ड से हट गया था। इसलिए इन पचास सालों में उसने क्या-क्या किया? मुझे इसकी ज्यादा जानकारी नहीं है।" अल्फ़ी ने एक बार फिर से अपने हाथ खड़े कर दिए।

"मतलब कि फिर से ये सवाल... सवाल ही रह गया।" दीवार से टिके हुए चैतन्य ने अपनी मुट्ठियों को खोलते-बंद करते हुए देखकर कहा।

"इसका जवाब मेरे पास है।" एक और आवाज कमरे में गूंजी और धाड़ से दरवाजा खुलने की आवाज के साथ सभी ने उस ओर देखा। सृष्टि दरवाजे पर खड़ी थी। उसकी हालत सही नहीं लग रही थी।
माथे से बहता खून झड़प और हाथापाई की गवाही दे रहा था। उसने अपने बाऍ॑ हाथ को दाहिने हाथ से पकड़ रखा था। वो लड़खड़ाते हुए अंदर आई और दरवाजा बंद किया।

"सृष्टि!" उसकी खराब हालत पर चैतन्य परेशान सा उसकी ओर दौड़ा। वरूण और मुकुल भी उसके पीछे गए। रोशनदान पर पैर लटकाए बैठा अल्फ़ी भौंहें चढ़ाए हुए उन सभी को देख रहा था।
चैतन्य ने सृष्टि को संभाला और उसे कोने में रखे सोफे के पास ले गया। वरूण तुरंत ही उसकी चोटों को साफ करने लगा।

"इतनी चोट कहॉ॑ से आ गई तुम्हें? हमें लग ही रहा था कि तुम मुसीबत में हो।" आशुतोष ने उसे चिंता से देखते हुए कहा। डॉ. अनंत भी उसके साथ खड़े सृष्टि को ही देख रहे थे।
"मैं प्रोफेसर साहनी के पीछे गई थी। पकड़ी गई।" सृष्टि ने सिसकारी भरते हुए कहा, जब वरूण ने उसके बाऍ॑ हाथ की कलाई पकड़ी।

"तुम्हें तो बहुत चोट लग गई है। तुमने हमें खबर क्यों नहीं की?" उसकी सिसकारी सुनकर डॉ॑. अनंत ने घबराते हुए कहा।

"आप लोगों को बुलाती तो आप लोग भी फॅ॑स जाते। इसलिए किसी तरह खुद को निकालकर यहॉ॑ तक आई हूॅ॑। लड़ाई अब खुले मैदान में आ चुकी है।" सृष्टि ने अपनी ऑ॑खें भींचकर कहा। साफ दिखाई दे रहा था कि वो बहुत ही तकलीफ़ में थी।

"हड्डी खिसक गई है।" वरुण ने उसकी सूजी हुई कलाई को देखते हुए कहा और फिर तेजी से बाहर जाने लगा।

"मैं मदद करूं!" मदद भरी एक आवाज सुनाई दी और सभी ने उस तरफ देखा। सुरक्षात्मक घेरे के अंदर मौजूद परिधि उन सभी की ओर देख रही थी।

"जरूरत नहीं है।" वरूण ने थोड़े रूखे लहजे में कहा।

"पर मैं इसे तुरंत फिक्स कर सकती हूॅ॑। आपको इसमें समय लगेगा और वो आप सबके पास नहीं है।" परिधि ने वरूण को टोका।

"पर..." वरूण ने कहना चाहा... जिसे चैतन्य की आवाज ने टोक दिया।

"वो सही कह रही है।" चैतन्य ने परिधि की ओर देखते हुए कहा।

"थैंक्यू! मैं कहीं नहीं जाऊंगी। बस आप मुझे कुछ पत्ते लाकर दे दीजिए।
मैं यहीं बैठकर दवा बना देती हूॅ॑।" परिधि ने उनके लिए आसानी करते हुए कहा।

"तुम सृष्टि को देखना चाहोगी।" चैतन्य ने पूछा, जिस पर परिधि ने हॉ॑ में सिर हिलाया।
उसकी हॉ॑ सुनकर चैतन्य उसके पास आया और उसे उस घेरे से निकालकर सृष्टि के पास ले गया।
सबके बीच झिझकती हुई परिधि ने सृष्टि के ज़ख्मों पर नज़र डाली और फिर कुछ औषधीय पत्तियों के नाम और मात्रा बताई। चैतन्य और वरूण तेजी से घर के पीछे बने ग्रीन हाउस की ओर भागे। इस बीच परिधि ने पास रखे इमामदस्ते को, जिस पर डॉ. अनंत दवाईयॉ॑ कूटते थे... में पानी की कुछ बूंदें डाली। उसके बाद उसने अनामिका से किचन से कुछ सामान मंगवाया। जल्द ही चैतन्य, वरूण और अनामिका सारी चीजें ले आए। सभी चुपचाप खड़े परिधि के तेज-तेज चलते हाथों की ओर देख रहे थे। वो बड़ी ही सफाई से सभी सामग्रियों को नाप-जोख कर उस इमामदस्ते में डाल रही थी। एक नियत प्रक्रिया से गुजरते हुए उस इमामदस्ते में एक हरे रंग का पेस्ट तैयार हो चुका था।

"बन गया!" वरूण ने पूछा।

"अभी नहीं!" कहते हुए परिधि, सृष्टि के पास गई और फिर उसके ज़ख़्म से उसके खून के कुछ सूख रहे क़तरे उठाए और उस पेस्ट में मिला अच्छी तरह से मिला दिया।

"ये क्या था?" मुकुल फुसफुसाया।

"आई थिंक... कस्टमाइज्ड मेडिसिन!" वरूण ने भौंहें उठाकर उसकी ओर देखकर कहा।

"ओह!" मुकुल चिहुंका।
दवा के तैयार होते ही परिधि, सृष्टि के पास गई और उसके सभी ज़ख्मों पर उस पेस्ट को लगा दिया। कलाई में उस पेस्ट को लगाने के बाद उसने वहॉ॑ एक पट्टी बॉ॑ध दी। उस पेस्ट के लगते ही सृष्टि को अपने जख्मों में एक अजीब सी सनसनाहट महसूस होने लगी और फिर उसे अपनी कलाई की हड्डी में कुछ हरकत सी महसूस हुई, जो बिना किसी शक तकलीफदेह थी। तकलीफ की वजह से सृष्टि ने साथ बैठी अनामिका को दबोच लिया था।

"थोड़ी तकलीफ़ होगी... पर कुछ ही देर में सब ठीक हो जाएगा। शुक्र है कि हड्डी टूटी नहीं है। वरना परेशानी होती।" परिधि ने सृष्टि को हिम्मत देते हुए कहा। इसके बाद वो उठी और एक गिलास पानी में उसे पेस्ट की बहुत थोड़ी सी मात्रा, हल्दी और शहद को मिलाकर सृष्टि की ओर बढ़ाया।

"इसे एक बार में पी जाओ! दर्द कम होगा।" परिधि ने कहा।

दर्द से लाल हो चुके चेहरे के साथ सृष्टि ने उस गिलास की ओर देखा और फिर परिधि पर एक नजर डालकर उस गिलास की दवा अपने हलक के नीचे उतार दी। उसे दवा के पीते ही एक बार फिर उसके सारे शरीर में एक झनझनाहट सी हुई और फिर अगले ही पल उसके शरीर का सारा दर्द धीरे-धीरे उड़न छू हो गया। परिधि के इलाज शुरू करने के 15 मिनट बाद ही सृष्टि पूरी तरह से ठीक हो चुकी थी। उसने अपनी कलाई पर बंधी पट्टी को खोला और अपनी उस कलाई को गोल-गोल घुमाने लगी। उसकी चोट पूरी तरह से ठीक हो चुकी थी।

"माई गॉड परिधि! तुम्हारे हाथ में सचमुच जादू है।" सृष्टि ने अपने सारे जख्मों को छूते हुए कहा। सृष्टि की हैरानी देखकर बाकी सभी की प्रशंसा भरी नज़रें भी परिधि की ओर उठीं और पहली बार परिधि को अपने इस हुनर पर गर्व हुआ था। डॉ. अनंत ने आगे बढ़कर परिधि के सिर पर प्यार से हाथ फेरा।
"बेवकूफ थे वो लोग... जो तुम्हारे हाथ के जादू को समझ नहीं पाए। तुम यकीनन एक बेहतरीन जादूगरनी हो।" डॉ. अनंत में परिधि को मुस्कुरा कर देखते हुए प्यार से कहा। उनका प्यार देखकर एक बार फिर परिधि की ऑ॑खें भर आई थीं। अपनी उन्हीं भीगी हुई चोर नज़रों से परिधि ने मुकुल की ओर देखा, जो अभी भी उससे कुछ ज्यादा प्रभावित नज़र नहीं आ रहा था। उसकी बेरूखी से परिधि का दिल बैठ गया। वो चुपचाप मुड़ी और एक बार फिर सुरक्षात्मक घेरे के अंदर जाकर गीता के साथ बैठ गई।

"अब ठीक हो!" चैतन्य ने सृष्टि के कंधे पर हाथ रखते हुए पूछा, जिस पर सृष्टि ने हॉ॑ में सिर हिलाया।

"तो फिर बताओ कि हुआ क्या है? तुम कल भी हमें कुछ बताने वाली थी.... जो कल रात हुई सारी उठा पटक की वजह से बतानी रह गई।" आशुतोष में देर ना करके मुद्दे पर आते हुए कहा।

"मैंने उस पिशाच को कल प्रोफेसर साहनी के घर में देखा था और यही बात मैं आप लोगों को बताना चाहती थी। पर उस समय हमें अल्फ़ी के बारे में कुछ पता नहीं था...तो मैंने उसे अल्फ़ी ही समझा था। वो दोनों अपनी किसी योजना के बारे में बातें कर रहे थे।" सृष्टि ने पिछली रात की बातें याद करते हुए कहा।

"कौन सी योजना?" आशुतोष ने पूछा।

"उसके बारे में तो कल उन्होंने खुलकर कोई बात नहीं की। पर आज यहॉ॑ के लिए निकलते समय मैंने एक बार फिर प्रोफ़ेसर साहनी को उस तरफ जाते हुए देखा... जहॉ॑ कल वो उस पिशाच से मिले थे।" सृष्टि ने अपनी बात आगे बढ़ाई।

"फिर!" मुकुल ने उत्सुकता से पूछा।
"कल रात जो कुछ भी हुआ... उससे वो पिशाच बहुत ज्यादा बौखला गया है और इसी बौखलाहट में वो अपने सारे राज खोलता चला गया, जिसे अच्छी किस्मत से मैंने सुन लिया।" सृष्टि ने माहौल की गर्माहट बढ़ाते हुए कहा।

"उसने अंकित के भाई के बारे में कुछ कहा।" वरूण ने सृष्टि की ओर झुकते हुए कहा।

"और भी बहुत कुछ।" सृष्टि बोली।

"और वो क्या" अनामिका ने पूछा।

"अंकित ने बताया था कि उसकी भाभी कुछ गलत तंत्र-मंत्र और सिद्धियों में उलझ गई थी।
उन्हें बहकाने का काम उसी आदित्य उर्फ एडवर्ड ने किया था। और तो और...." कहते कहते सृष्टि एक झिझक के साथ रुक गई।

"और क्या?" अंकित ने अपनी बढ़ी हुई धड़कनों के साथ पूछा।

"अंकित! वो बच्ची.... उस एडवर्ड की थी।" सृष्टि ने एक और बड़ा धमाका करते हुए कहा और यह सुनते ही अंकित लड़खड़ाकर जमीन पर गिर पड़ा। अंकित के पास खड़े मुकुल ने एक बार फिर उसे संभालने की कोशिश की।

"संतान की चाहत में भाभी इतना गिर जाएगी मैंने नहीं सोचा था।" अंकित ने कॉ॑पती हुई आवाज में कहा।

"अंकित! उस एडवर्ड ने तुम्हारी भाभी के साथ भी धोखा ही किया था।
तुम्हारी भाभी को इस बारे में कुछ भी नहीं पता था। तुम्हारे भैया जब बच्चों के गायब होने की जांच कर रहे थे उसी समय तुम्हारी भाभी की डिलीवरी डेट भी आ गई थी। वो अपने काम में इतने ज्यादा मशरूफ थे कि उन्हें इस समय एक मदद की जरूरत थी। आदित्य ने तब तक तुम्हारे पूरे परिवार को अपने भरोसे में ले लिया था। जब वो मदद लेने के लिए आदित्य उर्फ एडवर्ड के पास गए थे, उसी दिन तुम्हारे भैया के हाथ में वो सारे सबूत आए थे, जिससे उन्हें एडवर्ड उर्फ आदित्य की सच्चाई पता चल गई। इसके बाद तो वो बहुत डर गए थे क्योंकि एडवर्ड भी जान चुका था कि तुम्हारे भैया को उसकी सच्चाई पता चल चुकी है। उसी शाम तुम्हारी भाभी को डिलीवरी के लिए एडमिट किया गया और फिर दो दिन बाद जब उनकी अस्पताल से छुट्टी हुई तो तुम्हारे भैया तुम्हारी भाभी और बच्ची को उस एडवर्ड से बचाने के लिए ही कहीं और ले जा रहे थे। मगर पहले से तैयार एडवर्ड ने रास्ते में ही उन पर हमला कर दिया। उस समय वो अपनी पैशाचिक शक्ति के साथ था। तुम्हारे भैया के लिए उसका सामना करना कहीं से भी आसान नहीं था। उन्हें मौत के दरवाजे में छोड़कर एडवर्ड तुम्हारी भाभी और बच्ची को लेकर चला गया चला गया। उसे लगा था कि तुम्हारे भैया वहीं दम तोड़ देंगे। मगर किस्मत से उन्हें मदद मिल गई और वह अस्पताल पहुॅ॑च गए। एडवर्ड जानता था कि अगर हमारे भैया की जबान खुली तो उसका सच सबके सामने आ जाएगा। इसलिए उसे रात उसने तुम्हारे भैया को मारने की कोशिश की, मगर तुम्हारे चिल्लाने की वजह से ही वो कामयाब नहीं हो सका। इसके बाद वो आदित्य के रूप में वहॉ॑ आया और फिर उसने तुम्हारे भैया को बहुत ही दर्दनाक मौत दी। वो उस समय इन सब झमेलों में फंसना नहीं चाहता था, इसलिए उसने खिड़की के नीचे गिरकर अपने घायल होने का नाटक किया।" सृष्टि ने सारी कहानी सबके सामने खोलते हुए कहा।

"ओह गॉड! पर वो खुद को छिपा क्यों रहा था? और अंकित की भाभी और बच्ची को वो कहॉ॑ ले गया?" अनामिका ने पूछा।
"क्योंकि वो उसकी पिशाच साधना की नौंवी रात थी। उसने... दसवें दिन.... उस बच्ची की... बलि दे दी।" सृष्टि ने बड़ी ही मुश्किल से कॉ॑पती हुई आवाज में कहा।

"बलि... दे दी! मतलब?" चैतन्य ने सदमे भरी आवाज में पूछा।

"उसे अपनी पिशाच साधना पूरी करने के लिए खुद का ही खून चाहिए था। शापित होने से पहले वो अपनी वंश बेल से किसी की भी बलि दे सकता था, मगर... शापित होने के बाद उसे अपना ही खून चाहिए था और... इसी वजह से वो हर साल एक लड़की या औरत को अपने साथ ले जाता था। मगर अल्फ़ी की वजह से वो कभी कामयाब नही हो सका। मगर इन आखिरी बीस सालों में अल्फ़ी का ध्यान उसकी ओर से हट गया था। उसके लिए भी आखिरी दो मौके ही बचे थे। इसलिए दस साल पहले उसने अंकित की भाभी का इस्तेमाल किया। वो जानता था कि इन 10 दिनों में अल्फ़ी का ध्यान उसकी ओर ही होगा। पिछली बार वो वरूण की मॉ॑ को सबको धोखे में रखने के लिए ही साथ ले गया था, जबकि उसने अपना दांव बहुत पहले ही खेल दिया था। अल्फ़ी या किसी को भी इसका शक नहीं था कि शुद्ध रक्त का पैरवीकार एडवर्ड अपना मकसद पूरा करने के लिए एक साधारण इंसानी औरत को हथियार बनाएगा। उसने उसे बच्ची की बलि चढ़ा कर पिछली बार ही अपनी साधना पूर्ण कर ली है और अब वो सिर्फ और सिर्फ बदला लेने के लिए वापस आया है।" सृष्टि ने एक आह के साथ अपनी बात खत्म की।

लगातार हो रहे दिमागी धमाकों के कारण अब सभी का दिमाग भन्नाने लगा था। वो सब हर बार एडवर्ड को नीचता की जिस गहराई में पाते थे, अगली बार वो खुद को उससे भी ज्यादा गहराई में खुद ही धकेल देता था। वो नफ़रत का एक ऐसा नासूर बन चुका था, जिसके लिए अपनी ही संतान का दर्द कोई मायने नहीं रख पाया। सच तो ये था कि दूसरों की जिंदगी से खेलते खेलते वो अपनी खुद की जिंदगी को नरक बना चुका
था। वो अधम(नीच) नफरत में पूरी तरह अंधा होकर नीचता की उस गहराई में पहुॅ॑च चुका था, जहॉ॑ नीचता भी अपना अर्थ खो देती है।

"इसके अलावा और कुछ कहा उसने! इस बार क्या करने वाला है वो?" अनामिका ने सृष्टि से पूछा।

"उसने आज प्रोफेसर साहनी के सामने अपनी एक नई मांग रखी है और ये भी कहा है कि इस मांग के पूरी होने के बाद वो प्रोफेसर साहनी को आजाद कर देगा।" सृष्टि ने बताया।

"और मांगा क्या है उसने?" चैतन्य ने पूछा।

"इस बार.... उस पिशाच को... अनामिका चाहिए।" सृष्टि ने अपनी कातर निगाहें अनामिका की ओर घुमाते हुए कहा और ये सुनते ही सभी के चेहरों का रंग एक साथ उड़ गया। वहीं ये सुनकर ऊपर चुपचाप बैठे हुए अल्फ़ी की ऑ॑खें सिकुड़ी थीं।

"तो क्यों ना उसकी ये मांग पूरी की जाए!"

"उसने आज प्रोफेसर साहनी के सामने अपनी एक नई मांग रखी है और ये भी कहा है कि इस मांग के पूरी होने के बाद वो प्रोफेसर साहनी को आजाद कर देगा।" सृष्टि ने बताया।

"और मांगा क्या है उसने?" चैतन्य ने पूछा।

"इस बार.... उस पिशाच को... अनामिका चाहिए।" सृष्टि ने अपनी कातर निगाहें अनामिका की ओर घुमाते हुए कहा और ये सुनते ही सभी के चेहरों का रंग एक साथ उड़ गया। वहीं ये सुनकर ऊपर चुपचाप बैठे हुए अल्फ़ी की ऑ॑खें सिकुड़ी थीं।

"तो क्यों ना उसकी ये मांग पूरी की जाए!"

और एडवर्ड की इस नई बेतुकी मांग पर भौंचक खड़े सभी लोगों का ध्यान इन शब्दों की ओर गया। सभी ने आवाज की दिशा में देखा। अनामिका अपने दोनों हाथ सामने बांधे खड़ी उन सभी को पूरी गंभीरता से देख रही थी।
"पागल हो गई हो! क्या अंट-शंट बोल रही हो?" एडवर्ड की हिम्मत पर बिफरा हुआ चैतन्य, अनामिका पर भड़ककर बोला, जबकि ऊपर पैर लटकाए बैठा हुआ अल्फ़ी अनामिका के चेहरे को जॉ॑च रहा था।

"ठीक कह रही हूॅ॑! उसे फॅ॑साने के लिए कहीं तो चारा डालना होगा। तुम्हें क्या लगता है? तुम सब उसे ललकारोगे और वो हथियारबंद होकर तुम सबके सामने लड़ने के लिए आ जाएगा।" अनामिका ने चैतन्य की तिलमिलाहट को नज़रअंदाज़ करते हुए कहा।

"और तुम्हें लगता है कि हम सब तुम्हारी ये बचकानी सी बात मान लेंगे।" कमर पर हाथ रखे चैतन्य सभी के चेहरों को देखते हुए बोला, जहॉ॑ सभी उससे सहमत नज़र आ रहे थे।

"वो तो माननी ही पड़ेगी। शायद भूल गए हो... आई एम द लीडर!" अनामिका ने ऊंगली अपनी ओर करते हुए चैतन्य को याद दिलाने वाले अंदाज में कहा।

"ओह! तुम्हें लगता है कि मिशन कंप्लीट करने के लिए बस एक लीडर की जरूरत होती है। टीम मेंबर तो फोटो क्लिक करवाने के लिए होते हैं! हैं ना!" चैतन्य उसके चेहरे पर झुकते हुए तैश में बोला।

चैतन्य के बिगड़ते तेवर देखकर अनामिका के चेहरे के हाव-भाव भी बिगड़े ही थे कि तभी आशुतोष लपककर उनके पास आया और चैतन्य को अपने पास खींचकर उसके कान में फुसफुसाया,

"क्या कर रहे हो? औरत जात से पंगे नहीं लेते भाई। तब तो और भी नहीं... जब वो तुमसे ज्यादा स्मार्ट और समझदार हो।"

आशुतोष की बात सुनकर चैतन्य ने नाक चढ़ाए उनकी ओर होंठ भींचकर
देखा और भड़की हुई आवाज में कहा, "वाह! आपको उसे टोकना चाहिए तो उल्टा मुझे ही समझा रहे हैं। नहीं... कहना क्या चाहते हैं आप? गिफ्ट रैप करके उस एडवर्ड के हाथों में देकर आऍ॑ अनामिका को। उस कमीने को जानते नहीं हैं अभी आप लोग। हम लोगों ने झेला है उसे। पता नहीं ऐसा क्यों लगता है कि.... वो सबके दिमाग पढ़ सकता है। हमेशा चार कदम आगे की सोचता है!"

"हॉ॑ तो बैठे रहें ऐसे ही। कहीं ना कहीं से तो आगे बढ़ना ही पड़ेगा ना!" अनामिका भी उतनी ही भड़की हुई आवाज में बोली।

"तुम तो चुप ही रहो। तुम्हें तो कुछ याद होगा नहीं, जब उसने तुम्हें पकड़ लिया था। नशे में जो झूम रही थी तुम। पर मैंने देखा था... अल्फ़ी ने देखा था। उस समय तुम्हें बचाने के लिए... बस तुम्हारे लिए ही ये... ये अल्फ़ी पूरी तरह से पिशाच बन गया। और दूसरी बार... दूसरी बार तो सीधा खंज़र घुसा दिया था उसने तुम्हारी बांह में। तुम उसकी ओर से इतनी लापरवाह कैसे हो सकती हो।" चैतन्य पूरी ताकत से चिल्लाते हुए बोला। अनामिका के एडवर्ड के पास जाने की बात सुनकर ही वो पूरी तरह से उखड़ गया था।

और फिर सारे कमरे में सन्नाटा छा गया। अल्फ़ी के पिशाच बनने वाली बात सुनकर सभी की नज़रें ऊपर बैठे अल्फ़ी की ओर उठ गई और वो... 200 साल पुरानी उस बात को याद कर एक बार फिर से लाल होने लगा था।

"ओए चमगादड़! कम से कम तुम तो बोलो! उस समय तो बड़े ज्वालामुखी बने हुए थे... आज क्या हुआ?" चैतन्य ऊपर बैठे अल्फ़ी की ओर देखकर उसे उकसाते हुए चिल्लाया, जिस पर अल्फ़ी ने अपनी सुलगती हुई ऑ॑खें उसकी ओर डालीं। पर उसने कुछ कहा नहीं। उसकी भी ऐसी ढीली प्रतिक्रिया देखकर चैतन्य ने हैरानी से अपने हाथ उठाकर
झटके।

"ठीक है! करो जो करना है। लेकिन मैं पहले ही बता दे रहा... अगर उसने अनामिका को ऊंगली भी लगाई तो उसके बाद कोई मुझे दोष नहीं देगा।" चैतन्य अंगारे उगलता हुआ बोला। पिछली बार अनामिका को लेकर बोले गए एडवर्ड के शब्द उसे लगातार सुलगा रहे थे।(भाग - 119)

"ऐ भाई! शांत रहेगा तू! भड़क काहे रहा है इतना! उसे ऐसे ही भेज देंगे क्या? अरे! प्लानिंग नाम की कोई चीज होती है कि नहीं इस दुनिया में। अनामिका सही कह रही है। वो अल्फ़ी को हराने की जिद में अंधा हो चुका है और अब हमें उसकी इसी कमज़ोरी पर वार करना होगा।" वरूण ने चैतन्य की तिलमिलाहट पर आपत्ति जताते हुए अनामिका का समर्थन किया। चैतन्य ने कुढ़कर उसकी ओर देखा और फिर बाकियों की ओर नज़र दौड़ाई, जहॉ॑ उसने खुद को अकेला पाया। आखिरकार हथियार डालते हुए वो पीछे हट गया और सबसे अलग एक कोने में जाकर खड़ा हो गया। अनामिका ने उसे थोड़ी फिक्र से देखा, जिस पर आशुतोष उसे सांत्वना देते हुए चैतन्य की ओर बढ़ गया।

सीने पर हाथ बांधे खड़े चैतन्य ने जब आशुतोष को अपने पास आते देखा तो उसने अपने हाथ खोले और खुद को सहज करने की कोशिश करने लगा। हालांकि वो अभी भी आशुतोष से नज़रें चुरा रहा था।

"हॉ॑ तो भई! बात क्या है? क्यों इतना भड़क रहे हो?" आशुतोष ने चैतन्य की ओर देखते हुए पूछा।

"मुझे जो कहना था... वो मैं कह चुका।" चैतन्य ने उखड़ते हुए लहजे में कहा।

"ठीक है! जो कहना था कह चुके! अब जो नहीं कह पाए.... वो मुझे
बताओ।" आशुतोष ने भी उसे कुरेदने की कोशिश की।

"क्या सुनना चाहते हैं आप? कि मैं इतना ओवर रिएक्ट क्यों कर रहा हूॅ॑? अनामिका पर उस एडवर्ड की गंदी निगाहें आपने नहीं... मैंने देखी हैं। अभी भी वो याद करके मेरा खून खौल रहा है।" चैतन्य दॉ॑त पीसते हुए बोला।

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]

झपकते ही उसके हाथ को पकड़े उसके सामने खड़ा था। अल्फ़ी को वहॉ॑ देखकर सभी की ऑ॑खें हैरत से फट गईं। सभी ने एकदम से ऊपर की ओर देखा, जहॉ॑ एक सेकेंड पहले वो बैठा हुआ था।
जगह ख़ाली थी।

"कहा ना! ये अनामिका के लिए है।" अल्फ़ी ने चैतन्य का हाथ झटकते हुए कहा। चैतन्य ने भी त्यौंरियॉ॑ चढ़ाकर उसे देखा। एक बार फिर से उनके बीच की बढ़ती गर्मी को देखकर अनामिका तेजी से वहॉ॑ गई और उसे उठा लिया।

"पर सवाल तो सही है। ये तुम्हें मिला कहॉ॑? ये तो हमारे धरोहर संग्रह में था और वहीं से गायब हो गया था। तुम्हारे पास कैसे आया?" डॉ. अनंत ने उत्सुकता दिखाते हुए कहा।

"आप लोग आम खाइए ना! आम का पेड़ पहचानने की क्या जरूरत है? आप लोगों को ये चाहिए था और आपको ये मिल गया।" अल्फ़ी थोड़े चिढ़ से बोला।

उसकी बात सुनकर सभी ने अपनी ज़बान बंद कर लीं। अनामिका ने अपनी हथेलियों में चमकती उस चीज को हैरानी भरी नज़रों से देखा। उसी ने तो अपनी जान दॉ॑व पर लगाकर इसे हासिल किया था (भाग 109)। उसके हाथों में पिशाच का खंज़र चमक रहा था, जिसे सभी खोया हुआ मान रहे थे। अब वो उनके पास था। जीत के और भी नज़दीक होने के अहसास से अनामिका ने उसकी मूंठ पर अपनी ऊंगलियॉ॑ कस दीं।

"अरे वाह! चलो! ये समस्या भी खत्म हुई। अब वो एडवर्ड हमारे हाथों से बचेगा नहीं।" वरूण उत्साहित होते हुए बोला। उसकी बात सुनकर सभी के होंठों पर एक मुस्कान उतरी थी।

"इतना भी आसान नहीं है ये। फिलहाल अब तो नहीं।" अल्फ़ी ने उन
सभी के उत्साह पर पानी उड़ेलते हुए कहा।

"क्यों?" अनामिका ने पूछा।

"तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र!" अल्फ़ी बोला।

"क्या मतलब?" एक साथ कई आवाजें आई।

"खंज़र के गुमने के बाद उन्हें इसे लेकर डर हो गया था कि कहीं ये किसी ग़लत हाथों में ना पड़ जाए। वो अपने काम में इतने ज्यादा माहिर थे... कि खंज़र के सामने ना होने पर भी उन्होंने इस खंज़र की शक्ति को बांध दिया, जिससे कोई भी इस खंज़र का ग़लत इस्तेमाल ना कर सके।" अल्फ़ी ने सबकी ओर देखते हुए कहा।

"बांधने से तुम्हारा क्या मतलब है?" आशुतोष ने पूछा।

"यही कि... अगर आप लोगों को इस खंज़र से एडवर्ड पर वार करना है तो सबसे पहले आप लोगों को सर विलियम का शरीर खोजना होगा। एडवर्ड का पिता होने के नाते उनके शरीर का कोई भी हिस्सा... चाहे वो उनका खून हो... उनके नाखून हो... उनके बाल हों.. कुछ भी हो... उसे उस खंज़र की नोंक से छुआना पड़ेगा। इसके बाद ही ये खंज़र एडवर्ड पर काम करेगा। और सबसे बड़े दु:ख की बात ये है कि पिछले दो सौ सालों से सर विलियम का कोई सुराग नहीं मिला। पिशाच समुदाय दो सौ सालों से उन्हें ढूंढता रहा। मगर वो नहीं मिले। जैसे कि हवा हो गए हों।" अल्फ़ी ने बहुत ही अफसोस के साथ कहा।

"पर शायद... मुझे पता है कि वो कहॉ॑ हैं?"
"पर शायद... मुझे पता है कि वो कहॉ॑ हैं?"

एक बार फिर से सभी का ध्यान और नज़रें उस आवाज की ओर मुड़ी, जो एक बार फिर से अनामिका थी। उसकी बात सुनकर हैरान तो सभी थे, पर इस बार सबसे ज्यादा हैरान अल्फ़ी था।

"तुम्हें पता है! तुम कैसे जानती हो?" हैरान अल्फ़ी ने अनामिका से पूछा।

"एक मिनट! क्या उस दिन तुमने सर विलियम का पता खोज लिया था? उनके स्टडी में!" अनामिका के जवाब देने से पहले ही चैतन्य बोल पड़ा।
"हॉ॑! अगर वो आज तक नहीं मिले हैं... तो वो उनके स्टडी में ही हैं!" अनामिका ने पुरानी बात याद करते हुए कहा। (भाग -117)

"क्या बकवास है! पूरे पिशाच समुदाय ने अपनी ताकत लगा ली उन्हें ढूंढने में और तुम कह रही हो कि वो अभी भी अपने स्टडी में ही हैं।" अल्फ़ी चिढ़ के साथ बोला।

"हॉ॑! उस एडवर्ड की बदकिस्मती कि मुझे सर विलियम के गायब होने का रहस्य उसी समय पता चल गया था और मुझे पूरा यकीन है कि ये काम उसी ने किया था।" अनामिका वजनदार शब्दों के साथ बोली।

"पर उसके लिए तो कल्परूप गॉ॑व जाना पड़ेगा, वॉकर मेंशन!।" चैतन्य ने समस्या उठाते हुए कहा, जिस पर अल्फ़ी जोर से मुस्कुराया था।

"तुम क्यों मुस्कुरा रहे हो?" चैतन्य ने पूछा।

"क्योंकि... यही कल्परूप गॉ॑व है।" जवाब डॉ. अनंत कुमार ने दिया।

"क्या? यही से मतलब?" सारे के सारे भौंचक रह गए लोगों में से आशुतोष ने पूछा।

"हमारे शहर श्रीपुर का ही पुराना नाम कल्परूप है। तुम सब डायनों के बसेरे से आ चुके हो। फिर ये आश्चर्य क्यों?" डॉ. अनंत ने उन सभी की हैरानी पर हैरानी जताई।

"हे भगवान! इसलिए वो समयद्वार यहॉ॑ खुला.. क्योंकि हम हमेशा से कल्परूप में ही थे।
पर... इसका नाम क्यों बदला?" अनामिका ने आश्चर्य जताते हुए एक और सवाल किया। "कल्परूप! ये नाम अपने साथ इतनी बदनाम यादें समेट चुका था कि तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र ने ही इस जगह को नक्शे से पूरी तरह मिटाने का फैसला कर लिया था। बाहरी दुनिया में तो नाम बदलने की जानकारी नहीं दी गई। पर इस जगह के नाम को बदलने के बाद तांत्रिक श्रेष्ठ ने इसकी सीमाओं को अपनी ताकत से सील कर दिया। मतलब कि उनकी उस रेखा से बाहर जाते ही लोग कल्परूप का नाम ही भूल जाते। उन्हें बस नया नाम ही याद रहता। इस तरह धीरे-धीरे कल्परूप गॉ॑व एक किंवदंती बनकर रह गया, जो फिर कभी किसी को नहीं मिला।" डॉ. अनंत ने सबको बताया।

"तो आप कैसे जानते हैं?" हर पल हैरान होते अंकित ने पूछा।

"हम रखवाले हैं। हमें तो पता होगा ही। वरना अपने इतिहास की धरोहर कैसे संभालेंगे हम?" डॉ. अनंत ने जवाब दिया।

"तो क्या बाद में हमें भी..." चैतन्य ने कुछ कहना चाहा, जिसे उकताए हुए अल्फ़ी की आवाज ने टोक दिया।

"काम की बात पता चल गई ना! मुद्दे पर आओ!" अल्फ़ी चिढ़कर बोला। ना जाने क्यों वो पुरानी बातों को ज्यादा कुरेदे जाने पर खफा होता दिख रहा था।

"वो सही कह रहा है? नाम की कहानी बाद में जान लेंगे। फिलहाल हमारे लिए ये राहत की बात है कि हम कल्परूप में ही हैं। मुझे लगता है कि हमें सबसे पहले मेंशन में ही जाना चाहिए। एडवर्ड को खत्म करने के लिए सर विलियम के शरीर का मिलना बहुत जरूरी है। वैसे मेंशन में कोई रहता है या फिर... वो भी उजड़ गया।" अनामिका ने योजना का पहला बिंदु रखते हुए सवाल किया।

"वॉकर हॉस्पिटल के ट्रस्टी विक्टर अल्फ़्रेड वाॅकर वहीं रहते हैं।" डॉ.
अनंत ने जवाब दिया।

"ओह! मतलब कि सावधान रहना पड़ेगा।" वरूण ने कहा।

"अब तो हर कदम पर!" आशुतोष बोला।

"पर मेंशन में घुसेंगे कैसे? वहॉ॑ तो अभी भी बहुत सख़्त पहरा रहता है।" अंकित ने अपने कुछ पुराने अनुभवों को याद करते हुए कहा, जो उसे अपनी पुलिस की नौकरी में मिले थे। अंकित की बात सुनकर वहॉ॑ मौजूद सभी के चेहरे पर चिंता उतर गई थी, सिवाए तीन के।

चैतन्य ने मुस्कुराते हुए अनामिका की ओर देखा और बहुत ही इत्मीनान से बोला, "तुम्हें सारे छलद्वार याद है ना अनु!"

जवाब में अनामिका भी उसी तरह मुस्कुराई और बोली, "क्यों नहीं। शायद इसी को कहते हैं... पास्ट में किए गए इन्वेस्टमेंट का फायदा फ्यूचर में मिलना।"

"क्या मतलब?" अपने दर्द से उबर चुकी सृष्टि ने भी आखिरकार अपनी ज़बान खोली।

"जब हम पास्ट में थे... तब सबकी नज़रों से बचकर एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए अनामिका ने कई छलद्वार बनाए थे। उस समय ये नहीं सोचा था कि इस लड़ाई को अंजाम तक पहुॅ॑चाने के लिए भविष्य में वो सारे दरवाजे काम आऍ॑गे।" चैतन्य ने पुरानी बातें याद करते हुए कहा।

"हॉ॑! बस दो दरवाजे और हम सीधे स्टडी रूम में होंगे।" अनामिका ने हिसाब लगाते हुए कहा।
"और तुम दोनों को लगता है कि 200 सालों के बाद भी मेंशन में सभी चीजें वैसी की वैसी हैं। इतने सालों में बहुत कुछ बदल चुका है। अब ना तो गलियारे का वो आईना अपनी जगह पर है और ना ही मेरे कमरे कमरे का आईना।" अल्फ़ी ने उन सबके मंसूबों पर पानी डालते हुए कहा।

"ये कभी कुछ अच्छा नहीं बोल सकता क्या?" वरूण, आशुतोष के कान में फुसफुसाया, जिस पर आशुतोष ने उसे अपनी ऑ॑खों से ही घुड़का।

"तो वो आईने कहॉ॑ हैं?" अनामिका ने घबराकर पूछा।

"हम्म! अगर मैं ये कहूं कि उनमें से एक आईना यहीं है तो!" अल्फ़ी एक बार फिर से सबको चौंकाते हुए बोला। उसकी बात सुनकर सभी की ऑ॑खें नासमझी से सिकुड़ी थीं।

"मैंने अपने कमरे वाला आईना तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र को दिया था। उन्होंने भविष्य की अमानत समझकर उसे धरोहर संग्रह में रखा है। तो जाओ... ढूंढो उसे! ताकि आगे जा सको।" अल्फ़ी ने बड़ी ही लापरवाही से कहा।

और ये सुनते ही सभी हरकत में आए। डॉ. अनंत और वरूण तेजी से एक ओर गए। डॉ. अनंत ने एक बार फिर से वरूण की सहायता से अपने संग्रह का दरवाजा खोला और फिर सभी को अपने पास बुलाया। एक-एक करके सभी उनकी ओर बढ़ गए। मगर ना जाने क्यों चैतन्य अपनी जगह पर ही कुछ सोचता खड़ा रह गया।

अनामिका ने एक उखड़ी नज़र उस पर डाली कि थोड़ी देर पहले की बहस अभी भी उसके दिमाग में घूम रही थी। मगर उसे देखते ही उसे चैतन्य की अपने लिए फिक्र याद आ गई और उसका गुस्से धुऍ॑ की तरह उड़ गया। एक मुस्कुराहट के साथ वो आगे बढ़ी ही थी कि... अनामिका के आगे बढ़ते कदम रूके। उसने एक नज़र सामने की ओर डाली। सब आगे
निकल गए थे। निचले होंठ को दॉ॑तों से दबाकर वो पीछे मुड़ी। चैतन्य दीवार से टिका हुआ सीने पर हाथ बांधे जमीन को घूर रहा था। एक नज़र पीछे सब की ओर डालने के बाद वो उसकी ओर बढ़ी। वो उसके पास पहुॅ॑ची तो वो खुद में ही गुम था। अनामिका के होंठ शरारत से फड़फड़ाए और उसने थोड़ा उछलकर अपने होंठ उसके गाल पर रख दिए।

"इश्श्श्श्!" इस अचानक हमले से चैतन्य बुरी हड़बड़ा गया। उसने उस गाल पर अपना हाथ रखकर सामने देखा और उस पर अपनी शरारती मुस्कान डालती हुई अनामिका वहॉ॑ से भाग खड़ी हुई।

"चीटर कहीं की!" चैतन्य और भी चिढ़ गया। वो अपने उस गाल को पोंछने ही वाला था, कि तभी अनामिका के होंठ के स्पर्श को महसूस कर वो रूक गया। उसके होंठ भी अनामिका के ख्याल से मुस्कुराए। उसने अपने उस गाल पर हाथ फिराकर उस हाथ को चूम लिया और फिर वो भी सबकी ओर

बढ़ गया। अल्फ़ी ही बस ऐसा था, जिसने उस ओर कदम नहीं बढ़ाए थे। वो अपनी जगह पर ही था।

जल्द ही वो सभी उस अजूबे के अंदर थे, जिसे सब संग्रह कहते थे। उन सभी ने अपनी ऑ॑खें फाड़कर चारों ओर देखा, जहॉ॑ कोई भी आखिरी छोर नज़र नहीं आ रहा था। बल्कि ये तो एक नई दुनिया की तरह ही था, जहॉ॑ ना जाने क्या-क्या रखा हुआ था?

"समय कम है और जगह बड़ी है। सबको मिलकर ढूंढना पड़ेगा। अनामिका! कैसा था वो आईना?" डॉ. अनंत ने हड़बड़ी दिखाते हुए कहा।

और डॉ. अनंत के मुॅ॑ह से ये सुनते ही अनामिका ने सबको उस आईने को विवरण दिया। मगर समझ में किसी को भी नहीं आया। सबके उलझे चेहरे देखकर चैतन्य ने आसपास नज़र घुमाकर पास पड़ी एक खाली किताब उठा ली।
"ये इस्तेमाल कर सकता हूॅ॑ मैं?" उसने डॉ. अनंत से पूछा।

उनके सहमति में सिर हिलाने के बाद उसने अपनी जेब से पेंसिल निकाली, जो हमेशा ही उसके साथ रहती थी और फिर उसने उस किताब के एक खाली पन्ने को पैनी नज़र से देखा। उसने उसमें अपनी पेंसिल की नोक रखी और फिर ऑ॑खें बंद कर लीं। उसके बाद जो हुआ किसी की समझ में नहीं आया कि कैसे हुआ? उन सभी के पॉ॑च से छः बार पलकें झपकाने तक ही में चैतन्य ने उस पन्ने पर आईने की तस्वीर उकेर दी। उसकी महारत देखकर एक वरूण को छोड़कर सभी की ऑ॑खों में प्रशंसा के भाव आए थे। अनामिका ने उस तस्वीर को देखा और फिर मुस्कुरा कर सभी से कहा कि उन्हें इसी आईने को ढूंढना है। जल्द ही उस भूसे के ढेर जैसे संग्रहालय से सुई जैसे उस आईने को वरूण ने अपनी शक्तियों की मदद से ढूंढ निकाला और फिर बड़े ही घमंड से अपनी नाक में चश्मा ठीक करते हुए चैतन्य की ओर देखा। जैसे कि कह रहा हो कि बस तुम्हारी शक्तियॉ॑ ही बेजोड़ नहीं हैं। वो तो शुक्र रही कि उन दोनों के नज़रों को इस खींचातानी को किसी और ने नहीं देखा।

"तो चलें!" अनामिका ने सबकी ओर मुड़ते हुए कहा।

"यहीं से?" सृष्टि ने कहा।

"हॉ॑!"

"तुम सब चलो! मैं यहीं रूकता हूॅ॑। परिधि और गीता के पास भी किसी का रहना जरूरी है।" डॉ. अनंत ने उन सबको आगे बढ़ने के लिए कहा।

"अल्फ़ी है तो सही! वो हमारे साथ नहीं जा रहा है।" अंकित ने डॉ. अनंत की बात सुनकर कहा।
"तुम्हें क्या लगता है? उस मेंशन में जाने के लिए उसे इस जादुई दरवाजे की जरूरत पड़ेगी!" आशुतोष ने हॅ॑सते हुए कहा।

"सच कहा!" अनामिका ने भी मुस्कुराने में उनका साथ देते हुए कहा और फिर आईने की ओर बढ़ गई। उसने पीछे मुडकर आशुतोष की ओर हाथ बढ़ाया। आशुतोष ने उसका वो हाथ थाम लिया और पीछे देखा। वरूण खड़ा था। आशुतोष ने अपना दूसरा हाथ उसकी ओर बढ़ाया, जिसे वरूण ने थाम लिया। इसी तरह सभी ने एक चेन सी बना ली, जिसमें सबसे आखिर में चैतन्य था। फिर अनामिका ने आगे बढ़कर उस आईने को छुआ और अपनी ऑ॑खें बंद कर उस स्टडी के बारे में सोचा। उसके ज़हन में स्टडी की तस्वीर आते ही वो आईना पानी की तरह लहराने लगा। अनामिका ने ऑ॑खें खोलकर सबसे पहले उसमें अपना हाथ डाला और फिर आगे बढ़कर उसमें घुस गई। उसके पीछे-पीछे सभी उस आईने के अंदर चले गए। उनके अंदर जाते ही डॉ. अनंत संग्रहालय से बाहर आए और फिर गीता और परिधि पर एक नज़र डालकर उनके पास की कुर्सी में बैठ गए। सबके अनुमान के अनुसार अल्फ़ी वहॉ॑ मौजूद नहीं था।

जल्द ही वो सभी अनामिका का हाथ थामें एक शानदार कमरे की दीवार से बाहर निकले। अनामिका और चैतन्य ने ऑ॑खें फाड़-फाड़कर उस कमरे को देखा। उनके लिए तो वो इस कमरे में एक दिन पहले ही आए थे... पर वास्तव में उस कमरे ने दो सौ सालों के बाद उन दोनों का स्वागत किया था। आश्चर्यजनक रूप से ये कमरा आज भी बिल्कुल वैसा ही था, जैसा उन्होंने दो सौ साल पहले देखा था। बस समय के साथ बैठने के फर्नीचर, पर्दे और रोशनी के जरिए बदल गए थे। बाकी कमरे का रंग और रखरखाव आज भी बिल्कुल वैसा ही था। अनामिका और चैतन्य के ज़हन में इस कमरे से जुड़ी सारे यादें दस्तक देने लगीं। उन दोनों को तो एक बार फिर से अतीत

में होने का भ्र होने लगता, मगर दूसरों की मौजूदगी ने उनके भ्रम को पनपने का समय नहीं दिया। वो अभी कमरे में आगे बढ़ते.. उसी
समय एक आवाज उन सभी को सुनाई दी।

"वेलकम अगेन!"

भाग 152

"वेलकम अगेन!"

और इस आवाज को सुनकर सभी अपनी-अपनी जगह से उछल से गए। आवाज एक अंधेरे कोने से आ रही थी, जहॉ॑ बहुत ही ग़ौर से देखने पर ही किसी के होने का पता चल रहा था और इसीलिए छलद्वार से बाहर निकलने से पहले पूरे कमरे में अनामिका के मुआयने में कमी रह गई।

"क्या लगता है? हम फॅ॑स गए हैं?" वरूण, मुकुल के कानों में फुसफुसाया।

"नहीं! वो गुड लक के लिए... हमें दही-शक्कर खिलाने आया है।" मुकुल भी उसी के अंदाज में फुसफुसाया। जवाब में वरूण ने उसकी ओर अपनी तिरछी तीखी नज़र डाली।

सभी सामने कोने में सिमटे उस अंधकार को घूरकर देख रहे थे, जैसे कि उनकी ऑ॑खों की रोशनी से ही वहॉ॑ उजाला हो जाएगा।

"क्या बात है! चैतन्य-अनामिका! यही नाम है ना तुम्हारा!" एक बार फिर से उसी अंधेरे कोने से आवाज आई।
"कौन हो तुम?" अनामिका ने कहते हुए अपने कदम आगे बढ़ाए, जिस पर चैतन्य ने झट से उसकी कलाई पकड़कर उसे रोका। अनामिका के उसकी ओर देखने पर उसने सिर हिलाकर आगे बढ़ने से मना किया।

"ये तो मुझे पूछना चाहिए। मेरे ही घर में चोरों की तरह घुस आए हो और मुझसे ही पूछ रहे हो.... कि मैं कौन हूॅ॑!" अपनी बात खत्म करते-करते वो शख़्स अंधेरे की चादर फेंककर उजाले में आ गया।

"विक्टर अल्फ़्रेड वाॅकर!" मुकुल के होंठों से निकला और ये नाम सुनकर सभी के कान खड़े हुए। सामने खड़ा शख़्स बहुत ही कमजोर नज़र आ रहा था।

"हॉ॑! मैं!" उसने मुस्कुराकर कहा, जिससे उसके पिचके हुए गालों की सेहत पर कोई असर नहीं पड़ा।

"ऐसा क्यों लग रहा है कि हमारा ही इंतजार कर रहे थे आप! नई!" आशुतोष ने उसे संदेह से देखते हुए कहा।

"बिल्कुल! सही समझा आपने!" विक्टर ने भी ढीली-ढाली आवाज में जवाब दिया।

"ओह! लगता है कि हमारे लिए पहले से ही जाल बिछा रखा है। मैंने कहा था कि इस एडवर्ड को सब पहले से ही पता चल जाता है।" चैतन्य ने चौकन्नी निगाहें चारों ओर डालते हुए चिढ़ी हुई आवाज में कहा।

"क्या कहा? जाल!" कहकर विक्टर ने एक जोर का ठहाका लगाया, जो उसके लिए ही तकलीफ़देह हो गया, जब कुछ देर की हॅ॑सी में ही वो हॉ॑फने लगा।
"आप ठीक तो है। आपकी सेहत कुछ सही नहीं लग रही है।" मुकुल ने विक्टर के सामने आकर कहा।

जवाब में विक्टर एक खीझी हुई हॅ॑सी के साथ बोला, "मेरी हालत देखकर तुम्हें क्या लगता है? कैसा हो सकता हूॅ॑ मैं?"

विक्टर के सवाल ने मुकुल को सोच में डाल दिया। उसने कुछ दिन पहले ही प्रोफेसर साहनी के स्टडी में उसे देखा था।(भाग -20)। मगर इस समय उसे देखकर मुकुल की ऑ॑खें यकीन नहीं कर पा रही थीं। मुकुल ने जब उसे प्रोफेसर साहनी के स्टडी में देखा था, तब वो भरे-पूरे शरीर का बहुत ही खूबसूरत नौजवान था और अभी वो किसी तपेदिक के मरीज की तरह पीला और सूखा हुआ लग रहा था। उसके हाथ-पैर भी कुछ कॉ॑पते हुए से दिखाई दे रहे थे। कुछ दिनों में ही किसी का इतना बदल जाना समझ के परे था।

हालांकि विक्टर ने अपनी तरफ से ऐसी कोई भी कोशिश नहीं की थी, जिससे उन्हें उस पर संदेह होता। मगर सृष्टि को उस पर संदेह था। वो उसके और प्रोफेसर साहनी के बीच के सहयोगी संबंधों के बारे में अच्छी तरह से जानती थी।

"मुझे मदद..... चाहिए!" विक्टर ने हांफती हुई आवाज में कहा और फिर वो एकदम से ही जमीन पर ढह गया। पहले कुछ देर तो सभी सॉ॑से रोके उसे देखते रहे... जैसे कि उसकी अचानक होने वाली अगली कार्यवाही का इंतजार कर रहे हों। पर ज्यादा समय गुजरने के बाद भी जब उसके शरीर में कोई हलचल नहीं हुई, तो आशुतोष और वरूण उसकी ओर बढ़े। चैतन्य ने अनामिका के हाथ को और भी कसकर पकड़ते हुए अपने और भी नजदीक किया था। वो सब जानते थे कि एडवर्ड, अनामिका पर घात लगाए बैठा है और चैतन्य ऐसा हर्गिज नहीं चाहता था।
जैसे-जैसे समय आगे बढ़ रहा था... ना जाने क्यों उसके दिल में एक अंजाना सा डर बैठता जा रहा था। वो ऐसे किसी कारण को अनामिका के पास फटकने भी नहीं देना चाहता था, जो उन दोनों को एक-दूसरे से दूर ले जाए। मगर वो ये भी जानता था कि ये मुमकिन नहीं है। अनामिका को इस लड़ाई की अगुवाई करनी थी और वो इस काबिल भी थी। वो उसकी काबिलियत के फौलाद पर अपनी हद से ज्यादा परवाह की जंग नहीं चढ़ाना चाहता था और वो इसी दोराहे पर बेचैनियों का शिकार हो गया था। एक राह पर सभी उसकी ओर ऊंगली उठाए खड़े थे और दूसरी राह पर वो खुद अपने लिए ढेर सारे सवाल लिए खड़ा था और फिर आखिरकार उसने खुद को हवाओं के साथ छोड़ने का फैसला करते हुए अनामिका का हाथ छोड़ दिया। उसे ऐसा लगा... जैसे कि वो अंदर से खाली होता जा रहा हो। उसने अपने हाथों को देखा और कुछ कदम पीछे हो गया कि उसे पीछे ही रहना था। अनामिका ने उसका दूर जाना महसूस किया, तो पलटकर उसकी ओर देखा, जहॉ॑ चैतन्य ने अपनी मुस्कुराहट के साथ उसे आगे बढ़ने का इशारा किया।

"क्या ये ठीक है?" अनामिका ने विक्टर की ओर देखते हुए आशुतोष और वरूण से पूछा।

"नहीं! ये देखो!" आशुतोष ने उन सभी को पास आने का इशारा करते हुए कहा। वो सभी तेजी से उनके पास पहुॅ॑चे और ध्यान से विक्टर की ओर देखने लगे।

"इस तरफ देखो!" वरूण ने विक्टर के गले के निचले हिस्से की ओर इशारा करते हुए कहा। उन सभी ने ध्यान से देखा। वहॉ॑ कुछ फासले पर दो गहरे गड्ढे बने हुए थे। उन गड्ढों के आसपास की त्वचा सूजी हुई थी, मगर खून का कोई नामोनिशान नहीं था।

"क्या है ये?" अंकित ने पूछा।
"ये तो वैंपायर बाइट्स हैं।" सृष्टि उन निशानों को ध्यान से देखते हुए बोली।

"वैंपायर बाइट्स! ये क्या बला है?" अंकित ने पूछा।

"पिशाच के दॉ॑तों के निशान।" मुकुल ने जवाब दिया।

"तो क्या... इसका मतलब है कि..." अंकित ने अपनी ऑ॑खें फैलाते हुए बात अधूरी छोड़ी।

"हॉ॑! किसी ने इसका खून पिया है।" सृष्टि ने कहा।

"पर एक पिशाच का खून कौन पिएगा?" वरूण ने सिर खुजलाते हुए कहा।

"शायद... दूसरा पिशाच!" पीछे खड़े चैतन्य ने जवाब दिया।

और ये सुनते ही सभी ने उसकी ओर अजीब सी नज़रों से देखा, जैसे कि इससे ज्यादा अजीब बात उन सब ने पहले कभी ना सुनी हो।

"कुछ भी! कोई पिशाच... कैसे किसी पिशाच का खून पी सकता है?" वरूण ने चैतन्य की बात को हवा में उड़ाते हुए कहा।

"जैसे दिख रहा है।" चैतन्य ने कहा।

"बकवास! कुछ और ही बात है।" वरूण एक बार फिर से उससे उलझा।

"हॉ॑ तो ठीक है ना! बैठकर एक लंबी सी चर्चा करते हैं कि आखिर इस
मिस्टर विक्टर का ये हाल कैसे हुआ? तब तक... जब तक की कोई मुसीबत हमारे सिर पर आकर बैठ ना जाए। चलेगा!" चैतन्य उसकी ओर गर्म तेवरों के साथ बढ़ा। हर बार अपनी बात काटा जाना उससे सहन नहीं हुआ था। सबने एक बार फिर से उनके बीच के खींचातान को महसूस कर लिया था।

"मुझे लग रहा है कि चैतन्य सही कह रहा है।" सृष्टि गर्म होते माहौल में चैतन्य और वरूण के बीच आते हुए बोली।

"तुम्हें भी ऐसा लग रहा है।" आशुतोष ने पूछा।

"जी हॉ॑! मेरे ख्याल से मुकुल ने भी दो-तीन दिन पहले मिस्टर विक्टर को देखा होगा। उस दिन तो ये बहुत अच्छी हालत में थे। इतनी जल्दी एक खाते-पीते और भरे-पूरे इंसान का सूखे पेड़ की तरह ढह जाना अजीब बात नहीं लग रही है। प्रोफेसर साहनी ने ये भी कहा था कि परिधि के हाथ से निकल जाने पर मिस्टर विक्टर बहुत ज्यादा नाराज थे। वो उसे पाने के लिए बहुत ही ज्यादा उतावले थे। इनका कहना था कि उस परिधि को हासिल करके ही पिशाच समुदाय अपने श्राप से मुक्त हो सकता है। हालांकि अब ये श्राप कैसा है... ये तो मुझे भी नहीं पता है।" सृष्टि ने जानकारी देते हुए कहा।

"सृष्टि सही कह रही है।" मुकुल ने भी उसका समर्थन करते हुए कहा।

"कसम से ना! यहॉ॑ इतना रायता फैला हुआ है... कि समेटे नहीं सिमट रहा है।" अंकित की उकताई हुई आवाज आई।

"तो फिर समेटते हैं।" अनामिका ने खड़े होते हुए कहा।

"प्लान क्या है?" आशुतोष ने पूछा।
"मुकुल! सबसे पहले तुम और सृष्टि बाहर जाओ और दरवाजे के बाहर नज़र रखो। तुम दोनों पिशाच हो इसलिए तुम पर उन्हें जल्दी शक नहीं होगा। वरूण और अंकित! तुम दोनों इन मि. विक्टर को संभालो! शायद आगे ये हमारे काम आऍ॑। चैतन्य और आशुतोष जी! हम तीनों उस काम को करते हैं, जिसके लिए यहॉ॑ आए हैं।" अनामिका ने उन सभी को योजना समझाते हुए कहा।

"मतलब कि मि. विलियम को ढूंढना!" चैतन्य ने कहा।

"मि. विलियम को नहीं... उनके शरीर को ढूंढना है। उस दिन हम दोनों ने देखा था कि यहॉ॑ कितना खून फैला हुआ था। उतना खून बहने के बाद कोई जीवित नहीं रह सकता। उस समय हमने उन्हें ढूंढ निकाला होता, तो शायद वो जीवित बच गए होते। पर हालात ऐसे बद से बद्तर होते गए कि ये बात ही हमारे ध्यान से निकल गई।" अनामिका ने उस बड़ी खिड़की की ओर बढ़ते हुए कहा और फिर वो वहॉ॑ पहुॅ॑चकर रूक गई।

"इस खिड़की के पास क्यों रूक गई? अगर कोई छिपा दरवाजा होगा, तो किसी दीवार में होना चाहिए।" हैरानी से उस खिड़की की ओर देखते हुए चैतन्य ने अपनी नज़रें दूसरी ओर घुमाई।

"लेकिन दरवाजा यहीं पर है। मैंने उसी दिन खोज लिया था, पर एडवर्ड के आने से सब काम

अधूरा रह गया।" अनामिका ने जवाब देते हुए कहा।

"तो कहॉ॑ हैं वो दरवाजा?" आशुतोष ने पूछा।

"मुझे बस इतना ही याद है कि.... यहीं कहीं है। मतलब कि दिखाई नहीं देता। हमें टटोलते हुए ढूंढना पड़ेगा। की होल की तरह है।" अनामिका ने उन दोनों को बताते हुए कहा।
और फिर अनामिका के बताए हुए एक खास हिस्से में वो तीनों ही उस जगह की तलाश करने लगे।
कुछ देर की मेहनत के बाद आशुतोष को वो की होल मिल गया। अनामिका ने उसे छूकर देखा, तो वहीं था।

"हॉ॑! यही है!" अनामिका ने उत्साहित होते हुए कहा।

"तो फिर जल्दी करो! इससे पहले कि कोई आ जाए।" आशुतोष ने जल्दबाजी दिखाते हुए कहा।

"अनामिका! एक मिनट! वो चाबी कहॉ॑ हैं?" चैतन्य ने अनामिका को झटका देते हुए पूछा।

"वो चाबी! वो तुम्हारे पास नहीं है?" अनामिका ने पलटकर सवाल किया।

"नहीं! वो मेरे पास नहीं है। वो तो उस दिन... तुम्हारी और हेममाया की तलाश करते समय अल्फ़ी के पास थी। फिर वो उसी के पास रह गई... शायद!" चैतन्य ने पुरानी घटना को याद करते हुए कहा।

"हे भगवान! तुम दोनों भी ना! इतना खतरा उठाकर हम यहॉ॑ आ गए हैं। हमें वो जगह भी मिल गई। लेकिन चाबी ही गायब! अब क्या करें? कहॉ॑ ढूंढे उसे अल्फ़ी को?" आशुतोष उन दोनों पर भड़कते हुए बोला।

"ये कोई भूलने वाली बात तो नहीं है। फिर अल्फ़ी ने जब तुम्हें वो खंज़र दिया... तो वो चाबी क्यों नहीं दी। जबकि वो जान रहा था कि ऐसी किसी खोज में निकलने पर हमें उसकी जरूरत पड़ेगी ही।" चैतन्य ने भुनभुनाते हुए कहा।

"भूल गया होगा!" अनामिका ने अल्फ़ी की गलती पर रोगन चढ़ाते हुए
कहा।

"कोई भूला नहीं है वो! बल्कि बहुत स्याणा हो गया है। मुझे बहुत देर से लग रहा है... कि वो हमसे कुछ... नहीं! बहुत कुछ छिपा रहा है।" चैतन्य ने भन्नाई हुई आवाज में कहा।

"वो क्या छिपाएगा? उसके बारे में तो हम सबकुछ जानते हैं। उसके पास छिपाने के लिए और है ही क्या?" अनामिका ने बेयकीनी से कहा।

"इसके बारे में ना... घर में जाकर बात करते हैं। फिलहाल अभी क्या करें? ये सोचो!" आशुतोष ने उन दोनों को ही चपत लगाते हुए कहा।

"मुझे नहीं पता! अपनी लीडर से पूछिए!" चैतन्य ने बहुत ही चिढ़ के साथ कहा।

और यहॉ॑ अनामिका लाजवाब हो चुकी थी। ये तो ऐसा था... जैसे कि पानी की तलाश में महीनों प्यासे भटकने के बाद समंदर के किनारे आ खड़े होना। कि मालूम है कि क्या करना है... पर कर नहीं सकते। ना जाने क्या सोचकर आशुतोष ने अपनी भू-शक्ति का स्मरण किया, मगर हुआ कुछ नहीं। वो सब अभी इसी उधेड़बुन में ही थे कि तभी उन सभी को बाहर से कुछ तेज आवाजें सुनाई दीं।

"ये क्या हुआ?" वरूण की आवाज आई।

और फिर चैतन्य, अनामिका और आशुतोष तीनों ही तेजी से वरूण और अंकित के पास आ गए। वो दोनों अभी भी विक्टर के बेहोश शरीर को संभाले हुए थे। आशुतोष, अनामिका और चैतन्य ने वरूण, अंकित और विक्टर को अपने पीछे किया और तीनों सी आक्रमण की मुद्रा में खड़े हो गए।
"हमें जाकर देखना चाहिए! सृष्टि और मुकुल बाहर ही हैं।" चैतन्य ने आगे बढते हुए कहा।

"मैं भी आती हूॅ॑!" अनामिका ने भी तेजी से उसकी ओर कदम बढ़ाए।

आशुतोष या कोई और आगे कुछ कहते उससे पहले ही दरवाजे के बाहर एक तेज धमाका हुआ और उस दरवाजे के परखच्चे उड़ गए। चैतन्य ने तेजी से पीछे आकर अनामिका को अपने पीछे छिपाया था। वो तो सुरक्षित बच गई, मगर चैतन्य को पीठ की तरफ बहुत चोटें आई गई थी। अभी वो खुद को संभाल ही रहा था कि तभी कुछ गार्ड्स तेजी से उस कमरे में दाखिल हुए। उन गार्ड्स को देखते ही सभी अपनी जगह पर तनकर खड़े हो गए। और फिर उन्हें अगला झटका लगा, जब उन्होंने दरवाजे पर एक अधेड़ उम्र के आदमी को खड़ा देखा। आशुतोष, चैतन्य और अनामिका के लिए ये चेहरा पूरी तरह से अनभिज्ञ था। मगर वरूण की यादों में कहीं किसी परिचय ने दस्तक दी।

"प्रोफेसर साहनी!" वरूण के मुॅ॑ह से निकला और ये सुनते ही सभी ने हैरान-परेशान नज़रों से बारी-बारी से उन दोनों की ओर देखा।

"बिल्कुल सही पहचाना बरखुरदार! मेहमानों का स्वागत करने के लिए किसी को तो आना ही था।
चाहे मेहमान कैसे भी हों?" प्रोफेसर साहनी ने मखमल में पत्थर लपेट कर मारने वाले अंदाज में कहा।

"मुकुल और सृष्टि कहॉ॑ हैं?" चैतन्य ने एक और आशंका के साथ सवाल किया।

"वहीं... जहॉ॑ उन गद्दारों को होना चाहिए। अब तुम सभी की बारी।" प्रोफेसर साहनी ने मक्कारी भरी मुस्कराहट के साथ कहा।
"ऐसा कभी नहीं होगा।" कहते हुए चैतन्य ने उन सबकी ओर अपना वार किया। मगर वो सभी बुरी तरह से हैरान रह गए, जब उसकी ताकत ने काम नहीं किया। वो हैरान-परेशान सा अपने हाथों को देखता रह गया।

"तुम्हें क्या लगता है? 200 सालों तक ये कमरा यूंही लावारिस पड़ा हुआ है। हमें पता था कि तुम दोनों वापस इस कमरे में लौटकर जरूर आओगे, इसलिए बहुत पहले ही इस कमरे के अंदर ऐसी ताकतों के प्रयोग पर पाबंदी लगा दी गई है। बस तुम्हारे आने का रास्ता ही छोड़ दिया गया, ताकि तुम आ सको।" प्रोफेसर साहनी ने कुटिलता से मुस्कुराते हुए कहा।

प्रोफेसर साहनी की बात सुनकर कमरे में सन्नाटा छा गया। सृष्टि और मुकुल का दुश्मन के हाथ लग जाना उनके लिए आघात की तरह था। दुश्मन को लग रहा था कि वो जीत गया, मगर चैतन्य के दिमाग ने अभी एक और चाल बचाकर रखी थी। अपने दॉ॑तों को पीसते हुए वो पीछे गया और फिर विक्टर को अपने शिकंजे में लेकर बोला, "हमारे साथी हमारे हवाले करो.. वरना तुम्हारा साथी भी खतरे में आ जाएगा।"

और चैतन्य की ये योजना काम करती दिखाई दी थी। विक्टर को चैतन्य के चंगुल में देखकर प्रोफेसर साहनी के जबड़े कसे थे। मगर ना जाने क्यों उसने ज्यादा बेचैनी जाहिर नहीं की।

"हमें इससे कोई मतलब नहीं है। कम से कम इसके बदले में तो हम उन दोनों गद्दारों को नहीं छोड़ेंगे। तुम्हें जो करना है कर लो।"प्रोफेसर साहनी ने कहा, मगर उसके लफ़्ज़ों में छिपी हिचकिचाहट चैतन्य से ना छिप सकी।

"तुम्हें मतलब नहीं होगा। मगर तुम्हारे उस छद्म-पिशाच को तो है। अगर वो ही इसका खून पी रहा है और आज आखिरी दिन से पहले तक ये जिंदा है, तो उस एडवर्ड को कल भी इसके खून की जरूरत पड़ेगी। तो
अगर ये चाहिए... तो हमारे साथी हमारे हवाले करो।" चैतन्य ने भड़कते हुए चिल्लाकर कहा।

"वो दोनों तो नहीं मिलने वाले। वैसे भी वो दोनों अब यहॉ॑ नहीं हैं। तो इस सौदे का कोई मतलब भी नहीं है।" प्रोफेसर साहनी ने गुर्राते हुए कहा।

चैतन्य ने आगे कुछ कहना चाहा उससे पहले ही कान को फाड़ने वाली तेज और कर्कश आवाज ने उन सभी को खिड़की की ओर देखने को मजबूर कर दिया। अपनी फैली हुई ऑ॑खों से उन्होंने बाहर सैकड़ों चमगादड़ों को उड़ते हुए देखा, जो बाहर जलते लैंपशेडों की लाइट में बहुत ही भयानक लग रहे थे। अपनी परेशानी के बीच उन्होंने ध्यान नहीं दिया कि प्रोफेसर साहनी और उनके गार्ड्स भी उतनी ही हैरानी के साथ खड़े खिड़की को निहार रहे थे।

"अनामिका! द्वार खोलो! बाहर निकलो यहॉ॑ से।" चैतन्य चिल्लाया।

"पर वो दोनों!" अनामिका ने कहना चाहा।

"वो ठीक कह रहा है अनामिका। हम यहॉ॑ से सुरक्षित निकल जाऍ॑ तो उन्हें बचाने का जुगाड़ लगा सकते हैं। चलो यहॉ॑ से। इस नई मुसीबत से उलझना ठीक नहीं होगा।" अनामिका को छलद्वार की ओर ढकेलते हुए आशुतोष ने कहा।

अनामिका ने भी नाज़ुक मौके को पहचान कर उनकी बात मानी और तेजी से छलद्वार के पास जाकर उसे सक्रिय कर दिया। उसके बाद एक-एक करके सभी वहॉ॑ से बाहर निकलते गए।

स्टडी रूम में पहुॅचते ही वरूण और अंकित, विक्टर को डॉ. अनंत के पास ले गए। वो और परिधि तेजी से उसके ईलाज में लग गए।
वहीं स्टडी में वापस आने के बाद चैतन्य के गुस्से का बांध टूट गया। वो इतनी जोर से मुट्ठियां बांधकर चिल्लाया कि वहॉ॑ सबको हवाओं की रफ्तार बिगड़ती हुई महसूस हुई।
अनामिका ने उसके पास जाकर उसके कंधे पर हाथ रखा, जो अब सिर झुकाए गहरी-गहरी साॅ॑सें ले रहा था।

"हम बेवकूफ जिस काम से गए थे... वो तो हुआ नहीं, अपने साथी भी खो आए हम!" चैतन्य भड़की हुई आवाज में चिल्लाया।

"हम उन्हें वापस ले आऍ॑गे।" आशुतोष ने भी उम्मीद भरी आवाज में कहा।

"हॉ॑ बस यही तो करना रह गया है। हम मंजिल तक पहुॅ॑चकर भी खाली हाथ लौट आए हैं और इसका मतलब आपको पता है।" चैतन्य एक बार फिर चिल्लाया।

"मुझे पता है!" एक आवाज आई।

और सभी ने उस ओर देखा। अल्फ़ी एक बार फिर से रोशनदान पर पैर हिलाते हुए आराम से बैठा हुआ था। उसे इस तरह बेफिक्री से बैठा हुआ देखकर चैतन्य का पारा और भी गरम हुआ था। एक वही तो था, जिसकी वजह से ऐसा हुआ। यदि उसने चाबी उन्हें दे दी होती, तो कम से कम उनका एक काम तो पूरा हो ही गया होता। मगर वो हारे हुए से खाली हाथ खड़े थे और उनकी इस नाकामयाबी की वजह चैतन्य साफतौर पर अल्फ़ी को ही मान रहा था। कोई और हो भी कैसे सकता था।अल्फ़ी एक ओर इत्मीनान से खड़ा उन सभी की कार्यवाही देख रहा था, जो अब मेंशन में घुसने की जुगत लड़ा रहे थे। सबसे अलग-थलग वो अपनी ही धुन में था। ना जाने क्या सोचता हुआ? बहुत कुछ था जो उसके अंदर चल रहा था, मगर उसने सब कुछ दिल की गहराईयों में दबाकर रखा था। समय के खेल में उलझा हुआ वो बस समय के सही होने का इंतजार कर रहा था, जो सही होने का नाम नहीं ले रहा था।

वो सब मेंशन जाकर सर विलियम को ढूंढने वाले थे। इसका मतलब ये था कि कुछ ऐसा भी था, जिसकी उन्हें जरूरत पड़ने वाली थी। अल्फ़ी ने अपनी जेब में हाथ डाला और उस चीज को बाहर निकाला। वही चाबी, जिसने अतीत में ना जाने कितनी बार उनकी मदद की थी, उसके हाथ में चमक रही थी। एक लंबी और गहरी सॉ॑स लेकर उसने अनामिका की ओर देखा। मगर वो वहॉ॑ नहीं थी। उसने आगे बढ़ते सभी लोगों की ओर देखा। वो वहॉ॑ भी नहीं थी। उसकी तलाश में उसने अपनी नज़रें घुमाई और उसे अनामिका खुद में गुम खड़े चैतन्य की ओर जाती हुई दिखाई दी। वो उनकी ओर देख ही रहा था कि तभी अनामिका ने वो हरकत कर दी। अल्फ़ी का दिल धक्क करके रह गया, जब उसने होंठों पर खिली हुई मुस्कान के साथ अनामिका को भागते देखा और फिर चैतन्य की प्रतिक्रिया उसे और भी सुलगा गई।
एक ज्वालामुखी था उसके अंदर, जो सदियों से सोया हुआ था। मगर बीते कुछ समय से वो अब धधकने लगा था, जिसकी तपिश उसे हर पल जला रही थी और ये देखने के बाद तो जैसे उस ज्वालामुखी ने अब अपना मुॅ॑ह ही खोल दिया था, जो बहुत कुछ जलाने को आतुर था। फिलहाल तो उसका दिल जल रहा था और दिलजला जो कर गुजरे वो कम ही है। भिंचे हुए जबड़े के साथ उसने वो चाबी वापस अपनी जेब में रख ली। उसके सोचने की दिशा बदल चुकी थी और अब वो उसी बदली हुई दिशा में चलने वाला था। सबके वहॉ॑ से जाने तक वो इंतजार करता रहा और फिर कदम पीछे रखते हुए उछलकर उसी रोशनदान को खोलता बाहर चला गया।

वो जानता था कि दुश्मन को पहले से ही पता है कि वो वहॉ॑ जरूर जाऍ॑गे। इसलिए वो पहले से ही घात लगाकर बैठे होंगे और उसे बस दूर से उन पर नज़र रखना था। वो अब उन पर नज़र

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कहा और ये सुनते ही अल्फ़ी की ऑ॑खें सिकुड़ी थीं।

"क्या मतलब?" अल्फ़ी बुरी तरह से चौंकते हुए बोला।

"यही कि... अगर तुम हमारे साथ हो जाओ तो तुम्हें तुम्हारी माया वापस मिल सकती है, तुम्हारी... हेममाया। क्योंकि उसकी वापसी का राज पिशाच श्रेष्ठ को मालूम है।" प्रोफेसर साहनी ने एक और पत्ता फेंका।

उसकी बात सुनता हुआ अल्फ़ी ये सुनकर आपे से बाहर होने को ही था कि तभी उसके बिगड़ते मिजाज को पहचान कर प्रोफेसर साहनी ने कहा, " तुम्हें लग रहा है कि हम तुमसे मजाक कर रहे हैं। पर ऐसा नहीं है। ये पिशाच श्रेष्ठ का तुम्हारे लिए संदेश है। तुम्हारी माया की आत्मा का रहस्य उन्हें किसी और ने नहीं.. बल्कि माया ने ही बताया था। तुमने "वंश बेल" प्रक्रिया के बारे में सुना ही होगा और पिशाच श्रेष्ठ को पता है कि इसके लिए हेममाया को वापस लाने के लिए जो चाहिए... वो कहॉ॑ मिलेगा? वो जीवपात्र... जो सुरमी कबीले के पास था और जिसे तुमने ना जाने कितने तिकड़मों के बाद उनसे हासिल किया था। बस वो ही एकमात्र जरिया नहीं था तुम्हारी माया को वापस लाने का। कुछ और भी है... जो तुम्हें तुम्हारा प्यार वापस दिला सकता है। बस उसके लिए तुम्हें उनकी बात माननी होगी।"

"और तुम्हें लगता है कि मैं उस धोखेबाज की बात पर यकीन कर लूंगा। तुम्हें मैं इतना बेवकूफ लगता हूॅ॑!" अल्फ़ी ने प्रोफेसर साहनी की बात काटते हुए कहा।

"देखो! मुझे बस तुम्हें उनका संदेश देना था। अभी तो इसमें कुछ और भी है। शायद वो सुनने के बाद तुम बेहतर फैसला कर सको।" प्रोफेसर साहनी ने इस बार बहुत ही आत्मविश्वास के साथ कहा।
"और वो क्या है?" अल्फ़ी ने पूछा।

"तुम्हारी बेटी! और तुम अगर हमसे हाथ मिला लो... तो तुम्हें वो भी मिल सकती है। सोच लो! तुम्हारा पूरा हॅ॑सता-खेलता परिवार तुम्हें फिर से मिल सकता है।" प्रोफेसर साहनी ने अपना आखिरी दांव खेला।

"ओह! अच्छा! और इसके बदले में क्या चाहिए उसको?" अल्फ़ी ने बेटी के जिक्र पर थोड़ी नर्मी से पूछा।

"अनामिका! अनामिका चाहिए उसे।" इस बार प्रोफेसर साहनी ने बिना डरे कहा।

मगर अनामिका का जिक्र आते ही अल्फ़ी की रगों का खून एक बार फिर से उबाल मारने लगा और वो खतरनाक इरादों के साथ प्रोफेसर साहनी की ओर बढ़ा।

"हॉ॑! वही अनामिका.. जो तुमसे नहीं.... उस चैतन्य से प्यार करती है।" प्रोफेसर साहनी ने बिना कोई देरी किए कहा और इस बार आगे बढ़ता हुआ अल्फ़ी एकदम से रूका। ये सुनकर उसे सचमुच बहुत चोट लगी थी। उसे एक-एक करके अनामिका और चैतन्य की नजदीकियॉ॑ याद आ गईं और वो बुरी तरह से सुलगने लगा।

उसके अंतर्मन की लड़ाई को महसूस करके प्रोफेसर ने तुरंत ही मौका लपका और जाल फेंकते हुए बोला, "सोच लो! एक बूंद बचाने के चक्कर में कहीं दरिया से ही महरूम ना रह जाओ। अब फैसला तो तुम्हें ही करना है। तुम्हें अनामिका चाहिए या फिर अपनी हेममाया!"

और यहॉ॑ अल्फ़ी को अपना दिल खुद के ही हाथों से फिसलता हुआ
महसूस हुआ। मगर वो एडवर्ड पर भरोसा कैसे कर सकता था? अपने दिल को संभालते हुए उसने बड़ी ही मुश्किल से कहा, "और ऐसा क्या है तुम्हारे पास कि मुझे तुम पर यकीन करना चाहिए?"

"ये देखो! शायद... तुम्हारे दिल को यकीन हो जाए। मुझे पूरा यकीन है कि तुम पहचान जाओगे... तुम्हारा दिल पहचान जाएगा।" प्रोफेसर साहनी ने उसकी तरफ कुछ बढ़ाते हुए कहा।

अल्फ़ी ने उसके बढ़े हुए हाथों की ओर देखा और फिर वो उसके हाथों से ले लिया। वो एक तस्वीर थी। एक लड़की की तस्वीर! उसे देखते ही अल्फ़ी का दिल जोर से धड़का था क्योंकि

उस तस्वीर में कुछ ऐसा भी था, जिसे वो अच्छी तरह से पहचान गया था।

"यही तुम्हारी बेटी है और मुझे दु:ख है कि अब ये भी जीवित नहीं है। जब तक इसके बारे में पता चला, देर हो चुकी थी।" प्रोफेसर साहनी ने इस बार बहुत ही धीमी आवाज में कहा और ये सुनते ही अल्फ़ी का दिल टुकड़ों में बिखर गया।

"मुझे दु:ख से कहना पड़ रहा है कि.... हम सबकी श्रापित जिंदगी की छाया से ये भी नहीं बच सकी। पर उसकी आत्मा अब भी मुक्त नहीं हुई है। श्राप से बंधी हुई है वो। तुम एक कदम आगे आओ और वो श्राप खत्म हो जाएगा और तुम, तुम्हारा परिवार और हम सब आजाद हो जाऍ॑गे। सब सही हो जाएगा।" प्रोफेसर साहनी ने उसके दिल को सहलाते हुए कहा।

अल्फ़ी ने उसकी कही हर बात सुनी, पर नज़र हाथ में पकड़ी उस तस्वीर पर टिकाए रखी। उस लड़की ने वही सफेद रंग का स्टॉल ओढ़ रखा था, जिसे उसने अपनी माया को शादी के बाद तोहफे में दिया था। उसके गले में पड़ा पेंडेंट भी उसे जाना पहचाना लग रहा था। हालांकि उसका रंग सफेद नहीं... बल्कि नीला था। मगर इस रंग के बदलने के बारे में भी
परिधि ने उसे बताया था।

"कामिनी! तुम्हारी बेटी का नाम!" प्रोफेसर साहनी ने कहा और फिर उसकी ओर देखने लगा कि अब उसके सारे लफ्ज़ खत्म हो चुके थे। अल्फ़ी खाली और भूखी ऑ॑खों से उस तस्वीर को घूरे जा रहा था। अचानक एक अपनेपन का अहसास दर्द के साथ उसकी ऑ॑खों में उतरा और उसने उस तस्वीर को सहलाया। उसे छूते ही उसके दिल में एक सूकून सा उतरा। उसकी ऑ॑खें भीग गईं, जिसका पानी खुशी और ग़म दोनों ही समेटे हुए था।

"इतना मत सोचो! पिछले 200 सालों से तुम दोनों भाई एक अघोषित और अनंत युद्ध में लगे हुए हो। अब पिशाच श्रेष्ठ भी थक चुके हैं। वो इस युद्ध से आगे बढ़ना चाहते हैं क्योंकि... उन्होंने अपनी साधना पहले ही पूरी कर ली है। अनामिका के साथ वो इस समय के जाल को तोड़ देना चाहते हैं। तुम्हारी हेममाया को लाने के लिए अनामिका को जाना ही होगा। अब फैसला तुम्हारे हाथों में है। तुम जैसा कहो।" अल्फ़ी के ऊपर फैसला डालते हुए प्रोफेसर साहनी ने अपनी बात समेटी।

कुछ देर भावनाओं के भॅ॑वर में डूबते-उतरने के बाद अल्फ़ी ने एक गहरी साॅ॑स ली और फिर अपने कॉ॑पते हुए होंठो से बोला, "मुझे... मेरा प्यार वापस चाहिए। हर हाल में चाहिए!"

"तो फिर... मैं समझूं कि तुम हमारे साथ हो!" प्रोफेसर साहनी ने होंठों पर मुस्कान सजाते हुए कहा।

"अगर खुशी ऐसे ही मिलनी है... तो मुझे मंजूर है। पर... काम के होने के बाद हमारे रास्ते अलग होंगे। कभी नहीं मिलेंगे।" अल्फ़ी नहीं उसकी ओर देखते हुए कहा। "बिल्कुल! जैसा तुम चाहो!" प्रोफेसर साहनी ने उसका प्रस्ताव से स्वीकारते हुए कहा।

"करना क्या है?" अल्फ़ी ने पूछा।

"तुम्हें पता है कि वंश बेल प्रक्रिया में किसी को वापस लाने के लिए वंश की तीन पीढ़ियों के शरीर के हिस्से चाहिए होते हैं। हेममाया के लिए हम तुम्हारे वंश बेल की सहायता लेंगे क्योंकि हेममाया के वंश का खात्मा उसी के साथ हो गया था। तुम दोनों एक-दूसरे से जुड़े हो... तो तुम्हारी वंश बेल भी उसके लिए काम कर सकती है।" प्रोफेसर साहनी ने कहा।

"तो!"

"हमें सर विलियम का शरीर चाहिए इस काम के लिए। पर वो तभी मिलेगा... जब तुम हमें वो चाबी दोगे।" प्रोफेसर साहनी ने उसकी ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा।

अल्फ़ी ने कुछ देर उसकी ऑ॑खों में देखा और फिर वो चाबी अपनी जेब से निकाली। उस चाबी को देखते ही प्रोफेसर साहनी की ऑ॑खों में चमक आ गई। वो फुर्ती से उस चाबी पर झपटा... मगर उतनी ही फुर्ती से अल्फ़ी ने अपनी वो मुट्ठी बंद कर अपनी ओर खींच ली। उसकी इस हरकत पर प्रोफेसर साहनी ने उसे घूर कर देखा।

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible] [illegible]! 200 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

ये सब देखकर अनामिका के साथ वहॉ॑ मौजूद सभी लोग सहम गए। अल्फ़ी की पकड़ इतनी मजबूत थी कि अनामिका को तकलीफ़ होने लगी थी। उसके चेहरे पर उभरते दर्द को देखकर अल्फ़ी का गुस्सा झाग की तरह एकदम से बैठ गया और अनामिका पर उसकी पकड़ ढीली पड़ गई। वहीं अल्फ़ी की इस हरकत से चैतन्य बुरी तरह से सुलग उठा। वो दनदनाते हुए उनके पास पहुॅ॑चा और अनामिका के बाजू में कसे अल्फ़ी के एक हाथ को पूरी ताकत से अलग कर झटकते हुए उसकी ओर ऊंगली उठाकर बोला, "आइंदा...
ऐसा मत करना! वरना..."

और ये सुनते ही अल्फ़ी ने उसे अपनी दहकती हुई अंगारा ऑ॑खों से देखा। वो तेजी से पीछे हटा और फिर उन सभी पर एक नज़र डाली। वो एक ओर गया और वो चाबी मेज पर रख दी।

"तो ठीक है! लो! हिम्मत है तो ले लो!" अल्फ़ी ने उन्हें चुनौती देते हुए कहा।

अल्फ़ी ने एक कुटिल मुस्कान के साथ उन तीनों की ओर देखा। चैतन्य अपनी मुट्ठियॉ॑ भींचे आगे बढ़ा ही था कि अनामिका ने उसे रोक दिया। उसी समय वरूण और अंकित भी दरवाजा खोलकर अंदर की ओर आए और माजरा समझने की कोशिश करने लगे।

"क्या हुआ? इतनी भी हिम्मत नहीं है क्या?" अल्फ़ी ने एक बार फिर से उन्हें ललकारा।

बस उसका इतना ही कहना था कि चैतन्य को पीछे धकेलते हुए अनामिका बिजली की तेजी से आगे आई और उस चाबी को उठा लिया। और अचानक ही ये हुआ। चाबी को उठाकर अनामिका संभली ही थी.. कि अल्फ़ी ने झपट्टा मारकर उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया।

"ये गलती नहीं करनी थी।" अनामिका को अपनी गिरफ्त में और भी कसते हुए अल्फ़ी ने कहा।

सभी एक साथ उनकी ओर बढ़े ही थे कि तभी अल्फ़ी चेतावनी देते हुए बोला, "ना! ना! कोई आगे नहीं आएगा। चैतन्य! अनामिका को वहीं ले जा रहा हूं, जहॉ॑ तुम्हें अपना प्यार सौंपा था। खोज सकते हो तो खोज लेना। चलो! अलविदा कहो अनामिका! आज आखिरी बार देख रही हो
तुम इन्हें।"

और फिर सबकी धड़कनें बढ़ाते हुए अल्फ़ी उसे ले उड़ा। जो भी हुआ.. सब मुॅ॑ह खोले देखते रह गए। चैतन्य ने अपनी फटी हुई ऑ॑खों से उस जगह को देखा, जहॉ॑ कुछ देर पहले अल्फ़ी और अनामिका खड़े थे। जमीन पर पड़ी चाबी चमचमा रही थी।

भाग 154

कमरे का माहौल बहुत ही गंभीर और भारी हो चुका था। अपने हाथों में पकड़ी हुई उस चाबी को घूरते हुए चैतन्य ना जाने किस सोच में डूबा बैठा हुआ था। उन सबने जो भी सोचा कुछ भी सही नहीं हो रहा। अभी तो सृष्टि और मुकुल का सदमा भी कम नहीं हुआ था... कि ये पहाड़ जैसी मुसीबत सिर पर आ गिरी थी। अल्फ़ी जाते-जाते जो कह गया था... उसका मतलब समझना चैतन्य के अलावा और किसी के बस का नहीं था और वही... बिल्कुल चुपचाप बैठा हुआ था।

"अरे बकोगे कुछ! कहॉ॑ लेकर गया वो अनामिका को? किस जगह की बात कर रहा था वो?" गुस्से से भरा हुआ वरूण उसके सिर पर सवार होता हुआ बोला।

अपने होंठ भींचे चैतन्य ने पलकें उठाकर उसकी ओर इस तरह देखा, जैसे कि उसे दूर उड़ाकर पटक देगा।

"चैतन्य! सोच क्या रहे हो तुम? अनामिका की तलाश में हम इतने बड़े शहर में भटक तो नहीं

सकते ना! उसने आखिर कहा क्या तुमसे?" इस बार आशुतोष ने भी झुंझलाते हुए कहा।

चैतन्य की नज़रें आशुतोष की ओर मुड़ी और फिर वो उठकर मेज के पास गया। डॉ. अनंत वहीं एक कुर्सी पर चिंता भरी ऑ॑खों के साथ बैठे हुए थे। चैतन्य ने उन पर भी एक नज़र डाली और फिर एक कोरा कागज अपने
सामने खींचकर वो वहीं कुर्सी पर बैठ गया। सबको उसकी हरकतें समझ में ही नहीं आ रही थी। किसी के भी सवालों का जवाब देने की बजाय वो उस कागज पर पेंसिल घिसने लगा।

"ये दिमाग से सरक तो नहीं गया है ना!" अंकित, वरूण के कानों में फुसफुसाया, जिस पर वरूण ने उसे अपने चश्मे के पीछे से घूरा।

"अगर इसकी वजह से अनु को कुछ हुआ, तो ये कहॉ॑-कहॉ॑ से सरकेगा.. इसे भी पता नहीं चलेगा। बस अनु की वजह से ही.... इसे बर्दाश्त कर रहा हूॅ॑।" वरूण गुस्से में दॉ॑त पीसते हुए बोला।

आशुतोष ने उन दोनों की तेज फुसफुसाहट सुन ली और फिर वो तेजी से चैतन्य के पास गया।
उसने देखा कि चैतन्य किसी जगह की तस्वीर बना रहा था, जो उनकी समझ में नहीं आ रहा था।

"चैतन्य! ये क्या बना रहे हो? कौन सी जगह है ये?" आशुतोष ने उस तस्वीर पर अपनी नज़रें गड़ाकर पूछा। मगर चैतन्य फिर भी कुछ नहीं बोला। वो उसी तरह अपनी पेंसिल चलाता रहा। उसकी ये अजीब सी चुप्पी अब सभी को चुभने लगी थी। आशुतोष ने उकताकर डॉ. अनंत की ओर देखा, जो बड़ी ही गंभीरता से चैतन्य को उसका काम करते हुए देख रहे थे। उन्होंने भी इशारे से आशुतोष को शांत रहने के लिए कहा। आशुतोष ने एक गहरी साॅ॑स छोड़ी और चैतन्य के बोलने का इंतजार करने लगे। करीब पॉ॑च मिनट तक चैतन्य पूरी तल्लीनता से वो तस्वीर बनाता रहा।

तस्वीर के बनने के बाद उसने अपना सिर उठाकर सभी की ओर देखा, जो अपनी ऑ॑खों में गुस्सा, कौतूहल और सवाल लिए उसे ही देख रहे थे। उसने कमरे में चारों ओर गहरी नज़र से देखा और फिर डॉ. अनंत की ओर मुड़ा।
"मुझे लगता है कि आपको गीता के साथ उसके कमरे में रहना चाहिए। आप दोनों वहॉ॑ ज्यादा सुरक्षित रहेंगे।" चैतन्य ने डॉ. अनंत से कहा।

"चैतन्य तुम...." वरूण ने कुछ कहना चाहा, जिसे डॉ अनंत की आवाज ने टोक दिया।

"हम्म! शायद तुम सही हो। वैसे भी मैं कुछ और ज्यादा मदद नहीं कर सकता। कम से कम खुद को सुरक्षित ही रख लूं।" कहते हुए डॉ. अनंत कुर्सी से उठकर चैतन्य के पास आए और उसके कंधे पर हाथ रख दिया। चैतन्य ने उनकी मुस्कुराती हुई ऑ॑खों में देखा।

"मुझे तुम पर पूरा यकीन है चैतन्य! मुझे पता है कि तुम कभी निराश नहीं करोगे।" डॉ. अनंत ने भरोसे से भरी हुई आवाज में कहा।

उनकी बात सुनकर चैतन्य ने भी उन पर आभार भरी नज़रें डाली। ये पहली बार था.. जब किसी ने उस पर विश्वास दिखाया था। उसकी ऑ॑खें जज़्बातों से नम हो गई।

"आप बिल्कुल भी चिंता ना करें। मैं आपकी बेटी को सही-सलामत आपके पास लेकर आऊंगा। मेरा वादा है आपसे।" चैतन्य ने उनके हाथों को मजबूती से पकड़ते हुए उतने ही मजबूत लहज़े में कहा। उसकी बात सुनकर डॉ. अनंत के थके हुए चेहरे की मुस्कान और भी चौड़ी हुई।

"मैं जानता हूॅ॑। मेरी अनामिका की पसंद कमजोर हो ही नहीं सकती।" डॉ. अनंत ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए मुस्कुरा कर कहा और फिर आशुतोष और बाकी सभी पर नज़र डालते हुए वो गीता के पास पहुॅ॑चे और फिर उसे अपनी हिफाजत में लेते हुए उस कमरे से बाहर निकल गए। "विक्टर कैसा हैं?" चैतन्य ने परिधि से पूछा। जवाब में परिधि ने पलटकर पास ही कुर्सी पर बेसुध पड़े विक्टर की ओर देखा।

"बेहोश है।" परिधि नहीं कहा।

चैतन्य ने परिधि को अपने पास बुलाया और फिर उसके कान में फुसफुसाकर कुछ कहा। उसकी बात सुनकर परिधि ने उसकी ओर बहुत ही ध्यान से देखा। चैतन्य ने ऑ॑खों ही ऑ॑खों में अपनी

बात दोहराई, जिस पर परिधि ने सहमति में अपना सिर हिलाया।

"वरूण! इधर आओ!" चैतन्य ने कहा, जिस पर हैरान-परेशान सा वरूण उसकी ओर आ गया। चैतन्य के इशारा करने पर वो उसके बहुत ही करीब आया। चैतन्य ने उससे भी कुछ कहा, जिस पर उसने बारी-बारी से चैतन्य और परिधि की ओर देखा। वो चैतन्य से लाख कुढ़े, मगर उसके पिता ने थोड़ी देर पहले चैतन्य के लिए जो कुछ भी कहा.. वो उन शब्दों का अपमान नहीं कर सकता था। वो सहमति में अपना सिर हिलाते हुए एक ओर चला गया। आशुतोष और अंकित फिलहाल उन तीनों की ओर देखते हुए अपनी बारी का इंतजार कर रहे थे। जल्द ही वरूण वापस लौटा और परिधि के पास गया। इस बार परिधि ने उससे कुछ कहा, जिस पर एक बार फिर से सिर हिलाता वो बाहर की ओर गया।

वरूण के वापस लौटने तक चैतन्य ऑ॑खें बंद किए चुपचाप बैठा रहा। दूर खड़ा आशुतोष उसके चेहरे को पढ़ने की कोशिश कर रहा था, पर नाकाम ही रहा। ये पहली बार था कि इतने तनाव भरे माहौल में भी चैतन्य बिल्कुल शांत था। आखिरकार आशुतोष ने भी हालातों के मुताबिक चलने का फैसला कर लिया कि कुछ और किया ही नहीं जा सकता था। उनके तीन साथी उनसे अलग हो चुके थे और अब उनको उन्हें भी बचाना था। यकीनन उनका काम पहले से भी ज्यादा बढ़ गया था।
उसी समय चैतन्य ने आशुतोष और अंकित को अपने पास बुलाया और उन्हें विक्टर के पास बैठकर कुछ भी बातें करने के लिए फुसफुसाकर कहा। कुछ भी ऐसी बातें, जो मौजूदा हालातों से मेल नहीं खाती हों। आशुतोष और अंकित ने हैरानी से एक-दूसरे की ओर देखा और फिर चैतन्य पर यकीन रखते हुए अपने कंधे उचकाते विक्टर के पास जाकर बैठ गए और एक-दूसरे से बेमतलब की बातें करने लगे।

उधर परिधि ने अपने हाथ में तीन छोटी-छोटी शीशियॉ॑ पकड़ी हुई थीं, जिनमें कुछ पावडर जैसा भरा हुआ था। उसने उन शीशियों से थोड़ी-थोड़ी मात्रा में वो पावडर एक छोटे से बाउल में डाले और उन्हें बिना आवाज किए मिलाने लगी। वहीं चैतन्य एक बार फिर से उस तस्वीर को ध्यान से देखने लगा, जिसे उसने बनाया था।

कुछ ही देर बीते होंगे कि तभी वरूण ने कमरे में प्रवेश किया। वो सीधे परिधि के पास आया और उसे कुछ दिया और फिर एक ओर चला गया। इस बीच आशुतोष और अंकित की बेमतलब और बोझिल बातें बदस्तूर जारी थीं। वो कुछ पत्ते थे, जिनके निचले हिस्से में लाल-लाल धारियॉ॑ बनी हुई थीं।

"यही है जम्बूक! इसी से बेहोशी की दवा बनती है।" चैतन्य ने बहुत ही धीमी आवाज में पूछा।

"हम्म! और भी बहुत कुछ बनता है।" परिधि भी उसी के अंदाज में फुसफुसाई और फिर इमामदस्ता अपने सामने खींचकर उन पत्तियों को उसमें डालकर कूटने लगी। इस पूरे दौरान उसने हाथ में दस्ताने पहन रखे थे। अच्छी तरह कूटने के बाद उन पत्तों से उनका रस निकल आया था, जिसे परिधि ने एक मलमल के कपड़े की मदद से अलग किया और उन पावडरों के मिश्रण में डाल दिया। उस रस के पावडर के मिश्रण में गिरते ही उसमें सनसनाहट सी उत्पन्न होने लगी। परिधि और चैतन्य दोनों ही
तेजी से पीछे हुए थे। उसी समय वरूण वहॉ॑ आ पहुॅ॑चा, जिसके हाथ में कुछ सुईयॉ॑ और एक सीरिंज थी। परिधि के इशारा करने पर आशुतोष और अंकित एक-एक करके वहॉ॑ आए। वरूण ने उनकी ऊंगलियों में सुई चुभाई और उससे न क्लीं खून की कुछ बूंदें उस मिश्रण में मिला दीं। इसके बाद वो दोनों फिर से अपनी जगह पर बैठकर बातें करने लगे। इसके बाद यही प्रक्रिया वरूण और चैतन्य ने भी दोहराई। सभी का खून उसमें मिलते ही उस हरे रंग के मिक्श्रण का रंग बदलने लगा और फिर भट्ट की आवाज के साथ बदल कर बैंगनी हो गया।

"हो गया!" उस नए बने मिश्रण को अच्छी तरह जॉ॑चते हुए परिधि ने धीमी आवाज में कहा। ये सुनते ही चैतन्य ने वरूण को इशारा किया और फिर उसने वो दवा एक सीरिंज में भरकर... विक्टर के पास जाकर... उस इंजेक्शन के सहारे वो दवा उसकी नसों में उतार दी। इंजेक्शन देने को दो मिनिट बाद परिधि ने काम के खत्म होने का इशारा किया।अब चैतन्य ने खुलकर सॉ॑स ली और फिर आशुतोष और अंकित को अपने पास बुलाया।

"क्या हो रहा है? कुछ बताओगे!" आशुतोष ने फुसफुसाकर कहा।

"अब आप लोग सामान्य तरीके से बोल सकते हैं।" चैतन्य ने भी सामान्य लहज़ा पकड़ते हुए

कहा।

"कुछ नहीं। एडवर्ड, गीता और विक्टर के जरिए हमारी जासूसी कर रहा था। मेरे कहने पर परिधि ने भ्रम पैदा करने वाली दवा बनाई है। अब हम यहॉ॑ नहीं भी हों, तो भी विक्टर को हम यहीं दिखाई देंगे। इससे हम कुछ समय के लिए एडवर्ड को आराम से धोखा दे सकते हैं।" चैतन्य ने आशुतोष और अंकित को समझाते हुए कहा। उसकी बात सुनकर अंकित और आशुतोष दोनों ही हैरान हुए थे।

"पर तुम्हें इनके बारे में कैसे पता चला?" आशुतोष ने पूछा।
"वो बाद में बताऊंगा। पहले एक और बहुत ही जरूरी काम करना है।" चैतन्य ने उनका सवाल टालते हुए कहा।

"और वो क्या?" अंकित ने पूछा।

"अनामिका का पता ढूंढना है।" चैतन्य ने एक बार फिर से उस तस्वीर में झुकते हुए कहा।

"अच्छा! और वो कैसे?" अनामिका का नाम सुनते ही वरूण ने उत्साहित होकर पूछा।

"इस तस्वीर की मदद से!" चैतन्य ने उस तस्वीर की ओर ऊंगली दिखाते हुए कहा।

"ये तो तुमने अभी बनाई है ना!" अंकित ने उस तस्वीर को ध्यान से देखते हुए कहा।

"हॉ॑!" चैतन्य ने छोटा सा उत्तर दिया।

"पर ये है कौन सी जगह?" वरूण ने चश्मे के पीछे से उस तस्वीर को घूरते हुए पूछा।

"अभी पता चल जाएगा। आशुतोष जी! आप यहॉ॑ आइए।" चैतन्य ने अपने साथ वाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा। आशुतोष भी उसकी बात मानते हुए उसके पास जाकर बैठ गया। सभी कौतूहल से उसी की ओर देख रहे थे।

"आशुतोष जी! ये आज से 200 साल पुराने समस्तीपुर यानि कि...
कल्परूप की तस्वीर है। 200 साल पहले ऐसा दिखता था ये शहर। ये समझिए कि ये एक नक्शा है।" चैतन्य ने उस तस्वीर को देखते हुए कहा।

"तो!" वरूण ने पूछा।

"तो ये कि... इस पुराने कल्परूप को आज के समस्तीपुर में बदलना है।" चैतन्य ने कहा।

"और वो कैसे?" आशुतोष ने पूछा।

"आपकी शक्तियों की मदद से। आप भू-रक्षक हैं ना! चलिए दिखाइए अपना कमाल।" चैतन्य ने आशुतोष को मुस्कुराती हुई नज़रों से देखते हुए कहा।

अब आशुतोष की समझ में आ गया था कि चैतन्य आखिर कश्र क्या रहा था! 200 साल बीतते-बीतते ये जगह बहुत बदल गई थी। चैतन्य, अनामिका का पता अतीत की इस तस्वीर में लगा चुका था, मगर अनामिका को अतीत में नहीं बल्कि हालिया समय में ढूंढना था।

चैतन्य की बात समझकर आशुतोष ने वो तस्वीर अपनी ओर खींची। इसके बाद उसने अपनी ऑ॑खें
बंद की और अपने सीधे हाथ की तर्जनी ऊंगली को अपनी दोनों भौंहों के बीच रख दिया। इसके बाद वो कुछ बुदबुदाने लगा, जो बाकियों के लिए अस्पष्ट था।

बुदबुदाहट खत्म होते ही आशुतोष ने वो ऊंगली उस तस्वीर के बीचों बीच रख दी और बोला, "बदलो!"

उसके कहने के साथ ही उस तस्वीर का सारा काला रंग सिमट कर उस ऊंगली के पास आने लगा और देखते ही देखते वो रंग उस छोटी सी
ऊंगली के नोंक के नीचे चले गए। वो कागज एक बार फिर से कोरा हो गया था।

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]! [illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

(Ред. - 77)

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

****

[illegible]

वो मिट्टी डाल दी। अगले ही पल एक चमत्कार सा हुआ, जब चैतन्य की ऑंखों के सामने से मकानों का झुंड गायब हो गया और एक बार फिर से उसकी ऑंखों के सामने वही जाना-पहचाना जंगल लहराने लगा। जबकि बाकियों के लिए अभी भी सामने वही सारे मकान मौजूद थे।

�

"गुड! पर अब एक समस्या और है।" चैतन्य ने सामने की ओर देखते हुए कहा।

"क्या?" आशुतोष ने पूछा।

"यही कि मैं तो अब पुराने रास्तों पर ही चलूँगा, मगर वास्तव में तो यहॉं के रास्ते बदल चुके हैं। तो दोनों रास्तों को मैच करना होगा। पुराने रास्ते पर चलते हुए जब मैं नए रास्तों पर गलत चलूं, तो मुझे बता देना।" चैतन्य ने पीछे मुड़कर अंकित की ओर देखते हुए कहा।
"बिल्कुल! इसमें कोई भी परेशानी नहीं होगी।" अंकित ने आत्मविश्वास के साथ कहा।

"इस तरफ!" चैतन्य ने अपनी ऊंगली से एक ओर इशारा किया और बढ़ गया। बाकी सब भी यंत्रचालित से उसके पीछे-पीछे चल दिए।

दिल में ढेर सारी हलचलों के साथ वो आगे बढ़ रहा था। आगे बढ़ने की ये प्रक्रिया बहुत ही बोझिल और दिमाग खराब करने वाली थी। चैतन्य तो सीधा अपने रास्ते पर ही बढ़ रहा था, पर मौजूदा समय में वो रास्ता सीधा नहीं था। पुराने तय किए रास्तों में अब कई अड़चनें खूबसूरत मकानों की शक्ल में मौजूद थीं। ऐसे समय में अंकित ने रास्ता बनाने में उसकी काफी मदद की। वरूण को भी इस तरफ के रास्तों की ज्यादा जानकारी नहीं थी, इसलिए वो भी चुपचाप उनके पीछे चल रहा था। आखिरकार चैतन्य एक जगह पर जाकर रूक गया।

"सामने है वो जगह!" चैतन्य ने सामने की ओर ऊंगली उठाकर कहा।

"यहॉं! इस मकान में!" अंकित ने हैरानी से कहा।

"मकान!" चैतन्य ने अंकित की ओर देखा, जिस पर उसने हॉं में सिर हिला दिया।

"आशुतोष जी! अब इसकी जरूरत नहीं है।" चैतन्य ने आशुतोष की ओर देखते हुए कहा।

"ठीक है।" कहते हुए आशुतोष ने उसके माथे पर लगी मिट्टी को पोंछ दिया, जिससे धीरे-धीरे चैतन्य की ऑंखों के सामने से वो जंगल गायब हो गया और सामने बना मकान उसे नज़र आने लगा।

�

"ये किसका मकान है?" चैतन्य ने सामने बने मकान को एक छोर से दूसरे छोर तक नापते हुए पूछा।

'प्रोफेसर साहनी!" जवाब वरूण ने दिया।

सबने उसकी ओर जवाब को तस्दीक करने के इरादे से देखा।

"इसकी तस्वीर है पापा के एलबम में। मॉं की शादी से पहले की तस्वीर। इसी मकान के सामने खड़े हुए। उस समय पापा ने बस यही बताया था कि ये प्रोफेसर साहनी का घर है, जहॉं वो सब किसी गेट-टुगेदर के लिए गए थे।" वरूण ने अपने जवाब को और भी विस्तार देते हुए कहा।

"कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यहॉं प्रोफेसर साहनी रहते हैं। एडवर्ड के पास अपनी इतनी संवेदनशील जगह को छिपाने का इससे बेहतर और कौन सा तरीका हो सकता था।" चैतन्य ने भी वरूण के जवाब का समर्थन करते हुए कहा।

"तो फिर आगे?" वरूण ने पूछा।

"आगे बढ़ना है। पर पूरी सावधानी से। अब और गलतियॉ॑ हमारे हक़ में नहीं होंगी।" चैतन्य ने कहा।

उसकी बात सुनकर सभी ने हुंकारी भरते हुए सामने खड़ी उस इमारत की ओर देखा, जो फिलहाल बहुत ही शांत दिखाई दे रही थी। मगर उन सबके लिए वो एक मकान नहीं था... एक समरभूमि थी, जिसकी ओर उनके कदम उठ चुके थे।

****

वो एक छोटी सी कोठरी थी, जिसके अंदर उसका शरीर निढाल पड़ा था। घड़ी के बढ़ते कॉ॑टों और समय के बीच उसके शरीर में हल्की सी हरकत हुई। ऊंगलियों की जुंबिश के बीच आधे खुले होंठों के बीच से गर्म हवा
जमीन की मिट्टी उड़ाती निकली और फिर चेहरे पर एक तकलीफ़ माथे के शिकनों के साथ उभर आई।

उसने धीरे से अपनी ऑ॑खें खोली और उन खुलती-बंद होती ऑ॑खों के बीच धुंधला सा मंजर उस पर हावी हो गया। एक कराह के साथ उसने ऑ॑खें बंद कर लीं। फिर पूरे ताकत के साथ उसने खुद को किसी तरह उठाया और फिर घिसटते हुए दीवार की ओर बढ़ गया। पीठ दीवार पर टिकाकर उसने कुछ गहरी सॉ॑सें भरी, जिससे उसका दिमाग कुछ सचेत हुआ। उसने लंबी-लंबी सॉ॑से लेते हुए अपने चारों ओर देखा। जगह पूरी तरह से अंजान थी। अपनी हालत पर एक नज़र डालते हुए उसने पिछली बात याद करने की कोशिश की।

और उसे याद आया कि अनामिका ने उसे और सृष्टि को कमरे से बाहर नज़र रखने के लिए भेजा था। अनामिका की बात सुनते ही वो दोनों तेजी से कमरे से बाहर निकले थे। गलियारा पूरी तरह से खाली था। कुछ दूर तक आगे जाने के बाद सृष्टि ने कहा भी था कि उसे कुछ अजीब सा लग रहा है। उसके पूछने पर सृष्टि ने कहा कि जब विक्टर हमारा इंतजार करते हुए अंदर मौजूद था, तो बाहर इतना सन्नाटा क्यों है? उसकी बात सुनकर मुकुल का माथा भी ठनका और फिर खतरे का अंदेशा होते ही उन दोनों ने तुरंत ही वापस लौटने की सोची.... कि सबको इसकी खबर कर सकें। मगर जैसे ही वो पलटे कोई तीखी सी चीज उसके गले में आकर धॅ॑स गई। एक तेज जलन उस जगह से होते हुए उसके सारे शरीर में पलक झपकते ही फ़ैल गई। जलती हुई ऑ॑खें जब नमी से झिलमिलाने लगी, तो उसने पलटकर सृष्टि की ओर देखा। उसकी हालत भी उससे जुदा ना थी। उसके देखते ही देखते सृष्टि घुटनों के बल गिर पड़ी और अगले ही पल उसका शरीर जमीन पर लुढ़क गया। इसके बाद वो खुद ही अपने लड़खड़ाते कदमों पर खड़ा ना रह सका और फिर गुम होते होश के साथ नीचे गिर गया। उसके बाद अब उसने खुद को इस तरह कैद में पाया। अपने होश संभालते हुए उसने चारों ओर देखा, मगर वो जगह उसके पहचान में
नहीं आई। वो अभी इसी उलझन में ही था कि तभी उसे सृष्टि का ख्याल आया। उसने ध्यान दिया कि सृष्टि उसके साथ नहीं थी। वो उस कमरे में बिल्कुल ही अकेला था और ये ध्यान आते ही वो बौखलाकर उस कमरे के दरवाजे की ओर भागा। उसकी अग्नि-रक्षक अंगूठी उसकी ऊंगली में नहीं थी। पहले तो उसने दरवाजे को खोलने की कोशिश में उसे जोर-जोर से हिलाया और जब कोई फायदा नहीं हुआ तो वो जोर-जोर से चिल्लाने लगा।

"सृष्टि! सृष्टि! कहॉ॑ हो तुम? जवाब दो!" एक उम्मीद के साथ उसने सृष्टि को पुकारा। मगर कोई जवाब नहीं आया। इससे वो और भी डर गया। उसने दरवाजे को तोड़ने की कोशिश की। मगर वो दरवाजा बहुत मजबूत था। इसमें भी नाकाम होने पर वो एक बार फिर से चिल्लाने लगा और इस बार उसे जवाब मिला, जब सृष्टि ने थकी हुई आवाज में उसे पुकारा।

"मु.... कुल!"

मुकुल ने ध्यान दिया कि वो आवाज़ एक दीवार के पीछे से आई थी, जिसमें थोड़ी ऊॅ॑चाई पर एक रोशनदान जैसा बना हुआ था। मुकुल तेजी से वहॉ॑ पहुॅ॑चा और उस रोशनदान पर नज़र डाली।

"सृष्टि! ये तुम हो?" मुकुल ने आवाज की पहचान करने के मकसद से पूछा।

"हॉ॑!" सृष्टि की आवाज आई।

"सृष्टि! तुम ठीक हो?" उसकी थकी हुई आवाज सुनकर वो और भी बेचैन हुआ था।

"हॉ॑! ठीक ही हूॅ।" सृष्टि की थकी हुई आवाज फिर से आई।
"पक्का ना!" मुकुल ने पूछा।

"हॉ॑ बस.... सिर बहुत भारी हो रहा है।" सृष्टि ने कहा।

"सृष्टि! क्या तुम्हें पता है कि ये कौन सी जगह है? मुकुल ने पूछा।

"नहीं!" सृष्टि का छोटा सा जवाब आया।

"तुम्हारी अंगूठी है ऊंगली में?" मुकुल ने अगला महत्वपूर्ण सवाल किया। कुछ पल मुकुल की बेचैनी बढ़ाने वाली ख़ामोशी छाई रही और फिर जवाब आया।

"नहीं!"

"शिष्ट! अब क्या करें?" कहते हुए मुकुल की परेशान नज़र अपनी खाली हो चुकी ऊंगली पर गई।

"हम फॅ॑स गए हैं। बिना अंगूठी के हम क्या ही करेंगे?" सृष्टि की बुझी हुई सी आवाज़ आई।

उसकी बात सुनकर मुकुल भी हताशा का शिकार हो गया। वो खाली-खाली ऑ॑खों से अपनी उस खाली ऊंगली को देखने लगा। तभी परेशानी की उस हालत में एक और चीज उसकी नज़र में आ गई। उसके अंगूठे में एक काला धागा बांधा हुआ था। सुबह अल्फ़ी की कहानी के दर्द में डूबे हुए उनके घायल मन को सहलाते हुए चैतन्य ने वो काला धागा उसके अंगूठे, सृष्टि की मध्यमा (middle finger) और आशुतोष की अनामिका (ring finger) पर बांधी थी। खुद चैतन्य की तर्जनी और अनामिका की कनिष्ठा में ऐसा ही धागा बांधा हुआ था। उसके पूछने पर
अनामिका ने बताया था कि जब तांत्रिक श्रेष्ठ सिद्धनाथ ने उन दोनों की ऊंगली में ये काला धागा बांधा था, तब बताया था कि हमारी हर ऊंगली अलग-अलग तत्वों का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें अंगूठा अग्नि, तर्जनी वायु, मध्यमा आकाश, अनामिका पृथ्वी व कनिष्ठा अंगुली जल तत्व से जुड़े होते हैं और ये काला धागा उन तत्वों की रक्षा करता है। हताशा में डूबा मुकुल का मन ये याद आते ही उत्साह से उछल गया। एक गहरी उम्मीद ने उसके दिल में पैठ बनाई और वो ऑ॑खों में चमक भरकर एक बार फिर से सृष्टि की ओर गया।

"सृष्टि! तुम्हारी ऊंगली में वो धागा है, जो चैतन्य ने बांधा था?" मुकुल ने उम्मीद भरी आवाज में पूछा।

"हॉ॑!" उम्मीद के मुताबिक जवाब आया, जिससे मुकुल का चेहरा थोड़ा सा खिला।

"सृष्टि! मेरी बात सुनो! हम इस तरह हिम्मत हारकर नहीं बैठ सकते। जब हमें नहीं मालूम कि हम कहॉ॑ हैं, तो दूसरे साथियों को कैसे पता चलेगा? हमें अपनी मदद खुद ही करनी पड़ेगी। तुम सुन रही हो?" मुकुल ने अपनी आवाज सृष्टि तक पहुॅ॑चाई।

"पर हम... कर ही क्या सकते हैं? हमारी अंगूठियॉ॑ हमारे पास नहीं है।" सृष्टि ने एक बार फिर से बुझी हुई आवाज में कहा।

"मत भूलो सृष्टि... कि हमें हमारी शक्तियों की वजह से रक्षक चुना गया है, ना कि उन अंगूठियों की वजह से। उन अंगूठियों का हवाला देकर अपनी शक्तियों को कम मत करो। अपने अंदर इतना विश्वास रखो कि तुम खुद इतनी शक्तिशाली हो... कि किसी भी मुश्किल से जूझ सकती हो। हमारी शक्तियॉ॑ उन अंगूठियों में नहीं... बल्कि हमारे अंदर है। हमारी आत्मशक्ति.... जिसे हमसे कोई भी नहीं छीन सकता।" मुकुल ने जोश
बढ़ाने वाली आवाज में कहा।

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]!"

[illegible] [illegible] [illegible] [

"पर शायद तुम्हें पता नहीं कि मेरे आने के बाद यहॉ॑ जो कुछ भी हुआ है या हो रहा है... तुम मुझसे जो कुछ भी कह रही हो.. वो सब देख और सुन रहा है। मेरा शरीर पूरी तरह से उसके चंगुल में है। मैं चाह कर भी उसे ऐसा करने से रोक नहीं सकता। तो मुझसे इस तरह की उम्मीद रखना तुम्हारे लिए बेकार ही होगा।" विक्टर ने अपनी मजबूरी उसके सामने रखते हुए कहा।
"पता है मुझे कि वो तुम्हारे जरिए हमारी योजनाओं में सेंध लगाना चाहता है। पर तुम्हें ये नहीं मालूम कि... तुम मेरी दवा के असर में हो, जो शायद कुछ देर में खत्म हो जाए... क्योंकि इतनी जल्दबाजी में ज्यादा असरदार दवा बनाना मुश्किल ही था। पर... अगर तुम चाहो तो ये असर लंबा चल सकता है। कम से कम इतना लंबा... कि हमारे साथी उस दुष्ट तक पहुॅ॑च जाऍ॑ और उसे खबर ना हो।" परिधि ने उसके और भी पास आते हुए कहा।

"और इसके लिए क्या करना होगा मुझे?" विक्टर ने उसकी बातों में दिलचस्पी लेते हुए कहा।

"बस! ये दवा.. जो मैंने तुम्हें बेहोशी में दी थी... इसे पूरे होशो-हवास में लेना है। इससे तुम्हारा दिमाग इस दवा के साथ बेहतर तरीके से तालमेल कर सकता है।" परिधि ने उसे एक दवा की डिब्बी दिखाते हुए कहा।

विक्टर ने उस डिब्बी को ग़ौर से देखा और बोला, "इससे क्या होगा?"

"फिलहाल इस दीवाने तुम्हारी ऑ॑खों और कानों में भ्रम की एक चादर चढ़ा दी है जिससे एडवर्ड को वही दिखाई और सुनाई दे रहा है... जो मैं चाहती हूॅ॑। मगर कहा ना... कि ये दवा तुम्हारे आधे सोए हुए मस्तिष्क ने ग्रहण की है, इसलिए इसका असर जल्द ही खत्म हो जाएगा। इसलिए.. यदि तुम अपनी मर्जी से ये दवा लेते हो... तो जो तुम सोचोगे वही एडवर्ड को दिखाई देगा.... वही उसे सुनाई देगा। इस तरह से तुम उसे आसानी से भ्रम में रख सकते हो।" परिधि ने उसे पूरी तरह से समझाते हुए कहा।

"और तुम मुझ पर इतना भरोसा क्यों कर रही हो? अगर मैंने धोखा दिया तो!" विक्टर ने परिधि के मन को टटोलत हुए पूछा।
"क्योंकि मैं तुम्हारे मस्तिष्क को किसी कैद से छूटने की कोशिश करते हुए और छटपटाते हुए महसूस किया था। ये बिल्कुल वैसा ही था... जैसा कि मेरा मस्तिष्क महसूस करता था।
तुम्हें खुद की तरह पाया... इसलिए तुम्हारी ओर ये हाथ बढ़ा रही हूॅ॑।" परिधि ने अपनी तरफ से बात साफ करते हुए कहा।

और ये सुनकर विक्टर कुछ पलों के लिए गुंग होकर रह गया। शायद वो अभी भी अपने दिमाग में चल रही लड़ाई में उलझा हुआ था।

"आजादी का हक सबको है विक्टर। मुझे भी.. तुम्हें भी! आगे तुम्हारी मर्जी है... क्योंकि समय कम है। तुम्हें फैसला करना है कि तुम उस दरिंदे का खिलौना बने हुए ही मर जाना चाहते हो... या फिर अपनी जिंदगी के आगे की राह खुद चुनना चाहते हो।" परिधि ने उसकी ओर उम्मीद भरी नज़रों से देखते हुए कहा।

और आखिरकार विक्टर के ज़ख़्मी दिल और दिमाग पर परिधि के इन शब्दों ने मरहम का काम किया। उसने अपने चेहरे को सख़्त करते हुए परिधि की ओर देखा और बोला, "मैंने चुन लिया! वो दवा दो!"

उसकी बात सुनकर परिधि के होंठों पर तसल्ली भरी मुस्कान आई और उसने वो दवा विक्टर की ओर बढ़ा दी।

"वैसे मेरे पास और भी बहुत कुछ ऐसा है.... जिसमें तुम्हारी दिलचस्पी हो सकती है।" विक्टर ने कॉ॑पते हुए हाथों से वो डिब्बी लेते हुए कहा।

"और वो क्या हैं?" परिधि ने कौतूहल भरी ऑ॑खों के साथ उसके सामने बैठते हुए कहा।

"अतीत का एक हिस्सा! जिससे सब अंजान हैं... पर मैं जानता हूॅ॑ और
तुम्हें भी जानना चाहिए।" विक्टर ने अपना चेसरा उसकी ओर बढ़ाकर फुसफुसाते हुए कहा।

"ओह! तो चलो! सबके आने तक समय इसी तरह काटा जाए।" परिधि ने भी मुस्कुराते हुए उसी तरह फुसफुसाकर कहा, जिस पर विक्टर भी मुस्कुराया था।

अतीत के कुछ और पन्ने आज खुलने वाले थे, जिससे एक और कहानी जन्म लेने वाली थी।

****

चैतन्य सामने खड़े उस दो मंजिला मकान को इस तरह घूर रहा था, जैसे कि अपनी ऑ॑खों से ही उसे स्कैन कर रहा हो। आशुतोष, अंकित और वरूण फिलहाल उसके अगले इशारे के इंतजार में थे, क्योंकि इस कहानी की जड़ें जिस अतीत से जुड़ी थीं, उसे बस चैतन्य और अनामिका ही पहचानते थे। अनामिका की ग़ैरहाजिरी में अब चैतन्य को ही आगे सब कुछ संभालना था और अनामिका के अपहरण के बाद वो जिस क़दर संजीदा हुआ था... उसने उसकी विश्वसनीयता को और भी बढ़ा दिया था।

"अगर ये प्रोफेसर साहनी का घर है... एडवर्ड की जगह है फिर इसका मतलब तो यही है कि... अल्फ़ी भी उनके साथ मिल गया है। मगर उसने
ऐसा किया क्यों? वो अनामिका को एडवर्ड के पास क्यों लेकर आया है?" अंकित ने आश्चर्य जताते हुए कहा।

"अरे कहते हैं ना... पिशाच-पिशाच मौसेरे भाई! फिर ये दोनों तो भाई हैं। सौतेले ही सही!" वरूण ने कहा।

"अच्छा! ऐसा भी कोई मुहावरा होता है क्या? मैंने तो नहीं पढ़ा।" अंकित ने सिर खुजलाते हुए कहा।

"हमारे साथ रहोगे... तो ऐसे ही और भी मुहावरे सीख जाओगे.... क्योंकि बूंद-बूंद से ही वाटर प्यूरीफायर भरता है।" वरूण ने सामने की ओर देखते हुए कहा, जिस पर अंकित ने उसे चिढ़ के साथ घूर कर देखा।

"क्या कोई... कभी इस मकान के अंदर गया है?" वरूण की बचकानी बातों को नज़रअंदाज़ कर चैतन्य ने उस मकान को घूरते हुए ही पूछा। जाहिर सी बात थी कि ये सवाल वरूण और अंकित के लिए ही था।

"मैं गया तो हूॅ॑... मगर बचपन में। बहुत धुंधली सी यादें हैं। पापा ने हमेशा इस पूरे इलाके से दूर ही रखा मुझे और गीता को। कह नहीं सकता कि अंदर अब भी सबकुछ वैसा ही हो।" वरूण ने एक अड़चन के साथ हॉ॑ कहा।

"मैं भी बस हॉल तक ही गया हूॅ॑। उससे आगे मुझे भी जानकारी नहीं है।" अंकित ने भी अफसोस भरी आवाज में कहा।

"हम्म! तो फिर कुछ और सोचते हैं।" चैतन्य ने माथे पर बल डालते हुए कहा।

"और वो क्या?" आशुतोष ने पूछा।
"आशुतोष जी! आपने पहले भी उस डायनों के बसेरे तक जाने का रास्ता ढूंढना था (भाग - 25)। आज भी बस वही करना है।" चैतन्य ने कहा।

"हम्म! समझ गया! पर यहॉ॑ थोड़ी परेशानी हो सकती है। जब हम डायनों के बसेरे की तलाश में गए थे, तब वहॉ॑ अड़चनें पैदा करने वाला कोई भी नहीं था। पर यहॉ॑ होंगें। उस एडवर्ड ने चप्पे-चप्पे पर अपना जाल बिछा कर रखा होगा। हम आगे बढ़े... तो उसे पता चल जाएगा और वो सावधान हो जाएगा। ख़ासतौर पर तब तो और... जबकि अल्फ़ी ने उससे हाथ मिला लिया हो।" आशुतोष ने आगे आने वाली समस्या के बारे में बताते हुए कहा।

"भला कोई इतना बेवकूफ कैसे हो सकता है? जिस दरिंदे ने उसकी जिंदगी और परिवार को तबाह

कर दिया... उसी पर भरोसा कैसे कर सकता है वो?" अंकित ने गुस्सा और अफसोस की मिली-जुली प्रतिक्रिया के साथ कहा।

"200 साल किसी का इंतजार करके देखो... इसका जवाब मिल जाएगा तुम्हें।" आश्चर्यजनक रूप से चैतन्य, अल्फ़ी का पक्ष लेते हुए बोला।

"मुझे लगता है कि इस समय हमें इस सवाल के जवाब की जरूरत नहीं है। अच्छा है कि हमें ये पता है कि... अब हमें उस अल्फ़ी से भी सचेत रहने की जरूरत है।" आशुतोष ने उन सबको गलत रास्ते में जाने से रोकते हुए कहा।

"हॉ॑! इससे अच्छी बात और क्या ही हो सकती है। हमारे तीन साथी उनके पास हैं और हमारा एक दुश्मन और बढ़ गया है। ब्रावो!" वरूण ने झुंझलाई हुई आवाज में कहा।
"चुप! तो फिर क्या करें?" चैतन्य ने वरूण को चुप कराते हुए आशुतोष से सवाल किया।

"चैतन्य! मुझे और शक्ति चाहिए, जिससे हम बिल्कुल सही रास्ता ढूंढे... वो भी एडवर्ड को पता चले बिना।" आशुतोष ने उन तीनों की ओर देखते हुए कहा।

"कोई समस्या नहीं है। वरूण! तुम्हारी शक्ति इस काम आ सकती है। तुम रखवाले हो।
तुम्हारी शक्ति आशुतोष जी की शक्ति के साथ मर्ज होगी... तो वो जो रास्ता ढूंढेंगे... सीधा अनामिका के पास जाएगी। वो तुम्हारी सबसे करीबी दोस्त हैं ना! मतलब कि एक रखवाले की धरोहर!" चैतन्य ने वरूण की ओर देखकर कहा।

"हम्म! बात तो सही कही तुमने।" वरूण अपना चश्मा ठीक करते हुए बोला।

"पर एडवर्ड से छिपाऍ॑गे कैसे?" अंकित ने पूछा।

"उसके लिए ये है ना! भ्रम पैदा करने की दवा!" चैतन्य ने परिधि की बनाई हुई दवा अपने कार्गो पैंट की जेब से निकालते हुए कहा।

"भई वाह! तब शुरू करें!" आशुतोष ने उत्साहित होते हुए कहा।

"हॉ॑... और हमले और बचाव दोनों के लिए भी तैयार रहो। क्या पता... मंजिल तक पहुॅ॑चने का रास्ता खून की नदी पार करके मिले।" चैतन्य ने उन सभी को आगाह करते हुए अपनी सीधी हथेलियों ली उनके सामने रखी, जिस पर सभी ने अपनी-अपनी हथेली रख दी।
****

मुकुल और सृष्टि कैद खाने से बाहर निकले... तो कुछ दूर तक तो बस अनुमान से आगे बढ़ते रहे। उनकी दिशा ज्ञान की शक्ति बाकी तीनों के मुकाबले कमजोर थी। फिर भी दो होने की वजह से उनके अंदर उत्साह ज्यादा था।

"ये कौन सी जगह है?" मुकुल एक बार फिर से बड़बड़ाया।

"कहा ना पता नहीं!" सृष्टि भी बुदबुदाई।

"पता नहीं... बाकी सब कैसे होंगे?" आगे बढ़ता हुआ मुकुल चिंता भरी आवाज में बोला।

"दुआ करो कि वो सभी आजाद हों!" सावधानी से आगे बढ़ती हुई सृष्टि ने पीछे पलटकर मुकुल को देखते हुए कहा।

और बस यहीं... नज़र हटी, दुर्घटना घटी!.. वाली बात चरितार्थ हो गई, जब सृष्टि सामने मोड़ पर ही दो गार्ड्स से टकराते हुए बची। वो उनसे टकराती.. उससे पहले ही मुकुल ने उसे अपनी ओर खींच लिया। मगर तब तक मुसीबत सामने ऑ॑खें फाड़े खड़ी हो चुकी थी।

"ये दोनों तो आज़ाद हो गए। जल्दी बज़र बजाओ!" उनमें से एक चिल्लाया। मुकुल और सृष्टि कुछ समझते उससे पहले ही दूसरा गार्ड एक ओर भागा, जबकि पहले गार्ड ने अपनी बंदूक निकाल

ली थी। मुकुल ने
उसे बड़े ही अफसोस के साथ देखा और उसके बंदूक चलाने से पहले ही अपनी तर्जनी ऊंगली से अग्नि की एक महीन और तेज धार उस बंदेक पर डाल दी। पलक झपकते ही वो बंदूक लावे की तरह गर्म हो गया, जिससे उस गार्ड का हाथ बुरी तरह से झुलस गया। उसने तुरंत ही अपनी बंदूक नीचे गिरा दी और दूसरे हाथ से अपने जले हुए हाथ को संभाल लिया। उसका गला दर्द की हिचकियों से रूंध गया था। मुकुल ने अपने होंठ टेढ़े किए और सृष्टि को पुकारते हुए बोला,

"रेडी सृष्टि?"

और फिर उसने एक बार फिर से अपने अग्नि वार से सामने वाले को पूरी तरह से भून दिया। उसकी लाश नीचे गिरती उससे पहले ही वो उस तक पहुॅ॑चा और उसकी जली हुई लाश उठाकर सृष्टि की ओर फेंक दी, जो एक बार फिर सृष्टि के बनाए कालछिद्र की अथाह गहराईयों में गुम हो गया।

उससे निपटते ही वो दूसरे गार्ड की ओर दौड़ा। सृष्टि भी उसके पीछे भागी। वो जब तक उसके पास पहुॅ॑चे... वो एक बटन के पास खड़ा उसकी ओर हाथ बढ़ा रहा था। मुकुल ने फुर्ती से उसकी ओर अग्निफंदा फेंका, जिसने उस गार्ड के पास पहुॅ॑चकर उसकी गर्दन दबोच ली। बेचारे की आवाज उसके भुने हुए हलक़ में अटक गई। लेकिन इस छीना-झपटी में एक गड़बड़ हो गई। दरअसल उस गार्ड का हाथ और शरीर उस बटन के बहुत ही पास जा चुके थे, जिसकी वजह से उसका पैर उस बटन से छू गया और अगले ही पल... एक तेज सिर पर हथौड़े की तरह बरसने वाली आवाज चारों ओर गूंजने लगी। अभी मुकुल ने उस गार्ड की लाश को नीचे पटका ही था कि तभी सामने से ढेर सारे गार्ड्स हथियारों के साथ उनकी ओर भागते हुए आए। मुकुल संभलकर कुछ करता उससे पहले ही उनके पास आ चुके वो सारे गार्ड्स सृष्टि के बनाए कालछिद्र में एक झटके में ही खिंचकर समा गए।
"वाव! इट्स अमेजिंग!" मुकुल ने उसकी तारीफ करते हुए कहा।

"हॉ॑! फिलहाल तो! बाकी आगे देखते हैं।" सृष्टि ने भी चौकन्नी निगाहों से सामने की ओर देखते हुए कहा और फिर गार्ड्स के आने वाली दिशा में दौड़ लगा दी। समय ज्यादा नहीं था और उस बज़र के बजने की वजह से दुश्मन की फौज सचेत हो चुकी थी। फालह तो आगे बढ़ते हुए रास्ते में उन्हें कोई और नज़र नहीं आया, जिसकी वजह से उनकी हैरानी और भी बढ़ी थी। मगर फिर भी वो दोनों आगे बढ़ते गए और आखिरकार एक दरवाजे के सामने रूके। उस दरवाजे के पीछे से बहुत ही अजीब-अजीब सी आवाजें आ रही थीं।

"ये आवाजें!" मुकुल ने उस दरवाजे पर कान लगाकर सुनते हुए कहा।

"जो भी है। बाहर तो निकलना ही है।" कहते हुए सृष्टि ने झटके से वो दरवाजा खोला और फिर दोनों ही बाहर निकल आए। बाहर का माहौल बड़ा ही भागम-भाग वाला लग रहा था, जहॉ॑ ढेर सारे गार्ड्स एक ओर भाग रहे थे। सृष्टि और मुकुल ने भी उस तरफ अपनी गर्दन घुमाई ही थी कि तभी खच्च की आवाज के साथ कुछ बहुत ही तेजी से उनकी ओर आया, जिसे मुकुल ने लपक लिया। खून से सन चुके सृष्टि और मुकुल ने ऑ॑खें फाड़कर देखा। वो एक गार्ड का साबुत कटा हुआ सिर था, जिसकी कटी हुई गरदन से खून का फव्वारा निकल रहा था। उन दोनों ने सामने देखा। खून टपकती तलवार पकड़े चैतन्य काल का रूप बना सामने खड़ा था। यकीनन युद्धघोष हो चुका था और बिछड़े साथियों से हाथ मिलाने का समय भी आ गया था।
चैतन्य सावधानी से उस मकान के मुख्य दरवाजे की ओर बढ़ा। बाकी भी उसके पीछे ही थे।
उन्होंने उसके बड़े से दरवाजे के आसपास नज़र दौड़ाई। पहरे पर तैनात दो मुस्टंडे जैसे गार्ड्स के अलावा और कोई नज़र नहीं आ रहा था।

"पहले इनसे निपटना पड़ेगा।" आशुतोष ने उन दोनों के डील-डौल को नापते हुए कहा।

"हम्म! अंकित! वो चांदी के कांटे हैं ना तुम्हारे पास?" चैतन्य ने सवाल किया।

"हॉ॑!" कहते हुए अंकित ने अपनी जैकेट के अंदर-बाहर के सभी पॉकेट्स को थपथपाया।
"निशाना ठीक है ना तुम्हारा?" चैतन्य ने अंकित की ओर देखकर पूछा।

"हॉ॑! पुलिस की ट्रेनिंग के समय बेस्ट निशानेबाज का खिताब मिला था। ऑ॑ख में पट्टी बांध कर भी सही जगह निशाना लगा सकता हूं... आवाज सुनकर।" अंकित ने अपनी ही पीठ

थपथपाते हुए कहा।

"तो एक कांटा गार्ड्स के ठीक दिल के ऊपर और दूसरा उनके हलक़ के अंदर। समझ में आया!" चैतन्य ने उसे समझाते हुए कहा।

"यस कैप्टन!" अंकित ने चैतन्य को सैल्यूट करते हुए बहुत ही धीमी आवाज में कहा, जिस पर चैतन्य पहली बार हल्का सा मुस्कुराया था।

फिलहाल तो चैतन्य को इतनी इज्जत मिलती देखकर वरूण तिलमिला उठा था। उसने अपना गला साफ किया और फुसफुसा कर बोला, "मैं भी ट्राई करूं! अनामिका के लिए बहुत आम गिराए हैं मैंने भी।"

चैतन्य ने पलटकर उसके चश्मे को ऑ॑खें सिकोड़ कर देखा और फिर बहुत ही नर्मी से बोला, "तुम... रहने ही दो! वरना आम नाराज़ हो जाऍ॑गे।"

और ये सुनते ही अंकित ने जहॉ॑ अपना गला साफ किया, वहीं वरूण ने गुस्से में अपने होंठ भींचे थे।

"सब समझता हूॅ॑ इसके इरादे। लेकिन मैं भी वरूण हूॅ॑ वरूण! देखता हूॅ॑ कब तक मुझे इग्नोर करेगा तुम्हारा ये मि. कैप्टन?" वरूण, अंकित के कानों में जहर उड़ेलते हुए बोला।

"अंकित! आओ!" अंकित के कुछ कहने से पहले ही आशुतोष ने उसे आवाज लगाई दी और वो उनकी ओर बढ़ गया। अंकित ने जैसा कहा था
वैसा ही किया। उसके निशाने अचूक थे। उसने पलक झपकने की देर में दो कांटे फेंके जो पास वाले गार्ड के दिल और हलक़ में जाकर धंस गए और वो एक आवाज निकाले बिना जमीन पर गिर गया। उसके जमीन पर गिरते ही दूसरा गार्ड तेजी से भागता हुआ आया, मगर वो नीचे गिरे गार्ड को ठीक से देख पाता उससे पहले ही अंकित ने अपना काम कर दिया था। वो दूसरा गार्ड भी बिना आवाज किए उस पहले गार्ड के ऊपर ही गिर पड़ा।

"आओ जल्दी!" चैतन्य ने सबको आगे आने का इशारा किया और फिर उस गेट की दीवार से सटकर खड़ा हो गया। उसने धीरे से सिर निकालकर अंदर की ओर झांका और हालातों का जायजा लिया।
अंदर पूरी तरह से ख़ामोशी छाई हुई थी।

"आओ!" चैतन्य ने फिर से इशारा किया और फिर लोहे के उस विशाल गेट के सामने खड़ा हो गया। दरवाजा अंदर से बंद था।

"ये तो बंद है।" अंकित ने निराश स्वर में कहा।

"कोई बात नहीं! अभी खोल देते हैं।" कहते हुए चैतन्य ने अपने जेब से वो चाबी निकाली और फिर उसे अपनी हथेली के सहारे उस दरवाजे पर टिका दिया। इसके बाद चैतन्य ने अपनी हथेली को एक झटका दिया और वो दरवाजा खुल गया। चैतन्य पीछे पलटकर मुस्कुराया और फिर उस दरवाजे को धकेलता हुआ उसके अंदर चला गया। अभी वो अंदर आया ही था कि तभी दरवाजे से लगे गार्ड केबिन से एक गार्ड दौड़ता हुआ आया। चैतन्य ने एक पल की देरी किए बिना ही उसकी गर्दन दबोची और फिर अपने तेज खंज़र ने उस गार्ड की गर्दन काटकर उसके कंधे पर झूला दी।

उसने उसकी लाश को नीचे फेंका ही था कि सब एक-एक करके अंदर आ गए। देखा तो चैतन्य खून के छींटों से लाल हुए अपने चेहरे को पोंछ रहा
था। सबको अपनी ओर ताकता हुआ पाकर वो जल्दी से उनके पास पहुॅ॑चा और अपनी जेब से दवा की शीशी निकालकर बोला, "कोई और आए... उससे पहले ही अपना काम खत्म करते हैं।"

और ये कहते ही चैतन्य ने उस दवा की एक बूंद जमीन पर गिरा दी।

"वरूण! आशुतोष जी! अब आप दोनों की बारी!" कहकर चैतन्य थोड़ा सा पीछे हट गया। उसका इशारा मिलते ही आशुतोष और वरूण आगे आए। आशुतोष ने अपना खंज़र निकाला और उसी दवा की बूंद के ऊपर ही खंज़र को गाड़ दिया। उन्होंने खंज़र की मूठ को एक हाथ से पकड़ा। उसके बाद वरूण ने अपने दोनों हाथों से आशुतोष के हाथ को पकड़ लिया। अगले ही पल खंज़र की नोंक से हरे रंग की चिंगारी सी निकली और वो करीब एक फीट चौड़ी लाइन बनाती हुई सामने

[illegible]

"[illegible]... [illegible]" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible].... [illegible]" [illegible]

"[illegible]... [illegible]"
[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]... [illegible]! [illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]... [illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

[illegible]

"[illegible]

"[illegible]

"

"□□□ □□□□ □□□ □□□ □□?" □□□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□

"□□ □□□ □□□□" □□□□ □□ □□□□

"□□□ □□□?" □□□□□□ □□ □□ □□□□□

"□□□! □□□□□ □□ □□□□□□□□□□!" □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□, □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□.... □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□□□

"□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□!" □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□, □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□

□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□-□□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□ (□□□ : □□□ 33 -□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□)

"□□□□□□□□!" □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□

□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□

"□□!" □□□□ □□□□□

"□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□? □□... □□□□ □□□ □□□□!" □□□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□

"□□□□□□!" □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□, □□□□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□ □ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□

चैतन्य ने अपनी ऑ॑खें खोली और वही सख़्त चेहरा लिए आगे बढ़ गया।
जल्द ही वो सब उस मकान के मुख्य दरवाजे के सामने खड़े थे, जो कि स्वाभाविक रूप से बंद था।

"हटिए!" चैतन्य ने उन दोनों को परे हटाते हुए अपनी जेब से जादुई चाबी निकाली। वो उस चाबी को कीहोल के अंदर डालने ही वाला था कि तभी बाहर चमगादड़ों का शोर और भी ज्यादा बढ़ गया और साथ ही बढ़ गई अंकित के गन से निकलने वाली फायरों की आवाज।

"नहीं! हम उसे मरने के लिए नहीं छोड़ सकते। आप लोग दरवाजा खोलिए। मैं उसे लेकर आता हूॅ॑।" कहते हुए वरूण अपनी चाबुक और खंज़र संभालते हुए बाहर की ओर भागा। आशुतोष ने भी चैतन्य को दरवाजा खोलने के लिए कहा।

वरूण पूरी ताकत से दौड़ते हुए अंकित की ओर गया.. मगर उसने अपने तेज भागते पैरों को जैसे झटके से ब्रेक लगाकर रोका और वो कुछ दूर तक घिसटता चला गया। जब वो पूरी तरह से रूका तो सामने का नज़ारा देखकर हैरान रह गया। मुॅ॑ह खोले खड़ा अंकित अपनी गन संभाले ऊपर आसमान की ओर देख रहा था, जहॉ॑ अब वो सारे चमगादड़ आपस में ही भिड़े हुए थे। हैरानी तो वरुण को भी हुई मगर जब उसने ये ग़ौर किया कि फिलहाल अंकित खतरे में नहीं था तो वो तेजी से दौड़कर उसके पास गया और उसके हाथ को पकड़ अपने साथ खींच कर अंदर की ओर ले गया। अंकित पूरी तरह से खून से नहा चुका था। वो दोनों जब दौड़ते हुए दरवाजे तक पहुॅ॑चे तो वो दरवाजा खुला हुआ था और चैतन्य, आशुतोष के साथ अंदर जा चुका था।

"चलो जल्दी! कहीं ये बंद ना हो जाए!" वरूण ने चिल्ला कर कहा और उसके बाद वे दोनों बिना रूके दौड़ते हुए अंदर घुस गए। चैतन्य और आशुतोष दोनों ही थोड़ी दूर आगे सामने की ओर देखते हुए चुपचाप खड़े थे। वो दोनों भी तेजी से दौड़कर उनके पास पहुॅ॑चे। सामने देखा तो दिल
धक्क करके रह गया।

"कितने होंगे?" वरुण, आशुतोष के कान में फुसफुसाया।

"उतने ही... जितने की हमारे हथियारों को जरूरत है।" एक बार फिर अपनी तलवार और खंजर पर मुट्ठियॉ॑ कसते हुए चैतन्य ने जोश भरी आवाज में कहा और फिर उनका इंतजार किए बिना आगे बढ़ गया। बात भले 200 साल पहले की हो, मगर उसके लिए तो एक दिन पहले की ही बात थी, जब इसी तरह तलवार से कितनों के सिर काटे थे उसने। उतना आत्मविश्वास तो उसके अंदर अभी भी भरा हुआ था, जो निश्चित रूप से सामने वालों पर भारी पड़ने वाला था।

चैतन्य के आगे बढ़ते ही सबसे सामने खड़े कुछ गार्ड्स उसकी ओर भागे। चैतन्य सबसे पहले आए गार्ड का हमला झुक कर रोकते हुए तेजी से गोल घूमा और दो को अपनी तलवार से कमर के पास से पूरा काट दिया। वार करने के तुरंत बाद वो तेजी से उठा और सबसे पास पहुॅ॑चे गार्ड के पेट पर एक तेज लात मारते हुए उसके साथ आए गार्ड के सीने में अपना खंज़र उतार दिया। अगले ही पल झटके से खंजर खींचते हुए वो फिर से एक बार गोल घूमा और एक साथ तीन के सिर हवा में उड़ा दिए। तलवार वाले हाथ को सीधा करते हुए उसने अपने खंज़र वाले हाथ को झटका देकर दौड़कर पास आते हुए गार्ड के सीने में अपना खंज़र फेंक मारा। इसी के साथ चार गार्ड्स ने उस पर एक साथ हमला किया, जिसे उसने अपनी तलवार से रोक रखा था। दवाब बढ़ने के साथ ही वो नीचे से अपनी तलवार निकाल कर उनके बीच से लुढ़क कर बाहर आ गया। वो चारों के चारों तलवार के साथ जमीन पर गिर पड़े और इससे पहले कि वो संभल पाते, चैतन्य ने चारों ओर अपनी तलवार गोलाई से घुमाकर एक साथ उन चारों के सिर हवा में उड़ाते हुए उनकी आत्मा को उनके शरीर से मुक्त किया। बस उसी समय पास के एक दरवाजे से मुकुल और सृष्टि बाहर निकले और उन चारों में से एक के कटे हुए सिर को मुकुल ने कैच कर लिया।
गहरी सॉ॑से भरता हुआ चैतन्य तलवार की नोक जमीन में टिकाकर सीधा खड़ा हो गया और उन सब गार्ड्स की ओर चिढ़ाने वाली मुस्कुराहट डालते हुए बोला, "कितने हुए? ग्यारह ना! चलो कर दिया शगुन! खुश!"

खून से नहाए हुए चैतन्य की बात सुनने के बाद उस पूरे कमरे में मौत जैसा सन्नाटा छा गया था। इतना कि सबकी बढ़ी हुई धड़कनों का शोर साफ-साफ सुनाई दे रहा था। वहॉ॑ मौजूद किसी ने भी चैतन्य से इस तरह के शक्ति-प्रदर्शन की उम्मीद नहीं की थी। मगर वो सारे ये नहीं जानते थे कि... चैतन्य इस खेल में बहुत पहले ही माहिर हो चुका था। चैतन्य ने

पीछे मुड़कर अपने साथियों की ओर देखा जो उसे जबड़े लटका कर देख रहे थे।

"ओए! देख क्या रहे हो? फिल्म चल रही है क्या? आओ! आगे जाना है हमें!" चैतन्य ने अपने साथियों को झिड़कते हुए कहा, जो एक पल को भूल ही गए थे कि वो सब वहॉ॑ क्यों आए हुए थे?

और चैतन्य की बात सुनकर उसके साथियों के साथ-साथ सामने भौंचक्के खड़े गार्ड्स भी होश में आए। चैतन्य के भारी भरकम कारनामे को देखने के बाद उसके साथियों के बारे में सोचकर भारी संख्या में होने के बाद भी वो सारे गार्ड्स सिहर उठे। जब एक अकेले चैतन्य ने 11 को इतनी आसानी से मौत के घाट उतार दिया और वो 11 उसे छू भी नहीं सके... तो उसके बाकी साथियों की ताकत का अंदाजा लगाना उन गार्ड्स के लिए मुश्किल ही था। लेकिन उनके लिए भी आगे बढ़ना जरूरी था। एक और
नरसंहार अच्छाई और बुराई की भेंट चढ़ने वाला था।

भाग 158

"ओए! देख क्या रहे हो? फिल्म चल रही है क्या? आओ! आगे जाना है हमें!"

चैतन्य की घुड़कती हुई आवाज उस सन्नाटे में फैली, जो उसके साथियों के साथ दुश्मनों को भी खबरदार कर गई। सबका ध्यान चैतन्य पर ही जाकर टिक गया, जो अपनी तलवार को कंधे पर रखे हुए चारों ओर बहुत ही चौकन्नी निगाहों से देख रहा था।

"खुद को बस इतना ही दरिंदा बनाना है, अगर इन सबकी दरिंदगी का शिकार नहीं बनना चाहते हो तो।" चैतन्य ने एक बार फिर अपने साथियों की ओर देखकर कहा और फिर अपनी तलवार घुमाते हुए सामने खड़े दुश्मनों की ओर बढ़ गया।

होश में वापस आते ही आशुतोष, अंकित और वरूण तीनों ने ही अपना-अपना मोर्चा संभाला। अंकित की गन उनके भेजे उड़ाने में मशगूल
थी, तो वरूण के चाबुक और खंज़र की जुगलबंदी दुश्मनों की आत्मा उनके शरीर से खींच निकालने में और भी माहिर होती जा रही थी। उधर आशुतोष भी अपने फरसे के साथ श्री परशुराम की छवि अपनाने की कोशिश में थे। आश्चर्यजनक रूप से वो सभी इस काम में माहिर दिखाई दे रहे थे। वहीं एक तरफ मुकुल और सृष्टि अभी भी मुॅ॑ह बाए खड़े सामने हो रही घटना को अपलक देख रहे थे।

"हम भी चलें?" मुकुल ने सामने देखते हुए कहा।

"ये भी पूछने या कहने वाली बात है।" सृष्टि ने कहा और वो भी उस भीड़ की ओर दौड़ पड़ी। मुकुल ने भी अपने हाथ में पकड़े उस कटे हुए सिर को एक ओर उछालकर अपनी ऊंगलियों की चिंगारी में फूंक मारी और उसने वहीं खड़े हुए ही सबसे पास मौजूद गार्ड को अपनी अग्निकिरण से पल में ही भून दिया। उसके साथ खड़े गार्ड्स ने जब अपने साथी की ऐसी हालत देखी तो वो सब उसकी ओर ख़ौफ से देखने लगे। मुकुल ने भी उनकी तरफ शरारत भरी टेढ़ी मुस्कान डाली और फिर अगले ही पल उसके हरकत करते दोनों हाथों के बीच कुछ चिंगारियॉ॑ सी फूटीं। फिर उसने अपने दोनों हाथों को उनकी ओर इस तरह झटका दिया, जैसे कि कुछ फेंका हो। वो सब उसकी मंशा समझ पाते उससे पहले ही आग का एक तेज भभका उन्हें अपनी चपेट में ले चुका था। उन्हें ख़ाक करने के बाद वो भी तेजी से आगे की ओर बढ़ गया।

अब एक तरफ सभी अपनी अलौकिक शक्तियों के दम पर दस-दस पर भारी पड़ रहे थे.. वहीं दूसरी तरफ अंकित अपने शक्तिशाली आत्मबल के दम पर सामने वालों की नाक में दम किए हुए था। मगर

तभी एक अनहोनी हुई और उसकी गन का जादुई चॉ॑दी का पावडर खत्म हो गया। बाहर चमगादड़ों की फ़ौज पर अंधाधुंध फायरिंग करने का नतीजा था, जिसकी ओर किसी का ध्यान नहीं गया था। अब तो वो फॅ॑स चुका था। उसके पास चॉ॑दी के कॉ॑टे तो थे... मगर वो उससे एक साथ सब पर वार
नहीं कर सकता था। फिर भी वो चारों ओर अपनी चौकन्नी निगाहों से देख रहा था।

"मरा भी तो कुछ को तो साथ लेकर ही जाऊॅ॑गा।" ये कहते हुए अंकित ने अपनी ऑ॑खें बंद कईं और फिर अंदर की जेब से चॉ॑दी के कॉ॑टे निकालकर उसने तीव्रता से एक ओर फेंका। निशानेबाजी में उसकी महारत ने दम दिखाया और उन सभी कॉ॑टों ने अपना निशाना खोज ही लिया। एक साथ चार गार्ड्स अपने सीनों पर हाथ रखे गिर पड़े। अब उसने तेजी से दूसरी ओर देखा, मगर तब तक देर हो चुकी थी। एक साथ कई गार्ड्स उसके सिर पर ही पहुॅ॑च चुके थे। अंकित भी बेख़ौफ होकर उनके सामने खड़ा हो गया। उनके बीच की दूरी खत्म होने को ही थी कि तभी उनके बीच रोशनी का एक पटाखा सा फूटा और अंकित की ऑ॑खें चौंधियॉ॑ गईं। उसने अपनी ऑ॑खें अपनी बाजू से ढॅ॑क ली और जब उसने ऑ॑खें खोली तो सामने उस रोशनी को सिमटते हुए पाया। उसने चारों ओर देखा। उसकी ओर बढ़े सारे गार्ड्स गायब हो चुके थे। उस रोशनी के सिमटते ही उसने एक ओर खड़ी सृष्टि की ओर देखा जो अभी भी आक्रमण की मुद्रा में खड़ी थी।

"ओए! ये पकड़! लोड कर अपनी गन!" कुछ दूर खड़े वरूण ने उसकी ओर चॉ॑दी के पावडर से भरा कॉ॑च का एक पात्र उछाला, जिसे अंकित ने तुरंत ही कैच कर लिया। उसे पावडर देकर वरूण एक बार फिर से सामने वालों के साथ उलझ गया।

"थैंक्यू!" कहते हुए अंकित ने वरूण और सृष्टि दोनों की ओर हाथ उठाया और अपनी गन रिलोड कर ली। जल्द ही उन सबने मिलकर सभी का सफाया कर दिया। अपने-अपने जख्मों पर हाथ रखे वो सब साथ आ गए।

"मुकुल! सृष्टि! तुम दोनों को फिर से साथ देखकर हिम्मत और भी बढ़ गई।" आशुतोष ने गर्मजोशी से उनसे हाथ मिलाते हुए कहा।
"मुझे पता था कि तुम दोनों बिल्कुल सही-सलामत होंगे। पर यहॉ॑ होंगें। इसकी उम्मीद तो बिल्कुल भी नहीं थी।" वरूण ने भी उत्साहित होते हुए कहा।

"ज्यादा खुश मत हो! मुझे कुछ सही नहीं लग रहा है।" चैतन्य ने उन सभी की खुशी में सेंध मारते हुए कहा।

"क्या मतलब?" आशुतोष ने पूछा।

"मतलब ये कि... समय कितना हो गया है?" जवाब देने की बजाय चैतन्य ने पलटकर सवाल किया।

उसका सवाल सुनकर सभी ने आश्चर्य से उसकी ओर देखा और फिर वरूण ने अपनी स्मार्ट वॉच पर नज़र डालते हुए जवाब दिया, "1:30 हुए हैं।"

"मुझे पता था! मैं जानता था कि कहीं कुछ तो गड़बड़ है।" चैतन्य ने अपनी हथेली पर मुक्का मारते हुए खीझ भरी आवाज में कहा।

"क्या? हुआ क्या?" मुकुल ने पूछा।

"तुम सबको अजीब नहीं लगा कि इतने सारे गार्ड्स भी हमें रोक नहीं पाए। दरअसल वो हमें मारना चाहते ही नहीं थे। वो बस हमारा समय बर्बाद कर रहे थे ताकि हम 3 बजे तक उस तक ना पहुॅ॑च पाऍ॑।" चैतन्य ने अपनी ऑ॑खें शून्य में रखकर बेचैनी भरे चेहरे के साथ कहा।

"3 बजे मतलब!" सृष्टि ने पूछा।

"मतलब कि वो कुछ करने वाला है। कुछ बुरा। पहले भी हर ग़लत काम
इसी समय में किए हैं उन्होंने। वो कुछ करे... उससे पहले ही हमें अल्फ़ी और अनामिका को ढूंढना होगा। वो कुछ तो ऐसा करने की फिराक में है... जो अधूरा रह गया है।" चैतन्य ने अपनी फैली हुई ऑ॑खों में डर को भरकर कहा।

"अधूरा रह गया है से तुम्हारा क्या मतलब है?" आशुतोष ने चिंतित चेहरे के साथ कहा।

"आशुतोष जी! आप लोग खुद ही सोचिए! अगर दस साल पहले ही उसने अपनी साधना पूरी कर ली थी... तो वो अभी भी इतना बेचैन क्यों है? क्यों वो परिधि और अनामिका के पीछे पड़ा है? कुछ तो ऐसा है... जो हम अभी भी नहीं पकड़ पाए हैं। वो कुछ और ही खेल खेल रहा है। कुछ पहले से भी ज्यादा बड़ा और शायद खतरनाक भी। उसने बहुत सोच समझकर अल्फ़ी और अनामिका को अपने चंगुल में लिया है।" चैतन्य परेशान लहजे में बोला।

"कहीं वो उन दोनों को ही तो नहीं मारना चाहता। आखिर उस एडवर्ड को उन दोनों से ही तो प्रॉब्लम है। उसे अल्फ़ी की दुखती रग बहुत ही अच्छे से पता है। उसने वही नस दबाई और अल्फ़ी ने इतनी बड़ी हिमाकत कर दी।" अंकित सारी बातों का विश्लेषण करते हुए बोला। उसकी बात सुनकर लगभग सभी ने अपनी सहमति जताई। मगर चैतन्य किसी और ही सोच में डूबा हुआ था।

"चलो जल्दी! वरना कहीं देर ना हो जाए।" अपनी उस सोच से बाहर निकलते हुए चैतन्य ने कहा।

"पर वो तो तुम ही कर सकते हो। तुम जानते हो कि वो अल्फ़ी उसे कहॉ॑ ले गया है?" आशुतोष ने चैतन्य की बात सुनकर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा।
"वो उसे अपनी साधना करने वाली जगह ले गया है। इससे पहले कि वो कुछ कर गुजरे... उससे पहले ही हमें उन तक पहुॅ॑चना होगा। " चैतन्य ने चारों ओर देखते हुए कहा।

"तो चलो ना! देर किस बात की है?" सृष्टि ने कहा।

"मैं नहीं... अब तुम लेकर चलो! समय के साथ उस जगह की पहचान बदल चुकी है। मैं ये जानता हूॅ॑ कि वो कहॉ॑ हैं.. पर वो जगह कहॉ॑ हैं ये अब बस तुम ही जानती हो। तुमने उस पिशाच को देखा है ना! जहॉ॑ देखा था... वहीं लेकर चलो।" चैतन्य ने सृष्टि से मुखातिब होते हुए कहा।

"मतलब कि.... तुम्हें लगता है कि मुझे पता है कि वो जगह कहॉ॑ पर है?" सृष्टि ने उलझन भरी आवाज के साथ कहा।

"तुम सही समझ रही हो। चलो जल्दी!" चैतन्य ने भी उसकी बात का समर्थन करते हुए कहा।

और चैतन्य की बात सुनते ही सृष्टि ने उन सभी को साथ आने के लिए कहा और खुद ही आगे बढ़ गई। बाकी सब भी तत्परता से उसके पीछे चल दिए। हमेशा की तरह वो अपने जाने-पहचाने रास्ते पर आगे बढ़ गई। बाकी सब भी उसी के पीछे-पीछे चारों ओर चौकन्नी निगाहों के साथ चल रहे थे। नीचे वो हरी रेखा चमक रही थी, जिससे सभी ने दूरी बनाकर रखी थी। और फिर चलते-चलते सृष्टि एक काली दीवार के सामने रूक गई। उसके साथ-साथ ही सभी अपनी जगह पर रूके थे। यहॉ॑ तक कि वो जादुई रेखा भी उस दीवार से थोड़ा पहले तक आकर रूक गई।

"आगे तो रास्ता बंद है।" अंकित ने उस काली दीवार को देखते हुए कहा।
"रास्ता इसी के आगे है। रूको! मैं खौलती हूॅ॑!" कहते हुए सृष्टि ने उस दीवार के एक हिस्से में अपनी सीधी हथेली रखी और ऑ॑खें बंद कर कुछ कहा। और उन लोगों ने उस दीवार के काले रंग को अपनी जगह पर हलचल करते हुए देखा। ऐसा लग रहा था कि वो रंग सिमटना चाह रहा था, पर सृष्टि के माथे पर बढ़ते शिकनों के बाद भी सिमट नहीं सका। ऐसा लग रहा था जैसे कि उस दीवार पर कोई जंग चल रही हो और आखिरकार सृष्टि के कॉ॑पते-थरथराते शरीर को चैतन्य ने उस दीवार से अलग किया। उसका पूरा शरीर तपने लगा था और पसीने से भीग चुका था। गहरी-गहरी साॅ॑सों के बीच उसने अपनी ऑ॑खें खोली और सूखे गले को गीला करते हुए चैतन्य की ओर देखा, जो फिक्र भरी नज़रों से उसे देख रहा था।

"तुम ठीक हो!" चैतन्य ने पूछा, जिस पर सृष्टि ने तेजी से हॉ॑ में सिर हिलाया।

"मगर रास्ता तो खुला ही नहीं।" वरूण ने उस दीवार को देखते हुए झुंझलाई हुई आवाज में कहा।

"सॉरी! कल ही तो इसे खोलकर प्रोफेसर साहनी का पीछा किया था मैंने। लगता है कि उन्होंने मुझे प्रतिबंधित कर दिया है। कल तक तो मैं इसे आसानी से खोल रही थी।"(भाग 14
- अप्रूवल)

"तो अब!" अंकित ने कहा।

"हटो यार!" कहते हुए चैतन्य उस दीवार के पास गया और एक गहरी साॅ॑स लेकर अपनी सीधी हथेली उस दीवार पर टिका दी। कुछ सेकंड्स उसी तरह रखने के बाद उसने अपनी हथेली को दाहिनी ओर झटका देकर हल्का सा घुमाया और अचानक ही उस दीवार में हलचल सी होने लगी।
चैतन्य अपनी हथेली समेटते हुए तेजी से पीछे हटा। सभी ने अपनी खुली
हुई ऑ॑खों को और भी खोलकर देखा... कि किस तरह वो दरवाजा एक ओर हट गया।

""ये तुमने कैसे किया?" सृष्टि ने उस खुले दरवाजे और चैतन्य को बारी-बारी से अपनी हैरान ऑ॑खों से देखते हुए पूछा।

"मैं कुछ भी खोल सकता हूॅ॑।" चैतन्य ने अपनी मुट्ठी में दबी चाबी सबको दिखाते हुए कहा और आगे बढ़ गया।

"रूको चैतन्य! रूको!" सृष्टि चिल्लाते हुए उसकी ओर भागी, जो अब सामने जली मशाल को देखकर रूक गया था।

"इसे क्या हुआ?" वरूण ने मुकुल से पूछा, जो उन सभी की तरह ही हैरान था।

"मुझे क्या पता? दरअसल... मुझे सच में कुछ पता ही नहीं है।" मुकुल ने उस दरवाजे पर गहरी नज़र डालकर आगे बढ़ते हुए कहा। उसके आगे बढ़ते ही बाकी सब भी पीछे-पीछे चल दिए।

सृष्टि हॉ॑फती हुई चैतन्य के पास पहुॅ॑ची, जो उसी की तरफ देख रहा था।

"रूको! आगे भूल-भुलैया है। ये मशालें बस उसी को सही रास्ता दिखाती हैं, जिन्हें इस तरफ आने का अधिकार प्राप्त है और थोड़ी देर पहले ही तुम देख चुके हो कि अब मुझे भी ये अधिकार नहीं है। आगे मुश्किल हो सकती है क्योंकि आगे का रास्ता मुझे तो क्या.... किसी को भी नहीं मालूम है।" सृष्टि ने सामने खड़ी समस्या से सबका परिचय करवाते हुए कहा।

"सियापा!" चैतन्य ने अपने माथे पर हाथ मारते हुए कहा।
"पर मुझे ये समस्या दिखाई नहीं दे रही है।" आशुतोष की आवाज आई, जिस पर सभी ने उनकी ओर देखा, जिन्होंने नीचे जमीन की ओर अपनी ऊंगली उठा रखी थी। सबने देखा कि उन्होंने जो जादुई रेखा अनामिका की खोज के लिए बनाई थी... दरवाजे के खुलते ही अब वो धीरे-धीरे सही रास्ता खोजते हुए आगे बढ़ रही थी। ये देखते ही सभी के होंठों की मुस्कान चौड़ी हुई।

"चलो! आगे बढ़ते हैं! पर सावधानी से!" चैतन्य ने कहा और फिर वो सभी उस हरी चमकीली रेखा का अनुसरण करते हुए आगे बढ़ने लगे। उन सभी ने देखा कि अक्सर गलत दिशा की मशालें जलकर उन्हें रास्ते से भटकाने का पूरा प्रयास कर रही थी। मगर उन्होंने अपनी जादुई रेखा पर पूरी तरह से भरोसा किया। उस अंधेरी भूल-भुलैया में वो उसकी चमक एक उम्मीद की तरह ही रोशन थी।

आगे बढ़ते हुए एक जगह पर आकर सृष्टि रूक गई और उसने पीछे मुडकर उन सभी को रूकने का इशारा किया। इसके बाद वो अकेली ही कुछ दूर आगे तक गई और फिर कुछ जॉ॑च-पड़ताल के बाद उसने पीछे मुडकर उन सभी को बिना आवाज किए आगे बढ़ने का इशारा किया। उसका इशारा मिलते ही वो सब उसके पास आ गए। बाईं ओर आगे जाकर एक बड़ा सा सुनहरा दरवाजा नज़र आ रहा था।

"ये कौन सा कमरा है?" हैरत में पड़े हुए मुकुल ने सृष्टि से पूछा।

"प्रोफेसर साहनी की स्टडी! मगर ये उस स्टडी का छिपा हुआ हिस्सा है... इसलिए तुमने आज तक इसे नहीं देखा था।" सृष्टि ने मुकुल के सवाल का जवाब देते हुए कहा और फिर उस दरवाजे के पास पहुॅ॑चकर उसने एक बार फिर से सिर उठाकर उस पूरे दरवाजे को देखा और फिर पीछे मुड़कर चैतन्य की ओर देखा।
"आओ! खोलो! मैं अब इसे नहीं खोल सकती।" सृष्टि ने चैतन्य को आगे आने का इशारा करते हुए कहा।

चैतन्य आगे आया और अपनी चाबी उस दरवाजे की कीहोल में डाल दी। चाबी को घुमाते ही खट्ट की आवाज के साथ वो दरवाजा खुल गया। सृष्टि ने आगे बढ़कर बिना आवाज किए वो दरवाजा

हल्का सा खोला और फिर उसके अंदर सिर घुसाकर देखा। अंदर अच्छी तरह देखने के बाद उसने सिर बाहर निकाला और पीछे मुड़ी।

"प्रोफेसर साहनी अंदर हैं। अकेले हैं!" सृष्टि ने अंदर की जानकारी देते हुए कहा।

"पर इस कमरे में क्यों?" आशुतोष ने पूछा।

"हमें जहॉ॑ जाना है... वहॉ॑ जाने का रास्ता इसी कमरे से है।" सृष्टि ने कहा।

"तो फिर चलते हैं अंदर। पहले मुकुल और सृष्टि अंदर जाऍ॑गे। वो इन्हें देखकर जरूर हैरान होंगे। उन्हें थोड़ा उलझाकर रखना... ताकि हम अचानक उस पर हमला कर सके.... या फिर हमें ये पता चल जाए कि कहीं कोई गार्ड तो अंदर सुरक्षा में नहीं छिपा बैठा है। इससे हमारे लिए आगे की कार्यवाही आसान हो जाएगी।" चैतन्य ने अपनी योजना सबको समझाते हुए कहा।

सभी की हॉ॑ के साथ ही सृष्टि और मुकुल के अलावा सभी दरवाजे की आड़ में छिप गए। सृष्टि ने आगे बढ़कर उस दरवाजे को धक्का दिया, जिससे वो दरवाजा खुल गया। उन दोनों के चेहरे पर एक मुस्कान उभरी और वो दोनों ही धड़धड़ाते हुए अंदर चले गए। प्रोफेसर साहनी उस कमरे की छत को छूती हुई खिड़की के पास खड़े थे। उस खिड़की के दोनों ओर लगे मोटे और सुनहरे पर्दों में से एक गिरा हुआ था और दूसरा खुला हुआ
था। प्रोफेसर साहनी उस खुले पर्दे के पीछे बंद काॅ॑च के पलड़ों से बाहर की ओर देख रहे थे। सृष्टि के तेज आवाज में दरवाजा खोलने से उन्होंने तेजी से पलट कर पीछे की ओर देखा। सामने मुकुल और सृष्टि को साथ खड़ा देखकर उनके चेहरे पर हवाइयॉ॑ उड़ने लगी थीं।

"तुम दोनों! तुम दोनों बाहर कैसे आए?" प्रोफेसर साहनी ने अपनी आवाज की लर्जिश को दबाते हुए कहा।

"क्यों? तुम्हें लगा था कि हम उसी कैद में ही सड़कर दम तोड़ देंगे।" सृष्टि ने बहुत ही कड़वाहट के साथ कहा। उसे अपने सामने खड़े उस शख़्स पर इस कदर गुस्सा आ रहा था कि वो उसी समय उसकी गर्दन मरोड़ देना चाहती थी। मगर मुकुल ने उसे मजबूती से पकड़ रखा था।

"तो तुम्हें क्या लगता है? उस कैद के बाहर यहॉ॑ तक पहुॅ॑च कर तुम बच गए। हश्र तो तुम्हारा यहॉ॑ भी बहुत बुरा होगा। तुम्हें क्या लगता है मैंने अपनी सुरक्षा का इंतजाम न किया होगा!" कहते हुए प्रोफेसर साहनी ने दो बार ताली बजाई और उनके ताली बजाते ही उस कमरे में बाईं ओर मौजूद किताबों की अलमारी का एक हिस्सा किसी दरवाजे की तरह खुला और उसके पीछे से करीब 8-10 हथियार बंद सुरक्षा कर्मी दौड़ते हुए बाहर निकले। उन्होंने उन दोनों को ही निशाने पर लेते हुए उन्हें चारों ओर से घेर लिया। सृष्टि और मुकुल को अपने गार्ड्स से घिरा हुआ देखकर प्रोफेसर साहनी की हिम्मत वापस लौटी।

"वेल! वेल! वेल! ये तो पता नहीं कि तुम दोनों आखिर उस कैद से बाहर निकले कैसे? क्योंकि तुम्हारी अंगूठियॉ॑ तो मेरे पास है। पर हॉ॑.... यहॉ॑ से जिंदा बाहर नहीं जाओगे इसकी गारंटी तुम्हें जरूर देता हूॅ॑। पता नहीं पिशाच श्रेष्ठ को तुम लोगों से ऐसा क्या जरूरी काम है कि उन्होंने तुम्हारी जान बचा कर रखी.... वरना मैं तो उसी समय तुम दोनों को मौत के घाट उतार देने वाला था।" प्रोफेसर साहनी अपने जर्जर हो चुके शरीर को गुस्से
में थरथराते हुए चिल्लाए।

और ये खुलासा होते ही सृष्टि और मुकुल के साथ दरवाजे के बाहर खड़े उनके साथियों के भी कान खड़े हुए थे। प्रोफेसर साहनी की बात सुनकर तो ये पता चल ही गया था कि चैतन्य का अंदाजा बिल्कुल सही था। एडवर्ड इस बार कुछ बड़ा करने की फिराक में था।

"और उसने ऐसा क्यों किया?" मुकुल ने अपने अंदर उमड़ते हुए सवाल को बाहर निकालते हुए पूछा।

"हुंह! पता होता तो उसी की गर्दन मरोड़ नहीं देता मैं। सबने परेशान करके रख दिया है मुझे।" प्रोफेसर साहनी की झल्लाती हुई आवाज आई, जिसे सुनकर उन्हें पता चल गया कि प्रोफेसर साहनी को भी एडवर्ड की योजना के बारे में कुछ पता नहीं था।

"वैसे तुम्हें उसके बारे में जानने की जरूरत भी क्या है? तुम दोनों आखिर मरने वाले जो हो। तैयार हो जाओ!" सृष्टि और मुकुल को धमकी भरी आवाज में कहते हुए प्रोफेसर साहनी ने उन सुरक्षा कर्मियों की ओर इशारा किया, जिसके बाद उन सभी ने अपनी-अपनी गंस उन दोनों की ओर उठा ली थीं। प्रोफेसर साहनी ने उन दोनों पर एक कुटिल मुस्कान डाली।

"कभी-कभी याद कर लिया करूंगा। आखिरकार मेरे ही भाई-बहन के बच्चे हो तुम दोनों। पर मुझे ताकत से ज्यादा और कुछ भी प्यारा नहीं है।" प्रोफेसर साहनी ने बहुत ही कड़वाहट और सख़्ती के साथ कहा और फिर उनकी ओर पीठ करके खड़े हो गए।

"फायर!"
प्रोफेसर साहनी की तेज आवाज उस कमरे में गूंज उठी और उसी के साथ एक-एक करके कई फायर हुए। उन आवाजों को सुनकर प्रोफेसर साहनी को खुश होना चाहिए था, मगर उन फायरिंग की आवाजों के बीच कुछ दर्द भरी चीखों ने उनके कान खड़े कर दिए। अपने माथे पर शिकन डाले हुए वो धीरे से पीछे मुड़े तो सामने का नज़ारा देखकर उनके होश उड़ गए। उनकी उम्मीद के उलट मुकुल और सृष्टि दोनों ही सही-सलामत अपनी जगह पर खड़े हुए थे और उनके उच्च प्रशिक्षित सुरक्षाकर्मी जमीन की धूल चाट रहे थे। प्रोफेसर साहनी की डरी हुई ऑ॑खों ने मुकुल की उंगलियों में धीरे-धीरे निकलती हुई चिंगारियां को देख लिया था और इसी के साथ उन्होंने तेजी से अपनी जेब के अंदर हाथ डालकर दो अंगूठियॉ॑ बाहर निकाली।

"ये कैसे हो सकता है? ये तो मेरे पास हैं।" प्रोफेसर साहनी ने उन अंगूठियां को अपनी कॉ॑पती हुई पलकों से निहारते हुए कहा।

"और आपको लगा कि... मुकुल और सृष्टि जो भी हैं, इन अंगूठियों की वजह से हैं। जी नहीं! बल्कि ये अंगूठियॉ॑ उनके पास इसलिए हैं क्योंकि वो इनके काबिल हैं।" दरवाजे को पूरी तरह खोलकर अंदर आते हुए आशुतोष ने कहा। उसके पीछे-पीछे अपनी शॉटगन संभाले हुए अंकित और अपने-अपने खंज़रों के साथ वरुण और चैतन्य आ रहे थे। अपने दूसरे हथियार उन्होंने दूसरे हाथ में पकड़ रखे थे। मुकुल और सृष्टि को सही-सलामत देखकर प्रोफेसर साहनी को जितनी हैरानी हुई थी.... बाकी सभी को देखकर वही हैरानी अब डर में बदल गई। उन सभी के आगे बढ़ने के साथ ही प्रोफेसर साहनी कदम-कदम पीछे हटने लगे। अभी वो कुछ पीछे ही हटे थे कि तभी उनके हाथ को एक तेज झटका लगा,
जिससे उनके हाथ की अंगूठियॉ॑ उछलकर एक ओर गिर गईं। उन्होंने अपने हाथ की ओर देखा, तो उनके हाथ में लिपटी बेल उनके माथे पर पसीना ले आई। प्रोफेसर साहनी ने उस कोने की ओर देखा जहॉ॑ पहले से एक गमला मौजूद था, जिस पर एक सजावटी पौधा लगा हुआ था। उसी पौधे की एक पतली सी शाख बेल की शक्ल में आगे बढ़कर प्रोफेसर साहनी के उस हाथ पर लिपट गई थी। प्रोफेसर साहनी ने घबराकर अपने हाथ को झटकते हुए उस बेल से आजाद करवाना चाहा.... मगर वो जितना भी अपने हाथ को झटकते वो बेल उतना ही उनके उस हाथ को कसती जा रही थी। कुछ ही देर में उस बेल ने प्रोफेसर साहनी के उस हाथ को कंधे तक बुरी तरह से कस लिया था। उसकी कसावट इतनी ज्यादा थी कि उस कमरे में प्रोफेसर साहनी की दर्द भारी चीखें गूंजने लगी।

"क्या कहते हो? हाथ रहने दें या एक हाथ उखाड़कर मारें इसे।" आशुतोष ने अपने दॉ॑त पीसते हुए कहा।

"पहले इससे दरवाजा खुलवा लें, फिर इसका अंजाम तय करेंगे।" सृष्टि ने सलाह देते हुए कहा।

"हम्म! बात तो सही है।" कहते हुए आशुतोष ने उस बेल को इशारा किया जिससे वो बेल प्रोफेसर साहनी को उस टेबल की ओर खींचने लगी। अपने आप को इस तरह खिंचता हुआ देखकर प्रोफेसर साहनी के हाथ पैर फूलने लगे। उन्हें पता था कि अब उनका इस पकड़ से छूट पाना बहुत मुश्किल है और इसलिए उन्होंने एक ऐसा कदम उठाया, जिसके बारे में कमरे में मौजूद किसी ने भी सोचा नहीं था। प्रोफेसर साहनी जैसे ही उस टेबल के पास पहुॅ॑चे उन्होंने उस टेबल पर रखे हुए खंज़र... जो शायद सृष्टि और मुकुल में से किसी का था... को उठाया और अपने बेल से लिपटे हुए सीधे हाथ को कंधे के पास से उस खंजर के एक तेज वार से ही काट कर अलग कर दिया। सभी भौंचक से खड़े रह गए। अपने कंधे से फव्वारे की तरह बहते खून को दूसरे हाथ से पकड़ कर रोकने की कोशिश करते हुए
प्रोफेसर साहनी दौड़ते हुए उस विशाल खिड़की के पास पहुॅ॑चे। उस कमरे में मौजूद कोई भी

कुछ कर पाता उससे पहले ही खिड़की के कॉ॑च को तोड़ते हुए वो बाहर की ओर कूद गए। सभी बौखलाई हुई हालत में उस खिड़की की ओर दौड़े और नीचे झांक कर देखा। प्रोफेसर साहनी अपना कटा हुआ कंधा पकड़कर भागते हुए सामने अंधेरों में खो गए।

"शिट!" मुकुल बहुत ही जोर से झुंझलाया था। उसी हालत में मुकुल ने अंगूठियॉ॑ और खंज़र उठाए और सृष्टि को भी उसकी अमानतें सौंप दीं।

"क्या बात है। उस एडवर्ड का इतना डर... कि अपना हाथ काटकर अलग कर दिया।" उस कटे हुए हाथ पर एक नज़र डालकर खिड़की से बाहर झांकते हुए चैतन्य ने कहा।

"अब दरवाजा कैसे खोलेंगे?" सृष्टि ने अपने माथे पर हाथ रखकर भारी चिंता से कहा।

"बेवकूफ! मैं हूॅ॑ ना! चलो दरवाजा दिखाओ।" सृष्टि के सिर पर हल्की सी चपत लगाते हुए चैतन्य ने उससे कहा और फिर अपनी जेब से वही जादुई चाबी निकाल ली, जिसे सृष्टि बिल्कुल ही भूल गई थी।

"ओह! सॉरी! आओ!" माफी मांगते हुए सृष्टि उन सब को कमरे में पड़े उस बड़े से टेबल के पास ले गई।

"उसने यहॉ॑ पर तीन बार हाथ मारा था।" सृष्टि ने पुरानी बात याद करते हुए चैतन्य को बताया।(भाग - 47)

चैतन्य आगे बढ़ा और उस चाबी को सृष्टि की बताई हुई जगह पर रख दिया और फिर उस पर तीन बार हाथ मारा। सबने देखा कि चैतन्य के
तीसरी बार हाथ मारते ही वो मेज थरथराने लगी। चैतन्य ने तुरंत ही अपनी चाबी उठाई। अगले कुछ ही पलों में वो मेज बीच से बॅ॑टकर दाईं और बाईं सरकने लगा और उसी के साथ उसके नीचे की जमीन भी उसी तरह खिसकने लगी और वहॉ॑ एक गड्ढा बन गया। वो सब वहाॅ॑ पहुॅ॑चे और उस गड्ढे के अंदर देखा। उन्होंने अंदर की ओर उतरती हुई सीढ़ियाॅ॑ को देखा। वो सभी तेजी से उन सीढ़ियों से नीचे उतरे। सबसे आखिरी में आशुतोष के उतरने के साथ ही वह दरवाजा अपने आप बंद हो गया। कुछ सीढ़ियॉ॑ नीचे उतरते ही सामने थोड़ी सी खुली जगह थी, जो चारों ओर से बंद दिखाई दे रही थी। सामने रास्ता बंद देखकर सभी ने किसी दरवाजे या रास्ते की तलाश में परेशानी से चारों ओर नजरे घुमाई थीं। वहीं सृष्टि भी अकबकाई सी उस जगह को देख रही थी।

" यहॉ॑ एक रास्ता था। पता नहीं कहॉ॑ चला गया?" सृष्टि दीवार के एक हिस्से पर हाथ मारते हुए बेचैनी से बोली।

"मुझे पता है!" चैतन्य ने अपने सामने की दीवार को घूर कर देखते हुए कहा। उसे वो जगह याद आ गई थी, जिसके ऊपर समय और कुछ लोगों की बदनीयती ने नए-नए लिहाफ ओढ़ा दिए थे। ये जंगल का वही गड्ढा था, जिसके अंदर से उन्होंने हेममाया के मृत शरीर और अनामिका को एडवर्ड के चंगुल से छुड़ाया था। इसी जगह पर अनामिका ने वो भविष्यकथन हासिल किया था और यही वो जगह थी... जहॉ॑ अल्फ़ी ने एडवर्ड को लगभग खत्म ही कर दिया था। उस जगह को देखते ही चैतन्य की ऑ॑खों के सामने जिंदगी के लिए जूझते उनके सारे प्रयास याद आ गए। भले ही उस बात को 200 साल बीत गए थे, मगर चैतन्य के लिए तो वो एक दिन पुरानी बात थी। उस रात मिले ज़ख़्म अभी भी उसके शरीर पर सूखे नहीं थे।

वो तेजी से आगे बढ़ा और सृष्टि को एक ओर हटाकर अपनी चाबी दीवार के एक हिस्से में रख दी और उसे इधर-उधर खिसकाने लगा। कुछ देर
के बाद आखिरकार वो चाबी एक जगह अंदर घुस गई। चैतन्य ने चाबी घुमाकर उस दरवाजे को खोला और उसके खुलते ही एक बार फिर से वही रक्तरंजित अतीत भी उसके सामने खुल चुका था।

उनके सामने एक अंधकार में डूबा हुआ गलियारा दिखाई दे रहा था। चैतन्य तेजी से उस अंधेरे गलियारे में उतर गया। सामने पहले की तरह ही गहरा अंधकार छाया हुआ था। मगर इस बार वो तैयार था। उसने जेब से एक पॉकेट टॉर्च निकाली और सामने रोशनी फेंकी। सब कुछ पहले की तरह ही था। उसने मुड़कर सभी को बिल्कुल चुपचाप साथ आने का इशारा किया। सभी एक-एक करके उस अंधेरे में उतर गए और चैतन्य के टॉर्च की रोशनी के सहारे धीरे-धीरे आगे बढ़ने लगे। आखिर कार रोशनी की एक झलक उनकी ऑ॑खों में उतरते ही उन सबने राहत महसूस की।

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

"और ये बात सच भी है। दरअसल... अनामिका की अपनी खुद की जो आत्मा है... वो इतनी कमजोर है कि.. उसका होना नहीं होना एक बराबर है।" एडवर्ड ने एक बार फिर से अपनी बातों पर यकीन का वज़न डालते हुए कहा।

और ये सुनते ही अल्फ़ी के साथ-साथ अनामिका की ऑ॑खें भी एक सोच के साथ फैली थीं। एक सोच... जिसने उन दोनों के मस्तिष्क को झिंझोड़ कर रख दिया था।

"तुम्हारा कहना है कि अनामिका की आत्मा हेममाया की जिस आत्मा
के सहारे जीवित है, तुम उसे बाहर निकालना चाहते हो। पर... तुम ऐसा करोगे तो फिर... अनामिका..." एक डरावने ख़्याल के साथ अल्फ़ी ने अपनी बात अधूरी छोड़ दी।

"हॉ॑! सही समझ रहे हो तुम। अनामिका या तो खत्म हो जाएगी... या फिर उसकी हालत मौत से कम तो हर्गिज नहीं होगी। पर तुम्हें अनामिका से क्या मतलब है! तुम तो हेममाया से प्यार करते हो ना! वो तुम्हें मिल जाएगी। फिर तुम अपनी राह और मैं अपनी राह। हर किसी के बारे में सोचने की जरूरत ही क्या है? कभी-कभी बस अपने बारे में... अपनी खुशियों के बारे में सोचना ज्यादा बेहतर होता है। नई!" एडवर्ड ने अपनी आवाज में चाशनी घोलते हुए कहा।

इस रूह को कॅ॑पाने वाले खुलासे के खुलते ही एक पल के लिए अल्फ़ी की ज़बान पर जैसे ताला पड़ गया। उसका दिमाग कुछ पल के लिए सुन्न सा पड़ गया, जिसकी सोचने-समझने की ताकत जैसे खत्म हो गई थी। उसने अपनी ऑ॑खों में बेबसी के भाव भरकर अपने चंगुल में छटपटाती अनामिका को देखा, जो खुद अपना सिर उसकी ओर उठाकर उसे उतनी ही बेबसी से देख रही थी। अपने जीवन की बुनियाद के बारे में जानने के बाद वो आंसुओं के बोझ से कॉ॑पती हुई अपनी पलकों को अल्फ़ी के चेहरे की ओर उठाकर जैसे उसके चेहरे से उसके दिल को पढ़ना चाह रही थी।

"सोच क्या रहे हो अल्फ़ी? क्या अब भी सोचने के लिए कुछ बचा है।" एडवर्ड ने अल्फ़ी को उकसाते हुए कहा।

"अगर ऐसा ही है तो मुझे तुम्हारी जरूरत ही क्या है? मैं खुद ही ये काम कर सकता हूॅ॑।" अल्फ़ी ने एडवर्ड की ओर उलाहना भरी नज़रें डालते हुए कहा।
"पर उसके लिए तुम्हारे पास तीन पीढ़ियों के शरीर के हिस्से या खून होना चाहिए।" एडवर्ड ने टेढ़ी मुस्कान के साथ कहा।

"मेरे और पिताजी के अलावा..... मुझे लगता है कि तीसरा हिस्सा दादाजी की कब्र से मिल ही जाएगा।" अल्फ़ी ने भी अपनी योजना एडवर्ड से साझा की।

"और तुम्हें लगता है कि उनकी कब्र अभी भी भरी हुई है! वो मेरे पास है और अब... तुम्हें हर हाल में मेरा साथ देना ही होगा।" एडवर्ड ने अपनी कुटिल मुस्कान के साथ अल्फ़ी पर वार करते हुए कहा।

उसकी चालाकी भरी बातें सुनकर अल्फ़ी एक पल को ठिठका था। उसे देखकर ऐसा लग रहा था जैसे कि वो किसी गहरी सोच में डूबा था।

"और सोचना चाहते हो! ठीक है! सोच लो! पर याद रखना कि समय ज्यादा नहीं है। हो सके तो अपनी सोच में उन दिनों को शामिल कर लेना, जब तुम और हेममाया एक साथ थे। तुम्हें फैसला लेने में आसानी होगी। तब तक मैं तैयारियॉ॑ करके आता हूॅ॑।" एडवर्ड तीर निशाने पर छोड़ते हुए अपनी धूर्त मुस्कुराहट के साथ वहॉ॑ से चला गया।

"माया!" अल्फ़ी ने भीगी हुई आवाज में कहा और जिसे सुनकर अनामिका सकते में आ गई। अल्फ़ी ने अभी भी उसे पीछे की ओर से जकड़ रखा था और अब वो उसकी पकड़ से छूटने के लिए छटपटा रही थी। बस यही वो समय था... जब चैतन्य और साथी वहॉ॑ पहुॅ॑चे और छिपकर उन्हें देखने लगे।

"तुम ऐसा नहीं कर सकते अल्फ़ी!" अनामिका उसकी पकड़ में
फड़फड़ाती हुई बोली।

"हम्म! क्यों नहीं कर सकता? मुझे तो लगता है कि ये मुझे करना ही चाहिए।" अल्फ़ी ने भी उसके दोनों हाथों को मजबूती से पकड़े हुए लापरवाही से कहा।

"तुम ये ग़लत कर रहे हो अल्फ़ी! जिसने तुम्हारा सब कुछ छीन लिया... तुम उसी के साथ मिल गए हो! वो फिर तुम्हें धोखा देगा। होश में आओ!" अनामिका ने तड़पकर उसके अंदर के अल्फ़ी को पुकारा था।

"मैं बस ये जानता हूॅ॑ कि मुझे मेरा प्यार वापस चाहिए और चैतन्य को छोड़कर अनामिका कभी भी मेरे पास नहीं आएगी। इसलिए अब मुझे... अनामिका नहीं... मेरी हेममाया चाहिए। अगर स्वार्थी बनकर ही मुझे मेरा प्यार मिलेगा, तो यही सही।" अल्फ़ी ने भी बर्फ जैसी सर्द आवाज से अनामिका पर हमला करते हुए कहा।

"प्लीज़ अल्फ़ी! उसकी बातों में मत आओ। हम बात करेंगे ना! हम आराम से बैठकर बातें करेंगे। इस मसले का हल निकाल लेंगे हम। पर ऐसा मत करो प्लीज़!" अनामिका उसके सामने कलपते हुए बोली।

"बात! कोई बात नहीं करनी है मुझे। अब बात सौदे पर आ चुकी है।" अल्फ़ी ने एक बार फिर से उतनी ही रूखी आवाज में कहा।

"सौदा! कैसा सौदा?" अनामिका ने अपने भीगे चेहरे को उसकी ओर उठाकर सवालिया नजरों के साथ पूछा।

"अब मैं तुम्हारे साथ बस एक ही सौदा कर सकता हूॅ॑। या तो तुम खुद... अपनी खुशी से मेरे पास आ जाओ। या फिर... तुम्हें एडवर्ड को सौंपकर मैं हेममाया को हासिल कर लूंगा। ना तो इससे कुछ ज्यादा... और ना ही
इससे कुछ कम। अच्छी तरह से सोच लो.... क्योंकि तुम्हारी हॉ॑ बहुतों की जान बचा सकती है।" अल्फ़ी किसी चतुर व्यापारी की तरह मोल-भाव करते हुए बोला।

चैतन्य और साथी छिपकर अल्फ़ी और अनामिका की बातें सुन ही रहे थे कि तभी एक और आवाज उस कमरे में गूंजी,

"कितना सही फैसला?"

और इसी के साथ ही सभी की नज़रें उस आवाज की ओर मुड़ी थी। सबको पता था कि ये किसकी थी..... और ये वही था। एक बार फिर से चैतन्य उसे अपने सामने वैसा का वैसा देख रहा था। एक बार फिर से वो अपनी मनहूसियत फैलाने वाली शख्सियत के साथ होंठों पर कुटिल मुस्कुराहट सजाए खड़ा था। उसे देखते ही चैतन्य का रोम-रोम सुलगने लगा था। भले ही वो दिन अतीत का हिस्सा रहे हों... पर उसके और अनामिका के बीते चार दिन इसी वहशी दरिंदे की लालच और नफ़रत के भेंट चढ़ गए थे। आज सब जिस उलझन भरी मुसीबत में फॅ॑से हुए थे, वो सब इसी कमीने की मेहरबानी थी। और इतना सब करने के बाद भी वो कितनी ढीढता से तनकर खड़ा हुआ था।

"मुझे पता था कि तुम बिल्कुल सही फैसला लोगे। आखिरकार तुमने अपनी और हेममाया के सुंदर और सुनहरे भविष्य को चुना है। आखिर वो दिन आ ही गया। जब हम सब इस समय के श्राप से मुक्त हो जाऍ॑गे। तुम्हें तुम्हारी हेममाया मिल जाएगी और अनामिका के साथ वो समय-चक्र भी टूट जाएगा।" एडवर्ड ने अपनी बात कहकर जोर से ठहाका लगाया।
अभी वो अपनी कामयाबी की आमद का जश्न मना ही रहा था कि तभी अनामिका, अल्फ़ी के चंगुल से छूट निकली और तेज आवाज में चिल्लाते हुए एडवर्ड पर झपट पड़ी। एडवर्ड इसके लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं था। उस हमले से वो जमीन पर पीठ के बल गिर पड़ा। अनामिका फुर्ती से उसके सीने में सवार हो गई और पास ही पड़ा एक पत्थर उठाकर उसके सिर पर पूरी ताकत से मार दिया। अगले ही पल एडवर्ड का सिर खून उगलने लगा। उसी समय अल्फ़ी तेजी से अनामिका के पास आया और उसे खींचकर एडवर्ड से अलग किया। उसने अनामिका के हाथ से वो पत्थर भी

छीन लिया, जिससे उसने एडवर्ड पर वार किया था। अनामिका एक बार फिर से अल्फ़ी की पकड़ से छूटने के लिए फड़फड़ा रही थी। आशुतोष, अंकित, मुकुल, सृष्टि और वरूण ये सब देखकर मदद के लिए आगे बढ़ने को हुए ही थे कि चैतन्य ने एक बार फिर से अपना हाथ अड़ाकर उन्हें रोका।

"चैतन्य! क्या कर रहे हो? अनामिका को जरूरत है हमारी!" इस बार आशुतोष बिफरते हुए बोले।

"फिलहाल अभी नहीं!" चैतन्य ने सामने की ओर देखते हुए कहा।

"तुम्हें क्या हो गया है चैतन्य? तुम्हें दिखाई नहीं दे रहा है! अनामिका की जान खतरे में है। तुम किस बात का इंतजार कर रहे हो? पागल हो गए हो?" वरूण चैतन्य का गिरेबान पकड़ते हुए तड़पकर बोला।

"पागल नहीं... चैतन्य जिंदगी में पहली बार इतना गंभीर हुआ है और इतना यकीन करो... कि अनामिका को कुछ होने से पहले चैतन्य अपनी जान दे देगा। क्या भरोसा नहीं है मुझपे?" चैतन्य ने वरूण के हाथ को झटकते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर उन सभी के हवाईयॉ॑ उड़ते चेहरे पर चुप्पी छा
गई। ये एक बात थी, जिस पर कोई भी संदेह नहीं कर सकता था। उन सभी के उलझे हुए चेहरों पर नज़र डालकर चैतन्य एक बार फिर से अल्फ़ी-अनामिका और एडवर्ड की ओर मुड़ गया। अपने आपको संभालते हुए एडवर्ड खड़ा हुआ, तो उसके हाथ खुद बा खुद अपने फटे हुए माथे की ओर चला गया। हालांकि अगले ही पल उसका घाव भरने लगा और अगले कुछ ही पलों में उसका माथा पहले की तरह हो गया। मगर एडवर्ड, अनामिका की इस हिमाकत से बुरी तरह से तिलमिला उठा था।

"अल्फ़ी! तुमने सोच लिया है ना! अब इस लड़की को मेरे हवाले करो। यही जड़ है सारी मुसीबतों की। आज इसके खात्मे के साथ ही हमारी समस्याऍ॑ खत्म!" एडवर्ड पागलों की तरह चिल्लाते हुए बोला।

और एडवर्ड की ये बात सुनकर अनामिका पर अल्फ़ी की पकड़ ढीली पड़ी थी, जिससे अनामिका ने एक बार फिर से सिर उठाकर उसकी ओर देखा। उसका चेहरा बहुत ही सख़्त दिख रहा था।

"अल्फ़ी नहीं!" अनामिका ने उसे पुकारा।

उसकी आवाज सुनकर अल्फ़ी ने खोई हुई नज़रों से उसकी ओर देखा और उसके कंधे पर झुककर बोला, "शुरूआत तो तुम्हीं ने की। तुम्हें वो पिशाच का खंज़र उसकी जगह से नहीं हटाना चाहिए था। तुम्हें पता है! वही शुरुआत है और वही अंत। पर अब उस खंज़र को वापस रखने ना तो तुम जा सकती हो और ना ही तुम्हारा कोई हमदर्द। मैं वहॉ॑ जाऊंगा, तो तुम्हें याद करूंगा। तुम हमेशा याद आओगी। पता है... तुम और हेममाया उस जगह के कितने करीब थी पिछली बार।"

और ये सुनते ही अनामिका ने जज़्बाती होते हुए अपनी ऑ॑खें बंद कर लीं।
अल्फ़ी कुछ देर उसे पकड़े उसी तरह खड़ा रहा और फिर उसे छोड़ दिया। अनामिका ने मुड़कर उसकी ओर देखा। वो उसे देखते हुए कुछ कदम पीछे हुआ और फिर तेजी से पलटकर बाहर जाने वाले रास्ते की ओर बढ़ गया। चैतन्य ने तेजी से सभी को पीछे हटने का इशारा किया।
अल्फ़ी तेज कदमों से उनके पास से निकल गया। चैतन्य की नज़रें उसी पर थीं।

"चलो!" वरूण ने चैतन्य का कंधा हिलाते हुए कहा।

"हॉ॑!" कहते हुए चैतन्य, उस ओर बढ़ा, जिस तरफ अल्फ़ी गया था।

आशुतोष ने आगे बढ़कर चैतन्य का हाथ पकड़ा और बोला, "तुम कहॉ॑ जा रहे हो?"

"इस समस्या का हल लेने।" चैतन्य ने कहा।

"चैतन्य! पहले अनामिका को बचा लें हम! फिर इस अल्फ़ी को भी देख लेंगे।" अंकित ने कहा।

"और मैं कह रहा हूॅ॑ कि इस समस्या का हल इस एडवर्ड के पास नहीं.... अल्फ़ी के पीछे जाने से मिलेगा।" चैतन्य भी उनकी ओर ऊंगली उठाकर बोला।

"अल्फ़ी के पास! पर क्यों?" सृष्टि ने आश्चर्य से पूछा।

"पता चल जाएगा। चलो!" चैतन्य ने एक होश उड़ाने वाली बात कही।

"चलें! कहॉ॑ चलें?" मुकुल ने हैरानी के साथ उसे देखते हुए पूछा।

"जहॉ॑ मैं ले चलूॅ॑! तुरंत चलो!" चैतन्य ने भी सीमित शब्दों में जवाब दिया।
"चैतन्य! अनामिका मुसीबत में है और तुम उसे छोड़कर जाने की बात कर रहे हो!" सृष्टि ने भी चैतन्य की ओर बेयकीनी भरी नज़र से देखते हुए कहा।

"और अगर हम यहॉ॑ से नहीं गए... तो वो कभी भी मुसीबत से बाहर नहीं निकल पाएगी। वो अपनी हिफाजत खुद कर सकती है। इसलिए चलो!" चैतन्य ने बहुत ही धीमी आवाज में उन सबसे कहा, जिससे वो सब और भी ज्यादा उलझन के शिकार हो गए।

"चैतन्य! तुम पागल हो गए हो। मैं अनामिका को छोड़कर कहीं नहीं जाऊंगा। आशुतोष जी! आप समझाइए इस पागल को!" वरूण बुरी तरह से भड़कते हुए बोला, जो सामने जमीन पर गिरी पड़ी अनामिका को देखकर और भी तड़प उठा था। वो तो शुक्र ये रही कि उसने आवाज धीमी ही रखी थी।

आशुतोष ने एक आह भरकर चैतन्य की ओर देखा। उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि वो किसकी बात मानें। सामने जो दिखा रहा था... उस हिसाब से तो वरूण ही सही था। मगर वो ये भी नहीं मान सकता था कि चैतन्य, अनामिका को मुसीबत में छोड़कर जा सकता था। उसकी जान को खतरे में डालने वाला कोई फैसला ले सकता है। बड़ी ही उलझन के साथ उन्होंने एक बार फिर से चैतन्य की ओर देखा।

"आशुतोष जी! आपको मुझ पर यकीन नहीं है! क्या आपको लगता है कि मैं अनामिका के साथ कुछ ग़लत होने दूंगा। प्लीज़! मेरा यकीन करें। चलें मेरे साथ। ये बहुत जरूरी है। मैं आप लोगों को सब समझा दूंगा।" चैतन्य लगभग याचना करते हुए बोला।

"लेकिन चैतन्य! वरूण सही कह रहा है। हम अनामिका को ऐसे अकेला
छोड़कर नहीं जा सकते।" आशुतोष ने उलझनों के भॅ॑वर में गोते खाते हुए कहा।

"तो ठीक है। वरूण और अंकित को यहॉ॑ छोड़ देते हैं। ठीक है!" चैतन्य ने वरूण और अंकित की ओर देखते हुए कहा, जिस पर वरूण ने तुरंत ही हुंकारी भरी।

"ठीक है! चलो! कहॉ॑ चलना है?" आशुतोष ने हथियार डालते हुए कहा। चैतन्य ने उनका हाथ पकड़कर आभार व्यक्त किया और मुकुल-सृष्टि को भी साथ चलने को कहा। वो जाने के लिए आगे बढ़े ही थे कि तभी चैतन्य रूका और लौटकर वरूण के पास आया। वरूण बेचैनी से अनामिका की ओर देख रहा था।

"वो ठीक है। याद रखना कि उसे कैप्टन चुना गया... क्योंकि वो हम सबमें बेस्ट है और उतनी ही बहादुर भी। इसलिए जब तक वो मदद के लिए ना पुकारे या फिर उसे जरूरत ना पड़े... बीच में मत जाना।" चैतन्य ने वरूण के कंधे पर हाथ रखते हुए बहुत ही संजीदगी से कहा।

वरूण ने पहले तो एक नासमझी भरी नज़र उस पर डाली और फिर कुछ सोचकर हॉ॑ में सिर हिला दिया। चैतन्य ने इशारे से अंकित को वरूण का ध्यान रखने के लिए कहा, जिस पर उसने भी सहमति जताई।

उनकी ओर से आश्वस्त होते ही चैतन्य बाकियों के साथ तेजी से बाहर जाने वाले रास्ते पर बढ़ गया। एक बार फिर से उसने अपनी टॉर्च जला ली थी। एक अंदाजे के साथ वो एक जगह रूका और अपनी चाबी निकालकर उसे दीवार के एक हिस्से में रगड़ने लगा। जल्दी ही उसकी चाबी एक अदृश्य छेद में जाकर घुस गई और फिर वहॉ॑ एक दरवाजा दिखाई देने लगा। चैतन्य तेजी से उसके अंदर गया। बाकी के लोग भी तेजी से उसके पीछे-पीछे गए। अंदर भी बाहर के जैसा ही

अंधकार छाया हुआ
था। मगर टॉर्च की वजह से उन्हें ज्यादा परेशानी नहीं हो रही थी।

"चैतन्य! ये कौन सी जगह है?" आशुतोष ने चारों ओर देखते हुए पूछा।

"ये वही जगह है, जहॉ॑ आखिरी दिन मैंने और अल्फ़ी ने अनामिका और हेममाया के मृत शरीर को एडवर्ड की कैद से आजाद करवाया था।" चैतन्य ने पुरानी घटना याद करते हुए कहा। (भाग 136 - नियति की करवट)

"हम तो अल्फ़ी का पीछा कर रहे थे ना! यहॉ॑ क्यों आए हैं?" मुकुल ने सवाल किया।

"आगे सारे सवालों का जवाब मिलेगा। बस चलो!" चैतन्य ने सवाल टालते हुए कहा।

चैतन्य के इस तरह बात काटने से वो सभी अब उकताने लगे थे क्योंकि किसी की भी समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर चैतन्य कर क्या रहा था? क्यों कर रहा था? पर ना जाने क्यों... वो उसकी बात टाल भी नहीं पा रहे थे। इसलिए अपना मुॅ॑ह बंद कर वो सभी चैतन्य के पीछे- पीछे चल दिए। कुछ दूर चलने के बाद एक बार फिर से उनके सामने एक दीवार थी, जहॉ॑ आगे बढ़ने का कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था।

"आगे तो कुछ भी नहीं है। हम फॅ॑स गए हैं।" मुकुल ने झल्लाते हुए कहा।

"अभी नहीं!" सामने दीवार पर सावधानी से रोशनी मारते हुए चैतन्य ने कहा और फिर सामने ही दीवार की ओर बढ़ गया। दीवार के पास पहुॅ॑चकर उसने झुककर कुछ उठाया। बाकी तीनों भी तेजी से उसके पास पहुॅ॑चे और देखा कि चैतन्य एक पत्थर पकड़े हुए था।
"ये कैसा पत्थर है?" सृष्टि ने पूछा।

"हे भगवान! इसमें खून लगा है क्या?" मुकुल की आवाज आई।

"हॉ॑!" चैतन्य ने कहा।

"एक मिनट चैतन्य! क्या ये वही पत्थर है, जिससे अनामिका ने उस एडवर्ड पर हमला किया था?" आशुतोष ने उस पत्थर को घूरकर देखते हुए पूछा।

"जी हॉ॑!" चैतन्य बोला।

"पर ये तो अल्फ़ी के पास था। यहॉ॑ क्या कर रहा है?" सृष्टि ने एक और सवाल किया।

चैतन्य ने देखा कि मुकुल और सृष्टि अभी भी बहुत सी उलझनों में थे, मगर आशुतोष का चेहरा अब शांत दिखाई दे रहा था।

"ये उसी ने यहॉ॑ छोड़ा है ना!" आशुतोष ने चैतन्य से कहा।

चैतन्य ने सिर हिलाया और फिर अपनी चाबी दीवार के उस हिस्से में लगाई, जहॉ॑ वो पत्थर पड़ा हुआ था। वहॉ॑ से दीवार में रगड़ते हुए वो उस चाबी को ऊपर की ओर लाने लगा और फिर एक जगह वो चाबी फॅ॑स गई। चैतन्य ने चाबी घुमाई और एक बार फिर से सामने एक दरवाजा खुल चुका था। चैतन्य बिना देर किए एक बार फिर से अंदर चला गया। बाकी के सब भी उसके साथ आगे बढ़े। कुछ देर तक चलने के बाद एक मोड़ पर उन्होंने लाल रंग की रोशनी देखी। उस रोशनी को देखते ही चैतन्य की चाल और भी तेज हो गई। जल्द ही वो सब उस अंधेरे गलियारे से बाहर निकले। वहॉ॑ से बाहर निकलते ही चैतन्य दाहिनी ओर मुड़ा और अब लगभग दौड़ने लगा था। बाकियों ने भी उसी रफ्तार के साथ उसे पकड़ा। जल्द ही वो सभी उस ज्वालामुखी की तरह दहकते कमरे के सामने खड़े थे। चैतन्य ने सामने उस पात्र की ओर देखा, जिससे लावा बह रहा था। उसी पात्र के ऊपर ही तो उसने उस खंज़र को पहली बार देखा था।(भाग 75 - रहस्यमई खंज़र)

मगर इस बार वो खंज़र अपनी जगह पर नहीं था। अनामिका ने ही तो उसे वहॅ॑ से हटाया था (भाग 108 - जीत) और शायद अब उस खंज़र की घर वापसी का समय आ चुका था। फिलहाल वहॉ॑ खंज़र तो नहीं था, पर वहॉ॑ किसी और की मौजूदगी उन्हें दिख गई थी। उन सबसे थोड़ा आगे ही वो लावे की नदी में खड़ा हुआ था। आहट सुनकर वो पीछे पलटा। चैतन्य साथियों के साथ

[illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!"
[illegible]: [illegible] 160 - [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

"[illegible]!"

"[illegible]!" [illegible]
"[illegible]! [illegible]..." [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible] -

(Chapter 153 - [illegible])
([illegible])

मेंशन से खाली हाथ वापस लौटने के बाद चैतन्य, अनामिका और बाकी सभी बहुत ही ज्यादा गुस्से में थे। झुंझलाहट हर पल और भी बढ़ती जा रही थी। हमेशा की तरह उनकी योजना बुरी तरह से फ्लॉप हो चुकी थी और नाकामी का ये जहर हर बढ़ते समय के साथ उनके अंदर कड़वाहट बढ़ा रहा था। ऐसे समय में इत्मीनान से बैठा हुआ अल्फ़ी उन्हें अपने जख़्मों पर मिर्च की तरह लगा। सबके तानों को अपने सिर के ऊपर से गुजार देने वाला अल्फ़ी का दिल अनामिका की तीखी बातों से आहत हो गया और फिर अगले ही पल अल्फ़ी ने अनामिका को दबोच लिया।

"क्योंकि मैंने ठेका नहीं ले रखा है सबका!"

फिर अनामिका को पकड़कर उसे अपने नजदीक करते हुए अल्फ़ी ने उसकी ऑ॑खों में झांका... और बस यही वो पल था... जब अनामिका ने उसकी गहरी ऑ॑खों की नमी को पढ़ लिया। आखिर जल रक्षक थी वो। पानी की हर हलचल को महसूस कर सकती थी... उसे पढ़ सकती थी और बिना किसी शक... अल्फ़ी की ऑ॑खें पूरी तरह से निर्दोष और मासूम नज़र आ रही थीं। मगर उन ऑ॑खों में कुछ और भी था, जो ज्यादा साफ नहीं था... मगर अनामिका ने उसमें छिपी संजीदगी को पहचान लिया था और फिर उसके चेहरे की कसावट ढीली पड़ने लगी। कुछ ही पल में उन दोनों के बीच का मौसम बदलने लगा और ये बदलाव अल्फ़ी को खटक गया। उसने अपनी ऑ॑खों से एक और इशारा कर अनामिका को सावधान किया और फिर उसकी बांह ना चाहकर भी कसकर पकड़ ली, जिससे अनामिका के चेहरे पर दर्द उभर आया। उसी समय उनके बीच के राब्ते से बेखबर गुस्से में तमतमाया हुआ चैतन्य उनके पास आया और अनामिका को अल्फ़ी की पकड़ से आजाद करते हुए अल्फ़ी को चेतावनी देते हुए बोला,

"आइंदा... ऐसा मत करना! वरना..."

और इसके बाद अपनी योजना के अनुसार अल्फ़ी ने सब पर अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए वो चाबी मेज पर रख दी।
"तो ठीक है! लो! हिम्मत है तो ले लो!" एक चुनौती के साथ अल्फ़ी ने उनकी ओर देखा और उसी बीच अनामिका को आगे आने का इशारा किया, जिसे अनामिका के अलावा और कोई नहीं समझ सका.... क्योंकि बाकी सभी अल्फ़ी को किसी और नज़रिए से देख रहे थे और अक्सर हमारे देखने का नज़रिया चीजों के मायने बदल देता है। फिलहाल अनामिका तक उसका संदेश पहुॅ॑च चुका था... इसलिए उसने चैतन्य को आगे बढ़ने से रोक दिया। उसी समय वरूण और अंकित के कमरे में अंदर आने से सभी का ध्यान उनकी ओर चला गया और इन्हीं कुछ लम्हों का फायदा उठाते हुए अनामिका ने चैतन्य से मानसिक संपर्क स्थापित कर लिया। मस्तिष्क में दस्तक होते ही चैतन्य भी सतर्क हुआ।

"चैतन्य! अल्फ़ी हमारे साथ ही है। वो जो कर रहा है... करने दो। अभी मैं अल्फ़ी के साथ जा रही हूॅ॑। अल्फ़ी का हिंट मिलते ही तुम भी सबको साथ लेकर आओ।"

अनामिका का ये मैसेज मिलते ही चैतन्य सुन्न पड़ गया था। दरअसल उसे अल्फ़ी के ऊपर अनामिका का यकीन समझ में नहीं आ रहा था। कम से कम इस समय तो बिल्कुल भी नहीं। उसने अनामिका को टोकना चाहा... तो अनामिका ने उसे शांत रहने के लिए कहा।

"क्या हुआ? इतनी भी हिम्मत नहीं है क्या?" अल्फ़ी की आवाज आई। शायद इस बार उसका इशारा जल्दी करने की ओर था।

और उसका इशारा समझते ही चैतन्य को पीछे धकेलते हुए अनामिका ने आगे आकर उस चाबी को उठा लिया और अगले ही पल अल्फ़ी ने झपट्टा मारकर उसे अपनी गिरफ्त में ले लिया।

"ये गलती नहीं करनी थी।" अल्फ़ी ने मुस्कुराते हुए कहा।
अल्फ़ी की इस हरकत से सबके साथ-साथ चैतन्य का दिल भी जोरों से धड़का। उसे अभी भी अल्फ़ी पर बिल्कुल यकीन नहीं था। उसे अल्फ़ी से कोई परेशानी नहीं थी.. पर अल्फ़ी के अंदर का जिद्दी प्रेमी उसे हमेशा ही डराता था। उस पर जब अल्फ़ी के करीब अनामिका के अंदर की हेममाया सॉ॑सें लेने लगती तो चैतन्य को अपनी दुनिया उजड़ती हुई महसूस होती। उसका दिल ढेरों बुरे ख्यालों से भर जाता। अभी भी वो उनमें से एक का शिकार हो आगे बढ़ने को हुआ ही था कि अल्फ़ी की चेतावनी ने उसे टोक दिया।

"ना! ना! कोई आगे नहीं आएगा। चैतन्य! अनामिका को वहीं ले जा रहा हूं, जहॉ॑ तुम्हें अपना प्यार सौंपा था। खोज सकते हो तो खोज लेना। चलो! अलविदा कहो अनामिका! आज आखिरी बार देख रही हो तुम इन्हें।"

और फिर सबको हैरान-परेशान करते हुए अल्फ़ी उसे ले उड़ा। कुछ पलों तक तो चैतन्य की समझ में कुछ भी नहीं आया और फिर उसने जमीन पर गिरी पड़ी उस चाबी की ओर देखा, जो यकीनन इस समय बहुत ही महत्वपूर्ण चीज थी। वो उसे यहीं छोड़ गया था। क्यों? और इस सवाल के जवाब में चैतन्य एक बार फिर से उसके आखिरी संदेश की ओर गया।

"कहॉ॑ ले जा सकता है और उसने ये चाबी यहॉ॑ क्यों छोड़ी? क्या कहा उसने? जहॉ॑ उसने मुझे अपना प्यार सौंपा था। समयद्वार! पर वो अनामिका को वहॉ॑ क्यों ले जाएगा? नहीं! नहीं! वहॉ॑ नहीं.... तो फिर कहॉ॑?" ढेर सारे सवालों के साथ वो सही जगह की उलझन में ही था कि उसे कुछ याद आया। अगर एडवर्ड कुछ ग़लत करने का सोच रहा था, इसका मतलब है कि वो वहीं होगा, जहॉ॑ वो अपनी साधना किया करता था। मगर बदलते समय के साथ इस जगह की सूरत भी बदल गई थी, इसलिए उस जगह को ढूंढना बिल्कुल भी आसान नहीं होने वाला था। वो इन सभी सवालों में उलझा हुआ ही था कि तभी उसने अपने मस्तिष्क में
अनामिका की आहट सुनी। अनामिका से संपर्क जोड़ने पर उसने अल्फ़ी पर पूरी तरह से यकीन करने की बात कही और साथ ही साथ विक्टर और गीता की तरफ से सतर्क रहने के लिए भी कहा। उसने ये भी कहा कि आगे की योजना हमें इसी तरह बनानी पड़ेगी, ताकि किसी और को पता ना चल सके और जो भी सामने दिखाई दे उस पर तुरंत ही यकीन भी नहीं करना है। इतनी बातों के बाद उनका संपर्क टूट गया। वो अल्फ़ी के हिंट, अपने अनुमान और अनामिका की बातों की ओर ध्यान लगाकर ही बैठा था कि तभी बौखलाए हुए वरूण ने उसे टोक दिया। सोच में खलल पड़ने से वो बुरी तरह से चिढ़ा था, मगर आशुतोष के सवाल करने पर उसका ध्यान उनकी ओर गया और फिर कुछ ही देर में आशुतोष की मदद से एक तस्वीर के सहारे उसने वो जगह ढूंढ निकाली। इसके बाद बेहोश विक्टर को परिधि की नज़रों में रखकर वो अनामिका की ओर निकल गए और रास्ते की सारी बाधाओं को पार करने के बाद यहॉ॑ तक आ पहुॅ॑चे, जिसमें अल्फ़ी की छोड़ी हुई चाबी की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। थोड़ी देर पहले भी अनामिका के कहने पर ही चैतन्य, सभी रक्षकों के साथ अल्फ़ी के पीछे आया था।

पुरानी घटनाओं पर एक सरसरी निगाह डालते हुए चैतन्य खुद में ही मुस्कुयाया और बोला, "बस बन गई योजना! अभी इतना समय नहीं है कि ये सब डिटेल में डिस्कस किया जाए। बाद में आराम से बताऍ॑गे।"

"फिर भी! कुछ तो....।" सृष्टि में ऐतराज के साथ कहा।

"नहीं! हमारे मुॅ॑ह से निकली बातें हमसे पहले उस एडवर्ड तक पहुॅ॑च जाती हैं, इसलिए इस बार हमने चुपचाप उन्हीं हालातों में काम करना सही समझा, जैसे हालात बनाने की कोशिश उस एडवर्ड ने की थी। हम ये चाहते थे कि उसे ऐसा लगे कि वो जैसा चाहता है... सब वैसा ही हो रहा
है।" अल्फ़ी ने सृष्टि को जवाब देते हुए कहा।

"पर... मैंने कुछ नोट किया है। वो उतना भी ताकतवर नहीं है, जितना हम उसे समझते थे। उसने बस एक माहौल बनाया हुआ है कि वो सबसे ताकतवर है। पर ऐसा है नहीं।" चैतन्य ने अपना नज़रिया रखते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फ़ी मुस्कुराया। उसने एक-एक करके सबकी ओर देखते हुए कहा, "जीत हासिल करने के लिए ताकतवर नहीं.... बल्कि चालाक होना जरूरी है और वो चलाकी एडवर्ड में कूट-कूट कर भरी है। उसने हमेशा ही हम सबकी भावनाओं को अपनी चालबाजी का मोहरा बनाया और आज भी वो वही कर रहा है। आज जब उस साहनी ने फिर माया से जुड़े मेरे अहसासों को कुरेदा, मैंने तभी सोच लिया था कि इस बार उसी की भाषा में जवाब देना है। इसलिए मैंने हमेशा की तरह बहकने का नाटक किया और आगे तुम सब जानते हो।"

"वैसे! योजना क्या है?" आशुतोष ने अल्फ़ी से पूछा।

"पिशाच का खंज़र! वो वापस लौटाना है।" अल्फ़ी ने कहा।

"वापस लौटाना है मतलब!" मुकुल ने पूछा।

"मतलब ये कि 200 साल पहले एक काम अधूरा रह गया था, उसे पूरा करना है।" अल्फ़ी ने कहा।

"कौन सा अधूरा काम?" सवाल सृष्टि ने किया।

"200 साल पहले हमें एडवर्ड की छद्म पिशाच साधना को ही बस नहीं रोकना था, बल्कि उसने जो भी शक्तियॉ॑ उस साधना को करते हुए किस्तों में हासिल की थी, वो सब उससे वापस लेकर.... फिर उस खंज़र को वापस
उसकी जगह में रखना था। मगर उस समय उस एडवर्ड ने हर चीज इस क़दर उलझा दी कि हम बस उसमें उलझकर रह गए। उस समय चैतन्य... अनामिका... और मैं हम तीनों ही अपनी शक्तियों का इस्तेमाल करने में उस एडवर्ड की तरह कुशल नहीं थे, इसलिए शक्ति हाथ में होकर भी हम असहाय ही रह गए। मगर उस समय के हालातों और बाद में गुजारे 200 सालों में मैंने ये अच्छी तरह से जान लिया कि जब तक हम मानसिक रूप से मजबूत नहीं हैं... हमारी ताकत हमारे किसी काम की नहीं है क्योंकि मन से ज्यादा ताकतवर और कुछ नहीं होता। इसलिए अगर उससे जीतना है तो ये मन में सोचकर रखो.. कि तुम उससे जीत सकते हो।" अल्फ़ी ने सबमें जोश भरते हुए कहा।

"वो तो समझ में आ गया... पर उसकी ताकतें वापस कैसे लेनी है?" मुकुल ने फिर से सवाल किया।

"वो अनामिका का काम है। वो कर लेगी। हमें कुछ और करना है। वास्तव में तुम सब रक्षकों को। इसीलिए अनामिका के कहने पर चैतन्य तुम सबको साथ लेकर आया है।" अल्फ़ी ने जवाब देते हुए कहा।

"अनामिका ने कहा! कब कहा?" सृष्टि ने पूछा।

"हॉ॑! तो तुम्हें क्या लगा? डॉ. अनंत ने उसे कैप्टन चुना... तो वो अपना काम कर रही है। ये जान लो कि अभी तक मैंने जो भी किया... उसी के कहने पर किया। मैंने तो बस उसके इंस्ट्रक्शन्स फॉलो किए।" चैतन्य ने जानकारी देते हुए कहा।

"वो कैसे?" मुकुल ने पूछा।

"वो बाद में आराम से। ठीक है! अभी कुछ और करना है।" अल्फ़ी ने एक बार फिर से उन्हें टोका।
"और वो क्या?" सबने एक साथ पूछा।

अल्फ़ी ने उन सबकी ओर देखा और उन्हें योजना समझाने लगा.. जिसे जल्द ही वो सभी क्रियान्वित करने में जुट गए।

****

अल्फ़ी के जाने के बाद अनामिका जमीन पर ढह गई। वो हर हाल में खुद को कमजोर दिखाना चाहती थी। उसने अपनी रक्षक-अंगूठी भी निकाल रखी थी, जो एडवर्ड के अनुमान से अब अल्फ़ी के पास थी और अब अल्फ़ी के जाने के बाद उसने अपने पत्ते खोलने का फैसला कर ही लिया। वो एक बार फिर से अनामिका के दिल और दिमाग पर हमला करने को तैयार था, ताकि उसे कमजोर करके वो हासिल कर लें, जो वो हमेशा से चाहता था। उसने विक्टर के सहारे चैतन्य और उसके साथियों के बारे में जानना चाहा, तो परिधि के भ्रम पैदा करने वाली दवा के असर से उसे वो सब वहीं परेशान हालत में दिखाई दिए। डॉ. अनंत भी गीता के साथ कमरे में बेचैन से दिखाई दे रहे थे। चैतन्य का बिछाया जाल उनके काम आने वाला था।

"उफ्फ! तुम तो फॅ॑स गई! अनामिका उर्फ... हेममाया!" एडवर्ड ने मजाक उड़ाने वाले लहज़े में अनामिका से कहा, जिस पर अनामिका ने सिर
उठाकर उसकी ओर देखा। उसकी ऑ॑खें गुलाबी हो चुकी थीं, जिसकी वजह तो कुछ और थी... मगर एडवर्ड कुछ और समझ रहा था... और यही तो वो चाहते थे। फिलहाल अनामिका कुछ बोलने की बजाय उसे एकटक देख रही थी।

"क्या हुआ? डर लग रहा है! तो फिर... डरो! डरना ही चाहिए।" एक बार फिर से एडवर्ड ने माख़ौल उड़ाती आवाज में कहा।

"तुम्हें क्या लगता है? मैं तुमसे डरती हूॅ॑! बिल्कुल भी नहीं। तुम मुझे मजबूर कर सकते हो.. मगर मेरे साथियों को नहीं। वो मुझे ढूंढ निकालेंगे और फिर तेरा अंत होगा।" अनामिका बनावटी घबराहट के साथ कहा।

"बेवकूफ लड़की! तुम्हारे सभी साथी तो अपनी ही परेशानियों में फॅ॑से हुए हैं, जिससे उनका बाहर निकलना तो फिलहाल मुश्किल ही लग रहा है और रहा अल्फ़ी... वो बेचारा! दुखियारा! एक बार फिर से मेरे जाल में फॅ॑सकर खुद ही तुम्हें मेरे पास छोड़ गया है और तो और... अब उसे तुम्हारे मरने से भी कोई तकलीफ़ नहीं है। अफसोस!" एडवर्ड के हमले लगातार जारी थे।

"तुमने फिर उसे धोखा दिया है ना! तुम हेममाया को वापस नहीं लाने वाले हो।" अनामिका ने बहुत ही धीमी आवाज में कहा।

"नो! नॉट एट ऑल! मैं उसे क्यों वापस लाऊंगा... जो अपने साथ उस अल्फ़ी की खुशियॉ॑ लेकर आएगी। हालांकि हो सकता है ऐसा। पर मुझे नफ़रत है उसकी खुशियों से। मेरा रोम-रोम सुलगने लगता है.. जब भी मैं उस अल्फ़ी को मुस्कुराते हुए देखता हूॅ॑। मैं उसे कभी भी खुश रहने नहीं दूंगा। मेरी जिंदगी का मकसद ही उससे नफ़रत करना और उसकी हर खुशी को निगल जाना है। बहुत सूकून मिलता है मुझे... जब वो तड़पता है।" एडवर्ड ने अपने अंदर का जहर उगलते हुए कहा।
"उसने आखिर क्या बिगाड़ा तुम्हारा? कि तुम उसकी हर खुशी को खा गए। वो तो तुम सबसे दूर एक आम जिंदगी जी रहा था और... कभी भी तुम्हारी दुनिया में नहीं आना चाहता था। फिर क्यों किया उसके साथ ऐसा? क्यों इतनी नफ़रत करते हो तुम उससे?" अनामिका ने अपने दिल में दबे सवालों को आजाद करते हुए ग़मज़दा आवाज में पूछा।

"क्योंकि वो मेरा हक़ खा गया... इसलिए मैं उसकी सारी खुशियॉ॑ खा गया।" एडवर्ड पूरी ताकत से चीखते हुए बोला।

"तुम्हारा हक़! कैसा हक़? अगर तुम बड़े बेटे होने के हक़ की बात कर रहे हो... तो वो उसने तुमसे कभी नहीं छीना। आखिर सोसायटी तो तुम्हें सर विलियम की इकलौती संतान मानती थी! तो फिर कौन सा हक़ छीन लिया उसने तुम्हारा?" अनामिका ने एक बार फिर अल्फ़ी की ओर से दलील रखते हुए कहा।

"मानने और होने में फर्क होता है। था तो वही बड़ा बेटा ना! और हमारी दुनिया में बड़े या इकलौता बेटा होने के फायदों से तुम अभी भी वाकिफ नहीं। ऊपर से वो मेरे हक़ की ख़ास ताकतें भी छीनकर ले गया।" एडवर्ड अपने दॉ॑त पीसते हुए बोला।

"ख़ास ताकत!" अनामिका चौंकी।

"हॉ॑! वो बहुत ही ख़ास दिन था, जब करीब दस हजार साल के बाद आसमान में सितारे एक खास स्थिति में आने वाले थे। ऐसे समय में किसी पिशाच का बीज जिस भी गर्भ में पड़ता... वो अतुलनीय ताकतें लेकर जन्म लेता। मेरी मॉ॑ ने उस दिन मेरे पिता को दवा दी, क्योंकि वो मुझे उन शक्तियों के साथ पैदा होते देखना चाहती थी, मगर उस मीना ने सब खराब कर दिया और वो अल्फ़ी पैदा हो गया। हालांकि मेरी मॉ॑ ने एक और कोशिश की, जिससे मैं पैदा हुआ, मगर तब तक सितारे अपनी जगह बदल
चुके थे। तुम समझ सकती हो क्या... कि उन दोनों मॉ॑-बेटे ने क्या किया था? उस अल्फ़ी के होने के कारण मुझे शक्तियॉ॑ एकत्र करने में कितनी परेशानियॉ॑ उठानी पड़ी और अपनी हर तकलीफ़ के साथ मेरी नफ़रत उससे बढ़ती गई। मैं हमारे समाज में अपनी जगह बनाने और तलाशने की कोशिशें कर रहा था और वो आराम से अपनी ज़िंदगी बसर कर रहा था। मुझसे ये कभी बर्दाश्त नहीं हुआ।" एडवर्ड पुरानी कड़वाहटें बाहर निकालते हुए बोला।

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible]

□□ □□ □□□□□□ □□... □□ □□□□□ □□□□□□ □□... □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□

"□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□.... □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□.... □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□.. □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□?" □□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□

"□□□□! □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□, □□
□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□, □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□.. □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□□! □□□□□ □□ □□□□□ □□! □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□

□□□□□□□□□: □□□□ 161- □□□□□□□ □□□□□□

"□□□□□! □□□□□ □□ □□□□□ □□! □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□?"

"□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□?" □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□... □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□... □□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□" □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□ □□□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□? □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□! □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ 200 □□□□ □□□□□ □□□□□... □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□... □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□

"□□□□□□□□! □□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□? □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□...." □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□
□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□

"□□ □□□□..!" □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ 200 □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□, □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□

200 □□□□ □□□□□

अल्फ़ी और हेममाया की शादी के तीन महीने बाद -

"माफ कीजिएगा! क्या आपका नाम मीना हैं?"

बाजार में खरीदारी करती मीना अपना नाम सुनकर झटके से आवाज की दिशा में मुड़ी और पुकारने वाले को पहचानने की कोशिश करने लगी। वो एक आम सा दिखने वाला नौजवान था, जिसका रंग सांवला था। उसके बाल एक कपड़े से बंधे हुए थे और वो कुछ बंजारों की तरह कपड़े पहने
हुए था। काफी कोशिश के बाद भी मीना उसे पहचान नहीं पाई।

"माफ करना बेटा! मैंने पहचाना नहीं तुम्हें!" मीना शर्मिंदगी के साथ बोली।

"अरे! आपको माफी मॉ॑गने की जरूरत नहीं है। आपने मुझे बहुत ही छोटी उम्र में देखा था। दरअसल मेरी मॉ॑ कल्परूप के वॉकर मेंशन में काम करती थीं।" वो युवक बेहिचक बोलता गया।

वहीं कल्परूप का नाम सुनते ही मीना के चेहरे का रंग उड़ गया। उसने बड़ी ही मुश्किल से अपने चेहरे पर उभरते हुए भावों को रोका और नज़रें चुराते हुए बोली, "कल्परूप! माफ करना! मैं... ऐसी किसी जगह के बारे में नहीं जानती। तुमसे कोई गलती हो गई है। मैं तो हमेशा से ही यहीं रहती हूॅ॑। वैसे... मुझे देर हो रही है! मैं चलती हूॅ॑।"

किसी तरह उस नौजवान को टरकाते हुए वो वहॉ॑ से बच निकलने की कोशिश में ही थी... कि तभी एक बार फिर से उस युवक की आवाज आई, "मुझसे कोई गलती नहीं हुई है। मैंने हमेशा मेंशन में आपको एक तस्वीर में देखा है और आपकी कहानी भी मैं जानता हूॅ॑। आपको मालती याद होगी। मैं.. उन्हीं का बेटा हूॅ॑।"

और ये सुनते ही मीना के आगे बढ़ते कदम रूक गए। अपने अतीत से मुलाकात उसे रास तो नहीं आ रही थी, मगर मालती के नाम ने उसे रूकने पर मजबूर कर दिया था। पूरी दुनिया में बस एक मालती ही थी, जिसे उसके यहॉ॑ होने की जानकारी थी। वो एक बंजारन थी और अक्सर मेंशन में औषधियों और मसालों को बेचने आया करती थी, जिससे उसकी मित्रता मीना से हो गई थी।

मीना ने पीछे मुड़कर उस युवक की ओर जॉ॑चती हुई नज़रों से देखा और
फिर पास आकर उसकी गर्दन की ओर देखने लगी। वहॉ॑ मौजूद एक काले मस्से को देखकर मीना के हाव-भाव बदले और फिर उसने पहचान भरी नज़र से उस युवक को देखते हुए कहा, "तुम मिलिंद हो? मालती के बेटे! यकीन ही नहीं आ रहा है। गोद में थे.. जब तुम्हें देखा था। अब देखो जरा! मुझसे भी लंबे हो गए हो। भला कैसे पहचानती मैं?" मीना ने बड़ी ही ममता से उसके सिर से गालों तक अपनी ऊंगलियॉ॑ फिराई।

"जी! मॉ॑ हमेशा आपके बारे में बातें किया करती थीं। उन्होंने ये भी बताया था कि आपको मुझसे बहुत ही स्नेह था। शायद उसी स्नेह के धागे ने मुझे आपकी ओर खींच लिया। मॉ॑ के जाने के बाद आज पहली बार किसी ने सिर पर इतने अपनेपन से हाथ फेरा। मॉ॑ की याद आ गई।" अपनी बात खत्म करते-करते मिलिंद नाम का वो युवक बहुत ही भावुक हो गया था।

मालती की मृत्यु का समाचार सुनकर मीना को धक्का लगा। अपने चेहरे पर तड़प भरे भाव लेकर उसने उस युवक की ओर देखा और बोली, "मालती नहीं रही! बहुत अफसोस हुआ ये जानकर।"

"अब क्या ही कर सकते हैं? भगवान की यही मर्जी थी।" मिलिंद ने भी बहुत ही अफसोस के साथ कहा। दर्द से उसका चेहरा सिकुड़ कर छोटा सा हो गया था। एक पुराने रिश्ते से जुड़ा हुआ दर्द मीना को भी भावुक कर गया।

"बात तो सही है। पर हुआ क्या था उसे? बीमार थी क्या?" मीना ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा।

"पता नहीं क्या हो गया था? हमेशा डरी-सहमी सी रहती थीं। घर और हम सबको लेकर उन्हें

वहम होने लगे थे। लोगों का कहना था कि उन्हें नज़र लग गई है। जब कुछ सही नहीं हुआ तो.... मैं तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ जी के पास से सुरक्षाकवच धागा ले आया, ताकि किसी भी तरह की बुरी
नज़र या बला से मॉ॑ और हमारी हिफ़ाजत होती रहे। पर वो उनके काम आ पाता, तब तक देर हो गई थी।" मिलिंद ने गहरी सॉ॑स लेकर कहा।

और ये सुनते ही मीना की ऑ॑खें चमक उठी। उसने पहले तो अपने आस-पास देखा और फिर मिलिंद के करीब जाकर बोली, " क्या ऐसा कोई धागा भी होता है?"

"जी हॉ॑! तांत्रिक श्रेष्ठ श्री सिद्धनाथ जी की योग्यता पर कोई शक नहीं कर सकता। सुरक्षा धागे बनाने में उनका कोई सानी नहीं है।" मिलिंद ने बहुत ही यकीन के साथ वजनदार शब्दों में कहा, जिसे मानने से मीना ने परहेज नहीं किया क्योंकि वो तांत्रिक श्रेष्ठ के बारे में अच्छी तरह से जानती थी। बल्कि इस धागे की चर्चा से वो थोड़ा और खुली।

"तो क्या... ऐसा ही धागा... तुम मेरे लिए भी बनवा सकते हो? बड़ी मेहरबानी होगी तुम्हारी।" तांत्रिक श्रेष्ठ के जिक्र से मीना ने याचना भरे स्वर में कहा।

"अरे! ऐसा मत कहिए। लगता है कि आप भी किसी परेशानी में हैं और अगर ऐसा है तो... आप मुझसे वही धागा ले सकती हैं। वो अभी भी मेरे पास है।" वो बहुत ही आत्मीयता के साथ बोला।

"क्या सच में? तुम मुझे वो दे सकते हो?" मीना ने उसके शब्दों को उसके चेहरे से तौलते हुए पूछा।

"जी क्यों नहीं! मॉ॑ के लिए बनवाया था। उनके काम तो नहीं आ सका। आपके ही सही! आप भी तो मेरी मॉ॑ जैसी ही हैं।" उसने बहुत ही अपनेपन से कहा।

"ओह! तुम कितने अच्छे हो बेटे?" मीना ने उस पर प्यार उड़ेलते हुए
कहा।

"पर वो धागा अभी मैंने सराय में रखा हुआ है। अभी मुझे कुछ काम है और कुछ घंटों के बाद मुझे यहॉ॑ से जाना भी है तो.... आप एक काम कीजिए! मेरे साथ सराय तक चलिए! मैं वो धागा आपको अभी दे देता हूॅ॑।" मिलिंद बहुत ही एहतराम के साथ बोला। वहीं सराय का नाम सुनते ही एक बार फिर से मीना सहम गई।

"सराय! नहीं! वहॉ॑ नहीं!" मीना का लहज़ा लड़खड़ाया था।

"क्यों? क्या हो गया? देखिए! मुझे दूसरे कस्बे की ओर भी जाना है। मैं आपको कहॉ॑ ढूंढता फिरूंगा? फिर मुझे दोपहर के भोजन का भी प्रबंध करना है। ये भोजन छूट गया तो फिर कल दोपहर में ही मिलेगा।" उसने अपनी समस्या बताई।

"तो तुम मेरे घर चलो ना! हमारे साथ ही खाना खा लो! वैसे भी खाने का समय हो ही रहा है।
बेटा तो है घर में है नहीं... बहू से ही मिल लो। उसे भी तुमसे मिलकर अच्छा लगेगा।" मीना ने उसकी समस्या से ही हल निकालते हुए कहा।

"पर.. मैं... इस तरह से.. आपके घर.." वो बोलते हुए लड़खड़ाया।

"अरे मेरा घर है और तुम मेरे बेटे जैसे हो। इतना सोचने की जरूरत नहीं है।" मीना ने उसकी झिझक हटाते हुए कहा।

"अ... ठीक है! आप इतना कह रही हैं तो... चलता हूॅ॑! पर अभी मुझे कहीं और भी जाना है... बहुत ही जरूरी काम से। मैं वो खत्म करके सीधा आपके घर आता हूॅ॑। आप अपना पता बता दीजिए।" मिलिंद, मीना का आमंत्रण स्वीकार करते हुए बोला।
"पता! देखो इस रास्ते में थोड़ा आगे जाकर एक बड़ा सा बरगद का पेड़ आएगा। वहॉ॑ से दाईं ओर का रास्ता ले लेना। फिर उस रास्ते में एक परचून की दुकान पड़ेगी। वहॉ॑ किसी से भी पूछ लेना कि अल्फ़ी का घर कौन सा है? कोई भी बता देगा।" मीना ने उसे तफ्सील से अपना पता बताते हुए कहा।

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

डाली।

"दवा मतलब!" उसने कौतूहल से पूछा।

"क्यों? दवा का कोई और भी मतलब होता है क्या? दवा मतलब दवा! हर तरह की दवा!" मीना ने कहा और चूल्हे की आग सही करने लगी।

पिशाचों की दवा के नाम से हेममाया की ऑ॑खों में एक चमक सी उभरी, जिसे उसने मीना बखूबी छिपाया था। मन की एक इच्छा ने एक बार फिर से सिर उठाया। जल्द ही उन दोनों ने मेहमान की खातिरदारी के लिए सारा इंतजाम कर लिया। हेममाया रसोईघर में ही थी, जब बाहरी दरवाजे पर दस्तक हुई। मीना ने दरवाजा खोला तो वो बाहर ही खड़ा था।

"अरे बेटा! आओ! आओ ना! परेशानी तो नहीं हुई घर ढूंढने में?" मीना ने उसका स्वागत करते हुए सवाल किया।
"जी नहीं! आपके बेटे का नाम काफी मशहूर है।" मिलिंद ने तारीफ भरे शब्दों के साथ कहा और फिर अंदर आ गया। अंदर आने के बाद उसने चारों ओर नजरें घुमा-घुमा कर घर का मुआयना किया।

"घर सुंदर है आपका!" मीना की ओर तारीफ भरी नजरें डालते हुए वो बोला।

"धन्यवाद बेटा! आओ बैठो! माया! पानी लाना बेटा!" मिलिंद को बैठने के लिए कह कर उसने माया को आवाज दी और फिर उससे बातें करने लगी।

तभी हेममाया पानी का गिलास लेकर उसके पास पहुॅ॑ची। मीना से बातें करते हुए ही मिलिंद ने सिर उठाकर हेममाया की ओर देखा और फिर वहीं उसके चेहरे पर ही रूक गया। उसे खुद को इस तरह एकटक ताकते देख हेममाया के माथे पर बल पड़े।

"ये माया है। मेरी बहू!" मीना ने परिचय कराते हुए कहा।

"ओह!" कहते हुए उसने पानी का गिलास उठाया। माया आगे जाकर मीना के साथ बैठ गई। पानी पीते हुए मिलिंद ने गिलास के ऊपर से ही हेममाया की ओर एक चोर निगाह डाली, जो मीना से कुछ कह रही थी। पानी का गिलास पूरा खत्म करने के बाद भी उसे अपना गला सूखता हुआ महसूस हो रहा था। उसने अपनी नज़रों को भटकने से बड़ी मुश्किल से रोका और सिर झुकाकर बैठ गया।

"मिलिंद बेटा!"

"जी!" मीना की आवाज सुनकर मिलिंद ने झटके से सिर ऊपर की ओर उठाया।
"वो दरअसल... आज मेरे बेटे को खाने पर आने में देर हो जाएगी। अगर तुम इंतजार करना चाहो तो... या फिर खाना लगा दें?" मीना ने उससे पूछा।

"दरअसल... आपने इतने प्यार से बुलाया तो मैं मना नहीं कर सका। पर आधे घंटे में मुझे निकलना है।" मिलिंद ने मीना की ओर देखते हुए कहा।

"ओह! फिर तो तुम्हें देर हो जाएगी। माया बेटा! जाओ! खाना निकालो!" मीना ने हेममाया की ओर देखकर कहा।

उसकी बात सुनते ही हेममाया तुरंत ही उठकर रसोई की ओर चली गई। मिलिंद की नजरों ने आखिर तक उसका पीछा किया और मिलिंद की ये हरकत मीना की नजरों में भी आ गई।

"क्या हुआ बेटा? क्या देख रहे हो?" मीना ने बारी-बारी से मिलिंद और रसोई घर की ओर नज़र डालते हुए कहा।

"जी! कुछ नहीं!" वो बुरी तरह से हड़बड़ाया था, जिस पर मीना ने अपनी नज़रें उस पर और भी पैनी की। मीना की तफ्तीशी नज़र खुद पर जमे हुए देखकर मिलिंद के हाथ पैर फूलने लगे।

"जी दरअसल... मुझे आपको वो धागा देना था। आप उसके बारे में किसी को भी बता नहीं सकती... वरना उसका असर कमजोर हो सकता है। बस इसीलिए!" मिलिंद ने तेजी से अपनी थैली की

ओर झुकते हुए कहा और जल्द ही उसने उसमें से दो काले धागे बरामद किए।

"इसमें से एक धागा आपको अपने बाएं हाथ में बांधना है और एक धागा अपने घर के ऑ॑गन में ऐसी किसी जगह गाड़ना है, जो सबकी पहुॅ॑च से दूर
हो। आप ये जल्द कर दीजिए।" कहते हुए उसने वो धागे मीना की ओर बढ़ा दिए।

मीना ने वो धागे उससे लिए और वो उन्हें देख ही रही थी कि तभी हेममाया वहॉ॑ आ गई। मीना ने तुरंत ही वो धागे उससे छिपाए। हेमामाया उनके लिए खाना निकाल रही थी।

"मिलिंद बेटा! आप शुरू कीजिए! मैं आती हूॅ॑!" मीना ने इशारा करते हुए मिलिंद से कहा और फिर बाहर चली गई।

मिलिंद ने अपने हाथ धोए और फिर कुर्सी पर जाकर बैठ गया। हेममाया वहीं थी और उसकी थाली निकाल रही थी। मिलिंद ने एक चोर नज़र फिर से उसकी ओर उठाई और फिर उतनी ही तेजी से झुका ली। वो चाह रहा था कि हेममाया वहॉ॑ से चली जाए.. मगर उसे झटका लगा, जब हेममाया उसके पास वाली कुर्सी पर बैठ गई। मिलिंद ने बहुत ही झिझकते हुए उसकी ओर देखा, जो उसे ही देख रही थी।

"लीजिए! शुरू करें!" हेममाया ने मुस्कुराते हुए कहा और उसे अपने इतने पास देखकर मिलिंद को अपनी धड़कनें बढ़ती हुई महसूस हुई। वो तेजी से अपनी प्लेट पर झुक गया।

"आपसे एक... बात पूछूं?" हेममाया ने उसकी ओर देखते हुए कहा।

'जी! पूछिए!" मिलिंद ने उसकी ओर एक नज़र उठा कर देखा और फिर तुरंत ही नजरें झुका ली।

"मॉ॑ ने आपके काम के बारे में बताया। क्या सचमुच ऐसी कोई दवा होती है, जिससे पिशाच संतान पैदा कर सकते हैं?" हेममाया उसे कौतूहल से देखते हुए पूछा।
"जी!"

"क्या आप बनाते हैं?" हेममाया ने पूछा।

"जी!"

"तो क्या... वो दवा आसानी से मिल सकती है?" हेममाया ने अगला सवाल किया।

"जी नहीं! वो दवा ग्राहक के बोलने पर बनाई जाती है। उस दवा को बनाकर नहीं रख सकते ना! उस दवा को बनाने के बाद तीन दिन के अंदर खाना होता है। उसके बाद वो दवा असर नहीं करती।" मिलिंद ने सिर झुकाए हुए ही कहा।

"ओह! इसका मतलब है कि मुश्किल ही है।" हेममाया ने बुझी हुई आवाज में कहा।

"क्यों? आपको वो दवा चाहिए क्या? पर क्यों?" मिलिंद ने उसे हैरानी से देखते हुए कहा।

"अरे नहीं! वो तो बस... मॉ॑ ने उसका जिक्र किया था, तो मन में इच्छा थी कि वो दवा कैसी होती होगी, जो किसी जरूरतमंद दंपति को संतान सुख दे सकती है। मतलब कि आम जीवन में ऐसा नहीं होता है ना! कई लोग तो सारी जिंदगी संतान के लिए तरसते रह जाते हैं।" हेममाया ने बात संभालते हुए कहा।

"अगर देखना चाहो तो मेरे पास एक है।" मिलिंद ने उसकी ओर झुक कर फुसफुसाते हुए कहा।
"क्या सच में!" हेममाया लगभग उछलते हुए बोली।

"हॉ॑! रूकिए! दिखाता हूॅ॑!" कहते हुए वो उठकर पास ही रखी अपनी थैली के पास गया और उसके अंदर से एक पुड़िया निकाल कर ले आया।

"ये देखिए! ये हैं वो जादुई दवा!" उसने वो पुड़िया हेममाया की ओर बढ़ाई।

हेममाया ने झिझकते हुए वो पुड़िया ली और उसे खोलकर देखा। अंदर सफेद रंग का एक पावडर था। हेममाया ने उसे बड़ी ही हसरत से देखा। वो सामने बैठे मिलिंद से कहना चाहती थी कि

वो दवा उसे दे दे। लेकिन फिर मिलिंद के अगले सवाल का जवाब उसके पास नहीं था कि उसे पिशाचों वाली वो दवा क्यों चाहिए थी? मन मारकर अपने निचले होंठ को काटते हुए उसने वो दवा उसे वापस लौटाई।

मिलिंद ने उस पुड़िया की ओर देखा और फिर बोला, "इसे वापस मत कीजिए! फेंक दीजिए।"

और उसकी ये बात सुनकर हेममाया को हैरत का तेज झटका लगा। उसने हैरानी से उस पुड़िया की ओर देखा और फिर पलकें उठाकर मिलिंद की ओर देखते हुए बोली, "फेंक दूं! क्यों?"

"क्योंकि ये दवा जिसके लिए बनाई थी.. उन्होंने लेने से मना कर दिया। इसे बनाए हुए दो दिन हो चुके हैं और आज रात के बाद ये दवा किसी काम की भी नहीं है, तो इसे वापस रखने का कोई औचित्य ही नहीं है। इसलिए आप इसे फेंक दें।" पहली बार मिलिंद ने पूरी तरह से उसकी ओर देखते हुए कहा और फिर सिर झुकाकर खाना खाने लगा।
मुॅ॑हमांगी मुराद पूरी होने की खुशी हेममाया के चेहरे पर रौनक बनकर फैल गई। उसकी ऑ॑खों में एक चमक भर आई, जिसकी रोशनी में उसे अपनी खुशियॉ॑ सामने खड़ी दिखाई दे रही थीं। उसने उस पुड़िया को अपनी मुट्ठी में भींचा और बोली, "जी! ठीक है!"

"क्या ठीक है?" दरवाजे की ओर से आई आवाज ने दोनों को ही चौंकाया था। मीना उन्हीं की तरफ आ रही थी।

"कुछ नहीं मॉ॑! बस ऐसे ही! आपकी थाली लगा दूॅ॑!" हेममाया ने बात बदलते हुए कहा।

मीना के हॉ॑ कहने पर हेममाया तुरंत रसोईघर की ओर चली गई। उसने वो पुड़िया वहॉ॑ हिफ़ाजत से रखी और फिर मीना के लिए थाली लगाकर ले आई। वो मिलिंद को और खाने के लिए आग्रह करने लगी। किसी तरह अपने अंदर की खुशी को संभाले हुए वो सामान्य दिखने की पूरी कोशिश कर रही थी। दूसरी ओर ना चाहते हुए भी मिलिंद का मन हेममाया की ओर ही भटक रहा था, इसलिए खाना खाने के तुरंत बाद ही मिलिंद ने खाने के लिए आभार व्यक्त करते हुए उन दोनों से जाने की इजाजत मांगी। दोनों ही महिलाओं की ऑ॑खें उसके प्रति आभार से भरी हुई थीं।

"हो सके तो फिर आना बेटा! तुम नहीं जानते कि तुम्हारे आने से हमें कितना अच्छा लगा।" मीना ने उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा।

"जी जरूर! मैं कोशिश करूंगा!" उसने भी मीना की बात रखते हुए कहा और फिर हेममाया की ओर देखा।

"आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।" कहते हुए हेममाया ने अपना सीधा हाथ उसकी ओर बढ़ा दिया। मिलिंद ने उसके बढ़े हुए हाथ की ओर देखा
और फिर अपने अंदर उठते तूफान को संभालते हुए उसके उस हाथ को थाम लिया। उसे थामते ही मिलिंद को जहॉ॑ अपने पूरे शरीर में सिहरन सी महसूस हुई, मगर उसकी ऑ॑खें बुरी तरह से जलने लगीं। उसने तुरंत ही उसका हाथ छोड़ा और फिर मुड़कर वहॉ॑ से तेजी से निकल गया। उसने मुड़कर देखने की जहमत नहीं उठाई।

तेज कदमों से आगे जाकर वो एक सुनसान सी जगह में रूका। उसने खुद को संभालने की कोशिश छोड़ दी और कपड़े में बंधे अपने बालों को आजाद किया, जो पसीने से बुरी तरह से भीग गए थे। उसे बहुत ज्यादा बेचैनी महसूस हो रही थी इसलिए उसने तुरंत ही अपनी कमीज़ के ऊपरी दो बटन खोले और फिर वो गहरी-गहरी साॅ॑सें लेने लगा। खुद को संभालने की कोशिश में कुछ समय गुजारने के बाद उसके चेहरे की नसें एक बार फिर से तनने लगी। उसने अपनी मुट्ठियॉ॑ भींची और वो पूरी ताकत से चिल्लाया। उसकी ऑ॑खों के सामने अभी भी हेममाया का चेहरा लहरा रहा था।

"नहीं अल्फ़ी! नहीं! हर बार बेहतरीन तुम्हारे ही हिस्से में क्यों? तुम इतना डिजर्व नहीं करते और अगर नहीं करते... तो मैं तुम्हारे पास रहने भी नहीं दूंगा। मैं तुमसे सब छीन लूंगा। तुम्हारी खुशियॉ॑, तुम्हारी ताकतें और.... तुम्हारी हेममाया भी! आज से तुम्हारी खुशियों के दिन खत्म! मेरीनफ़रत की आग में जलने के लिए तैयार हो जाओ।" वो अजीब सी जूनूनी हालत में चिल्लाकर बोला।

और फिर उसने अपने थैले से पानी का मशक निकाला। अपना चेहरा और हाथ के खुले हुए हिस्से

धोकर साफ करने के बाद उसने अपने सिर पर पानी डाला और फिर दोनों हाथों की ऊंगलियों से अपने गीले बालों को समेट लिया। उसने अपनी गर्दन पर चिपके नकली मस्से को खींचकर अलग कर दिया और अब एक बार फिर से वो मिलिंद से एडवर्ड बन चुका था, जिस पर अब एक अजीब सी खुमारी तारी हो चुकी थी।
वर्तमान में -

"तुम पागल हो गए हो। तुम्हारी नफ़रत ने तुम्हें कुछ भी सोचने-समझने लायक नहीं छोड़ा। अगर अल्फ़ी को पता चला कि तुमने उसकी हेममाया पर अपनी ऑ॑खें डाली, तो अपनी ऊंगलियों से ही तुम्हारी ऑ॑खें नोच लेगा।" उसकी बातें सुनने के बाद अनामिका गुस्से से बुरी तरह कॉ॑पते हुए बोली।

और अनामिका की ये धमकी सुनकर अपने खंज़र की धार नापता हुआ एडवर्ड किसी वहशी की तरह गर्दन उठाकर जोर-जोर से हॅ॑सने लगा। कुछ देर बाद अपनी हॅ॑सी पर लगाम लगाते हुए वो रूका। उसने एक आह भरी और फिर बोलना शुरू किया।

"हेममाया! इश्श्श! कितनी खूबसूरत थी वो! पहली बार किसी लड़की को देखने के बाद एडवर्ड की ऑ॑खों ने कुछ और देखने से इंकार कर दिया था। पर... पर... पर! ये मत समझना कि एडवर्ड एक लड़की की खूबसूरती के पीछे बावला हो गया था। कुछ तो था उसमें! कुछ ऐसा... जो एडवर्ड ने उससे पहले किसी भी लड़की में महसूस नहीं किया था। उसके अंदर एक अजीब सा तेज था, जो मुझे मेरे जैसा लगा। पहली बार लगा कि हॉ॑ ये वही हैं, जो एडवर्ड के साथ खड़े होने का हक़ रखती है।"

"तो क्या तुम ये कहना चाहते हो कि तुम्हें हेममाया से प्यार..." अनामिका ने कहना चाहा, जिसे पूरा होने से पहले ही एडवर्ड ने टोक दिया।
"शश्श्श्! एडवर्ड प्यार में यकीन नहीं रखता। वो बस ताकत और रूतबे को तरजीह देता है और इस रूतबे की उम्र तभी लंबी होती है, जब आपके साथ चलने वाला... आपका वंश बढ़ाने वाला भी उतना ही रौबदार हो। और ये सारी खूबियॉ॑ पहली बार मुझे हेममाया में दिखी थी। पर फिर वही अल्फ़ी! वो तो जैसे मेरे हक़ की हर चीज छीनने की कसम खाकर पैदा हुआ था। इसलिए मैंने उसी समय फैसला कर लिया था कि मैं हेममाया को हासिल करके रहूंगा।"

"पर तुम्हें तो डायनों से नफ़रत थी।" अनामिका ने उसकी बात काटते हुए कहा।

"तो तुम्हें क्या लगता है? मैं उसे डायन के रूप में स्वीकार करता। उसी की बेटी की बलि चढ़ाकर पहले मैं अपनी साधना पूरी करता... और मुझे वो शक्ति भी मिल जाती, जिससे मैं किसी को भी पिशाच में बदल सकता था। हेममाया को भी पिशाच में बदलकर मैं अल्फ़ी को अंदर से तोड़ देता। तुम सोचो! अपनी हेममाया को मेरी बाहों में देखकर वो एक ही जिंदगी में कितनी बार मरता और मैं... उसे उसी तरह तड़पते देखना चाहता था। मगर उस बेवकूफ माया की वजह से सब गड़बड़ हो गई। लाख समझाने के बाद भी उसने हेममाया को जान से मारा दिया और मेरी सारी योजना मिट्टी में मिल गई। फिर भी... हेममाया के मृत शरीर को हासिल कर मैंने अपनी बिगड़ चुकी योजना को सुधारना चाहा, तो एक बार फिर तुम सब की वजह से हेममाया का शरीर मेरे हाथ से निकल गया। और तो और मेरी साधना भी खंडित हो गई। मेरे की सालों की मेहनत तुम सब ने ख़ाक में मिला दीं। लेकिन फिर भी मैंने हार नहीं मानी। पिछले 200 सालों से मेरी साधना पूरी करने के लिए मेरे अनुयायी हर दस साल के बाद मुझे एक लड़की या औरत सौंपते थे, जिससे मैं अपनी संतान उत्पन्न कर उसकी बलि देकर अपनी साधना पूरी कर लूं। मगर अल्फ़ी तो जैसे मुझसे जोंक
की तरह चिपका हुआ था। उसने हर उस लड़की को मेरी क़ैद से आज़ाद करवा दिया और मैं देखता ही रह गया। मगर जब भविष्यकथन ने तुम्हारे आने की भविष्यवाणी की, तब उसका ध्यान मुझ पर से भटका और फिर मैंने उसका फायदा उठाते हुए अंकित की भाभी से अपनी संतान उत्पन्न की और उसकी बलि देकर अपनी साधना पूरी कर ली।" अपना सारा कच्चा-चिट्ठा अनामिका के सामने खोलते हुए एडवर्ड ने कहा।

"तुम्हारा कहना है कि तुम्हारी साधना पूरी हो गई। फिर अब क्यों परेशान हो तुम? तुम्हें जो चाहिए था, वो तुम्हें मिल तो गया।" अनामिका ने उसकी कहानी में उलझते हुए कहा।

"[illegible] [illegible] [illegible] [

तोड़ना चाहता है। वो अब पहले की तरह अपनी शक्तियों के बल पर किसी पर नज़र नहीं रख सकता। इसलिए उसने हम सब पर नज़र रखने के लिए विक्टर और गीता के जैसे जरिए खोजे, जिनकी मदद से वो अपने आगे की रणनीति बनाता था। हमने उसकी इस ताकत पर तो वार कर दिया है। पर अभी एक और मुश्किल हमारे सामने मौजूद है और वो है... एडवर्ड की सेना!"

"सेना! उस चमगादड़ के पास सेना भी है!" चैतन्य ने हैरानी से कहा, जिस पर अल्फ़ी, मुकुल और सृष्टि ने उसे टेढ़ी नज़रों से देखा था।

"200 सालों से बस यही तो कर रहा था वो। उसे हर हाल में मदद चाहिए, तभी वो अपना मकसद पूरा कर सकता है और... बाकी बातें बाद में।" अल्फ़ी ने बात समेटते हुए कहा।

"तो काम शुरू करें!" आशुतोष ने सभी की ओर देखते हुए कहा।

"यहॉ॑ हमारी शक्तियॉ॑ तो काम करेंगी ना!" सृष्टि ने पूछा।

"ये जगह एडवर्ड की नहीं है। यहॉ॑ उसकी मर्जी नहीं चलेगी।" अल्फ़ी ने आश्वासन भरी आवाज में कहा।
"ये तो बढ़िया है!" मुकुल ने मुट्ठियॉ॑ बांधते हुए जोश से कहा।

खंज़र वाले कमरे में महौल हर बढ़ते लम्हे के साथ और भी गर्म होता जा रहा था। वो सब अपनी योजना के अनुसार दो हिस्सों में बॅ॑ट गए थे, जिसमें एक में आशुतोष को पॉ॑चों तत्वों की मदद से एक शिकंजा बनाना था, जिसमें वो सब उस एडवर्ड को क़ैद करने वाले थे। ये काम आसान नहीं होने वाला था, इसलिए मुश्किलों को दूर करने की जिम्मेदारी अल्फ़ी, चैतन्य, सृष्टि और मुकुल की थी। सृष्टि, आशुतोष के पास उनकी सुरक्षा में तैनात थी, तो बाकी तीनों ने आक्रमण करने और रोकने का जिम्मा उठाया।

"चारों ओर नज़र रखना! खतरा कहीं से भी आ सकता है।" अल्फ़ी ने सबको सावधान करते हुए कहा और फिर वो कमरे के अंदर बहते लावे के पास चला गया। उसने चारों ओर देखा और फिर घुटनों के बल नीचे बैठ गया। सभी का ध्यान उसी की ओर था। उसने नीचे उबलते हुए लावे को देखा और फिर अपना सीधा हाथ कोहनी तक उसके अंदर डाल दिया। उसे ऐसा करते देख वहॉ॑ मौजूद सभी की सिसकारी सी निकल गई। फिर भी वो सब दम साधे उसे ही देख रहे थे कि आखिर वो क्या करने वाला था। करीब एक मिनट के बाद उसने अपने उस हाथ को ऊपर की ओर खींचा। उसके हाथ में चिपका हुआ गर्म-गर्म लावा हाथ से फिसलकर नीचे उतरता जा रहा था और फिर उन सभी ने देखा उसकी कसी हुई ऊंगलियों को, जो अपने साथ कुछ खींच कर बाहर ला रही थी। वो पिघले हुए लावे से बनी हुई तलवार थी, जिसकी नोंक से लावा बूंद-बूंद टपक रहा था। धीरे-धीरे जब उसकी आकृति स्पष्ट हुई, तो सबने देखा कि वो एक शानदार दो धारी तलवार थी, जो उसके शानदार क्रॉस गार्ड के साए में शान से चमक रही थी।
अल्फ़ी ने उसे अपने सिर के ऊपर उठाया और फिर जब उसे हवा में घुमाया तो वो लाल रेखाओं के रूप में अपनी धार की निशानियॉ॑ छोड़ गया, जो अगले ही पल हवा में घुल गई। अच्छी तरह से तसल्ली करने के बाद वो उस तलवार को लेकर पीछे मुड़ा और उनके पास आ गया। वो सभी फटी हुई ऑ॑खों से एकटक उस तलवार को ही देख रहे थे।

"क्या देख रहे हो?" अल्फ़ी ने उन सभी को इस तरह घूरते देखा, तो बोला।

"ये क्या है?" मुकुल ने उस तलवार को उसी तरह घूरकर देखते हुए पूछा।

"तलवार है! और तुम सब भी अपने-अपने लिए हथियार का जुगाड़ कर लो। दुश्मन से खाली हाथों से लड़ना बेवकूफी ही मानी जाएगी।" अल्फ़ी ने उनको जवाब देते हुए उनकी नासमझी पर अपना सिर हिलाया।

उसकी बात सुनकर चैतन्य ने भी अपना सीधा हाथ ऊपर हवा में उठाया। उसने धीरे से अपनी मुट्ठी बंद की और फिर वो अपने उस हाथ को हवा में ही जोर से गोल-गोल हिलाने लगा, जिससे कुछ ही पलों में उसके उस हाथ के पास हवा का एक बवंडर सा बन गया। चैतन्य ने उस बवंडर की ओर देखा और फिर मुस्कुराते हुए उसने अपने उस हाथ को झटके से नीचे खींचा। उस बवंडर के बीच से सफेद रंग के क्रिस्टल से बनी चमचमाती हुई तलवार बाहर निकल आई।
चैतन्य ने उस तलवार की धार को अपनी ऑ॑खों के सामने रखकर परखा और फिर उसकी मूठ पर ऊंगलियॉ॑ कसते हुए उससे सामने रखे एक पत्थर पर वार किया। उस तलवार के वार से वो पत्थर बीच से चटक गया और अगले ही पल हवा में घुल गया। उसकी शक्ति का प्रदर्शन करने के बाद

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"ऐसा लग रहा है कि जैसे पानी के बुलबुले फूट रहे हैं।" अल्फ़ी ने उन आवाजों पर कान लगाकर कहा।

"पर ये आवाज़ें आ कहाँ से रही हैं?" चैतन्य ने एक और सवाल किया।

तभी पीछे खंज़र वाले कमरे की ओर से मुकुल की आवाज़ आई, "हे गाईज़! जरा इधर देखो!"

और फिर सभी की नज़रें पूरे शरीर के साथ उस कमरे की ओर घूमी थीं। अभी तक जो लावा जमीन पर बह रहा था... वही लावा एकदम से थमकर अपनी जगह पर रूक गया था।

"अब क्या?" चैतन्य ने कहा।

और उसके ऐसा कहते ही वो रूका हुआ लावा एक जगह से ऊपर उठने लगा। उस पिघली हुई आग की ऐसी हरकत से वो तीनों ही और भी सतर्क हुए। उन तीनों ने ऊपर चढ़ते उस लावे की ऊँचाई को नापा, जिससे सभी की गर्दन ऊपर उठने को मजबूर हो गई। करीब आठ से नौ फीट ऊपर उठने के बाद वो लावा रूक गया। ये हैरतअंगेज नज़ारा देखकर उनकी ऑंखें फटी की फटी रह गईं। अगले ही पल उनके दिल और दिमाग को एक और झटका लगा, जब उस लावे के दोनों ओर से हाथ जैसी आकृतियाँ बाहर आने लगीं और फिर ये होने के बाद उस लावे के बीच से खुली दो ऑंखों को देखकर उनके मुँह खुले के खुले रह गए।
�

"सियापा!" चैतन्य बोला।

"सियापा नहीं भाई... सियापा का पापा!" मुकुल बड़बड़ाया।

"अग्निदानव!"
�अभिशप्त : भाग 163 - युद्ध

"अग्निदानव!"

और इस शब्द के साथ ही अल्फ़ी ने उन दोनों को एक ओर खींचा। आशुतोष भी सृष्टि को संभालते हुए एक ओट में हुए थे।

"ये यहाँ क्या कर रहा है?" मुकुल ने हैरानी से कहा।

"ऑब्यसली! इस जगह की निगरानी।" अल्फ़ी सामने की ओर देखते हुए बोला।

"पर ये अग्निदानव है कौन?" चैतन्य ने अपनी अकड़ी हुई गर्दन को सहलाते हुए कहा।

"वास्तव में खंज़र की चोरी से पिशाचदेव का गुस्सा इस रूप में बाहर आया है। वो खंज़र उनकी अमानत है जो 200 सालों से गायब थी। उसे उसी समय अपना काम खत्म करके वापस उसकी जगह रखना था, जो हुआ नहीं। समय के साथ ये नाराज़गी बढ़ गई और अब अंदर जाने वाले को हर किसी को इसका सामना करना होगा। हमारे लिए कोई भी राह इतनी आसान नहीं है।" अल्फ़ी ने उसी तरह सामने देखते हुए कहा।

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

और उसके इस फैसले के आगे सभी नतमस्तक हुए थे। आखिर वो भी एक रक्षक थी और उसने अपनी योग्यता हर तरह से साबित की थी। बस लड़की होने की वजह से उसकी योग्यता पर शक करना कहीं से भी मुमकिन नहीं था। पर सामने परेशानी भी छोटी नहीं थी, जिसकी वजह से वो सब बीच में फॅ॑स गए थे।

"वो सब तो ठीक है। पर इस दानव से पार पाने का कोई तरीका भी सुझाई नहीं दे रहा है। मैंने सुना है कि ये दानव सामने वाले की ताकत चुराने में बहुत माहिर होते हैं। ख़ासतौर पर अपने जैसी शक्ति। अल्फ़ी और मैं इसके पास नहीं जा सकते। अगर जाऍ॑गे तो ये हमारी शक्तियों को खींचकर
और भी ताकतवर हो जाएगा। अगर गुस्से में और भड़का तो लावा कमरे से बाहर यहॉ॑ तक आ सकता है और यही खतरा है। इस दानव से बस अनामिका पार पा सकती है क्योंकि ये दानव उसकी शक्तियों को हजम नहीं कर सकता। शायद इसीलिए अनामिका उस खंज़र को निकालने में कामयाब हुई थी। हम ऐसा नहीं कर सकते। आग को बस पानी ही बुझा सकता है।" मुकुल ने सामने खड़ी समस्या की व्याख्या करते हुए कहा।

"तो फिर क्या करें? अगर इसे अनामिका रोक सकती है तो उसे यहॉ॑ लाना पड़ेगा और वो कोई भी जवाब नहीं दे रही है।" अल्फ़ी ने बहुत ही चिड़चिड़ेपन के साथ कहा।

"शायद मुझे पता है कि क्या करना है?" सबकी उम्मीद के विपरीत चैतन्य ने एक सकारात्मक जवाब दिया।

"क्या?" अल्फ़ी ने पूछा।

"आशुतोष जी! आप शिकंजे का ध्यान रखें। सृष्टि! तुम आशुतोष जी का ध्यान रखो। मैं और मुकुल इसे देखते हैं।" चैतन्य ने उस दानव की ओर देखते हुए मजबूत लहजे में कहा।

"ऐसा क्या करोगे?" अल्फ़ी ने पूछा।

"सोच लिया है कि क्या करना है। तुम जाओ अनामिका के पास! मुझे लगता तो नहीं.. फिर भी उसे मदद लगे तो तुम देख लेना। जाओ! जल्दी जाओ! वो अभी भी रिस्पांस नहीं दे रही है।" चैतन्य ने अल्फ़ी को ढकेलते हुए फिक्रमंद लहजे में कहा। अल्फ़ी ने पीछे हटते हुए उन सभी की ओर देखा। सभी ने उसे जाने के लिए कहा। अल्फ़ी ने उन सभी पर एक-एक नज़र डाली।
फिर उस दानव की ओर देखता हुआ तेजी से पीछे मुड़ा और दौड़ता हुआ बाहर निकल गया।
"तो क्या है प्लान? " मुकुल ने पूछा।

"दानवों के बारे में क्या जानते हो?" चैतन्य ने पूछा।

"वही जो बताया। ताकतवर होते हैं पर उतने ही बुद्धू भी। अपने जैसी ताकत को खींचने की ताकत। इसीलिए मैं और अल्फ़ी उसके सामने नहीं जा सकते। जीतने के चांसेज कम हैं हमारे।" मुकुल ने कहा।

"और ये मरेगा कैसे?" चैतन्य ने पूछा।

"इसके दिल पर प्रहार करना होगा। अब सोचो कितना मुश्किल है ये? ये पहले से ही बहुत शक्तिशाली था। अब गुस्से में इसकी ताकत और भी बढ़ रही है। अगर इसकी तपिश कम होती तो मैं ये काम कर सकता था।"मुकुल ने कहा।

"कितनी कम?" चैतन्य ने पूछा।

"मेरी अग्निशक्ति के आसपास!" मुकुल ने उसे हैरानी से देखते हुए कहा।

"हम्म! ठीक है। समझ गया!" चैतन्य चेहरे पर इत्मीनान लाते हुए बोला। वो अब काफी हद तक इत्मीनान में लग रहा था। जैसे कि फिर कोई जादुई चाबी मिल गई हो। उसके आत्मविश्वास से भरे चेहरे को देखते हुए मुकुल और सृष्टि जितने असमंजस में थे... आशुतोष उतने ही आश्वस्त नज़र आ रहे थे।

"सृष्टि! तुम अपने काम में लग जाओ। मुकुल! मैं इस आग के गोले को ठंडा करता हूॅ॑। इसके बाद तुम्हें इस पर प्रहार करना है। पर ये याद रखना कि मौका दो या तीन ही मिलेगा।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"अग्नि और वायु कभी-कभी सहयोगी भी हो सकते हैं। ये हवा के बदलते रूप से सामंजस्य बैठाने में तुम्हारी मदद करेगा। तुम्हें इसकी जरूरत पड़ेगी, जिससे तुम्हें सॉ॑स लेने में कोई परेशानी ना हो। आखिर हम सबका ही शरीर इन पॉ॑चों तत्वों से बना होता है।" चैतन्य ने उसकी तर्जनी में अपनी अंगूठी डालते हुए कहा, जिस पर मुकुल ने भी सहयोगात्मक रूप से सिर हिलाया।

इसके बाद चैतन्य ने पीछे मुड़कर आशुतोष और सृष्टि की ओर देखा। सृष्टि और आशुतोष पहले से ही सृष्टि के सुरक्षा घेरे के अंदर जा चुके थे, जहॉ॑ आशुतोष ने एक बार फिर से अपनी ऑ॑खें बंद कर ली थीं। फिर वो उस दानव की नज़रों से बचकर एक कोने में बैठ गया। उसने अपनी तलवार एक ओर रखी और अपना खंज़र निकाल लिया। उसने अपने दोनों हाथ जोड़े और उस खंज़र को उन हथेलियों के बीच इस तरह रखा कि उसकी नोक ऊपर की ओर थी। मुकुल पास ही खड़ा बारी-बारी से चैतन्य और उस दानव की ओर देख रहा था, जो हर बढ़ते समय के साथ आगे बढ़ता जा रहा था। आगे बढ़ने के साथ-साथ उसकी बढ़ती हुई दहाड़ वहॉ॑ की दीवारों को कॅ॑पकॅ॑पा रही थी।
कुछ ही देर बाद चैतन्य की हथेलियों के बीच दबा हुआ खंज़र धीरे-धीरे कंपित होने लगा और उसी के साथ उस खंज़र की नोंक के पास की हवा कुछ अलग ही तरीके से ऊपर उठने लगी। हालांकि वो दिखाई नहीं दे रही थी, मगर वहॉ॑ मौजूद हवा की हलचल को साफ-साफ महसूस किया जा सकता था। कुछ ही देर में मुकुल ने हवा में बढ़ते दबाव को महसूस किया और ये बदलाव उसके लिए समस्या नहीं था। वो अपनी सॉ॑सें रोकर खुद को बदलती हुई परिस्थितियों के हिसाब से ढालने लगा, जिसमें चैतन्य की अंगूठी उसकी मदद करने वाली थी।

दूसरी तरफ बुरी तरह चिंघाड़ता हुआ अग्नि दानव चारों ओर अपनी लपटें फेंक रहा था। वो उन सबकी तलाश में अपने सामने आने वाली हर चीज को भस्म कर रहा था। धीरे-धीरे हवा में कार्बन-डाई-ऑक्साइड का स्तर बढ़ने लगा। चैतन्य को ऐसी किसी ऐहतियात की जरूरत नहीं थी। अब बचा मुकुल.. जिसे सबसे ज्यादा परिस्थितियों से तालमेल बिठाना था, ताकि उस दानव के सामने खड़ा रहकर वो उस पर सही तरीके से वार कर सके। उसने मन ही मन खुद को मजबूत किया और फिर दौड़ता हुआ उस दानव के सामने खड़ा हो गया। उसने अपनी गन पीछे की ओर छिपा रखी थी। फिलहाल गुस्से में भरा हुआ वो दानव उसको अपने सामने तनकर खड़ा हुआ देखकर और भी तिलमिलाया था।

"हमारा लक्ष्य... इसका दिल!" मुकुल मन ही मन बुदबुदाया।

उधर शिकार सामने देखकर वो दानव तेजी से उसकी ओर बढ़ा और उसकी यही तेजी उसकी गलती साबित हुई। मुकुल की ओर तेजी आगे बढ़ने पर ऑक्सीजन की खपत तेज हो गई। उसने तेजी से मुकुल पर अपने शोले उगलते हुए हाथ से वार किया, जिससे मुकुल बड़ी ही फुर्ती से बच निकला। मुकुल को सही-सलामत देखकर वो दानव और भी
बौखलाया। उसे इसकी जानकारी नहीं थी कि मुकुल भी अग्नि धारक था और यही रक्षकों के लिए लाभकारी सिद्ध होने वाला था। वो दानव मुकुल पर जितना भी वार करने की कोशिश करता, मुकुल उससे बच निकलता। इससे उस दानव के लिए ऑक्सीजन की खपत और भी बढ़ती गई, जिससे वो जल्द ही शिथिल नज़र आने लगा। उधर चैतन्य की वजह से हवा में कार्बन-डाई-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ती जा रही थी, जिससे उस दानव के शरीर से निकलती हुई लपटें धीमी पड़ने लगी।

"मुकुल मैं इससे ज्यादा और नहीं कर सकता.. वरना तुम्हारे लिए परेशानी हो सकती है। अब तुम्हें किसी भी तरह से उस पर वार करना ही होगा।" चैतन्य चिल्लाया।

"जैसा कहो!" कहते हुए मुकुल ने अपनी गन उसकी तरफ करके फायर कर दिया। उसकी गन से निकली आग उस दानव से जाकर टकराई और फिर उसमें ही खो गई। मुकुल निशाना चूक गया था। किसी विशाल वृक्ष की तरह हवा में डोलते उस दानव पर सही जगह पर वार करना आसान नहीं था। उधर उस दानव ने हैरानी से अपने शरीर के उस हिस्से को देखा, जिसने मुकुल का भेजा तोहफा कबूल कर लिया था।

"उप्स!" मुकुल के होंठों से निकला।

"उसके नजदीक जाने का कोई तरीका सोचो! तभी तुम सही वार कर पाओगे।" चैतन्य चिल्लाया।

"अच्छा! तो ये देखो! तुम्हें दिखाता हूॅ॑ कि दानव सच में बेवकूफ होते हैं।" मुकुल ने

अपनी गन पीछे रखते हुए कहा और उसके सामने खड़ा हो गया। उस दानव ने उसे देखा तो लहराते हुए आगे आया और मुकुल को अपनी मुट्ठी में भींच लिया। मुकुल को इस तरह देखकर चैतन्य ने एक सिसकारी सी भरी। मगर दानव के इस काम से मुकुल मन ही मन मुस्कुराया। गुस्से में भरा वो दानव मुकुल को अपनी ओर ऊपर उठाने लगा। इस दौरान मुकुल का सारा ध्यान उसके दिल वाले हिस्से में था। जैसे ही मुकुल उस हिस्से के पास आया.. उसने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाए और उन्हें ज़ोर से झटका, जिससे उसके दोनों हाथ शोले उगलने लगे। मुकुल को इस तरह आग पैदा करते देख वो दानव बेवकूफों की तरह उसे देखने लगा। वो अभी उलझी हुई हालत में ही था कि तभी मुकुल का पूरा शरीर भड़क उठा और फिर उस दानव को हैरान करते हुए वो उसी की आग में घुल मिल गया। अब तो वो दानव हड़बड़ाते हुए पीछे हटा और अपने दोनों हाथों को झटकने लगा, मगर मुकुल उससे पहले ही अपनी जगह बदल चुका था। वो तेजी से उसके दिल की ओर बढ़ रहा था और वो दानव उसे अपने शरीर के हिस्सों में तलाशते हुए बुरी तरह से डोलने लगा। मगर मुकुल भी अपनी धुन का पक्का था। वो उसके शरीर से जोंक की तरह चिपक चुका था और अंत में उसके दिल के ऊपर जा बैठा। उसने अपना खंज़र निकाला और फिर सेकेंड की भी देरी किए बिना पूरी ताकत से उसके दिल में उतार दिया।

सही जगह पर वार होते ही उस दानव का शरीर एक बार फिर से भड़क उठा। वो कहते हैं ना कि दिया बुझने से पहले एक बार जोर से जलता है। शायद यहॉ॑ भी वही हो रहा था। वो दानव एक बार फिर से शोलों के बीच बुरी तरह से झूलता हुआ उधर से उधर भाग रहा था। मुकुल ने बिल्कुल सही जगह प्रहार कर दिया था, मगर इससे एक समस्या और हो गई। भड़की हुई हालत में वो हर सामने पड़ने वाली चीज को भस्म करता जा रहा था और ये कहीं से भी सही नहीं था क्योंकि वो इस तरह से आशुतोष और सृष्टि की ओर बढ़ चुका था। हालांकि सृष्टि ने अपना सुरक्षा घेरा बना रखा था, मगर वो सब शिकंजे की सुरक्षा के साथ कोई समझौता नहीं कर सकते थे।

"सृष्टि! कालछिद्र खोलो!" मुकुल तेज आवाज में चिल्लाया और उस दानव के शरीर से अलग होता हुआ बाहर की ओर कूद गया। सब सही ही लग रहा था.. कि तभी उस दानव ने मुकुल का पैर पकड़ लिया और उसे
अपनी ओर खींचने लगा। मुकुल ने खुद को बचाने के लिए पास ही दीवार में उभरे एक पत्थर का मजबूती से पकड़ लिया।

"सृष्टि! जल्दी करो।" वो एक बार फिर से चिल्लाया और उसकी बात मानते हुए सृष्टि सुरक्षा घेरे से बाहर आई और उसने एक झटके में अपने सामने कालछिद्र खोल दिया। अगले ही पल वो कालछिद्र उस जलते-बुझते दानव को अपने अंदर खींचने लगा। छिद्र की ओर खिंचते हुए भी उसने मुकुल का पैर पकड़ रखा था, पर इस बार मकसद खुद को बचाना था। उसकी पकड़ मुकुल के पैरों पर और भी कस गई थी। मुकुल ने खुद को बचाने के लिए उस पत्थर को मजबूती से पकड़ रखा था, मगर कालछिद्र और उस दानव दोनों की ही ताकत के सामने वो कमजोर पड़ने लगा। उसने ये बिल्कुल भी नहीं सोचा था कि वो ऐसी विकट परिस्थिति में फॅ॑स जाएगा। चैतन्य भी तेजी से उसकी ओर आया, मगर मुकुल का शरीर उसकी पहुॅ॑च से बहुत ही ऊपर था।

"मुकुल! पकड़े रहना! मैं आ रहा हूॅ॑!" चैतन्य ने हौसला बढ़ाने वाली आवाज में कहा और फिर उसने अपने दोनो हाथों को आगे लाकर ऊपर उठाने का इशारा किया। अगले ही पल हवा का छोटा सा भॅ॑वर उसे अपने अंदर लेकर ऊपर उठा। वो मुकुल का हाथ पकड़ने को ही था कि तभी एक ही झटके में मुकुल का हाथ छूटा और वो उस दानव के साथ उस कालछिद्र के अंदर चला गया। अगले ही पल कालछिद्र भी बंद होकर गायब हो गया।

एक ही पल में जैसे सब कुछ बदल गया। सृष्टि ठगी हुई सी अपने हाथों को देख रही थी, वहीं चैतन्य ऑ॑ख और मुॅ॑ह फाड़े उस जगह को घूर रहा था, जहॉ॑ वो कालछिद्र उनके साथी को भी निगल गया था। कुछ पल तो चैतन्य की समझ में कुछ नहीं आया और फिर जब दिमाग का हिलना बंद हुआ तो वो तुरंत नीचे उतरकर सृष्टि की ओर भागा।

"सृष्टि! वापस निकालो उसे। तुरंत!" चैतन्य बौखलाई हुई हालत में उसके
कंधे पकड़कर झिंझोड़ते हुए बोला।

और उसकी बात सुनकर सृष्टि ने उतनी ही तेजी से अपना सिर हिलाया और अपने होंठों पर ज़बान फेरते हुए अपने हाथों की ओर देखा। अभी वो आगे कुछ करती उससे पहले ही बाहर की ओर से आने वाली आहटों की ओर उनका ध्यान चला गया। वो दोनों एक बार फिर से चौकन्ने हुए। आक्रमण की मुद्रा में खड़े चैतन्य और सृष्टि को झटका लगा, जब उन्होंने वरूण और अंकित को अंदर आते देखा। वो दोनों भी बुरी तरह से घायल दिखाई दे रहे थे। चैतन्य और सृष्टि

उनकी ओर बढ़े ही थे कि तभी उनके पीछे थकी हुई हालत में आती हुई अनामिका दिखाई दी।
उसकी हालत देखकर चैतन्य और सृष्टि दोनों की ही ऑ॑खें आखिरी हद तक फटी गईं। वो सिर से पैर तक खून में नहाई हुई थी। उसे इस तरह देखकर चैतन्य बिजली की तेजी से उसकी ओर गया।

"अनु!" उसने अनामिका को पुकारा। मगर अनामिका उसे नज़रअंदाज़ करती आगे बढ़ गई। चैतन्य ने हैरानी से उसकी ओर देखा और फिर बाहर से आती आवाज को सुनकर पलटकर उस ओर देखा। अल्फ़ी आ रहा था। उसका चेहरा नफ़रत की इंतेहा से तप रहा था। वो अपने हाथ में कुछ खींचकर ला रहा था। जब वो चैतन्य के पास पहुॅ॑चा तो चैतन्य ने देखा कि वो एडवर्ड था, जिसके क्षत-विक्षत शरीर को अल्फ़ी बेदर्दी से घसीटते हुए ला रहा था। आश्चर्यजनक रूप से उसकी सॉ॑सें अभी भी चल रही थीं। अनामिका एक जगह पर जाकर घुटनों के बल गिर पड़ी। एडवर्ड के शरीर को वहीं फेंकता हुआ अल्फ़ी तेजी से अनामिका की ओर गया और उसके पास बैठकर उसे संभालने लगा। अनामिका उसकी ओर देखकर रोने लगी। अल्फ़ी ने उसे संभालने की कोशिश की तो वो उससे लगकर और भी ज्यादा फूट-फूट कर रोने लगी। दूर खड़े चैतन्य की समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। सब समझने की गरज से वो तेजी से वरूण और अंकित की ओर गया, जो खुद भी सदमे में नज़र आ रहे थे। एक युद्ध खत्म होने को था और एक शुरू होने वाला था। कहानी रंग बदल रही थी।(Note- ये पूरा दृश्य उसी समय की घटना है, जब दूसरी ओर चैतन्य, अल्फ़ी और साथी शिकंजा बनाने की प्रक्रिया में लगे थे। कन्फ्यूज ना होएं!)

चैतन्य और साथियों के खंज़र वाले कमरे में पहुॅ॑चने की खबर के बाद अनामिका ने अब अपना मोर्चा संभाला। समय बीत रहा था और इस एक घंटे में ही सब सही करना था। अल्फ़ी ने उसे बताया था कि एडवर्ड जितना अपने आप को दिखाता था, वो वास्तव में उतना ताकतवर था नहीं। इसीलिए उसका और भी ताकतवर बनने का लोभ सबकी जिंदगियों को उथल-पुथल कर गया था। हर बढ़ते लम्हे उस नीच प्राणी से अनामिका की नफ़रत बढ़ती जा रही थी।

"तुम्हें लगता है कि तुम हेममाया को अपने ढंग से रंग लोगे और हेममाया को तुम्हारे साथ देखकर अल्फ़ी तड़प जाएगा, तो वो तुम्हारी भूल है। जो उसकी हेममाया होगी ही नहीं.. उसके लिए तड़प कैसी? तुम जैसे लोग रिश्तों को शरीर में बांधते होंगे... पर जो प्रेम करते हैं वो आत्मा से आत्मा
को पहचान लेते हैं और ये तुम नहीं समझ सकते, जिसकी आत्मा ना जाने कबका मर चुकी है।" अनामिका, एडवर्ड पर तंज कसते हुए बोली।

"प्रेम! प्रेम! प्रेम! कितना राग अलापते हो तुम सब इसका? आखिर मिलता क्या है तुम सबको इससे? मैंने तो आज तक नहीं देखा किसी को खुशी मिलते। ना तो अल्फ़ी को... ना तो हेममाया को और ना ही उन दोनों के माता-पिता को। बेचारे सब घुट-घुट कर जिए और घुट-घुट कर मरे। क्या फायदा ऐसे प्रेम का... जो पल भर की खुशी भी ना दे सके।" एडवर्ड पलटकर चिल्लाते हुए बोला।

"कहा ना! तुम नहीं समझोगे!" अनामिका ने उसकी बात को हवा में उड़ाते हुए कहा।

"इतना कुछ कहा... इतना कुछ बताया... पर घमंड गया नहीं तुम्हारा! कोई बात नहीं... मैंने तो सोचा था कि मेरी ताकत और चालाकी का बखान तुम्हें मेरे कदमों में ला देगा... पर ढीठ हो बहुत। पर ये बता दूं कि तुमसे पहले भी ऐसे ही एक ढीठ से मिला था। वो भी बहुत प्रेम! प्रेम करता था। जब मरा तो कोई नहीं था साथ। जब वो नहीं टिका... तो तुम क्या ही कर सकती हो मामूली सी लड़की।" एडवर्ड पुरानी यादों में जाते हुए बोला।

"ढीठ! मेरे जैसा! किसकी बात कर रहे हो?" अनामिका ने समझने की नाकाम कोशिश करते हुए पूछा।

उसके चेहरे पर सवालों के उलझे जालों को देखकर एडवर्ड मुस्कुराया और फिर उसके नजदीक आकर उसके कान के पास फुसफुसाया, "वही! महान... तांत्रिक श्रेष्ठ... देवेन्द्र!"

और ये सुनते ही अनामिका अपने आवाक् चेहरे के साथ उसकी ओर मुड़ी, जैसे कि उसके शब्दों की सच्चाई परख रही हो।
"सही सुना तुमने! एक कहानी वो भी है। पर अफसोस... सुनने के लिए तुम्हारे पास समय नहीं है क्योंकि तुम्हें जाना होगा अनामिका। हेममाया को वापस लाना है, तो उसे सामने आना होगा। तो फिर तैयार हो जाने के लिए।" कहकर एडवर्ड ने अपना खंज़र निकालकर धोखे से बिजली की फुर्ती से अनामिका पर हमला किया।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

"[illegible]!"
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

वरूण की ओर घुमाई, जो उसकी ये बात सुनने के बाद उसे खा जाने वाली नज़रों से घूर रहा था।

"काम कर अपना!" वरूण ने उसे बुरी तरह घुड़का।

अनामिका ने अपनी तलवार हाथों में कसकर पकड़ी और अब वो शिकार के इंतजार में थी। अंकित और वरुण ने भी अपनी पोजीशन संभाल ली थी।

और फिर उन दीवारों से शैतानों का जैसे एक रेला सा फूट पड़ा। वरुण और अंकित ने आपस में अपनी पीठ जोड़ी और फिर उसी हालत में धीरे-धीरे गोल घूमते हुए बिना रुके उनकी और दौड़कर आते हुए शैतानों पर वार करने लगे। कुछ ही देर में हवाओं में उन शैतानों के चिथड़े उड़ रहे थे। इस बीच कुछ शैतान उनके वारों से बचते हुए उनके पास आ गए। वरूण ने अपनी कमान फेंकी और एक बार फिर अपना चाबुक बाहर की ओर निकाल लिया। अब तो मंज़र ये था कि अंकित अपने फायर से दूर
से आते सारे शैतानों की खोपड़ियॉ॑ उड़ा रहा था और वरूण पास पहुॅ॑च चुके शैतानों के शरीर को अपने चाबुक के प्रहार से धुआं बनाकर उड़ा रहा था। चारों ओर चिल्ल-पों मच चुकी थी। हालांकि तादात में वो शैतान बहुत ज्यादा थे, मगर वरूण और अंकित का दोहरा वार उन पर पूरी तरह से भारी पड़ रहा था। उन दोनों को पता था कि आज अगर चूके, तो सब कुछ खो देंगे।

दूसरी ओर दीवार से निकलते उन शैतानों का इंतजार करती अनामिका अपने रौद्र रूप में आ चुकी थी। उसकी रक्षक तलवार उन शैतानों का काल बन चुकी थी। वो संख्या में भले ही ज्यादा थे, पर अनामिका की जल शक्ति हर पल उन पर हावी थी। अपने आसपास के शैतानों को निपटने के बाद अनामिका ने देखा कि उन दीवारों से उन शैतानों का निकलना बदस्तूर जारी था। उनकी इस हरकत से अनामिका को चिढ़ सी हुई। उसने हवा में उठाकर अपनी तलवार चलाई तो उसे तलवार की धार पानी की एक लहर अपने साथ ले आई। उसने बहुत तेजी से उसे तलवार को गोल-गोल घूमना शुरू कर दिया, जिससे वहॉ॑ पानी का एक तूफान सा आ गया, जो जाकर उसके पास की सभी दीवारों से जा टकराया। उस तूफान के टकराते ही एडवर्ड की जादुई ताकत से तपती वो दीवारें ठंडी पड़ गईं और वो सारे शैतान उस पानी में घुलकर ढह गए। अनामिका के लिए मैदान खाली हो चुका था। उसने वरूण और अंकित की ओर देखा तो वो अभी भी ढेर सारे शैतानों से उलझे हुए थे। अनामिका उनकी मदद करने के लिए आगे बढ़ी ही थी कि वरुण जोर से चिल्लाया।

"अनु! अंदर जाओ! उसे रोको! इन्हें हम संभाल लेंगे। जल्दी जाओ! समय कम है।"

उसकी बात सुनकर अनामिका ठिठक कर रुकी थी। वरुण सही कह रहा था उनके पास समय कम था। एडवर्ड को हर हाल में रोकना ही था। वो
अभी उस ओर उन दोनों को देख ही रही थी, कि तभी उसने बाहरी दरवाजे की ओर से अल्फी को अंदर आते देखा। उसे देखते ही अनामिका की हिम्मत सौ गुनी बढ़ गई।

"अल्फी! इन सब को संभालो। मैं एडवर्ड को देखती हूॅ॑।" अनामिका जोर से चिल्लाकर अल्फी से बोली।

अल्फ़ी ने एक नजर अनामिका पर डाली और फिर वरुण और अंकित की हालत पर गौर करता हुआ मदद के लिए उनकी ओर बढ़ गया। उसने अपने सामने आए दो शैतानों को उनकी गर्दन से पकड़ा और फिर उनके सिर टकराते हुए एक ही झटके में उनकी गर्दन उखाड़ दी। उनके शरीर को जमीन में फेंक कर वो आगे बढ़ा और फिर कमर में लटकी अपनी तलवार खींच ली। उसने अपनी तलवार हवा में लहराई और फिर एक तेज चिंघाड़ के साथ उन शैतानों के बीच घुस गया। अगले ही पल उन सभी शैतानों के शरीर कट-कटकर हवा में उड़ने लगे। वो शैतान वरुण और अंकित से ही पार नहीं पा रहे थे, ऊपर से अल्फ़ी का हमला उनके लिए सब खत्म कर गया। कुछ ही देर में वह तीनों ही धूल और धुएं के गुबार से लिथड़े पड़े थे। इस लड़ाई में जहॉ॑ उन्होंने दुश्मनों के शरीर की चटनियां बनकर बिखेर दीं, वहीं उन दोनों को भी बहुत चोटें लग चुकी थीं। अल्फ़ी के आने से यकीनन उन्हें राहत महसूस हुई थी। अल्फ़ी अकेला ही उन सभी पर भारी दिखाई पड़ रहा था। चारों ओर हाहाकार मचाने के बाद अल्फ़ी ने एक तेज आवाज के साथ

[illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(Note- [illegible])

[illegible]

जल्दबाजी की वजह से सब कुछ बर्बाद नहीं करना चाहती थी। सबसे पहले तो उसके मन में यही जिज्ञासा थी कि... वो कर क्या रहा था? उसने कुछ देर धैर्य रखने का फैसला किया, ताकि सामने हो रही चीजों को समझ सके.. ताकि उस पर प्रहार भी उसी के मुताबिक किया जाए।

साधना में लीन एडवर्ड जोर-जोर से कोई मंत्र पढ़ रहा था। उसके साथ बैठे उसके प्रतिरूप एकटक नीचे एक पॉइंट की ओर देख रहे थे। अनामिका ने उस पॉइंट की ओर देखा तो उसकी ऑ॑खें हैरत से फैल गईं। वहॉ॑ खून से सनी हड्डियॉ॑ रखी हुई थीं। वो आखिर उनसे कर क्या रहा था? और फिर उसके जवाब मिलने का समय भी आया, जब उसने एडवर्ड के शरीर से एक सुनहरे-लाल बिंदु को निकलकर उन हड्डियों में जाते देखा। वो इसे समझने की कोशिश कर ही रही थी कि तभी उसके बाईं ओर के प्रतिरूप से उसी तरह सफ़ेद रंग का बिंदु निकलकर उन हड्डियों की ओर बढ़ गया। इसके बाद उसके बाईं ओर के प्रतिरूप से नीला बिंदु, फिर उसके बाईं ओर
के प्रतिरूप से हरे रंग का बिंदु निकलकर उन हड्डियों में समा गया और अनामिका के दिमाग ने क्लिक किया... कि आखिर हो क्या रहा है? वो अपनी आत्मा के पंचतत्वों की मदद से हेममाया के शरीर को फिर से बना रहा था। वो सच में हेममाया को वापस ला रहा था! पर अपने लिए!

उसने एक नज़र बाहर की ओर डाली, जहॉ॑ अल्फ़ी उन शैतानों से भिड़ा हुआ था। उसे पता ही नहीं था कि एडवर्ड उस पर कौन सा सितम ढाने की सोच रहा था। नहीं! वो ऐसा होने नहीं दे सकती थी। कभी भी नहीं। सदियों से मरहम का इंतजार कर रहे अल्फ़ी के लिए एक और चोट के बारे में वो सोच भी नहीं सकती थी और यही सोचकर वो एडवर्ड की ओर दौड़ी। मगर वो उस तक पहुॅ॑च पाती उससे पहले ही एक तेज झटके ने उसे दूर उछाल दिया। चोट बहुत ही जबरदस्त थी, इसलिए अनामिका कुछ देर के लिए दर्द से जमीन पर ही पड़ी रह गई। दर्द की हद पार करने के बाद जब उसने एडवर्ड की ओर देखा तो आखिरी बिंदु भी उन हड्डियों से घुल-मिल चुका था।

वो तेजी से उठी और एकटक उसी ओर देखने लगी। पंचतत्वों के मिलने के बाद हड्डियों के उस ढेर में हलचल होने लगी और फिर शरीर को सिहरन देने वाली खड़-खड़ की आवाज के साथ वो हड्डियॉ॑ धीरे-धीरे ऊपर की ओर जाने लगीं।

और इसी के साथ अनामिका ने उन हड्डियों के बीच से एक कंकाल को निकलते देखा। सबसे पहले उसके पैर नज़र आए और फिर उन हड्डियों के ऊपर चढ़ने के साथ ही उस कंकाल के दूसरे हिस्से भी दिखाई देने लगे। साथ ही थोड़ा नीचे से उस कंकाल पर मांस, खून, धमनियों और चमड़े की परतें चढ़ने लगी। अनामिका सॉ॑स रोके उस सारी प्रक्रिया को देख रही थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह उसे कैसे रोके क्योंकि एडवर्ड ने अपने चारों ओर पिशाच सुरक्षा कवच लगा रखा था, जिसे कोई और नहीं तोड़ सकता था। बेबसी से अनामिका अपनी ऑ॑खों के सामने वो सब होते
देखती रही और कुछ ही देर में उनकी ऑ॑खों के सामने वो ऑ॑खें बंद किए निर्वस्त्र खड़ी थी। अनामिका एक आह भर कर रह गई। एडवर्ड अपनी चाल में कामयाब होता जा रहा था। उसने हेममाया का शरीर बना लिया था और अब वो अपनी नजर उसकी ओर डालने वाला था।

अपना एक काम खत्म कर एडवर्ड ने सामने खड़े उस शरीर को अपनी भरपूर नज़रों से देखा और फिर अनामिका की ओर अपनी नज़र घुमाई, जो बेबसी भरी गहरी साॅ॑सें लेती हुई इधर-उधर देख रही थी।

"देखा! यही है हेममाया! खूबसूरत है ना! चलो! अब तुम्हारे जाने का समय आ गया है।" एडवर्ड निहायती मक्कारी भरी आवाज में बोला।

"एडवर्ड! तुम ये सही नहीं कर रहे हो? तुम्हें इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी।" अनामिका पूरी ताकत से चिल्लाई।

जवाब में एडवर्ड ने उसे चिढ़ाने वाले अंदाज में अपने दॉ॑त दिखाए। वो अभी कुछ और कहता उससे पहले ही बदहवास हालत में अल्फ़ी वहॉ॑ आ पहुॅ॑चा। वो हालात समझने की कोशिश में अनामिका और एडवर्ड की ओर देख ही रहा था... कि तभी उसकी नज़र सामने खड़ी हेममाया के शरीर पर पड़ी। उसे अपने सामने देखकर अल्फ़ी की ऑ॑खें हैरत से फटी की फटी रह गईं। पूरे 200 सालों के बाद उसने अपनी माया को इस तरह सामने देखा। अपनी गहरी साॅ॑सों के बीच वो बस भटकने को ही था कि तभी उसे उसके निर्वस्त्र होने का भान हुआ। उसने तेजी से अपना सिर दूसरी ओर घुमाया और उसे दिखाई दी उलझन में लिपटी हुई अनामिका, जो उसे बड़े ही दयनीय नजरों से देख रही थी। अनामिका को देखते ही अल्फ़ी भ्रम की स्थिति से बाहर निकला।

"आओ! आओ! अल्फ़ी! देखो! तुम्हारी हेममाया! मैंने वादा किया था ना! अब तुम्हारी बारी! इस लड़की को मारकर तुम्हारी हेममाया की आत्मा
का अंश इसके शरीर से निकालना है। जिसे मैं हेममाया के इस शरीर में डालूंगा और फिर तुम्हारी हेममाया फिर से तुम्हें मिल जाएगी। हमेशा के लिए। मैंने तुम दोनों को दूर करने का गुनाह किया था और अब मैं ही तुम दोनों को मिलाकर प्रायश्चित करूंगा। चलो! आगे बढ़ो और फिर से हासिल कर लो अपना प्यार।" एडवर्ड ने बहुत ही प्रभावशाली शब्दों के साथ अल्फ़ी की भावनाओं को उकसाते हुए कहा।

एडवर्ड की दिलफरेब झांसा देने वाली बातों को सुनकर अनामिका ने ख़ौफ से अल्फ़ी की ओर देखा। वो हेममाया के नाम से उसके चेहरे पर उतरते जज्बातों के तूफान को देखकर डर गई थी, जो सब कुछ तबाह कर सकता था। दूसरी ओर अल्फ़ी कुछ देर नीचे सिर झुकाकर अपने जज़्बातों को समेटता रहा और इस कोशिश में उसकी ऑ॑खों के किनारे बुरी तरह भीग गए थे। खुद को संभालने के बाद उसने सिर उठाकर अनामिका की ओर देखा, जो उसे बड़ी ही उम्मीद से देख रही थी। दो पल अनामिका को एकटक देखने के बाद उसने अपनी नज़रें एडवर्ड की ओर उठाई।

"मैं.... अनामिका को तकलीफ़ नहीं दे सकता।" अल्फ़ी ने कॉ॑पती हुई आवाज में कहा।

और ये सुनते ही जहॉ॑ अनामिका के होठों पर यकीन भरी मुस्कान लौटी, वहीं अपना दॉ॑व खाली जाते देख एडवर्ड के होश उड़े थे। उसे बिल्कुल भी नहीं लगा था कि अपने सामने हेममाया को खड़ा देखने के बाद भी अल्फ़ी इस तरह अपने पैर पीछे खींचेगा। अल्फ़ी का ये जवाब एडवर्ड को अंदर तक सुलगा गया। उसे अपने सारे प्लान्स चौपट होते नजर आने लगे। मगर वो भी एडवर्ड था। आखिरी दम तक कोशिश करने वाला!

"ये क्या कह रहे हो अल्फ़ी? पागल तो नहीं हो गए हो? तुम अगर इस लड़की को नहीं मारोगे तो... तुम्हारी हेममाया कभी वापस नहीं आएगी।" एडवर्ड ने अपने अंदर के तूफान को बड़ी मुश्किल से काबू में करते हुए
सामान्य सी आवाज में कहा।

"ये मुझे नहीं पता। पर इतना जानता हूॅ॑ कि.... अनामिका को नुक़सान नहीं पहुॅ॑चा सकता मैं।" अल्फ़ी ने इस बार मजबूत लहजे में कहा।

"तुम सच में पागल हो गए हो। तुम इस लड़की की परवाह कर रहे हो जो तुमसे प्यार भी नहीं करती। किसी और से करती है। इसे छोड़ दिया तो ये तुम्हारे पास नहीं आएगी, उसके पास जाएगी। बेवकूफ मत बनो! पुकारो उसके अंदर सोई हुई हेममाया को। वो सामने आएगी, तभी तो उसकी आत्मा के अंश को हम बाहर निकाल पाऍ॑गे। चलो! बुलाओ उसे!" अल्फ़ी की ओर आते हुए एडवर्ड बड़ी मुश्किल से अपने अंदर के गुस्से को संभालते हुए बोला।

"नहीं! कभी नहीं!" अल्फ़ी पूरी ताकत से चिल्लाया।

और अल्फ़ी के तरफ से सारी उम्मीदें ख़ाक होने के बाद एडवर्ड ने अनामिका की ओर देखा। वो उसे दुनिया भर की नफरत अपनी ऑ॑खों में भर कर देख रही थी। मगर उसे एकटक देखता एडवर्ड अचानक ही मुस्कुराया।

"क्या बात है माया! बड़ी-बड़ी डींगे हांका करती थी तुम! मेरी अल्फ़ी ये... मेरा अल्फ़ी वो! वो मेरी खातिर कुछ भी कर सकता है। देखो! क्या किया उसने तुम्हारे साथ?" एडवर्ड अनामिका के अंदर छिपी हेममाया को उकसाते हुए बोला।

उसकी इस हरकत से जहॉ॑ अनामिका चौंकी थी, वहीं अल्फ़ी भी हैरानी से दो-चार हुआ था।
"कहना क्या चाहते हो?" अल्फ़ी उसकी बातों पर तिलमिला उठा।

"तुमसे नहीं... माया से कहा। है ना माया! सच कहा ना मैंने! देखो तो जरा! तुम्हारा अल्फ़ी बेवफा हो गया। उसने बेईमानी कर ही दी ना!" एडवर्ड, अल्फ़ी की ओर तंज का तीर छोड़ते हुए बोला।

"बकवास मत करो!" अनामिका अपने दॉ॑त पीसते हुए बोली।

"कैसी बकवास? सही तो कहा मैंने! तुम्हें लगता है कि अल्फ़ी 200 सालों से तुम्हारा इंतज़ार कर रहा था। नहीं! वो 200 साल पहले ही तुम्हें धोखा दे चुका है। वो तब से ही बस अनामिका की राह देख रहा था। अगर वो तुमसे प्यार करता होता... तो तुम्हें अपनी जिंदगी में वापस लाना चाहता ना! पर वो अभी भी तुम्हारी बजाय अनामिका को ही चुन रहा है। फिर तुम्हारे पास ऐसी कौन सी दलील बचती है, जो साबित करें कि अल्फ़ी तुम्हारे प्रति ईमानदार है। बोलो!" अल्फ़ी को नज़रअंदाज़ करते हुए वो अनामिका के नज़दीक जाते हुए बोला। एडवर्ड ने ये ऐसी बात बोल दी थी कि अनामिका के अंदर की हेममाया ने अचानक ही अपनी ऑ॑खें मसली।

"अनामिका! उसकी बात मत सुनो! वो बहका रहा है।" अल्फ़ी चिल्लाया, जिस पर अनामिका ने उसकी ओर देखा।

"देखा! देखा! अभी भी अनामिका! तुम ही बोलो! कुछ बचा क्या मेरी बात झुठलाने के लिए तुम्हारे पास!" एडवर्ड ने उसके अंदर की हेममाया को और भी उकसाया।

"तो तुम चुप नहीं करोगे?" कहते हुए अल्फ़ी भड़की हुई हालत में एडवर्ड पर झपटा। अगले ही पल वो दोनों ही गुत्थम-गुत्था हो चुके थे। अनामिका बस अपनी फैली हुई ऑ॑खों से उन दोनों को एक दूसरे को नोचता हुआ देख रहे थे। इस छीना-झपटी में एडवर्ड, अल्फ़ी के चंगुल से छूटकर
अनामिका के पास गिरा, जिस पर अनामिका ने उसे अजीब सी नज़रों से देखा। उसी समय अल्फ़ी ने फिर से उसे दबोच लिया। मगर इस बार एडवर्ड उसकी पकड़ में ही हेममाया को पुकारते हुए चिल्लाया।

"तुम हार गई माया! तुम्हारा प्यार हार गया! अल्फ़ी किसी और का हो गया! उसका प्यार किसी और का हो गया।उसे अब तुम्हारी या तुम्हारी बेटी की मौत का कोई ग़म नहीं रहा क्योंकि उसे दिल लगाने के लिए एक और महबूबा मिल गई। अब तुम्हारा नाम अल्फ़ी के साथ कोई नहीं लेगा। कोई भी नहीं। अब सब... अल्फ़ी और अनामिका के प्यार के किस्से सुनाया करेंगे। तुम हार गई माया! तुम हार गई।" एडवर्ड उस पर व्यंग्य बाण छोड़ता हुआ बड़ी ही कुटिलता से मुस्कुराया।

और इस बार उसका छोड़ा हुआ तीर ठीक निशाने पर लगा। अनामिका के अंदर की माया उस पर हावी होने लगी, जिससे उसका चेहरा दर्द की शिद्दत से लाल हो गया और उसकी ऑ॑खें उस दर्द के अहसास से भर गई।

"माया नहीं! तुम जानती हो इस शैतान के बारे में। ये तुम्हें उकसा रहा है। ये तुम्हारा फायदा उठाना चाहता है। नहीं माया! एक बार फिर से इसके जाल में नहीं फॅ॑स सकती तुम! प्लीज़! क्या तुम्हें अपने अल्फ़ी से ज्यादा इस बेईमान की बातों पर भरोसा है।" एडवर्ड को एक ओर फेंककर अल्फ़ी अनामिका की ओर आता हुआ बोला और उसने उसके चेहरे को अपनी हथेलियों में भर लिया। अनामिका के अंदर मौजूद माया ने उसे बड़ी ही हसरत से देखा और फिर उसके चेहरे पर अपनी ऊंगलियॉ॑ फिराने लगी।

"अल्फ़ी!"
"माया! तुम जानती हो कि अल्फ़ी बस तुमसे प्यार करता है। तुम्हें वापस पाना चाहता हूं मैं। पर... किसी मासूम की जान की कीमत पर नहीं। क्या तुम समझ रही हो कि मैं क्या कहना चाहता हूॅ॑?" अल्फ़ी ने उसके चेहरे को नर्मी से पकड़कर कहा।

अनामिका उर्फ माया ने बहुत ही जज़्बाती नज़रों से उसकी ओर देखा और फिर आंसू भरी ऑ॑खों के साथ हॉ॑ में सिर हिलाया। उसकी हॉ॑ से अल्फ़ी के चेहरे पर एक राहत भरी मुस्कान आई। अभी वो दोनों भावनाओं के समुंदर में उतरे ही थे कि तभी एडवर्ड में पीछे से अल्फ़ी पर वार कर दिया। मगर उस ओर नज़र जाते ही अनामिका ने एडवर्ड के वार से अल्फी को बचाने के लिए उसे एक ओर किया, मगर फिर भी एडवर्ड का खंज़र अल्फ़ी की बाईं बांह चीरता हुआ निकल गया। अल्फ़ी ने तुरंत ही अपनी बांह के जख्म को दूसरे हाथ से पकड़ा और उस शैतान की ओर आग उगलती ऑ॑खों से देखा। जबकि उसकी बांह से बहते खून को देखकर अनामिका के अंदर की माया पूरी तरह से सहम गई। उसने अल्फ़ी के तपते हुए चेहरे पर दर्द की रेखाऍ॑ देखी तो एकदम से ही उन दोनों के सामने खड़े उस शैतान एडवर्ड के लिए उसके अंदर एक ज्वालामुखी फूटा और उसे देखकर वो गहरी गहरी सॉ॑से लेने लगी।

"तो तुम दोनों नहीं मानोगे। अल्फ़ी! कितना भी बचा ले इसे। आज मुझे मेरे मकसद में कामयाब होने से कोई नहीं रोक सकता।" ये कहते हुए एडवर्ड ने एक नुकीली पिन अनामिका की ओर फेंकी, जो एक रस्सी से जुड़ी हुई थी। उस रस्सी का दूसरा सिरा एडवर्ड के हाथ में मौजूद कॉ॑च के एक गोल पात्र से जुड़ा हुआ था। वो पिन अनामिका के शरीर में घुसते ही उसके अंदर मौजूद हेममाया की आत्मा को उस पात्र में खींचने लगा, जिससे अनामिका बहुत ही दर्दनाक आवाज में चिल्ला उठी। अल्फ़ी ने उस पिन को अनामिका के शरीर से निकालने की बहुत कोशिश पर निकाल नहीं सका।
"कितनी भी कोशिश कर लो। ये नहीं निकलेगा। आज मैं तेरी माया को अपना बना लूंगा और तू हमेशा के लिए दर्द की आग में झुलसता रहेगा।" कहते हुए एडवर्ड ने एक जोरदार अट्टहास किया, जिससे चारों ओर एक अजीब सा ठंडा अहसास फैल गया।

अल्फ़ी ने जब देखा कि वो पिन अनामिका के शरीर से बाहर नहीं निकल रहा है तो उसने एडवर्ड पर एक जहर भरी नजर डाली और चिल्ला कर बोला, "शैतान! तू कभी कामयाब नहीं हो सकता।"

और ऐसा कहकर अल्फ़ी ने अपनी तलवार उस तंत्र विद्या से बनी हुई हेममाया के शरीर की ओर फेंक दी। एडवर्ड को इसका गुमान नहीं था कि अल्फ़ी ऐसी हरकत भी कर सकता है। जब तक वो अल्फ़ी के वार को रोकने का जतन करता, अल्फ़ी की तलवार हवा में उड़कर उस पिशाच सुरक्षा कवच को भेदती हुई हेममाया के शरीर में जा घुसी और अगले ही पल एक तेज विस्फोट के साथ एडवर्ड का सारा तामझाम हेममाया के शरीर के साथ उड़ गया। अनामिका के शरीर से हेममाया की आत्मा के अंश को खींचते हुए एडवर्ड की ऑ॑खें अपनी योजना की बर्बादी पर हैरत की आखिरी हद तक फैल गई थी। अपनी योजना को नाकाम होता देखकर वो बुरी तरह से तिलमिला उठा। आज उसे किसी भी कीमत पर हार मंजूर नहीं थी। मगर अल्फ़ी ने एक बार फिर उसकी बाजी पलट दी थी। गुस्से की आखिरी हद पर खड़ा हुआ वो जोर से चिंघाड़ता हुआ चिल्लाया।

"अल्फ़ी! इसकी कीमत चुकानी होगी तुम्हें!" यह कहकर उसने अपना खंजर फेंककर अल्फी के सीने में उतार दिया। अल्फ़ी की तेज चीख वहॉ॑ की दीवारों से टकरा गई और वो अपने सीने पर धंसे खंज़र पर हाथ रखे घुटनों पर गिर गया। एक तेज चीख के साथ उसने वो खंज़र अपने सीने से बाहर निकाला। खंजर के बाहर निकलते ही... जैसे वहॉ॑ खून का सैलाब निकल आया था। अल्फ़ी की ऐसी हालत देखकर अनामिका उर्फ माया की
चीख निकल गई। उसने अपने हाथ से छुटती हुई आत्मा को पूरी हिम्मत लगाकर फिर से पकड़ा और फिर एक तेज झटका देते हुए कॉ॑च के उस गोल पात्र को एडवर्ड के हाथों से खींच कर नीचे गिरा दिया। अल्फ़ी की ओर ध्यान होने के कारण एडवर्ड उस गोले को संभाल नहीं सका और वो नीचे गिरकर टूट गया। एक ही पल में एडवर्ड के लिए जैसे सब खत्म हो गया।

"मैं तुम दोनों को जिंदा नहीं छोड़ूंगा।" कहते हुए लावे जैसा खौलता हुआ एडवर्ड एक बार फिर से अल्फ़ी की ओर भागा। उसकी तलवार पास ही गिरी पड़ी थी। उसने लपक कर वो तलवार उठाई और फिर पूरी ताकत से अल्फ़ी पर वार करने के लिए अपने सिर के ऊपर उठा ली। वो उस पर वार कर पाता, उससे पहले ही एक तलवार पीछे से उसके सीने में आ घुसी। उसने झुककर उस तलवार की ओर देखा। वो अनामिका की तलवार थी। इस हमले से एडवर्ड बुरी तरह से हिल गया। वहीं जमीन पर घुटनों के बल बैठे हुए जख्मी अल्फ़ी ने एक तंज भरी मुस्कराहट उसकी ओर डाली। उसकी उस मुस्कुराहट से चिढ़कर एडवर्ड ने उस तलवार को अपने हाथ से निकलना चाहा। मगर वह एक जल रक्षक की तलवार थी, जो उसके काबू में नहीं आ सकती थी। खुद को लाचार पाकर एडवर्ड बुरी तरह से हांफने लगा। उसी समय अनामिका उर्फ माया अपने जख्मी शरीर के साथ खुद को खींचते हुए उसके पास आई और अपनी तलवार के मूठ पर पकड़ बनाकर एक ही झटके में उसके शरीर से बाहर निकाल दिया। एडवर्ड की तेज चीख वहॉ॑ की हवाओं में फैल गई। वो संभल पाता उससे पहले ही अनामिका ने उस पर अगला वार कर दिया और उसकी बाईं हथेली काटकर अलग कर दी। दर्द में तड़पते हुए एडवर्ड ने अपना बायां हाथ उठाकर देखा ही था, कि तभी अनामिका ने अगला वार करके उसकी दाहिनी हथेली भी अलग कर दी। दहाड़े मारता हुआ एडवर्ड जमीन पर गिर पड़ा। पूरा का पूरा कमरा एडवर्ड के खून और चीखों से भर गया। अनामिका ने अपनी तलवार की नोक जमीन पर टिकाई और फिर हॉ॑फते हुए एडवर्ड के तड़पते हुए शरीर को देखने लगी। दर्द से कराहते हुए
एडवर्ड ने जब अनामिका की ओर देखा, तो वो उसके चेहरे पर अपने लिए मौजूद नफरत को देखकर सहन गया।

"तूने मेरा घर उजाड़ा! मेरी बच्ची को मारा! अपने लालच और नफरत में आकर हमारी हॅ॑सती खेलती दुनिया बर्बाद कर दी। तुझे क्या लगा था? अपनी इन गुनाहों का हिसाब तुझे देना

[illegible]? [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible]

"[illegible]! [illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]

"[illegible]

[illegible]
[illegible]

"[illegible]

[illegible]
[illegible]

"[illegible]

"चैतन्य!"
आवाज को सुनकर अल्फ़ी ने पलटकर देखा। ये अनामिका थी, जो अब शिथिल सी नज़र आने लगी थी। अल्फ़ी की ऑ॑खें हैरत से फैली और अगले ही पल अनामिका के ढहते शरीर को उसने तेजी से थाम लिया।

"माया!" अल्फ़ी ने घबराते हुए उसके गाल को थपथपाया.. पर वो बेहोश हो चुकी थी। अल्फ़ी ने उसे अपनी बाहों में उठाया और चैतन्य की ओर देखा, जो अभी भी दर्द भरे चेहरे के साथ उन दोनों को ही देख रहा था।

"अनु!" चैतन्य ने अपना हाथ आगे बढाया, जिससे एक पल को अल्फ़ी सहम सा गया। वो उसे अपनी बाहों में समेटे सामने खड़े चैतन्य की ओर एकटक देख रहा था। इस समय उसकी हालत उस बच्चे की तरह हो रही थी, जो अपनी मनपसंद चीज छिन जाने के डर से घबरा जाता है। सामने खड़े चैतन्य की हालत भी कुछ अलग नहीं थी। अपने निचले होंठ को दॉ॑तों में दबाए वो उसकी ओर बहुत ही धीरे से बढ़ा और उसे आगे बढ़ते देख अल्फ़ी ने भी अपने पैर उतने ही पीछे किए थे। चैतन्य रूक गया।

"अनु!" उसने एक बार फिर से कहा... और इस बार अल्फ़ी ने भरी हुई ऑ॑खों से अपने सीने में टिके हुए अनामिका के चेहरे की ओर देखा।

"अनामिका!" अल्फ़ी के मुॅ॑ह से निकला और फिर उसने चैतन्य की ओर देखा। इस बार चैतन्य आगे बढ़कर उनके पास आया और अल्फ़ी को इस तरह देखा, जैसे कि उसे ये याद दिला रहा हो कि वो उसकी अनामिका है। अल्फ़ी की ऑ॑खें दर्द की इंतेहा से बंद हो गई और उसने अपना सिर झुका दिया। चैतन्य आगे बढ़ा और अनामिका को उससे ले लिया। अल्फ़ी ने अपनी ऑ॑खें खोली और नसीब की तरह खाली हो चुकी अपनी बाहों की ओर देखा। वो वहीं... उसी तरह खड़ा रह गया.... जब चैतन्य, अनामिका को अपने साथ लेकर चला गया। बिना किसी शक उसका दिल एक बार फिर से तड़का था, मगर वो इतना खाली हो चुका था.. कि कहीं कोई
आवाज नहीं हुई। थके हुए कदमों से वो भी अपने रास्ते में बढ़ गया।

****

रात का अंधेरा अभी गहरा ही था, जब अनामिका ने कराहते हुए अपनी ऑ॑खें भींची। उसके पास बैठा चैतन्य तेजी से उसके नजदीक गया। कमरे में मौजूद बाकी सब भी अनामिका की ओर आए। वरूण भी उसके सिरहाने बैठा उसे फिक्र भरी नज़रों से देख रहा था।

"अनु!" चैतन्य ने उसका हाथ पकड़ते हुए उसे पुकारा।

अनामिका के होंठों हिले और उसने कराहते हुए कहा, "अल्....फ़ी!"

चैतन्य की पकड़ उसके हाथ पर ढीली पड़ी और उसने उलझी हुई नज़रों से अनामिका की ओर देखा, जो अल्फ़ी का नाम लेने के बाद और भी बेचैन दिख रही थी। चैतन्य ने वरूण की ओर देखा तो.. वो भी उतनी ही उलझन में था।

"अनु!" इस बार वरूण ने उसका कंधा हिलाकर कहा तो वो एक ही झटके में उठकर बैठ गई। फटी हुई ऑ॑खों के साथ वो मुॅ॑ह खोले गहरी सॉ॑सें ले रही थी। उसे ऐसी हालत में देखकर सभी परेशान से हुए। डॉ. अनंत उसके पास आए और उन्होंने उसके सिर पर हाथ रखा। अनामिका ने अपनी ऑ॑खें घुमाकर उनकी ओर देखा और फिर उन्हें सामने देखकर
उसकी ऑ॑खें सिकुड़ी। वही नज़र उसने पूरे कमरे में दौड़ाई। वो एक-एक के चेहरे को इस तरह देख रही थी जैसे कि खुद को उस कमरे में होने का यकीन दिला रही हो।

"अनु!" चैतन्य एक बार फिर से उसके पास आया। अनामिका ने उसे देखा और फिर वो सामान्य नज़र आने लगी।

"□□□□ □□!" □□. □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□, □□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□

"□□□□□ □□□□? □□□□□□□ □□ □□□□ □□! □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□! □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□!" □□. □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□! □□□□ □□□□□! □□... □□ □□ □□□□□□" □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"□□□□ □□... □□□□ □□ □□! □□□□□ □□□□! □□□□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□□" □□. □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□, □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□

□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□-□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ "□□□□□ □□□□?" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□

"□□□□ □□! □□□□□ □□□□ □□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□

"□□□□□ □□□□□? □□□□ □□□□□ □□□□□!" □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□

"□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□... □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□" □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□

"□□□□□ □□□□ □□□□? □□□□ □□□□□□□□ □□?" □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□

"□□□□ □□□□□! □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□... □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□.. □□ □□□□ □□ □□□□ □□... □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□... □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□... □□□□□ □□□□ □□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□

□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□.. □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□.. □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□... □□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□... □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□... □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□

"□□□□!"

"--□□□□---!"

"□□□□□ □□□□? □□□□ □□□□□ □□! □□□□□ □□□□ □□□□ □□?" □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□

"□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□! □□□□□□□□ □□□□□□! □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□... □□□□□□□□ □□□□□ □ □□□□□□ □□□□□ 200 □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□... □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□! □□□□□?" □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□

"क्योंकि वो जानता है कि जो आती... उसकी हेममाया नहीं होती। हम-तुम या कोई भी उसके प्यार की गहराई नहीं समझ सकता अनु! वो समय और समझ की हर सीमा से परे हैं।" चैतन्य ने उसके हाथ को पकड़ते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने एक बार फिर से ख़ामोशी इख्तेयार कर
ली। चैतन्य उसके बोलने का इंतजार करता रहा, पर उसने कुछ नहीं कहा। बस उसके सीने पर सिर टिकाए उसी तरह बैठी रही।

"फिर क्या सोचने लगी?" चैतन्य ने ही सवाल किया।

"यही कि... तुमने मुझे सब सच क्यों बताया?" अनामिका ने उसके दिल में झांकने की कोशिश की।

"क्योंकि मैं तुमसे झूठ नहीं बोल सकता। मैं जानता हूॅ॑ कि तुम्हारा दिल अल्फ़ी और मेरे बीच झूल रहा है। पर तुम्हें फैसला लेना ही होगा अनु। मुझे यकीन है कि तुम जो भी फैसला लोगी.. सही होगा।" उसकी ऊंगलियों से खेलते चैतन्य ने अपने दिल की बात कह दी।

"और अगर जज़्बातों में आकर तुम्हारा दिल दुखा दिया मैंने... तब!" अनामिका ने सिर उठाकर उसकी ऑ॑खों में झांकते हुए कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य के होंठों पर बेबसी भरी मुस्कान आ गई।

"एक ही सवाल कितनी बार करोगी? मैंने पहले भी कहा था... तुम्हारे हर फैसले में मुझे साथ खड़ा पाओगी। तुमसे अलग नहीं हूॅ॑ मैं। मायने रखती है तुम्हारी खुशी!" चैतन्य ने अपना लहज़ा मजबूत रखते हुए कहा।

"और मैं?" अनामिका ने पूछा।

"ऑफकोर्स तुम भी! मैं प्यार करता हूॅ॑ तुमसे और... प्यार एक-दूसरे को समझने का नाम होता है। चाहे हालात कैसे भी हों... मैं हमेशा तुम्हारा ही रहूंगा... तुम्हारे साथ रहूंगा और ये कोई समझौता नहीं। बस... अपने दिल से झूठ मत बोलना।" चैतन्य ने उसकी ऑ॑खों में देखते हुए कहा।

अनामिका ने उसकी दोनों ऑ॑खों में बारी-बारी से देखा और फिर एक बार
उसके सीने में सिर टिका लिया। चैतन्य ने भी कुछ कहा नहीं। वो उसी तरह बेड पर अधलेटी हालत में उसे समेटे बैठा रहा। इसके बाद उस कमरे में दोनों की धड़कनों के शोर के अलावा और कोई आवाज नहीं आई। उसी तरह बैठे-बैठे चैतन्य को पता ही नहीं चला कि कब उसकी ऑ॑ख लग गई। उसी तरह बैठे-बैठे जब उसकी गर्दन ढलकी, तब ऑ॑खे मलते हुए वो उठा और फिर उसने अनामिका की ओर देखा। वो वहॉ॑ नहीं थी। समय देखा तो सुबह के 4:30 हो रहे थे।

"ये इस समय कहॉ॑ चली गई?" उसकी चिंता करते हुए वो बिस्तर से उतरकर वॉशरूम की ओर गया और दरवाजा खटखटाया।

"अनु! तुम अंदर हो?"

कोई जवाब नहीं आया। उसने थोड़ी झिझक के साथ वॉशरूम खोलकर देखा। वो वहॉ॑ भी नहीं थी। अब उसे थोड़ा सा डर लगा। वो भी तेजी से बाहर निकला। नीचे हॉल में एक किताब पढ़ते आशुतोष के अलावा और कोई नहीं था। उन्हें हर हाल में सुबह चार बजे उठने की आदत थी। वो तेजी से नीचे आया और चारों ओर नज़रें दौड़ाते हुए किचन की ओर गया। वो वहॉ॑ भी नहीं थी।

'क्या हुआ? कुछ ढूंढ रहे हो?" उसे बेचैनी से चारों ओर देखता पाकर आशुतोष ने पूछा।

"हॉ! वो... अनामिका!" चैतन्य बोला।

"क्या बात है भई! आज तो सब एक-दूसरे को ढूंढ रहे हैं।" आशुतोष ने चुहल भरी आवाज में कहा।

"क्या मतलब?" चैतन्य ने पूछा।

"थोड़ी देर पहले अनामिका भी अल्फ़ी को ढूंढती बाहर गई।" आशुतोष ने बड़े ही आराम से कहा।

"अ... अल्फ़ी को!" चैतन्य ने बढ़ी हुई धड़कनों के साथ कहा।

"हॉ॑! मेरे पूछने पर उसने बताया तो मैंने ही उसे फव्वारे की तरफ जाने के लिए कहा।
थोड़ी देर पहले बाहर वॉक करते समय उसे वहीं पेड़ों के बीच देखा था। कुछ सोचता बैठा हुआ था वो।" आशुतोष ने बताया।

"कितनी देर हुई?" चैतन्य ने बेचैनी से पूछा।

"यही कोई 15 मिनट हुए होंगे।" आशुतोष ने हिसाब लगाकर कहा।

और ये सुनते ही चैतन्य लंबे-लंबे डग भरता हुआ उस ओर भागा। उसका दिल बुरी तरह से धड़क रहा था... ये सोचकर कि अनामिका इस समय उसके पास क्यों गई थी? आसमान में सूरज अपनी लाली बिखेरने लगा था और रात का अंधेरा अपनी ऑ॑खें मिचमिचा रहा था। सुबह हो रही थी। किसी तरह खुद को समझाते हुए वो वहॉ॑ पहुॅ॑चा, तो थोड़ी मशक्कत के बाद वो दोनों ही उसे ऊॅ॑चे पेड़ों के बीच बातें करते मिल गए। चैतन्य एक पेड़ के पीछे खड़ा होकर उनकी ओर देखने लगा। उनकी बातें तो उसे सुनाई नहीं दीं.. पर वो दोनों ही एक-दूसरे के साथ काफी सहज दिखाई दे रहे थे। उन दोनों को साथ देखकर चैतन्य ने अपनी ऊंगलियॉ॑ क्रॉस कर लीं।

तभी अनामिका ने अल्फ़ी से कुछ कहा। उसकी बात सुनकर पहले तो अल्फ़ी ने उसे कुछ देर तक देखा और फिर धीरे से उसके नजदीक आया। वो अनामिका के चेहरे को अपनी हथेलियों में भरकर उसे देखने लगा। अनामिका ने भी कोई प्रतिरोध नहीं किया। वो भी उसे चुपचाप देखती
रही। अनामिका की बातें याद कर हर बढ़ते लम्हे के साथ चैतन्य का दिल बैठा जा रहा था और फिर... उसका दिल एक तेज आवाज के साथ तड़का... जब उसकी फटी हुई ऑ॑खों ने अल्फ़ी को अनामिका के होंठों पर झुकते देखा।

चैतन्य ने तुरंत ही अपनी नज़र फेरते हुए उस पेड़ पर अपनी पीठ टिकाई और गहरी सॉ॑सें लेने लगा। कुछ देर बाद अपने सूखते गले को गीला करते हुए एक उम्मीद के साथ उसने फिर उस तरफ देखा... और उसका दिल आखिरकार चकनाचूर होकर बिखर गया, जब उसने अनामिका को भी अल्फ़ी में खोए हुए देखा। वो एक आह भरकर रह गया। आखिरकार उसकी बात मानते हुए अनामिका ने अपना फैसला कर ही लिया था और अब... उसकी बारी थी।

पिछले कुछ दिनों से अनामिका के उलझे रहने से... उसके सवालों से... शायद उसे इस बात का अंदाजा हो चुका था.. कि अनामिका का फैसला क्या होने वाला था। फिर भी उसने अपने अंदर की उम्मीद को मरने नहीं दिया था। और अब उस उम्मीद के जाने के बाद उसने अपने दिल के दर्द को बड़ी मुश्किल से बाहर आने से रोकना चाहा, मगर फिर भी ऑ॑खें भीग ही गईं। दर्द की शिद्दत से उसने अपनी ऑ॑खें बंद कर लीं। वो जानता था कि उसके लिए ये कभी भी आसान नहीं होगा... पर वो उसकी खुशी के लिए कुछ भी कर सकता था। उसने हर फैसले में साथ रहने का वादा किया था, इसलिए.... उसे ये वादा निभाना ही था। वो जान चुका था कि अब उसे अलविदा कहना ही होगा और वो.... ये कहने वाला था। अपने दिल के टुकड़ों को समेटकर बिना किसी शिकायत के वो उससे दूर... बहुत दूर जाने वाला था। हमेशा के लिए! ये जरूरी तो नहीं.... कि हर सफर को मंजिल मिले। शायद... उसकी कहानी का भी यही अंत था... जो अपने साथ ही सब कुछ अधूरा छोड़ गया था।
"अलविदा अनु! अलविदा!"

कुछ घंटे पहले -

अपना काम खत्म कर वापस लौटने के बाद उलझी हुई अनामिका को संभालते हुए चैतन्य उसी के

[illegible]

[illegible],
[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible],

[illegible]

ये तीन महीने मैंने हर पल बस तुम्हें ही सोचा... तुम्हें ही याद किया। बस तुम्हें ही महसूस किया। अपने अंदर मौजूद तुम्हारे अक्स को हर पल जिया... हर पल जी रही हूॅ॑... ये सोचकर कि कभी-कभी साधारण से दिखने वाले सपने भी दुनिया में सबसे सुंदर होते हैं, जो हमने देखे। हमारे सपने पूरे होंगे ना अल्फ़ी? मुझे पता है तुम्हारे होते हुए इस सवाल का कोई औचित्य ही नहीं है। बस मेरा इंतजार करना तुम! हम मिलकर एक बार फिर से उन सपनों को जिऍ॑गे।

और मेरी वापसी को लेकर ज्यादा मत सोचना... ज्यादा चिंता मत करना। माया ने कभी तुम्हारे अलावा ना तो किसी को देखा और ना ही कभी सोचा। मेरी हर खुशी तुमसे शुरू होकर तुम्हीं में खत्म हो जाती है। तुम्हें भूलना मेरे लिए सॉ॑से लेना भूलने के समान है। इसलिए कभी भी ये ख्याल दिल में ना लाना कि माया तुमसे दूर जा सकती है। माया किसी और की तरफ ऑ॑खें उठाकर भी कभी तुमसे बेईमानी नहीं करेगी। किसी और का तसव्वुर करने से पहले माया मरना पसंद करेगी और मरकर भी वो तुम्हें ही चाहेगी। हमेशा! अनंतकाल तक! बस मुझपर अपना भरोसा और मोहब्बत बनाए रखना।

बस तुम्हारी

माया

अनामिका ने उस खत को पढ़ने के बाद फिर से मोड़ा और फिर तीसरे कागज को उठाया। ये हेममाया और अल्फ़ी की तस्वीर थी। शादी के जोड़े
में वो दोनों नई उम्मीदों की तरह दमक रहे थे। पर कौन जानता था कि इन उम्मीदों की उम्र भी बस कुछ ही दिनों की थी। उसके बाद सब तबाह होने वाला था।

सब देखने-पढ़ने के बाद भावुक हो चुकी अनामिका ने बड़ी मुश्किल से अपने जज्बातों को संभाला। उसके अंदर की माया एक बार फिर उस पर हावी होने लगी थी। उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था कि आखिर वो करे तो क्या करे? कैसे खुद को इस दुविधा से आजाद करे? उसका दिल अल्फ़ी को पुकार रहा था... मगर उसके जज़्बात उसे उसकी ओर बढ़ने से रोक रहे थे। ऐसी ही हालत में भीगे हुए चेहरे के साथ उसने चैतन्य की ओर देखा। अनामिका उसके पास जाकर उसके सामने बैठ गई। वो सबसे बेखबर सो रहा था। मगर चेहरे पर थकान साफ-साफ दिखाई दे रही थी और अनामिका अच्छी तरह से जानती थी कि ये थकान सिर्फ जिस्मानी नहीं थी। चैतन्य भी उसी की तरह उतना ही बेचैन था। एक-एक करके चैतन्य के साथ बिताए गए सारे लम्हे अनामिका के दिमाग में कौंध गए और उन लम्हों को जीते हुए वो एक बार फिर से मुस्कुराई थी। वो चैतन्य में ही उलझी हुई थी कि तभी माया के ख़त की कुछ लाइनें उसकी ऑ॑खों के सामने चौंधिया गईं।

"माया किसी और की तरफ ऑ॑खें उठाकर भी कभी तुमसे बेईमानी नहीं करेगी। किसी और का तसव्वुर करने से पहले माया मरना पसंद करेगी और मरकर भी वो तुम्हें ही चाहेगी। हमेशा! अनंतकाल तक!"

ये याद आते ही अनामिका तेजी से उठी और फिर उन तीनों कागजों को उसी थैली में डालकर तेजी से बाहर की और चल दी। दरवाजा बंद करने से पहले उसने नज़र भर कर चैतन्य को देखा और फिर चली गई। पास ही रखी घड़ी में सुबह के 4:15 हो रहे थे। नीचे आई तो आशुतोष को किसी किताब में उलझे हुए देखा। अनामिका के पैरों की आहट सुनी तो आशुतोष ने सिर घुमाकर उसकी ओर देखा।

"अरे! तुम उठ क्यों गई? आराम करती!" आशुतोष ने उसे अपनी और आते देखकर कहा।

"करूॅ॑गी आशुतोष जी! बस एक जरूरी काम निपट जाए, तो आराम ही करना है। वैसे आप क्या कर रहे हैं?" आशुतोष को जवाब देते हुए अनामिका ने पलट कर सवाल किया।

"अरे यार! वो मुकुल कालछिद्र में जाकर फॅ॑स गया है। उसे ही निकालने का तरीका ढूंढ रहा हूॅ॑। अल्फ़ी ने बताया कि ठीक है वो! पर हवा का दबाव वहॉ॑ बहुत है, इसलिए उसे कैसे नियंत्रित करना है, ये पता करने की कोशिश कर रहा हूॅ॑।" आशुतोष ने थोड़ी झल्लाहट के साथ कहा।

"अल्फ़ी ने बताया!" अनामिका ने कहा।

"हॉ॑ अभी बाहर मिला था।" आशुतोष ने कहा।

"अभी कहॉ॑ है वो?" अनामिका ने पूछा।

"फव्वारे की तरफ जो पेड़ों वाला हिस्सा है।" आशुतोष ने उसे पता बताते हुए कहा।

"थैंक्यू!" कहते हुए वो तेजी से बाहर की ओर भागी। आशुतोष की हैरान नजरों ने आखिरी तक उसका पीछा किया।

वो तेजी से अंधकार में रास्ता बनाते हुए आगे बढ़ रही थी। उसकी धड़कने इतनी ज्यादा बढ़ी हुई थीं.... कि ऐसा लग रहा था धौंकनी की तरह
चलता उसका दिल अभी शरीर चीरकर बाहर आ जाएगा। वो अपनी हर एक धड़कन को अपने कानों के पास बजता सुन रही थी। चारों और तलाश करती उसकी नज़रें आखिरकार एक जगह जाकर रुकीं, जहॉ॑ वो आसमान की ओर देखता हुआ चुपचाप बैठा था। उसे देखते ही अनामिका की चाल धीमी पड़ गई। उसके अंदर फिर एक एहसास करवटें लेने लगा था। मगर नहीं! अब और नहीं! अनामिका ने अच्छी तरह सोच लिया कि फैसला लेने का अगर कोई मौका है तो वो बस अभी है। उसने बुरी तरह धड़कते अपने दिल के ऊपर हाथ रखा और उस दिल के अंदर मौजूद माया के एहसास को खुद भी महसूस किया। उसने अपनी ऑ॑खें बंद की और बस किसी को देखना चाहा और अगले ही पल वो उसे दिखा। उसने अपनी ऑ॑खें खोली और फिर खुद को मजबूत करती हुई उसकी ओर बढ़ गई।

"माया!" अल्फ़ी ने पुकारा और फिर पलट कर उसकी ओर देखा।

अल्फ़ी की ऑ॑खों पर नज़र पढ़ते ही अनामिका एक पल के लिए सुन्न पड़ गई। उसे अपने सारे इकट्ठे किए गए अल्फ़ाज रेत की तरह हाथ से फिसलते हुए लगे।

"मुझे पता था कि तुम आओगी!" अल्फ़ी ने अपनी ऑ॑खों में उम्मीद की रोशनी भरकर कहा, जिससे उस नीम अंधकार में भी उसकी ऑ॑खें जूगनू की तरह चमक रही थी।

उसे देखकर डगमगाते हुए मन के साथ खड़ी अनामिका ने एक बार फिर से खुद को संभाला। उसने मुट्ठियॉ॑ भींच कर अपने अंदर की माया को बाहर निकलने से रोका क्योंकि अगर आज वो अनामिका पर हावी हो जाती, तो शायद फैसला भी उसी का होता और आज हर हाल में फैसला माया को नहीं अनामिका को करना था। आखिरकार खुद को मजबूत करती हुई वो आगे बढ़ी और अल्फ़ी के पास जाकर बैठ गई। अल्फ़ी ने उस पर एक गहरी मुस्कुराती हुई नज़र डाली, जिसे आसमान को निहारती
हुई अनामिका ने पूरी तरह नजरअंदाज किया। उसकी बेरुखी को महसूस कर अल्फ़ी के होठों की मुस्कान सिमटी थी। खुद को संभालते हुए उसने भी आसमान की ओर नज़रें घुमाई।

"क्या देख रही हो?" क्षितिज पर नज़रें गड़ाए अनामिका से अल्फ़ी ने पूछा।

"भोर का तारा! देखो!" अनामिका ने अंधकार से घिरे क्षितिज की ओर अपनी तर्जनी उंगली उठाते हुए कहा। अल्फी ने भी उसकी उठी ऊंगली की ओर अपनी नज़रें घुमाई और दूर क्षितिज के पास चमकते उस तारे को मुस्कुरा कर देखा।

"हॉ॑ देखा है कई बार! माया दिखाया करती थी।" अल्फ़ी ने एक आह भरकर उस तारे को देखते हुए कहा।

"जानते हो इसे देखना हर किसी की किस्मत में नहीं होता। इसे देखना है तो अपनी नींद और आरामदायक बिस्तर को तिलांजलि देकर इसकी राह तकनी होती है। उसके बाद भी ये उसे ही दिखाई देता है जिसके अंदर सब्र होता है।" अनामिका ने उस तारे पर नज़रें रखे हुए ही कहा।

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! 200 [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible]!"
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [

और इस बार अल्फ़ी टूटा था। अपनी ऑ॑खों के दरिया को आजाद करते हुए वो जोर-जोर से सुबकने लगा।

"अल्फ़ी! प्लीज़! बहुत मुश्किल से अपने अंदर का सच तुम्हारे सामने कहा है मैंने। रो कर मुझे कमजोर मत करो। मैं कभी तुम्हारे लिए ईमानदार नहीं रह सकती अल्फ़ी। समझो इस बात को। क्या तुम इस बात को कभी अपनाओगे कि तुम्हारे साथ होकर भी मैं कभी तुम्हारे साथ नहीं रहूंगी। मुझे टुकड़ों में मत बांटो अल्फ़ी। इससे दर्द के अलावा किसी को कुछ और हासिल नहीं होगा।" अनामिका ने टूटे हुए लहजे में कहा और उसकी ओर देखने लगी।

"आजाद किया!" अल्फी एकदम से बोला।

"क्या?" अनामिका ने बेयकीनी से उसे देखते हुए कहा।

"कहा ना! आजाद किया! जाओ! मैं भूल गया था कि... जिनकी दुनिया एक बार अंधकार में डूब जाए, उसके लिए कोई भोर का सितारा उम्मीद बनकर नहीं निकलता। उसके हिस्से में कोई नई सुबह नहीं होती।" अल्फ़ी ने बढ़ी हुई धड़कनों के साथ कॉ॑पती हुई आवाज में कहा।

"अल्फ़ी तुम!" अनामिका ने कुछ कहना चाहा।

"कहा ना जाओ! दर्द है या जो भी है... मेरी माया से जुड़ा है तो मेरा है। चाहे वो वरदान हो... चाहे श्राप और वो मैं किसी और को नहीं दूंगा। तुम्हें आजादी करता हूॅ॑... मुझसे जुड़े माया के हर दर्द से। मेरे हिस्से में अगर नहीं है... तो मैं किसी और के हिस्से की उम्मीदें उससे नहीं छीनूंगा। जाओ! तुम आजाद हो अपने हिस्से की नई सुबह का स्वागत करने के लिए।" अल्फ़ी ने बड़ी ही मुश्किल से अपनी जज़्बातों को संभालते हुए कहा।
"अल्फ़ी!"

"जाओ अनामिका! अगर फैसला बदल लिया मैंने, तो एक कदम भी चैतन्य की ओर नहीं उठा पाओगी। जाओ!" अल्फ़ी ने अपने सब्र को बड़ी ही मुश्किल से पकड़ते हुए कहा।

"तुम.... माया को अलविदा कहना चाहोगे?" अनामिका ने एक बार फिर से खुद को नियंत्रित करते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अल्फी ने उसकी ओर देखा। वो अपने चेहरे पर अजीब से भाव लिए उसे ही देख रही थी। कुछ सोचते हुए वो धीरे से उसके पास आया और उसका चेहरा हथेलियों में भर लिया। अनामिका ने अपने दिल की धड़कनों को काबू में रखने के लिए अपनी मुट्ठियॉ॑ भींच लीं। ये वो आखिरी इम्तिहान था, जो उसे अनामिका बना सकता था और ये उसे देना ही था। उसके चेहरे को कुछ देर देखता हुआ अल्फ़ी धीरे से उसके होठों पर झुक गया। माया के एहसास के साथ उसने अपनी ऑ॑खें बंद कर लीं। मगर अनामिका ने अपनी ऑ॑खें बंद नहीं की। वो उसके साथ माया बनकर खोना नहीं चाहती थी। वो अनामिका ही बने रहना चाहती थी। कुछ देर बाद अनामिका के होठों से अलग होते हुए अल्फी ने उसकी ऑ॑खों में देखा, वहॉ॑ उसके लिए कुछ भी नहीं था।

अल्फ़ी ने घोर हताशा के साथ अपना सिर नीचे की ओर झुकाया और बोला, "अल... विदा! मा.. या!"

और फिर अपनी भरी हुई ऑ॑खों के साथ अनामिका के चेहरे को छोड़ते हुए वो तेजी से एक और चला गया। उसकी बिखरी हुई ज़हनी हालात के
बारे में सोचकर अनामिका ने उसकी ओर कदम उठाया ही था कि तभी उसके दिल ने उसे ऐसा करने से रोक दिया।

"नहीं अल्फ़ी! मैं नहीं! पर दुआ करुंगी कि तुम्हारे दर्द के लिए मरहम जल्दी ही मिल जाए। गुडबाय!"

अल्फ़ी की ओर देखकर अपने कदम पीछे लेते हुए अनामिका ने भरे हुए गले से कहा और फिर

[illegible] [illegible] [illegible] [

था। उसकी ऑ॑खों के सामने हर वो लम्हा आकर गुजर गया, जो उसने अनामिका के साथ बिताए थे। उनमें उसे कहीं भी.... कोई भी... बनावटीपन नहीं दिखाई दिया। ना तो अपने अहसासों में... और ना ही अनामिका के जज़्बातों में। तो फिर कहॉ॑ कमी रह गई... कि आज वो इस तरह खाली हाथ लिए तन्हा बैठा हुआ था। उसके लिए अपने जज़्बातों को रोकना मुश्किल हो गया। अपने आधे चेहरे को हथेलियों में दबोचे उसने अपने आंसुओं को रिहाई दे दी और सुर्ख़ हो चुकी ऑ॑खों पर कॉ॑पती पलकों ने पर्दा कर दिया। उसे नहीं पता था कि वो आगे क्या करने वाला था? कैसे करने वाला था? पर इतना तो तय था कि अब उसे अकेले ही सफर करना था। अनामिका के बाद वो कभी भी किसी और को अपने साथ कदम से कदम मिलाकर चलने की इजाजत या हक़ नहीं देने वाला था। चैतन्य सारी जिंदगी बस अनामिका का ही रहने
वाला था... उसके कभी भी वापस लौट आने की उम्मीद के बिना। शायद उसे इसी तरह अपना प्यार निभाना था और वो निभाने वाला था। हर कीमत पर!

पैर जमी पर टिकाए हुए ही वो बिस्तर पर पीठ के बल लेट गया और छत पर मौजूद पंखे को हताशा से एकटक घूरता रहा। आखिरकार खुद से मजबूत बनने का अहद करता वो उठा और खिड़की की ओर बढ़ गया कि अब उस बंद कमरे में उसे घुटन होने लगी थी। पर्दे हटाकर जब उसने खिड़की के पट खोले... तो सामने नज़र जाते ही अंदर समेटी हुई सारी हिम्मत धुआं हो गई। अनामिका घर की तरफ आ रही थी। दमकता हुआ उसका चेहरा सुबह की लाली को भी मात दे रहा था। सब कुछ हासिल हो जाने की खुशी उसके होंठों पर बिखरी हुई थी। उसे देखकर चैतन्य की ऑ॑खें एक बार फिर से दर्द से भीग गईं। वो तेजी से पलटकर अंदर आ गया और बैठकर बदले हुए हालातों के बारे में सोचने लगा।

नहीं! अब वो यहॉ॑ हर्गिज नहीं रूकेगा। वो जल्द से जल्द यहॉ॑ से चला जाएगा और फिर कभी वापस नहीं लौटेगा। अनामिका के सामने वो खुद को बिखरने से नहीं रोक सकता था और वो जानता था कि अगर वो उसके सामने बिखरा तो.. अनामिका की खुशियॉ॑ फीकी रह जाऍ॑गी। वो उसके हक की कोई खुशी उससे नहीं छीनेगा। वो चला जाएगा। और यही सोचता हुआ वो अलमारी की ओर बढ़ गया। उसने ऊपर से अपना बैग निकाला और अलमारी से अपने कपड़े समेटने लगा। अभी उसने उन्हें उठाया ही था कि तभी दरवाजे पर दस्तक हुई। कमरे का दरवाजा खुला और एक आवाज आई।

"चैतन्य!"
चैतन्य के हाथ अपनी जगह पर रूक गए। एक पल को लगा कि उसके दिल ने धड़कना छोड़ दिया हो और अगले ही पल उसे अपनी धड़कनें अपने हलक़ में महसूस होने लगी। अपने होंठों को भींचकर उसने खुद को किसी तरह संभाला और हल्का सा गर्दन घुमाकर देखा। अनामिका दरवाजे पर खड़ी थी। शायद उसके दर्द पर अपनी मुहर लगाने आई थी। बिना कोई प्रतिक्रिया दिए वो एक बार फिर से अपने काम में लग गया।

****

अल्फ़ी से मिलने के बाद जब हल्की-फुल्की सी अनामिका घर पहुॅ॑ची, तो अंदर घुसते ही आशुतोष की आवाज ने उसे टोका और वो रूककर पीछे की ओर मुड़ी।

"अरे अनामिका! कहॉ॑ थी तुम?" आशुतोष ने उसके पास आते हुए कहा।

"जी! वहीं फव्वारे के पास! आपने ही तो बताया था.... कि अल्फ़ी उस तरफ है।" अनामिका ने उसे याद दिलाते हुए कहा।

"अच्छा! चैतन्य ने तो कहा कि तुम दोनों वहॉ॑ नहीं थे।" आशुतोष की आवाज में हैरानी मौजूद थी।

"चैतन्य!" उसके जिक्र से अनामिका के माथे पर बल पड़े थे।
"हॉ॑! तुम्हारे बाहर जाने के कुछ देर बाद ही वो तुम्हें ढूंढता हुआ नीचे उतरा था।

मैंने ही उसे फव्वारे की ओर जाने के लिए कहा था और वो गया भी था। पर अभी कुछ देर पहले ही वापस आया तो बोला कि तुम दोनों वहॉ॑ मिले नहीं। थोड़ा परेशान लग रहा था।" आशुतोष ने उसे जानकारी देते हुए कहा, जिस पर अनामिका के माथे की शिकन ढीली पड़ी।

"कहॉ॑ है वो?" अनामिका ने पूछा।

"ऊपर गया है। कमरे में होगा।" आशुतोष ने जवाब दिया।

"अच्छा!" कहते हुए उसने ऊपर की ओर एक नज़र डाली और फिर वो भी ऊपर की ओर बढ़ गई।

"अब इसे क्या हुआ?" आशुतोष ने एक बार फिर से हैरानी जताई।

"चैतन्य उस तरफ गया था। पर हम दोनों तो थे वहॉ॑... फिर उसने झूठ क्यों कहा?" इस सवाल का जवाब तलाशते हुए अनामिका को याद आया कि थोड़ी देर पहले ही वहीं पर अल्फ़ी ने उसे किस किया था और आगे बढ़ते उसके कदम झटके से रूके थे।

"उसने देख तो नहीं लिया वो सब! हे भगवान! अब उस बेवकूफ को सब एक्सप्लेन करना पड़ेगा।" घबराकर बड़बड़ाती हुई अनामिका तेजी से उसके कमरे की ओर बढ़ी। कमरे के सामने पहुॅ॑चकर सबसे पहले उसने उस दरवाजे को घूरा और एक बार वो सब सोचा... जो वो उससे कहने वाली थी।
इसके बाद उसने एक गहरी सॉ॑स ली और फिर दरवाजे पर दस्तक दी। इसके बाद वो दरवाजा खोलते हुए अंदर की ओर गई और कमरे में नज़र घुमाने के बाद उसे अलमारी के पास पाया।
"चैतन्य!" उसने पुकारा।

चैतन्य ने गर्दन हल्का सा घुमाकर उसे देखा और फिर अलमारी में घुस गया।

"क्या कर रहे हो? बिजी हो क्या? मुझे कुछ जरूरी बातें करनी थी तुमसे।" अनामिका ने कमरे के अंदर आते हुए कहा।

"कहो!" चैतन्य ने अपने दिल और लहजे दोनों को मजबूत करते हुए कहा। हाथ बदस्तूर अपना काम करते रहे।

"अ... दरअसल बात ये है कि..." कहते-कहते अनामिका रूकी थी। वो सामने थी और चैतन्य अभी भी कहीं और उलझा हुआ था। ऐसा तो पहले कभी भी नहीं हुआ। यानि कि वो नाराज़ था। और ये ख्याल आते ही अनामिका को अपना गला सूखता हुआ महसूस हुआ, जहॉ॑ सारे अल्फ़ाज़ फॅ॑स कर रह गए थे।

"कुछ कह रही थी तुम!" चैतन्य ने उसकी ओर देखे बिना अपने कपड़े बैग में रखते हुए कहा।
वो काफी हद तक खुद को इस तूफान को झेलने के लिए तैयार कर चुका था।

"तुम कहीं जा रहे हो?" अनामिका ने उसके बैग और फिर अलमारी की ओर दुबारा मुड़ चुके चैतन्य की ओर हैरानी से देखते हुए कहा।

"हॉ॑! काम खत्म... तो वापस जा रहा हूॅ॑।" चैतन्य ने सपाट से लहजे में कहा।

"मुझे लगा था कि तुम कुछ दिन और रूकोगे।" अनामिका ने कहा।
ये सुनते ही कपड़े उठाते हुए चैतन्य के हाथ उन कपड़ों पर कस गए। गुस्से की एक लहर उसके होंठों को भींच गई। मगर उसने खुद पर काबू ही रखा।

"रूकने की कोई और वजह रह नहीं गई है मेरे पास।" चैतन्य ने कहा और फिर पहली बार पूरी तरह से उसकी ओर मुड़कर देखा।

अनामिका ने उसकी सुर्ख़, थकी हुई बेजान सी ऑ॑खों को देखा, तो एक बार फिर से उसका दिल हलक़ में आकर अटक गया। वो एकटक उसे ही देख रही थी। चैतन्य ने अपनी दर्द से बोझिल ऑ॑खें उस पर से हटाईं और फिर से अपने काम पर लग गया। अनामिका हिम्मत करके उसकी ओर बढ़ी।

"चैतन्य! देखो मैं एक्सप्लेन कर सकती हूॅ॑। मेरी बात सुनो!" अनामिका ने तेजी से उसकी

ओर बढ़ते हुए कहा।

"जरूरत नहीं है।" चैतन्य ने भी दो टूक कहा।

उसकी ये बात सुनकर अनामिका के चेहरे की नसें तन गईं और वो तेजी से उसके पास जाकर उसे झटके से अपनी ओर मोड़ते हुए बोली, "क्या मतलब है कि जरूरत नहीं है?"

चैतन्य ने उसके तने हुए चेहरे को दो पल को देखा और फिर अपनी बांह पर कसे उसके हाथ को नर्मी से हटाते हुए बोला, तुम्हें एक फैसला लेना था.. तुमने ले लिया। बात खत्म!"

अनामिका ने अपनी ऑ॑खों में हैरानी और माथे पर बल डालते हुए उसकी ओर देखा। वो उसके आगे आती हुई बोली, "और इस बात का मतलब
क्या है?"

"यही कि मैंने तुम्हारे हर फैसले में तुम्हारे साथ रहने का वादा किया था। अब सवाल करके अपने लफ़्ज़ों को शर्मिन्दा नहीं कर सकता।" चैतन्य ने भारी दिल से ईमानदार जवाब देते हुए कहा।

"तो फिर ये चेहरा क्यों सुता रखा है?" अनामिका ने उसके चेहरे की ओर अपनी हथेली उठाते हुए कहा।

"क्योंकि इंसान हूॅ॑ मैं! तकलीफ़ होती है मुझे! पर तुम चिंता मत करो। ठीक हो जाऊॅ॑गा मैं। तुम खुश रहो... बस इतना ही काफी है मेरे लिए।" तेज लहज़े में कहते हुए चैतन्य की आवाज आखिर तक आते-आते नर्म पड़ गई। उसने अपने हाथ में पकड़े हुए सामान को बैग में फेंका और थका हुआ सा बिस्तर पर लगभग गिरते हुए बैठ गया। उसकी खस्ता हालत देखकर अनामिका भी उसके पास आकर बैठ गई।

"अच्छा! तुम्हें देखकर तो ऐसा नहीं लग रहा है। वादे निभाने इतने आसान नहीं होते चैतन्य! पहले अपनी हालत खुद देखो! फिर बोलो!" अनामिका ने जैसे उसे आईना दिखाते हुए कहा। उसकी बात सुनकर चैतन्य ने उसकी ओर कुछ देर तक ग़ौर से देखा, जैसे उसके शब्दों को तौल रहा हो। फिर वो उठा और उसके सामने अपने घुटनों पर बैठकर उसके दोनों हाथों को पकड़ लिया। अनामिका की नज़रें उसी पर थीं।

"तुम्हें क्या लगता है? चमगादड़ ही अपना वादा निभा सकता है। मैं भी निभा सकता हूॅ॑। मैं वादा करता हूॅ॑ कि... कभी तुम्हें याद करके नहीं रोऊॅ॑गा। कभी भी ऑ॑सू नहीं बहाऊॅ॑गा। पक्का वाला प्रॉमिस! बस आज... आज के लिए... रोने की इजाजत दे दो। प्लीज़!" चैतन्य ने अपनी सैलाब समेटी हुई सुर्ख ऑ॑खों से उसकी ओर देखते हुए कहा और फिर उसकी गोद में अपना चेहरा छिपाकर फफक-फफक कर रो पड़ा। अनामिका ने
भी उसे रोने दिया। वो भी चाहती थी कि चैतन्य अपने अंदर का दर्द बाहर निकाल दे। वो बस नर्मी से उसके बालों में उंगलियॉ॑ फेरती रही। कुछ देर बाद चैतन्य ने अपनी नाक सुड़कते हुए उसकी गोद से अपना सिर ऊपर उठाया।

"ठीक हो?" अनामिका ने झुककर उसके चेहरे को देखते हुए पूछा।

"हूं! ठीक तो होना ही है।" चैतन्य ने गहरी साॅ॑स लेकर हथेलियों से अपने चेहरे को पोंछते हुए कहा।

"क्या हालत कर ली है? कम से कम मुझे बोलने तो दिया होता!" अनामिका ने नाराज़गी जताते हुए कहा।

"तुम्हारे बोलने के बाद भी रोता ही। तो पहले ही रो लिया। एक ही बात है।" चैतन्य ने सिर झटकते हुए उसकी ओर देखकर कहा।

"जरूरी तो नहीं! पर तुम्हें पता कैसे चला मेरा फैसला?" अनामिका ने हथेली पर अपना चेहरा रखकर कोहनी को अपने घुटनों के पास टिकाते हुए अपने दोनों भौंह चढ़ाकर पूछा।

उसके सवाल पर चैतन्य ने ख़ासी चिढ़ के साथ उसकी ओर देखा और उतनी ही कुढ़न के साथ बड़ी ही मुश्किल से बोला, "कुरेद रही हो मुझे! देखा था... तुम दोनों को!"

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible].... [illegible] [illegible] [illegible].... [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], "[illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"और कोई जवाब चाहिए!" उसकी बाहों में सिमटे हुए ही अनामिका ने पूछा।

"उंहूं!" चैतन्य ने इनकार के साथ हुंकारी भरी।

"पर मुझे चाहिए!" अनामिका की आवाज आई। उसके सिर पर अपना चेहरा टिकाए हुए चैतन्य ने झटके से अपनी ऑ॑खें खोली और नज़रें झुका कर नीचे की ओर देखा तो वो अपनी नाराजगी भरी नज़रों से उसे ही देख रही थी। उसे इस तरह खुद को देखता पाकर चैतन्य के दिल में खटका सा हुआ।

"क्या?" चैतन्य ने मुॅ॑ह से बेसाख्ता निकला।

और ये सुनते ही अनामिका ने उससे दूर होते हुए उसके सीने को अपने दोनों हाथों से धकेला, जिससे चैतन्य तेजी से लड़खड़ाते हुए पीछे हुआ था।

"अरे!" वो बोला।

"अरे क्या? अब तुम जवाब दो कि... ये सब क्या है?" अनामिका ने उसके आधे पैक हुए बैग की ओर इशारा करते हुए कहा।

उस बैग की ओर नज़र जाते ही चैतन्य बुरी तरह से झेंप गया, पर अपनी
उस झेंप को छिपाते हुए बड़ी ही कुशलता से बोला, "हॉ॑ तो... मुझे लगा कि तुम मुझे छोड़.."

"इसलिए तुम पहले ही छोड़कर जा रहे थे। बिना कुछ पूछे... बिना कुछ बोले। है ना!" अनामिका भड़कते हुए बोली।

"तो तुम्हें क्या लगता है? वो सब देखने के बाद मैं कुछ और सोच सकता था!" चैतन्य ने भी ऐतराज जताया।

"तो बात करनी थी ना चैतन्य! सवाल करने थे मुझसे कि मैंने ऐसा क्यों किया? मॉ॑-यश जी की कहानी और हर्षित-देवेन्द्र की कहानी जानने के बाद भी तुम ये नहीं समझे कि रिश्तो में बात करना कितना जरूरी होता है। जिन रिश्तों में संवाद नहीं होते वहॉ॑ अक्सर गलतफहमियॉ॑ घर कर लेती हैं और जो जंग की तरह उस रिश्ते की नींव को खा जाती हैं। प्लीज़! आगे से कभी ऐसा मत करना।" अनामिका ने अपनी ऑ॑खें पुरनम करते हुए कहा।

"नहीं! कभी नहीं!" चैतन्य ने उसकी ऑ॑खें पोंछते हुए कहा।

"अगर किया तो टांगें तोड़ दूंगी तुम्हारी। याद रखना! ये क्या बात-बात पर जाने की बात करते हो। कुछ दिन पहले आशुतोष जी के नाम पर छोड़कर जा रहे थे.... आज अल्फ़ी के नाम पर छोड़कर जा रहे थे। मतलब कि कल को हमारा झगड़ा हुआ और दो दिन बात नहीं की तुमसे.... और ऐसे समय में मुझे किसी और से हॅ॑स कर बातें करते देखा, तो तुम उसमें भी बैग उठा कर चुपचाप चल दोगे।" अनामिका की शिकायतें बदस्तूर जारी थीं।

"ये क्या बात हुई? दो दिन बात नहीं करोगी! ऐसा थोड़ी ना होता है!" चैतन्य ने उसकी बात हवा में उड़ाते हुए कहा।

"हॉ॑ नहीं होता। पर तुम्हारी हरकतें ऐसी ही रहीं.. तो ये भी हो सकता है।"
अनामिका ने उसे चेतावनी देते हुए कहा, जिससे चैतन्य झुंझलाया था।

"चुप कर मेरी मॉ॑!" कहते हुए चैतन्य ने उसे अपने पास खींचा और उसके होंठों पर झुकते हुए उसे चुप करा गया। अभी वो दोनों ही जज़्बों की गहराई में उतरते... उससे पहले ही झटके से दरवाजा खुला और...

"चैतन्य! तुम्हें आशुतोऽऽऽऽष..."

आवाज सुनते ही दोनों का ही ध्यान दरवाजे की ओर गया, जहॉ॑ वरूण अपने चश्मे के पीछे से

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

[illegible], [illegible]"
"[illegible]!"

[illegible]

"[illegible]! [illegible]"

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]..." [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]!

[illegible]

[illegible]
"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]" [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

"पर..." अनामिका ने कहना चाहा।

"नहीं अनामिका! वो सही कह रही है।" अनामिका की बात काटते हुए आशुतोष ने उसे टोका, जिस पर अनामिका ने बुझी हुई ऑ॑खों से परिधि की ओर देखा। एक लंबा समय उसके साथ बिताने के बाद उसे परिधि से लगाव सा हो गया था, मगर आशुतोष का कहना भी सही था। जिस तरह वो और चैतन्य अतीत में नहीं रूक सकते थे, उसी प्रकार परिधि को भी
वापस जाना ही था।

"पर फिलहाल अभी समस्या मुकुल को वापस लेकर आने की है।" सृष्टि ने सबको याद दिलाते हुए कहा।

"वो ठीक है!" चैतन्य ने हैरानी भरी खुशी जताते हुए कहा।

"हॉ॑! पर उसे बाहर कैसे निकालें... यही समझ में नहीं आ रहा है।" सृष्टि ने कहा।

"समस्या क्या है?" सवाल अनामिका ने किया।

"हवा का दबाव बहुत ज्यादा है। अगर हममें से कोई कालछिद्र के पास उसकी मदद के लिए जाए तो वो भी उसके अंदर चला जाएगा और मुकुल बिना किसी मदद के बाहर नहीं आ सकता। सृष्टि उस वायुदाब को कम तो कर सकती है, लेकिन पूरी तरह बंद नहीं कर सकती। यही समस्या है।" आशुतोष ने जवाब दिया।

"हम्म! मतलब कि उसे खींच कर बाहर निकालना है। ओके! ये मैं कर सकता हूॅ॑। पर मुकुल को कैसे पता चलेगा कि हम उसकी मदद करना चाहते हैं। अंदर से कुछ और भी तो बाहर आ सकता है!" चैतन्य ने एक और समस्या सामने रखी।

"अल्फ़ी ने बताया कि उसने खुद को कालछिद्र के मुख्यद्वार के पास ही सुरक्षित रखा है।
उसके अंदर जाते ही वो छिद्र बंद हो गया, तो उसे सर्वाइव करने में परेशानी नहीं हुई।
अल्फ़ी उसे खबर कर दी है कि हम उसकी मदद करने वाले हैं, तो वो आसपास ही है और अकेला है। हमारी मदद के इंतजार में!" आशुतोष ने कहा।
"अल्फ़ी ने! अल्फ़ी को कैसे पता चला?" सृष्टि ने पूछा।

"वो नहीं पता! पर इतना जानता हूॅ॑ कि वो हमारा सबसे बड़ा मददगार रहा है। इसलिए मुझे उस पर पूरा यकीन है।" आशुतोष ने जवाब दिया।

"सही कह रहे हैं आप! बेचारा! अपने खाली रह गए हाथों से ही उसने किसकी मदद नहीं की है! ही इज़ अ वैरी वंडरफुल पर्सन!" वरूण ने अल्फ़ी की तारीफ करते हुए कहा।

चैतन्य ये सुनकर अनामिका की ओर मुड़ा। अनामिका ने भी शर्मिंदगी से उसकी ओर देखा। उन दोनों को ही ऐसा लग रहा था कि जैसे उनके ऊपर किसी ने पहाड़ रख दिया हो। मगर एक-दूसरे से नजरें फेरते हुए उन दोनों ने खुद को संभाला।

"तो काम शुरू करें?" चैतन्य ने संभली हुई आवाज में कहा।

"हॉ॑! करना क्या है?" सृष्टि भी हरकत में आते हुए बोली।

"कुछ नहीं तुम्हें कालछिद्र खोलना है और उसके हवा के दबाव को जितना कम कर सकती हो.... करना है। मैं उसके सामने अपनी शक्तियों की मदद से उससे ज्यादा शक्तिशाली वैक्यूम पॉवर उत्पन्न करूंगा, जिसकी मदद से मुकुल बाहर आ जाएगा।" चैतन्य ने सृष्टि को अपनी योजना समझाते हुए कहा।

"ओके! समझ गई।" सृष्टि ने पोजिशन लेते हुए कहा।

इसके बाद चैतन्य के कहने पर सभी ने हॉल का सारा फर्नीचर और सामान विपरीत दिशा में ले जाकर रखा और बाकी सभी लोग भी वहीं इकट्ठा हो गए।
"चलो सृष्टि! खोलो!" कहते हुए चैतन्य सृष्टि के ठीक पीछे जाकर खड़ा हो गया और उसके अगल-बगल से अपने दोनों हाथ आगे कर दिए। सृष्टि की पीठ उसके मजबूत सीने से टकराई तो एक पल के लिए वो असहज हो गई। अपने सूखते हुए होठों पर ज़बान फेरते हुए उसने अपने दोनों

[illegible], [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [

सीढ़ियों के पास मिली।

"यहॉ॑ क्या कर रही हो?" मुकुल उसके पास बैठते हुए बोला।

"कुछ नहीं!" परिधि ने सिर झुकाकर कहा।

"सृष्टि ने बताया कि तुम वापस जा रही हो।" मुकुल ने उसे कुरेदा।

"हॉ॑! ये मेरी जगह नहीं है।" परिधि बोली।
"हम्म!" मुकुल ने हुंकारी भरी।

"तुम ठीक हो।" परिधि ने उसकी ओर देखकर पूछा।

"हॉ॑! अब बेहतर हूॅ॑!" मुकुल ने कहा।

"तुमने बहुत बहादुरी दिखाई। तुम्हारे पिता को तुम पर नाज होता।" परिधि ने तारीफ भरे लहजे में कहा। वहीं अपने पिता के जिक्र से मुकुल एक बार फिर भावुक हो गया। परिधि ने एक बार फिर से उसके चेहरे पर गम की परछाईयॉ॑ देखी तो उसने लपककर उसका हाथ पकड़ लिया।

"मुकुल! जो होना था। वो नियति थी। उसके बारे में सोच-सोच कर तुम उसे बदल नहीं सकते। खुद को आजाद कर दो इस धिक्कार से... कि तुम उनकी मदद नहीं कर पाए। तुम बहुत अच्छे बेटे हो और ये तुमने साबित भी किया है। अपने अच्छे कामों से तुम हमेशा अपने दिल में उन्हें जिंदगी देते रहोगे, जहॉ॑ वो कभी भी नहीं मर सकते।" परिधि ने उसके हाथों को कसकर पकड़ते हुए कहा।

मुकुल ने अपनी भरी हुई ऑ॑खों से उसकी ओर देखा। कुछ पल में ही वो लड़की उसे दुनिया की सबसे समझदार लड़की लगने लगी। मुकुल ने उसकी ऊंगलियों को अपनी मुट्ठियों में कहा और बोला, "जाना जरूरी है क्या? मत जाओ!"

उसकी बात सुनकर परिधि मुस्कुराई और बोली, "जरूरी है! तभी तो जा रही हूॅ॑। वैसे भी तुमसे दो सौ साल बड़ी हूॅ॑ मैं।"

उसकी बात सुनकर पहले तो मुकुल के होंठ मुस्कुराए और फिर अगले ही पल उसने आगे बढ़कर परिधि को अपनी बाहों में भर लिया।
"मैं तुम्हें कभी नहीं भूलूंगा।" मुकुल भावुक होते हुए बोला।

"मैं भी!" परिधि ने उसकी पीठ को सहलाते हुए अपनी कॉ॑पती आवाज में कहा। नाक सुड़कते हुए मुकुल उससे अलग हुआ। वो कुछ कहना चाहता था, मगर किसी के दौड़ने की आवाज ने उन दोनों को ही चौंकाया। घर की ओर देखने पर उन्हें गीता बदहवास सी बाहर दौड़कर आती दिखाई दी। वो दोनों अभी उसे देखकर हैरान ही हुए थे कि तभी बाकी लोग भी गीता के पीछे बाहर निकले।

"गीता रूको! कहॉ॑ जा रही हो?" वरूण पीछे से चिल्लाता हुआ आया। मगर सबको अनसुना करते हुए गीता सामने पोर्च में जाकर खड़ी हो गई और बाहर जाने वाले रास्ते की ओर देखने लगी।

"क्या देख रही हो गीता?" वरूण ने एक बार फिर से उससे सवाल किया, मगर वो एकटक सामने की ओर देखती रही। उसकी ऑ॑खें आंसुओं से भर गई थीं, मगर अभी भी अपने हद में ही थीं। कोई भी उसकी इस हरकत को समझ नहीं पा रहा था और तभी उन सभी को सामने से डॉ॑ अनंत की कार आती दिखाई दी। उस कार को देखते ही गीता और भी भावुक हो गईं और गहरी-गहरी साॅ॑सें लेने लगी।

"गीता! क्या हुआ तुम्हें?" वरूण उसे संभालते हुए बोला। जवाब में उसके सीने से चिपकी हुई गीता उस कार की ओर ऊंगली दिखाकर सुबकने लगी थी। जल्द ही कार उन सबके सामने आकर रूकी। ड्राइविंग सीट से डॉ. अनंत उतरे। वो भी बहुत ही भावुक दिखाई दे रहे थे। अंदर पिछली सीट पर कोई औरत बैठी हुई थी, जिसका चेहरा किसी को दिखाई नहीं दे रहा था। डॉ. अनंत ने पिछली सीट का दरवाजा खोला और वो औरत बाहर निकल आई। उसे देखते ही वरूण और अनामिका की ऑ॑खें हैरत से लगभग फट ही गई। वहीं गीता उसे देखते ही उसकी ओर भागकर उस औरत से लिपट गई।

"ये कौन हैं?" चैतन्य ने भौंचक खड़ी अनामिका से पूछा।

अनामिका ने अपनी बढ़ी हुई धड़कनों के बीच कहा, "तृषा आंटी! वरूण और गीता की मम्मी!"

"जिन्हें वो एडवर्ड दस साल पहले ले गया था?" चैतन्य ने सवाल किया, जिस पर अनामिका ने हॉ॑ में सिर हिलाया। अब तो हर कोई भारी अचंभे में खड़ा रह गया। पिछले दस साल से जिनकी मौत पर परिवार वालों को अभी तक सब्र नहीं आया था, वो बिल्कुल सही-सलामत उनके सामने खड़ी थीं।

डॅ. अनंत आगे बढ़कर वरूण के पास आए और उसके कंधे पर हाथ रखकर जज़्बाती लहजे में बोले, "अल्फ़ी ने पिछले दस सालों से अपनी हिफाजत में रखा था। सुबह उसने मुझे खबर दी, तो मैं तृषा को लेने चला गया। पता नहीं उसका अहसान कैसे उतारेंगे हम?"

और ये सुनते ही वरूण भी अपनी मॉ॑ की ओर भागा और उनसे लिपट गया। एक परिवार जो दुनिया की नज़रों में दस साल पहले बिखर गया था, आज एक बार फिर से खुशियों के गुलदस्ते में बंध गया था। काली शक्तियों के जाते ही खुशियों का शुभागमन हो चुका था।

कहानी जारी रहेगी अगले भाग में -

तृषा के आते ही घर में जैसे रौनकें लौट आईं थीं। वो पूरी तरह से स्वस्थ थी। उसने बताया कि जब पिशाच उसे अपने साथ ले गया था, तब अल्फ़ी ने उसे बचाया और सबसे छिपाकर रखा। वो हमेशा ऐसा ही करता था। हर दस साल में वो उस लड़की या औरत को मौत के चंगुल से बचाकर अपने पास महफूज रखता था। उनमें से ज्यादातर लड़कियॉ॑ परिवार द्वारा ठुकराई हुई थीं, इसलिए कोई भी घर वापस नहीं जाना चाहती थीं।

अल्फ़ी ने बकायदा एक ट्रस्ट बनाकर उन सभी के जीवन-यापन की व्यवस्था कर दी थी, जहॉ॑ वो अपने लिए दो वक्त की रोटी कमा लेती थीं और तन ढकने के लिए कपड़ों का बंदोबस्त कर लेती थीं। दुनिया के लिए वो एक चैरिटी ट्रस्ट था, जिसका ट्रस्टी विदेश में रहता था और यहॉ॑ का सारा इंतजाम वहॉ॑ की औरतें ही देखती थीं। पिछले दस साल से तृषा भी इन सबका एक महत्वपूर्ण हिस्सा थी। कह सकते हैं कि बसेरे का एक नया संस्करण था, जहॉ॑ औरतें सच में महफूज थीं। तृषा को भी अल्फ़ी ने सबकी जानकारी के बाहर वहीं छिपाकर रखा था और एडवर्ड की मौत के साथ ही तृषा की घर वापसी सुनिश्चित कर दी।

उधर पूरे दस सालों के बाद सबने गीता को पहली बार इतना भावुक और बाद में इतना खुश देखा था। वो हॅ॑स रही थी... खिलखिला रही थी। आज पहली बार सबने महसूस किया कि अपने अंदर कितना कुछ छिपाकर जी रही थी वो। उसकी वजह से मॉ॑ के चले जाने के अपराध से ग्रस्त उसका मन आज खुद को उस कैद से रिहा कर चुका था। अब वो भी खुद को सबकी तरह एक सामान्य व्यक्तित्व मान रही थी, जो अपने हर जज़्बात जाहिर कर सकता था।

थोड़ी ही देर बाद सभी खाने के टेबल पर नाश्ते के लिए बैठे थे। डॉ. अनंत
ने एक बार फिर से उस भरे हुए टेबल को देखा, जो तृषा के वापस लौटने से फिर से आबाद नज़र आ रहा था। डॉ. अनंत ने एक बार फिर से अल्फ़ी के लिए दिल से दुआऍ॑ मांगी। वही तो था, जिसने किसी के कहे बिना ही उनकी हर कदम पर मदद की। उनका दिल अल्फ़ी के लिए इज्जत से लबालब भर गया था।

वहीं उस टेबल पर दो लोग ऐसे भी थे, जो अल्फ़ी के बारे में सोचकर और भी दुखी हुए थे। पर वो दोनों भी जानते थे कि इसमें वो कुछ नहीं कर सकते थे। नाश्ते की प्लेट में झुके हुए चैतन्य ने अनामिका की ओर देखा, तो उसका ध्यान भी चैतन्य की ओर ही था।

"तुम परिधि हो ना!" तृषा ने परिधि की ओर इशारा करते हुए कहा, जिस पर सभी ने हैरानी से तृषा की ओर देखा।

"जी!" परिधि ने जवाब दिया ।

"और तुम चैतन्य! है ना!" तृषा ने एक बार फिर से सभी को चौंकाया।

"जी!" हैरत में डूबे हुए चैतन्य ने जवाब देने के बाद सभी के चेहरों पर नज़र दौड़ाई।

"तुमने इन दोनों को कैसे पहचाना? तुमने तो इन्हें पहली बार ही देखा है।" डॉ. अनंत ने पूछा।

"जहॉ॑ दस साल बिताए वहॉ॑ इन दोनों को तस्वीरें देखी थी मैंने।" तृषा ने एक और हैरत से भरा जवाब दिया।

"हमारी तस्वीर!" परिधि और चैतन्य दोनों ही इस खुलासे से ख़ासा चौंके थे।
"हॉ॑! उस ट्रस्ट की पहली चेयरपर्सन मिस अमांडा जॉनसन के सामान में तुम दोनों की तस्वीरें देखी थीं। उन्होंने ही बनाई थीं और उसमें तुम दोनों का नाम लिखा हुआ था। अल्फ़ी ने सब कुछ बताया था तुम दोनों के बारे में। तुम्हारी समय यात्रा के बारे में। कुछ दिन पहले ही। मैं सच में बहुत उत्साहित थी तुम दोनों से मिलने के लिए। पर वो तुम दोनों का नाम लेते समय ज्यादा खुश दिखाई नहीं देता था।" तृषा ने जानकारी साझा करते हुए कहा। तृषा की बातें सुनकर चैतन्य और परिधि ने एक-दूसरे की ओर देखा। एक ओर अमांडा के दिल के जज़्बातों से बाखबर परिधि की पलकें उसके ख्याल से लड़खड़ाई थी... वहीं दूसरी ओर चैतन्य को अमांडा के पास अपनी तस्वीर होने का औचित्य समझ में नहीं आ रहा था।

"पर मेरी तस्वीर?" चैतन्य ने पूछा।

"हम्म! साथ की एक बुजुर्ग ने बताया था कि मिस अमांडा के अनुसार उन्होंने अपनी जिंदगी में बस दो ही ईमानदार पुरुष देखे थे। एक अल्फ़ी और दूसरे तुम! शायद उन्हें तुम दोनों की तरह और कोई नहीं मिला नहीं, इसलिए वो सारी उम्र अविवाहित ही रही। अल्फ़ी तो हमेशा ही उनके साथ था, पर तुम वापस आ गए। तो उस तस्वीर में अपनी उसी याद को रखा था... उन्होंने!" तृषा ने बताया।

"ओह!" चैतन्य ने कहा और इसी के साथ उसकी नज़रों में उस नाज़ुक सी नरमदिल लड़की का चेहरा कौंध गया और पहली मुलाकात भी।(भाग- 112) अमांडा की.... की हुई मदद की वजह से ही वो सब आपकी लड़ाई जीतने में कामयाब हो सके थे। उसी ने ही उसे उस जादुई चाबी के बारे में बताया था, जिसकी वजह से उन्होंने रास्ते के हर बंद ताले खोले। तांत्रिक सिद्धनाथ जी से मुलाकात भी उसी की वजह से मुमकिन हो पाई थी। उसके होंठों पर एक मुस्कुराहट उतरी।
"पर अमांडा वहॉ॑ क्यों रहती थी?" सवाल परिधि ने किया, जिस पर तृषा ने उसकी ओर देखा।

"क्योंकि वो पहली लड़की थी, जिसे अल्फ़ी ने एडवर्ड से बचाया था। मेरी और दूसरी लड़कियों की तरह! " तृषा ने खुलासा करते हुए कहा।

"क्या? पर क्यों? आपको किसने बताया?" चैतन्य ने लगभग उछलते हुए पूछा।

"वो तो पता नहीं। पर उनके बारे में जो भी मोटी-मोटी बातें थीं वहॉ॑ सबको पता थीं। बस इतना पता है कि किसी तरह की सजा मिली थी उनको, जिससे अल्फ़ी ने उन्हें बचाया था। ख़ैर... जो भी हो। उन्हें जानने वाले कहते हैं कि वो एक बहुत ही सूकून और इत्मीनान से भरी हुई शख्सियत थीं, जिनकी छाया में अपनों की ही सताई हुई लड़कियॉ॑ सारे दर्द भूल जाती थीं।" तृषा ने उपलब्ध जानकारी साझा करते हुए कहा।

इसके बाद सभी ने चुपचाप नाश्ता किया। रात की लड़ाई के बाद सुबह भी जज़्बाती रूप से थकान भरी हो गई थी। सभी को अब भी आराम की सख़्त जरूरत थी। इसलिए सभी अपने-अपने कमरों में चले गए।

वहीं सबसे अलग परिधि बालकनी में अकेली खड़ी अपने ही ख्यालों में गुम थी। अपनी भूली हुई यादों के वापस आने के बाद भी वो अमांडा को पूरी तरह से भूली हुई थी। आज तृषा के जिक्र से वो अतीत के उन पन्नों में वापस लौटी।(भाग-137) किस तरह अमांडा ने परिधि को एडवर्ड की क़ैद से आज़ाद कराया था। वो परिधि की बुजदिली का वो आखिरी क्षण था जब उसने पहली बार लड़ने की हिम्मत दिखाई थी। वो अमांडा ही थी, जिसकी वजह से वो आज जिंदा थी। उसे याद आया कि जब वो अपनी जान बचाने के लिए वहॉ॑ से भागी, अमांडा अकेली हथियारबंद

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

प्राप्त कर लेते हैं और कई नहीं कर पाते। अगर हासिल ना कर पाओ... तो भी तुम्हारा प्रेम... प्रेम ही रहता है। जो आपके हृदय को निश्चल और पवित्र बनाता है। प्रेम सूकून होता है... उम्मीद होता है। वो कभी भी श्राप नहीं हो सकता... तो फिर प्रेम करने वाला अभिशप्त कैसे हुआ?" अनामिका ने कहा।

"तो फिर अल्फ़ी के बारे में क्या कहोगी?" चैतन्य ने पूछा।

"चैतन्य! अल्फ़ी प्रेम की उस पराकाष्ठा पर है, जहॉ॑ आपका प्रेम आपके हर कदम पर आपको आजमाता है और यही आजमाईश बेचैनी बन जाती है। जो इस बेचैनी को जीत ले... वो प्रेम की उस गहराई में उतर जाता है, जहॉ॑ प्रेम स्थूल ना होकर आत्मिक बन जाता है और जिस दिन अल्फ़ी ने ये समझ लिया... उसे सूकून मिल जाएगा।" अनामिका ने किसी दार्शनिक की तरह कहा।

"तो क्या उसकी माया उसकी जिंदगी में लौट नहीं सकती?" चैतन्य ने सवाल किया।

"कहीं एक बार फिर से... तुम्हारा मतलब मुझसे तो नहीं!" अनामिका ने उसकी ओर संदेह भरी नज़रों से देखते हुए कहा।

"बिल्कुल भी नहीं! देखो तुम्हारे अंदर माया की आत्मा का बस एक छोटा
सा अंश है। तो फिर उसके बाकी के हिस्से भी कहीं ना कहीं होंगे। तो बात यही है कि वो कहॉ॑ हैं? अगर वो मिल जाऍ॑ तो शायद माया लौट सकती है।" चैतन्य ने एक नई उम्मीद का हाथ पकड़ते हुए कहा।

"तो फिर उस आत्मा के लिए एक शरीर की भी तो जरूरत होगी और मुझे नहीं लगता कि अल्फ़ी मेरे बाद और किसी की ओर नज़र भी उठाएगा। उसने तो मुझे भी शायद इसीलिए स्वीकारा है क्योंकि.... उसकी माया के अहसासों के जीवित रहने के लिए ये जरूरी था।" अनामिका ने चैतन्य की बात काटते हुए कहा।

"तो क्या वो हमेशा ऐसे ही अनंतकाल तक... इसी तरह सुलगता रहेगा... तड़पता रहेगा।" चैतन्य ने फिक्र भरी आवाज में कहा।

"चैतन्य! अगर तुम्हें उसकी फिक्र है, तो उसके लिए दुआ करो कि उसे सुकून मिल जाए। इसके अलावा तुम उसके लिए कुछ और नहीं कर सकते। वो एक पिशाच है। छद्म पिशाच नहीं.... एक शुद्ध पिशाच। जिसका जीवन अनंत काल तक चलता रहेगा। तो अगर तुम उसके जीवन में प्यार चाहते हो तो उसकी संगिनी को भी उसी की तरह अनंत काल की आयु प्राप्त करके आना होगा और हममें से कोई भी ऐसा नहीं कर सकता। वो जीवन-मृत्यु से परे है। इसलिए मैं चाहती हूॅ॑ कि अल्फ़ी आत्मिक प्रेम में ही सूकून ढूंढ ले।" अनामिका ने चैतन्य को समझाते हुए कहा।

"हम्म! कह तो सही रही हो तुम।" चैतन्य ने उसकी बातों से सहमत होते हुए कहा।

"और रही बात अमांडा और परिधि की.. तो उनके अंदर के प्रेम ने ही उन्हें उनके जीवन को जीने का एक नया मौका दिया। एडवर्ड इतना शातिर था... मगर अमांडा और परिधि को नुक़सान नहीं पहुॅ॑चा पाया। उसकी नफ़रत.... यहीं तो प्रेम से हार गई। दो सौ सालों के बाद भी वह अपने
बुरे इरादों में कामयाब नहीं हो सका क्योंकि अल्फ़ी के प्रेम की फुहारें उस एडवर्ड के नफरत की आग से कहीं ज्यादा असरदार थीं। अभिशप्त अल्फ़ी नहीं... एडवर्ड और उसके जैसी सोच वाले लोग होते हैं... जो खुद भी इस नफ़रत की आग में जलते हैं और दूसरों को भी जलाते हैं। समझे!" अनामिका ने उसके बालों को बिगाड़ते हुए बहुत ही प्यार से कहा।

"अरे यार!" चैतन्य ने चिढ़कर उसका हाथ पकड़ा था। अभी वो आगे कुछ और बोलता उससे पहले ही परिधि, अनामिका को आवाजें देती हुई तेजी से वहॉ॑ पहुॅ॑ची। दोनों का ही ध्यान उस ओर हुआ था।

"अनु दी!" उसने बहुत ही बेसब्री से अनामिका को पुकारा।

"क्या हुआ परिधि? परेशान लग रही हो!" अनामिका ने अपने माथे पर बल डालते हुए फिक्र से पूछा।

"हॉ॑ दी! परेशानी की ही बात है। मेरे कपड़े आपके पास हैं क्या?" परिधि ने उतनी ही बेचैनी से पूछा।

"कौन से कपड़े?" अनामिका ने पूछा।

"वहीं कपड़े, जिन्हें पहने हुए मैं आपको और वरूण भैया को मिली थी।" परिधि ने उसे समझाते हुए कहा।

"वो कपड़े! होंगे अलमारी में कहीं! क्यों? तुम्हें वो फटे हुए कपड़े क्यों चाहिए?" अनामिका ने याददाश्त पर जोर डालते हुए पूछा।

"बस चाहिए दीदी! आप आइए ना! मुझे ढूंढ कर दीजिए।" परिधि ने अनामिका का हाथ पकड़ते हुए कहा।
"क्या हुआ परिधि? अभी उसकी इतनी क्या ही जरूरत है?" अनामिका ने कहा।

"दीदी! आज रात मुझे वापस चले जाना है। पर एक काम... एक जिम्मेदारी जो मैं समय की नदी के उस पार से साथ लेकर आई थी, जाने से पहले उसे पूरा करना है। प्लीज़ चलिए ना!" परिधि ने उसे ताकत से खींचते हुए कहा।

"वो इतना कह रही है, तो जाओ अनामिका! खोज दो!" चैतन्य ने परिधि का समर्थन करते हुए कहा।

"हॉ॑ ठीक है चलो! पर मुझे ठीक से याद नहीं है कि वो है कहॉ॑? ढूंढने में समय लगेगा।" अनामिका ने कहा।

"कोई बात नहीं! चलो मैं भी मदद कर देता हूॅ॑। हाथ बढ़ेंगे तो काम भी जल्दी ही होगा।" चैतन्य भी अपने हाथ झाड़ता हुआ खड़े हुआ।

जल्द ही तीनों अनामिका के कमरे में उसकी अलमारी को उधेड़ रहे थे। मगर वो चिथड़े ना जाने कहॉ॑ जाकर छिप गए थे। थोड़ी ही देर में सारे कपड़े अलमारी के बाहर जमीन पर पड़े हुए थे। पूरी अलमारी खाली हो गई, मगर वो कपड़े नहीं मिले। उन कपड़ों के गायब होने से परिधि रूंआसी होकर सुबकने लगी। उन कपड़ों को लेकर उसकी बेसब्री ने उन दोनों को ही हैरान किया था।

"तुम्हें सच में याद नहीं है कि वो कहॉ॑ हैं?" चैतन्य ने परिधि की हालत देखकर थोड़ी चिंता से पूछा।

"मैंने आखिरी बार उसे कब देखा था? अरे हॉ॑... उन्हें तो मैंने फेंक दिया।" अनामिका ने अपने सिर पर हाथ रखकर बहुत ही अफसोसनाक तरीके से
कहा।

"क्या?" एक साथ दो आवाजें आईं।

"हॉ॑, मैं उसके साथ रखी डायरी निकाल रही थी, तो वो कपड़े उस डायरी के साथ उलझ गए। मैंने खींचकर दोनों को अलग किया और कपड़े जमीन में फेंक दिए। बाद में उन्हें उठाकर फेंक दिया। उन्हें रखने का भी क्या मतलब था!" अनामिका ने जैसे अपनी सफाई देते हुए कहा।

ये सुनते ही परिधि का पूरा चेहरा स्याह पड़ गया और धम्म से नीचे गिरकर घोर हताशा से उसने अपने चेहरे को छिपा लिया और जोर-जोर से सुबकने लगी।

"अरे यार! बस कपड़े ही तो थे। वो भी फटे हुए! पता होता कि तुम उनके लिए इतना परेशान हो जाओगी तो मैं कभी ऐसा ना करती।" अनामिका ने बहुत ही शर्मिंदगी के साथ कहा।

चैतन्य ने भी परिधि को ढांढस बंधाने की कोशिश करते हुए उसे शांत कराना चाहा। मगर जब उसके रोने की रवानगी कम नहीं हुई, तो उसने खीझकर पूछा, "ऐसा क्या है उस कपड़े में... कि इतना परेशान हो रही हो?"

"उन कपड़ों के साथ... एक बहुत ही.... कीमती चीज थी। एक अमानत... जो मुझे... किसी तक पहुॅ॑चानी थी।" परिधि उसी रफ्तार में रोते हुए बोली।

"क्या?" अनामिका ने पूछा।

"एक सोने की अंगूठी थी, जिसमें एक लाल नग जड़ा हुआ था।" परिधि ने सिर उठाकर अनामिका की ओर देखते हुए कहा और ये सुनते ही
अनामिका का लटका हुआ चेहरा एक बार फिर से चढ़ा था। परिधि की बात सुनकर अनामिका तेजी से अपनी ड्रेसिंग टेबल के पास गई और फिर उसके सबसे नीचे वाले ड्राअर को खोलकर उसके अंदर से कुछ निकला और फिर उसे लेकर तेजी से परिधि के पास आई।

"क्या... यही है?" अनामिका ने अपनी मुट्ठी फैलाते हुए कहा। उसकी बात सुनकर रोती हुई परिधि एकदम से चुप हुई और अनामिका की हथेली की ओर देखा, जहॉ॑ सोने की अंगूठी में जड़ा वो लाल नग पूरी ताकत से चमक रहा था। उसे देखते ही परिधि का रोना पूरी तरह से रूक गय

"ये... ये... हॉ॑ यही तो है।" परिधि ने लपककर उसे उठाते हुए कहा।

"हम्म! शुकर है! उन कपड़ों को नीचे फेंका था, तो ये छिटककर कपड़ों से अलग हो गई थी। उस समय मुझे पता नहीं था कि ये इन कपड़ो से बाहर आई थी। मुझे लगा कि गीता की होगी, तो मैंने उठाकर ड्राअर में रख दी थी। बाद में मैं इसे भूल गई। याद करने का समय ही नहीं मिला।" अनामिका ने राहत की साॅ॑स लेते हुए कहा।

"पर ये है किसकी? जिसके लिए तुम इतना परेशान हो रही थी।" चैतन्य ने पूछा।

"ये अमांडा जॉनसन की अंगूठी है और उसने आपके लिए दी है।" कहते हुए परिधि ने वो अंगूठी चैतन्य की ओर बढ़ा दी।

"मेरे लिए! मेरे लिए क्यों?" चैतन्य ने हैरानी से उस अंगूठी को देखते हुए पूछा।

चैतन्य के इस सवाल से वो गुंग होकर रह गई। उसके पास इस सवाल का जवाब तो था, पर वो सही शब्द नहीं थे, जिनकी मदद से वो चैतन्य को ये
सब समझा सकती थी। उसने एक लाचारी भरी नज़र अनामिका की ओर घुमाई और नज़रों की भाषा पढ़ने में माहिर अनामिका ने सब समझ लिया। वो आगे आई और उस नाज़ुक सी अंगूठी को परिधि के हाथ से ले लिया। उसे लेकर वो चैतन्य के पास आई और फिर चैतन्य के गले में पड़ी अपनी चेन खोलने लगी, जो उसे उसने अतीत में आपसी संपर्क के लिए दी थी।

"क्या कर रही हो?" चैतन्य ने उसका हाथ पकड़ते हुए कहा।

"श्श्श्श्श!" अनामिका ने उसके होंठों पर अपनी ऊंगली रखकर उसे चुप कराया और फिर उस अंगूठी को उस चेन में डालकर फिर से चैतन्य के गले में पहना दिया। चैतन्य ने सिर झुकाकर अपनी गर्दन के बस थोड़ा सा नीचे पड़ी हुई उस अंगूठी को देखा, जो अनामिका की चेन का साथ पकड़े हुए थी। उसे अभी भी कुछ समझ में नहीं आया था और उसी नासमझी के साथ उसने सिर उठाकर अनामिका की ओर सवाल करती नज़रों से देखा।

"तुम्हें कहा था ना! जब प्रेम आत्मिक हो जाए तो सूकून बन जाता है। तुम्हारे लिए उसका प्रेम भी ऐसा ही था। किसी भी व्याख्या से परे। इसे हमेशा अपने पास रखना। इसका स्पर्श तुम्हें भी हमेशा सूकून पहुॅ॑चाएगा।" अनामिका ने चैतन्य की ऑ॑खों में देखते हुए कहा और अपना जवाब मिलते ही चैतन्य ने एक बार फिर से उस अंगूठी की ओर देखा। अमांडा से मुलाकात का एक हिस्सा उसके कानों में बिखर गया।

"हॉ॑! तीन दिन पहले वॉकर मेंशन में। पर अब क्या फायदा? आप तो शादीशुदा निकले।" चैतन्य को उसके उन शब्दों की गहराई अब पता चली, जिस पर उसे घोर आश्चर्य ही हो रहा था और इसे सचमुच शब्दों में उतारा नहीं जा सकता था। उसने उस अंगूठी पर अपनी ऊंगलियॉ॑ फिराई और बोला,

"□□□□□□□ □□□□□!"

□□□□□□□□: □□□□□ □□□ - □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□

□□ □□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□□, □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□.. □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□ □□□ □□□

□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□ □□ □□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□

****

"□□□□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□□! □□□□ □□ □□! □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□? □□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□? □□□□□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□? □□□□□□□ □□□ □□□-□□□□ □□ □□ □□□□□ □□, □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□ □□□□ □□□, □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□, □□ □□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□... □□□□ □□□□ □□□□, □□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□□! □□□ □□ □□□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□ □□ □□ □□□ □□ □□ □□ □□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□□"

"परिधि!"

अपना नाम सुनकर परिधि ख्यालों के दायरे से बाहर निकली, जहॉ॑ वो विक्टर की कही हुई बातों में अभी भी उलझी हुई थी। सृष्टि थी, जो उसे बुलाने के लिए आई थी।

"हॉ॑! आई!" परिधि ने अपने ख्याल समेटे और उसके साथ हो ली। सब हॉल में बैठे हुए उसी का इंतजार कर रहे थे।

"आओ परिधि! यहॉ॑ बैठो!" तृषा ने उसे अपने पास बुलाते हुए कहा। परिधि की पूरी कहानी जानने के बाद वो उसके लिए बहुत ही भावुक हो गईं थीं। परिधि उन्हें एक निश्चल मुस्कान देते हुए उनके पास बैठ गई।

"परिधि! बेटा! हम चाहते हैं कि आप एक बार फिर से सब सोच लो। अतीत में कुछ भी बाकी नहीं रह गया है, तो तुम वहॉ॑ क्या करने जाओगी? हम सब चाहते हैं कि तुम यहीं रूक जाओ।
अतीत और भविष्य के बीच का सेतु हम ढूंढ लेंगे। चिंता मत करो!" डॉ. अनंत ने बहुत ही प्यार से परिधि से कहा।

"हॉ॑ परिधि! रूक जाओ ना! प्लीज़!" अनामिका ने उसके पास बैठकर उसका एक हाथ पकड़कर कहा।
पास ही बैठा मुकुल ख़ामोशी से बैठा परिधि को एक उम्मीद के साथ देख रहा था।

परिधि ने उन सभी की ओर बहुत ही जज़्बाती नज़रों से देखा और फिर
उतने ही जज़्बाती लहजे में बोली, "आप लोगों का प्यार देखकर मेरा दिल भर आया है।
बेवकूफ ही होगा वो... जो इतना प्यार छोड़कर जाएगा। पर... हम जो चाहते हैं.. हमेशा वो नहीं होता है। आप लोगों का एक सफ़र ख़त्म हुआ है और शायद आगे भी ऐसे सफर पर जाना होगा आपको। मगर मेरे सफर की मंजिल भविष्य में नहीं अतीत में है और मुझे वहॉ॑ जाना ही है। अगर मैं वहॉ॑ नहीं गई... तो एडवर्ड कामयाब हो जाएगा। पूरा भविष्य बदल जाएगा और ये नहीं होना चाहिए। प्लीज़! मुझे कमजोर मत कीजिए!"

और उसकी बात सुनकर सभी सकते में आए थे। एक ही रात में परिधि पूरी तरह से बदली हुई लग रही थी। भावुक तो वो अभी भी उतनी ही थी, पर उसके लहजे में पहले की तरह कोई लड़खड़ाहट नहीं थी। वो हर सूरत में मजबूत दिखाई दे रही थी।

"नहीं परिधि! कोई तुम्हें कमजोर नहीं करेगा। हर किसी को अपनी मंजिल चुनने का हक है। अगर तुमने चुनी है... तो मैं इसका स्वागत करती हूॅ॑। इन बीते दस सालों में मैंने ये बात सीखी है कि... हमारी दुनिया भावनाओं में बहने वालों के लिए नहीं है। यहॉ॑ आपको हर कदम पर खुद को और भी ज्यादा मजबूत करना होता है। अगर तुम ये चाहती हो... तो ऐसा ही होगा।" सबको चौंकाते हुए तृषा ने परिधि के सिर पर हाथ रखकर कहा, जिस पर परिधि अपनी ऑ॑खों को नम करती हुई उनसे लिपट गई।

कुछ दूर बैठे मुकुल की ऑ॑खों में जगी उम्मीद की लौ धीमी होते-होते बुझ गई। वो उन्हीं बुझी हुई ऑ॑खों से उसे देख रहा था। वो पहेली सी लड़की किस तरह से उसके दिल में इतनी गहरी उतर गई, उसे पता ही नहीं चला। शायद उसके भूले हुए अतीत के दर्द ने मुकुल के दिल में जो नर्म सा कोना तलाशा था, सुबह उसके पिता और उसके रिश्ते को लेकर कही गई परिधि की बातों ने उसे स्थायित्व दे दिया था। उसकी ऑ॑खें नम हो गईं, जिन्हें छिपाने के लिए वो वहॉ॑ से बहाने से हट गया। परिधि ने उसे जाते हुए
देखा, पर फिलहाल उसकी ओर जाने से परहेज़ ही किया।

परिधि के जाने पर मुहर लग चुकी थी। बहुत पूछने पर भी उसने कुछ भी बताने से इंकार ही किया। सबने भी उसे ज्यादा कुरेदने की कोशिश नहीं की। शाम हो चुकी थी और आज रात ही उसकी वापसी थी।

****

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]? [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]" [illegible]
"[illegible]! [illegible]!" [illegible]

[illegible], [illegible]

"[illegible]" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

"[illegible]! [illegible]... [illegible]" [illegible]

[illegible] [illegible], [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

****

[illegible]

"[illegible]?" [illegible]

"[illegible]! [illegible]?" [illegible]

"[illegible]!" [illegible]

कि... तुम इस दर्द से क्यों बाहर नहीं निकल पा रहे हो?" परिधि ने उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा।

परिधि की बात सुनकर मुकुल के माथे पर शिकन उभरे और उसने उसी चेहरे के साथ परिधि की ओर देखा।

"मुझे अनंत अंकल ने बताया कि उस रात क्या हुआ था? पर मुकुल... सच में! इसमें किसी की गलती नहीं थी। तुम पहली बार अपने दोस्तों के साथ बाहर गए थे। तुम्हारे पापा का बार-बार फोन आया तो उन लड़कियों ने ये सोचकर छिपा दिया होगा कि कहीं वो तुम्हें वापस घर ना बुला लें। किसी के दिमाग में पहला विचार ये नहीं आता कि दूसरी ओर कुछ ग़लत हुआ होगा। अब तुम इसी बात की ग्लानि में खुद को भी सजा दे रहे हो और दूसरों को भी।" परिधि बहुत ही संजीदगी से बोली।

उसकी बात सुनकर एक बार फिर से मुकुल की ऑ॑खों में दर्द उतर आया, जिसे छिपाने के लिए वो एक बार फिर से नीचे की ओर देखने लगा।

"मुकुल! नफ़रत करना आसान नहीं होता और सही भी नहीं। सदियॉ॑ गुजर जाती हैं इस नफ़रत के बोझ को सहते-उठाते और पीढ़ियॉ॑ बर्बाद हो जाती हैं। हम सभी के अंदर एक एडवर्ड छिपा हुआ होता है, बाहर निकलने के लिए हर मौके को तलाशता। मगर हमारे अंदर हमेशा एक अल्फ़ी भी छिपा हुआ होता। अब हमें ये तय करना है कि हमें नफ़रत चुनकर एडवर्ड बनना है या प्रेम का हाथ थामकर अल्फ़ी को जीना है। मैं जानती हूॅ॑ कि तुम कभी भी... एडवर्ड को नहीं चुनोगे, तो वापस लौट जाओ उसकी दहलीज से। माफ कर दो खुद को... अपने दोस्तों को। तुम्हारे पिता भी तुमसे प्रेम करते थे... और तुम्हें इस आग में सुलगते देख
उन्हें बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगता होगा। निकाल फेंको इस नफ़रत नाम के अंकुर को अपने अंदर से... इससे पहले कि ये तुम्हारे अंदर अपनी जड़ें जमा लें। मुझे भी अच्छा नहीं लगेगा। याद रखना! क्रोध और घृणा संहार कर सकते हैं, पर सृजन सिर्फ प्रेम कर सकता है।" अपनी बात खत्म कर परिधि ने मुकुल की ओर देखा।

उसकी बात सुनने के बाद मुकुल कुछ देर उसी तरह चुपचाप सुनता रहा और फिर परिधि की ओर देखकर उसने एक ईमानदार मुस्कुराहट के साथ हॉ॑ में सिर हिलाया। ऑ॑खें अभी भी नम थीं।

"और हॉ॑... सामान्य होने के बाद प्रेम का अपने जीवन में स्वागत करना। शादी करना! बच्चों के नाम सोचना! उनके भविष्य की फिक्र में रातों को जागना! अपनी संगिनी का हाथ पकड़कर बुढ़ापे की योजनाऍ॑ बनना! क्योंकि कभी-कभी साधारण सी दिखने वाली चीजें भी बहुत चुनौतीपूर्ण होती हैं।" परिधि ने उसे बहुत ही प्यार से देखते हुए कहा।

"अगर मेरी बेटी हुई तो उसका नाम परिधि रखूं?" मुकुल ने सवाल किया।

"क्यों नहीं? अपने प्रेम को बेटी में खोजना एक अच्छा विचार है।" परिधि ने हॅ॑सते हुए कहा।

"मैं तुम्हें कभी भी नहीं भूलूंगा और ना ही तुम्हारी कही किसी भी बात को।" मुकुल ने उसकी ऊंगलियों को अपनी हथेलियों में कसते हुए कहा और फिर आगे बढ़कर उसके माथे को चूम लिया। परिधि ने भी मुस्कुराकर उसके प्रेम को स्वीकार किया।

****

रात हो चुकी थी और दूसरा पहर भी खत्म होने वाला था। सभी स्टडी रूम में एक आदमकद आईने के पास मौजूद थे। अनामिका, डॉ. अनंत और आशुतोष एक किताब पर बहुत देर से झुके हुए थे। वहीं तृषा, गीता और सृष्टि, परिधि के साथ बैठी हुई थीं। एक ओर वरूण, मुकुल, चैतन्य और अंकित भी बैठे हुए थे। सभी परिधि को विदा करने के लिए मौजूद थे। अंकित शाम के समय में विक्टर की मौत की खबर देने आया तो उसे परिधि के जाने का पता चला और वो भी रात वहीं रूक गया।

"ठीक है अनामिका! मुझे नहीं लगता कि इसमें कोई भी परेशानी होनी चाहिए।" डॉ. अनंत ने अपना सिर ऊपर उठाते हुए कहा।

"हॉ॑! मुझे भी नहीं लगता! तुम्हें बस उसे खोलना ही है। कोई नया नहीं बनाना है।" आशुतोष ने कहा।

"हम्म! ठीक है! तो फिर ये करते हैं।" अनामिका ने भी आत्मविश्वास भरी आवाज में कहा।

"और वो कहॉ॑ हैं?" आशुतोष ने पूछा।

"ये रहा! इसकी मुझे बिल्कुल भी याद नहीं थी। सुबह अमांडा की अंगूठी निकालते समय इस पर नज़र पड़ी थी, पर ध्यान इसकी ओर नहीं गया। रात चैतन्य ने जब अमांडा की अंगूठी और कॉ॑च के टुकड़े के बारे में कहा, तब मेरा ध्यान इस ओर गया। ये भी परिधि के उन कपड़ों से उसी दिन ही गिरी थी, जिसे मैंने जल्दबाजी में अमांडा की अंगूठी के साथ ही रख दिया था। शायद समयद्वार का रास्ता जब नष्ट हुआ होगा, तब ये टुकड़ा परिधि के कपड़ों में फंस गया होगा।" अनामिका ने कहा और उस नीले कॉ॑च के
टुकड़े को बीच टेबल में रख दिया। आशुतोष और डॉ. अनंत ने उसे अपनी ऑ॑खें फैलाकर देखा। आखिर ऐसी चीज रोज देखने के लिए कहॉ॑ ही मिलती है।

"चलो अनामिका! इसे सक्रिय करो!" डॉ. अनंत ने उस कॉ॑च के टुकड़े की ओर इशारा करते हुए कहा।

अनामिका ने अपना सिर हिलाया और फिर चैतन्य को आवाज देकर पास बुलाया। उसने अपने सीधे हाथ की छोटी ऊंगली और चैतन्य ने अपने सीधे हाथ की तर्जनी ऊंगली उस कॉ॑च पर रख दी और अपनी ऑ॑खें बंद कर लीं। अनामिका ने अपने बाऍ॑ हाथ से अपने गले पर पड़े पेंडेंट को भी पकड़ रखा था। थोड़ी ही देर में अनामिका की उस ऊंगली का रंग पूरी तरह से नीला और चैतन्य की ऊंगली का रंग सफेद हो गया। इसके बाद उनकी ऊंगलियों के नीचे रखे उस कॉ॑च की सतह धीरे-धीरे पानी की सतह की तरह हिलने लगी। ऐसा लग रहा था जैसे कि उनकी ऊंगलियों से पानी उस कॉ॑च के टुकड़े पर उतरकर उसकी सतह पर हलचल पैदा कर रहा हो। कुछ देर के बाद अनामिका की उस ऊंगली का सारा नीला रंग और चैतन्य की ऊंगली का सफेद रंग उस कॉ॑च के टुकड़े में उतरकर समा गया। दोनों ने अपनी ऑ॑खें खोली और उसे देखा।

"क्या ये हो गया?" अनामिका ने उस कॉ॑च के टुकड़े को देखते हुए कहा, जो अब बिल्कुल उस समयद्वार के कॉ॑च की तरह हिलोरें मारता दिख रहा था, जिससे उन्होंने 200 साल की दूरी मिनटों में पूरी की थी।

"लग तो रहा है।" डॉ. अनंत ने कहा।

"चलो! अब इससे रास्ता खोलो!" आशुतोष ने कहा।

"जी!" अनामिका ने कहा और उस कॉ॑च के टुकड़े को उठाकर वो उस
आईने की ओर बढ़ गई। चैतन्य भी उसके साथ गया। अनामिका ने पलटकर चैतन्य की ओर देखा, जिस पर उसने उसे आगे बढ़ने का इशारा किया। अनामिका ने एक गहरी सॉ॑स भरकर अपने फेफड़ों में भरी और दिल के अंदर से सारे बुरे ख्यालों को बाहर निकाला। उसने सामने आईने को देखा और फिर उस कॉ॑च के टुकड़े को उस आईने के ऊपर रखकर उस पर अपनी हथेली टिका दी। इसके बाद चैतन्य आगे बढ़ा और उसने भी अनामिका की हथेली के ऊपर अपनी हथेली रख दी। चैतन्य के हथेली रखते ही अनामिका की हथेली के नीचे से एक नीली और सफेद रोशनी की लहरें निकलीं और धीरे से उस पूरे आईने में फ़ैल गईं। कुछ ही देर में नीली और सफेद रोशनी की वो लहरें जो उस कॉ॑च के टुकड़े के अंदर हिलोरें मार रही थीं, अब उनका विस्तार उस पूरे आईने में हो चुका था। चैतन्य और अनामिका दोनों ने ही एक-एक कर अपनी हथेली हटाई। अनामिका की हथेली के नीचे दबा हुआ कॉ॑च अब वहॉ॑ मौजूद नहीं था। वो दोनों ही तेजी से पीछे हटे थे। समयद्वार खुल चुका था।

उस समयद्वार पर नज़र पड़ते ही परिधि अपनी जगह से उठी और उसके सामने खड़ी हो गई। उसने उस आईने पर हाथ रखा तो कुछ भी नहीं हुआ। ये देखकर परिधि की ऑ॑खों में परेशानी माथे के बलों के साथ उभरी। उसने पीछे पलटकर अनामिका की ओर देखा।

"तुम्हारे पास तो अंगूठी थी ना हेममाया की!" अनामिका बोली।

"वो तो मैंने अल्फ़ी को दे दी थी। मुझे लगा था कि वो उसकी अमानत है।" परिधि ने बुझी हुई आवाज में कहा।

"एक मिनट! एक और अंगूठी! अगर डॉक्टर ने अमांडा वाली अंगूठी परिधि के हाथ से निकाल दी थी, तो दूसरी वाली क्यों नहीं निकाली?" चैतन्य ने पूछा।
"क्योंकि उसकी उस ऊंगली में कोई चोट नहीं थी और वो ऊंगली से निकल भी नहीं रही थी।
बेवकूफ!" जवाब उसे त्यौंरियॉ॑ चढ़ाकर देखते हुए वरूण ने दिया।

"चुप रहो तुम दोनों! तो.... तुम परिधि की मदद कर दो अनामिका!" सृष्टि ने मशविरा देते हुए कहा।

"उसके लिए मुझे भी उसके साथ जाना होगा।" अनामिका ने आह भरते हुए कहा।

"इसका मतलब है कि परिधि इस समयद्वार का इस्तेमाल नहीं कर सकती!" मुकुल ने पूछा।

"उसे अकेले जाना है तो उसके पास हेममाया की कोई चीज होनी ही चाहिए। ये एक तरह से अनुमति पाने की तरह है।" अनामिका ने कहा।

"अल्फ़ी वो अंगूठी कभी नहीं देगा।" वरूण ने और भी निराशा से कहा।

"हम्म!" कहते हुए अनामिका किसी सोच में डूब गई। इसी हालत में उसने सामने हिलोरें मारते उस आईने में देखा। उसका धुंधला सा अक्स नज़र आ रहा था। पहले तो उसने खुद को ग़ौर से देखा और फिर एकदम से उसकी ऑ॑खें चमक उठीं।

"वो जाएगी... क्योंकि वो जा सकती है।" तेजी से पीछे पलटकर अनामिका ने कहा।

"पर कैसे?" आशुतोष ने पूछा।

ये सुनते ही अनामिका ने अपने गले में पड़ी हुई चेन खोली और उसे
सबको दिखाते हुए बोली, "इसकी मदद से। ये हेममाया का था, जो उसे उसकी मॉ॑ ऐना कभी भी उसे दे ना सकी। आखिरी मुलाकात में उन्होंने ये मुझे दी थी।"

सभी ने उस चेन और उसमें लटकते हुए पेंडेंट की ओर देखा। सभी के लिए वो बस एक पेंडेंट था, मगर उसे देखकर डॉ. अनंत की ऑ॑खों में एक पहचान उभरी।

"ऐसा लगता है कि... इसे कहीं देखा है। पर कहॉ॑... ये याद नहीं आ रहा है।" डॉ. अनंत ने उसे पेंडेंट को घूरते हुए कहा।

"अच्छा! हो सकता है कि आपने ऐसा ही कुछ देखा हो। फिलहाल तो ये परिधि के वापस जाने की चाबी है।" अनामिका ने उस पेंडेंट को अपनी ऑ॑खों के सामने रखते हुए कहा और फिर आगे बढ़कर वो पेंडेंट परिधि को पहना दिया। परिधि ने सिर झुका कर उस पेंडेंट को देखा। जाने का समय हो चुका था। जाने से पहले वो एक-एक करके सभी के पास गई। सभी की ऑ॑खें भर आई थीं। आखिरकार सबसे आखिर में वरूण का स्नेह पाने के बाद वो उस समयद्वार की ओर मुड़ी। वो आगे कदम बढ़ाने का सोच ही रही थी कि तभी उसे कुछ याद आया और वो वरूण के पास वापस आई।

"कुछ सवाल... जो आप सबको हमेशा से परेशान कर रहे हैं। उनका जवाब आयुष-सार में मिल सकता है। शायद आप समझ जाऍ॑। पेज नं 45!" परिधि ने मुस्कुराते हुए कहा और फिर पलटकर समयद्वार की ओर चली गई।

एक नया सफर उसका इंतजार कर रहा था, जिसे एक बिल्कुल ही नई परिधि पूरा करने वाली थी। आत्मविश्वास से भरी हुई। उसने पलटकर एक बार फिर से सबको देखा और फिर एक गहरी साॅ॑स लेकर उस समय द्वार
में प्रवेश कर गई। सबने उसे जंगली रास्ते में कुछ दूर आगे तक जाते देखा और फिर समयद्वार की सतह जोरों से झिलमिलाने लगी। थोड़ी देर बाद जब वो हलचलें शांत हुई तो सब कुछ गायब हो चुका था। परिधि जा चुकी थी। सबकी जिंदगी में सीख की एक और कहानी जोड़कर कि मन की ताकत से ज्यादा ताकतवर और कुछ नहीं होता और दूसरों की काबिलियत से खुद की तुलना करने की बजाय अपने हुनर को पहचानने और उसे तराशने की कोशिश करनी चाहिए। आप खुद में ही सर्वश्रेष्ठ हैं। मिशन पूरा हो चुका था।

एक-एक करके सभी उस कमरे से बाहर निकलने लगे कि अब नर्म बिस्तर पर सोने से ज्यादा और कुछ भी जरूरी नहीं रह गया था। डॉ. अनंत और तृषा को उस स्टडी में छोड़कर अनामिका और चैतन्य सबसे आखिरी में बाहर निकले।

"अनु!" अनामिका के पीछे सीढ़ियॉ॑ चढ़ते हुए चैतन्य ने उसे पुकारा।

"हॉ॑!" अनामिका ने पीछे मुड़कर उसे देखते हुए कहा।

"तुम कुछ भूल नहीं रही?" चैतन्य ने उसे कुछ याद दिलाने की कोशिश करते हुए कहा।

"क्या?" सवाल करते हुए उसकी ऑ॑खें सिकुड़ी।

"वही जो तुमने किचन में मुझसे कहा था कि अगर सब कुछ सही तरीके से हो गया... तो तुम मुझे थैंक्यू बोलोगी।" चैतन्य ने उसकी याददाश्त को दुरूस्त करने की कोशिश करते हुए थोड़ी शरारत से कहा।

और ये सुनते ही अनामिका की ऑ॑खें फैली और वो तेजी से पलटकर ऊपर भागते हुए बोली, "फिर कभी!"
उसकी बेईमानी से हक्का-बक्का रह गया चैतन्य भी उतनी ही तेजी से उसके पीछे भागा था। आखिरकार अनामिका के कमरे से कुछ दूरी पर चैतन्य ने उसे पकड़ ही लिया।

"चीटर! आज तुम्हारी चालाकी नहीं चलेगी।" उसे दीवार से लगाकर दोनों तरफ अपने हाथ जमाते हुए चैतन्य ने कहा।

अनामिका ने लाचारी से अपने दोनों ओर मौजूद उसकी मजबूत क़ैद को देखा। वो समझ गई थी कि आज वो फॅ॑स चुकी थी। वहीं उसके चेहरे के उड़ते हुए रंग चैतन्य को बड़े भले से लग रहे थे। आखिरकार अनामिका ने हथियार डालते हुए हार मान ली और वो उसकी ओर आगे बढ़ी। नजदीकी बढ़ने पर उसे महसूस करने की हसरत में चैतन्य की ऑ॑खें फितरती तौर पर बंद हो गईं। अनामिका ने उसकी बंद ऑ॑खों को देखा तो उसकी शरारत की नस फिर से फड़की। उसने अपने होंठ उसके होंठ पर रखे और अगले ही पल उससे दूर हो गई। और चैतन्य जो किसी और ख्वाहिश के पूरे होने के इंतजार में था, उसने झटके से ऑ॑खें खोली।

"थैंक्यू!" अनामिका ने कहा और उसे झटके से हटाते हुए अपने कमरे की ओर भाग गई। जब तक चैतन्य उस तक पहुॅ॑चता.. उसने दरवाजा बंद कर दिया था।

"अनु! दरवाजा खोलो!" चैतन्य बुरी तरह से झल्लाकर बोला।

"गुड नाईट चैतन्य!" अंदर से अनामिका की खनकती हुई आवाज़ आई।

"देख लूंगा तुम्हें! चीटर कहीं की!" चैतन्य ने दरवाजे पर एक लात मारते हुए कहा और उसी झुंझलाई हुई हालत में अपने कमरे की ओर मुड़ा तो सामने कुछ ही दूरी पर वरूण को अपने सीने पर दोनों हाथ बांधे उसे घूरता
हुआ पाया।

"और एक ये है... जिसे कभी चैन नहीं!" चैतन्य बड़बड़ाता हुआ उसके बगल से अपने कमरे की ओर निकल गया। वरूण ने दरवाजा बंद होने तक उसे घूरकर देखा। उसके बाद अनामिका के कमरे की ओर एक नज़र डालकर सिर हिलाता अपने कमरे में चला गया।

****

समयद्वार के दूसरी ओर -

परिधि आगे बढ़कर नीचे जाती उन सीढ़ियों के पास पहुॅ॑ची, जो उसे अतीत में पहुॅ॑चाने

वाली थी। उसने नीचे देखा। सीढ़ियों पर अंधकार का कब्जा था। उसने गिनती गिननी शुरू की और एक-एक करके सीढ़ियॉ॑ उतरती गई। अपने समय में वापस जाने के लिए उसे बीस सीढ़ियॉ॑ नीचे उतरनी थी, पर वो 14 वीं सीढ़ी पर ही रूक गई। यानि कि 140 साल पहले और चित्रलेखा की मौत के दस साल बाद। उसने हाथ आगे बढ़ाकर अंधेरे में कुछ टटोला और एक दरवाजे की नॉब उसके हाथ आई। उसने धीरे से वो नॉब घुमाई और उस दरवाजे को खोला। सामने घना जंगल फैला हुआ था। परिधि अंदर गई और सीधा आगे बढ़ गई। कुछ दूर आगे बढ़ते ही उसे किसी नदी के बहने की आवाज सुनाई दी। वो और तेजी से आगे बढ़ी।

जल्द ही वो एक जंगली नदी के किनारे से थोड़ी ही दूर खड़ी थी। उसने सामने देखा। कोई खड़ा था, जो ऊपर आसमान में चमकते पूरे चॉ॑द को
देख रहा था।

"यहीं.... इसी जगह... हर पूरे चॉ॑द की रात उससे मिलने आता था वो। मेरा हर्षित!"

"तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र!" परिधि ने उसकी बात सुनकर कहा।

नाम सुनते ही सामने खड़े व्यक्ति ने मुड़कर उसकी ओर देखा। उसके चेहरे से निकलते तेज को देखकर परिधि की ऑ॑खें चौंधिया गईं।

"परिधि!" वो उसे देखकर मुस्कुराया।

तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र और परिधि एक-दूसरे के सामने खड़े थे। एक नया सफर शुरू होने वाला था।

(#तांत्रिक श्रेष्ठ और प्रहरियों का उदय)

****

अगली सुबह बहुत ही खिली-खिली और खुशगवार सी थी। नाश्ते की
टेबल पर सभी बहुत ही आश्वस्त और प्रसन्न दिखाई दे रहे थे, सिवाए एक के। वो अपनी त्यौरियॉ॑ चढ़ाए हुए सामने वरूण के साथ बैठी हुई अनामिका को घूरकर देख रहा था और अनामिका उसकी हर नज़र को नज़रअंदाज़ कर रही थी, जिससे वो और भी झुंझला रहा था।

"बरखुरदार! नाश्ता करो! ठंडा हो रहा है। उसे घूरकर तुम्हारा पेट नहीं भरने वाला।" आशुतोष ने उसे चेताते हुए कहा।

जवाब में चैतन्य ने अपनी नाराज सी नजरें आशुतोष की ओर घुमाई जो उसकी जगह गरम-गरम नाश्ते को देखने और खाने में ज्यादा दिलचस्पी दिखा रहा था। मन मारकर चैतन्य ने भी भांप उठते पोहे में अपनी चम्मच डाल दी। उन्हें नाश्ता करते हुए कुछ ही समय बीता था कि तभी डॉ. अनंत अपनी स्टडी से बाहर निकले और लगभग दौड़ते हुए उन तक पहुॅ॑चे।

"अनामिका! मैंने कहा था ना कि उस पेंडेंट को मैंने कहीं तो देखा है। ये देखो! प्रहरियों का इतिहास! इस पेज को देखो! है ना वही!" डॉ. अनंत ने उत्साहित स्वर में कहा।

उनकी बात सुनकर अनामिका ने हैरानी के साथ उस किताब को अपने सामने खींचा और उस पन्ने को गौर से देखने लगी। ये बिल्कुल वैसा ही पेंडेंट था।

"लग तो वैसा ही रहा है।" अनामिका ने सिर उठाकर डॉ. अनंत की ओर देखते हुए कहा।

"लग नहीं रहा... ये वही है। तुम सबके जाने के बाद कल पूरी रात मैंने न जाने कितनी पुस्तकों के पन्ने पलट डाले। आखिरकार ये पुस्तक मेरे हाथ आई और मैंने इस तस्वीर को देखा। इस तस्वीर को मैंने पहले भी देखा था, मगर ये पेंडेंट हमारे संग्रहालय में नहीं थी। कल इस तस्वीर को फिर से
देखने के बाद न जाने मेरे मन में क्या आया कि मैं एक बार फिर संग्रहालय में चला गया और देखो मुझे क्या मिला?" कहते हुए डॉ. अनंत ने एक चेन उनके सामने लटका दी, जिसके सबसे निचले सिरे में वही सफेद मोती वाला पेंडेंट लटक रहा था, जो ऐना ने अनामिका को दिया था। अनामिका ने हाथ आगे बढ़कर वह पेंडेंट ले लिया और उसे उलट-पुलट कर देखने लगी।

"अरे वाह! किसी की दी हुई चीज कभी इतनी जल्दी वापस आते मैंने नहीं देखी।" अनामिका के साथ बैठे वरुण ने चुहल भरी आवाज में कहा, जबकि अनामिका अभी भी उस पेंडेंट को घूर रही थी।

"तो क्या इसका मतलब है कि..." आशुतोष ने कहना चाहा, जिसे अनामिका की आवाज ने टोक दिया।

"परिधि कभी भी अपने समय में वापस नहीं लौटी थी। वो 140 या 150 साल पीछे वापस लौटी। तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र के पास। पर क्यों?" अनामिका ने कहा।

"क्या पता? मगर... परसों रात एडवर्ड को हराकर जब हम वापस आए.. वो उसी समय से वापस लौटने की बात कर रही थी। पूछने पर उसने कुछ बताया नहीं। बस इतना कहा कि एक सफ़र है, जो उसे पूरा करना है। उस समय दिल और दिमाग इतने थके हुए थे कि मैं उसकी बात पर ज्यादा गौर नहीं किया।" वरूण ने सबको बताया।

"मगर हमारे जाने से पहले तो ऐसा कुछ नहीं था। इसका मतलब कि हमारे जाने और आने के बीच ही कुछ हुआ है।" आशुतोष ने कहा।

"विक्टर! वो विक्टर के साथ थी। कहीं ऐसा तो नहीं कि विक्टर और परिधि के बीच कुछ बातें हुई हो। हमारे वापस लौटने पर परिधि ने ही
विक्टर के साथ नरम व्यवहार करने की बात कही थी क्योंकि वो मौत की दहलीज पर खड़ा था।" चैतन्य ने पिछली सारी बातें याद करते हुए कहा।

"एक मिनट! मुझे एक बात और याद आ रही है। उसने कल जाने से पहले मुझे यह कहा था कि वो सवाल जिनके जवाब के लिए हम परेशान रहे हैं... उसके जवाब हमें आयुष-सार से मिल सकते हैं।" वरुण ने परिधि की आखिरी कही हुई बात याद करते हुए कहा।

"आयुष-सार! ये क्या है?" चैतन्य ने सवाल किया।

"प्रहरियों का इतिहास और आयुष-सार वो सबसे पुरानी चीजें हैं जो तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र ने इस संग्रहालय को दी थीं। हम रखवालों का आयुष विज्ञान पूरी तरह से उसी किताब पर ही टिका हुआ है। क्या नहीं है उसमें! तांत्रिक श्रेष्ठ के किसी शुभचिंतक ने उन्हें दी थी।" डॉ. अनंत ने जवाब देते हुए कहा।

"क्या... हम एक बार देख सकते हैं?" चैतन्य ने इच्छा जताते हुए कहा।

"हॉ॑ क्यों नहीं! अभी लाता हूॅ॑। बाहर ही है वो।" कहते हुए डॉ. अनंत तेजी से स्टडी की ओर गए और जल्द ही उस किताब को लेकर वापस लौटे।

"ये देखो! हाथ से लिखी हुई है।" कहते हुए डॉ. अनंत ने एक काले रंग की कवर वाली किताब चैतन्य की ओर बढ़ाई। चैतन्य ने उस किताब को लिया और फिर उसे खोलकर देखा। एक-एक करके वो कई पन्ने पलटता गया। हालांकि उसमें जो कुछ लिखा था वो उसकी समझ में नहीं आ रहा था। मगर कुछ ऐसा था जिसे वो पहचान चुका था। कुछ पन्ने पलटने के बाद उसने उस किताब का सबसे आखरी पेज देखा। पेज खाली था। मगर उस पेज के सबसे निचले हिस्से में कुछ लिखा था, जिसे देखकर चैतन्य के होठों पर एक मुस्कुराहट आ गई।
"ये... परिधि की हैंडराइटिंग है। ये उसी ने लिखी है। ये लिखना उसे मैंने ही सिखाया था।" कहते हुए चैतन्य ने वो आखिरी खाली पेज उन सब की ओर आगे बढ़ाया, जिसके सबसे निचले हिस्से पर एक खास अंदाज में 'P' लिखा हुआ था। और ये वो सबूत था, जिसने ये साबित कर

दिया कि परिधि तांत्रिक श्रेष्ठ देवेन्द्र के पास लौटी थी।

"जरा दिखाओ मुझे। वो आखिर किन जवाबों की बात कर रही थी?" वरूण ने उस किताब की ओर हाथ बढ़ाते हुए कहा, जिस पर आशुतोष ने वो किताब उसकी ओर बढ़ा दिया। वरूण ने वो किताब उठाई और पेज नं 45 खोलकर देखा। वो पेज पढ़ते हुए उसके माथे पर शिकन हर शब्द के साथ बढ़ने लगे। वो पूरा पेज पढ़ने के बाद उसने सिर उठाकर सबकी ओर देखा और फिर उसे लेकर चला गया।

"इसे क्या हुआ?" चैतन्य ने उसकी पीठ को घूरते हुए कहा।

"उसने जवाबों के बारे में कहना! शायद उन्हें ढूंढने के लिए वो किताब ले गया हो। वो किताब अगर परिधि ने लिखी है और उसने जवाबों के लिए उसे पढ़ने के लिए कहा है, तो पढ़ने दो उसे।" अनामिका ने उसे टोकते हुए कहा।

जवाब में चैतन्य ने एक बार फिर से उस पर एक नाराज़गी भरी नज़र डाली, जिस पर अनामिका ने दबी हुई शरारती मुस्कान के बीच अंगूर का दाना मुॅ॑ह में रखा।

"सफ़र तो अंजाना सा ही है। ये समझ लो... बहुत पुराना समय चक्र का एक रहस्य है... हमारी नियति पत्रक में लिखा हुआ, जिसे सुलझाना है।
इस किताब ने यह बताया है कि एक लड़की किसी और समय से इस समय में आएगी और इस वजह से सबके भूत, वर्तमान और भविष्य प्रभावित हो जाऍ॑गे। कहा ये भी जाता है कि उस लड़की के माध्यम से बहुत कुछ ऐसा बदला जा सकता है, जो पहले ही घट चुका है या घटने वाला है। ये समझ लो कि वो लड़की एक चाबी है, समय से खेलने वाली।" (भाग -17)

कभी अनंत कुमार की कही एक बार सबके ज़हन में फिर से उतरी थी। परिधि एक बार फिर उनके लिए अतीत का एक हिस्सा बन चुकी थी।

****

रात के खाने का समय हो रहा था और वरूण अभी भी अपने कमरे में ही था। वो हॉस्पिटल में भी सारे दिन खाली समय में उसी किताब मे खोया रहा।

"अनु! देखो बेटा! ये वरूण कहॉ॑ रह गया? बुलाकर लाओ उसे।" तृषा ने सब्जी का बाऊल टेबल पर रखते हुए कहा।

"जी आंटी!" कहते हुए अनामिका मुड़ी ही थी कि उसे वरुण तेजी से
सीढ़ियॉ॑ उतरते हुए दिखाई दिया।

"आंटी! वो आ गया!" अनामिका ने कहा।

सब ये सोच रहे थे कि वो खाना खाने के लिए आया है, मगर उसका चेहरा ढेरों उलझनों का शिकार दिखाई दे रहा था। वो डॉ. अनंत के पास वाली कुर्सी पर बैठा और अपने पिता की ओर देखा।

"ये पिशाच का खंज़र तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र के पास कैसे पहुॅ॑चा?" उसने अपने सवाल से सभी को चौंकाया था।

"वो चित्रलेखा के पास था। जब वो फ्लोरिना के रूप में होती थी, तो उसी से ही सारे गलत

काम करती थी। आखिरी में तांत्रिक श्रेष्ठ ने उसी खंज़र में पिशाचिनी की शक्तियों को क़ैद किया था।" जवाब आशुतोष ने दिया जिसने चित्रलेखा की कहानी पढ़ी थी।

"और वो चित्रलेखा उर्फ फ्लोरिना के पास कैसे पहुॅ॑चा? अनामिका! तुमने तो कहा था कि वो खंज़र तुम सर विलियम की स्टडी में छुपा कर आई थी। तो वो खंज़र उस कमरे से बाहर कैसे निकला।" वरुण ने अगला सवाल किया।

"मुझे लगता है कि वो खंज़र उस स्टडी से तांत्रिक श्रेष्ठ सिद्धनाथ जी के पोते रामानुज ने निकाला होगा। उन्होंने आखिरी समय में उसे ही कुछ अनुचरों के साथ सर विलियम की स्टडी में भेजा था।" चैतन्य ने जवाब देते हुए कहा।

"रामानुज! क्या उम्र रही होगी रामानुज कि उस समय?" रामानुज नाम पर चौंकते हुए आशुतोष ने सवाल किया।
"यही कोई 12-15 साल के बीच। क्यों? क्या हुआ?" चैतन्य ने जवाब देते हुए पलट कर सवाल किया।

"क्या ये नाम तुम सबको सुना-सुना सा नहीं लग रहा। रामानुज! हार्लीन और रामानुज! चित्रलेखा उर्फ फ्लोरिना के पिता रामानुज! तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र के गुरु रामानुज! और कोई पहचान चाहिए।" आशुतोष ने रामानुज नाम की व्याख्या करते हुए कहा।

"आपका मतलब है कि पिशाच के जिस खंज़र को अनामिका सर विलियम के स्टडी में छोड़ आई थी, वो तांत्रिक श्रेष्ठ सिद्धनाथ के पोते रामानुज के पास था, जो भविष्य में हार्लीन के संपर्क में आया और जिस वजह से फ्लोरिना उर्फ चित्रलेखा पैदा हुई। शायद हार्लीन ने ही वो खंज़र तांत्रिक श्रेष्ठ रामानुज के पास से चुराया होगा, जिसे बाद में चित्रलेखा तक पहुॅ॑चाया गया, जिससे वो फ्लोरिना बनकर उस नर्क के द्वार को खोल सके और वो इसमें लगभग कामयाब हो ही गई थी, मगर चित्रलेखा और हर्षित के प्रेम ने उन सबकी योजना को नाकामयाब कर दिया।" वरूण ने उस पिशाच के खंज़र की पूरी यात्रा को डिकोड करते हुए कहा।

"लोग तो हमेशा यही समझते रहे कि वो खंज़र चित्रलेखा के महल में ही है। मगर वहॉ॑ तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र का खंज़र था, जिसमें पिशाचिनी नहीं... बल्कि चित्रलेखा की शक्तियॉ॑ कैद थीं। तो वो खंज़र गायब कहॉ॑ हुआ? और तो और.... एक सवाल ये भी है कि वो खंज़र अल्फ़ी के पास कहॉ॑ से आया? क्योंकि तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र की सुरक्षा को तोड़ना किसी के बस की बात नहीं थी। अल्फी की भी नहीं।" आशुतोष ने खंज़र से जुड़ा अगला सवाल सामने रखते हुए कहा।

"अल्फ़ी ने मुझे बताया था कि वो खंज़र उसे चित्रा ने दिया था।" सवाल का जवाब अनामिका ने दिया।
"चित्रा मतलब! मंजरी की बेटी और वही... जिसने अनामिका की मॉ॑ मेघा को अपनी शक्तियॉ॑ दी थी!" चैतन्य ने पूछा।

"हॉ वहीं!" अनामिका ने कहा।

"एक सवाल पूछूं क्या? ये सवाल बहुत समय से मेरे दिमाग में था, पर पूछने का मौका नहीं मिला।" चैतन्य ने कहा।

"हॉ॑ पूछो!" डॉ. अनंत ने कहा।

"चित्रा, मंजरी और राजा वीरभद्र सिंह की बेटी थी। है ना!" चैतन्य ने कहा।

"हॉ॑!"

"तो मेरी उलझन यही है कि.... जब मंजरी और राजा वीरभद्र सिंह दोनों ही सामान्य इंसान थे, तो उनकी बेटी चित्रा डायन कैसे बन गई और करीब 50 साल पहले उन्होंने मेरी नानी के साथ वो सब क्यों किया था जिसकी वजह से मेरी मॉ॑ और मेरे मामा का जन्म हुआ?" चैतन्य ने आखिरकार अपने दिल का सवाल बाहर निकाला और ये सवाल सुनकर सभी को जैसे एक झटका सा लगा। यह एक ऐसी बात थी जिसकी और किसी ने भी ध्यान नहीं दिया था। एक सामान्य माता-पिता की बेटी डायन कैसे हो सकती थी?

"पर वो तो जन्म से ही डायन थी।" डॉ अनंत ने चैतन्य से कहा।

"वही तो! ऐसा कैसे मुमकिन है? वो बाद में डायन बनी होती... तो ये बात समझ में भी आती।
मगर वो जन्म से ही डायन कैसे थी?" चैतन्य ने सवाल को और भी कुरेदते हुए कहा।
"ऐसा तो तभी हो सकता है, जब मंजरी की कोख में चित्रा के साथ किसी और शक्तिशाली डायन का भ्रूण भी रहा हो। बिल्कुल माया और परिधि की तरह। फर्क बस इतना है कि... माया ने परिधि की शक्तियॉ॑ चुरा लीं और इस मामले में किसी और ने मंजरी की कोख में ही रहकर चित्रा को भी अपनी शक्तियॉ॑ दे दीं। क्या कहते हैं आप सब? ऐसा हो सकता है क्या?" चैतन्य ने एक उम्मीद के साथ डॉ. अनंत की ओर देखा।

"हो तो सकता है। पर वो अपनी कोख में किसी और का भ्रूण क्यों पालेगी? और उन्होंने कभी इस बारे में कहा भी नहीं।" डॉ. अनंत ने सोचते हुए कहा।

"शायद उस बच्ची को दुनिया से छिपाया गया हो। चित्रा के पास शक्तियॉ॑ होने की मुझे और कोई वजह तो समझ में नहीं आ रही है।" चैतन्य ने अपने वजनदार शब्दों के साथ कहा।

"पर ऐसा संभव ही नहीं है।" डॉ. अनंत ने एक बार फिर चैतन्य की बात काटने की कोशिश की।

"नहीं! नहीं! डॉक्टर साहब! चैतन्य की बातों में कुछ दम तो है। अतीत के उस हिस्से में कुछ छुपाया तो गया है। तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र ने चित्रलेखा पर जो किताब लिखी है उसके आखिरी दो पन्ने गायब हैं जहॉ॑ मंजरी तांत्रिक श्रेष्ठ को कुछ बताने वाली थीं (चित्रलेखा -भाग 62)" आशुतोष ने चैतन्य की बात का समर्थन करते हुए कहा।

"पन्ने! कौन से पन्ने?" वरुण ने कौतूहल दिखाते हुए पूछा।

"चित्रलेखा की कहानी जिसके आखरी पन्नों में देवेंद्र, मंजरी से मिलने के लिए गए थे। प्रहरी समूह के गठन से पहले। उस समय मंजरी ने उन्हें कुछ
बताया था, जिसे उन्होंने आखिरी दो पन्नों में लिखा भी था। पर बाद में वो पन्ने फाड़ दिए गए और अब वो दो पन्ने रहस्य बनकर रह गए हैं। चैतन्य की बातों से अब मुझे भी यही लग रहा है कि उन पन्नों में चित्रा के डायन बनने का रहस्य था, जिसे छुपाने की कोशिश की गई है।" आशुतोष ने वरूण की ओर देखते हुए कहा।

"फिर तो आप लोगों को ये देखना चाहिए। ये मुझे आयुष-सार किताब के पिछले कवर के अंदर मिली।" कहते हुए वरुण ने टेबल पर कुछ रखा। सभी ने देखा कि वह किसी जले हुए कागज का बहुत छोटा सा टुकड़ा था।

"ये कागज किसी ने जलाने की कोशिश की है और दिलचस्प बात ये है कि ये इकलौता नहीं है।
इसके नीचे एक और पन्ना चिपका हुआ है। पीछे के पन्ने में तो कुछ नहीं दिख रहा है। पर ऊपरी पन्ने में कुछ लिखा हुआ है।" वरुण ने कहा।

वरुण की ये बात सुनते ही सभी अपनी-अपनी जगह से उठे और उसके पास जाकर उस पन्ने को झांक कर देखने लगे। उन सभी ने साफ-साफ 'ले' लिखा हुआ पढ़ा।

"क्या ये वही फाड़े हुए दो पन्ने हैं?" चैतन्य ने पूछा।

आशुतोष ने उन पन्नों को उठाकर पास से निरीक्षण किया और बोला, "पन्ने तो उसी किताब की तरह ही हैं। मुझे लगता है कि वही हैं।"

"पर ये 'ले' क्या हो सकता है?" अनामिका ने उसे पढ़ते हुए कहा।

"क्या पता?" आशुतोष ने असमर्थता जताई।

"सतवृक्ष से पूछें क्या?" चैतन्य ने नजर उठाकर सबके चेहरों को देखते
हुए कहा, जिस पर उन सभी ने चैतन्य की ओर देखा। और फिर जैसे कोई भूचाल आया हो। सब के सब स्टडी की ओर भागे। एक बार फिर सतवृक्ष उनके सामने था। वरुण ने उस अधजले पन्ने के टुकड़े को सतवृक्ष के हवाले किया और फिर सभी इंतजार करने लगे। कुछ देर उन सब की बेचैनियों का इम्तिहान लेने के बाद वो पन्ना वापस उड़ता हुआ बाहर आया, जिसे वरुण ने थाम लिया। सभी की नजरे वरुण पर टिकी थी, जो अब उस पर लिखी हुई इबारतें पढ़ रहा था।

"चित्रलेखा और हर्षित की बेटी लेखा!"

और इस जवाब ने वहॉ॑ मौजूद उन सभी लोगों के होश उड़ाकर रख दिए थे। चित्रलेखा और हर्षित की बेटी! यह कैसे हो सकता था। पर सतवृक्ष ने अपने पूरे इतिहास में कभी भी कोई गलत जवाब नहीं दिया, तो इस जवाब पर संदेह करना भी फिजूल ही था।

"हे भगवान! एक और डायन!" चैतन्य अपना सिर पकड़ कर बैठते हुए बोला।

"मैं तो ये सोच रहा हूॅ॑ कि वो लेखा कितनी शक्तिशाली रही होगी कि उसके संपर्क में रहकर ही चित्रा जैसी साधारण लड़की इतनी शक्तिशाली डायन बन गई।" आशुतोष ने भी अपनी फैली हुई ऑ॑खों के साथ हैरानी जताई।

"पर वो गई कहॉ॑? इतनी शक्तिशाली होने के बाद भी इतिहास में उसका कहीं भी जिक्र नहीं मिलता।" डॉ. अनंत ने सब कुछ याद करते हुए कहा।

"मुझे लगता है कि अगर उसके नाम को तांत्रिक श्रेष्ठ देवेंद्र ने छिपाया है, तो उसे छिपे ही रहना चाहिए। कभी-कभी मिट्टी उधेड़ने से कुछ ऐसा बाहर
निकल आता है जो रुचिकर नहीं होता। तो इसे छोड़ दो, जब तक कि इसकी जरूरत ना आन पड़े।" डॉ. अनंत ने बात को समेटते हुए कहा।

बाकी सभी ने भी उनकी बात का समर्थन किया और एक बार फिर वो सभी हंसी-खुशी खाने की टेबल पर बैठे थे। खंज़र का रहस्य लगभग सुलझ चुका था और उन दो पन्नों का भी, जो चित्रलेखा की कहानी से फाड़ा गया था। अतीत के बहुत से रहस्य सुलझ चुके थे, जिससे वो सब अब राहत महसूस कर रहे थे। मगर अतीत का एक पन्ना अभी भी उनकी ऑ॑खों से दूर था, जो कि भविष्य में उनके सामने आने वाला था। फिलहाल अभी उसके खुलने में देर थी।

(#प्रतिबद्ध)

****

वो पानी से भरे उस हौज में चुपचाप लेटा हुआ आसमान के चॉ॑द को देख रहा था। उस हौज का पानी बहुत ही जोर से उबल रहा था, जिससे निकलने वाली भाप चारों ओर धुंध की तरह फैली हुई थी। इसके इतर... वो किसी आम से प्रेमी की तरह चॉ॑द में उसी का चेहरा खोज रहा था।

"तुम तो इतनी नाराज हो गई हो कि अब मुझे चॉ॑द में भी नजर नहीं आती। ऐसा मत करो! अब ये अनंतकाल का जीवन तुम्हारी यादों के साथ ही काटना है मुझे। अपने अल्फ़ी से इतना मत रूठो माया! देखो तुम्हारे प्यार में मैं क्या कर गुजरा? लोग अपने प्यार की खातिर मर जाते हैं...
तुम्हारे रोमियो की तरह। पर मैं तुम्हारे प्यार में.... जी कर दिखा दिया। तुम्हारे इंतजार में... एक एक पल सदियों की तरह काटते हुए मैं दो सदियॉ॑ बिता आया। हॉ॑ ये अलग बात है कि जिस दुनिया में तुम्हारे रोमियो की मौत मोहब्बत की मिसाल बन गई, उस दुनिया में मेरा समर्पण किसी को पता भी नहीं चलेगा कि कैसे कोई किसी को इतनी शिद्दत से चाह सकता है। पर फिर भी मैं हमेशा तुम्हें ऐसे ही प्यार करता रहूंगा और...."

अभी उसकी बातें खत्म भी नहीं हुई थीं, कि तभी बाहरी दरवाजे की ओर से आई आवाजों ने उसके कान खड़े कर किए। ये उसके लिए माया और उसका वक्त था और इन आवाजों से पड़ने वाले खलल ने उसे बहुत ही ज्यादा नाराज किया था।

"ये मेरे घर में कौन घुस आया है?" वो तमतमाते हुए उस हौज से बाहर निकला। गुस्से की वजह से उसका शरीर भी सुलगने लगा था, जिससे उसके शरीर पर पड़ी पानी की नमी और भी तेजी

से भाप बनकर उड़ रही थी। इस समय वो ख़ौफ का दूसरा नाम दिखाई दे रहा था, जिस पर नज़र पड़ते ही अच्छे से अच्छा जिगर वाला भी अगले ही पल में दम तोड़ देता।

उसने अपने दोनों पैने कानों को काम में लगाया और उन आवाजों को ध्यान से सुनने की कोशिश करने लगा। अगले ही पल उसके होठों पर एक वहशियाना मुस्कान उभरी।

"शिकार! शिकार आए हैं।"

और फिर वो तेजी से उन आवाजों की ओर बढ़ गया। कुछ ही देर में वो जगह दर्दनाक चीखों से भर गई। करीब 15 मिनट बाद वो वापस लौटा। पूरी तरह खून में सना हुआ। वो उसी तरह चलते हुए आया और फिर से
उस हौज में घुस गया। एक बार फिर भाप का बादल चारों ओर बिखरने लगा।

"हॉ॑ तो मैं कहॉ॑ था? याद आया! मैं कह रहा था कि मैं हमेशा तुम्हें ऐसे ही प्यार करता रहूंगा और...."

और एक बार फिर से वो अपनी माया से बातें करने में मशगूल हो गया, जैसे कि कुछ देर पहले कुछ भी ना हुआ हो। अल्फ़ी अगले छ: महीने तक फिर किसी को भी नज़र नहीं आया।

****

फोन की वाइब्रेशन से लैपटॉप पर चलती अनामिका की उंगलियां झटके से रुकी थीं। उसने फोन की स्क्रीन पर नजर डाली। चैतन्य का नाम चमक रहा था।

"ये अभी क्यों फोन कर रहा है?" खुद से ही सवाल करते हुए अनामिका ने फोन स्पीकर पर डाला और फिर लैपटॉप की ओर मुड़ गई।

"हाय अनु!"
"हम्म!"

"क्या कर रही हो?"

"काम!"

"अरे यार! तुम्हारी जिंदगी में काम के अलावा और किसी की भी जगह है।" चैतन्य की नाराजगी भरी आवाज आई।

"चैतन्य! क्या काम है बोलो!" अनामिका ने थोड़े चिढ़ से कहा।

"क्या यार! कैसी अनरोमैंटिक प्रेमिका मिली है मुझे। बाहर देखो कितना रोमैंटिक मौसम हो रहा है और तुम इतने रूड तरीके से बात कर रही हो।" चैतन्य की नाराजगी और बढ़ी थी।

"अच्छा! तो फिर क्या करूं?" इस बार अनामिका ने फोन की तरफ ध्यान देते हुए कहा।

"कुछ भी ऐसा... जो मुझे अच्छा लगे!" चैतन्य ने बहकी हुई आवाज में कहा।

"और वो क्या?" अनामिका ने भी उसे और उकसाया था।

"[illegible]! [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible].. [illegible]...." [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]!" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible] [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]" [illegible] [illegible]

"[illegible]! [illegible]... [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]?" [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"[illegible] [illegible]! [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

"क्या?"

"तुम... सच में सीरियस हो चैतन्य को लेकर!" आखिरकार वरूण के दिल की हूक बाहर निकली।

और उसकी बात सुनकर चाय को चम्मच से हिलाते अनामिका के हाथ रुके थे। उसने एक तीखी नजर वरुण पर डाली जिससे वरुण ने खुद को सावधान किया।

"नहीं! मेरा मतलब है कि ये.... कोई छोटी सी बात तो नहीं है ना! पूरी ज़िंदगी का सवाल है। तो... मुझे लगता है कि ऐसे फैसले अच्छे से सोच-समझकर लेने चाहिए। अभी तुम्हें उससे मिले कुछ महीने ही तो हुए हैं। तुम चाहो तो सोचने के लिए थोड़ा और समय ले सकती हो। शायद यही कुछ-एक 10 साल... 15 साल या फिर 20 साल। इतना हड़बड़ाने की क्या जरूरत है?" वरुण ने संजीदगी की चादर ओढ़ते हुए कहा।

उसकी बात सुनकर अनामिका ने एक गहरी सॉ॑स ली और फिर उसकी ओर देखते हुए बोली, "वो तुम्हें बिल्कुल भी नहीं पसंद?"

"ना! और मैं... अपनी इतनी कीमती चीज उसे नहीं देना चाहता। मेरा दिल नहीं मानता इसके लिए।" अनामिका की ओर इशारा करते हुए वरुण ने बहुत ही साफगोई से कहा।

"और वो क्यों?" अनामिका ने पूछा।
उसके सवाल पर वरूण ने एक गहरी निगाह उस पर डाली। उसने जवाब देने के लिए अपना मुॅ॑ह खोला ही था कि दरवाजे पर हुई आहट ने दोनों का ध्यान उधर ही किया था।

"वो... कमरे में पानी नहीं है।" कहते हुए चैतन्य रसोई के अंदर आया।

"मैं देती हूॅ॑!" अनामिका बोली।

"नहीं! मैं ले लूंगा। यू गाइज़ कैरी ऑन!" कहते हुए चैतन्य अंदर की ओर बढ़ा। जैसे ही वो अनामिका के पास पहुॅ॑चा... वरूण ने दोनों के बीच अपना एक हाथ रख दिया और अनामिका को उससे थोड़ा दूर किया। चैतन्य ने अपनी चढ़ी हुई एक भौंह के साथ वरुण की ये हरकत देखी। अनामिका ने भी उसकी इस हरकत पर अपना सिर अफसोस से हिलाया। एक नजर वरुण पर डालकर चैतन्य फ्रिज की ओर बढ़ गया। उसने पानी की एक बोतल निकाली और फिर वापस आते समय अनामिका के जरा पीछे रूक गया। वरुण ने उसे ऑ॑खें सिकोड़ कर देखा। चैतन्य के होंठ एक शरारती मुस्कान के साथ टेढ़े हुए और अगले ही पल उसने अपना हाथ बढ़ाकर अनामिका को समेटा और उसके कान के पास झुककर साफ आवाज में बोला,

"गुड नाइट बेबी! हैव अ स्वीट एंड रोमैंटिक ड्रीम ऑफ माइन!"

और फिर आगे बढ़कर अनामिका के गाल पर एक जबरदस्त किस करने के बाद वो एक चिढ़ाती हुई नज़र वरूण पर डालता हुआ किचन से बाहर चला गया। वरुण और अनामिका दोनों ही उसकी इस हरकत पर जड़ होकर रह गए। अनामिका की नज़र दरवाजे की ओर गई जब चैतन्य ने उसे झांककर देखा और शरारती इशारों में कहा,
"जाओ! संभालो अपने वरूण को!"

अनामिका की आवाज उसके हलक में अटक गई थी। वही वरुण गुस्से में पूरी तरह से लाल हो चुका था।

"तुमने पूछा ना क्यों? बस इसीलिए! देखी उसकी हरकत! पता नहीं ये छिछोरा तुम्हें क्यों पसंद है? मेरा बस चले... मैं उसे उस नर्क के द्वार के पीछे फेंक आऊॅ॑। समस्या ही खत्म!" वरुण हाथ पैर पटक कर पूरी ताकत से चिल्लाते हुए बोला और अनामिका समझ गई कि इस शीतयुद्ध का कभी कोई परिणाम नहीं निकल सकता था।

"तुम्हें तो मैं देख लूंगा चैतन्य! उड़ो... जितना उड़ सकते हो!" चश्मे को अपनी नाक में चढ़ाते हुए वरूण अपने मन में बड़बड़ाया। शीतयुद्ध अपने चरम पर था।

****

शाम के समय चैतन्य, अनामिका को कहीं साथ बाहर जाने के लिए बुलाने गया, तो उसे पहले से ही तैयार होते हुए देखा।

"अरे! तुम्हें कैसे पता चला कि मैं तुम्हें बाहर ले जाना चाहता हूॅ॑!" चैतन्य ने उसे प्यार से निहारते हुए कहा।

"अच्छा! मुझे नहीं पता था!" अपने बालों में ब्रश घुमाते हुए अनामिका ने
कहा।

"तो फिर इतना तैयार क्यों हो रही हो?" चैतन्य ने अपनी नज़रें तीखी करते हुए पूछा।

"वरूण के साथ जा रही हूॅ॑। दोस्तों की पार्टी है। हम दोनों हर साल जाते हैं।" अनामिका ने अपने होठों को लिपस्टिक से रंगते हुए कहा।

"कौन से दोस्त? तुम दोनों ने तो कहा था तुम दोनों का कोई दोस्त नहीं है!" चैतन्य ने तफ्तीसी लहजे में कहा।

"वो तो बहुत करीबी दोस्त के बारे में कहा था। बहुत खास! वरना इस दुनिया में सबके पास बहुत सारे दोस्त होते हैं। तुम्हारे भी होंगे। वैसे ही ये सब भी हैं।" अनामिका ने सहजता से जवाब दिया।

"लड़के भी होंगे वहॉ॑?" चैतन्य ने एक भौंह चढ़ाते हुए पूछा।

"ऑफकोर्स!" अनामिका ने हाथ में ब्रेसलेट चढ़ाते हुए कहा।

"अचानक ये पार्टी! मतलब कि तुम दोनों ने ही दिन भर कुछ कहा नहीं इस बारे में।" चैतन्य ने अनामिका की तैयारियों को देखते हुए कहा।

"वरूण ने भी अभी आधे घंटे पहले ही बताया। उसका मन नहीं था, पर दोस्तों के जोर देने पर उसने हॉ॑ कर दी।" अनामिका ने अपना दुपट्टा सही करते हुए कहा।

"तो तुम क्यों जा रही हो? उसके दोस्तों की पार्टी है! उसे जाने दो।" चैतन्य ने एतराज उठाते हुए कहा।
"चैतन्य! तुम जानते हो उसे। वो कभी भी अकेला नहीं जाता। हमेशा मैं साथ जाती हूॅ॑ उसके और तुम ना... ये चिक-चिक बंद करो। हम लोग जल्दी आ जाऍ॑गे। बस शामिल होने की फॉर्मेलिटी पूरी करनी है।" अनामिका ने आखिरी बार खुद को आईने में निहारते हुए कहा।

"ठीक है जाओ! रह लूंगा मैं अकेला! तुम इंज्वॉय करो अपने वरूण के साथ।" चैतन्य ने ताना मारते हुए कहा।

"चैतन्य! ब्लैकमेल मत करो! घर में बहुत सारे लोग हैं उनके साथ जाकर बैठो। हम लोग आ जाऍ॑गे एक-दो घंटे में!" अनामिका ने उसे झिड़कते हुए कहा और बाहर की ओर बढ़ गई।

"ठीक है! तो जब तुम वापस आओगी मैं तब ही तुम्हारे साथ खाना खाऊंगा।" चैतन्य ने पीछे से आवाज़ दी।

अनामिका ने पीछे मुड़कर उसे देखा और फिर अफसोस के साथ सिर हिलाते हुए दरवाजा खोला तो थ्री पीस सूट में सजा-धजा वरूण सामने खड़ा था। अनामिका को देखने के बाद उसने एक तेज मुस्कुराती हुई नज़र चैतन्य पर डाली।

"अच्छी लग रही हो!" अपनी बांह अनामिका की ओर बढ़ाते हुए वरुण ने कहा।

"थैंक्यू! तुम भी बहुत अच्छे लग रहे हो। चलें!" अनामिका ने अपनी बांह उसकी बांह के

घेरे के दरमियान डालते हुए कहा। वरुण ने एक चुभती हुई नज़र चैतन्य पर डाली और फिर अनामिका को साथ लेकर चला गया।

"कुछ तो पक रहा है इसके दिमाग में!" चैतन्य बुदबुदाया और फिर तेजी से नीचे की ओर भागा। जब तक वो नीचे आया वरुण और अनामिका
बाहर निकल चुके थे।

"बैठे हुए रक़ीब हैं दिलबर के आस-पास
काँटों का है हुजूम गुल-ए-तर के आस-पास"

(गुल-ए-तर - खूबसूत चेहरे वाला माशूक़)

चैतन्य ने चिढ़कर पीछे देखा। आशुतोष एक किताब पर नज़रें गढ़ाए बैठा हुआ था। उसने एक गहरी साॅ॑स ली और उसके पास जाकर बैठ गया।

"वाह! वाह! क्या लिखा है जिगर मुरादाबादी जी ने। है ना!" आशुतोष ने चैतन्य की ओर पलकें उठाकर कहा, जवाब में चैतन्य ने एक जबरन खिंचीं हुई मुस्कुराहट उन्हें परोसी।

"और सुनोगे! पंडित दया शंकर नसीम लखनवी साहब क्या फरमाते हैं?" आशुतोष ने शायराना अंदाज में पूछा।

"सुनाइए!" चैतन्य ने उकताई हुई आवाज में कहा।

"दोज़ख़ ओ जन्नत हैं अब मेरी नज़र के सामने
घर रक़ीबों ने बनाया उस के घर के सामने"

"वाह! वाह!" कहते हुए आशुतोष ने चैतन्य को शरारत से देखा, जिस पर चैतन्य की त्योरियॉ॑ चढ़ी थीं।
"आप चिढ़ा रहे हैं मुझे?" चैतन्य ने बहुत ही चिढ़ से कहा।

"अब तुम चिढ़ना चाहते हो तो... चिढ़ जाओ! मैं क्यों मना करूंगा?" आशुतोष ने बहुत ही लापरवाही से कहा।

"आशुतोष जी! मैं पक्का बोल रहा हूॅ॑... इस चश्मिश के दिमाग में कुछ ना कुछ खिचड़ी जरूर पक रही है।" चैतन्य ने वरूण की शिकायत करते हुए कहा।

"हॉ॑! क्यों नहीं! आग से ऑ॑च तुम जो दे रहे हो। माना कि अनामिका ने तुम्हें अपने हमसफर के रूप में चुना है। पर तुम दोनों के 2 महीने के रिश्ते के लिए वह अपना और वरुण का बरसों पुराना रिश्ता खराब नहीं करेगी। करना भी नहीं चाहिए। नए रिश्ते बनने से पुराने रिश्ते खत्म नहीं हो जाते और इस बात को तुम अच्छी तरह समझ लो। समझदारी दिखाओ।" आशुतोष ने अपने लहजे में जरा सी सख़्ती लाते हुए उसे समझाया।

"ठीक है! ठीक है! जिसे देखो मुझे ही समझाता है। जरा आप उस चश्मिश को भी समझाइए। मतलब कि.... कहीं तो छोड़े मुझे और अनामिका को अकेला! जब देखो... जोंक की तरह चिपका रहता है।" चैतन्य ने बिगड़े हुए लहजे में एक बार फिर वरुण की शिकायत की थी।

"अरे यार! सच कहते हैं लोग। एक लड़की के प्रेमी और उसके सबसे अच्छे दोस्त के बीच कभी दोस्ती नहीं हो सकती। तुम दोनों भले और तुम दोनों की खींचातानी भली! हम तो बैरागी ही सही हैं भई! ऊपर वाला बचाए हमें इस फितना से।" आशुतोष ने अपने दोनों कान पकड़ते हुए कहा और एक बार फिर किताब में घुस गया। चैतन्य ने मुॅ॑ह बनाकर उसे देखा।
"इधर आ रक़ीब मेरे मैं तुझे गले लगा लूँ,
मिरा इश्क़ बे-मज़ा था तिरी दुश्मनी से पहले!"

"वाह! वाह! कैफ़ भोपाली साहब क्या शेर लिखा है।" आशुतोष दाद देता हुआ बोला और चैतन्य भी उतनी ही चिढ़ के साथ ऊपर अपने कमरे में चला गया। गीता खाने के लिए बुलाने आई, मगर उसने मना कर दिया। उसका ध्यान बस उसकी घड़ी के कॉ॑टों पर था। एक घंटा गुजरा... फिर दो घंटा भी गुजर गया। चैतन्य ने खिड़की पर जाकर कुछ देर बाहर देखा। कोई हलचल नहीं हुई। जब आधा घंटा ऊपर हो गया तो आखिरकार चैतन्य ने अनामिका को कॉल लगाई। उसने भी तीसरी बार में कॉल उठाया।

"कहॉ॑ हो तुम? घर क्यों नहीं पहुॅ॑ची अभी तक? ढाई घंटे हो गए!" चैतन्य ने नाराज़गी ज़ाहिर करते हुए कहा।

"ओफ्फोह चैतन्य! पार्टी में ही हैं अभी हम! एक बहुत पुराने परिचित मिल गाए हैं तो देर हो गई है। अभी समय लगेगा। तुम खाना खा लो।" अनामिका ने भी अपनी नाराज़गी ज़ाहिर की।

"ओके! बाय! रहो तुम अपने मजे में!" और फिर चैतन्य ने कॉल काट दी।

वो पूरे कमरे में भुनभुनाते हुए चहलकदमी कर रहा था। ना जाने क्यों.. पर उसे हवाओं में कुछ ग़लत की महक आ रही थी, जो उसे बिल्कुल भी अच्छी नहीं लग रही थी। वो उसी तरह जलता- कुढ़ता जमीन को अपने पैरों के नीचे रौंद रहा था कि तभी आशुतोष ने कमरे में कदम रखा। पहले तो उसने ग़ौर से चैतन्य को देखा और वाशरूम की ओर बढ़ गया। कुछ देर बाद वो बाहर आया और बिस्तर पर बैठ हाथ जोड़कर बोला,
"हे भगवान! मुझे आराम की नींद और भरपेट स्वादिष्ट खाने जैसी नेमतें देने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद! काश कि... आपका ये वरदान सभी को मिल जाए।"

और फिर एक जोरदार अंगड़ाई लेता हुआ बिस्तर पर पसर गया। चैतन्य ने कुछ देर उसे घूर कर देखा और फिर एक बार खिड़की की ओर चला गया। बाहर सन्नाटा पसरा हुआ था। उसने कुर्सी खींची और वहीं खिड़की के पास बैठ गया। उसे भी आज जैसे जिद चढ़ गई थी। गहरी-गहरी सॉ॑से लेता हुआ वो उन दोनों के बारे में ही सोच रहा था। करीब एक घंटे बाद गाड़ी के हॉर्न की आवाज सुनकर वो तेजी से खिड़की के पास आया और नीचे देखा। वहॉ॑ एक सफेद रंग की डिजायर खड़ी थी।

"ये किसकी गाड़ी है?" चैतन्य ने उस गाड़ी को देखकर खुद से पूछा। अभी वो इसी उधेड़बुन में था कि तभी उसने पिछली सीट का दरवाजा खुलते देखा और फिर वरूण वहॉ॑ से निकलकर तेजी से घर की ओर भागा। चैतन्य की ऑ॑खें हैरानी से फटी थीं क्योंकि अनामिका उसे दिखाई नहीं दी। वो तेजी से बाहर की ओर भागा और सीढ़ियों पर वरूण से टकरा गया। उसे देखते ही वरूण ने अपने हाव-भाव बदले और फिर सीटी बजाते हुए बड़े ही इत्मीनान से चैतन्य के बगल से गुजर गया।

"अनु कहॉ॑ हैं?" चैतन्य ने पलटकर उससे सवाल किया।

"वो क्या है ना! एक बार आशुतोष जी ने कहा था कि ये दुनिया बेहतर विकल्पों से भरी हुई है। तो वो ऐसे ही एक बेहतर के साथ बाहर है। उसे भी पता चलना चाहिए कि उसने कितनी जल्दबाजी की है। है ना!" वरूण ने उसे चिढ़ाने वाले अंदाज में कहा और फिर पलटकर अपने कमरे की ओर चल दिया।
उधर चैतन्य उसकी बात का मतलब समझकर तेजी से बाहर की ओर भागा। दरवाजे पर पहुॅ॑चकर उसने देखा कि अनामिका किसी लड़के, जो उम्र में कुछ बड़ा दिखाई दे रहा था... उससे हॅ॑स-हॅ॑सकर बातें कर रही थी और फिर वो लड़का अनामिका से हाथ मिलाते हुए उसके गले से लगा और उसके बाद हाथ हिलाते हुए गाड़ी में बैठ गया। गाड़ी के ओझल होने तक अनामिका ने इंतजार किया और फिर घर की ओर आ गई। दरवाजे के पास उसे लावे की तरह उबलता हुआ चैतन्य मिला। उसने कुछ भी नहीं कहा और सीढ़ियों की ओर बढ़ गई।

"मैंने खाना नहीं खाया है।" चैतन्य की आवाज आई।

ये सुनकर अनामिका पीछे पलटी और फिर कुछ पल नाराज से खड़े चैतन्य की ओर देखा। फिर वो ऊपर जाने की बजाय वहॉ॑ से किचन की ओर बढ़ गई। थोड़ी ही देर में वो चैतन्य के लिए खाना निकालती उसके सामने खड़ी थी। चैतन्य बहुत ही ग़ौर से उसे ही देख रहा था। खाने की थाली उसके सामने रखकर वो चैतन्य के पीछे गई और उसके गले में बांहें डालते उसके कान के पास झुककर बोली, "चलो! गुस्सा छोड़ो और खाना खा लो!"

उसकी बात सुनकर चैतन्य ने उसका हाथ पकड़ा और उसे अपने बगल वाली कुर्सी पर बैठा दिया।
उसने निवाला तोड़ा और अनामिका की ओर बढ़ा दिया। अनामिका ने हैरत से उसकी ओर देखा।

"मुझे यकीन है कि तुमने भी खाना नहीं खाया होगा।" चैतन्य ने कहा।

"नहीं! वो मन नहीं कर रहा था तो बस जूस पी लिया। भूख नहीं है मुझे!"अनामिका ने अपनी स्थिति संभालते हुए कहा।
"मुझे सब पता है। लो खाओ!" चैतन्य ने निवाले की ओर इशारा करते हुए कहा। अनामिका ने पहले तो उसे ग़ौर से देखा और फिर चुपचाप निवाला खा लिया।

"चैतन्य!"

" हूं!"

"जब इतना समझते हो मुझे तो ये सब हरकतें छोड़ क्यों नहीं देते। ये सब करके खुद परेशान ही होते हो।" अनामिका ने शिकायत करते हुए कहा।

"और तुम्हारे उस वरूण को खुला मैदान दे दूॅ॑ मुझ पर वार करने के लिए।" चैतन्य ने भी उसकी बात काटी।

"चैतन्य!" अनामिका ने नाराज़गी जताई।

"खाना खाओ!" कहते हुए चैतन्य ने उसके मुॅ॑ह में अगला निवाला डाला। कुछ ही देर में वो दोनों ही बातें करते हुए खाना खा रहे थे। सीढ़ियों के ऊपर खड़े हुए वरूण के होंठ उन दोनों को देखकर मुस्कराए और फिर वो इत्मीनान से अपने कमरे की ओर बढ़ गया।

अगले दिन शाम के समय आशुतोष और चैतन्य को वापस जाना था। इसलिए घर में थोड़ी गहमागहमी सी थी। वरूण को उस दिन थोड़ी देर से हॉस्पिटल जाना था, इसलिए वो अपना लैपटॉप खोलकर बाहर सुबह की नर्म धूप के मजे ले रहा था। वो अपने सीनियर से किसी केस के बारे में डिस्कस कर रहा था। उसी समय अनामिका उसके लिए कॉफी लेकर आई।

"अनामिका! सौरभ जी लाइन पर हैं। तुम कुछ देर उनके साथ बात करो।
मैं एक जरूरी फाइल लेकर आता हूॅ॑।" कहते हुए वरूण ने अनामिका को जबरन लैपटॉप के सामने बैठाया और खुद अंदर की ओर चला गया। उसी समय चैतन्य भी बाहर की ओर आया और अनामिका को लैपटॉप के सामने बातें करते देखकर उसकी ओर चला आया। उसने झांककर देखा तो उसने स्क्रीन पर मौजूद उस शख़्स को पहचान लिया। वो वहीं आदमी था, जो रात के समय में अनामिका के साथ था। चैतन्य के वहॉ॑ जाने पर अनामिका जो पहले से ही असहज थी और भी असहज हो गई। उसे डर था कि चैतन्य फिर से कोई उल्टी-सीधी हरकत ना कर दे। मगर अनामिका और स्क्रीन पर एक-एक नज़र डालकर वो वहॉ॑ से चला गया। अनामिका ने राहत की सॉ॑स ली। थोड़ी ही देर में वरूण आया तो अनामिका वहॉ॑ से हट गई। अंदर गई तो चैतन्य कुछ सोचता बैठा हुआ था।

"क्या सोच रहे हो?" अनामिका ने उसे खोए देखा तो पूछा।

"हमारे बारे में!" चैतन्य ने छोटा सा जवाब दिया।

"और वो क्या?" अनामिका ने अगला सवाल किया।

"अभी नहीं! अभी सही समय नहीं है। जब वो समय आएगा, तो बताऊंगा। तब तक इंतजार करो।" चैतन्य ने अपनी बात समेटते हुए कहा। अनामिका उसका चेहरा देखती रह गई।

आशुतोष और चैतन्य शाम के समय अपने नियत समय पर अपने शहर वापस लौट गए। कुछ दिनों के बाद अनामिका भी अपनी पढ़ाई का अंतिम वर्ष पूरा करने के लिए शहर लौटी। करीब पॉंच महीने वहॉं रहने के बाद वरूण उसे वापस अपने साथ ले गया, ये कहकर कि अनामिका अपने फाइनल एग्जाम वहीं से देगी। इसके बाद चैतन्य और अनामिका के मिलने का कोई जरिया ना बना। वरूण ने अनामिका को अकेले शहर भेजने से बिल्कुल मना कर दिया। अनामिका ने भी ऐतराज नहीं उठाया। हालांकि
चैतन्य एक बार फिर से तुनका था क्योंकि वो जानता था कि वरूण ने ऐसा क्यों किया? मगर

अनामिका के समझाने पर वो समझ गया। इसके बाद जीवन उसी नोंक-झोंक के साथ आगे बढ़ता रहा। इतनी दूर होकर भी चैतन्य और वरूण के बीच खींचतान बनी रही और जिस पर अनामिका अपना सिर धुनती रही और अगला एक महीना एग्जाम में गुजर गया।

आखिरकार इन छ: महीनों की किचकिच के बाद चैतन्य की मॉ॑ ने चैतन्य के कहने पर डॉ. अनंत और तृषा से बात की और आपसी रजामंदी से उन दोनों की सगाई की पक्की कर दी। इस खबर से जहॉ॑ अनामिका की खुशी का कोई भी ठिकाना नहीं था, वहीं वरूण एक बार फिर से बुरी तरह से भुनभुनाया था। सब तय करने के बाद अगले हफ्ते की तारीख तय कर दी गई।

"तुमने खुद कहा मॉ॑ से सगाई के लिए! शर्म नहीं आई तुम्हें!" अनामिका ने चैतन्य को लताड़ते हुए उतने ही आश्चर्य से कहा।

"जिसने की शरम... उसके फ़ूटे करम! कम से कम सगाई के बाद तो वो वरूण दूसरे लड़कों को तुम्हारे पास लाना छोड़ेगा। बस इसीलिए!" चैतन्य ने कहा।

"हद करते हो चैतन्य! ये भी कोई बात हुई।" अनामिका ने उसे झिड़का।

"हॉ॑ हुई! एक बार सगाई हो जाए फिर आराम से शादी की प्लानिंग करेंगे। ठीक है।" चैतन्य ने कहा।

"और वो कब होगी?" अनामिका ने पूछा।

"तुम कहो तो सगाई के बदले शादी कर लेते हैं।" चैतन्य की उतावली सी आवाज आई।
"अरे! ऐसे कैसे? अपनी पसंद से शादी कर रही हूॅ॑। अपने सारे अरमान निकालूंगी और हॉ॑ शादी का जोड़ा तुम्हारी पसंद का पहनूंगी। बस... उसका रंग लाल होना चाहिए।" अनामिका ने सपनीली आवाज में कहा।

"अरे वाह! तुमने तो पहले से ही सब सोच रखा है। वैरी गुड!" चैतन्य ने भी खिली हुई आवाज में कहा।

"चैतन्य! एक बात पूछूं!"

"हॉ॑... पूछो।"

"सब सही तो होगा ना! इतनी खुशियों की आदत नहीं रही ना कभी। डरती हूॅ॑ कि कहीं ये सपना टूट ना जाए!" अनामिका ने अपने दिल का खदशा जाहिर करते हुए कहा।

"पागल हो गई हो! क्यों होगा बुरा? अच्छा सोचो... तो अच्छा होगा। समझी!" चैतन्य ने उसे डपटते हुए कहा।

"पता नहीं चैतन्य.. पर कुछ दिनों से मुझे कुछ अजीब सा महसूस होता है। ऐसा लगता है कि मैं किसी भॅ॑वर में डूब रही हूॅ॑। तुम मेरी ओर हाथ बढ़ाते हो, मगर मैं पकड़ नहीं पाती और फिर तुम मेरी ऑ॑खों से ओझल हो जाते हो। तुम मुझसे कभी दूर तो नहीं जाओगे ना! कभी- कभी मुझे बहुत डर लगता है।" अनामिका ख़ौफ भरी आवाज में बोली।

"शटअप अनामिका! मुझे लगता है कि तुम्हें नींद आ रही है। चलो सो जाओ।" उसकी बातें सुनकर चैतन्य का लहज़ा सख़्त हुआ था।
"चैतन्य!"

"सो जाओ! गुड नाईट! मैं कल कॉल करूंगा। ठीक है!" चैतन्य अपनी आवाज को नर्म करते हुए बोला।

"हॉ॑!"

"अनु! I love you." चैतन्य बोला।

"हम्म!"

"हम्म क्या? जवाब दो!" चैतन्य तिड़ककर बोला।

"अब जब सामने आओगे, तब मिलेगा जवाब!" अनामिका ने उसे टालते हुए कहा।

"अच्छा! तब तो सूद भी लगेगा। याद रखना!" चैतन्य ने हिसाब करते हुए कहा। जवाब में वो खुलकर हॅ॑सी थी। उसकी इसी हॅ॑सी को दिल में बसाए हुए चैतन्य ने कॉल कट की और सोने चला गया। रात बस गुजरी ही थी कि तभी उसकी मॉ॑ ने उसे आकर उठाया।

"चैतन्य! उठो!"

"क्या है मॉ॑? सोने दो! नींद आ रही है।" कहते हुए चैतन्य ने करवट बदली।

"चैतन्य! वरूण आया है।" उसकी मॉ॑ ने कहा।
और ये सुनते ही चैतन्य की ऑ॑खें झटके से पूरी की पूरी खुल गईं। उसने पलटकर अपनी मॉ॑ की ओर देखा, जो परेशान नज़र आ रही थीं।

"क्या हुआ मॉ॑? सब खैरियत!" चैतन्य चादर फेंककर उठता हुआ बोला।

"पता नहीं! पर वो बहुत परेशान दिख रहा है।" चैतन्य की मॉ॑ बोली। ये सुनकर चैतन्य भागता हुआ बाहर निकला। वरूण बहुत ही बेचैनी से बैठक में चहलकदमी कल रहा था।

"वरूण! क्या हुआ? परेशान लग रहे हो!" चैतन्य ने वरूण से सवाल किया।

जवाब में वरूण ने कुछ कहने की बजाय एक कागज उसकी ओर बढ़ा दिया।

"ये क्या है?" चैतन्य ने उस कागज को देखते हुए पूछा।

"तुम्हारे लिए संदेश!" वरूण ने कॉ॑पती हुई आवाज में कहा।

उसकी हिली हुई हालत देखकर चैतन्य ने तेजी से आगे बढ़कर उस कागज को लिया और उसे खोलकर देखा। वो एक खत था। चैतन्य ने बिना आवाज उस खत को पढ़ा।

चैतन्य,

एक उम्मीद के साथ मैंने 200 साल तड़पते हुए गुजार दिए। उम्मीद कि इस समय की आग में तपने के बाद मेरा प्यार कुंदन की तरह चमकेगा।
मगर छ: महीने पहले 200 सालों से सहेजी हुईं मेरी सारी उम्मीदों ने लगभग दम तोड़ दिया। पिछले छः महीने बिना किसी उम्मीद के काटना उन 200 सालों से कहीं ज्यादा कष्टकारी था और.... इन छ: महीनों में मेरी बर्दाश्त जवाब दे ही गई। 200 सालों के इंतजार के बाद मुझे भी मेरा प्यार पाने का हक है और मैं वो साथ ले जा रहा हूॅ॑। छोटा सा अंश ही सही, पर मेरी माया का है, तो मेरा है। अनामिका चाहती थी कि मैं माया को अलविदा कह दूॅ॑, पर मैं ऐसा नहीं कर पाया। तुम्हारे लिए मुझे अफसोस है, पर ले जा रहा हूॅ॑ अनामिका को। 200 सालों के अंधकार के बाद मुझे भी अपना भोर का तारा चाहिए। अनामिका की चिंता मत करना। मैं उसे बहुत प्यार से रखूंगा और मुझे यकीन है कि एक दिन वो भी मुझसे प्यार करने लगेगी। मुश्किल है... पर उसे अलविदा कहकर भूल जाना! तुम्हारे लिए बस इतना ही.... Poor boy Chaitanya! Better luck next time.

अल्फ़ी!

ये पढ़ते ही चैतन्य के हाथ-पैर ठंडे पड़ने लगे। वो ख़त उसके हाथ से छूटकर दूर उड़ गया। तेजी से चढ़ती-उतरती सॉ॑सों के बीच उसने कुछ सोचा और फिर वरुण की ओर देखकर दॉ॑त भींचते हुए बहुत ही गुस्से में बोला, "वरूण! अगर ये तुम्हारा मजाक है तो.... ये बहुत

□□ □□□□□ □□□□□ □□□□"

"□□□□□□□□! □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□□□, □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□... □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□
□□ □□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□" □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□-□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□? □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□.... □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□, □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □: □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□, □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□

□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□, □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□

□□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□ □ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□... □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□

"□□□□□□□! □□ □□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□!" □□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□, □□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□□ "□□□□□□□ □□□□ □□□□□! □□ □□□□ □□ □□□□□□!"

□□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□□

□□□□□□□,

□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□ □□ □□! □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□! **200** □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□ □□□□□□□? □□□□□! □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□? □□□□□□ **200** □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□... □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□ □□..... □□ □□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□.... □□□□□□□□ □□□□□! □□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□

□□ □□□□! □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□ **5** □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□.... □□ □□□□ □□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□, □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□ □□□□! □□□□□□□□□□
□□□□□□□□□ □□ □□□□□... □□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□, □□ □□□□□□ □□ □□! □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□

- - - अल्फ़ी!

खत पढ़कर चैतन्य ने उसे बेरहमी से अपनी मुट्ठियों में भींचा। वो अपने अंदर उबलते गुस्से को शांत करने की कोशिश कर रहा था क्योंकि अब समय गुस्से का नहीं धैर्य से सोचने और समझने का था। अल्फ़ी ने अनामिका का अपहरण कर अपनी प्रतिष्ठा पर जो चोट पहुॅ॑चाई थी, इस खत से उस चोट पर उसकी अच्छाई ने एक मरहम लगा दी थी।

"तो मुझे आजमाना चाहते हो! ठीक है! अनामिका। बहुत जल्द वापस लेकर आऊंगा तुम्हें। बस मुझ पर यकीन और अपना हौसला बनाए रखना।"

उसे अनामिका की अल्फ़ी और आत्मिक प्रेम को लेकर कही गई बातें भी याद आईं और वो एक फैसले के साथ इस चुनौती को स्वीकार कर गया।

"challange accepted."
सदियों से चले आ रहे "नफ़रत के श्राप" और प्रेम के लिए तड़पते "अभिशप्त" की कहानी खत्म हो चुकी थी और प्रेम की एक नई कहानी सामने आने को तैयार थी।

जिन पाठकों को आगे नहीं बढ़ना है वो ये समझ लें कि अल्फ़ी चला गया और चैतन्य-अनामिका की शादी हो गई।

और वो पाठक जो इस दुनिया के रोमांच से जुड़े रहना चाहते हैं उनके लिए आगे भी बहुत कुछ है।

***** समाप्त *****